दिया कि रोक चाकी, फिर लाख जतन कीजिए, भला रोक तो लीजिए। निशाना तो कभी खाली जाने ही नही पाता था। फरी उम्र-भर न छूटी। एक अग ही लडा किये। छरहरा बदन, सीधे-सादे आदमी, सूरत देखे तो यकीन न आये कि उस्ताद है, मगर एक जरा सी बाँस की खपाच दे दीजिए, फिर दिल्लगी देखिए, कैसे जौहर दिखाते है। हम जैसे उस्तादो की आँखे देखे हुए है, किसी से दबनेवाले नही।

मियाँ आजाद तो ऐसे आदमियो की टोह मे रहते ही थे, बाँके के साथ हो लिये और दोनो शहर मे चक्कर लगाने लगे। चौक मे पहुँचे, तो जिस पर नजर पडती है, बाँका-तिरछा; चुन्नटदार अँगरखे पहने, नुक्केदार टोपियाँ सिर पर जमाये, चुस्त घुटन्ने डाटे, ढाटे बाँधे हुए तने चले जाते है। तमंचे की जोडी कमर से लगी हुई, दो-दो विलायतियाँ पडी हुई, बाढे चढी हुई, पेशकब्ज, कटार, सिरोही, शेर-बच्चा, सबसे लैस। बाँके को देखकर एक दूकानदार की शामत आयी, हँस पड़ा। बाँके ने आव देखा न ताव, दन से तमंचा दाग दिया। सयोग था, खाली गया। लोगों ने पूछा, क्यो भाई, क्यो बिगड गये ? तीखे होकर बोले—हमको देख कर बचाजी मुसकिराये थे, हमने गोली लगायी कि दाँत पर पडे और इनके दाँत खट्टे हो जायँ, मगर जिदगी थी, बच निकले। मियाँ आजाद ने अपने दिल में सोचा, यह बाँके तो आफत के परकाले है, इनको नीचा न किया तो कुछ बात नही। एक तबोली से पूछा—क्यो भाई, यहाँ बाँके बहुत हैं ? उसने कहा—मियाँ, बाँका होना तो दिल्लगी नही, हाँ, बेफिक्रे बहुत है। और इन सबके गुरू-घटाल वह हजरत है, जिन्हे लोग एकरंग कहते है। वह सदली रँगा हुआ जोडा पहन कर निकलते है, मगर मजाल क्या कि शहर भर मे कोई सदली जोडा पहन तो ले। एकरग सदली जोडा कोई पहन नही सकता, कोई पहने तो गोली भी सर कर दे, इसके साथ यह भी है।

मियाँ आजाद ने सोचा कि इस एकरंग का टेटुआ न लिया, तो खाना हराम। दूसरे दिन आप भी सदली बूट, सदली घुटन्ना, सदली अँगरखा और टोपी डाट कर निकले। अब जिस गली-कूचे से निकलते है, उँगलियाँ उठती हैं कि यह आज इस ढब से कौन निकले है भाई। होते-होते एकरग के चेले-चापड़ो ने उनके कान में भी भनक डाल दी। सुनते ही मुँह लाल चुकदर हो गया। कपडे पहन, हथियार लगा, चल खडे हुए। आजाद तबोली की दूकान पर टिक गये। उनका वेष देखते ही उसके होश उड गये। लगा हाथ जोडने कि भगवान् के लिए मेरी ही टोपी दे लीजिए, या जूता बदल डालिए, नही तो वह आता ही होगा, मुफ्त की ठायँ-ठायँ से क्या वास्ता ? इनको तो कच्चे घडे की चढी थी, कब मानते थे, गिलौरी ली और अकड कर खडे हुए। शहर में धूम हो गयी कि आज आजाद और एकरग मे तलवार चलेगी। तमाशा देखने वाले जमा हो गये। इतने मे मियाँ एकरग भी दिखाई दिये। उनके आते ही भीड छट गयी। कोई इधर कतरा गया, कोई गली में घुसा, कोई कोठे पर चढ गया। एकरग ने जो इनको

देखा, तो जल मरा। बोला—अबे ओ खब्ती, उतार टोपी, बदल जूता। हमारे होते तू सदली जोड़ा पहन कर निकले! उतार, उतार, नहीं तो मैं बढ़ कर काम तमाम कर दूँगा। मियाँ आज़ाद पैतरा बदल कर तीर की तरह झपट पड़े और बड़ी फुर्ती से एक रंग की तोंद पर तमंचा रख दिया। बस हिले और धुआँ उस पार! बोले और लाश फड़कने लगी! बेईमान, बड़ा बाँका बना है, सैकड़ों भले आदमियों को बेइज्जत किया। इतने चाबुक मारूँगा कि याद करेगा। अभी उतार टोपी, उतार, उतार, नहीं तो धुआँ उस पार! संयोग से एक दर्ज़ी उधर से निकला, उसने एकरंग की टोपी उतार जेब में रखी। एकरंग की एक न चली। आजाद ने ललकारा—हौसला हो तो आओ, दो-दो हाथ भी हो जायँ, खबरदार जो आज से संदली जोड़ा पहना!

शहर भर में धूम हो गयी कि मियाँ आजाद ने एकरंग के छक्के छुड़ा दिये, चुपचाप दर्ज़ी से टोपी बदली। सच है, 'दबे पर बिल्ली चूहे से कान कटाती है।' मियाँ आज़ाद की धाक बँध गयी। एक दिन उन्होंने मनादी कर दी कि आज मियाँ आजाद छह बजे से आठ बजे तक अपने करतब दिखायेंगे, जिन्हें शौक हो आयें। एक बड़े लम्बे-चौड़े मैदान में आज़ाद अपने जौहर दिखाने लगे। लाखों आदमी जमा थे। मियाँ आजाद ने नीबू पर निशान बनाया, और तलवार से उड़ाया, तो निशान के पास खट से दो टुकड़े। कसेरू उछाला और पाँच-छह वार में छील डाला। तलवार की बाढ़ से दस-बारह की आँखों में सुरमा लगाया। चिराग़ जलाया और खाँड़ा फेंकते-फेंकते गुल काट डाला, लौ अलग, बत्ती अलग। एक प्याले में दस कौड़ियाँ रखीं और दो पर निशान बना दिया। दोनों को तलवार से प्याले ही में काटा और बाकी कौड़ियाँ निलोह बच निकलीं। लकड़ा टेकी और बीस हाथ छत पर हो रहे। गदके का ज़रा इशारा किया और बीस हाथ उड़ गये। चालीस-चालीस आदमियों ने घेरा और यह साफ़ निकल भागे। पलँग के नीचे एक जंगली कबूतर छोड़ दिया गया। उन्होंने उसको निकलने न दिया। एक फिकैत ने ये करतब देखे तो बोला—अजी यह सब नट-विद्या है, मैदान में आयें तो मालूम हो।

आजाद—अच्छा! अब तुम्हें भी मैदान में आने का दावा हुआ! तुम्हारे एकरंग का तो रंग फीका हो गया, अब तुम मुँह चढ़ते हो, तुम्हें भी देखूँगा।

फिकैत—चोंच संभालो।

आजाद—तुम्हारी शामत ही आ गयी है, तो मैं क्या करूँ। आजकल में तुम्हारी भी कलई खुली जाती है। तुम लोग बाँके नहीं, बदमाश हो; जिधर से निकल जाओ, उधर आदमी काँप उठें कि भेड़िया आया। कोई हँसा और तुमने बंदूक छतियायी, किसी ने बात की और तुमने चोट लगायी। भाई वाह, अच्छा बाँकपन है! तो बात क्या, जहाँ दस दिन डंड पेले और उबल पड़े, दो-चार दिन लकड़ी फेंकी और महल्लेवालों पर शेर हो गये। गुनी लोग सिर झुका ही के चलते हैं।

यही बातें हो रही थीं कि सामने से एक पहलवान ऐंड़ते हुए निकले, लँगोट बाँधे,

मलमल की चादर ओढ़े दो-तीन पट्ठे साथ। एक कसेरुवाले के पास खड़े हो गये और उसके सिर पर एक धप लगा दी। वह पीछे फिरकर देखता है, तो एक देव खड़े हैं। बोले, तो पथा जाय; कान दबा कर, धप खा कर, दिल ही दिल मे कोसता हुआ चला गया।

थोड़ी ही देर मे मियाँ पहलवान ने एक खोंचेवाले का खोंचा उलट दिया; तीन-चार रुपये कि मिठाई धूल मे मिल गयी। जब उसने गुल-गपाड़ा मचाया, तो पट्ठों ने दो-तीन गुद्दे, घूसे, रुक्के लगा दिये, दो-चार लप्पड़ जमा दिये। वह बेचारा रोता-चिल्लाता, दुहाई देता चला गया।

आजाद सोचने लगे, यह तो कोई बडा ही शैतान है, किसी के लप्पड़, किसी के थप्पड़, अच्छी पहलवानी है! सारे शहर में तहलका मचा दिया। इसकी खबर न ली, तो कुछ न किया। यह सोचते ही मेरा शेर झपट पड़ा और पहलवान के पास जा कर घुटने से ऐसा धक्का दिया कि मियाँ पहलवान ने इतना बडा डील-डौल रखने पर भी बीस लुढ़कनियाँ खायीं। मगर पहलवान सँभलते ही उनकी तरफ झपट पड़ा। तमाशाई तो समझे कि पहलवान आजाद को चुर्र-मुर्र कर डालेगा, लेकिन आजाद ने पहले ही से वह दाँव-पेंच किये कि पहलवान के छक्के छूट गये, ऐसा दबाया कि छठी का दूध याद आ गया। उसने जैसे ही आजाद का बायाँ हाथ घसीटा, उन्होंने दाहने हाथ से उसका हाथ बाँधा और अपना छुडा, चुटकियों मे कूले पर लाद, घुटना टेक कर मारा—चारों खाने चित! पहलवान अब तक कोरा था, किसी दंगल में आसमान देखने की नौबत न आयी थी। आजाद ने जो इतने आदमियों के सामने पटकनी बतायी, तो बड़ी किरकिरी हुई और तमाम उम्र के लिए दाग लग गया।

अब तो मियाँ आजाद जगत्-गुरु हो गये, एकरंग का रंग फीका पड गया, पहलवान ने पटकनी खायी, शहर भर में धूम हो गयी। जिधर से निकल जाते, लोग अदब करते थे। जिससे चार आँखें हुईं उसने जमीन चूम कर सलाम किया। अच्छे-अच्छे बाँकों की कोर दबने लगी। जहाँ किसी शहजोर ने कमजोर को दबाया और उसने गुल मचाया—दोहाई मियाँ आजाद की, और वह बौड़ी ले कर आ पहुँचे। किसी बदमाश ने कमज़ोर को दबाया और उसने डाँट बतायी—नहीं मानते, बुलाऊँ मियाँ आजाद को! शोहदे-लुच्चे इनसे ऐसे थर्राते थे, जैसे चूहे बिल्ली से, या मरीज दिल्ली से। नाम सुना और बगले झाँकने लगे; सूरत देखी और गली-कूचों में दबक रहे। शहर भर में उनका डंका बज गया।

एक दिन आजाद सिरोही लिये ऐंडते जा रहे थे कि एक दर्जी की दूकान के पास से निकले। देखते क्या हैं, रँगीले छैले, बाँके जवान छोटे पंजे का मखमली जूता पहने, जुल्फें लटकाये, छुरी कमर से लगाये दर्जी से तकरार कर रहे हैं। वाह मियाँ खलीफा! तुमने तो हमें उलटे छूरे मूडा! खुदा जाने, किस कतर-ब्योंत मे रहते हो। सीना-पिरोना तो नाम का है, हाँ, जबान अलबत्ता, कतरनी की तरह चला करती है। तुमसे

कपड़े सिलवाना अपनी मिट्टी खराब करना है। दम धागा देना खूब जानते हो। टोपी ऐसी भोंडी बनायी कि फब्तियाँ सुनते-सुनते नाकों दम आ गया

दर्जी—ऐ तो हुजूर, मैं इसको क्या करूँ? मेरा भला इसमें क्या क़ुसूर है? आपका सिर ही टेढ़ा है। मैं टोपी बनाता हूँ, सिर बनाना नहीं जानता।

बाँके—चोंच सँभाल, बहुत बढ़-बढ़ कर बातें न बना। बाँकों के मुँह लगता है? और सुनिए, हमारा सिर टेढ़ा है। अबे, तेरा सिर साँचे का ढला है? तेरे ऐसे दर्जी मेरी जेब मे पड़े रहते हैं, मुँह बंद कर, नहीं दूँगा उलटा हाथ, मुँह टेढ़ा हो जायगा। और तमाशा देखिए, हमारा सिर गोया कद्दू हो गया है।

दर्जी—आप मालिक हैं, मुल मेरी खता नहीं। जैसा सिर वैसी टोपी। ऐसा सिर तो मैने देखा ही नहीं, यह नयी गर्दत का सिर है, आप फरे लें, बस, मै सी चुका। जब दाम देने का वक्त आया, तो यह झमेला किया।

यह सुनते ही बाँके ने दर्जी को इतना पीटा कि वह बेचारा बेदम हो गया। आखिर कफ़न फाड़ कर चीखा, दोहाई मियाँ आजाद की, दोहाई मेरे उस्ताद की। आजाद तो दूर से खडे देख ही रहे थे, झट तलवार सैंत दूकान पर पहुँच गये। बाँके ने पीछे फिर कर देखा, तो मियाँ आज़ाद।

आजाद—वाह भाई बाँके, तुम सचमुच रुस्तम हो। बेचारे दर्जी पर सारी चोटें साफ कर दीं। कभी किसी कड़ेखाँ से भी पाला पड़ा है? कहीं गोहार भी लड़ा है? या गरीबों ही पर शेर हो? बड़े दिलेर हो तो आओ, हमसे भी दो-दो हाथ हो जायँ। तुम ढेर हो जाओ, या हम चरका खायँ। आइए, फिर पैतरा बदलिए, लगा बढ़ कर हाथ, इधर या उधर।

बाँके—हैं, हैं, उस्ताद, हमीं पर हाथ साफ़ करोगे, हम नौसिखिये तुम गुरु-घंटाल। मगर आप इस कमीने दर्जी की तरफ से बोलते हैं और शरीफ़ों पर तलवार तौलते हैं! सुभान अल्लाह! आइए, आपसे कुछ कहना है।

आजाद—अच्छा, तोबा करो कि अब किसी ग़रीब को न धमकायेगे।

बाँके—अजी हजरत, धमकाना कैसा, हम तो खुद ही बला में फँसे हैं; खुदा ही बचाये, तो बचें। यहाँ एक फिकैत है, उससे हमसे लाग-डाँट हो गयी है। कल नौचंदी के मेले मे हमें घेरेगा, कोई दो सौ बाँकों के जत्थे से हम पर हरबा करना चाहता है। हम सोचते हैं कि दरगाह न जायँ, तो बाँकपन में बट्टा लगता है, और जायँ, तो किस बिरते पर? यार, तुम साथ चलो तो जान बचे, नहीं तो बेमौत मरे।

आजाद—अच्छा, तुम भी क्या कहोगे। लो, बीड़ा उठा लिया कि कल तुमको ले चलेंगे और सबसे भिड़ पड़ेंगे, दो सौ हों, चाहे हजार, हम हैं और हमारी कटार, इतनी कटारें भोकूँ कि दम बंद हो जाय। मगर यह बता दो कि क़ुसूर तुम्हारा तो नहीं है?

बाँके—नहीं उस्ताद, कसम ले लो, जो मेरी तरफ से पहल हुई हो। मुझसे उन्होंने एक दिन अकड़ कर कहा कि तू तलवार न बांधा कर। मै भी, आप जानिए,

इनसान हूँ। पित्ता तो मछली के भी होता है। मुझे भी गुस्सा आ गया। मैंने कहा, धत्! तू और हमसे हथियार रखवा ले? बस, बिगड़ ही तो गया और पंद्रह-बीस आदमी उसकी तरफ़ से बोलने लगे। मैंने भी जवाब दिया, दबा नहीं। मगर लड़ पड़ना मसलहत न थी। बाँका हूँ, तो क्या हुआ, बिना समझे-बूझे बात नहीं करता। खैर, उसने ललकार कर कहा—अच्छा बचा, दरगाह में समझ लेंगे, अब की नौचंदी में हमीं न होंगे, या तुम्हीं न होगे।

आजाद—अच्छा, तुम लैस रहना, मैं दो घड़ी दिन रहे आऊँगा, घबराओ नहीं, तुम्हारा बाल-बाँका हो, तो मूँछ मुड़ा दूँ। ये दो सौ आदमी देखने ही भर के होंगे। सच्चे दिलेर उनमें दो-ही चार होंगे, जो आजाद की तलवार का सामना करें। मौत से लड़ना दिल्लगी नहीं है; कलेजा चाहिए।

दूसरे दिन आजाद हथियार बाँध कर चले, तो रास्ते में बाँके मिल गये और दोनों साथ-साथ टहलते हुए दरगाह पहुँचे।

नौचंदी जुमेरात, बनारस का बुढवामंगल मात; चारों तरफ़ चहल-पहल; कहीं 'तमाशाइयों' का हुजूम, हटो-बचो की धूम; आदमी पर आदमी टूटे पड़ते हैं, कोसों का तांता लगा हुआ है, मेवेवाले आवाज लगा रहे हैं, तंबोली बीड़े बना रहे हैं, गँडेरियाँ हैं केवड़े की, रेवड़ियाँ हैं गुलाब की। आजाद घूरते-घारते फाटक पर दाखिल हुए, तो देखा, सामने तीस-चालीस आदमियों का गोल है। बाँके ने कान में कहा कि यही हजरत हैं, देख लीजिए, दंगे पर आमादा हैं या नहीं।

आजाद—भला, यहाँ तुम्हारा भी कोई जान-पहचान है? हो, तो दस-पाँच को तुम भी बुला लो, भीड़-भड़क्का तो हो जाय। लड़नेवाले हम क्या कम हैं—मगर दो-चार जमाली खरबूजे भी चाहिए, डाली की रौनक हो जाय।

बाँके—अभी लाया, आप ठहरें; मगर बाहर टहलिए, तो अच्छा है, यहाँ जोखिम है।

आज़ाद फाटक के बाहर टहलने लगे। फिकैत ने जो देखा कि दोनों खिसके, तो आपस में हाँड़ियाँ पकने लगीं—वह भगाया! वह हटाया! भागा है! उनके साथियों में से एक ने कहा—अजी, वह भागा नहीं है, एक ही काइयाँ है, किसी टोह में गया है। एक बिगडेदिल बाहर गये, तो देखा, बाँके पश्चिम की तरफ़ गर्दन उठाये चले जाते हैं, और मियाँ आजाद फाटक से दस क़दम पर टहल रहे हैं। उलटे पाँव आ कर खबर दी—उस्ताद, बस, यही मौक़ा है, चलिए, मार लिया है, बायें हाथ चला जाता है, और अकेला है। सब दूसरे फाटक से चढ़ दौड़े। ठहर बे, ठहर! बस, रुक जा, आगे क़दम बढ़ाया, और ढेर हुए! हिले, और दिया तुला हुआ हाथ। याद है कि नहीं, आज नौचंदी है। लोगों ने चारों तरफ़ से घेर लिया। बाँके का रंग फ़क़ कि ग़ज़ब ही हो गया! अब कुत्ते की मौत मरे। किस-किससे लड़ूँगा? एक की दवा दो कि सौ। मियाँ आजाद को कोई खबर कर देता, तो वह झपट ही पड़ते; मगर जब

तक कोई जाय-जाय, हमारा काम तमाम हो जायगा। एक यार ने बढ़कर बेचारे मुसीबत के मारे बाँके के एक लठ लगा दिया, बायें हाथ की हड्डी टूट गयी। गुल-गपाड़े की आवाज आजाद ने भी सुनी। भीड़ काट कर पहुँचे, तो देखा, बाँके फँसे हुए हैं। तलवार को टेका और दन से उस पार हुए। खबरदार खिलाड़ी! हाथ उठाया और मैंने टेटुआ लिया। बाँके के दिल में ढाढ़स हुआ, जान बची, नयी जिन्दगी हुई। इतने में मियाँ आजाद ने तलवार म्यान से निकाली और पिल पड़े। तलवार का चमकना था कि फिकैत के सब साथी हुर्र हो गये, मैदान खाली, मियाँ आजाद और बाँके एक तरफ, फिकैत और दो साथी दूसरी तरफ, बाकी रफूचक्कर। एक ने आजाद पर तमंचा चलाया, मगर खाली गया। आजाद ने झपट कर उसको ऐसा चरका दिया कि तिलमिला कर गिर पड़ा। दूसरे जवान दस कदम पीछे हट गये। बाँके भी खिसक गये। अब आजाद और फिकैत आमने-सामने रह गये। वह कड़क कर झुका, इन्होंने चोट रोक कर सिर पर हाथ लगाना चाहा, उसने रोका और चाकी का हाथ दिया। आध घंटे तक धपाधप तलवार चला की। आखिर आज़ाद ने बढ़ कर 'जनेऊ' का वह हाथ लगाया कि 'भंडारा' तक खुल गया, मगर फिकैत भी गिरते-गिरते 'दोहरा' दे ही गया। इधर यह, उधर वह धम से गिरे। तब बाँके दौड़े और आजाद को उठा कर घर ले गये।

२

आजाद की धाक ऐसी बँधी कि नवाबों और रईसों मे भी उनका जिक्र होने लगा। रईसों को मरज होता है कि पहलवान, फिकैत, बिनवटिये को साथ रखे, बग्घी पर ले कर हवा खाने निकले। एक नवाब साहब ने इनको भी बुलवाया। यह छैला बने हुए, दोहरी तलवार कमर से लगाये जा पहुँचे। देखा, नवाब साहब, अपनी माँ के लाड़ले, भोले-भाले, अँधेरे घर के उजाले, मसनद पर बैठे पेचवान गुड़गुड़ा रहे हैं। सारी उम्र महल के अन्दर ही गुजरी थी, कभी घर के बाहर जाने तक की भी नौबत न आयी थी, गोया बाहर कदम रखने की कसम खायी थी। दिनभर कमरे में बैठना, यारों-दोस्तों से गपें उड़ाना, कभी चौसर रंग जमाया, कभी बाजी लड़ी, कभी पौ पर गोट पड़ी, फिर शतरंज छिड़ी, मुहरे खट खट पिटने लगे। किश्त! वह घोड़ा पीट लिया, वह प्यादा मार लिया। जब दिल घबराया, तब मदक का दम लगाया, चंडू के छींटे उड़ाये, अफीम की चुसकी ली। आजाद ने झुक कर सलाम किया। नवाव साहब खुश हो कर गले मिले, अपने करीब बिठाया और बोले—मैंने सुना है, आपने सारे शहर के बाँको के छक्के छुड़ा दिये।

आजाद—यह हुजूर का इकबाल है, वरना मैं क्या हूँ।

नवाब—मेरे मुसाहबों मे आप ही जैसे आदमी की कमी थी, वह पूरी हो गयी, अब खूब छनेगी।

इतने में मीर आगा बटेर को मूठ करते हुए आये और सलाम कर के बैठ गये। जरा देर के बाद अच्छे मिर्जा गन्ना छीलते हुए आये और एक कोने मे जा डटे। मियाँ झम्मन अँगरखे के बंद खोले, गुद्दी पर टोपी रखे खट से मौजूद। फिर क्या था, तू आ, मै आ। दस-पंद्रह आदमी जमा हो गये, मगर सब झंडे-तले के शोहदे, छटे हुए गुरगे थे। कोइ चीनी के प्याले में अफीम घोल रहा है, कोई चंडू का किवाम बना रहा है, किसी ने गँडेरियाँ बनायीं, किसी ने अमीर-हमजा का किस्सा छेड़ा, सब अपने-अपने धंधे में लगे। नवाब साहब ने मीर आगा से पूछा—मीर साहब, आपने हुक्के का दरख्त भी देखा है?

मीर आगा—हुजूर, कसम है जनाब अमीर की, सत्तर और दो बहत्तर बरस की उम्र होने को आयी, गुलाम ने आज तक आँखों से नहीं देखा, लेकिन होगा बड़ा दरख्त। सारी दुनिया की उससे परवरिश होती है, जिसे देखो, हुक्के पर हत्थे लगाता है।

अच्छे मिर्जा—कुरबान जाऊँ, दरख्त के बड़े होने मे क्या शक है। कश्मीर से ले कर, कुरबान जाऊँ, बड़े गॉव तक और लंदन से ले कर विलायत तक, सबका इसी पर दारमदार है।

नवाब—मेरा भी खयाल यही है कि दरख्त होगा बहुत बडा; लेकिन देखने की बात यह है कि आखिर किस दरख्त से ज़्यादा मिलता है। अगर यह बात मालूम हो जाय, तो फिर जानिए कि एक नयी बात मालूम हुई। और भाई, सच पूछो, तो छान-बीन करने ही में जिन्दगी का मजा है।

अच्छे मिर्जा—सुना बरगद का दरख्त बहुत बड़ा होता है। झूठ-सच का हाल खुदा जाने; नीम का पेड़ तो हमने भी देखा है, लेकिन किसी शायर ने नीम के दरख्त की बडाई की तारीफ नही की।

छुट्टन—हमने केले का पेड़, अमरूद का पेड़, खरबूजे का पेड़ सब इन्हीं आँखो देख डाले।

आजाद—भला, यहाँ किसी ने वाहवाह की फलियों का पेड़ भी देखा है?

छुट्टन—जी हाँ, एक दफे नैपाल की तराई मे देखा था, मगर शेर जो डकारा, तो मैं झप से गँदे के दरख्त पर चढ़ गया। कुछ याद नहीं कि पत्ती कैसी होती है।

नवाब—खुश्के के दरख्त का कुछ हाल दरियाफ्त करना चाहिए।

अच्छे मिर्जा—कुरबान जाऊँ, इन लोगों का एतबार क्या? सब सुनी-सुनायी कहते हैं। कुरबान जाऊँ, गुलाम ने वह बात सोची है कि सुनते ही फड़क जाइये।

नवाब—कहिए, कहिए! जरूर कहिए! आपको कसम है। मुझे यकीन हो गया कि आप दूर की कौड़ी लाये होंगे।

अच्छे मिर्जा—(कतारे को खड़ा करके) कुरबान जाऊँ, अगर खुश्के का दरख्त होगा, तो इस कतारे के बराबर ही होगा, न जौ भर बड़ा, न तिल भर छोटा।

नवाब—वाह मीर साहब, वाह, क्या बात निकाली!

मुसाहब—सुभान अल्लाह मीर साहब, क्या सूझ-बूझ है!

आजाद—आप तो अपने वक्त के लाल बुझक्कड निकले। मालूम होता है, सफर बहुत किया है।

अच्छे मिर्जा—कौन, मैंने सफर! कसम लो, जो नखास से बाहर गया हूँ। मगर, कुरबान जाऊँ, लड़कपन ही से जहीन था। अब्बाजान तो बिलकुल बेवकूफ थे, मगर अम्माँजान तो बला की औरत थीं, बात में बात पैदा करती थीं।

इतने मे गुल-गपाडे की आवाज आयी। अंदर से मुबारकक़दम लौंडी सिर पीटती हुई आयी—हुजूर, मैं सदके, जल्दी चलिए, यह हंगामा कहाँ हो रहा है? बड़ी बेगम साहबा खड़ी रो रही हैं कि मेरे बच्चे पर आँच न आ जाय।

नवाब साहब जूतियाँ छोडकर अंदर भागे। दरवाजे सब बंद! अब किसी को हुक्म नहीं कि जोर से बोले। इतने मे एक मुसाहब ने ड्योढ़ी पर से पुकारा—हुजूर, फिर आखिर मियाँ आजाद किस मरज की दवा हैं? गँडेरी छीलने के काम के नहीं, किवाम बनाना नहीं जानते, बटेर मुठियाना नहीं आता, इनको भेज कर दरियाफ्त न कराइये कि दंगा कहाँ हो रहा है।

मुबारकक़दम—हाँ, हाँ भेज दीजिए; कहिए, कुत्ते की चाल जायें और बिल्ली की चाल आयें।

मियाँ आजाद ने कटार सँभाली और बाहर निकले। राह में लोगों से पूछते जाते हैं कि भाई, यह फ़िसाद क्या है? एक ने कहा, अजी चिकमंडी में छुरी चली। पाँच-चार क़दम आगे बढ़े, तो दो आदमी बातें करते जाते थे कि पंसारी ने पुड़िया में कद्दू के बीजों की जगह जमाल-गोटा बाँध दिया। गाहक ने बिगड़ कर पंसारी की गर्दन नापी। और दस क़दम चले तो एक आदमी ने कहा, वह तो कहिए खैरियत गुजरी कि जाग हो गयी नहीं तो भेड़िया घर भर को उठा ले जाता। यह भेड़िया कैसा जी? हुजूर, एक मनिहार के घर से भेड़िया तीन-बकरियाँ, दो मेंढे, एक खरहा और एक खाली पिंजड़ा उड़ा ले गया। उसकी औरत को भी पीठ पर लाद चुका था कि मनिहार जाग उठा। अब आजाद चकराये कि भाई अजब बात है, जो है नयी सुनाता है। करीब पहुँचे तो देखा, पंद्रह-बीस आदमी मिल कर छप्पर उठाते हैं और गुल मचा रहे हैं। जितने मुँह उतनी बातें। और हँसी तो यह आती है कि नवाब साहब बदहवास हो कर घर के अंदर हो रहे। वहाँ से लौट कर यह किस्सा बयान किया, तो लोगों की जान में जान आयी, दरवाजे खुले, फिर नवाब साहब बाहर आये।

नवाब—मियाँ आजाद, तुम्हारी दिलेरी से आज जी खुश हो गया। आज मेरे यहाँ खाना खाना। आप ढाल नहीं बाँधते।

आज़ाद—हुजूर, ढाल तो जनानों के लिए है, हम उम्र भर एक-अंग लड़ा किये, तलवार ही से चोट लगायी और उसी पर रोकी, या खाली दी या काट गये। एक दिन आपको तलवार का कुछ हुनर दिखाऊँगा, आपकी आँखों में तलवार की बाढ़ से सुरमा लगाऊँगा।

नवाब—ना साहब, यह खेल उजड्डपन के हैं, मेरी रूह काँपती है, तलवार की सूरत देखते ही जूड़ी चढ़ आती है। हाँ, मिर्ज़ा साहब जीवट के आदमी हैं। इनकी आँखों में सुरमा लगाइये, यह उफ़ करने वाले नहीं।

अच्छे मिर्ज़ा—कुरबान जाऊँ हुजूर, अब तो बाल पक गये, दाँत चूहों की नज़्र हुए, कमर टेढ़ी हुई, आँखों ने टका सा जवाब दिया, होश-हवास चंपत हुए। क्या कहूँ हुजूर, जब लोगों को गँड़ेरियाँ चूसते देखता हूँ, तो मुँह देख कर रह जाता हूँ।

इतने में मियाँ कमाली, मियाँ झम्मन और मियाँ दुन्नी भी आ पहुँचे।

कमाली—खुदावंद, आज तो अजीब ख़बर सुनी, हवास जाते रहे। शहर भर में खलबली मची है, अल्लाह बचाये, अबकी गरमी की फसल खैरियत से गुजरती नहीं नज़र आती, आसार बुरे हैं।

नवाब—क्यों? क्यों? खैर तो है? क्या क़यामत आने वाली है या आफ़ताब सवा नेजे पर हो रहा? आखिर माजरा क्या है, कुछ बताओ तो सही।

अच्छे मिर्जा—ऐ हुजूर, यह जब आते हैं, एक नया शिगोफा छोड़ते हैं। खुदा जाने, कौन इनके कान में फूँक जाता है। ऐसी सुनायी की नशा हिरन हो गया, जम्हाइयाँ आने लगीं।

कमाली—अजी, आप किस खेत की मूली हैं, हमसे तो बड़े-बड़ों के नशे हिरन हुए हैं। जब पहली तारीख आयेगी, तो आँखें खुल जायँगी, आटे-दाल का भाव मालूम हो जायगा। और दो-चार दिन मीठे टुकड़े उड़ा लो। वाह साहब, हम तो ढूँढ़-ढाँढ़ कर खबरें लायें, आप दिनभर पीनक में ऊँघा करे, और हमी को उल्लू बनायें। पहली को कलई खुल जायगी, बचा, सूरत बिगड़ जाय तो सही।

नवाब—क्या ! क्या ! पहली तारीख कैसी ? अरे मियाँ, तुम तो पहेलियाँ बुझवाते हो, आखिर पहली को क्या होनेवाला है ?

कमाली—ऐ हुजूर, यह न पूछिए, बस, कुछ कहा नहीं जाता। एक हलवाइन अभी जवान-जहान है। मारे हौके के औटा हुआ दूध जो पी गयी तो पेट फूल कर कुप्पा हो गया। किसी ने कुछ बताया, किसी ने कुछ नुस्खा पिलाया; मगर वह अंटा-ग़ाफ़िल हो गयी। अब सुनिए कि जब चिता पर जाने लगी, कुलबुला कर उठ बैठी। अरे राम ! अरे बाप-रे-बाप ! यू का भवा ? हलवाइयों ने वह बम-चख मचायी कि कुछ न पूछिए। 'यू देखो, ल्हास हिलत है ! अरे यू का अंधेर भवा ?' आखिरकार दो-चार हलवाइयों ने जी कड़ा करके लाश को घसीट लिया और झटपट कफ़न फाड़ कर उसे निकाला, तो टैंयाँ सी उठ बैठी। हुजूर, कसम है खुदा की, उसने वह वह बातें बयान कीं कि कही नहीं जातीं। जब मरी तो जमराज के दूतों ने मुझे उठा कर भगवान के पास पहुँचाया, सीता जी बैठी पूरी बेलत रहैं, हमका देखकै भगवान बोले कि इसको ले जाओ। मुझे उसकी बोली तो याद नहीं, मगर मतलब यह था कि पहली को बड़ा अँधेरा घुप छा जायगा और तूफान आयेगा, जितने गुनहगार बंदे हैं सब जलाये जायँगे, और अफीमची जिस घर में होंगे उसको फ़रिश्ते जला कर खाक-सियाह कर देंगे।

नवाब—मिर्जा साहब, ये बोरिया-बँधना उठाइए, आपका यहाँ ठिकाना नहीं। नाहक कहीं फ़रिश्ते मेरी कोठी फूँक दें तो कहीं का न रहूँ। बस, बकचा सँभालिए, कहीं और बिस्तर जमाइए।

अच्छे मिर्जा—कुरबान जाऊँ हुजूर, यह बड़ा बेईमान आदमी है। हुजूर तो भोलेभाले रईस हैं, जिसने जो कहा मान लिया। भला कहीं फ़रिश्ते घर फूँका करते हैं ? मुझ बुड्ढे को न निकालिए, कई पुश्तें इसी दरबार में गुजर गयीं, अब किसका दामन पकड़ूँ ? अरे वाह रे झूठे, अच्छी बेपर की उड़ायी, हलवाइन मरी भी उठी, बेसिरपैर की बात।

नवाब—खैर, कुछ भी हो, आप अपना सुबीता करे। मेरे [illegible] कियत कहीं फरिश्ते फूँक दे तो बस ! आप हैं किस मरज की [illegible] करते हैं।

अच्छे मिर्ज़ा—वाह री किस्मत ! यहाँ जान लड़ा दी, बकरे की जान गयी, खानेवाले को मज़ा न आया। इस शैतान से खुदा समझे, जिसने मेरे हक में काँटे बोये। खुदा करे, इसका आज के सातवें ही दिन जनाज़ा निकले। जैसे ही आ कर बैठा, मेरी बायीं आँख फड़कने लगी, तो यह गुल खिला।

नवाब साहब मुसाहबों को यह नादिरी हुक्म दे कर जनानखाने में चले गये कि मिर्ज़ा को निकलवा दो। उनके जाते ही मिर्ज़ा की ले-दे शुरू हो गयी।

कमाली—मिर्ज़ा साहब, अफीम का डब्बा बगल में दबाइए और चलते-फिरते नज़र आइए। सरकार का नादिरी हुक्म है और छोटी बेगम साहिबा महनामथ मचा रही हैं कि इस बुड्ढे को खड़े-खड़े निकाल दो। सो अब खिसकिए, नहीं बुरी होगी।

अम्मन—वाजिबी बात है, सरकार चलते-चलते हुक्म दे गये थे। हम लोग मजबूर हैं, अब आप अपना सुबीता कीजिए, अभी सवेरा है, नहीं हम पर पिट्टस पड़ेगी। और भाई, जब फरिश्तों के आने का डर है तो कोई तुमको क्योंकर अपने घर में रहने दे ? कहीं एक ज़रा सी चिनगारी रख दें, तो कहिए मकान जल कर खाकसियाह हो गया कि नहीं, फिर कैसी होगी ?

अच्छे मिर्ज़ा—अबे, तो फ़रिश्ते कहीं गाँव जलाया करते हैं। वह ऊटपटाँग बातें बकता है। लो साहब, हमारे रहने में जोखिम है, जो आठों पहर ड्योढ़ी पर बने रहते हैं। अच्छा अड़ंगा दिया।

अम्मन—अड़ंगा-बड़ंगा मैं नहीं जानता, अब आप खसकने की ठहराइए, बहुत दिन मीठे टुकड़े उड़ाये, चुगलियाँ खा-खा कर रईस का मिजाज बिगाड़ दिया, किसी से ज़रा सी खता हुई और आपने जड़ दी। 'भुस में चिनगी डाल जमालो अलग खड़ी।' पचासों भलेमानसों की रोटी ली। इनसान से गलती हो ही जाती है, यह चुगली खाना क्या माने। ओ गफूर मिर्ज़ा ने तुम्हें भी तो उखाड़ना चाहा था ?

गफूर—अरे, यह तो अपने बाप की जड़ खोदनेवाले आदमी हैं, भीतर से बाहर तक कोई तो इनसे खुश नहीं।

दुल्ली—मिर्ज़ा, अगर कुछ हया है तो इस मुसाहबी पर लात मारो; जिस अल्लाह ने मुँह चीरा है वह रोज़ी भी देगा।

मुबारककदम—गफूर ! गफूर ! छोटी बेगम साहबा का हुक्म है कि इस मुए अफीमची को शहर से निकाल दो। कहती हैं, जब तक यह न टलेगा दाहने हाथ का खाना हराम है।

अच्छे मिर्ज़ा—शहर से निकाल दो। तमाम शहर पर बेगम साहब का क्या इजारा है ? वह अभी कल आयीं, यहाँ इस घर में उम्र बीत गयी।

कमाली—अबे ओ नमकहराम, छोटा मुँह बड़ी बात ! बेगम साहबा के कहने को टुलखता है। इतनी पड़ेंगी बेभाव की कि याद करोगे, चाँद गंजी कर दी जायगी।

अच्छे मिर्ज़ा—अब जो यहाँ पानी पिये उस पर लानत !

यह कह कर मिर्जा ने अफीम की डिबिया उठायी और चले। मुसाहबों ने उनके जलाने के लिए कहना शुरू किया—मिर्जा जी, कभी-कभी आ जाया कीजिएगा। एक बोला—लाइए डिबिया, मैं पहुँचा दूँ। दूसरा बोला—कहिए तो घोडा कसवा दूँ। मिर्जा ने किसी को कुछ जवाब न दिया, चुपके से चले ही गये।

इधर पहली तारीख आयी तो मियाँ कमाली चकराये कि अब मैं झूठा बना, और साख गयी। लोगों ने नवाब को चंग पर चढाया कि हुजूर, जो हम कहें वह कीजिए, तो आज की बला टल जाय। नवाब ने मुसाहबों को सारा अख्तियार दे दिया। फिर क्या था, एक तरफ ब्राह्मण देवता बैठे मंत्रो का जप कर रहे हैं, हवन हो रहा है, और स्वाहा-स्वाहा की आवाज आ रही है, दूसरी तरफ हाफिज जी कुरान पढ़ रहे हैं, और दीवानखाने में महफिल जमी हुई है कि फरिश्तों को झँझोटी की धुन सुना कर खुश कर लिया जाय।

झम्मन—मिर्जा जी न सिधारते तो खुदा जाने इस वक्त क्या कुछ हो गया होता।

नवाब—होता क्या, कोठी की कोठी भक से उड जाती। अब किसी अफीमची को आने तक न दूँगा।

३

नवाब साहब के दरबार में दिनोंदिन आज़ाद का सम्मान बढ़ने लगा। यहाँ तक कि वह अक़्सर खाना भी नवाब के साथ ही खाते। नौकरों को ताकीद कर दी गयी कि आज़ाद का जो हुक्म हो, वह फौरन बजा लायें, ज़रा भी मीनमेख न करें। ज्यों-ज्यों आज़ाद के गुण नवाब पर खुलते जाते थे, और मुसाहबों की किरकिरी होती जाती थी। अभी लोगों ने अच्छे मिर्ज़ा को दरबार से निकलवाया था, अब आज़ाद के पीछे पड़े। यह सिर्फ़ पहलवानी ही जानते हैं, गदके और बिनवट के दो-चार हाथ कुछ सीख लिये हैं, बस, उसी पर अकड़ते फिरते हैं कि जो कुछ हूँ, बस, मैं ही हूँ। पढ़े-लिखे वाजिबी ही वाजिबी हैं, शायरी इन्हें नहीं आती, मजहबी मुआमिलों में बिलकुल कोरे हैं।

एक दिन नवाब साहब के सामने एक साहब बोल उठे—हुजूर, इस शहर में एक आलिम आया है, जो मंतिक (*न्याय*) के जोर से झूठ को सच कर दिखाता है। मगर खुदा को नहीं मानता, पक्का मुनकिर (नास्तिक) है। मियाँ आज़ाद को तो मंतकी बनने का दावा है। कहिए, उस आलिम को नीचा दिखायें।

आज़ाद—हाँ! हाँ, जब कहिए तब, मुझे तो ऐसे मुनकिरों की तलाश रहती है। लाइए मंतकी साहब को, खुदा का वह पक्का सबूत दूँ कि वह खुद फड़क जायें, जरा यहाँ तक लाइए तो सही, भागे राह न मिले। जो फिर इस शहर में मुँह दिखायें, तो आदमी न कहना।

नवाब—हाँ! हाँ! मीर साहब, जरा उनको फाँस-फूँस *कर लाइए, तो मियाँ* आज़ाद के जौहर तो खुले।

मीर साहब ने जोर से हुक्के के दो-चार दम लगाये और झप से उस आलिम को बुला लाये। हजारों आदमी बहस सुनने के लिए जमा हो गये, गोया बटेरों की पाली है। इतनी भीड़ थी कि थाली उछालिए तो सिर ही सिर जाय। आलिम ने आते ही पूछा कि कौन साहब बहस करेंगे? मियाँ आज़ाद बोले—हम हैं। अब सब लोग बेक़रार हो रहे हैं कि देखें, क्या सवाल-जवाब होते हैं, चारों तरफ़ खिचड़ी पक रही है।

आलिम—जनाब, आप तो किसी अखाड़े के पट्ठे मालूम होते हैं, सूरत से तो ऐसा मालूम होता है कि आपको मंतिक छू भी नहीं गयी।

आज़ाद—जी, सूरत पर न जाइएगा, कोई सवाल कीजिए, तो हम जवाब दें।

आलिम—अच्छा, पहले इन तीन सवालों का जवाब दीजिए—

(१) खुदा है, तो हमें नजर क्यों नहीं आता?

(२) शैतान दोजख़ में जलाया जायगा। भला नारी (आग से बने हुए) को आग का क्या डर? आग आग में नहीं जल सकती।

(३) जो करता है, खुदा करता है, फिर इन्सान का क़सूर क्या।

चारों तरफ सन्नाटा पड़ गया कि वाह, क्या आलिम है, कैसे कड़े सवाल किये है कि कुछ जवाब ही नहीं सूझता। बिगड़े दिल लोग दाँत पीस रहे हैं कि बाहर निकले तो गरदन भी नापे। मियाँ आजाद कुछ देर तक तो चुपचाप खड़े रहे, फिर एक ढेला उठा कर उस आलिम की खोपडी पर मारा, बेचारा हाय कर के बैठ गया। अच्छे जंगली से पाला पड़ा, मैं बहस करने आया था या लप्पा-डुग्गी। जब कुछ जवाब न सूझा तो पत्थर मारने लगे। जो मैं भी एक पत्थर खींच मारूँ तो कैसी हो? नवाब साहब, आप ही इन्साफ कीजिए।

नवाब—भाई आजाद, हमें यह तुम्हारी हरकत पसंद नही आयी। इस ढेलेबाजी के क्या माने? माना कि मुनकिर गरदन मारने लायक होता है; मगर बहस करके क़ायल कीजिए, यह नहीं कि जूता खींच मारा या ढेला तान कर मारा।

कमाली—हुजूर, आलिम का जवाब देना कारेदारद है। ढेलेबाज़ी करना दूसरी बात है।

झम्मन—अजी, इसने बड़े-बडे आलिमों को सर कर दिया, भला आजाद क्या इसके मुँह आयँगे।

नवाब—यह पत्थर क्यों फेका जी, बोलते क्यों नहीं?

आजाद—हुजूर, मैंने तो इनके तीनों सवालों का वह जवाब दिया कि अगर कोई कदरदाँ होता तो गले से लगा लेता और करोड़ों रुपये इनाम भी देता, सुनिए—

(१) खुदा है, सो हमें नजर क्यों नहीं आता?

जवाब—अगर उस ढेले से उनको चोट लगी, तो चोट नजर क्यों नहीं आती?

सुभान अल्लाह का दौंगड़ा बरस गया। वाह उस्ताद! क्या जवाब दिया है कि दाँत खट्टे कर दिये।

(२) शैतान को जहन्नुम में जलाना बेकार है, वह तो खुद नारी (अग्नि मय) है।

जवाब—इनसे पूछिए कि यह मिट्टी के ही पुतले हैं या नहीं? इनकी खोपड़ी मिट्टी की बनी है या रबड़ की? फिर मिट्टी का ढेला लगा, तो सिर क्यों भन्ना गया?

तमाशाइयों ने गुल मचाया—सुभान अल्लाह! वाह मियाँ आजाद! क्या मुँह तोड़ जवाब दिया है।

(३) जो करता है खुदा करता है।

जवाब—फिर ढेले मारने का इलजाम हम पर क्यों है?

चारों तरफ टोपियाँ उछलने लगीं—वाह मेरे शेर! क्या कहना है! कहिए, अब तो आप खुदा के कायल हुए, या अब भी कुछ मीनमेख है? लाख बातों की एक बात यह है कि जब आपका सिर मिट्टी का है और मिट्टी ही का ढेला मारा, तब आपकी खोपडी क्यों भन्नायी? मियाँ मुनकिर बहुत झेंपे, समझ गये कि यहाँ शोहदों का जमघट है, चुपके से अपने घर की राह ली। आजाद की और भी धाक बँधी। अब तक तो पहलवान

और फिकैत ही मशहूर थे, अब आलिम भी मशहूर हुए। नवाब ने पीठ ठोंकी—वाह, क्यों न हो! पहले तो मैं झल्लाया कि ढेलेबाजी कैसी; मगर फिर तो फड़क गया।

मुसाहबों का यह वार भी खाली गया, तो फिर हँडिया पकने लगी कि आजाद को उखाड़ने की कोई दूसरी तदबीर करनी चाहिए। अगर यह यहाँ जम गया, तो हम सभी को निकलवा कर छोड़ेगा। यह राय हुई कि नवाब साहब से कहा जाय, हुजूर, आजाद को हुक्म दें कि बटेरों को मुटियायें, बटेरों को लड़ायें। फिर देखें, बचा क्या करते हैं। बगलें न झाँकने लगें तो सही। यह हुनर ही दूसरा है।

आपस में यह सलाह कर एक दिन मियाँ कमाली बोले—हुजूर, अगर मियाँ आजाद बटेर लड़ायें, तो सारे शहर में हुजूर की धूम हो जाय।

नवाब—क्यों मियाँ आजाद, कभी बटेर भी लड़ाये हैं?

झम्मन—आज हमारी सरकार में जितने बटेर हैं, उतने तो मटियाबुर्ज के चिड़िया-खाने में भी न होंगे। एक-एक बटेर हजार-हजार की खरीद का, नोकदम के बनाने में तोड़े-के-तोड़े उड़ गये, सेरों मोती तो पीस कर मैंने अपने हाथों खिला दिये हैं, कुछ दिनों रोज़ खरल चलता था। मगर आप भी कहेंगे कि हम आदमी हैं! इस ड्योढ़ी पर इतने दिनों से हो, अब तक बटेरखाना भी न देखा? लो आओ, चलो, तुमको सैर करायें।

यह कह कर आजाद को बटेरखाने ले गये। मियाँ आजाद क्या देखते हैं कि चारों तरफ काबुकें ही काबुकें नजर आती हैं, और काबुकें भी कैसी, हाथीदाँत की तीलियाँ, उन पर गंगाजमुनी कलस, कारचोबी छतें, कामदार मखमली गिलाफें, रंगबिरंग सोने-चाँदी की नन्हीं-नन्हीं कटोरियाँ, जिनमें बटेर अपनी प्यारी-प्यारी चोंचों से पानी पियें, पाँच पाँच छह-छह सौ लागत की काबुकें थीं, खूँटियाँ भी रंगबिरंगी। हुजी मियाँ एक-एक काबुक उतार कर बटेर की तारीफ करने लगे, तो पुल बाँध दिये। एक बटेर को दिखा कर कहा—अल्लाह रखे, क्या मझोला जानवर है! मफ़शिकन (दलसंहार) जो आपने सुना हो, तो यही है। लंदन तक खबर के कागज में इनका नाम छप गया। मेरी जान की कसम, जरा इसकी आनबान तो देखिएगा। हाय, क्या बाँका बटेर है! यह नवाब साहब के दादाजान के वक्त का है। ऐसे रईस पैदा कहाँ होते हैं! दम के दम में लाखों फूँक दिये, रुपये को ठीकरा समझ लिया। पतंगबाजी का शौक हुआ, तो शहर भर के पतंगबाजों को निहाल कर दिया, कनकौवेवाले बन गये। अजी, और तो और, लौंडे, जो गली-कूचों में लगर और लग्गे ले लेकर डोर लूटा करते हैं, रोज डोर बेच-बेच कर चखौतियाँ करते थे। अफीम का शौक हुआ, तो इतनी खरीदी कि टके सेर से सोलह रुपये सेर तक बिकने लगी। मालवा खाली, चीन खुक्खल, बंबई तक के गन्ने आते थे।

आज़ाद—ऐसे ही कितने रईस बिगड़ गये।

कमाली—रईसों के बनने-बिगड़ने की क्या फिक्र! यहाँ तो जो शौक़ किया, ऐसा ही किया, फिर भला बटेरबाजी में उनके सामने कौन ठहरता। उनके वक़्त का अब यह

एक सफशिकन बाकी रह गया है। बुजुर्गों की निशानी है। बस, यह समझिए कि मुहम्मद-अली शाह के वक़्त में खरीदा गया था। अब कोई सौ वर्ष का होगा, दो कम या दो ऊपर, मगर बुढ़ापे में भी वह दमखम है कि मुर्ग को लपक कर लात दे तो वह भी चें बोल जाय। पारसाल की दिल्लगी सुनिए, नवाब साहब के मामूँ तशरीफ़ लाये। उनमें भी रियासत की बू है। कनकौवा तो ऐसा लड़ाते हैं कि मियाँ विलायत उनके आगे पानी भरें। दो-दो तोले अफीम पी जायँ और वही खमदम! बटेरबाजी का भी परले सिरे का शौक है। उनका ज़फरपैकर तो बला का बटेर है, बटेर क्या है, शेर है। मेरे मुँह से निकल गया कि हुजूर को तो बटेरों का बहुत शौक है, करोड़ों ही बटेर देख डाले होंगे, मगर सफ-शिकन सा बटेर तो हुजूर ने भी न देखा होगा। बोले, इसकी हकीकत क्या है, जफर-पैकर को देखो तो आँखें खुल जायँ, बढ़कर एक लात दे, तो सफ़शिकन क्या, आपको नोकदम पाली बाहर कर दे। हौसला हो, तो मँगवाऊँ।

'दूसरे दिन पाली हुई। हजारों आदमी आ पहुँचे। शहर भर में धूम थी कि आज बडे मार्के का जोड़ है। जफ़रपैकर इस ठाट से आया कि जमीन हिल गयी, और मेरा तो कलेजा दहलने लगा। मगर शफशिकन ने उस दिन आबरू रख ली, तभी तो नवाब साहब इसको बच्चों से भी ज्यादा प्यार करते हैं। पहले इसको दाना खिलवा लेते हैं, फिर कहीं आप खाते हैं। एक दिन खुदा जाने; बिल्ली देखी या क्या हुआ कि अपने आप फड़कने लगा। नवाब समझे कि बूँदा हो गया, फिर तो ऐसे धारोधार रोये कि घर भर में कुहराम मच गया। मैंने नवाब साहब को कभी रोते नहीं देखा। मुहर्रम की मजलिसों मे एक आँसू नहीं निकलता। जब बडे नवाब साहब सिधारे तो आँसू की एक बूँद न गिरी। यह बटेर ही ऐसा अनमोल है। सच तो यह है कि उसने उस दिन नवाब की सात पीढ़ियों पर एहसान किया। वल्लाह, जो कहीं घट जाता, तो मैं तो जंगल की राह लेता। मियाँ, जग में आबरू ही आबरू तो है, और क्या। खैर साहब, जैसे ही दोनों चक्की खा चुके, जफरपैकर बिजली की तरह सफशिकन की तरफ चला। आते ही दबोच बैठा, चोटी को चोंच से पकड़ कर ऐसा झपेटा कि दूसरा होता तो एक रगडे में फुर्र से भाग निकलता। नवाब का चेहरा फक हो गया, मुँह पर हवाइयाँ छूटने लगीं कि इतने में सफशिकन लौट ही तो पड़ा। वाह मेरे शेर! खूब फिरा!! पाली भर में आवाज गूँजने लगी कि वह मारा है! एक लात ऐसी जमायी कि जफरपैकर ने मुँह फेर लिया। मुँह का फेरना था कि सफशिकन ने उचक कर एक झँझौटी बतलायी। वाह पट्ठे, और लगा! आखिर जफरपैकर नोकदम पाली बाहर भागा। चारों तरफ टोपियाँ उछल गयीं। आज यह बटेर अपना सानी नहीं रखता! मियाँ आजाद, अब आप बटेरखाना अपने हाथ मे लीजिए।'

नवाब—वल्लाह, यही मैं भी कहनेवाला था।

झम्मन—काम जरा मुश्किल है।

आजाद—हुजूर फ़रमाते हैं, तो बटेरखाने की निगरानी मैं ही करूँगा।

कहने को तो आजाद ने यह कह दिया; मगर न कभी बटेर लड़ाये थे, न जानते थे कि इनको कैसे लड़ाया जाता है। घबराये, अगर कहीं नवाब के बटेर हारे तो सारी बला मेरे सिर पर पड़ेगी। कुछ ऐसी तदबीर करनी चाहिए कि यह बला टल जाय। जब शाम हुई तो वह सबकी नजरें बचा कर बटेरखाने में गये और काबुकों की खिड़कियाँ खोल दीं बटेर सब फ़ुर्र से भाग गये। पिंजरे खाली हो गये। कई पुश्तों की बसायी हुई बस्ती उजड़ गयी। बटेरों को उड़ा कर आजाद ने घर की राह ली।

दूसरे दिन मियाँ आजाद सबेरे मुँह अँधेरे बाजार में गश्त करते हुए नवाब साहब की तरफ चले। बाज़ार भर में सन्नाटा! हलवाई भट्ठी में सो रहा है, नानबाई बरतन धो रहा है, बजाजा बंद, कुँजड़ों की दूकान पर अरुई न शकरकंद, जौहरियों की दूकान में ताला पड़ा हुआ है। मगर तंबाकूवाला जगा हुआ है। मेहतर सड़क पर झाड़ू दे रहा है। मैदेवाला पिसनहारियों से आटा ले रहा है। इतने में देखते क्या हैं कि एक आदमी लुंगी बाँधे, हाथ में चिलम लिये, बौखलाया हुआ घूम रहा है कि कहीं से एक चिनगारी मिल जाय तो दम लगे, धुआँधार हुक्का उड़े। जहाँ जाते हैं, 'फिर'-'भाग' की आवाज आती है। भाई, ऐसा शहर नहीं देखा जहाँ आग माँगे न मिले, जानों इसमें छप्पन टके खर्च होते हैं! मुहल्लेवालों को गालियाँ देते हुए नानबाई की दूकान पर पहुँचे और बोले—बड़े भाई, एक जरी आग तो झप से दे देना, मेरा यार, ला तो झटपट।

नानबाई—अच्छा, अच्छा, तो दूकान से अलग रहो, छाती पर क्यों चढ़े बैठते हो? यहाँ सौ धंधे करने हैं, आपकी तरह कोई बेफ़िकर तो हूँ नहीं कि तड़का हुआ, चिलम ली, और लगे कौड़ी दूकान माँगने! मिल गयी तो खैर, नहीं तो गालियाँ देनी शुरू कीं। सबेरे-सबेरे अल्लाह का नाम न रामराम। चिलम लिये दूकान पर डट गये। वाह, अच्छी दिल्लगी है! ऐसी ही तलब है तो एक कंडी क्यों नहीं गाड़ रखते कि रात भर आग ही आग रहे। ऐसे ही उचक्के तो चोरी करते हैं। आँख चूकी, और माल गायब! क्या सहल लटका है कि चिलम ले कर आग माँगने आये हैं। किसी दिन मैं चिलमविलम न तोड़ताड़ कर फेंक दूँ। तुम तड़के-तड़के दूकान पर न आया करो जी, नहीं तो किसी दिन ठायँ-ठायँ हो जायेगी।

हज़रत की आँखों से खून टपकने लगा, दाँत पीस कर रह गये। यहाँ से चले, तो हलवाई की दूकान पर पहुँचे और बोले—मियाँ एक जरा सी आग देना, भाई हो न! हलवाई का दूध बिल्ली पी गयी थी, झल्लाया बैठा था, समझा कि कोई फ़क़ीर भीख माँगने आया है। झिड़क कर बोला कि और दूकान देखो। सबेरे-सबेरे कौड़ी की पड़ गयी। जाता है, कि दूँ धक्का! रहे कहीं, मरे कहीं, कौड़ी माँगने यहाँ मौजूद। 'दुनिया भर के मुर्दे नानामऊ घाट!' अब खड़ा घूरता क्या है?

चिलमबाज—कछ वाही ऱ्भा है बे! अबे, हम कोई फकीर हैं, कहीं मैं आ कर एक

धस्सा दूँ न ! लो साहब ! हम तो आग माँगने आये हैं, यह हमको भिखमंगा बनाता है ! अंधा है क्या ?

हलवाई—भिखमंगा नहीं, तू है कौन ? लँगोटी बाँध ली और चले आग माँगने ! तुम्हारे बाबा का कर्ज खाया है क्या ?

बेचारे यहाँ से भी निराश हुए, चुपके से कान दबाये चल खड़े हुए। आज तड़के-तड़के किसका मुँह देखा था कि जहाँ जाते हैं, झौड़ हो जाती है। इतने में देखा कि एक सुनार की दूकान पर आग दहक रही है। उधर लपके। सुनार दूकान पर न था। यह तो हुक्के की फ़िक्र में चौंधियाये हुए थे ही, झप से दूकान पर चढ़ गये। सुनार भी उसी वक्त आ गया और इनको देख कर आगभभूका हो गया। तू कौन है बे ? वाह, खाली दूकान पर क्या मज़े से चढ़ आये ! (एक धप जमा कर) और जो कोई अदद जाता रहता ? इतने में दस-पाँच आदमी जमा हो गये। क्या है मियाँ, क्या है ? क्यों भले आदमी की आबरू बिगाड़े देते हो ?

सुनार—है क्या ! यह हमारी दूकान पर चोरी करने आये थे।

चिलमबाज—मैं चोर हूँ, चोर की ऐसी ही सूरत होती है ?

एक आदमी—कौन ! तुम ! तुम तो हमें पक्के चोर मालूम होते हो। अच्छा, तुम फिर उनकी दूकान पर गये क्यों ? दूकानदार नहीं था, तो वहाँ तुम्हारा क्या काम ? जो कोई गहना ले भागते, तो यह तुम्हें कहाँ ढूँढ़ते फिरते ?

सुनार—साहब, इनका फिर पता कहाँ मिलता, जाते जमुना उस पार। चलो थाने पर।

लोगों ने सुनार को समझाया, भाई, अब जाने दो। देखो जी, खबरदार, अब किसी की दूकान पर न चढ़ना, नहीं पथे जाओगे। सुनार ने छोड़ दिया। जब आप चलने लगे, तो उसे इन पर तरस आ गया। बोला, अच्छा आग लेते जाओ। हज़रत ने आग पायी और घर की राह ली। तड़के-तड़के अच्छी बोहनी हुई, चोर बने, मार खायी, झिड़के गये, थाने जाते-जाते बचे, तब कहीं आग मिली।

मियाँ आजाद यह दिल्लगी देख कर आगे बढ़े और नवाब की ड्योढ़ी पर आये।

नवाब—आज इतना दिन चढ़ गया, कहाँ थे ?

आजाद—हुजूर, आज बड़ी दिल्लगी देखने में आयी, हँसते-हँसते लोट जाइएगा। तलब भी क्या बुरी चीज है।

यह कह कर आज़ाद ने सारी दास्तान सुनायी।

नवाब—खूब दिल्लगी हुई। आग के बदले चपते पड़ीं। अरे मियाँ, ज़रा खोजी को बुलाना। हाँ, जरा खोजी के सामने सुनाना। किसी दिन यह भी न पिटें।

खोजी नवाब के दरबार के मसखरे थे। ठेंगना कद, काले कौए का सा रंग, बदन पर मास नहीं, पर आँखों में सुरमा लगाये हुए। लुढ़कते हुए आये और बोले—गुलाम को हुजूर ने याद किया है ?

नवाब—हाँ, इस वक्त किस फ़िक्र में थे ?

खोजी—खुदावंद, अफीम घोल रहा था, और कोई फिक्र तो हुजूर की बदौलत करीब नहीं फटकने पाती। मैं फ़िक्र क्या जानूँ, 'जोरू न जाँता, अल्लाह मियाँ से नाता।'

नवाब—अच्छा खोजी, इस हौज में नहाओ तो एक अशर्फ़ी देता हूँ।

खोजी—हुजूर, अशर्फियाँ तो आपकी जूतियों के सदके से बहुत सी मिल जायँगी, मगर फिर जीना कठिन हो जायगा। न मरे सही, लेकिन 'नकटा जिया बुरे हवाल!' न साहब, मुझे तो कोई एक गोते पर एक अशर्फ़ी दे, तो भी पानी में न पैठूँ, पानी की सूरत देखे बदन काँप उठता है।

दुन्नी—कैसे मर्द हो कि नहाने से डरते हो!

खोजी—हम नहीं नहाते तो आप कोई काजी हैं?

आजाद—अजी, सरकार का हुक्म है।

खोजी—चलिए, आपकी बला से। कहने लगे सरकार का हुक्म है। फिर कोई अपनी जान दे।

आज़ाद—हुजूर, जो इस वक्त यह हौज में धम से न कूद पड़ें, तो अफ़ीम इन्हें न मिले।

खोजी—आप कौन बीच मे बोलनेवाले होते हैं? अरसठ बरस से तो मैं अफीम खाता आया हूँ, अब आपके कहने से छोड़ दूँ, तो कहिए, मरा या जिया?

नवाब—अच्छा भाई, जाने दो। दूध खाओगे?

खोजी—वाह खुदावंद, नेकी और पूछ-पूछ। लेकिन जरी मिठास खूब हो। शाहजहाँपुर की सफेद शक्कर या कालपी की मिश्री घोलिएगा। अगर थोड़ा सा केवड़ा भी गवड़ दीजिए तो पीते ही आँखें खुल जायँ।

इतने में एक चोबदार घबराया हुआ आया और बोला—खुदावंद, गजब हो गया। जाँबख्शी हो तो अर्ज करूँ, सब बटेर उड़ गये।

नवाब—अरे! सब उड़ गये?

चोबदार—क्या कहूँ, हुजूर, एक का भी पता नहीं।

मुसाहबों ने हाय-हाय करनी शुरू की, कोई सिर पीटने लगा, कोई छाती कूटने लगा। नवाब ने रोते हुए कहा, भाई और जो गये सो गये, मेरे सफशिकन को जो कोई ढूँढ़ लाये, हजार रुपये नक़द दूँ। इस वक्त मै जीते जी मर मिटा। अभी साँड़नी-सवारों को हुक्म दो कि पचकोसी दौरा करें। जहाँ सफशिकन मिले, समझा-बुझा कर ले ही आयें।

झम्मन—उनको समझाना, हुजूर, मुशकिल है। वह तो अरबी में बातें करते हैं। सारा क़ुरान उन्हें याद है। उनसे कौन बहस करेगा?

नवाब—मुझे तो उससे इश्क हो गया था जी, वह नोकीली चोंच, वह अकड़-अकड़

कर काकुन चुनना ! सैकड़ों पालियाँ लड़ीं, मगर कोरा आया। किस बाँकपन से झपट कर लात देता था कि पाली भर थर्रा उठती थी। उसकी बिसात ही क्या थी, मझोला जानवर, लेकिन मैदान का शेर। यह तो मैं पहले ही से जानता था कि यह बटेर की सूरत में किसी फ़कीर की रूह है। अब सुना कि नमाज भी पढ़ता था।

झम्मन—हुजूर को याद होगा कि रमजान के महीने में उसने दिन के वक्त दाना तक न छुआ, हुजूर समझे थे कि बूँदा हो गया, मगर मैं ताड़ गया कि रोजे से है।

खोजी—खुदावंद, अब मैं हुजूर से कहता हूँ कि दस-पाँच दफा मैंने अफीम भी पिला दी; मगर वल्लाह, जो जरा भी नशा हुआ हो।

कमाली—हुजूर, यकीन जानिए, पिछले पहर से सुबह तक काबुक से हक-हक की आवाज आया करती थी। गफ़ूर, तुमको भी तो हमने कई बार जगा कर सुनाया था कि सफ़शकिन खुदा को याद कर रहे हैं।

नवाब—अफसोस, हमने उसे पहचाना ही नहीं। दिल डूबा जाता है, कोई पंखा झलना।

मुसाहब—जल्दी पंखा लाओ।

नवाब—

> प्रीतम जो मै जानती कि प्रीत किये दुख होय;
> नगर ढिंढोरा पीटती कि प्रीत करै जनि कोय।

खोजी—(पीनक से चौक कर) हाँ उस्ताद, छेड़े जा। इस वक्त तो मियाँ शोरी की रूह फड़क गयी होगी।

नवाब—चुप, नामाकूल। कोई है ? इसको यहाँ से टहलाओ। यह रईसों की सोहबत के काबिल नहीं। मुझको भी कोई गवैया समझा है। यहाँ तो जी जलता है, इनके नजदीक कौवाली हो रही है।

खोजी—खुदावंद, गुलाम तो इस दम अपने आपे में नहीं। हाय, सफशिकन की काबुक खाली हो और मैं अपने आपे में रहूँ ! हुजूर ने इस वक्त मुझ पर बड़ा जुल्म किया।

नवाब—शाबाश खोजी, शाबाश ! मुआफ करना, मैं कुछ और ही समझा था। क्यों जी, साँड़नी-सवार दौड़ाया गया कि नहीं ?

सवार—हुजूर, जाता तो हूँ, मगर वह मेरी क्या सुनेंगे, कोई मौलवी भी तो साथ भेजिए, मैं तो कुछ ऊँट ही चढ़ना जानता हूँ, उनसे दलील कौन करेगा भला !

आजाद—किसी अच्छे मौलवी को बुलवाना चाहिए।

मुसाहिबों ने एक मौलाना साहब को तजवीजा। मगर यारों ने उनसे कुल दास्तान नहीं बयान की। चोबदार ने मकान पर जा कर सिर्फ इतना कहा कि नवाब साहब ने आपको याद किया है। मौलवी साहब उसके साथ हो लिये और दरबार में आ कर नवाब साहब को सलाम किया।

नवाब—आपको इसलिए तकलीफ़ दी कि मेरी आँखों का नूर, मेरे कलेजे का टुकड़ा नाराज हो कर चला गया है। बड़ा आलिम और दीनदार है, बहस करने मे कोई उससे पेश नहीं पाता, आप जाइए और उसको माकूल करके ले आइये।

मौलाना—माँ-बाप का कड़ा हक होता है। वह कैसे नादान आदमी हैं?

खोजी—मौलाना साहब, वह आदमी नहीं हैं, बटेर हैं। मगर इल्म और अक़्ल में आदमियों के भी कान काटते हैं।

कमाली—सफशिकन का नाम तो मौलाना साहब, आपने सुना होगा। वह तो दूर-दूर तक मशहूर थे। जनाब, बात यह है कि सरकार का बटेर सफशिकन कल काबुक से उड़ गया। अब यह तजवीज हुई है कि एक-एक साँडनी-सवार जाय और उसे समझा-बुझा कर ले आये। मगर ऊँटवान तो फिर ऊँटवान, वह दलील करना क्या जाने, इसलिए आप बुलाये गये हैं कि साड़नी पर सवार हों, और उनको किसी तदबीर से ले आये।

मौलाना—ठीक, आप सब के सब नशे में तो नहीं हैं? होश की बातें करो। खुद मसखरे बनते हो। बटेर भी आलिम होता है, वह भी कोई मौलवी है, ला हौल! अच्छे-अच्छे गाउदी जमा हैं। बंदा जाता है।

नवाब—यह किस कोढ़मगज को लाये थे जी? खासा जाँगलू है।

आजाद—अच्छा, हुजूर भी क्या याद करेंगे कि इतने बड़े दरबार में एक भी मंतकी न निकला। अब गुलाम ने बीड़ा उठा लिया कि जाऊँगा और सफशिकन को लाऊँगा। मुझे एक साँडनी दीजिए, मैं उसे खुद ही चला लूँगा। खर्च के लिए कुछ रुपये भी दिलवाइये, न जाने कितने दिन लग जायँ।

नवाब—अच्छा, आप घर जाइये और लैस हो कर आइए।

मियाँ आजाद घर गये तो और मुसाहिबों में खिचड़ी पकने लगी—यार, यह तो बाजी जीत ले गया। कहीं से एकआध बटेर पकड़ कर लायेगा और कहेगा, यही सफ़शिकन है। फिर तो हम सब पर शेर हो जायगा। हमको-आपको कोई न पूछेगा। खोजी जा कर नवाब साहब से बोले—हुजूर, अभी मियाँ आजाद दो दिन से इस दरबार में आये हैं, उनका एतबार क्या? जो साँड़नी ही लेकर रफूचक्कर हों, तो फिर कोई कहाँ उनका पता लगाता फिरेगा?

कमाली—हाँ खुदावंद, कहते तो सच हैं।

झम्मन—खोजी सूरत ही से अहमक मालूम होते हैं, मगर बात ठिकाने की कहते हैं। ऐसे आदमी का ठिकाना क्या?

दुन्नी—हम तो हुजूर को सलाह न देंगे कि मियाँ आजाद को साँड़नी और सफर-खर्च दीजिए। जोखिम की बात है।

नवाब—चलो, बस, बहुत न बको। तुम खुद जैसे हो, वैसा ही दूसरों को समझते हो। आज़ाद की सूरत कहे देती है कि कोई शरीफ आदमी है, और मान लिया कि

साँड़नी जाती ही रहे, तो मेरा क्या बिगड़ जायगा ? सफ़शिकन पर से लाखों सदके हैं। साँड़नी की हकीकत ही क्या।

इतने में मियाँ आज़ाद घर से तैयार होकर आ गये। अशर्फ़ियो की एक थैली खर्च के लिए मिली। नवाब ने गले लगा कर रुखसत किया। मुसाहब भी सलाम बजा लाये। आजाद साँड़नी पर बैठे और साँड़नी हवा हो गयी।

४

आजाद यह तो जानते ही थे कि नवाब के मुसाहबों में से कोई चौक के बाहर जानेवाला नहीं इसलिए उन्होंने सॉडनी तो एक सराय में बाँध दी और आप अपने घर आये। रुपये हाथ में थे ही, सवेरे घर से उठ खड़े होते, कभी सॉड़नी पर, कभी पैदल, शहर और शहर के आस-पास के हिस्सों में चक्कर लगाते, शाम को फिर साँडनी सराय में बाँध देते और घर चले आते। एक रोज सुबह के वक्त घर से निकले तो क्या देखते हैं कि एक साहब केचुललेट का धानी रँगा हुआ कुरता, उस पर रुपये गजवाली महीन शरबती का तीन कमरतोई का चुस्त अँगरखा, गुलबदन का चूड़ीदार घुटन्ना पहने, मोग निकाले, इत्र लगाये, माशे भर की नन्ही सी टोपी आलपीन से अटकाये, हाथों में मेंहदी, पोर-पोर छल्ले, आँखों में सुर्मा, छोटे पंजे का मखमली जूता पहने, एक अजब लोच से कमर लचकाते, फूँक-फूँक कर कदम रखते चले आते थे! दोनों ने एक दूसरे को खूब जोर से घूरा। छैले मियाँ ने मुसकिराते हुए आवाज दी—ऐ, जरी इधर तो देखो, हवा के घोड़े पर सवार हो! मेरा कलेजा बल्लियों उछलता है। भरी बरसात के दिन, कहीं फिसल न पड़ो, तो कहकहा उडे।

आजाद—आप अपना मतलब कहिए, मेरे फिसलने की फिक्र न कीजिए।

छैला—गिरिएगा, तो मुझसे जरूर पूछ लीजिएगा।

आजाद—बहुत खूब, जरूर पूछूँगा, बल्कि आपको साथ ले कर, गिरूँ तो सही।

छैला—खुदा की कसम, आपके काले कपडों से मैं समझा कि बनैला कुसुम के खेत से निकल पडा।

आजाद—और मै आपको देख कर यह समझा कि कोई जनाना मटकता जाता है।

छैला—वल्लाह, आपकी धज ही निराली है। यह डबल कोट और लक्कड़तोड़ बूट! जाँगलू मालूम होते हो। इस वक्त ऐसे बदहवास कहाँ बगटुट भागे जाते हो? सच कहिएगा, आपको हमारी जान की कसम।

आजाद—आज प्रोफेसर लॉक संस्कृत पर एक लेक्चर देनेवाले हैं, बड़े मशहूर आलिम हैं। योरप में इनकी बड़ी शोहरत है।

छैला—भाई, कसम खुदा की, कितने भोंडे हो। प्रोफेसर के मशहूर होने की एक ही कही। हम इतने बड़े हुए, कसम ले लो, जो आज तक नाम भी सुना हो। क्या दुलीखाँ से ज्यादा मशहूर है? भाई, जो कही 'तुम्हारे घूँघरवाले बाल' एक दफा भी उसकी जबान से सुन लो, तो उम्र-भर न भूलो। वल्लाह, क्या टीपदार आवाज है; मगर तुम ऐसे कोढमगजों को गलेबाजी से क्या वास्ता, तुम तो प्रोफेसर साहब के फेर में हो।

आपकी यह गति बनायी कि मूँछ और दाढ़ी कतरवायी, मेंहदी लगवायी और मर्द से औरत बन गये। अरे, अब तो मर्द बनो, इन बातों से बाज आओ।

छैला—जी, तो आपके प्रोफेसर लॉक के पास चला जाऊँ? अपने को आपकी तरह गड्डामी बनाऊँ। किसी गली-कूचे में निकल जाऊँ तो तालियाँ पड़ने लगें।

आजाद—अब यह फरमाइए कि इस वक्त आप कहाँ के इरादे से निकले हैं?

छैला—कल रात को तीन बजे तक एक रँगीले दोस्त के यहाँ नाच देखता रहा। वह प्यारी-प्यारी सूरतें देखने मे आयीं कि वाह जी वाह! किस काफ़िर का उठने को जी चाहता हो। जलसा बरखास्त हुआ तो बस, कलेजे को दोनों हाथों से थाम कर निकले; लेकिन रात भर कानों में छमाछम की आवाज आया की। परियो की प्यारी-प्यारी सूरत आँखों मे फिरा की। अब इस वक्त फिर जाते हैं, जरा सेक आये, भैरवी उड़ रही होगी—

'रसीले नैनो ने फंदा मारा।'

आज़ाद—कल फ़ुरसत हो तो हमसे मिलिएगा।

छैला—कल तक तो मेरी नींद का खुमार हो रहेगा।

आज़ाद—अच्छा, परसों सही।

छैला—परसों! परसो तो खुदा भी बुलाये तो बंदा न जाने का। परसों नवाब साहब के यहाँ बटेरो की पाली है, महीनों से बटेर तैयार हो रहे हैं।

आजाद—अच्छा साहब, परसों न सही, मगल को सही।

छैला—मंगल को लड़के से जाने की कनकइयाँ लड़ेंगी, अभी बनारस से बाना मँगाया है, माही जाल की कनकइयाँ ऐसी सधी हैं कि हरदम काबू मे, मोड़ो, गोता दो, खींचो, जो चाहे सो करो, जैसे खेत का घोड़ा।

आजाद—अच्छा, बुद्ध को फ़ुरसत है!

छैला—वाह-वाह, बुद्ध को तो बड़े ठाट से भटियारियों की लड़ाई होगी। देखिए तो, कैसी-कैसी भटियारियाँ किस बाँकी अदा से हाथ चमका कर, उँगलियाँ मटका कर लड़ती हैं और कैसी-कैसी गालियाँ सुनाती हैं कि कान के कीड़े मर जायँ।

आजाद—बिरस्पत को तो जरूर मिलिएगा!

छैला—जनाब, आप तो पीछे पड़ गये, मिलूँ तो सब कुछ, जब फ़ुरसत भी हो। यहाँ मरने तक की तो फ़ुरसत नहीं, अब की नौचंदी जुमेरात है, बरसों से मन्नतें मानी हैं, आपको दीनदुनिया की खबर तो है नहीं।

आजाद—तो मालूम हुआ, आपसे मुलाक़ात नहीं होगी। आज मुर्ग लड़ाइएगा, कल पतंग लड़ाइएगा, कहीं गाना होगा, कहीं नाच होगा, आप न हो तो रंग क्योंकर जमे। मेला-ठेला तो आपसे कोई काहे को छूटता होगा फिर भला मिलने की कहाँ फ़ुरसत! रुखसत।

छैला—ऐं, तो अब रूठे क्यों जाते हैं!

आज़ाद—अब मुझे जाने दीजिए, आपका और हमारा मेल जैसे गन्ना और मदार का साथ। जाइए, देखिए, भैरवी का लुत्फ़ जाता है।

छैला—जनाब, अब नाच-गाने का लुत्फ़ कहाँ, वह चमक-दमक अब कहाँ, दिल ही बुझ गया। जो लुत्फ़ हमने देखे हैं, वह बादशाहों को ख्वाब मे नसीब न हुए होंगे। यह कैसरबाग़ अदन को मात करता था। परियों के झुंड, हसीनों के जमघट, रात को दिन का समाँ रहता था। अब यहाँ क्या रह गया! गली कूचों में कुत्ते लोटते हैं। एक वह ज़माना था कि साकिनों के मिज़ाज न मिलते थे। बाँके-तिरछे रईसज़ादे एक-एक दम की दो-दो अशर्फ़ियाँ फेंक देते थे। अब तो शहर भर में इस सिरे से उस सिरे तक चिराग़ लेकर ढूँढ़िए तो मैदान ख़ाली है। कल नयी सड़क की तरफ़ जो निकला, तो नुक्कड़ पर एक हाथी बँधा देखा। पूछा, तो मालूम हुआ कि बी हैदरजान का हाथी है। कसम ख़ुदा की, ऐसा ख़ुश हुआ कि आँखों मे आँसू आ गया।

ख़ुदा आबाद रक्खे लखनऊ को फिर ग़नीमत है;
नजर कोई न कोई अच्छी सूरत आ ही जाती है।

आज़ाद—अच्छा, यह सब जलसे आपने देखे और अब भी आँखें सेका ही करते हैं; मगर सच कहिएगा, बने या बिगड़े, बसे या उजड़े, नेकनाम हुए या बद-नाम? यहाँ तो नतीजा देखते हैं।

छैला—जनाब यह तो बड़ा कड़ा सवाल है। सच तो यों है कि उम्र भर इस नाचरंग ही के फंदे में फँसे रहे, दिनरात तबला, सारंगी, बायाँ, ढोल, सितार की धुन में मस्त रहे। ख़ुदा की याद ताक पर, इल्म छप्पर पर, छटे हुए शोहदे बन बैठे; लेकिन अब तो पानी में डूब गये, ऊपर एक अंगुल हो तो, और एक हाथ हो तो, बराबर है। आप लोग इस भरोसे में हों कि हमें आदमी बनायें तो यह ख़ैर-सलाह है। बूढ़े तोते भी कहीं राम-राम पढ़ते हैं!

आजाद—ख़ैर, शुक्र है कि आप अपने को बिगड़ा हुआ समझते तो हैं। कड़ुए न हूजिए तो कहूँ कि इस जनाने भेस पर लानत भेजिए, यह लोच, यह लचक, यह मेहदी, यह मिस्सी, कुछ औरतों ही को अच्छी मालूम होती है। जरा तो इस दाढ़ी-मूँछ का ख़याल करो।

छैला—यह मरें किसी ऐसे-वैसे को दीजिए, यहाँ बड़े-बड़ों की आँखें देखी हैं। आपके झाँसे मे कोई अनारी आये, हम पर चकमा न चलने का।

आजाद—आपको डोम-ढारियों ही की सोहबत पसंद आयी या किसी और की भी? लखनऊ में तो हर फन के आदमी मौजूद हैं।

छैला—हम तो हमेशा ऐसी ही टुकड़ी में रहे। घरफूँक तमाशा देखा। लँगोटी में फाग खेला। मियाँ शोरी के टप्पे, क़द्र मियाँ की ठुमरियाँ, घसीटखाँ की टीपदार आवाज प्यारेखाँ का ख़याल छोड़ कर जायें कहाँ? सारंगी-मँजीरे की आवाज सुनी तो छप से घुस पड़े, मसजिद में अज़ान हुआ करे, सुनता कौन है। बहुत गुजर गयी, थोड़ी बाकी है।

आजाद—लखनऊ में ऐसे-ऐसे आलिम पड़े हैं कि जिनका नाम आफ़ताब की तरह सारी ख़ुदाई में रोशन है। कर्बला और मदीने तक के समझदार लोग इन बुज़ुर्गों का कलाम शौक से पढ़ते हैं। मुफ्ती सादुल्लाह साहब, सैयद मुहम्मद साहब, वगैरह उल्मा का नाम बच्चे-बच्चे की ज़बान पर है। अब शायरों को देखिए, ख्वाजा हैदरअली आतश, शेख़ नासिख़ अपने फ़न के ख़ुदा थे। मरसिया कहना तो लखनऊ वालों का हिस्सा है। मीर अनीस साहब को ख़ुदा बख्शे, ज़बान की सफाई तो यहाँ ख़त्म हो गयी। मिर्ज़ा दबीर तो गोया अपने फ़न के मवजिद थे। नसीम और सबा ने आतश को भड़का दिया। गोया तो गोया शायरी के चमन का बुलबुल था। मिर्ज़ा रजबअली बेग सरूर ने वह नस्र लिखी कि कलम तोड़ दिये। यहाँ के कारीगरों के भी झंडे गड़े हैं। कुम्हार तो ऐसे दुनिया के पर्दे पर न होंगे। मिट्टी की मूरतें ऐसी बनायी कि मुसव्विरों कि किरकिरी हो गयी। बस, यही मालूम होता है कि मूरत बोला ही चाहती है। जिस अजायबघर में जाइएगा, लखनऊ के कुम्हारों की कारीगरी जरूर पाइएगा। खुशनवीसों ने वह कमाल पैदा किया कि एक-एक हर्फ की पाँच-पाँच अशर्फ़ियाँ लीं। बाँके ऐसे कि शेर का पंजा तोड़ डालें, हाथी को डपटें तो चिग्घाड़ कर मंज़िलों भागे। रुस्तम और इस्फंदियार को चुटकियों में लड़ा दें। उस्ताद मुहम्मदअली खाँ फिकैत, छरहरा बदन, लेकिन गदका हाथ में आने की देर थी। परे के परे दम में साफ़ कर दिये। कड़क कर तमाचे का तुला हाथ लगाया, तो दुश्मन का मुँह फिर गया। अखाड़े में गदका लेकर खड़े हुए, तो मालूम हुआ, बिजली चमक गयी। एक दफ़ा ललकार दिया कि रोक, बैठ गयी! देख सँभल! खबरदार, यह आयी, वह आयी, वह पड़ गयी! वाह-वाह की आवाज सातवें आसमान जा पहुँची। बला की सफ़ाई, गजब की सफ़ाई थी। जो मुँह चढ़ा, उसने मुँह की खायी। सामने गया और शामत आयी। कामदानी वह ईजाद की कि उड़ीसा और कोचीन तक धूम हो गयी। लेकिन आपको तो न इल्म से सरोकार, न फ़न से मतलब; आप तो ताल-सुर के फेर में पड़े हैं

छैला—हजरत, इस वक्त भैरवी सुनने जाता था और 'जागे भाग प्यारा नजर आया' सुनने का शौक चर्राया था; लेकिन आपने पादरियों की तरह बकवास करके काया पलट दी। आप जो हमें राह पर लाते हों, तो इतना मान जाओ कि जरा कदम बढ़ाये हुए, हमारे साथ हाथ में हाथ दिये हुए, पाटेनाले तक चले चलो; देखूँ तो परिस्तान से क्योंकर भाग आते हो? उन्हीं हसीनों का सिजदा ना करो, तो कुछ जुर्माना दूँ। उस इंद्र के अखाड़े से कोरे निकल आओ, तो टाँग की राह निकल जाऊँ।

आजाद—(घड़ी जेब से निकाल कर) एँ! आठ पर इक्कीस मिनट! इस खुशगप्पी ने आज बड़ा सितम ढाया, लेक्चर सुनने में न आया। मुफ्त की बकबक झकझक! लेक्चर सुनने काबिल था।

छैला—अल्लाह जानता है, इस वक्त कलेजे पर साँप लोट रहे हैं! न जाने तड़के-तड़के किस मनहूस का मुँह देखा है कि भैरवी के मजे हाथ से गये!

आजाद—आप भी निरे चोंच ही रहे। इतनी देर तक समझाया, मिन्नतें की, मगर वाह रे कुत्ते की दुम, बारह बरस बाद भी वह टेढ़ी ही निकली।

छैला—तो मेरे साथ आइए न, बगलें क्यों झाँकते हो? जब जानें कि निर्मोह निकल आओ।

आजाद—अच्छा, चलिए। देखें, कौन सा हसीन अपनी निगाहों के तीर से हमें घायल करता है! बरसों के खयालों को कोई क्या मिटा देगा? हम, और किसी के थिरकने पर फिदा हो जायँ! तोबा! कोई ऐसा माशूक तो दिखाइए, जिसे हम प्यार करें। हमारा माशूक वह है जिसमें कमाल हो। जुल्फ और चोटी पर कोई और सिर धुनते हैं।

खुलासा यह कि आजाद छैले मियाँ के साथ हाफिज जी के मकान में जा पहुँचे। महफिल सजी हुई थी। तीन-चार हसीनें मिल कर मुबारकबाद गाती थीं। यही मालूम होता था कि राग और रागिनी हाथ बाँधे खड़ी हैं। जिसे देखो, गर्दन हिलाता है। पाजेब की छमाछम दिल को रौंदती है, कोई इधर से उधर चमक जाती है, कोई ऊँचे सुरों से तान लगाती है, कोई सीने पर हाथ रख कर 'गहरी नदिया' बताती है, कोई नशीली आँखों के इशारे से 'नैना रसीले' की छवि दिखाती है, धमा-चौकड़ी मची हुई है। छैले मियाँ ने एक हसीन से फरमाइश की कि हजरत मीर की यह गजल गाओ—

> गैर के कहने से मारा उसने हम को बे-गुनाह;
> यह न समझा वह कि वाकया में भी कुछ था या न था।
> याद ऐयामे कि अपनी रोजोशब की जायबाश;
> या दरे बाजे बयाग, या दरे मयखाना था।

इस गजल ने वह लुत्फ दिखाया और ऐसा रँग जमाया कि मियाँ आजाद तक 'ओ हो!' कह उठते थे, इसके बाद एक परी ने यह गजल गायी —

> हाल खुले तो किस तरह यार की वज्दे-नाज का;
> जो है यहाँ वह मस्त है अपनी ही सोजोसाज में।

इस गजल पर जलसे में कुहराम मच गया। एक तो गजल इल्हामी, दूसरे हसीना की उठती जवानी, तीसरे उसकी नाजुकबयानी। लोग इतने मस्त हुए कि झूम-झूम कर यही शेर पढ़ते थे—

> हाल खुले तो किस तरह यार की वज्दे-नाज का;
> जो है यहाँ वह मस्त है अपनी ही सोजोसाज में।

अब सबको सबकी जगह यकीन हो गया कि अब किसी का रंग न जमेगा। हर तरफ से इल्हामी गजलों की फरमाइश है। न धुर्पद का ख्याल, न टप्पे की फिक्र, न भैरवी की धुन, न पक्के गाने का जिक्र, बस इल्हामी गजलों की धूम है।

अब दिल्लगी देखिए कि बुड्ढे-जवान सब के सब बेधड़क उस मोहनी को घूर रहे हैं। कोई उससे आँखें लड़ाता है, कोई सिर धुनता है, कोई ठंडी आहें खींचता है।

दो-चार मनचले रईसों ने हसीनों को बुला कर बड़े शौक से पास बैठाया। नोंक-झोंक, हँसी मजाक, चुहल-दिल्लगी, धौल-धप्पा होने लगा। हाफ़िज़ जी भी बेसींग के बछड़े बने हुए मजे से चौमुखी लड़ रहे हैं।

बूढ़े मियाँ—आजकल के लड़कों को भी हवा लगी है।

एक जवान—जनाब, अब तो हवा ही ऐसी चली है कि जवान तो जवान, बुड्ढों तक को बुढ़भस लगा है। सौ बरस का सिन, चार के कंधों पर लदने के दिन, मगर जवानी ही के दम भरते हैं।

बूढ़े मियाँ—अजी, हम तो जमाने भर के न्यारिये हैं, हमें कोई क्या चंग पर चढ़ायगी; मगर तुम अभी जुमा-जुमा आठ दिन की पैदायश, ऐसा न हो, उनके फेर में आ जाओ; फिर दीनदुनिया दोनों को रो बैठो।

जवान—वाह जनाब, आपकी सोहबत में हम भी पक्के हो गये हैं; ऐसे कच्चे नहीं कि हम पर किसी के दाँव-पेंच चलें।

बूढ़े मियाँ—कच्चे पक्के के भरोसे न रहिएगा, इन हसीनों का बड़े-बड़े जाहिदों ने सिजदा किया है; तुम किस खेत की मूली हो।

जवान—इन बुतों को हम फ़क़ीरों से भला क्या काम है, ये तो तालिब जर के हैं और यों खुदा का नाम है।

हसीना—इन बड़े मियाँ से कोई इतना तो पूछो कि बाल-बाल गल कर बर्फ़ सा सफेद हो गया और अब तक सियाहकारी न छोड़ी, यह समझाते किस मुँह से हैं! इनकी सुनता कौन है। जरा शेख़ जी, बहुत बढ़-बढ़ कर बातें न बनाया कीजिए; शाहछडेवाली गली में रोज बीस-बीस चक्कर होते हैं; ऐ, तुम थकते भी नहीं!

हाफ़िज़ जी—शेख़ जी जहाँ बैठते हैं, झगड़ा जरूर खरीदते हैं। आप हैं कौन? आये कहाँ से नासेह बन के! अच्छा, बी साहब, अपना कलाम सुनाइए; मगर शर्त यह है कि जब हम तारीफ़ करें तो झुक के सलाम कीजिए।

हसीना—आप हैं तो इसी लायक कि दूर ही से झुक कर सलाम कर ले।

इधर तो यह बातें हो रही थीं, उधर दूसरी टुकरी में गाली और फक्कड़ का छर्रा चलता था। तीसरे में धौल-धप्पा होता था। लड़के, जवान, बूढ़े बेधड़क एक दूसरे पर फबतियाँ कसते थे। इतने में दोपहर की तोप दगी, जलसा बरख़ास्त, तबल्चियों ने बोरिया-बँधना उठाया। चलिए, सन्नाटा हो गया।

मियाँ आजाद की साँडनी तो सराय में बँधी थी। दूसरे दिन आप उस पर सवार हो कर घर से निकल पड़े। दोपहर ढले एक कस्बे में पहुँचे। पीपल के पेड़ के साये में बिस्तर जमाया। ठंडे-ठंडे हवा के झोंकों से जरा दिल को ढारस हुई, पाँव फैला कर लंबी तानी, तो दीनदुनिया की खबर नहीं। जब खूब नींद भर कर सो चुके, तो एक आदमी ने जगा दिया। उठे, मगर प्यास के मारे हलक में काँटे पड़ गये। सामने इदारे पर एक हसीन औरत पानी भर रही थी। हजरत भी पहुँचे।

आजाद—क्यों नेकबख्त, हमे एक जरा सा पानी नहीं पिलातीं। भरते न बनता हो तो लाओ हम भरें। तुम भी पियो, हम भी पियें, एहसान होगा।

औरत ने कोई जवाब न दिया, तीखी चितवन से देख कर पानी भरती रही।

आजाद—'सखी से सूम भला, जो देवे तुरत जवाब।' पानी न पिलाओ, जवाब तो दे दो। यह कस्बा तो अपने हक में कर्बला का मैदान हो गया। एक बूँद पानी को तरस गये।

औरत ने फिर भी जवाब न दिया। पानी भर कर चली।

आजाद—भई, अच्छा गाँव है! जो बात है, निराली! एक लुटिया पानी न मिला, वाह री किस्मत। लोग तो इस भादों की जलती-बलती धूप मे पौसरे बैठाते हैं, केवड़ा पड़ा हुआ पानी पिलाते हैं, यहाँ कोई बात तक नहीं सुनता।

मियाँ आजाद को हैरत थी कि इस कमसिन नाजनीन का यहाँ इस वीराने मे क्या काम। साये की तरह साथ हो लिये। वह कनखियों से देखती जाती थी, मगर मुँह नही लगाती थी। बारे, सड़क से दाये हाथ पर एक फाटक के सामने वह बैठ गयी और पेड़ के साये में सुस्ताने लगी। आजाद ने कहा—अगर यह बर्तन भारी हो तो लाओ मैं ले चलूँ, इशारे की देर है। कसम लो, जो एक बूँद भी पीऊँ, गो प्यास के मारे कलेजा मुँह को आता है और दम निकला जाता है; लेकिन तुम्हारा दिल दुखाना मंजूर नहीं।

हसीना ने इसका भी जवाब न दिया। फिर हिम्मत करके उस बर्तन को उठाया और फाटक के अंदर हो रही। मियाँ आजाद भी चुपके-चुपके दबे पाँव उसके पीछे-पीछे गये। हसीना एक खुले हुए छोटे से बँगले में जा बैठी और आजाद दरख्तों की आड़ में दबक रहे कि देखें, यहाँ क्या गुल खिलता है। उस बँगले के चारों तरफ खाई खुदी हुई थी, इर्द-गिर्द सरपत बोई हुई थी, ऐसी घनी कि चिड़िया तक का गुजर न हो, और वह तेज कि तलवार मात। बड़ा ऊँचा मेहराबदार फाटक लगा हुआ था। वह जौहरदार शीशम की लकड़ी थी कि शायद व शायद। क्यारियाँ रोज सींची जाती थीं, रविशों पर सुर्खी कटी थी, हरे-भरे दरख्त आसमान से बातें कर रहे थे। कहीं अनार की कतार, कहीं ललवट की बहार, इधर आम के बाग, अमरूद और चकोतरों से लह-

नियाँ फटी पड़ती थीं, नारंगियाँ शाखों पर लदी हुई थीं, फूलों की बू-बास, कहीं गुल-मेंहदी, कहीं गुल-अब्बास, नेवाड़ी फूली हुई, ठंडी-ठंडी हवा, ऊदी-ऊदी घटा, कलियों की चिटक, जूही की भीनी महक, कनैल की दमक। बाग के बीचो-बीच में एक तीन फुट का ऊँचा पक्का चबूतरा बना था। यह तो सब कुछ था; मगर रहने-वाले का पता नहीं। उस हसीना की चालढाल से भी बेगानापन बरसता था। एकाएक उसने बर्तन जमीन पर. रख दिया और एक नेवाड़ की पलँगरी पर सो रही। इनको दाँव मिला, तो खूब छक कर मेवे खाये और बर्तन को मुँह से लगाया, तो एक बूँद भी न छोड़ा। इतने में पाँव की आहट सुनाई दी। आजाद झट अंगूर की टट्टी में छिप रहे; मगर ताक लगाये बैठे थे कि देखें, है कौन! देखा कि फाटक की तरफ से कोई आहिस्ता-आहिस्ता आ रहा था। बड़ा लंबा-तड़ंगा, मोटा-ताजा आदमी था। लंगोट बाँधे, अकड़ता उस बँगले की तरफ जा रहा था। समझे कि कोई पहलवान अपने अखाड़े से आया है। नजदीक आया, तो यह गुमान दूर हो गया। मालूम हुआ कि कोई शाह जी हैं। वह लंगोट, जिससे पहलवान का धोखा हुआ था, तहमद निकला। शाह साहब सीधे बँगले में दाखिल हुए। औरत को पलंग पर सोता पाया, तो पलंग पर हाथ मार कर चिल्ला उठे—उठ। हसीना घबरा कर उठ बैठी और शाह जी के कदम चूमे। शाह जी एक तिरपाई पर बैठ गये और उससे यों बातें करने लगे—बेटी, आज तुमको हमारे सबब से बहुत राह देखनी पड़ी। यहाँ से दस कोस पर एक गाँव में एक राजा रहता है। अस्सी बरस का हो गया; मगर अल्लाह ने न लड़का दिया, न लड़की। एक दिन मुझे बुलवाया। मैं कहीं आता-जाता तो हूँ नहीं, साफ कहला भेजा कि तुम्हें गरज हो तो आओ, खुदा के बंदे खुदा के सिवा और किसी के द्वार पर नहीं जाते। आखिर रानी को लेकर वह आप आया और मेरे कदमों पर गिर पड़ा। मैंने रानी के सिर पर एक बिना सूँघा गुलाब का फूल दे मारा। पाँचवे महीने अल्लाह ने लड़का दिया और राजा मेरे पास दौड़ा आता था कि मैं राह में मिला। देखते ही मुझे रथ पर बिठा लिया। अब कहता है, रुपया लो, जागीर लो, गाँव लो, हाथी-घोड़े लो। मगर मैं कब माँगता हूँ। फकीरों को दुनियाँ से क्या काम। इस वक्त जा कर पीछा छूटा। तुम पानी तो लायी होगी?

हसीना—मैं आपकी लौंडी हूँ, यह क्या कम है कि आप मेरा इतना खयाल रखते हैं। वह पानी रखा हुआ है। आप फूँक डाल दें, तो मैं चली जाऊँ।

यह कह कर वह उठी, मगर बर्तन देखा, तो पानी नदारत। ऐं! वह पानी क्या हुआ! जमीन पी गयी, या आसमान! अभी पानी भर कर रखा था, देखते-देखते उड़ गया। गजब खुदा का, एक बूँद तक नहीं; लबालब भरा हुआ था!

शाह जी—अच्छा, तो बता दूँ; मुझे जोग-बल से मालूम हो गया कि तुम आती हो। जब तुम सो रहीं, तो मैंने आँख बंद की, और यहाँ पहुँच गया। पानी पिया, तो फिर आँख बंद की और फिर राजा साहब के पास हो रहा। फूँक डालने की आदत

उसी वक्त थी। टल जाती, तो फिर एक महीने बाद आती। अब तुम यह इलायची लो और क़ल आधी रात को मरघट में गाड़ दो। तुम्हारी मुराद पूरी हो जायगी।

युवती ने इलायची ले ली। मियाँ आजाद चुपके-चुपके सब सुन रहे थे। अब उन्हें खूब ही मालूम हो गया कि शाह जी रँगे सियार हैं। लोटे का पानी तो मैंने पिया, और आपने यह गढ़ा कि आँख बंद करते ही यहाँ आये, और पानी पी कर फिर किसी तरकीब से चल दिये। खूब खिल-खिला कर हँस पड़े। वाहरे मक्कार! जालिये! इतना बड़ा झूठा न देखा, न सुना। ऐसे बड़े वली हो गये कि इनकी दुआ से एक रानी पाँचवें ही महीने बच्चा जन पड़ी। झूठ भी तो कितना! हद तो यों है कि झूठों के सरदार हैं। पट्टे बढ़ा लिये, तहमद बाँध कर शाहजी बन गये। लगे पुजने। कोई बेटा माँगता है, कोई तावीज माँगता है, कोई कहता है मेरा मुकदमा जितवा दो तो नयाज चढ़ाऊँ, कोई कहता है नौकरी दिलवा दीजिए तो मिठाई खिलाऊँ। संयोग से कहीं उसकी मुराद पूरी हो गयी, तो शाह साहब की चाँदी है, वरना किसकी मजाल कि शिकायत का एक हर्फ़ मुँह से निकाले। डर है कि कहीं जबान न सड़ जाय। अल्लाह री धाक! बहुत से अक्ल के दुश्मन इन बने हुए फकीरों के जाल में फँस जाते हैं। आजाद ऐसे बने हुए सिद्ध और रँगेसियार फकीरों की कब्र तक से वाकिफ थे। सोचे, इनकी मरम्मत कर देनी चाहिए।

शाह साहब ने चबूतरे पर लुंगी बिछायी और उस पर लेट कर दुआ पढ़ने लगे; मगर पढ़े-लिखे तो थे नहीं, शीन-काफ तक दुरुस्त नहीं, अनाप-शनाप बकने लगे। अब मियाँ आजाद से न रहा गया, बोल उठे—क्या कहना है शाह जी, वल्लाह, आपने तो कमाल कर दिया। अब तो शाह जी चकराये कि यह आवाज किसने कही, यह दुश्मन कौन पैदा हुआ। इधर-उधर आँखे फाड़-फाड़ कर देखा; मगर न आदमी, न आदमजाद, न इनसान, न इनसान का साया। या खुदा, यह कौन बोला? यह किसने टोका? समझे कि यह आसमानी ढेला है। किसी जिन्न की आवाज़ है। डरपोक तो थे ही, बदन थरथराने लगा, हाथ-पाँव फूल गये, करामाते सब भूल गये, हवास गायब, होश कलाबाजी खाने लगे। कुरान की आयतें गलत-सलत पढ़ने लगे। आखिर चिल्ला उठे—महजरूल अजायब। तो इधर यह बोल उठे—लुंगी मयशाह जी गायब। अब शाह जी की घबराहट का हाल न पूछिए, चेहरा फक, काटो तो लहू नहीं बदन में। मियाँ आजाद ने भाँप लिया कि शाह साहब पर रोब छा गया, झट निकल कर पत्तों को खूब खड़खड़ाया। शाह जी काँप उठे कि प्रेतों का लश्कर का लश्कर आ खड़ा हुआ। अब जान से गये। तब आजाद ने एक फारसी गजल खूब लै के साथ पढ़ी, जैसे कोई ईरानी पढ़ रहा हो। शाह जी मस्त हो गये, समझे कि यह तो कोई फकीर है। अब तो जान में जान आयी। मियाँ आजाद के कदम लिये। उन्होंने पीठ ठोंकी। शाह जी उस वक्त नशे की तरंग में थे; ख़याल बँध गया कि कोई आसमान से उतरा है।

आजाद—कीस्ती वो अज कुजाई व वामनत चे कार अस्त।

(कौन है, कहाँ से आता है और मुझसे क्या काम है ?)

शाह जी के रहे-सहे हवास और ग़ायब हो गये। ज़बान समझ में न आयी। समझे कि ज़रूर आसमान का फ़रिश्ता है। हमारी जान लेने को आया है। दबे दाँतों बोले—समझगा नहीं हूँगा कि आप क्या हुक्म देंगे। हमने बहुत गुनाह किये, अब माफ़ फ़रमाओ। कुछ दिन और जीने दो, तो यह ठगविद्या छोड़ दूँ। मैं समझ गया कि आप मेरी जान लेने आये हैं।

आज़ाद—यह बुढ़ापा और इतनी बदकारी, यह सिन और साल और यह चाल-ढाल। याद रख कि जहन्नुम के गड्ढे में गिरेगा और दोज़ख की आग में जलाया जायगा। सुन, मैं न आसमान का फ़रिश्ता हूँ, न कोई जिन्न हूँ। मैं हकीम बलीनास की पाक रूह हूँ, हकीम हूँ, ख़ुदा से डरता हूँ, मेरे कब्जे में बहुत से तिलस्म हैं, मेरा मज़ार इसी जगह पर था जहाँ तेरा चबूतरा है और जहाँ तू नापाक रहता है और शोरबा लुढ़काता है। ख़ैर, तेरी जहालत के सबब से मैंने तुझे छोड़ दिया; लेकिन अब तूने यह नया फरफंद सीखा कि हसीनों को फाँसता है और उनसे कुछ ऐंठता है। उस ज़माने में यह औरत मेरी बीबी थी। ले, अब यह हथकंडे छोड़, मक्र और दग़ा से मुँह मोड़, नहीं तो तू है और हम। अभी ठीक बनाऊँगा और नाच नचाऊँगा। तेरी भलाई इसी में है कि अपना कुल हाल कह चल, नहीं, तू जानेगा। मेरा कुछ न जायगा।

शाह जी ने शराब की तरंग में मारे डर के अपनी बीती कहानी शुरू की—चौदह बरस के सिन से मुझे चोरी करने की लत पड़ी और इतना पक्का हो गया कि आँख चूकी और गठरी उड़ायी, ग़ाफ़िल हुआ और टोपी खिसकायी। पहले कुछ दिन तो लुटियाचोर रहे, मगर यह तो करती विद्या है, थोड़े ही दिनों में हम चोरों के गुरू-घंटाल हो गये। सेंद लगाना कोई हमसे सीखे, छत की कड़ियों में यों चिमट रहूँ, जैसे कोई छिपकली, उचकफाँद में बंदर मेरे मुकाबले में मात है, दबे पाँव कोसों निकल जाऊँ, क्या मजाल किसी को आहट हो। शहर भर के बदमाश, लुक्के, लुच्चे, शोहदे हमारी टुकड़ी मे शामिल हुए। जिसने हेकड़ी की उसको नीचा दिखाया; जो टेढ़ा हुआ उसको सीधा बनाया। खूब चोरियाँ करने लगे। आज इसका माल मारा, कल उसकी छत काटी, परसों किसी नवाब के घर में सेंद दी। यहाँ तक कि डाके मारने लगे, सड़कों पर लूटमार शुरू कर दी। गोल मे दुनियाभर के बेफ़िक्रे जमा हैं, कोई चंडू उड़ाता है, कोई चरस के दम लगाता है। गाँजे, भाँग, ठर्रे सबका शौक है। तानें उड़ रही हैं, बोतलें चुनी हुई हैं, गडेरियों के ढेर लगे हुए हैं, मक्खियाँ भिन-भिन करती हैं, सबको यही फ़िक्र है कि किसी का माल ताके। एक दिन शामत आयी, एक नवाब साहब के यहाँ चोरी करने का शौक चर्राया। उनके ख़िदमतगार को मिलाया, नौकरानियों को भी कुछ चटाया, और एक बजे के वक्त घर से निकले। उसी मुहल्ले मे एक महीने पहले ही एक मकान किराये पर ले रखा था। पहले उसी मकान में पैठे। नवाब का मकान कोई पचास ही कदम होगा। तीन आदमी दस कदम पर और पाँच बीस

कदम पर खड़े हुए। हम, खिदमतगार और एक चोर साथ चले कि घर में घुस पड़ें। करीब गये तो ड्योढ़ी पर चौकीदार ने पुकारा, कौन? सन से जान निकल गयी! उम्र-भर में यही खता हुई कि चौकीदार को पहले से न मिला लिया। अब क्या करें। 'पिछली बुद्धि गँवार की!' फिर चौकीदार ने ललकारा, कौन आता है? हमने कहा—हम हैं भाई। चौकीदार बोला—हम की एक ही कही, हम का कुछ नाम भी है? आखिर, हमने चौकीदार को उसी दम कुछ चटा कर सेंद दी। घर में घुसे, तो क्या देखते हैं कि एक पलँग पर नवाब साहब सोते हैं, और दूसरे पलँग पर उनकी बेगम साहबा मीठी नींद में मस्त हैं, मगर शमा रोशन है। अपने साथी से इशारा किया कि शमा को गुल कर दे। वह ऐसा घबराया कि बड़े जोर से फूँक मारी। मैंने कहा, खुदा ही खैर करे, ऐसा न हो कि नवाब जाग उठें तो लेने के देने पड़ें। आगे बढ़ कर मैंने बत्ती को तेल मे खिसका दिया, चलिए, चिराग गुल, पगड़ी गायब। बेगम साहबा के सिरहाने जेवर का संदूक रखा था, मगर आड़ में। हम तो महरी की जबानी कच्चा चिट्ठा सुन चुके थे, 'घर का भेदी लंका ढाय', फौरन संदूक उठाया और दूसरे साथी को दिया कि बाहर पहुँचाये। वह कुछ ऐसा घबराया कि मारे बौखलाहट के काँपने लगा और धम से गिर पड़ा। धमाके की आवाज सुनते ही नवाब चौंक पड़े, शेरबच्चा सिरहाने से उठा, पैतरे बदल-बदल कर फिकैती के हाथ दिखाने लगे। मैंने एक चाकी का हाथ दिया, और झट कमरे से निकल, दीवाल पर चढ़, पिछवाड़े कूदा और 'चोर-चोर' चिल्लाता हुआ नाके बाहर। वे दोनों सिरबोझिये नौसिखिये थे, पकड़ लिये गये। मगर वाह रे नवाब! बड़ा ही दिलेर आदमी है। दोनों को घेर लिया। वे तो जेलखाने गये, मैं बेदाग बच गया। अब मैंने वह पेशा छोड़ा और खून पर कमर बाँधी। एक महीने में कई खून किये। पहले एक सौदागर के घर में घुस कर उसे चारपाई पर ढेर कर दिया; जमा-जथा हमारे बाप की हो गयी। फिर रेल पर एक माल-दार जौहरी का गला घोट डाला और जवाहिरात साफ उड़ा लिये। तीसरी दफा दो बनजारे सराय में उतरे थे। हमे खबर मिली कि उनके पास सोने की ईंटें हैं। उनको सराय ही में अंटा-गफील करना चाहा। भठियारे ने देख लिया पकड़े गये और कैदखाने गये। वहाँ आठ दिन रहे थे, नवे दिन रात को मौका पा कर कालकोठरी का दरवाजा तोड़ा, एक बरकंदाज का सिर ईंट से फोड़ा, पहरे के चौकीदार को उसी की बंदूक से शहीद किया और साफ निकल भागे। अब सोचा, कोई नया पेशा अख्तियार करें, सोचते-सोचते सूझी कि शाह जी बन जाओ। चट फकीरों का भेस बदल कर एक पेड़ के नीचे बिस्तर जमा दिया। पुजने लगे। एक दिन इस गाँव के ठाकुर का लड़का बीमार हुआ। यहाँ हकीम, न डाक्टर। किसी ने कह दिया कि एक फकीर पकरिया के नीचे बैठे खुदा को याद किया करते हैं, चेहरे से नूर बरसता है, किसी से लेते हैं न देते हैं। ठाकुर ने सुनते ही अपने भाई को भेजा। हम साथ गये। खुशी से फूले न समाते थे कि आज पाला हमारे हाथ रहा तो उम्र भर चैन से गुजरेगी। हमारा पहुँचना था कि सब उठ खड़े हुए। हम किसी से बोले न चाले,

जा कर लड़के के पास बैठ गये और कुछ बुदबुदा कर उठ खड़े हुए। देखा, लड़के का बुरा हाल है, बचना मुहाल है। ठाकुर कदमों पर गिर पड़ा। हमने पीठ ठोंकी और लंबे-लंबे डग बढ़ाते चल दिये। संयोग से एक योरोपियन डाक्टर दौरा करता हुआ उस गाँव मे आया और उसकी दवा से मरीज चंगा हो गया। अब मजा देखिए, डाक्टर का कोई नाम भी नहीं लेता, सब हमारी तारीफ़ करते हैं। ठाकुर ने हमें एक हाथी और हजार रुपये दिये। यह हमने कबूल न किया। सुभानअल्लाह! फिर तो हवा बँध गयी। अब चारों तरफ हम ही हम हैं, कोई बीमार हो, तो हम पूछे जायँ, कोई मरे तो हम बुलाये जायँ। मियाँ-बीबी के झगड़ों में हम काजी बनते हैं, बाप-बेटे का झगड़ा हम फैसला करते हैं। सुबह से शाम तक डालियों पर डालियाँ आती रहती हैं।

आजाद ने यह क़िस्सा सुन कर शाह जी को खूब डाँटा—तू काफ़िर है, मलऊन है, तू अपनी मक्कारी से खुदा के बंदों को ठगता है, अब हमारी बात सुन, हमारा चेला बन जा, तो तुझे छोड़ दें। कल तड़के गबरदम गाँव भर में कह दे कि हमारे पीर आये हुए हैं। दो सौ ग्यारह बरस की उम्र बताना। जिसे जियारत करनी हो, आये। शाह जी की बाछें खिल गयीं कि चलो, किसी तरह जान तो बची। नूर के तड़के गाँव भर में पुकार आये कि हमारे पीर आये हैं, जिसे देखना हो, देख ले। शाह जी की तो वहाँ धाक बँधी ही थी, जब लोगों ने सुना कि इनके भी वली-लंगड़ आये हैं, तो शौक चर्राया कि जियारत को चले। दो दिन और दो रात मियाँ आजाद अपने घर पर आराम करते रहे। तीसरे दिन फकीराना वेष बदले हुए हरे-हरे पेड़ों के साये में आ बैठे। देखते क्या हैं, पौ फटते ही औरत-मर्द, ठट के ठट जमा हो गये। हिंदू और मुसलमान, जवान औरतें, गहनों से लदी हुई आ कर बैठी हुई हैं। तब आजाद ने खड़े हो कर कुरान की आयतें पढ़ना शुरू कीं और बोले—ऐ खुदा के बंदो, मैं कोई वली नहीं हूँ, तुम्हारी ही तरह खुदा का एक नाचीज बंदा हूँ। अगर तुम समझते हो कि कोई इनसान चाहे कितना ही बड़ा फ़कीर क्यों न हो, खुदा की मरजी में दखल दे सकता है, तो तुम्हारी गलती है। होता वही है, जो खुदा को मंजूर होता है। हमारा फर्ज यही है कि तुम्हें खुदा की याद दिलायें। अगर कोई फकीर, कोई करामात दिखा कर अपना सिक्का जमाना चाहता हो, तो समझ लो कि वह मक्कार है। जाओ, अपना-अपना धंधा देखो।

६

मियाँ आजाद मुँह-अँधेरे तारों की छाँह में बिस्तर से उठे, तो सोचे; साँड़नी के घास-चारे की फ़िक्र करके जरा अदालत और कचहरी की भी दो घड़ी सैर कर आयें। पहुँचे तो क्या देखते हैं, एक घना बाग है और पेड़ों की छाँह में मेला-सा लगा है। कोई हलवाई से मीठी-मीठी बातें करता है। कोई मदारिये को ताजा कर रहा है। कुँजड़े फलों की डालियाँ लगाये बैठे हैं। पानवाले की दूकान पर वह भीड़ है कि खड़े होने की जगह नहीं मिलती। चूरनवाला चूरन बेच रहा है। एक तरफ़ एक हकीम साहब दवाओं की पुड़िया फैलाये जिरियान की दवा बेच रहे हैं। बीसों मुंशी-मुतसद्दी चटाइयों पर बैठे अर्जियाँ लिख रहे हैं। मुस्तग़ीस हैं कि एक-एक के पास दस-दस बैठे कानून छाँट रहे हैं—अरे मुंशी जी, यो का अंट-संट चिथड़ियाँ सी खँचाय दिहो? हम तो आपन मजमून बतावत हैं, तुम अपने अढ़ाई चाउर अलग चुरावत हौ। ले मोर मुंसी जी, तनिक अस सोच-विचार के लिखो कि फ़रीक सानी क्यार मुकद्दमा ढिसमिसाय जाय। ले तोहार गोड़ धरित है, दुइ कच्चा अउर लै लेव। आजाद ने जो गवाह-घर की ओर रुख किया, तो सुभानअल्लाह! काले-काले चोगों की बहार नजर आयी। कोई इधर से उधर भागा जाता है, कोई मसनद लगाये बैठा गँवारों से डींग मार रहा है। जरा और आगे बढ़े थे कि चपरासी ने कड़क कर आवाज लगायी—सत्तारखाँ हाजिर हैं? एक अफ़ीमची के पाँव लड़खड़ाये, सीढ़ियों से लुढ़कते हुए धम से नीचे! एक ठठोल ने कहा—वाह जनाब, गिरे तो मुझसे पूछ क्यों न लिया? आजाद जरा और आगे बढ़े, तो एक आदमी ने डाँट बतायी—कौन हो? क्या काम है?

आजाद—इसी शहर में रहता हूँ। जरा सैर करने चला आया।

आदमी—कचहरी में खड़े रहने का हुक्म नहीं है, यहाँ से जाइए, वरना चपरासी को आवाज देता हूँ।

आजाद—बिगड़िए नहीं, बस इतना बता दीजिए कि आपका ओहदा क्या है?

आदमी—हम उम्मेदवारी करते हैं। तीन महीने से रोज यहाँ काम सीखते हैं। अब फर्राटे उड़ाता हूँ। डाकेट तड़ से लिख लूँ, नक्शा चुटकियों में बनाऊँ। किसी काम में बंद नहीं। पंद्रह रुपये की नौकरी हमें मिला ही चाहती है। मगर पहले तो घास छीलना मुश्किल मालूम होता था, अब लुकमान बन गया।

आजाद—क्यों मियाँ, तुम्हारे वालिद कहाँ नौकर हैं?

उम्मेदवार—जनाब, वह नौकर नहीं हैं, दस गाँव के जमींदार हैं।

आजाद—क्या तुमको घर से निकाल दिया, या कुछ खटपट है?

उम्मेदवार—तो जनाब हम पढ़े-लिखे हैं कि नहीं!

आज़ाद—हज़रत, जिसे खाने को रोटियाँ न हों, वह सत्तू बाँध कर नौकरी के पीछे पड़े, तो मुज़ायका नहीं। तुम खुदा के करम से जमींदार हो, रुपयेवाले हो, तुमको यह क्या सूझी कि दस-पाँच की नौकरी के लिए एड़ियाँ रगड़ते हो ? इसी से तो हिंदुस्तान खराब है; जिसे देखो, नौकरी पर आशिक़। मियाँ, कहा मानो, अपने घर जाओ, घर का काम देखो, इस फेर में न पड़ो। यह नहीं कि आमामा बाँधा और कचहरी में जूतियाँ चटकाते फिरते हैं ! मुहर्रिर पर लोट, अमानत पर उधार खाये बैठे हैं।

दूसरे उम्मेदवार की निस्बत मालूम हुआ कि एक लखपती महाजन का लड़का है। बाप की कोठी चलती है। लाखों का वारा-न्यारा होता है। बेटा बारह रुपये की नौकरी के लिए सौ-सौ चक्कर लगाता है। चौथे दर्जे से मदर्सा छोड़ा और अपरेंटिस हुए। काम खाक नहीं जानते। बाहर जाते हैं, तो मुंसरिम साहब से पूछ कर। इस वक्त जब दफ्तरवाले अपने-अपने घर जाने लगे, तो हज़रत पूछते क्या हैं— क्यों जी, यह सब चले जाते हैं, अभी छुट्टी की घंटी तो बजी ही नहीं।

स्कूल की घंटी याद आ गयी !

मियाँ आज़ाद दिल ही दिल में सोचने लगे कि ये कमसिन लड़के, पंद्रह-सोलह बरस का सिन; पढ़ने-लिखने के दिन, मदर्सा छोड़ा, कॉलेज से मुँह मोड़ा और उम्मेदवारों के गोल में शामिल हो गये। 'अलिफबे नगाडा, इल्म को चने के खेत में पछाड़ा !' मेहनत से जान निकलती है, किताब को देख कर बुखार चढ़ आता है। जिससे पूछो कि भाई, मदर्सा क्यों छोड़ बैठे, तो यही जवाब पाया कि उकलैदिस की अक्ल से नफ़रत है। तवारीख किसे याद रहे, यहाँ तो घर के बच्चों का नाम नहीं याद आता। हम भी सोचे, कहाँ का झंझट। अलग भी करो, चलता धंधा करो, जिसे देखिए, नौकरी के पीछे पड़ा हुआ है। जमींदार के लड़के को यह ख्वाहिश होती है कि कचहरी में घुसूँ, सौदागर के लड़के को जी से लगी है कि कॉलेज से चंपत हूँ और कचहरी की कुर्सी पर जा डटूँ। और मुहर्रिर, मुंशी, अमले तो नौकरी के हाथों बिक ही गये हैं। उनकी तो घूँटी ही में नौकरी है। बाबू बनने का शौक ऐसा चर्राता है कि अक्ल को ताक पर रख कर गुलामी करने को तैयार हो जाते हैं।

यह सोचते हुए मियाँ आज़ाद और आगे चले, तो चौक में आ निकले। देखते क्या हैं, पंद्रह-बीस कमसिन लड़के बस्ते लटकाये, स्लेटें दबाये, परे जमाये, लपके चले आते हैं। पंद्रह-पंद्रह बरस का सिन, उठती जवानी के दिन, मगर कमर बहत्तर जगह से झुकी हुई, गालों पर झुर्रियाँ, आँखें गड्ढे मे धँसी हुई। यह झुका हुआ सीना, नयी जवानी में यह हाल ! बुढ़ापे में तो शायद उठ कर पानी भी न पिया जायगा। एक लड़के से पूछा, क्यों मियाँ, तुम सब के सब इतने कमज़ोर क्यों दिखलायी देते हो ? लड़के ने जवाब दिया, जनाब, ताकत किसके घर से लायें ? दवा तो है नहीं कि अत्तार की दूकान पर जायँ, दुआ नहीं कि किसी शाह जी से सवाल करें, हम तो बिना मौत ही मरे। दस बरस के सिन में तो बीबी छम-छम करती हुई घर में

आयी। चलिए, उसी दिन से पढ़ना-लिखना छप्पर पर रखा। नयी धुन सवार हुई। तेरहवें बरस एक बच्चे के अब्बाजान हो गये। रोटियों की फ़िक्र ने सताया। हम दुबले-पतले न हों, तो कौन हो! फिर अच्छी गिज़ा भी मयस्सर नहीं, आज तक कभी दूध की सूरत न देखी, घी का सिर्फ़ नाम सुनते हैं।

मियाँ आजाद दिल में सोचने लगे, इन ग़रीबों की जवानी कैसी बर्बाद हो रही है! इसी धुन में टहलते हुए हजरतगंज की तरफ़ निकल गये, तो देखा, एक मैदान मे दस-दस पंद्रह-पंद्रह बरस के अँगरेजों के लड़के और लड़कियाँ खेल रहे हैं। कोई पेड़ की टहनी पर झूलता है, कोई दीवार पर दौड़ता है। दो-चार गेंद खेलने पर लट्टू हैं। एक जगह देखा, दो लड़को ने एक रस्सी पकड़ कर तानी और एक प्यारी लड़की बदन तौल कर जमीन से उस पार उचक गयी। सब के सब खुश और तंदुरुस्त हैं। आजाद ने उन होनहार लड़कों और लड़कियों को दिल से दुआ दी और हिंदुस्तान की हालत पर अफ़सोस करते हुए घर आये।

७

मियाँ आजाद साँड़नी पर बैठे हुए एक दिन सैर करने निकले, तो एक सराय में जा पहुँचे। देखा, एक बरामदे में चार-पाँच आदमी फ़र्श पर बैठे धुआँधार हुक्के उड़ा रहे हैं, गिलौरी चबा रहे हैं और ग़जलें पढ़ रहे हैं। एक कवि ने कहा, हम तीनो के तखल्लुस का क़ाफ़िया एक है—अल्लामी, फ़हामी और हामी; मगर तुम दो ही हो—वकाद और जवाद। एक शायर और आ जायँ, तो दोनों तरफ़ से तीन-तीन हो जायँ। इतने में मियाँ आजाद तड़ से पहुँच गये।

एक ने पूछा—आप कौन?

आजाद—मैं शायर हूँ।

आप तखल्लुस क्या करते हैं?

आजाद ने कहा—आजाद। तब तो इन सबकी बाँछें खिल गयीं। जवाद, वकाद और आजाद का तुक मिल गया। अब लोग गजलें पढ़ने लगे। एक आदमी शेर पढ़ता है, बाकी तारीफ़ करते हैं—सुभान-अल्लाह, क्या तबीयत पायी है, वाह-वाह! फिर फ़रमाइएगा; कलम तोड़ दिये, कितनी साफ़ जबान है! इस बोल-चाल पर कुर-बान। कोई झूमता है, कोई टोपियाँ उछालता है।

आजाद—मियाँ, सुनो, हम शायरी के कायल नहीं। आप लोग तो जबान पर मरते हैं और हम ख़यालों पर जान देते हैं। हमे तो नेचर की शायरी पसंद है।

फ़हामी—अल्लाह, आप नेचरिए हैं! अनीसिए और दबीरिए तो सुनते थे, अब नेचरिए पैदा हुए। ग़जब ख़ुदा का! आपको इन उस्तादों का कलाम पसंद नहीं आता, जो अपना सानी नहीं रखते थे?

आजाद—मै तो साफ़ कहता हूँ, यह शायरी नहीं, खब्त है, बेतुकापन है, इसका भी कुछ ठिकाना है, झूठ के छप्पर उड़ा दिये। अब कान खोल कर नेचरी शायरी सुनो।

यह कह कर आजाद ने अँगरेजी की एक कविता सुनायी तो वह कहकहा पड़ा कि सराय भर गूँज उठी।

फ़हामी—वाह जनाब, वाह, अच्छी गिट-पिट है! इसी को आप शायरी कहते हैं?

आजाद—'शेख क्या जाने साबुन का भाव!' 'भैंस के आगे बीन बजाये, भैंस खड़ी पगुराय।'

आजाद तो नेचरल शायरी की तारीफ़ करने लगे, उधर वे पाँचों उर्दू की शायरी पर लोट-पोट थे। आतश और मीर की जबान, नासिख, अनीस, जौक, ग़ालिब, मोमिन-जैसे उस्तादों के कलाम पढ-पढ कर सुनाते थे। अब बताइए, फ़ैसला कौन करे? भठियारिन झगड़ा चुकाने से रही, भठियारा घास ही छीलना जाने, आखिर यह राय तय पायी कि शहर चलिए! जो पढ़ा-लिखा आदमी पहिले मिले, उसी का फ़ैसला सबको मंजूर। सबने

हाथ पर हाथ मारा। चलने ही को थे कि भठियारिन ने इनको ललकारा और चमक कर मियाँ जवाद का दामन पकड़ा—मियाँ, यह बुत्ते किसी और को बताना, हम भी इसी शहर में बढ़ कर इतने बड़े हुए हैं। हूँ तो अभी आपकी लड़की के बराबर, मुल सैकड़ों ही कुओं का पानी पी डाला। पहले कौड़ी-कौड़ी बायें हाथ से रख जाइए, फिर असबाब उठाइए।

अल्लामी—नेकबख्त, हम शरीफ़ भलेमानस हैं। शरीफ़ लोग कहीं दो पैसे के लिए ईमान बेचा करते हैं? चलो, दामन छोड़ दो, अभी दम के दम में आये।

भठियारिन—इस दाम में बंदी न आयेगी। ऐसे बड़े साहूकार खरे असामी हो, तो एक गंडा चुपके से निकाल दो न?

बकाट—यह मुड़चिरी है या भठियारिन? साहब, इससे पीछा छुड़ाओ। ऐसी भठियारिन तो कहीं देखी न सुनी।

भठियारिन—मियाँ, कुछ बेघे तो नहीं हुए हो, या चिल्ली नोंच कर घर से चले थे? चुपके से पैसे रख कर तब क़दम उठाइए।

मियाँ जवाद सीधे-सादे आदमी थे। जब उन्होंने देखा कि मुफ़्त में घेरे गये, तो कहा—भाई, तुम पाँचों जाओ, हम यहाँ बी भठियारिन की ख़ातिर से बैठे हैं। तुम लोग निपट आओ। वे सब तो उधर चले और जवाद सराय ही में भठियारी की हिरासत में बैठे, मगर एक आने पैसे न दे सके। दो-चार मिनट के बाद पुकारा—भठियारी-भठियारी! मैं लेटा हूँ। कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे पेट में चूहे दौड़ें कि रफ़ू-चक्कर हुए। फिर तीन मिनट के बाद गला फाड़-फाड़ चिल्लाने लगे—भठियारिन, हम भागनेवाले असामी नहीं हैं, तुम मजे से अपनी दाल बघारो। जब इन्होंने बार-बार छेड़ना शुरू किया, तो वह आग-भभूका हो गयी और बोली—मियाँ, ऐसे दो पैसे से दरगुज़री, तुमने तो गुल मचा-मचा कर मेरा कलेजा पका दिया। आप जायँ, बल्कि खटिया समेत दफ़न हों, तो मैं खुश, मेरा अल्लाह खुश। ऐ वाह, 'देखी तेरी कालपी और बावन पुरे उजाड़!' मियाँ, हूँ तो अभी जुमा जुमा आठ दिन की, मुल नाक पर तो मक्खी बैठने नहीं देती!

इधर मियाँ जवाद भठियारिन से चुहल कर रहे थे, उधर वे पाँचों आदमी सराय से चले, तो रास्ते में एक बुजुर्ग से मुलाकात हुई।

हामी ने कहा—या मौलाना, एक मसला हल कीजिए, तो एहसान होगा।

बुजुर्ग—मियाँ, मैं एक जाहिल, बेवक़ूफ़, बेसमझ, गुमराह आदमी हूँ, मौलाना नहीं; मौलाना होना दुश्वार बात है। मुझे मौलाना कहना इस लफ़्ज को बदनाम करना है।

हामी—अच्छा साहब, आप मौलाना न सही, मुंशी सही, मियाँ सही, आप एक झगड़े का फ़ैसला कर दीजिए और घर का रास्ता लीजिए। आपका हमारे बुजुर्गों पर और बुजुर्गों के बुजुर्गों पर एहसान होगा। झगड़ा यह है कि यह साहब (आज़ाद की तरफ इशारा करके) नेचरी शायरी के तरफ़दार हैं, और हम चारों उर्दू-शायरी पर जान देते हैं। अब बतलाइए, हममें से कौन ठीक कहता है और कौन गलत?

बुजुर्ग—यह तो बहुत ग़ौर करने की बात नहीं। आप चारों मुफ्त में झगड़ा करते हैं। आप सीधे अस्पताल जाइए और फ़स्द खुलवाइए, शायरी पर जान देना समझदारों का काम नहीं। जान खुदा की दी हुई है, उसी की याद में लगानी चाहिए। बाक़ी रही दूसरे किस्म की शायरी, मैंने उसका नाम भी नहीं सुना, उसके बारे में क्या अर्ज़ करूँ?

पाँचों आदमी यहाँ से निराश हो कर आगे बढ़े, तो एक मकतबखाना नजर से गुजरा। टूटा-फूटा मकान, पुरानी-धुरानी दालान, दीवारें बाबा आदम के वक़्त की। एक मौलवी साहब लंबी दाढ़ी लटकाये, हाथ में छड़ी लिये, हिल-हिल कर पढ़ा रहे हैं और बीस-पचीस लड़के जदल-काफ़िया उड़ा रहे हैं। एक लड़के ने दूसरे की चाँद पर तड़ से धप जमायी। मौलवी साहब पूछते हैं—अबे, यह क्या हुआ? लड़के कहते हैं—जी, कुछ नहीं, तख्ती गिर पड़ी। अबे, यह तख्ती की आवाज़ थी? जी हाँ, और नहीं तो क्या? इतने में दो-चार शरीर लड़कों ने मुँह चिढ़ाना शुरू किया। देखिए मौलवी साहब, यह मुँह चिढ़ाता है। नहीं मौलवी साहब, यह झक मारता है, मैं तो बाहर गया था। गुल-गपाड़े की आवाज ऐसी बुलंद है कि आसमान की खबर लाती है, कान-पड़ी आवाज नहीं सुनायी देती। जिधर देखो, चिल्ल-पों, जूती-पैज़ार! मगर सब के सब हिल-हिल कर बड़बड़ाते जाते हैं। किताब तो दो ही चार पढ़ रहे हैं; मगर वाही तबाही, अनाप-शनाप बहुतों को जबान पर है।

एक—आज शाम को मैं बाने की कनकइया जरूर लड़ाऊँगा।
दूसरा—आग़ा तक़ी के बाग़ में कौवा हलाल है।
तीसरा—अरे माली, तुझे गुलबूटे की पहचान रहे।
चौथा—मौलवी साहब, गो पीर हुए, नादान रहे।
पाँचवाँ—पढ़ोगे-लिखोगे, तो होगे खराब,
खेलोगे-कूदोगे, होगे नवाब।

मगर सबकी आवाजें ऐसी मिल-जुल गयी हैं कि खाक समझ में नहीं आता, क्या खुराफ़ात बकते हैं। लौंडे तो जदल-क़ाफ़िया उड़ा रहे हैं, उधर मौलवी साहब मजे से ऊँघते हैं। जब नींद खुली, तो एक लड़के को बुलाया—आओ, किताब लाओ, सबक पढ़ लो। वह सिर खुजलाता हुआ मौलवी साहब के करीब जा बैठा, और सबक शुरू हुआ, मगर न तो लड़के ने कुछ समझा कि मैंने क्या पढ़ा और न मौलवी साहब को मालूम हुआ कि मैंने क्या पढ़ाया। दोपहर के वक्त लड़के तख्ती ले कर बैठे, कोई गेंदे की पत्ती तख्ती पर मलता है, कोई कौड़ी से तख्ती को चिकनाता है। आध घंटे तक यही हुआ किया। फिर लड़के लिखने बैठे, मौलवी साहब कोठरी से मक्खियों को निकाल और दरवाजा बंद करके सो रहे। यहाँ खूब लप्पा-डुग्गी हुई। दो घंटे के बाद मौलवी साहब चौंके। कोठरी खोलते हैं, तो यहाँ दो लड़कों में चट-पट हो रही है, दोनों गुँथे पड़े हैं। निकलते ही एक के तमाचे लगाने शुरू किये।

जो अमीर का लड़का था और मौलवी साहब को त्यवहारी और जुमेराती खूब दिया करता था, उससे तो न बोले, बेचारे ग़रीब पर खूब हाथ साफ किया। आज़ाद ने दिल में कहा—

गर हमीं मकतब अस्त वईं मुल्ला,
कारे तिफ़्लाँ तमाम ख्वाहद शुद।

(अगर यही मकतब है और यही मौलवी, तो लड़के पढ़ चुके।)

८

एक दिन मियाँ आजाद सराय में बैठे सोच रहे थे, किधर जाऊँ कि एक बूढ़े मियाँ लठिया टेकते आ खड़े हुए और बोले—मियाँ, जरी यह खत तो पढ़ लीजिए, और इसका जवाब भी लिख दीजिए। आज़ाद ने खत लिया और पढ़ कर सुनाने लगे—

मेरे खूसट शौहर, खुदा तुमसे समझे!

आजाद—वाह! यह तो निराला खत है। न सलाम, न बंदगी। शुरू ही से कोसना शुरू किया।

बूढ़े—जनाब, आप खत पढ़ते हैं कि मेरे घर का कजिया चुकाते हैं? पराये झगड़े से आपका वास्ता? जब मियाँ-बीबी राजी है, तब आप कोई काजी हैं!

आजाद—अच्छा, तो यह कहिए कि आपकी बीबी-जान का खत है। लीजिए, सुनाये देता हूँ—

'मेरे खूसट शौहर, खुदा तुमसे समझे! सिकंदर पाताल से प्यासा आया; मगर तुमने अमृत की दो-चार बूँदें जरूर पी ली हैं, जभी मरने का नाम नहीं लेते। कुछ ऊपर सौ बरस के तो हुए, अब आखिर क्या आकबत के बोरिये बटोरोगे? जरा दिल में शरमाओ, हजारों नौजवान उठते जाते हैं, और तुम टैयाँ से मौजूद हो। डेंकूफीवर भी आया, मगर तुम मूँछों पर ताव ही देते रहे। हैजे ने लाखों आदमी चट किये, मगर आप तो हैजे को भी चट कर जाएँ और डकार तक न लें। बुखार में हजारों हयादार चल बसे; मगर तुम और भी मोटे हो गये। तुम्हें लकवा भी नहीं मारता, लू के झोंके भी तुम्हें नहीं झुलसाते, दरिया में भी तुम नहीं फिसल जाते, और सौ बात की एक बात यह है कि अगर हयादार होते, तो एक चिल्लू काफी था; मगर तुम वह चिकने घड़े हो कि तुम पर चाहे हजारों ही घड़े पड़ें; लेकिन एक बूँद न थम सके। वाह पट्ठे, क्यों न हो! किस बुरी साइत में तुम्हारे पाले पड़ी। किस बुरी घड़ी में तुम्हारे साथ ब्याह हुआ। माँ-बाप को क्या कहूँ, मगर मेरी गरदन तो कुंद छुरी से रेत डाली। इससे तो किसी कुएँ ही में ढकेल देते, कसाई ही के हवाले कर देते, तो यह रोज-रोज का कुढ़ना तो न होता। तुम खुद ही इंसाफ करो। तुम्हारे बुढ़भस से मुझ पर क्या गाज पड़ी। हाथ तो आपके काँपते हैं, पाँव में सकत नहीं, मुँह में दाँत न पेट में आँत, कमर कमान की तरह झुकी हुई, आँखों की यह कैफियत कि दिन को ऊँट नहीं सूझता। लाठी टेक कर दस कदम चले भी तो साँस फूल गयी, दम टूट गया। सुस्ताने बैठे, तो उठने का नाम नहीं लेते। सुबह को नन्हीं-नन्हीं दो चपातियाँ खा लीं, तो शाम तक खट्टी डकारें आ रही हैं, तोला भर सिकंजबीन का सत्यनाश किया, मगर हाजमा ठीक न हुआ! हाफिजे का यह हाल कि अपने बाप का भी नाम याद नहीं। फिर सोचो तो कि ब्याह करने का शौक क्यों चर्राया। एक पाँव तो कब्र में लटकाया है और ख्याल यह

गुदगुदाया है कि दूल्हा बने, दुलहिन लाये। खुदा-कसम, जिस वक्त तुम्हारा पोपला मुँह, सफेद भौंह, गालों की झुर्रियाँ, दोहरी कमर, गंजी चाँद और मनहूस सूरत याद आती है, तो खाना हराम हो जाता है। वाह बड़े मियाँ, वाह! खुदा झूठ न बुलाये, तो हमारे अब्बाजान से पचास-साठ बरस बड़े होंगे, और अम्माजान को तुमने गोद में खिलाया हो तो ताज्जुब नहीं। खुदा गवाह है, तुम मेरे दादा के बाप से भी बड़े हो, मगर वाह री किस्मत, कि आप मेरे शौहर हुए! जमीन फट जाय, तो मैं धँस जाऊँ।

—तुम्हारी जवान बीबी'

आजाद—जनाब, इसका जवाब किसी बड़े मुंशी से दिलवाइए।

बूढ़ा—बुढ़ापे में अब कभी शादी न करेंगे।

आजाद—वाह, क्या अभी शादी करने की हवस बाकी है? अभी पेट नहीं भरा।

बूढ़ा—अब इसका ऐसा जवाब लिखिए कि दाँत खट्टे हो जायँ।

आजाद—आप औरत के मुँह नाहक लगते हैं।

बूढ़ा—जनाब, उसने तो मेरी नाक में दम कर दिया, और सच पूछो, तो जि दिन उसको ब्याह लाये, नाक ही कट गयी। ऐसी चंचल औरत देखी न सुनी। मजा क्या कि नाक पर मक्खी बैठ जाय।

आखिर, आजाद ने पत्र का जवाब लिखा—

'मेरी अलबेली, छैल-छबीली, नादान बीवी को उसके बूढ़े शौहर की उठती जवानी देखनी नसीब हो। वह जुग-जुग जिये और तुम पूतों फलो, दूधों नहाओ, अठारह लड़के हों और अठारह दूनी छत्तीस छोकरियाँ। जब मैं दालान में कदम रखूँ, तो सब बच्चे, 'अब्बा आये, अब्बा आये, खिलौने लाये, पटाखा लाये' कह कर दौड़ें। मगर डर यह है कि तुम भी अभी कमसिन हो, उनकी देखा-देखी कहीं मुझे अब्बा न कह उठना कि पास-पड़ोस की औरतें मुझे उँगलियों पर नचायें। मुझे तुमसे इतनी ही मुहब्बत है, जितनी किसी को अपनी बेटी से होती है। अपनी नानी को मैं ऐसा प्यारा न था, जितनी तुम मुझे प्यारी हो। और क्यों न हो, तुम्हारी परदादी को मैंने गोदियों में खिलाया है और मेरी बहन ने उसे दूध पिलाया है। मुझे तुम्हारी दादी का गुड़िया खेलना इस तरह याद है, जैसे किसी को सुबह का खाना याद हो। तुम्हारे खत ने मेरे दिल के साथ वह किया, जो बिजली खलियान के साथ करती है, लेकिन मुझमें एक बड़ी सिफत यह है कि परले सिरे का बेहया हूँ। और क्यों न हो, शर्म औरतों को चाहिए, मैं तो चिकना घड़ा हूँ। माना कि आँखों मे नूर नहीं, मगर निगाह बड़ी बारीक रखता हूँ, बहरा सही, लेकिन मतलब की बात खूब सुनता हूँ, बुड्ढा हूँ, कमजोर हूँ, मगर तुम्हारी मुहब्बत का दम भरता हूँ। तुम्हारा प्यारा-प्यारा मुखड़ा, रसीली अँखियाँ, गोरी-गोरी बहियाँ जिस वक्त याद आती हैं, कलेजे पर साँप लोटने लगता है। तुम्हारा चाँदनी रात मे निखर कर निकलना, कभी मुसकिराना, कभी खिलखिलाना—कितना शरमाना! कैसा लजाना? और तो और, तुम्हारी फुर्ती से दिल लोट-पोट है, कलेजे पर चोट है। तुम्हारा

फिरकी की तरह चारों ओर घूमना, मोरों की तरह झूमना, कभी खेलते-खेलते मेरी चपतगाह पर टीप जमायी, कभी शोखी से वह डाँट बतायी कि कलेजा काँप उठा, कभी आप ही आप रोना, कभी दिन-दिन भर सोना, अल्हड़पन के दिन, बारह बरस का सिन, बीबीजान, तुम पर कुरबान, ले कहा मानो, हमें ग़नीमत जानो। मैं सुबह का चिराग़ हूँ, हवा चले या न चले, अब गुल हुआ, अब गुल हुआ। डूबता हुआ आफताब हूँ, अब डूबा, अब डूबा। मुझे सताना, मुए पर सौ दुर्रे। तुम खूब जानती हो कि मेरी बातें कितनी मीठी होती हैं। सत्तर बरस हो गये कि दाँत चूहे ले गये, तब से हलुए पर बसर है, फिर जो रोज हलुआ खायगा, उसकी बातें मीठी क्यों न होंगी। तुम लाख रूठो, फिर भी हमारी हो, बीवी हो, वह शुभ घड़ी याद करो; जब हम दूल्हा बने, पुराने सिर पर नयी पगड़ी जमाये, सेहरा लटकाये, मेंहदी लगाये, मुर्गी के बराबर घोड़िया पर सवार, 'मीठी पोई' जाते थे, और तम दुलहिन बनी, सोलह सिंगार किये पालकी में से झाँक रही थीं। हमारे गालों की झुर्रियाँ, हमारा पोपला मुँह, हमारी टेढ़ी कमर देख कर खुश तो न हुई होगी? और क्या लिखूँ, एक नसीहत याद रखो, एक तो मेले-ठेले न जाना, दूसरे आस-पास की छोकरियों को गुइयाँ न बनाना। खुदा करे, जब तक जमीन और आसमान कायम है, तुम जवान रहो, और नादान रहो; हमारे सफेद बाल तुम्हें भायें, हासिद खार खायें।

तुम्हारा बूढ़ा शौहर'

बूढ़ा—माशा-अल्लाह! आपने खूब लिखा, मगर इस खत को ले कौन जाय? अगर डाक से भेजता हूँ, तो गुम होने का डर, उस पर तीन दिन की देर। अगर आप इतना एहसान करें कि इसे वहाँ पहुँचा भी दें, तो क्या पूछना।

आजाद सैलानी तो थे ही, समझे, क्या हर्ज है, साँड़नी मौजूद है, चलूँ, इसी बहाने जरा दिल्लगी देख आऊँ। कुछ बहुत दूर भी नहीं, साँड़नी पर मुश्किल से दो घंटे की राह है। बोले—आप बुजुर्ग आदमी हैं, आपका हुक्म बजा लाना मेरा फर्ज है, लीजिए जाता हूँ।

यह कह कर साँड़नी पर बैठे और छुन-छुन करते जा पहुँचे। दरवाजे पर आवाज दी, तो एक कहारिन ने बाहर निकल कर पूछा—मियाँ कौन हो, कहाँ से आना हुआ किसकी तलाश है?

आजाद—बी महरी साहबा, सलाम। हम मुसाफिर परदेसी हैं।

कहारिन—वाह! अच्छे आये मियाँ, यह क्या कुछ गजब है?

आजाद—खुदा के लिए बेगम साहबा से कह दो कि बड़े मियाँ ने यह खत भेजा है।

महरी ने एक चीख मारी, तो घर के अंदर गयी। जा कर बोली—ऐ बी, मियाँ के पास से एक साहब आये हैं, खत लाये हैं।

यह सुन कर बोलीं—चल हटो, किसी और के घर पर कहना, यहाँ क्या, लेकिन नहीं ... है। मियाँ किसी कब्रस्तान में आँखें मीचे सो रहे होंगे कि खत भेजेंगे!

महरी—जरी, झरोखे से झाँकिए तो; वह क्या सामने खड़े हैं।

बेगम साहबा झरोखे की तरफ़ चलीं, तो अपनी बूढ़ी अम्माँ को आइना सामने रखे, बाल सँवारते देखा। छेड़ कर बोलीं—ऐ अम्माँ, आज तो बेतौर चोटी-कंघी की फ़िक्र है। कोई घूरे; तो इंसान निखार करे। कोई मरे, तो आदमी शिकार करे। तुम दो ऊपर अस्सी बरस की हुईं, मगर जवानी की हवस न गयी। ख़ुदा ही ख़ैर करे।

अम्माँ—मुझ नसीबों-जली की किस्मत में यही बदा था कि बेटी की ज़बान से ऐसी-ऐसी बातें सुनूँ। कोई और कहती, तो उसकी ज़बान निकाल लेती; लेकिन तुम तो मेरी आँखों की पुतली हो। हाय! ममता बुरी चीज़ है! बेटा, तुम ये बातें क्या जानो, अभी जवान हो, नादान हो, बनावट-सजावट तो मेरी घूँटी में पड़ी थी, और मैं न बनती-ठनती, तो तुम्हारी आँखों को तिरछी चितवन कौन सिखाता? बाहर जाओ, तुम्हारे मियाँ का आदमी आया है।

बीबी ने झरोखे से जो देखा, एक आदमी सचमुच खड़ा है, और है भी अलबेला, छैला, जवान, तो तुरंत महरी को भेजा कि जा कर उन्हें बैठने के लिए कुर्सी निकाल दे। आजाद तो कुर्सी पर बैठे और चिक के उधर आप जा बैठीं। आजाद की उन पर निगाह पड़ी, तो तीर सा लग गया। कमर ऐसी पतली कि साये के बोझ से बल खाये, मुखड़ा बिन बने चाँद को लजायें, उस पर सियाह रेशमी लिबास और हिना की बू-बास। जोबन फटा पड़ता था, निगाह फिसली जाती थी।

महरी ने आजाद से पूछा—बड़े मियाँ तो आराम से है?

आजाद—हाँ, मैं उनका खत लाया हूँ। अपनी बेगम साहबा से मेरा सलाम कहो और यह खत उनको दो।

महरी—बेगम साहबा कहती हैं, आप खत लाये हैं, तो पढ़ कर सुना भी दीजिए।

आजाद ने खत पढ कर सुनाया, तो उस नाजनीन का चेहरा मारे ग़ुस्से के सुर्ख हो गया। बिना कुछ कहे-सुने समझ कर वहाँ से उठीं और अपनी माँ के पास आ कर खड़ी हो गयीं। अम्मीजान इस वक्त चाँदनी की बहार देखने में मसरूफ थीं। बोलीं—बेटी, देख तो क्या नूर की चाँदनी छिटकी हुई है, चाँद इस वक्त दुलहिन बना हुआ है!

बेटी—अम्मीजान, तुम्हारी भी अनोखी बातें हैं। सरदी की चाँदनी, जैसे बूढ़े की नसीबों-जली बीबी की जवानी। आज तो आसमान यों ही झक-झक कर रहा है, आज निकला तो क्या, जब जाने कि अँधेरे-धुप में शक्ल दिखाये। बुढ़िया ताड़ गयी। बोली—बेटी, जरी सब्र करो, अपनी जवानी की कसम, बुड्ढा तो कब्र में पाँव लटकाये बैठा है, आज मुआ, कल दूसरा दिन, फिर हम तुमको किसी अच्छे घर ब्याहेंगे। अबकी ख़ुदाई भर की खाक छान कर वह ढूँढ़ निकालूँ, जो लाखों में एक हो। सुबह-शाम खबर आना ही चाहती है कि बुड्ढा चल बसा।

यह सुन कर बेटी खिलखिला कर हँस पड़ी। बोली—अम्माँ, जब तुम अपनी जवानी

की क़सम खाती हो, तो मुझे बेअख़्तियार हँसी आती है। तुम तो अपने को बिल्कुल नन्हीं ही समझती हो। करोड़ों तो आपके गालों पर झुर्रियाँ, बगुले के पर का सा सफेद जूड़ा, सिर घड़ी का खटका बना हुआ, कमर टेढ़ी, मगर मेंहदी का लगाना न छूटा, न छूटा। रंगीन दुपट्टा ही उम्र भर ओढ़ा, जब देखो, कंघी-चोटी से लैस। ख़ुदा-कसम, ऐसी अनगढ़ बूढ़ी देखी न सुनी।

बुढ़िया ने टुइयाँ तोते की तरह पोपले मुँह से कहा—प्यारी, तुम्हारी बातों से मुझे हौल होता है, अल्लाह मेरी बच्ची पर रहम खाये, बूढ़े के मरने की खबर सुनाये।

महरी—बड़ी बेगम, आपके नमक की कसम, साहबज़ादी को दिलोजान से आपका प्यार है; मगर भोली नादान हैं, जो अनाप-शनाप मुँह में आया, कह सुनाया। अल्हड़-पने के तो इनके दिन ही हैं, जुमा-जुमा आठ दिन की पैदायस, नेक-बद, ऊँच-नीच क्या जानें। जब सयानी होंगी, तो शहूर आपी-आप सीख जायँगी। बुढ़िया ने एक ठंडी साँस भरके कहा—जो मुझे इनकी बातों से रंज हुआ हो, तो खुदा मुझे जन्नत न दे। मगर करूँ क्या, बुरा तो यह मालूम होता है कि मुझको यह आये-दिन ताने देती है कि तुम बुढ़िया हो, बुढ़ापे में निखरती क्यों हो? मैं किससे कहूँ कि इसके ग़म ने मेरी कमर तोड़ डाली, इसको कुढ़ते देख कर घुली जाती हूँ, नहीं, अभी मेरा सिन ही क्या है! अच्छा, तू ही ईमान से कह, कोई और भी मुझे बूढ़ी कहता है?

महरी दिल में तो हँसती थी कि इन्हें जवान बनने का शौक चर्राया है, हौवा के साथ खेली होंगी, मगर अभी नन्हीं ही बनी जाती हैं; लेकिन छटी हुई औरत थी, बात बना कर बोली—ऐ तोबा, बुढ़ापे की आप में तो छाँह भी नहीं, मेरा अल्लाह जानता है, जब आप और बिटिया को कोई साथ देख लेता है, तो पहले आप पर नज़र पड़ती है, पीछे इन पर। बल्कि, एक मुई दिलजली ने परसों चुटकी ली थी कि "छोटी बी तो छोटी बी; बड़ी बी सुभान-अल्लाह!" लड़की तो खैर, इसकी माँ ने तो खूब काठी पायी है। आपका चेहरा कुंदन की तरह दमकता है, जो देखता है, तरसता है।

बुढ़िया तो खिल गयी लेकिन बेटी जल उठी। कड़क कर बोली—चल, चुप खुशा-मदिन! अल्लाह करे, तेरा मियाँ भी मेरे मियाँ का सा बुड्ढा हो जाय। और तुम खुशा-मद न करो, तो खाओ क्या? अम्माँ पर लोगों की नज़र पड़ती है! झूठे पर शैतान की फटकार! बूढ़ी औरत, कुछ ऊपर सौ बरस का सिन, लठिया टेक कर दस कदम चलती हैं, तो घंटों [illegible] ती हैं। दिन को ऊँट और सारस नहीं सूझता, इनके बूढ़े नखरे देख कर [illegible] आती है। जी जलता है कि यह किस बिरते पर इतराती हैं, मुँह में दाँत न [illegible] आँतें; भला कमर तो मेरे सबब से झुक गयी, और दाँत क्या हुए?

आखिर, महरी ने उसे समझा-बुझा कर बात टाल दी, और बोली—वह मियाँ बाहर बैठे हैं, उनके लिए आप क्या कहती हैं? उसने महरी की बात का कुछ जवाब न दिया। वहाँ से उठ कर बगीचे में आयी और इठला-इठला कर टहलने लगी। बाल बिखरे हुए, यही मालूम होता था कि साँप लहरा रहा है। कमर लाखों बल खा रही है। मियाँ आज़ाद

ने चिक की दराजों से जो उसे बेनकाब देखा, तो सन से जान निकल गयी ! कलेजे पर साँप लोटने लगा। संयोग से उस रमणी ने कहीं इनको देख लिया कि आँखें सेक रहे हैं और दूर ही से जोबन लूट रहे हैं, तो बदन को छिपाये, आँख चुराये, बिजली की तरह लौंक कर नज़र से ग़ायब हो गयीं। आजाद हैरान कि अब क्या करूँ। आखिर, दिल की बेकरारी ने ऐसा मजबूर किया कि आठ-आठ आँसू रो कर यह गजल गाने लगे—

क्या जानिए कि वस्ल में क्या बात हो गयी;
आँखें नहीं मिलाते हैं शरमाये जाते हैं।
दिल मेरा लेके क्या कहीं भूल आये हैं हुज़ूर ?
खोये हुए से आप जो कुछ पाये जाते हैं।
काले डसें जो ज़ुल्फ़ तुम्हारी कभी छुएँ !
लो, अब तुम्हारे सिर की कसम खाये जाते हैं।
तमकनत को न काम फ़रमाओ;
एक नजर मुड़के देखती जाओ।
आशिकों से न इस कदर शरमा;
एक निगह के लिए न आँख चुरा।
जाने-जाँ, कुछ तरस न खाओगी ?
यों तड़पता ही छोड़ जाओगी ?

वह इन-ऐसों की कब सुननेवाली थी, मुड़ कर देखना गाली थी। आजाद ने जब देखा कि यहाँ दाल गलने की नहीं, कोई यों टहलते हुए देख ले, तो लेने के देने पड़ें, तो बेचारे रोते हुए घर आये।

उधर उस नाजनीं ने जवानी की उमंग में यह ठुमरी भैरवी की धुन में लहरा-लहरा कर गायी—

पिया के आवन की भयी बिरियाँ, दरवजवा ठाढ़ी रहूँ;
मोरे पिया को बेगि ले आओ री, निकसत जियरा जाय;
पिया दरवजवा ठाढी रहूँ !

इसके जवाब में उनकी अम्माँजान टीपदार आवाज में क्या कहती हैं—

जोबनवाँ हो, चार दिना दीन्हों साथ।
जोबन रितु जात सभी मुख मोरत, 'कदर' न पूछे बात रे।
जोबनवाँ हो, चार दिना दीन्हों साथ।

मियाँ आजाद ने चलते-चलाते बाहर से यह तान लगायी—

तेरे नैनों ने मुझे मारा, रसीली मतवारियों ने जादू डारा।

महरी ने देखा कि सबने अपने-अपने हाल के मुताबिक हाँक लगायी। एक मैं ही फिसड्डी रह गयी, तो वह भी कफन फाड़कर चीख उठी—

जाओ-जाओ, काहे ठाढ़े डारे गल-बाहीं रे ?
घेरे रहत नित नेरे जैसे छाईं रे।
जानत हूँ जो हमसे चहत हो
नाहक इतनी मिनती करत हो,
'कदर' करत हो अरे नाहीं-नाहीं रे।
जाओ चलो, काहे ठाढ़े डारे गल-बाहीं रे !

९

आजाद को नवाब साहब के दरबार से चले महीनों गुजर गये, यहाँ तक कि मुहर्रम आ गया। घर से निकले, तो देखते क्या हैं, घर-घर कुहराम मचा हुआ है, सारा शहर हुसेन का मातम मना रहा है। जिधर देखिए, तमाशाइयों की भीड़, मजलिसों की धूम, ताजिया-खानों में चहल-पहल और इमामबाड़ों में भीड़-भाड़ है। लखनऊ की मजलिसों का क्या कहना! यहाँ के मर्सिये पढ़नेवाले रूम और शाम तक मशहूर हैं। हुसेनाबाद का इमामबाड़ा चौदहवीं रात का चाँद बना हुआ था। उनके साथ एक दोस्त भी हो लिये थे। उनकी बेकरारी का हाल न पूछिए। वह लखनऊ से वाकिफ न थे, लोटे जाते थे कि हमें लखनऊ का मुहर्रम दिखा दो; मगर कोई जगह छूटने न पाये। एक आदमी ने ठंडी साँस खींच कर कहा—मियाँ; अब वह लखनऊ कहाँ? वे लोग कहाँ? वे दिन कहाँ? लखनऊ का मुहर्रम रंगीले पिया जानआलम के वक्त में अलबत्ता देखने काबिल था। जब देखो, बाँकों की तलवार मियान से दो उंगल बाहर। किसी ने जरा तीखी चितवन की, और उन्होंने खट से सिरोही का तुला हुआ हाथ छोड़ा, भंडारा खुल गया। एक-एक घंटे में बीस-बीस वारदातों की खबर आती थी, दूकानदार जूतियाँ छोड़ छोड़ कर सटक जाते थे। वह धक्कमधक्का, वह भीड़-भड़ाका होता था कि वाह जी वाह! इंतिजाम करना खालाजी का घर न था। अब कोई चूँ भी नहीं करता, तब छोटे-छोटे आदमी हजारों लुटाते थे, अब कोई पैसा भी खर्च नहीं करता। अब न अनीस हैं, न दबीर, न बमीर हैं, न दिलगीर। *

अफ़सोस जहाँ से दोस्त क्या-क्या न गये;
इस बाग़ से क्या-क्या गुलेराना न गये।
था कौन सा बाग, जिसने देखी न खिज़ाँ,
वो कौन से गुल खिले वो मुरझा न गये।

दबीर का क्या कहना था, एक बंद पढ़ा और सुननेवाले लोट गये। अनीस को खुदा बख्शे, क्या कलाम था, गोया जवाहिरात के टुकडे हैं। लेकिन हाथी लुटेगा भी, तो कहाँ तक! अब भी इस शहर की ऐसी ताजियादारी दुनियाँ भर में कहीं नहीं होती।

आजाद और उनके दोस्त चले जाते थे। राह में वह भीड़ थी कि कंधे से कंधा छिलता था। हवा भी मुश्किल से जगह पाती थी। ग़रीब-अमीर, बूढ़े-जवान उमड़े चले आते हैं। जिधर देखो, निराली ही सज-धज। कोई हुसेन के मातम में नंगे ही सिर चला जाता है, कोई हरा-हरा जोड़ा फड़काता है। हसीनों की मातमी पोशाक, बिखरे हुए बाल, कभी लजाना, कभी मुसकिराना। शोहदों का सौ-सौ चक्फेरियाँ लगाना

* लखनऊ के मशहूर मर्सिया कहने वाले।

तमाशाइयों की बातें, दिहातिनें बेंदी लगाये, फरिया फड़काये, गोंद से पटिया जमाये बातें कर रही हैं। लीजिए, आग़ा बाकर के इमामबाड़े में खट से दाखिल। वाह मियाँ बाक़र, क्यों न हो, नाम कर गये। चकाचौंध का आलम है। लेकिन गली तंग, तमाशाइयों की अक्ल दंग। मगर लोग घुस-पैठ कर देख ही आते हैं। नाक टूटे या सिर फूटे, आग़ा बाकर का इमामबाड़ा जरूर देखेंगे।

दोनों आदमी वहाँ से आगे बढ़े, तो कच्चे पुल पहुँचे। देखते क्या हैं, एक बाबा आदम के ज़माने के बूढ़े अगले वक्तों के लोगों को रो रहे हैं। वाह-वाह! लखनऊ के कुम्हार, क्या कमाल हैं। बुड्ढा ऐसा बनाया कि मालूम होता है, पोपले मुँह से अब बोला, और अब बोला। वही सन के से बाल, वही सफेद भौंहें, वही चितवन, वही माथे की शिकन, वही हाथों की झुर्रियाँ, वही टेढ़ी कमर, वही झुका हुआ सीना। वाह रे कारीगर, तू भी अपने फ़न में यकता है। वहाँ से जो चले, तो दारोगा वाजिदअली के इमामबाडे में आये। यहाँ सूरज-मुखी पर वह जोबन था कि आफ़ताब अगर एक नज़र छिप कर देख पाता, तो शर्म के मारे मुँह छिपा लेता। बेधड़क जा कर कुर्सियों पर बैठ गये। इलायची, चिकनी डली पेश की गयी। वहाँ से हुसेनाबाद पहुँचे। सुभान-अल्लाह! यह इमामबाड़ा है या जन्नत का मकान! क्या सजावट थी; बुर्जों पर कंदीलें रोशन थीं, मीनारों पर शमा जलती हुई चिराग़ों की कतार हवा के झोंकों से लहरा-लहरा कर अजब समाँ दिखाती थी। नजर जो देखी, तो आँखे ठंडी हो गयीं।

अब इनके दोस्त को शौक चर्राया कि तवायफों के इमामबाड़ों की जियारत करें। पहले मियाँ आज़ाद झिझके और बोले—बंदा ऐसी जगह नहीं जाने का, अपनी शान के खिलाफ़ है। दोस्त ने कहा—भाई, तुम बड़े रूखे-फीके आदमी हो। हैदर, मुश्तरी, गौहर और आबादी के मर्सिये न सुने, तो किसी से क्या कहेंगे कि लखनऊ का मुहर्रम देखा। आजकल वहाँ जाना हलाल है! इन दस दिनों में मजे से जहाँ चाहे जाइए, रंगीन कमरों में दो गाल हँस-बोल आइए, कोई कुछ नहीं कह सकता।

आज़ाद—यह कहिए तो खैर, बंदा भी लहू लगा कर शहीदों में दाखिल हो जाय। पहले गौहर के यहाँ पहुँचे। अच्छे-अच्छे रईस-ज़ादे बैठे हुए हैं। एक बड़े मालदार जौहरी साहब मटकते हुए आये। दस रुपये की कारचोबी टोपी सिर पर, प्याजी अतलस की भड़कीली अचकन पहने हुए। खिदमतगार के कंधे पर कीमती दुशाला। यह ठाट-बाट, मगर बैठते ही टोके गये। बैठे तो जरीह (ताज़िया) की तरफ पीठ करके! गौहर ने एक अजीब अदा से झिड़क दिया—ऐ वाह, बड़े तमीजदार हो। जरीह की तरफ़ पीठ कर ली! सीधे बैठो, आदमियत के साथ!

मियाँ आजाद ने चुपके से दोस्त के कान में कहा—मियाँ, इस टीम-टाम से तो आये, मगर घुड़की खा कर मिनके तक नहीं।

दोस्त—भाईजान, गौहर लखनऊ की जान है, लखनऊ की शान है। ऐसा खुशनसीब कोई हो तो ले कि इसकी घुड़कियाँ सहे।

लोग अदब से गरदन झुकाये बैठे कनखियों से आँखों को सेक रहे थे, लेकिन किसी के मुँह से बात न निकलती थी। यहाँ से उठे, तो फिरंगी-महल मे हैदरजान के यहाँ पहुँचे। वहाँ मर्सिया हो रहा था—

निकले खेमे से जो हथियार लगाये अब्बास,
चढ के रहवार पर मैदान में आये अब्बास।

इस शेर को ऐसी प्यारी आवाज से अदा किया कि सुननेवाले लोटन कबूतर हुए जाते थे। राग और रागिनी तो उसकी लौंडियाँ थीं। सबके सब सिर धुनते थे, क्या प्यारा गला पाया है! मियाँ आज़ाद की बाँछें खिली जाती थीं और गरदन तो घड़ी का खटका हो गयी थी।

यहाँ से उठे, तो मुश्तरी के कमरे में पहुँचे। देखनेवालों का वह हुजूम था कि तिल रखने की जगह नहीं।

'खंजर जो बोसा गाहे पयंबर पै चल गया' इसको झँझौटी की धुन में इस लुत्फ़ से पढ़ा कि लोग फडक उठे।

दोस्त—क्यों यार, क्या लखनऊ में ज़ेवर पहनने की कसम है?

आजाद—भाई, तुम बिलकुल ही गँवार हो। मातम मे जेवर का क्या जिक्र है? गोरे-गोरे कानों में काले-काले करनफूल, हाथों में सियाह चूड़ियाँ, बस यही काफ़ी है। लेकिन यह सादगी भी अजीब लुत्फ़ दिखाती है।

यहाँ से उठ कर दोनों आदमी मातम की मजलिसों में पहुँचे। जिधर जाते हैं, रोने-पीटने की आवाज आती है; जिसे देखिए, आँखों से आँसू बहा रहा है। सारी रात मजलिसों में घूमते रहे, सुबह अपने घर पहुँचे।

१०

वसंत के दिन आये। आज़ाद को कोई फ़िक्र तो थी ही नहीं, सोचे, आज वसंत की बहार देखनी चाहिए। घर से निकल खड़े हुए, तो देखा कि हर चीज़ ज़र्द है, पेड़-पत्ते ज़र्द, दरोदीवार ज़र्द, रंगीन कमरे ज़र्द, लिबास ज़र्द, कपड़े ज़र्द। शाहमीना की दरगाह में धूम है, तमाशाइयों का हुजूम है। हसीनों के झमकड़े, रँगीले जवानों की रेल-पेल, इंद्र के अखाड़े की परियों का दगल है, जंगल में मंगल है। वसंत की बहार उमंग पर है, जाफ़रानी दुपट्टों और केसरिये पाजामों पर अजब जोबन है। वहाँ से चौक पहुँचे। जौहरियों की दूकान पर ऐसे सुंदर पुखराज हैं कि पुखराज-परी देखती, तो मारे शर्म के हीरा खाती और इंद्र का अखाड़ा भूल जाती। मेवा बेचनेवाली ज़र्द आलू, नारंगी, अमरूद, चकोतरा, महताबी की बहार दिखलाती है, चंपई दुपट्टे पर इतराती है। मालिन गेंदा, हजारा, ज़र्द गुलाब की बू-बास से दिल खुश करती है। और पुकार-पुकार कर लुभाती है, गेंदे का हार है, गले की बहार है। हलवाई खोपड़े की ज़र्द बर्फ़ी, पिस्ते की बर्फ़ी, नानखताई, बेसन के लड्डू, चने के लड्डू दूकान पर सजाये बैठा है। खोंचेवाले पापड़, दालमोट, सेव वग़ैरह बेचते फिरते हैं। आज़ाद यही बहार देखते, दिल बहलाते चले जाते थे। देखते क्या हैं, लाला वसंतराय के मकान में कई रँगीले जवान बाँकी टोपियाँ जमाये, वसंती पगिया बाँधे, केसरिये कपड़े पहने बैठे हैं। उनके सामने चंद्रमुखी औरतें बैठी नौबहार की धुन में वसंत गा रही हैं। क़ालीन ज़र्द है, छत-पोश ज़र्द, कंवल ज़र्द, ज़र्द झालर से मकान सजाया है, वसंत-पंचमी ने दरोदीवार तक को वसंती लिबास पहनाया है। कोई यह गीत गाती है—

ऋतु आयी वसंत अजब बहार;
खिले ज़र्द फूल बिरवों की डार।
चटक्यो कुसुम, फूलै लागी सरसों;
झूमत चलत गेहूँ की बार।
हर के द्वारे माली का छोहरा;
गरवा डारत गेंदों के हार।
टेसू फूले, अंबा बौरे;
चंपा के रूख कलियन की बहार।
गरवा डारे उस्ताद के द्वारे;
चलो सब सखियाँ कर-कर सिंगार।

कोई मियाँ अमानत की यह ग़ज़ल गाती है—

है जलवए तन से दरोदीवार बसंती;
पोशाक जो पहने है मेरा यार बसंती।

क्या फस्ले बहारी में शिगूफे हैं खिलाये ;
माशूक़ हैं फिरते सरे-बाजार बसंती।
गेंदा है खिला बाग़ में, मैदान में सरसों ;
सहरा वह बसंती है, यह गुलजार बसंती।
मुँह जर्द दुपट्टे के न आँचल से छिपाओ ;
हो जाय न रंगे गुले-रुखसार बसंती।

आजाद चले जाते थे कि एक नयी सज-धज के बुजुर्ग से मुठभेड़ हुई। बड़े तजुर्बे-कार, खर्राट आदमी थे। आजाद को देखते ही बोले—आइए-आइए खूब मिले। वल्लाह, शरीफ़ की सूरत पर आशिक हूँ। चीन, माचीन, हिंद और सिंध, रूम और शाम, अलगरज, सारी खुदाई को बंदे ने खाक छानी है, और तू यार जानी है। सफर का हाल सुन, घुँघरू बोले छुन-छुन। ऐसी बात सुनाऊँ, परी को लुभाऊँ, जिन को रिझाऊँ, मिसर की दास्तान सुनाऊँ।

यह तकरीर सुन कर आज़ाद के होश पैतरे हो गये, समझ में न आया, कोई पागल है, या पहुँचा हुआ फ़क़ीर। मगर आसार तो दीवानेपन के ही हैं।

खुर्राट ने फिर बड़-बड़ाना शुरू किया—सुनो यार, कहता है खाकसार, हम सो रहें तुम जागो, फिर हम उठ बैठें, तुम सो रहो, सफर यार का है, सोते-जागते राह काटें, सफ़र का अंधा कुआँ उन्हीं ईंटों से पाटें।

यह कह कर खुर्राट ने एक खोंचेवाले को बुलाया और पूछा—खुटियाँ कितने सेर? बर्फ़ी का क्या भाव? लड्डू पैसे के कै? बोलो झटपट, नहीं हम जाते हैं। खोंचे-वाले ने समझा, कोई दीवाना है। बोला—पैसे भी हैं या भाव ही से पेट भरोगे?

खुर्राट—पैसे नहीं हैं, तो क्या मुफ़्त माँगते हैं? तौल दे सेर भर मिठाई।

मिठाई ले कर आजाद को जिद करके खिलायी, ठंडा पानी पिलवाया और बोले—शाम हुई, अब सो रहो, हम असबाब ताकते हैं। मियाँ आजाद एक दरख्त के नीचे लेटे, खुर्राट ने ऐसी मीठी-मीठी बातें कीं कि उन्हें उस पर यक़ीन आ गया। दिन भर के थके थे ही, लेटते ही नींद आ गयी। सोये तो घोड़े बेच कर, सिर-पैर की खबर नहीं, गोया मुर्दों से शर्त लगायी है। वह एक काइयाँ, दुनिया-भर का न्यारिया, उनको ग़ाफ़िल पाया, तो घड़ी, सोने की चेन, चाँदी की मूठवाली छड़ी, चाँदी का गिलौरीदान ले कर चलता हुआ। आध घंटे में आजाद की नींद खुली, तो देखा कि खुर्राट ग़ायब है, घड़ी और चेन, डब्बा और छड़ी भी ग़ायब। चिल्लाने लगे—लूट लिया, ज़ालिम ने लूट लिया। झाँसा दे गया। ऐसा चकमा कभी न खाया। दौड़ कर थाने में इत्तला की। मगर खुर्राट कहाँ, वह तो यहाँ से दस कोस पर था। बेचारे रो-पीट कर बैठ रहे। थोड़ी ही दूर गये होंगे कि एक चौराहे पर एक जवान को मुश्की घोड़े पर सवार आते देखा। घोड़ा ऐसा सरपट जा रहा था कि हवा उसकी गर्द तक को न पहुँचती थी। अँधेरा हो ही गया था, एक कोने में दबक रहे कि ऐसा न हो, कहीं झपेट में आ जायँ। इतने

में सवार उनके सिर पर आ खड़ा हुआ। झट घोडे की बाग रोकी और इनकी तरफ़ नज़र भर कर देखने लगा। यह चकराये, माजरा क्या है? यह तो बेतरह घूर रहा है, कहीं हंटर तो न देगा।

जवान—क्यों हजरत, आप किसी को पहचानते भी हैं? खुदा की शान, आप और हमको भूल जाँय!

आजाद—मियाँ, तुमको धोखा हुआ होगा। मैंने तो कभी तुम्हारी सूरत भी नहीं देखी।

जवान—लेकिन मैंने तो आपकी सूरत देखी है; और आपको पहचानता हूँ। क्या इतनी जल्दी भूल गये? यह कह कर वह जवान घोडे से उतर पड़ा और आज़ाद से चिमट गया।

आज़ाद—आपको सचमुच धोखा हुआ।

जवान—भाई, बडे भुलक्कड़ हो! याद करो, कॉलेज में हम-तुम, दोनों एक ही दर्जे में पढ़ते थे। वह किश्ती पर हवा खाने जाना और दरिया के मजे उड़ाना; वह मदारी खोंचेवाला, वह उकलैदिस के वक्त उड़ भागना; सब भूल गये? अब मियाँ आजाद को याद आयी। दोस्त के गले से लिपट गये और मारे खुशी के रो दिये।

जवान—तुम्हें याद होगा, जब मैं इंटरमीडिएट का इम्तिहान देने को था, तो मेरे पास फीस का भी ठिकाना न था। रुपये की तलाश में इधर-उधर भटकता फिरता था कि राह में अस्पताल के पास तालाब पर तुमसे मुलाकात हुई और तुमने मेरे हाल पर रहम करके मुझे रुपये दिये। तुम्हारी मदद से मैने बी० ए० तक पढ़ा। लेकिन इस वक़्त तुम बडे उदास नजर आते हो, इसका क्या सबब है?

आजाद—यार, कुछ न पूछो। एक खुर्राट के चकमे में आ गया। यहीं घास पर लेट रहा, और वह मेरी घड़ी-चेन वगैरह ले कर चलता हुआ।

जवान—भई वाह! इतने घाघ बनते हो, और एक खुर्राट के भर्रे में आ गये! आप के बटन तक उतार ले गया और आप को खबर नहीं। ले अब कान पकड़िए कि अब फिर किसी मुसाफ़िर की दोस्ती का एतबार न करेंगे। मिठाई तो आप खा ही चुके हैं, चलिए, कहीं बैठ कर वसंती गाना सुनें।

११

एक दिन आजाद शहर की सैर करते हुए एक मकतबखाने में जा पहुँचे। देखा, एक मौलवी साहब खटिया पर उकड़ू बैठे हुए लड़कों को पढ़ा रहे हैं। आपकी रँगी हुई दाढ़ी पेट पर लहरा रही है। गोल-गोल आँखें, खोपड़ी घुटी-घुटाई, उस पर चौगोशिया टोपी जमी-जमायी। हाथ में तसबीह लिये खटखटा रहे हैं। लौंडे इर्द-गिर्द गुल मचा रहे हैं। हू-हक मची हुई है, गोया कोई मंडी लगी हुई है। तहजीब कोसों दूर, अदब काफ़ूर, मगर मौलवी साहब से इस तरह से डरते हैं, जैसे चूहा बिल्ली से, या अफीमची नाव से। जरी चितवन तीखी हुई, और खलबली मच गयी। सब किताबें खोले झूम झूम कर मौलवी साहब को फ़ुसला रहे हैं। एक शेर जो रटना शुरू किया, तो बला की तरह उसको चिमट गये। मतलब तो यह कि मौलवी साहब मुँह का खुलना और जबान का हिलना और उनका झूमना देखें, कोई पढ़े या न पढ़े, इससे मतलब नहीं। मौलवी साहब भी वाजबी ही वाजबी पढ़े-लिखे थे, कुछ शुद-बुद जानते थे। पढ़ाने के फ़न से कोरे। एक शागिर्द से चिलम भरवायी, दूसरे से हुक्का ताज़ा कराया; दम-झाँसे में काम लिया, हुक्का गुड़-गुड़ाया और धुँआ उड़ाया। शामत यह थी कि आप अफीम के भी आदी थे। चीनी की प्याली आयी, अफीम घोली और उड़ायी। एक महाजन के लड़के ने बर्फ़ी मँगवायी, आपने खूब डट कर चखी, तो पीनक ने आ दबोचा। ऊँघे, हुक्का टेढ़ा हो गया, गरदन अब जमीन पर आयी, और अब जमीन पर आयी। हुक्का गिरा और चकनाचूर हो गया। दो-एक लड़कों की किताबों पर चिनगारियाँ गिरीं। अब पीनक से चौंके, तो ऐसे झल्लाये कि किसी लड़के के चपत लगायी, किसी की खोपड़ी पर धप जमायी, एक के कान गर-माये। पीनक में आ कर खुद तो हुक्का गिराया और शागिर्दों को बेकसूर पीटना शुरू किया। खैर, इतने में एक लड़का किताब ले कर पढ़ने आया। उसने पढ़ा—

दिलम कुसूद कुसादम चु नामा अत गोई,
कलीदे बागे गुलिस्तान दिल कुसाई बूद।

(जब मैंने तेरा खत खोला, तो मेरा दिल खुल गया; गोया वह पत्र खुशी के बाग के दरवाजे की कुंजी था।)

अब मौलवी साहब का तरजुमा सुनिए—

तरजुमा—दिल तेरा खुला, खोला मैंने जो खत तेरा, कहे तू कुंजी दरवाजे बाग-दिल खोलने की थी।

माशा-अल्लाह, क्या तरजुमा था! न मौलवी साहब ने खुद समझा, न लड़के ने। और दिल्लगी सुनिए कि मौलवी साहब भी शागिर्द के साथ पढ़ते जाते हैं और दोनों हिलते जाते हैं। जब यह पढ़ चुके, तो दूसरे साहब किताब बगल में दबाये आ बैठे।

मौलवी साहब—अरे गावदी, नयी किताबें शुरू कीं, और चिरागी नदारद, शुकराना छप्पर पर! जा, दौड़ कर दो आने घर से ले आ।

लड़का—मौलवी साहब, कल लेता आऊँगा। आप तो रुपये ही पर टोक देते हैं। आपको अपनी मिठाई ही से मतलब है कि मुफ्त के झगड़े से!

मौलवी—ये झांसे किसी और को देना! अच्छा, अपने बाप की कसम खा कि कल जरूर लाऊँगा।

लड़का—मौलवी साहब के बड़े सिर की कसम, चढ़ते चाँद तक जरूर लाऊँगा।

इस पर सब लड़के हँस पड़े कि कितना ढीठ लड़का है! कसम भी खायी तो मौलवी साहब के सिर की, और सिर भी छोटा नहीं, बड़ा।

मौलवी—चुप गधे, मेरा सिर क्या कद्दू है? अच्छा, पढ़।

लड़का तो ऊटपटांग पढ़ने लगा, मगर मौलाना साहब चूँ भी नहीं करते। उन्हें मिठाई की फिक्र सवार है। सोच रहे हैं, जो कल दो आने न लाया, तो खूब कोड़े फटकारूँगा, तस्मा तक तो बाकी रखूँगा नहीं।

दस-पाँच लड़के एक दूसरे को गुदगुदा रहे हैं और मौलवी साहब को दिखाने के लिए जोर-जोर से चिल्ला कर कोई शेर पढ़ रहे हैं।

आजाद को मकतब की यह हालत और लौंडों की यह चिल्ल-पों देख सुन कर ऐसा गुस्सा आया कि अगर पाते, तो मौलवी साहब को कच्चा ही खा जाते। दिल में सोचे, यह मकतबखाना है या पागलखाना? जिधर देखिए, गुल-गपाड़ा, धौल-धप्पा हो रहा है। मालूम होता है, भरी बर्सात में मेढक गाँव-गाँव या पिछले पहर कौवे काँव-काँव कर रहे हैं। घर पर आते ही मकतबों की हालत पर यह कैफियत लिख डाली—

(१) नूर के तड़केसे झुटपुटे तक लड़कों को मकतबखाने में कैद रखना बेहूदगी है। लड़के दस बजे आयें, चार बजे छुट्टी पायें, यह नहीं कि दिन भर दाँता-किल-किल, पढ़ना भी अजीरन हो जाय, और यही जी चाहे कि पढ़ने-लिखने की दुम में मोटा सा रस्सा बाँधें, मौलवी साहब को हवा बतायें और दिल खोल कर गुलछर्रे उड़ायें।

(२) यह क्या हिमाकत है कि जितने लड़के हैं, सबका सबक अलग दो-दो चार-चार, दस-दस का एक-एक दर्जा बना लीजिए, मेहनत की मेहनत बचेगी और काम ज्यादा होगा।

(३) जिधर देखता हूँ, अदब (साहित्य) की तालीम हो रही है। तालीम में सिर्फ अदब ही शामिल नहीं, हिसाब है, तवारीख है, जुगराफिया है, उकलैदिस है; मगर पढ़ाये कौन? मौलवी साहब को तो सौ तक गिनती नहीं आती।

(४) सब लड़कों का गुल मचा-मचा कर आवाज लगाना महज फ़जूल है। कोई खोंचेवाला, गँडेरीवाला, चने-परमलवाला इस तरह चिल्लाये, तो मुजायका नहीं; मटर-सटर, गोल-गप्पे, मसालेदार बैगन, मूली, तुरई, लो तरकारी—यह तो फेरी देनेवालों की सदा है, मकतब को मंडी बनाना हिमाकत है।

(५) तरजुमे पर खुदा की मार और शैतान की फटकार। 'आता हूँ बीच एक बाग के, वास्ते लाने अच्छी चीजों के, मैंने देखा मैंने, तू जाता है तू।' वाह, क्या तू-तू मैं-मैं है। तरजुमा सही होना चाहिए, यह तो न कोई आवाज कसे कि लड़के बँगला बोल रहे हैं।

(६) पढ़ते वक्त लड़कों को हिलना ऐब है। मगर कहे किससे? मौलवी साहब तो खुद झूमते हैं।

(७) मतलब जरूर समझाना चाहिए; लड़का मतलब ही न समझेगा, तो उसको फ़ायदा क्या खाक होगा?

(८) सबक को बरज़बान रटना बुरी बात है। किताब बन्द की और फर-फर दस सफे सुना दिये। हाफ़िजा कुछ मजबूत हुआ सही, मगर सितम यह है कि फिर तोते की तरह बात के सिवा कुछ याद नहीं रहता।

(९) छोटे-छोटे लड़कों को बड़ी-बड़ी किताबें पढ़ाना उनकी जिंदगी खराब करना है। जरा से टट्टू पर जब दो हाथियों का बोझ लादोगे, तो टट्टू बेचारा आँखें माँगने लगेगा, या नहीं? जरा सा बच्चा और पढ़े 'मीना बाजार'!

-(१०) लड़के को शुरू ही से फ़ारसी पढ़ाना उसका गला घोटना है। पहले उर्दू पढ़ाइए इसके बाद फ़ारसी। शुरू ही से करीमा-मामकीमो पढ़ाना उसकी मिट्टी खराब करना है।

(११) मौलवी साहब लड़कों से चिलम भरवाना, हुक्का ताजा करवाना छोड़ दें। इसकी जगह इनको बात-चीत करने और मिलने-जुलने का आदाब सिखायें।

(१२) अफीमची मौलवी छप्पर पर रखे जायँ। मौलवी ने अफीम खायी और लड़कों को शामत आयी। वह पीनक में झूमा करेंगे।

यह इश्तिहार मोटे कलम से लिख कर मियाँ आजाद रातोरात मकतब के दरवाज़े पर चिपका आये। झट से निकल करके शहर मे भी दो-चार जगह चिपका दिया। दूसरे दिन इश्तिहार के पास लोग ठट के ठट जमा हुए। किसी ने कहा, सम्मन चिपकाया गया है; कोई बोला, ठेठर का इश्तिहार है। बारे एक पढ़े-लिखे साहब ने कहा—यह कुछ नहीं है, मौलवी साहब के किसी दुश्मन का काम है। अब जिसे देखिए, कहकहा उड़ाता है। भाई वल्लाह, किसी बड़े ही फिकरेबाज का काम है। मौलवी बेचारे को ले ही डाला, पटरा क[illegible]िया। मकतबखाने मे लडकों के चेहरे गुलनार हो गये। धत् तेरे की! बच्चा रोज क[illegible] [illegible]माते थे, चपतें लगाते थे, अफीम घोली और सिर पर शेख-सद्दो सवार। अब [illegible] [illegible] का भाव मालूम होगा। मौलवी साहब तशरीफ का बच्चा लाये, तो लडके [illegible] [illegible] कहना ही नहीं मानते। मौलवी साहब कहते हैं, किताब खोलो। [illegible] जवाब देते हैं, बस मुँह बंद करो। फर्माया कि अब बोला, तो हम बिगड जायेंगे। शागिर्दों ने कहा, हम खूब बनायेंगे। तब तो झल्लाये और डपट क[illegible] [illegible]हा, मैं बड़ा बर्दमिज़ा[illegible] हूँ। एक गुस्ताख ने मुसकिरा कर कहा, फिर हम

ठंडा बनायेंगे। दूसरा बोला, किसी ठंडे मुल्क में जाइए। तीसरा बोला, दिमाग़ में गर्मी चढ़ गयी है। मौलवी साहब घबराये कि माजरा क्या है। बाहर की तरफ़ नज़र डाली, तो देखा, गोल के गोल तमाशाई खड़े क़हक़हे लगा रहे हैं। बाहर गये, तो इश्तिहार नजर आया। पढ़ा, तो कट गये। दिल ही दिल से लिखनेवाले को गालियाँ देने लगे। पाऊँ, तो कच्चा ही खा जाऊँ। इतने डंडे लगाऊँ कि छठी का दूध याद आ जाय। बदमाश ने कैसा खाका उड़ाया है! जभी तो लड़के इतने ढीठ हो गये हैं। मैं कहता हूँ आम, वे कहते हैं इमली। अब इज्जत डूबी। मकतबखाने में जाता हूँ, तो खौफ़ है, कहीं लौंडे रोज की कसर न निकालें और अंजर-पंजर ढीले कर दें। भाग जाऊँ, तो रोटियों के लाले पड़ें। खाऊँ क्या, अंगारे? आखिर ठान ली कि बोरिया-बँधना छोड़ो मुल्लागीरी से मुँह मोड़ो। भागे, तो घर पर दम लिया। लड़कों ने जो देखा कि मौलवी साहब पत्ता-तोड़ भागे जाते हैं, तो जूतियाँ बगल में दबा, तख्तियाँ और बस्ते सँभाल, दुम के पीछे चले। तमाशाइयों में बातें होने लगीं—

एक—अरे मियाँ यह भागा कौन जाता है बगटुट?

दूसरा—शैतान है, शैतान। आज लड़कों के दाँव पर चढ़ गया है, कैसा दुम दबाये भागा जाता है!

अब सुनिए कि महल्ले भर में खलबली मच गयी। अजी, ऐसे मकतब की ऐसी-तैसी। बरसों से लौंडे पीटते हैं, एक हरफ़ न आया। लड़कों की मिट्टी पलीद की। पढ़ाना-लिखाना खैरसल्लाह, चिलमें भरवाया किये। सबने मिल कर कमेटी की कि मौलवी साहब का आम जलसे में इम्तिहान लिया जाय, और मनादी हो कि जिन साहब ने यह इश्तिहार लिखा है, वह जरूर आयें। ढिंढोरिया महल्ले भर में कहता फिरा कि खलक खुदा का, मुल्क सरकार का, हुक्म कमेटी का कि आज एक जलसा होगा और मौलवी साहब का इम्तिहान लिया जायगा। जिसने इश्तिहार लिखा है, वह भी हाजिर हो।

मियाँ आज़ाद बहुत खुश हुए, शाम को जलसे में जा पहुँचे। जब दो-तीन सौ आदमी, अहाली-मवाली, डोम-डफाली, ऐरे-गैरे, नत्थू-खैरे, सब जमा हुए, तो एक मेंबर ने कहा—हजरत, यह तो सब कुछ है; मगर मौलवी साहब इस वक्त नदारद हैं। एकतरफ़ा डिगरी न दीजिए। उन्हें बुलवाइए, तब इम्तिहान लीजिए। यों तो वह आयेंगे नहीं। हम एक तदबीर बतायें, जो दौड़े न आयें, तो मूँछ मुड़ा डालें, हाथ कलम करा डालें। कहला भेजिए कि किसी के यहाँ शादी है, निकाह पढ़ने के लिए अभी बुलाते हैं! लोगों ने कहा, खूब सूझी, दूर की सूझी। आदमी मौलवी साहब के दरवाजे पर गया और आवाज़ दी—मौलवी साहब, अजी मौलवी साहब! क्या मर गये? इस घर में कोई है, या सबको साँप सूँघ गया? दरवाजा धमधमाया, कुंडी खटखटायी, मगर जवाब नदारद। तब तो आदमी ने झल्ला कर पत्थर फेंकने शुरू किये। दो-एक मौलवी साहब के घुटे हुए सिर पर भी पड़े। मौलवी साहब बोले, कौन है? आदमी ने कहा—वारे आप जिंदा तो हुए। मैंने तो समझा था, कफ़न की जरूरत पड़ी। चलिए, ईदूखाँ के यहाँ

शादी है, निकाह पढ़ दीजिए। निकाह का नाम सुनते ही मौलाना खमीरी रोटी की तरह फूल गये, अंगरखे का बंद तड़ से टूट गया। कफ़न फाड़ कर चिल्ला उठे—आया, आया, ठहरे रहो, अभी आया। शिमला खोपड़ी पर जमा, अकीक का कंठा हाथ में ले, सुरमा लगा घर से चले। आदमी साथ है, दिल में कहते जाते हैं, आज-पौ-बारह हैं, बढ़ कर हाथ मारा है, छप्पन करोड़ की तिहाई, हाथी के हौदे में छुटे। लबे-लबे डग भरते आदमी से पूछते जाते हैं—क्यों मियाँ, अब कितनी दूर मकान है? पास ही है न? देखें, निकाह पढ़ाई क्या मिलती है? सवा रुपये तो मामूली है; मगर खुदा ने चाहा तो बहुत कुछ ले मरूँगा। आदमी पीछे-पीछे हँसता जाता है कि मियाँ हैं किस खयाल मे! बारे खुदा-खुदा करके वह मंजिल तय हुई, मकान में आये, तो होश उड़ गये। यह कैसा ब्याह है भाई, न ढोल, न शहनाई, हमारी शामत आयी। कनखियों से इधर-उधर देख रहे हैं, अक़्ल दंग है कि ये सब के सब हमीं को क्यों घूर रहे हैं। इतने में मीर-मजलिस ने कहा—जिन साहब ने इश्तिहार लिखा था, वह अगर आये हों तो कुछ फर्मायें।

आजाद ने खड़े हो कर कहा—यह जो मौलवी साहब आप लोगों के सामने खड़े हैं, इनसे पूछिए कि मकतबखाने मे अफीम क्यों पीते हैं? जब देखिए, पीनक में ऊँघ रहे हैं या मिठाई टूँग रहे हैं। लड़कों का पढ़ाना खाला जी का घर नहीं कि सिर घुटाया और मुल्ला बन गये, चूड़ी निगली और पीर जी बन गये।

मौलवी साहब ताड़ गये कि यहाँ मेरी दुर्गति होनेवाली है। भागने ही को थे कि एक आदमी ने टाँग पकड़ कर ऑटी बतायी, तो फ़ट से जमीन पर आ रहे। अच्छे फँसे। खूब निकाह पढ़ाया। मुफ्त में उल्लू बने। खैर, मियाँ आज़ाद ने फिर कहा—

'मौलवी साहब को किसी मजार का मुजाविर या कहीं का तकियेदार बना दीजिए, तो खूब मीठे टुकड़े उड़ाये और डंड पेले। यह मकतबखाने में लल्लू का दसहरा उनको क्यों बना दिया? लड़कों की कैफियत सुनिए कि दिन भर गुल्ली-डंडा खेला करते हैं, चीखते हैं, चिल्लाते हैं, और दिन भर में अठारह मर्तबा पेशाब करने और पानी पीने जाते हैं। कोई कहता है, मौलवी साहब, देखिए, यह हमारी नाक पकड़ता है, कोई कहता है, यह हमसे लड़ता है। मौलवी साहब को इससे कुछ मतलब नहीं कि लड़के पढ़ते हैं या नहीं। वहाँ तो हिलते जाओ और ऐसा गुल मचाओ कि कान पड़े आवाज न सुनाई दे, उसमें चाहे जो कुछ ऊल-जलूल बको।'

मौलवी साहब फिर रस्सी तुड़ा कर भागने लगे। लोग लेना-लेना करके दौड़े। गये थे रोजे बख्शाने, नमाज गले पड़ी। चिल्ला कर बोले—तुम कौन होते हो जी हमारा ऐब निकालनेवाले, हम पढ़ायें या न पढ़ायें, तुमसे मतलब?

आजाद—हजरत, आज ही तो पंजे में फँसे हो। रोज तोंद निकाले बैठे रहा करते थे। यह तोंद है या बेईमान की कब्र? या हवा का तकिया? अब पचक जाय, तो सही। खुदा जाने, कहाँ का गँवार बिठा दिया है। कल सुबह को इनका इम्तिहान लिया जाय।

मौलवी साहब—आप बड़े शैतान हैं!

आजाद—आप लंगूर हैं; मगर हैरत है कि यह ठुड्डी से दुम की कोंपल क्योंकर फूटी !

इस तरह जलसा खतम हुआ। लोगों ने दिल में ठान ली कि कल चाहे ओले पड़ें, चाहे कड़कड़ाती धूप हो, चाहे भूचाल आये, मगर हम आयेंगे और जरूर आयेंगे। मौलवी साहब से ताकीद की गयी कि हजरत, कल न आइएगा, तो यहाँ रहना मुश्किल हो जायगा—मौलवी साहब का चेहरा उतर गया था, मगर कड़क कर बोले—हम और न आये, आयें और बीच खेत आयें। हम क्या कोई चोर हैं, या किसी का माल मारा है ?

मौलवी साहब घर पहुँचे, तो आजाद को लगे पानी पी-पी कर कोसने। इसकी जबान सड़े, मुँह फूल जाय; सारी चौकड़ी भूल जाय; आसमान से अंगारे बरसें; ऐसी जगह मरे, जहाँ पानी न मिले; डंकू फीवर चट करे; एंजिन के नीचे दब कर मरे। मगर इन गालियों से क्या होता था। रात किसी तरह कटी, दूसरे रोज नूर के तड़के लोग फिर जलसे में आ पहुँचे। मगर मौलाना ऐसे ग़ायब हुए, जैसे गधे के सिर से सींग। यारे यारों ने तत्तो-थंभो करके सिर सुहलाते, सब्ज बाग़ दिखलाते घसीट ही लिया। मियाँ आज़ाद ने पूछा—क्यों मौलवी साहब, किस मनसूबे में हो ?

मौलवी साहब—सोचता हूँ कि अब कौन चाल चलूँ ? सोच लिया है कि अब मुल्लागीरी छोड़ प्यादों में नौकरी करेंगे। बस, वतन से जायेंगे, तो फिर लौट कर घर न आयेंगे। अमीर-ग़रीब सब पर मुसीबत पड़ती है। फिर हमारी बिसात क्या ? चारखाने का अँगरखा न सही, गाढ़े की मिरजई सही। मगर आप एक गरीब के पीछे नाहक क्यों पड़े हुए हैं ? 'कहाँ राजा भोज, कहाँ गँगुआ तेली ?'

आजाद—ये झाँसे रहने दीजिए, ये चकमे किसी और को दीजिए।

मौलवी साहब—खुदा की पनाह ! मैं आपका गुलाम और आपको चकमे दूँगा ? आपसे क्या अर्ज करूँ कि कितना जी तोड़ कर लड़कों को पढ़ाता हूँ। इधर सूरज निकला और मैंने मकतब का रास्ता लिया। दिन भर लड़कों को पढ़ाया। क्या मजाल कि कोई लड़का गरदन तक उठा ले। कोई बोला, और मैंने टीप जमायी, खेला, और शामत आयी। समझ-बूझकर चलता था, अगर कोई लड़का मकतब में खिलौना लाता, तो उसे तुरत अँगीठी में डलवा देता। मगर आपने सारी मेहनत पर पानी फेर दिया। आपके सामने मेरी कौन सुनता है।

मीर-मजलिस ने कहा—मियाँ आजाद इन्हें बकने दीजिए, आप इनका इम्तिहान लीजिए।

मियाँ आजाद तो सवाल पूछने के लिए खड़े हुए, उधर मौलवी साहब का बुरा हाल हुआ। रंग फ़क़, कलेजा शक, आँखों में आँसू, मुँह पर हवाइयाँ छूट रही हैं, कलेजा धक-धक करता है, हाथ-पाँव काँपने लगे। किसी तरह खड़े तो हुए, मगर कदम न जमा। पाँव डगमगाये और लड़खड़ा कर गिरे। लोगों ने उन्हें उठा कर फिर खड़ा किया।

आजाद—यह शेर किस बहर में है—

मैंने कहा जो उससे ठुकराके चल न ज़ालिम;
हैरत में आके बोला—क्या आप जी रहे हैं ?

मौलवी साहब—बहर (दरिया) में आप ही गोते लगाइए, और खुदा करे, डूब जाइए। जिसे देखो, हमीं पर शेर है। नामाकूल इतना नहीं समझते कि हम मौलवी आदमी लौंडे पढ़ाना जानें या शायरी करना। हमें शेर से मतलब ? आये वहाँ से बहर पूछने !

आज़ाद—बेशुनो अज नैचूँ हिकायत मी कुनद ;
वज जुदाईहा शिकायत मी कुनद।

इस शेर का मतलब बतलाइए।

मौलवी साहब—इसका बताना क्या मुश्किल है ? नै कहते हैं चंडू की नै को। बस, उस जमाने मे लोग चंडू पीते थे और शिकायत करते थे।

आजाद—बकरी की पिछली टाँगों को फ़ारसी में क्या कहते हैं ?

मौलवी साहब—यह किसी अपने भाई-बंद, बूचड़-कस्साब से पूछिए। बंदा न छीछड़े खाय; न जाने। वाह, अच्छा सवाल है ! अब मुल्लाओं को बूचड़ों की शागिर्दी भी करनी चाहिए !

आज़ाद—हिंदुस्तान के उत्तर में कौन मुल्क है ?

मौलवी—खुदा जाने, मैं क्या देखने गया था कि आपकी तरह मैं भी सैलानी हूँ ?

आजाद—सबसे बड़ा दरिया हिंदोस्तान मे कौन है ?

मौलवी—फिरात, नहीं, वह देखिए, भूला जाता हूँ, अजी वही, दज़ला, दज़ला, ख़ूब याद आया।

हाजिरीन—वाह रे गावदी, अच्छी उलटी गंगा बहायी। फ़िरात और दज़ला हिंद में है ? इतना भी नहीं जानता।

आज़ाद—चाँद के घटने-बढ़ने का सबब बताओ ?

मौलवी—वाह, क्या खूब, खुदाई कारखानों में दखल दूँ ? इतना तो किसी की समझ में आता नहीं कि प्रीमियम क्या है, फिर भला यह कौन जाने कि चाँद कैसे घटता-बढ़ता है। खुदा का हुक्म है, वह जो चाहता है, करता है।

आजाद—पानी क्योंकर बरसता है ?

मौलवी—यह तो दादीजान तक को मालूम था। बादल तालाबों, नदियों, कुओं, गढों, हौजों से घुस-पैठ कर दो-तीन रोज़ खूब पानी पीता है, जब पी चुका, तब आसमान पर उड़ गया, मुँह खोला तो पानी रिम-झिम बरसने लगा। सीधी-सी तो बात है।

हाजिरीन—वल्लाह, क्या बेपर की उड़ायी है ! आदमी हो या चोंच ! कहने लगे, बादल पानी पीता है।

आजाद—गिनती आपको कहाँ तक याद है और पहाड़े कहाँ तक ?

मौलवी—जवानी में रुपये के टके गिन लेता था; अब भी आठ-आठ आने एक दफ़े में गिन सकता हूँ। मगर पहाड़े किसी हलवाई के लड़के से पूछिए।

आज़ाद—एक आदमी ने तीन सौ पछत्तर मन ग़ल्ला ख़रीदा, रात को चोरों ने मौक़ा ताक कर एक सौ पचीस मन उड़ा लिया, तो बताओ उस आदमी को कितना घाटा हुआ ?

मौलवी—यह झगड़ा जौनपुर के क़ाज़ी चुकायेंगे। मैं किसी के फटे में पाँव नहीं डालता। मुझे किसी के टोटे-घाटे से मतलब ? चोरी-चकारी का हाल थानेदारों से पूछिए। बंदा मौलवी है। मुल्ला की दौड़ मसजिद तक।

आज़ाद—शाहजहाँ के वक़्त में हिंदोस्तान की क्या हालत थी और अकबर के वक्त में क्या ?

मौलवी—अजी, आप तो गड़े मुर्दे उखाड़ते हैं। अकबर और शाहजहाँ, दोनों की हड्डियाँ गल कर ख़ाक हो गयी होंगी। अब इस पचड़े से मतलब ?

आज़ाद ने हाजिरीन से कहा—आप लोगों ने मौलवी साहब के जवाब सुन लिये, अब चाहे जो फ़ैसला कीजिए।

हाजिरीन—फैसला यही है कि यह इसी दम अपना बोरिया-बँधना सँभाले। यह चरकटा है। इसे यही नहीं मालूम कि बहर 'किस चिड़िया का नाम है, बादल किसे कहते हैं, दो तक का पहाड़ा नहीं याद, गिनती जानता ही नहीं, दजला और फिरात हिंदोस्तान में बतलाता है ! और चला है मौलवी बनने। लड़कों की मुफ्त में मिट्टी ख़राब करता है।

१२

आजाद तो इधर साँड़नी को सराय में बाँधे हुए मजे से सैर-सपाटे कर रहे थे, उधर नवाब साहब के यहाँ रोज उनका इंतिजार रहता था कि आज आजाद आते होंगे और सफ़शिकन को अपने साथ लाते होंगे। रोज फाल देखी जाती थी, सगुन पूछे जाते थे। मुसाहब लोग नवाब को भड़काते थे कि अब आजाद नहीं लौटने के; लेकिन नवाब साहब को उनके लौटने का पूरा यकीन था।

एक दिन बेगम साहबा ने नवाब साहब से कहा—क्यों जी, तुम्हारा आजाद किस खोह मे धँस गया? दो महीने से तो कम न हुए होंगे।

महरी—ऐ, वह चंपत हुआ, मुआ चोर।

बेगम—जबान सँभाल, तेरी इन्हीं बातों पर तो मै झल्ला उठती हूँ। फिर कहती है कि छोटी बेगम मुझसे तीखी रहती हैं।

नवाब—हाँ, आजाद का कुछ हाल तो नहीं मालूम हुआ; मगर आता ही होगा।

बेगम—आ चुका।

नवाब—चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय, मेरा आजाद सफ़शिकन को ला ही छोड़ेगा। दोनों में इल्मी बहस हो रही होगी। फिर तुम जानो, इल्म तो वह समंदर है, जिसका ओर न छोर।

बेगम—(कहकहा लगा कर) इल्मी बहस हो रही होगी? क्यों साहब, मियाँ सफ़शिकन इल्म भी जानते हैं? मैं कहती हूँ, आखिर अल्लाह ने तुमको कुछ रत्ती, तोला, माशा अक्ल भी दी है? मुआ बटेर, जरी सी जानवर, काकुन के तीन दानों में पेट भर जाय, उसे आप आलिम कहते हैं। मेरे मैके पड़ोस मे एक सिड़ी सौदाई दिन-रात वाही-तवाही बका करता है। उसकी और तुम्हारी बातें एक सी हैं।

महरी—क्या कहती हो बीवी, उस सौदाई निगोड़े को इन पर से सदके कर दूँ!

नवाब—तुम समझी नहीं महरी, अभी तो अल्हड़पने ही के न दिन हैं इनके। खुदा की कसम, मुझे इनकी ये ही बातें तो भाती हैं। यह कमसिनी का सुभाव है और दो-तीन बरस, फिर यह शोखी और चुलबुलापन कहाँ? यह जब झिड़कती या घुड़कती हैं, तो जी खुश हो जाता है।

महरी—हाँ, हाँ, जवानी तो फिर बावली होती ही है।

बेगम—अच्छा, महरी, तुझे अपने बुढ़ापे की कसम, जो झूठ बोले, भला बटेर भी पढ़े-लिखे हुआ करते हैं? मुँह-देखी न कहना, अल्लाह लगती कहना।

महरी—बुढ़ापा! बुढ़ापा कैसा? बीबी, बस ये ही बातें तो अच्छी नहीं लगतीं, जब देखो, तब आप बूढ़ी कह देती हैं। मैं बूढ़ी काहे से हो गयी? बुरा न मानिए तो कहूँ, आपसे भी टाँठी हूँ।

इतने में ग़फ़ूर खिदमतगार ने पुकारा—हुज़ूर, पेचवान भरा रखा है, यहाँ भेज दूँ या बग़ीचे में रख दूँ?

नवाब—यह चाँदीवाली छोटी गुड़गुड़ी बेगम साहबा के वास्ते भर लाओ। कल भिलसवाँ तंबाकू आया है, वही भरना। और पेचवान बाहर लगा दो, हम अभी आये।

यह कह कर नवाब ने बेगम साहबा के हँसी-हँसी में एक चुटकी ली और बाहर आये। मुसाहबों ने खड़े हो-हो कर सलाम किये। आदाब बजा लाता हूँ हुज़ूर, तसलीमात अर्ज करता हूँ, खुदावंद। नवाब साहब जा कर मसनद पर बैठे।

खोजी—उफ्! मौत का सामना हुआ, ऐसा धचका लगा कि कलेजा बैठा जाता है, हत् तेरे गीदी चोर की।

नवाब—क्यों, क्यों, ख़ैर तो है?

खोजी—हुज़ूर, इस वक्त बटेरख़ाने की ओर गया था।

नवाब—उफ़, भई, दिल बेकरार है। खोजी मियाँ, तुमको तो हमारी तसल्ली करनी चाहिए थी, न कि उल्टे खुद ही रोते हो, जिसमें हमारे हाथ-पाँव और फूल जायँ। अब सफ़शिकन से हाथ धोना चाहिए। हम जानते हैं कि वह खुदा के यहाँ पहुँच गये।

मुसाहब—खुदा न करे, खुदा न करे।

खोजी—(पीनक से चौंक कर) इसी बात पर फिर कुछ मिठाई नहीं खिलवाते।

नवाब—कोई है, इस मरदक की गरदन तो नापता। हम तो अपनी किस्मतों को रो रहे हैं, यह मिठाई माँगता है। बेतुका, नमकहराम!

खोजी—देखिए, देखिए, फिर मेरी गरदन कुंद छुरी से रेती जाती है। मै मिठाई कुछ खाने के वास्ते थोड़े ही मँगवाता हूँ। इसलिए मँगवाता हूँ कि सफ़शिकन का फातिहा पढ़ूँ।

नवाब—शाबाश, जी खुश हो गया! माफ़ करना, बेअख्तियार नमकहराम का लफ़्ज मुँह से निकल गया, तुम बड़े...

मुसाहब—तुम बडे हलालखोर हो।

इस पर वह कहकहा पड़ा कि नवाब साहब भी लोटने लगे, और बेगम ने घर से लौंडी को भेजा कि देखना तो, यह क्या हँसी हो रही है।

नवाब—भई, क्या आदमी हो, वल्लाह, रोते को हँसाना इसी का नाम है। खोजी बेचारे को हलालखोर बना दिया।

खोजी—हुज़ूर, अब मैं यहाँ न रहूँगा। क्या बेवक्त की शहनाई सब के सब बजाने लगे! अफसोस, सफ़शिकन का किसी को ख़याल तक नहीं।

नवाब साहब मारे रंज के मुँह ढाँप कर लेट रहे। मुसाहबों में से कोई चंडूखाने पहुँचा, कोई अफ़ीम घोलने लगा।

१३

इधर शिवाले का घंटा बजा ठनाठन, उधर दो नाकों से सुबह की तोप दगी दनादन। मियाँ आजाद अपने एक दोस्त के साथ सैर करते हुए बस्ती के बाहर जा पहुँचे। क्या देखते हैं, एक बेल-बूटों से सजा हुआ बँगला है। अहाता साफ़, कहीं गंदगी का नाम नहीं। फूलों-फलों से लदे हुए दरख्त खड़े झूम रहे हैं। दरवाज़ों पर चिकें पड़ी हुई हैं। बरामदे में एक साहब कुर्सी पर बैठे हुए हैं, और उनके क़रीब दूसरी कुर्सी पर उनकी मेम साहबा बिराज रही हैं। चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ है। न कहीं शोर, न कहीं गुल। आज़ाद ने कहा—जिंदगी का मजा तो ये लोग उठाते हैं।

दोस्त—बेशक, देख कर रश्क आता है।

दोनों आदमी आगे बढ़े। कई छोटे-छोटे टट्टू तेजी से दौड़ते हुए नज़र आये। उन पर खूबसूरत काठियाँ कसी हुई थीं और कई लड़के बैठे हुए हँसते-बोलते चले जाते थे। कपड़े सफ़ेद, जैसे बगुले के पर; चेहरे सुर्ख, जैसे गुलाब का फूल। मियाँ आज़ाद कई मिनट तक उन अँगरेज-लड़कों का उछलना-कूदना देखते रहे। फिर अपने दोस्त से बोले—देखा आपने, इस तरह बच्चों की परवरिश होती है। कुछ और आगे बढ़े, तो सौदागरों की बड़ी-बड़ी कोठियाँ दिखायी दीं। इतनी ऊँची गोया आसमान से बातें कर रही हैं। दोनों आदमी अंदर गये, तो चीज़ों की सफ़ाई और सजावट देख कर दंग रह गये। सुभान-अल्लाह! यह कोठी है या शीश-महल। दुनिया भर की चीजें मौजूद। आजाद ने कहा—यह तिजारत की बरकत है। वाह री तिजारत! तेरे कदम धो-धो कर पिये। इतने में सामने से कई बग्घियाँ आयीं। सब पर अँगरेज बैठे हुए थे। किसी हिंदुस्तानी का कोसों तक पता ही नहीं। गोया उनके लिए घर से निकलना ही मना है। और आगे बढ़े, तो एक कुतुबखाना नज़र आया। लाखों किताबें चुनी हुई, साफ-सुथरी, सुनहरी जिल्दें चढ़ी हुई। आदमी अगर साल भर जम कर बैठे, तो आलिम हो जाय। सुबह से आठ बजे तक लोग आते हैं, अखबार और किताबें पढ़ते हैं और दुनिया के हालात मालूम करते हैं। मगर हिंदुस्तानियों को इन बातों से क्या सरोकार!

दस बजे का वक़्त आ गया। अब घर की सूझी। बस्ती में दाखिल हुए। राह में एक अमीर आदमी के मकान के दरवाजे पर दो लड़कों को देखा। नख-शिख से तो दुरुस्त हैं; मगर कानों में बाले, भद्दे-भद्दे कड़े पड़े हैं, अँगरखा मैला-कुचैला, पाजामा गंदा, हाथों पर गर्द, मुँह पर खाक, दरवाज़े पर नंगे पाँव खड़े हैं। मौलवी साहब ड्योढ़ी में बैठे दो और लड़कों को पढ़ा रहे हैं। मगर ड्योढ़ी और पाखाना मिला हुआ है।

मियाँ आज़ाद—कहिए जनाब, वे टट्टूओं पर दौड़नेवाले अँगरेजों के बच्चे भी

याद हैं? इनको देखिए, मैले-गंदे, दिन भर पाखाने का पड़ोस। भला ये कैसे मज़बूत और तंदुरुस्त हो सकते हैं? हाँ, जेवर से अलबत्ते लसे हुए हैं। सच तो यह है कि चाहे लड़का जितने ज़ेवर पहने हो, उसको वह सच्ची खुशी नहीं हासिल हो सकती, जो उन प्यारे बच्चों को हवा के झोंकों और टापों की खटपट से मिलती थी। लड़का तड़के गजरदम उठा, हम्माम में गया, साफ-सुथरे कपड़े पहने। यह अच्छा, या यह अच्छा कि लचके, पट्टे और ज़िलड़ के कपड़ों में जकड़ दिया जाय, जेवर सिर से पाँव तक लाद दिया जाय और गढ़ैया पर बिठा दिया जाय कि कूड़े के टोकरे गिना करे।

ये बातें हो ही रही थीं कि सात-आठ जवान सामने से गुज़रे। अभी उन्नीस ही बरस का सिन है, मगर गालों पर झुर्रियाँ, किसी की कमर झुकी हुई, किसी का चेहरा ज़र्द। सुर्ख और सफेद रंग धुआँ बन कर उड़ गया। और तुर्रा यह कि अलिफ के नाम बे नहीं जानते। एक नम्बर अव्वल के चंडूबाज हैं, दूसरे बला के बातूनी। वह फर्राटे भरें कि भला-चंगा आदमी घनचक्कर हो जाय। एक साहब कॉलेज में तालीम पाते थे, मगर प्रोफेसर से तकरार हो गयी, झट मदरसा छोड़ा। दूसरे साहब अपने दाहिने हाथ की दो उँगलियों से बायें हाथ पर ताल बजा रहे हैं—धिन ता धिन ता। दो साहब बहादुर नामी बटेर के मर जाने का अफ़सोस कर रहे हैं। किसी को नाज़ है कि मैं बाने की कनकइया खूब लड़ाता हूँ, तुक्कल खूब बढ़ाता हूँ।

मियाँ आजाद ने कहा—इन लोगों को देखिए, अपनी ज़िंदगी किस तरह खराब कर रहे हैं। शरीफ़ों के लड़के हैं, मगर बुरी सोहबत है। पढ़ना-लिखना छोड़ बैठे। अब मटर-गश्ती से काम है। किसी को क़लम पकड़ने का शऊर नहीं।

इतने में दो साहब और मिले। तोंद निकाले हुए, मोटे थलथल। आजाद ने कहा—इन दोनों को पहचान रखिए। इन अक़्ल के दुश्मनों ने रुपये को दफ़न कर रखा है। एक के पास दो लाख से ज़्यादा हैं और दूसरे के पास इससे भी ज़्यादा; मगर जमीन के नीचे। बीबी और लड़कों को कुछ जेवर तो बनवा दिये हैं, बाकी अल्लाह-अल्लाह, खैर-सल्लाह! अगर तिजारत करें, तो अपना भी फ़ायदा हो, और दूसरों का भी। मगर यह सीखा ही नहीं। बंगाल-बैंक और दिल्ली-बंक तो पहले सुना करते थे, यह ज़मीन का बंक आज नया सुना।

दोनों आदमी घर पहुँचे। खाना खा कर लेटे। शाम को फिर सैर करने की सूझी। एक बाग़ में जा पहुँचे। कई आदमी बैठे हुक्के उड़ाते थे और किसी बात पर बहस करते थे। बहस से तकरार शुरू हुई। मिर्ज़ा सईद ने कहा—भई, कलजुग है, कलजुग। इसमें जो न हो, वह थोड़ा। अब पुराने रस्मों को लोग दकियानूसी बताते हैं, शादी-ब्याह के खर्च को फ़िज़ूल कहते हैं। बच्चों को जेवर पहनाना गाली है। अब कोई इन लोगों से इतना तो पूछे कि जो रस्म बाप-दादों के वक़्त से चली आती है, उसको कोई क्योंकर मिटाये?

यकायक पूरब की तरफ से शोर-गुल की आवाज सुनायी दी। किसी ने कहा, चोर,

आया, लेना, जाने न पाये। कोई बोला, साँप है। कोई भेड़िया-भेड़िया चिल्ला उठा। किसी को शक हुआ कि आग लगी। सब के सब भड़भड़ा कर खड़े हुए, तो चोर न चकार, भेड़िया न सियार। एक मियाँ साहब लँगोट कसे लठ हाथ में लिये अकड़े खड़े हैं, और उनसे दस क़दम के फ़ासले पर कोई लाला जी बाँस की खपाच लिये डटे खड़े हैं। इर्द-गिर्द तमाशाइयों की भीड़ है। इधर मियाँ साहब पैतरे बदल रहे हैं, उधर लाला उँगलियाँ मटका-मटका कर गुल मचा रहे हैं। मिर्ज़ा सईद ने पूछा—मियाँ साहब, खैर तो है? मियाँ—क्या अर्ज करूँ मिर्ज़ा साहब, आपको दिल्लगी सूझती है और यहाँ जान पर बन गयी है। यह लाला मेरे पड़ोसी हैं। इनका कायदा है कि दर्रा पी कर हजारों गालियाँ मुझे दिया करते हैं। आज कोठे पर चढ़ कर खुदा के वास्ते लाखों बातें सुनायीं। अब फ़रमाइए, आदमी कहाँ तक ज़ब्त करे? लाख समझाया कि भाई, आदमी से ऊँट और इंसान से बेदुम के गधे न बन जाओ, मगर यह बादशाह की नहीं सुनते, मैं किस गिनती में हूँ। ताल ठोक कर लड़ने को तैयार हो गये। खुदा न करे, किसी भलेमानस को अनपढ़ से साबिका पड़े।

लाला—और सुनिएगा, हम चार-पाँच बरस लखनऊ में रहे, अनपढ ही रहे।

मियाँ—बारह बरस दिल्ली में रह कर तुमने क्या सीख लिया, जो अब चार बरस लखनऊ में रहने से फ़ाज़िल हो गये।

लाला—यह साठ बरस से हमारे पड़ोसी हैं, खूब जानते हैं कि बरस दिन का त्योहार है; हम शराब ज़रूर पियेंगे; चुस्की जरूर लगायेंगे, नशे में गालियाँ जरूर सुनायेंगे। अब अगर कोई कहे, शराब-कलिया छोड़ दो, तो हम अपनी पुरानी रस्म को क्योंकर छोड़ें?

मिर्ज़ा सईद—अजी लाला साहब, बहुत बहकी-बहकी बातें न कीजिए। हमने माना कि पुरानी रस्म है, मगर ऐसी रस्म पर तीन हरफ! आप देखें तो कि इस वक्त आपकी क्या हालत है? कीचड़ में लतपत, सिर-पैर की खबर नहीं, भलेमानसों को गालियाँ देते हो और कहते हो कि यह तो हमारी रस्म है।

आजाद—मिर्ज़ा सईद, जरा मुझसे तो आँखे मिलाइए। शर्माये तो न होंगे? अभी तो आप कहते थे कि पुरानी रस्म को कोई क्योंकर मिटाये। यह भी तो लालाजी की पुरानी रस्म है; जिस तरह होती आयी है, उसी तरह अब भी होगी। यह धूप-छाँह की रंगत आपने कहाँ पायी? गिरगिट की तरह रंग क्यों बदलने लगे? जनाब, बुरी रस्म का मानना हिमाकत की निशानी है।

मिर्ज़ा सईद बगलें झाँकने लगे। आज़ाद और उनके दोस्त और आगे बढ़े, तो देखते क्या हैं कि एक गँवार औरत रोती चली जाती है, और एक मर्द चुपके-चुपके समझा रहा है—चुपाई मार, चुपाई मार। मियाँ आजाद समझे, कोई बदमाश है। ललकारा, कौन है बे तू, इस औरत को कहाँ भगाये लिये जाता है? उस गँवार ने कहा—साहब, भगाये नहीं लिये जात हौ; यो हमार मिहरिया आय, हमरे इहाँ रसम है कि जब मिहरिया मइका से ससुरार जात है, तो दुइ-तीन कोस लौं रोवत है।

सईद—वल्लाह, मैं कुछ और ही समझा था। खुदा की पनाह, रस्म की मिट्टी खराब कर दी।

आजाद—बजा है, अभी आप उस बाग़ में क्या कह रहे थे? बात यह है कि पढ़े-लिखे आदमियों को बुरी रस्मों का मानना मुनासिब नहीं। यह क्या जरूरी है कि अक़्ल की आँखों को पाकेट में बंद करके पुरानी रस्मों के ढर्रे पर चलना शुरू करें; और इतनी ठोकरें खायें कि कदम-कदम पर मुँह के बल गिरें। खुदा ने अक्ल इसलिए नहीं दी कि पुरानी रस्मों में सुधार न करें, बल्कि इसलिए कि ज़माने के मुताबिक अदल-बदल करते रहें। अगर पुरानी बातों की पूरी-पूरी पैरवी की जाती, तो ये जामदानी के कुरते और शरबती के अँगरखे नजर न आते। लोग नंगे फिरते होते। पुलाव और कबाब के बदले हम पाढ़े और हिरन का कच्चा गोश्त खाते होते। खुदा ने आँखें दी हैं; मगर अफसोस कि हमने बंद कर लीं।

मिर्ज़ा सईद—तो आप नाच-रंग के जलसों के भी दुश्मन होंगे? आप कहेंगे कि यह भी बुरी रस्म है?

आजाद—बेशक बुरी रस्म है। मैं उसका दुश्मन तो नहीं हूँ, मगर खुदा ने चाहा, तो बहुत जल्द हो जाऊँगा। यह कितनी बेहूदा बात है कि हम लोग औरतों को रुपये का लालच दे कर इस तरह ज़लील करते हैं।

मिर्ज़ा सईद—तो यह कहिए कि आप कोरे मुल्ला हैं। यह समझ लीजिए कि इन हसीनों का दम ग़नीमत है। दुनिया की चहल-पहल उनके दम से, महफ़िल की रौनक उनके कदम से। यहाँ तो जब तक तबले की गमक न हो, चाँद से मुखड़े की झलक न हो, कड़ों की झनकार न हो, छड़ों की छनकार न हो, छमाछम की आवाज न आये, कमरा न सजे, ताल न बजे, धमा-चौकड़ी न मचे, मेंहदी न रचे, रँगरलियाँ न मनायें, शादियाने न बजाये, आवाज़ें न करें, इत्र में न बसें, ताने न सुनें, सिर न धुनें, गलेबाज़ी न हो, आँखों में लाल डोरे न हों, शराब-कबाब न हो, परियाँ बुलबुल की तरह चहकती न हों, सेवती के फूल और हिना की टट्टियाँ महकती न हों, कहकहे न हों, चहचहे न हों, तो किस चोखे का दम भर जीने को जी चाहे? वल्लाह, महफिल बावले कुत्ते की तरह काट खाय—

महफिल में गुदगुदाती हो, शोख़ी निगाह की;
शीशों से आ रही हो, सदा वाह-वाह की।

इधर जामेमुल (शराब) हो, उधर सुराही की कुल-कुल हो, इधर गुल हो, उधर बुलबुल हो, महफ़िल का रंग खूब जमा हो, समा बँधा हो, फिर जो आपकी गरदन भी न हिल जाय, तो झुक कर सलाम कर लूँ। अब गौर फ़रमाइए कि ऐसे तायफे को, जो डिबिया में बंद कर रखने काबिल है, आप एक कलम मिटा देना चाहते हैं?

आजाद—जनाब, आपको अपनी तवायफें मुबारक हों। यहाँ इस फेर में नहीं पड़ते।

ये बातें करते हुए लोग और आगे बढ़े, तो क्या देखते हैं कि मस्त हाथी बर

एक महंत जी सवार, गेरुए कपड़े पहने, भभूत रमाये, पालथी मारे, बड़े ठाठ से बैठे हैं। चेले-चापड़ साथ हैं। कोई घोड़े की पीठ पर सवार, कोई पैदल। कोई पीछे बैठा मुरछल हिलाता है, कोई नरसिंघा बजाता है। आजाद बोले—कोई इन महंत जी से पूछे कि आप खुदा की इबादत करते हैं, या दुनिया के मजे उड़ाते हैं? आपको इस टीम-टाम से क्या मतलब?

मिर्जा सईद—कुछ बाप की कमाई तो है नहीं, अहमकों ने जागीरें दे दीं, महंत बना दिया। अब ये मौजें करते हैं।

आजाद—जागीर देनेवालों को क्या मालूम था कि उनके बाद महंत लोग यों गुलछर्रे उड़ायेंगे? यह तो हमारा काम है कि इन महंतों की गरदन पकड़ें, और कहें, उतर हाथी से, ले हाथ में कमंडल।

यकायक किसी ने छींक दिया। सईद बोले—हात्तेरे छींकनेवाले की नाक का हूँ! यार, ज़रा ठहर जाओ, छींकते चलना बदशगूनी है।

आजाद—तो जनाब, हमारा और आपका साथ हो चुका। यहाँ छींक की परवा नहीं करते। आप पर कोई आफत आये, तो हमारा जिम्मा।

अभी दस कदम भी न गये थे कि बिल्ली रास्ता काट गयी। सईद ने आजाद का हाथ पकड़ कर अपनी तरफ खींच लिया। भई अजब बेतुके आदमी हो, बिल्ली राह काट गयी और तुम सीधे चले जाते हो? ज़रा ठहरो, पहले कोई और जाय, तब हम भी चलें।

अब सुनिए कि आध घंटे तक मुँह खोले खड़े हैं। या खुदा, कोई इधर से आये। आजाद ने झल्ला कर कहा—भई, हमको आपका साथ अजीरन हो गया। यहाँ इन बातों के कायल नहीं। खैर वहाँ से खुदा-खुदा करके चले, तो थोड़ी देर के बाद सईद ने फिर आज़ाद को रोका—हाँय-हाँय, खुदा के वास्ते उधर से न जाना। मियाँ अंधे हो, देखते नहीं, गधे खड़े हैं। आज़ाद ने कहा—गधे तो आप खुद हैं। डंडा उठाया, तो दोनों गधे भागे। फिर जो आगे बढ़े, तो सईद की बायी आँख फड़की। गजब ही हो गया। हाथ-पाँव फूल गये, सारी चौकड़ी भूल गये। बोले—यार, कोई तदबीर बताओ, बायीं आँख बेतरह फड़क रही है। मर्द की बायीं और औरत की दाहनी आँख का फड़कना बुरा शगून है। आज़ाद खिलखिला कर हँस पड़े कि अजीब आदमी हैं आप! छींक हुई और हवास गायब; बिल्ली ने रास्ता काटा, और होश पैतरे; गधे देखे और औसान खता; और जो बायीं आँख फड़की, तो सितम ही हुआ! मियाँ, कहना मानो, इन खुराफ़ात बातों में न जाओ। यह वहम है, जिसकी दवा लुकमान के पास भी नहीं। मेरा और आपका साथ हो चुका। आप अपना रास्ता लीजिए, बंदा रुखसत होता है।

१४

मियाँ आजाद ठोकरें खाते, डंडा हिलाते, मारे-मारे फिरते थे कि यकायक सड़क पर एक खूबसूरत जवान से मुलाकात हुई। उसने इन्हें नजर भर कर देखा, पर यह पहचान न सके। आगे बढ़ने ही को थे कि जवान ने कहा—

हम भी तसलीम की खू डालेंगे ;
बेनियाजी तेरी आदत ही सही।

आजाद ने पीछे फिर कर देखा, जवान ने फिर कहा—

गो नहीं पूछते हरगिज वो मिजाज;
हम तो कहते हैं, दुआ करते हैं।

'कहिए जनाब, पहचाना या नहीं? यह उड़नघाइयाँ, गोया कभी की जान-पहचान ही नहीं'। मियाँ आजाद चकराये कि यह कौन साहब हैं! बोले—हज़रत, मैं भी इस उठती ही जवानी में आँखें खो बैठा। वल्लाह, किस मरदूद ने आपको पहचाना हो।

जवान—एँ, कमाल किया! वल्लाह, अब तक न पहचाना! मियाँ, हम तुम्हारे लँगोटिये यार हैं अनवर।

आजाद—अख्खाह, अनवर! अरे यार, तुम्हारी तो सूरत ही बदल गयी।

यह कह कर दोनों गले मिले और ऐसे खुश हुए कि दोनों की आँखों से आँसू निकल आये। आज़ाद ने कहा—एक वह ज़माना था कि हम-तुम बरसों एक जगह रहे, साथ-साथ मटर-गश्ती की ; कभी बाग़ में सैर कर रहे हैं, कभी चाँदनी रात में विहाग उड़ा रहे हैं, कभी जंगल में मंगल गा रहे हैं, कभी इल्मी बहस कर रहे हैं ; कभी बाँक का शौक, कभी लकड़ी की धुन। वे दिन अब कहाँ!

अनवर ने कहा—भाई, चलो, अब साथ-साथ रहें, जियें या मरें, मगर चार दिन की जिंदगी में साथ न छोड़ें। चलो, ज़रा बाजार की सैर कर आयें। मुझे कुछ सौदा लेना है। यह कह कर दोनों चौक चले। पहले बजाजें में धँसे। चारों तरफ़ से आवाजें आने लगीं—आइए, आइए, अजी मियाँ साहब, क्या खरीदारी मंजूर है? खाँ साहब, कपड़ा खरीदिएगा? आइए, वह-वह कपड़े दिखाऊँ कि बाज़ार भर में किसी के पास न निकलें। दोनों एक दूकान में जा कर बैठ गये। दूकान में टाट बिछा है, उस पर सफ़ेद चाँदनी, और लाला नैनसुख या डोरिये का अँगरखा डाटे बड़ी शान से बैठे हैं। तोंद वह फ़रमायशी, जैसे रुपये के दो वाले तरबूज! एक तरफ तनजेब, शरबती, अद्धी के थानों की कतार है, दूसरी तरफ मोमी छींट और फलालैन की बहार है। अलगनी पर रूमाल करीने से लटके हुए लाल-भभूका या सफ़ेद जैसे बगले के पर, या हरे-हरे धानी, जैसे लहवर। दरवाजा लाल रँगा हुआ, पन्नी से मढ़ा हुआ। दीवार पर सैकड़ों चिड़ियाँ टँगी हुई।

अनवर—भई, स्याह मखमल दिखाना।

बज़ाज़—बदलू, बदलू, जरी खाँ साहब को काली मख़मल का थान दिखाओ, बढ़िया।

लाला बदलू कई थान तह से उठा लाये—सूती, बूटीदार। अनवर ने कई थान देखे, और तब दाम पूछे।

लाला—गज़ों के हिसाब से बताऊँ, या थान के दाम।

अनवर—भई, गजों के हिसाब से बताओ। मगर लाला, झूठ कम बोलना।

लाला ने कहकहा उड़ाया—हजूर, हमारी दूकान में एक बात के सिवा दूसरी नहीं कहते। कौन मेल पसंद है? अनवर ने एक थान पसंद किया, उसकी कीमत पूछी।

लाला—सुनिए खुदावंद, जी चाहे लीजिए, जो चाहे न लीजिए, मुल दस रुपये गज से कम न होगी।

अनवर—एँ, दस रुपये गज़! यार खुदा से तो डरो। इतना झूठ!

लाला—अच्छा, तो आप भी कुछ फर्माओ।

अनवर—हम चार रुपये गज से टका ज़्यादा न देंगे।

आजाद ने अनवर से कहा—चार रुपये गज में न देगा।

अनवर—आप चुपके बैठ रहें, आपको इन बातों में जरा भी दखल नहीं है। 'शेख क्या जाने साबुन का भाव?'

लाला—चार रुपये गज तो बाजार भर में न मिलेगी। अच्छा, आप सात के दाम दे दीजिए। बोलिए, कितनी खरीदारी मंजूर है? दस गज उतारूँ?

अनवर—क्या खूब, दाम चुकाये ही नहीं और गजों की फिक्र पड़ गयी। वाजबी बताओ, वाजबी। हमें चकमा न दो, हम एक घाघ हैं।

लाला—अच्छा साहब, पाँच रुपये गज लीजिएगा? या अब भी चकमा है?

अनवर—अब भी मँहगी है, तुम्हारी खातिर से सवा चार सही। बस पाँच गज उतार दो।

लाला ने नाक भौं चढ़ा कर पाँच गज मखमल उतार दी, और कहा—आप बड़े कड़े खरीदार हैं। हमें घाटा हुआ। इन दामों शहर भर में न पाइएगा।

आजाद—भई, कसम है खुदा की, मेरा ऐसा अनाड़ी तो फँस ही जाय और वह गच्चा खाय कि उम्र भर न भूले।

अनवर—जी हाँ, यहाँ का यही हाल है। एक के तीन माँगते हैं।

यहाँ से दोनों आदमी अनवर के घर चले। चलते-चलते अनवर ने कहा—लो खूब याद आया। इस फ़ाटक मे एक बाँके रहते हैं। जरी मैं उनसे मिल लूँ। मियाँ आजाद और अनवर, दोनों फाटक मे हो रहे, तो क्या देखते हैं, एक अधेड़ उम्र का कड़ियल आदमी कुर्सी पर बैठा हुआ है। घुटना चूड़ीदार, चुस्त, जरा शिकन नहीं। चुनटदार अँगरखा एड़ी तक, छाता गोल कटा हुआ, चोली ऊँची, तुक्केदार माशे भर की कटी हुई टोपी। सिरोही सामने रखी है और जगह-जगह करौली [illegible] तलवारें चुनी हुई हैं। सलाम-कलाम के बाद अनवर ने कहा—

जनाब, वह बंदूक आपने पचास रुपये की खरीदी थी; दो दिन का वादा था, जिसके छः महीने हो गये, मगर आप साँस-डकार तक नहीं लेते। बंदूक हज़म करने का इरादा हो, तो साफ़-साफ़ कह दीजिए, रोज की ठाँय-ठाँय से क्या फ़ायदा?

बाँके—कैसी बंदूक, किसको बंदूक? अपना काम करो, मेरे मुँह न चढ़ना मियाँ, हम बाँके लोग हैं, सैकड़ों को गच्चे, हज़ारों को झाँसे दिये, आप बेचारे किस खेत की मूली हैं? यहाँ सौ पुश्त से सिपहगरी होती आयी है। हम, और दाम दें?

अनवर—वाह, अच्छा बाँकपन है कि आँख चूकी, और कपड़ा गायब; कम्मल डाला और लूट लिया। क्या बाँकपन इसी का नाम है? ऐसा तो लुच्चे-लुच्चे किया करते हैं। आज के सातवें दिन बायें हाथ से रुपये गिन दीजिएगा, वरना अच्छा न होगा।

बाँके ने मूँछों पर ताव दे कर कहा—मालूम होता है, तुम्हारी मौत हमारे हाथ बदी है! बहुत बढ़-बढ़ कर बातें न बनाओ। बाँकों से टर्राना अच्छा नहीं।

इस तकरार और तू तू, मैं-मैं के बाद दोनों आदमी घर चले। इधर इन बाँके का भांजा, जो अखाड़े से आया और घर मे गया, तो क्या देखता है कि सब औरतें नाक-भौं चढ़ाये, मुँह बनाये, गुस्से में भरी बैठी हैं। ऐं खैर तो है? यह आज सब चुपचाप क्यों बैठे हैं? कोई मिनकता ही नहीं। इतने मे उसकी मुमानी कड़क कर बोली—अब चूड़ियाँ पहनो, चूड़ियाँ! और बहू-बेटियों में दब कर बैठ रहो। वह मुआ करोड़ों बातें सुना गया, पक्के पहर भर तक ऊल-जलूल बका किया और तुम्हारे मामू बैठे सब सुना किये। 'फेरी मुँह पर लोई, तो क्या करेगा कोई!' जब शर्म निगोड़ी भून खायी, तो फिर क्या। यह न हुआ कि मुए कलजिभे की ज़बान तालू से खींच ले।

भांजे को जवानी का जोम था; शेर की तरह बफरता हुआ बाहर आया और बोला—मामूजान, यह आज आपसे किससे तकरार हो गयी? औरतें तक झल्ला उठीं और आप चुपके बैठे सुना किये? वल्लाह, इज्जत डूब गयी। ले, अब जल्दी उसका नाम बताइए, अभी आँतों का ढेर किये देता हूँ।

मामू—अरे, वही अनवर तो है। उसका कर्जदार हूँ। दो बातें सुनाये तो भी क्या? और वह है ही बेचारा क्या कि उससे भिड़ता! वह पिद्दी, मैं बाज, वह दुबला-पतला आदमी, मैं पुराना उस्ताद। बोलने का मौका होता तो इस वक्त उसकी लाश न फड़कती होती? ले गुस्सा थूक दो; जाओ, खाना खाओ; आज मीठे टुकड़े पके हैं।

भांजा—कसम खुदा की, जब तक उस मरदूद का खून न पी लूँ, तब तक खाना हराम है। मीठे टुकड़ों पर आप ही हत्थे लगाइए। यह कह कर घर से चल खड़े हुए। मामू ने लाख समझाया, मगर एक न मानी।

इधर अनवर जब घर पहुँचे, तो देखते क्या हैं, उनका लड़का तड़प रहा है। घबराये, वह क्या, खैरियत तो है? लौंडी ने कहा—भैया यहाँ खेल रहे थे कि बिच्छू ने काट लिया। तभी से बच्चा तड़प कर लोट रहा है। अनवर ने आजाद को वहीं छोड़ा और खुद अस्पताल चले कि झटपट डॉक्टर को बुला लायें। मगर

अभी पचास क़दम भी न गये होंगे कि सामने से उस बाँके का भांजा आ निकला। आँखें चार हुईं। देखते ही शेर की तरह गरज कर बोला—ले सँभल जा। अभी सिर ख़ून में लोट रहा होगा। हिला और मैंने हाथ दिया। बाँकों के मुँह चढ़ना ख़ाला जी का घर नहीं। बेचारे अनवर बहुत परेशान हुए। उधर लड़के की वह हालत, इधर अपनी यह गत। जिस्म में ताक़त नहीं, दिल में हिम्मत नहीं। भागें, तो क़दम नहीं उठते; ठहरें तो पाँव नहीं जमते। सैकड़ों आदमी इर्द-गिर्द जमा हो गये और बाँके का समझाने लगे—जाने दीजिए, इनके मुक़ाबिले में खड़े होना आपके लिए शर्म की बात है। अनवर की आँखें डबडबा आयीं। लोगों से बोले—भाई, इस वक़्त मेरा बच्चा घर पर तड़प रहा है, डॉक्टर को बुलाने जाता था कि राह मे इन्होंने घेरा। अब किसी सूरत से मुझे बचाओ। मगर उस बाँके ने एक न मानी। पैतरा बदल कर सामने आ खड़ा हुआ। इतने में किसी ने अनवर के घर ख़बर पहुँचायी कि मियाँ से एक बाँके से तलवार चल गयी। जितने मुँह उतनी बातें। किसी ने कह दिया कि चरका खाया और गरदन खट से अलग हो गयी। यह सुनते ही अनवर की बीबी सिर पीट-पीट कर रोने लगी—लोगो, दौड़ो, हाय, मुझ पर बिजली गिरी। हाय, मैं जीते-जी मर मिटी। फिर बच्चे से चिमट कर विलाप करने लगी—मेरे बच्चे, अब तू अनाथ हो गया, तेरा बाप दगा दे गया। हाय, मेरा सोहाग लुट गया।

मियाँ आजाद यह ख़बर पाते ही तीर की तरह घर से निकल कर उस मुक़ाम पर जा पहुँचे। देखा, तो वह जालिम तलवार हाथ में लिये मस्त हाथी की तरह चिंघाड़ रहा है। आजाद ने झट से झपट कर अनवर को हटाया और पैतरा बदल कर बाँके के सामने आ खड़े हुए। वह तो जवानी के नशे में मस्त था, पहले, हथकटी का हाथ लगाना चाहा, मगर आजाद ने ख़ाली दिया। वह फिर झपटा और चाहा कि चाकी का हाथ जमाये, मगर यह आड़े हो गये।

आजाद—बचा, यह उड़नघाइयाँ किसी गँवार को बताना। मेरे सामने छक्के छूट जायँ, तो सही। आओ चोट पर। वह बाँका झल्ला कर झपटा और घुटना टेक कर पालट का हाथ लगाने ही को था कि आज़ाद ने पैतरा बदला और तोड़ किया—मोढ़ा। मोढ़ा तो उसने बचाया, मगर आजाद ने साथ ही जनेवे का वह तुला हुआ हाथ जमाया कि उसका भंडारा तक खुल गया। धम से जमीन पर आ गिरा। मियाँ आज़ाद को सबने घेर लिया, कोई पीठ ठोकने लगा, कोई डंड मलने लगा। अनवर लपके हुए घर गये। बीबी की बाँछें खिल गयीं, गोया मुर्दा जी उठा।

दूसरे दिन अनवर और आजाद कमरे मे बैठे चाय पी रहे थे कि डाकिया हरी-हरी वरदी फड़काये, लाल-लाल पगिया जमाये, ख़ासा टैयाँ बना हुआ आया और एक अख़बार दे कर लंबा हुआ। अनवर ने झटपट अख़बार खोला, ऐनक लगायी और अख़बार पढ़ने लगे। पढ़ते-पढ़ते आख़िरी सफ़े पर नजर पड़ी, तो चेहरा खिल गया।

आजाद—यह क्यों ख़ुश हो गये भई! क्या ख़बर है?

अनवर—देखता हूँ कि यह इश्तिहार यहाँ कैसे आ पहुँचा ? अखबारों में इन बातों का क्या ज़िक्र ? देखिए—

'जरूरत है एक अरबी प्रोफेसर की नबीरपुर-कॉलेज के लिए। तनख्वाह दो सौ रुपये महीना।'

आजाद—अखबारों में सभी बातें रहती हैं, यह कोई तो नयी बात नहीं। अखबार लड़कों का उस्ताद, जवानों को सीधी राह बतानेवाला, बुड्ढों के तजुर्बे की कसौटी, सौदागरों का दोस्त, कारीगरों का हमदर्द, रिआया का वकील, सब कुछ है। किसी कालम में मुल्की छेड़-छाड़, कहीं नोटिस और इश्तिहार, अँगरेजी अखबारों में तरह-तरह की बातें दर्ज होती हैं और देसी अखबार भी इनकी नकल करते हैं। शतरंज के नक्शे क़ौमी तमस्सुकों का निर्ख, घुड़दौड़ की चर्चा, सभी कुछ होता है। जब कभी कोई ओहदा खाली हुआ और अच्छा आदमी न मिला, तो हुक्काम इसका इश्तिहार देते हैं। लोगों ने पढ़ा और दरख्वास्त दाग दी; लगा तो तीर, नहीं तुक्का।

अनवर—अब तो नये-नये इश्तिहार छपने लगेंगे। कोई नया गंज आबाद करे, तो उसको छपवाना पड़ेगा—एक नौजवान साकिन की ज़रूरत है, नये गंज में दूकान जमाने के लिए; क्योंकि जब तक धुआँधार चिलमें न उड़ें, चरस की लौ आसमान की खबर न लाये, तब तक गंज की रौनक़ नहीं। अफीमची इश्तिहार देंगे कि एक ऐसे आदमी की जरूरत है, जो अफीम घोलने में ताक हो, दिन-रात पीनक में रहे; मगर अफीम घोलने के वक़्त चौंक उठे। आराम-तलब लोग छपवायेंगे कि एक ऐसे किस्सा कहनेवाले की जरूरत है, जिसकी जबान कतरनी की तरह चली जाय, जिसके अमीर-हमजा की दास्तान जबान पर हो, जमीन और आसमान के कुलाबे मिलाये, झूठ के छप्पर उड़ाये, शाम से जो बकना शुरू करे, तो तड़का कर दे। खुशामदपसंद लोग छपवायेंगे कि एक ऐसे मुसाहब की जरूरत है, जो आठों गाँठ कुम्मैत हो, हाँ में हाँ मिलाये, हमको सखावत में हातिम; दिलेरी में रुस्तम, अक्ल में अरस्तू बनाये—मुँह पर कहे कि हुजूर ऐसे और हुजूर के बाप ऐसे, मगर पीठ-पीछे गालियाँ दे कि इस गधे को मैंने खूब ही बनाया। बेफ़िक्रे छपवायेंगे कि एक बटेर की जरूरत है, जो बढ़-बढ़ कर लात लगाता हो; एक मुर्ग़ की, जो सवाये-ड्योढ़े को मारे; एक मेंढ़े की, जो पहाड़ से टक्कर लेने में बंद न हो।

इतने मे मिर्जा सईद भी आ बैठे। बोले—भई, हमारी भी एक जरूरत छपवा दो। एक ऐसी जोरू चाहिए जो चालाक और चुस्त हो, नख-सिख से दुरुस्त हो, शोख और चंचल हो, कभी-कभी हँसी में टोपी छीनकर चपत भी जमाये, कभी रूठ जाये, कभी गुदगुदाये; खर्च करना न जानती हो, वरना हमसे मीजान न पटेगी; लाल मुँह हो; सफ़ेद हाथ-पाँव हों, लेकिन ऊँचे क़द की न हो, क्योंकि मैं नाटा आदमी हूँ; खाना पकाने में उस्ताद हो, लेकिन हाजमा खराब हो, हल्की-फुल्की दो चपातियाँ खाय, तो तीन दिन में हजम हो; सादा मिजाज ऐसी हो कि गहने-पाते से मतलब

ही न रखे,-हँसमुख हो, रोते को हँसाये, मगर यह नहीं कि फटी जूती की तरह बे॰ का दाँत निकाल दे, दरख्वास्त खटाखट आयें, हाँ, यह भी याद रहे कि साहब के ‍ पर दाढ़ी न हो।

आजाद—और तो खैर, मगर यह दाढ़ी की बड़ी कड़ी शर्त है। भला क साहब औरतें भी मुछक्कड़ हुआ करती हैं ?

सईद—कौन जाने भई, दुनिया में सभी तरह के आदमी होते हैं। जब बेमूँ के मर्द होते हैं, तो मूँछवाली औरतों का होना भी मुमकिन है। कहीं ऐसा न हो कि पीछे हमारी मूँछ उसके हाथ में और उसकी दाढ़ी हमारे हाथ मे हो।

आजाद—अजी, जाइए भी औरत के भी कहीं दाढ़ी होती है ?

सईद—हो या न हो, मगर यह पख हम जरूर लगायेंगे।

आपस में यही मज़ाक हो रहा था कि पडोस से रोने-पीटने की आवाज आयी मालूम हुआ कोई बूढ़ा आदमी मर गया। आज़ाद भी वहाँ जा पहुँचे। लोगों से पूछ इन्हें क्या बीमारी थी ? एक बूढ़े ने कहा—यह न पूछिए, हुकुम की बीमारी थी।

आज़ाद—यह कौन बीमारी है ? यह तो कोई नया मरज मालूम होता है। इसकी अलामतें तो बताइए।

बूढ़ा—क्या बताऊँ, अक्ल की मार इसका खास सबब है। अस्सी बरस के थे, मगर अक़्ल के पूरे, तमीज छू नहीं गयी ! खुदा जाने, धूप मे बाल सफेद किये थे या नज़ला हो गया था। हजरत की पीठ पर एक फोड़ा निकला। दस दिन तक इलाज नदारद। दसवे दिन किसी गँवार ने कह दिया कि गुलेअब्बास के पत्ते और सिरका बाँधो। झट-से राजी हो गये। सिरका बाजार से खरीदा, पत्ते बाग से तोड़ लाये, और सिरके मे पत्तों को खूब तर करके पीठ पर बाँधा। दूसरे रोज़ फोड़ा आध अंगुल बढ़ गया। किसी और गौखे ने कह दिया कि भटकटैया बाँधो, यह टोटका है। इसका नतीजा यह हुआ कि दर्द और बढ़ गया। किसी ने बताया कि इमली की पत्ती, धतूरा और गोबर बाँधो। वहाँ क्या था, फौरन मंजूर। अब तड़पने लगे। आग लग गयी। महल्ले की एक औरत ने कहा—मैं बताऊँ, मुझसे क्यों न पूछा। सहल तरकीब है, मूली के अचार के तीन कतले लेकर जमीन मे गाड़ दो। तीन दिन के बाद निकालो और कुएँ में डाल दो। फिर उसी कुएँ का पानी अपने हाथ भर कर पी जाओ। उसी दम चंगे न हो जाओ, तो नाक कटा डालूँ। सोचे, भई, इसने शर्त बडी कड़ी की है। कुछ तो है कि नाक बद ली। झट मूली के क़तले गाड़े और कुएँ मे डाल पानी भरने लगे उस पर तुर्रा यह कि मारे दर्द के तड़प रहे थे। रस्सी हाथ से छूट गयी धम से गिरे, फोड़े मे ठेस लगी, तिलमिलाने लगे यहाँ तक कि जान निकल गयी।

आजाद—अफसोस, बेचारे की जान मुफ्त में गयी। इन अक्ल के दुश्मनों से कोई इतना तो पूछे कि हर ऐरे गैरे की राय पर क्यों इलाज कर बैठते हो ? नतीजा यह होता है, या तो मरज बढ़ जाता है; या जान निकल जाती है।

१५

मियाँ आजाद एक दिन चले जाते थे। क्या देखते हैं, एक पुरानी-धुरानी गड़हिया के किनारे एक दढ़ियल बैठे काई की कैफ़ियत देख रहे हैं। कभी ढेला उठाकर फेंका, छप। बुड्ढे आदमी और लौंडे बने जाते हैं। दाढ़ी का भी खयाल नहीं। लुत्फ़ यह कि महल्ले भर के लौंडे इर्द-गिर्द खड़े तालियाँ बजा रहे हैं, लेकिन आप गड़हिया की लहरों ही पर लट्टू हैं। कमर झुकाये चारों तरफ़ ढेले और ठीकरे ढूँढ़ते फिरते हैं। एक दफ़ा कई ढेले उठा कर फेंके। आजाद ने सोचा, कोई पागल है क्या। साफ़-सुथरे कपड़े पहने, यह उम्र, यह वजा, और किस मजे से गड़हिया पर बैठे रँगरलियाँ मना रहे हैं। यह खबर नहीं कि गाँव भर के लौंडे पीछे तालियाँ बजा रहे हैं। एक लौंडे ने चपत जमाने के लिए हाथ उठाया, मगर हाथ खींच लिया। दूसरे ने पेड़ की आड़ से कंकड़ी लगायी। तीसरे ने दाढ़ी पर घास फेंकी। चौथे ने कहा—मियाँ, तुम्हारी दाढ़ी में तिनका; मगर मेरा शेर जरा न मिनका। गड़हिया से उठे, तो दूर की सूझी। झप से एक पेड़ पर चढ़ गये, फ़ुनगी पर जा बैठे और बंदर की तरह लगे उचकने। उस टहनी पर से उचके, तो दूसरी डाल पर जा बैठे। उस पर लड़कों को भी बुलाते जाते हैं कि आओ, ऊपर आओ। इमली का दरख्त था, इतना ऊँचा कि आसमान से बातें कर रहा था। हजरत मजे से बैठे इमली खाते और चिये लड़कों पर फेंकते जाते हैं। लौंडे गुल मचा रहे हैं कि मियाँ, मियाँ, एक चियाँ हमको इधर फेंको, इधर; हाथ ही टूटे, जो उधर फेंके। क्या मजे से गपर-गपर करके खाते जाते हैं, इधर एक चियाँ भी नहीं फेंकते। ओ कंजूस, ओ मक्खीचूस, ओ बंदर, अरे मुछंदर, एक इधर भी। थोड़ी देर में खटखट करते पेड़ से उतरे। इतने में कमसरियट के तीन-चार हाथी चारे और गन्ने से लदे झूमते हुए निकले। आपने लड़कों को सिखाया कि गुल मचा कर कहो—हाथी, हाथी गन्ना दे। लौंडों ने जो इतनी शह पायी, तो आसमान सिर पर उठा लिया। सब चीखने लगे—हाथी, हाथी, गन्ना दे। एकाएक एक रीछवाला आ निकला। आपने झट रीछ की गरदन पकड़ी और पीठ पर हो रहे। टिक-टिक-टिक, क्या टट्टू है। रीछवाला चिल्ल-पों मचाया ही किया, आपने दो-तीन लड़कों को आगे-पीछे अगल-बगल बिठा ही लिया। मजे से तने बैठे हैं, गोया अपने वक्त के बादशाह हैं। थोड़ी देर के बाद लड़कों को जमीन पर पटका, खुद भी धम से जमीन पर कूद पड़े, और झट लँगोट कस, ताल ठोक, रीछ से कुश्ती लड़ने पर आमादा हो गये। तब तो रीछवाला चिल्लाया—मियाँ, क्यों जान के दुश्मन हुए हो! चबा ही डालेगा। यह तो हवा के घोड़े पर सवार थे, आव देखा न ताव, चिमट ही तो गये और एक अंटी बतायी तो रीछ चारों खाने चित। लौंडों ने वह गुल मचाया कि रीछ पूरब भागा, और रीछवाला पश्चिम। मुहल्ले भर में कहकहा उड़ने

लगा। थोड़ी ही देर के बाद एक भड्डुरी आ निकला। धोती बाँधे, पोथी बगल में दबाये, रुद्राक्ष की माला पहने, आवाज लगाता जाता है—साइत बिचारें, सगुन बिचारें। दढ़ियल के करीब से गुज़रा, तो शिकार इनके हाथ आया। बोले—भई, इधर आना। उसकी बाँछे खिल गयीं कि पौ बारह है। अच्छी बोहनी हुई। दढ़ियल ने हाथ दिखाया और पूछा—हमारी कितनी शादियाँ होंगी? उसने कन्या, मकर, सिंह, वृश्चिक करके बहुत सोच के कहा—पाँच। आपने उसकी पगड़ी उछाल दी। लड़कों को दिल्लगी सूझी, किसी ने सिर सुहलाया तो किसी ने चपत लगाया। अच्छी तरह बोहनी हुई। दढ़ियल ने कहा—सच कहना, आज साइत देख कर चले थे या यों ही? अपनी साइत देख लेते हो या औरों ही को राह बताते हो? अच्छा, खैर, बताओ, हमारे यहाँ लड़का कब तक होगा? भड्डुरी ने कहा—बस, बस, आप और किसी से पूछिएगा। भर पाया। यह कह कर चलने ही को था कि दढ़ियल ने लड़कों को इशारा किया। वे तो इनको अपना गुरू ही समझते थे। एक ने पोथी ली, दूसरे ने माला छिपायी, तीसरे ने पगिया टहला दी। दस-पाँच चिमट गये। बेचारा बड़ी मुश्किल से जान छुड़ा कर भागा और कसम खायी कि अब इस मुहल्ले में कदम न रखूँगा। इतने मे खोंचेवाले ने आवाज दी—गुलाबी रेवड़ियाँ, करारी खुटियाँ, दालमोट सलोने, मटर तिकोने। लौंडे अपने-अपने दिल में ख़ुश हो गये कि दढ़ियल के हुक्म से खोंचा लूट लेंगे और खूब मिठाइयाँ चखेंगे। मगर उन्होंने मना कर दिया—खबरदार, हाथ मत बढ़ाना। जब खोंचेवाला पास आया, तब उन्होंने मोल-तोल करके दो रुपये मे सारा खोंचा मोल ले लिया और लड़कों को खूब छका कर खिलाया। एक दस मिनट के बाद आवाज़ आयी—खीरे लो, खीरे। आपने उचक कर टोकरा उलट दिया। खीरे जमीन पर गिर पड़े। जैसे ही लड़कों ने चाहा, खीरे बटोरें कि उन्होंने डाँट बतायी। खीरेवाले के दोनों हाथ पकड़ लिये और लड़कों से कहा—खीरे उठा उठा कर इसी गड़हिया मे फेंकते जाओ। पचास-साठ खीरे आनन-फानन गड़हिया मे पहुँच गये। अभी यह तमाशा हो ही रहा था कि एक चिड़ीमार कंपा-जाल लिये हुए आ निकला। हाथ में तीन-चार जानवर, कुछ झोले के अंदर। सब फड़फड़ा रहे हैं। कहता जाता है—काला भुजंगा मंगल के रोज। दढ़ियल ने पुकारा—आओ मियाँ, इधर आओ। एक भुजंगा ले कर अपने ऊपर से उतार कर छोड़ दिया। चिड़ीमार ने कहा—टका हुआ। दूसरा जानवर एक लड़के पर से उतार कर छोड़ा। इसी तरह दस-पंद्रह चिड़ियाँ छोड़ कर चुपचाप खड़े हो गये। गोया कुछ मतलब ही नहीं। चिड़ीमार ने कहा—हुजूर, दाम। आपने फर्माया—तुम्हारा नाम? तब तो वह चकराया कि अच्छे मिले। बोला—हुजूर, चेली के जानवर थे। आप बोले—कैसी चेली और कैसा चेला! कुछ घास तो नहीं खा गया? भंग पी गया है या शराब का नशा है? इधर लड़कों ने जाल-कंपा सब टहला दिया। थोड़ी देर रो-पीट कर उसने भी अपनी राह ली।

दढ़ियल ने लड़कों को छोड़ा और वहाँ से किसी तरफ जाना ही चाहते थे कि

आज़ाद ने करीब आ कर पूछा—हज़रत, मै बड़ी देर से आपका तमाशा देख रहा हूँ, कभी खीरे गड़हिया में फेंके, कभी इमली पर उचक रहे, कभी चिड़ीमार की खबर ली, कभी मजूरी को आड़े हाथों लिया। मुझे खौफ है कि आप कहीं पागल न हो जायँ, जल्दी फ़स्द खुलवाइए।

दढ़ियल—मुझे तो आप ही पागल मालूम होते हैं। इन बातों के समझने के लिए बड़ा अक्ल चाहिए। सुनिए, आपको समझाऊँ। गड़हिया पर बिस्तर जमा कर ढेले फेंकने और पेड़ पर उचक कर इमली खाने और हाथी से गन्ने माँगने का सबब यह है कि लौंडे भी हमारी देखा-देखी उचक-फाँद में बर्क हो जायँ, यह नहीं कि मरियल टट्टू की तरह जहाँ बैठे, वहीं जम गये। लड़कों को कम से कम दो घंटे रोज़ खेलना-कूदना चाहिए, वरना बीमारी सतायेगी। रीछवाले के रीछ पर उचक बैठने, रीछ को भगा देने और चिड़ीमार के जानवरों को मुफ़्त बे कौड़ी-बेदाम छुड़ा देने का सबब यह है कि जब हम जानवरों को तकलीफ़ में देखते हैं, तो कलेजे पर साँप लोटने लगता है और इन चिड़ीमारों का तो मैं जानी दुश्मन हूँ। बस चले, तो कालेपानी भिजवा दूँ। जहाँ देखा कि दो-चार भले मानुस खड़े हैं, लगे जानवरों को जोर से दबाने, जिसमें वे चीखें, और लोग उनकी हालत पर कुछ दे निकलें, इनकी हड्डियाँ चढ़ जायें। खीरे इसलिए गड़हिया में फिकवा दिये कि आजकल हवा खराब है, खीरे खाने से भला-चंगा आदमी बीमार हो जाय। मगर इन कुँजड़ों-कबाड़ियों को इन बातों से क्या वास्ता? उन्हें तो अपने टकों से मतलब। मैंने समझा, एक कबाड़िये के नुकसान से पचासों आदमियों की जान बच जाय, तो क्या बुरा? देख लो, खोंचेवाले को हमने अपने पास से दो रुपये खनाखन गिन दिये। अब समझे, इस तमाशे का हाल?

यह कह कर उन्होंने अपनी राह ली और आज़ाद ने भी दिल में उनकी नेक-नीयती की तारीफ़ करते हुए दूसरी तरफ़ का रास्ता लिया। अभी कुछ ही दूर गये थे कि सामने से एक साहब आते हुए दिखायी दिये। उन्होंने आज़ाद से पूछा—क्यों साहब, आप अफीम तो नहीं खाते?

आज़ाद—अफ़ीम पर खुदा की मार! कसम ले लीजिए, जो आज तक हाथ से भी छुई हो। इसके नाम से नफ़रत है।

यह कह कर आज़ाद नदी के किनारे जा बैठे। वहाँ से पलट कर जो आये, तो क्या देखते हैं कि वही हजरत जमीन पर पड़े आँखें माँग रहे हैं। चेहरे पर मुर्दनी छायी है, होंठ सूख रहे हैं, आँखों से आँसू बह रहे हैं। न सिर की फ़िक है, न पाँव की। आज़ाद चकराये, क्या माजरा है। पूछा—क्यों भई, खैर तो है? अभी तो भले-चंगे थे, इतनी जल्द कायापलट कैसे हो गयी?

अफीमची—भई, मैं तो मर मिटा। कहीं से अफीम ले आओ। पिऊँ, तो आँखें खुलें; जान में जान आये। लड़कपन ही से अफीम का आदी हूँ। वक्त पर न मिले, तो जान निकल जाय।

आजाद—अरे यार, अफीम छोड़ो, नहीं, इसी तरह एक दिन दम निकल जायगा।

अफीमची—तो क्या आप अमृत पी कर आये हैं! मरना तो एक दिन सभी को है।

आजाद—मियाँ, हो बड़े तीखे; 'रस्सी जल गयी, मगर बल न गया।' पड़े सिसक रहे हो, मगर जवाब, तुर्की ब तुर्की जरूर दोगे।

अफीमची—जनाब, अफीम लानी हो तो लाइए, वर्ना यहाँ बक-बक सुनने का दिमाग नहीं।

आज़ाद—अफ़ीम लानेवाले कोई और ही होंगे, हम तो इस फिक्र मे बैठे हैं कि आप मरे, तो मातम करें। हाँ, एक बात मानो तो अभी लपक जाऊँ, जरा लकड़ी के सहारे से उस हरे-भरे पेड़ के तले चलो; वहाँ हरी-हरी घास पर लोट मरो, ठंडी ठंडी हवा खाओ, तब तक मै आता हूँ।

अफ़ीमची—अरे मियाँ, यहाँ जान भारी है। चलना-फिरना उठना बैठना कैसा!

आखिर आजाद ने उन्हे पीठ पर लादा और ले चले। उनकी यह हालत कि आँखें बंद, मुँह खुला हुआ; मालूम ही नहीं कि जाते कहाँ हैं। आजाद ने उनको नदी में ले जा कर गोता दिया। बस कयामत आ गयी। अफीमची आदमी, पानी की सूरत से नफरत, लगे चिल्लाने—बड़ा गच्चा दे गया, मारा, पटरा कर दिया! उम्र भर मे आज ही नदी में कदम रखा; खुदा तुझसे समझे; सन से जान निकल गयी ठिठुर गया; अरे जालिम, अब तो रहम कर। आजाद ने एक गोता और दिया। फिर ताबड़तोड़ कई गोते दिये। अब उनकी कैफियत कुछ न पूछिए। करोड़ों गालियाँ दीं। आजाद ने उनको रेती में छोड़ दिया और लंबे हुए। चलते-चलते एक बरगद के पेड के नीचे पहुँचे, जिसकी टहनियाँ आसमान से बातें करती थीं और जटाएँ पाताल की खबर लेती थीं। देखा, एक हजरत नशे में चूर एक दुबली-पतली टट्टुई पर सवार टिक-टिक करते जा रहे हैं।

आजाद—इस टट्टुई पर कौन लदा है?

शराबी—अच्छा जी, कौन लदा है! ऐसा न हो कि कहीं मैं उतर कर अंजर-पंजर ढीले कर दूँ। यों नहीं पूछता कि इस हवाई घोडे पर आसन जमाये, बाग उठाये कौन सवार जाता है। आँखों के आगे नाक, सूझे क्या खाक। टट्टू ऐसे ही हुआ करते हैं?

आजाद—जनाब, कसूर हुआ, माफ कीजिए। सचमुच यह तो तुर्की नस्ल का पूरा घोडा है। खुदा झूठ न बुलाये, जमना पार की बकरी इससे कुछ ही बड़ी होगी।

शराबी—हाँ, अब आप आये राह पर। इस घोडे की कुछ न पूछिए। माँ के पेट से फुदकता निकला था।

आजाद—जी हाँ, वह तो इसकी आँखे ही कहे देती हैं। घोड़ा क्या, उड़नखटोला है।

शराबी—इसकी कीमत भी आपको मालूम है?

आजाद—ना साहब! भला मैं क्या जानूँ। आप तो शेर गधे पर सवार हुए हैं,

यहाँ तो टाँगों की सवारी के सिवा और कोई सवारी मयस्सर ही न हुई। मगर उस्ताद कितनी ही तारीफ करो, मेरी निगाह मे तो नहीं जँचता।

शराबी—अच्छा, तो इसी बात पर कड़कड़ाये देता हूँ।

यह कह कर एड़ लगायी मगर टट्टू ने जुंबिश तक न की। वह और अचल हो गया। अब चाबुक पर चाबुक मारते हैं, एड लगाते हैं और वह टसकने का नाम तक नहीं लेता। आजाद ने कहा—बस ज्यादा शेखी में न आइए, ठंडी-ठंडी हवा खाइए।

यह कह कर आजाद तो चले, मगर शराबी के पाँव डगमगाने लगे। बाग अब छूटी और अब छूटी। दस कदम चले और बाग रोक ली। पूछा—मियाँ मुसाफिर, मैं नशे में तो नहीं हूँ?

आजाद—जी नहीं, नशा कैसा? आप होश की बातें कर रहे हैं?

शराबी इसी तरह बार-बार आजाद से पूछता था। आखिर जब आजाद ने देखा कि यह अब घुड़िया पर से लुढका ही चाहते हैं, तो झट घुड़िया को एक खेत में हाँक दिया, और गुल मचाया कि ओ किसान, देख, यह तेरा खेत चराये लेता है। किसान के कान में भनक पड़ी, तो लठ कांधे पर रख लाखों गालियाँ देता हुआ झपटा। आज चचा बनाके छोड़ूँगा; रोज सुअरिया चरा ले जाते थे, आज बहुत दिन के बाद हत्थे चढ़े हो। नजदीक गया, तो देखता है कि टटुई है और एक आदमी उस पर लदा है। किसान चालाक था। बोला—आप हैं बाबू साहब! चलिए, आपको घर ले चलूँ। वहीं खाना खाइए और आराम से सोइए। यह कह कर घुड़िया की रास थामे हुए, कॉंजीहाउस पहुँचा और टटुई को काँजीहाउस में ढकेल कर चंपत हुआ। यह बेचारे रात भर काँजीहाउस में रहे, सुबह को किसी तरह घर पहुँचे।

मियाँ आजाद के पाँव में तो आँधी रोग था। इधर-उधर चक्कर लगाये, रास्ता नापा और पड़ कर सो रहे। एक दिन साँड़नी की खबर लेने के लिए सराय की तरफ गये, तो देखा, बड़ी चहल-पहल है। एक तरफ़ रोटियाँ पक रही हैं, दूसरी तरफ दाल बघारी जाती है। भठियारियाँ मुसाफ़िरों को घेर-घार कर ला रही हैं, साफ-सुथरी कोठरियाँ दिखला रही हैं। एक कोठरी के पास एक मोटा-ताजा आदमी जैसे ही चारपाई पर बैठा, पट्टी टूट गयी। आप गडाप से झिलँगे में हो रहे। अब बार-बार उचकते हैं; मगर उठा नहीं जाता। चिल्ला रहे हैं कि भाई, मुझे कोई उठाओ। आखिर भठियारी ने दाहना हाथ पकड़ा, बायीं तरफ मियाँ आजाद ने हाथ दिया और आपको बड़ी मुश्किल से खींच-खाँच के निकाला। झिलँगे से बाहर आये, तो सूरत बिगड़ी हुई थी। कपड़े कई जगह मसक गये थे। झल्ला कर भठियारी से बोले—वाह, अच्छी चारपाई दी! जो मेरे हाथ-पाँव टूट जाते, या सिर फूट जाता, तो कैसी होती?

भठियारी—ऐ वाह मियाँ, 'उलटा चोर कोतवाल को डाँटे!' एक तो छपरखट को चकनाचूर कर डाला, पट्टी के बहत्तर टुकड़े हो गये, देंगे टका और छह रुपये पर पानी फेर दिया, दूसरे हमीं को ललकारते हैं!

आजाद—जनाब, इन भठियारियों के मुँह न लगिए, कहीं कुछ कह बैठें, तो मुफ़्त की झेंप हो। देख भाल कर बैठा कीजिए। कहाँ से आ रहे हैं?

हकीम—यहीं तक आया हूँ।

आजाद—आप आये कहाँ से हैं?

हकीम—जी गोपामऊ मकान है।

आजाद—यहाँ किस ग़रज आना हुआ?

हकीम—हकीम हूँ।

आजाद—यह कहिए कि आप तबीब हैं।

हकीम—तबीब आप खुद होंगे, हम हकीम हैं।

आजाद—अच्छा साहब, आप हकीम हीं सही, क्या यहाँ हिकमत कीजिएगा?

हकीम—और नहीं तो क्या, भाड़ झोंकने आया हूँ? या सनीचर पैरों पर सवार था? भला यह तो फ़र्माइए कि यह कैसी जगह है? लोग किस फैसन के हैं? आब-हवा कैसी है?

आजाद—यह न पूछिए, जनाब। यहाँ के बाशिंदे पूरे घुटे हुए, आठों गाँठ कुम्मैत हैं। और आब-हवा तो ऐसी है कि बरसों रहिए, पर सिर में दर्द तक न हो। पाव भर की खुराक हो, तो तीन पाव खाइए। डकार तक आये, तो मुझे सजा दीजिए।

यह सुन कर हकीम साहब ने मुँह बनाया और बोले—तब तो बुरे फँसे!

आजाद—क्यों, बुरे क्यों फँसे? शौक से हिकमत कीजिए। आब-हवा अच्छी है, बीमारी का नाम नहीं।

हकीम—हजरत, आप निरे बुद्धू हैं। एक तो आपने यह गोला मारा कि आब-हवा अच्छी है। इतना नहीं समझते कि आब-हवा अच्छी है, तो हमसे क्या वास्ता, हमें क़ौन पूछेगा। बस, हाथ पर हाथ रखे मक्खियाँ मारा करेंगे। हम तो ऐसे शहर जाना चाहते हैं, जहाँ हैजे का घर हो, बुखार पीछा न छोड़ता हो, दस्त और पेचिश की सबको शिकायत हो, चेचक का वह जोर हो कि खुदा की पनाह। तब अलबत्ता हमारी हँड़िया चढ़े। आपने तो वल्लाह, आते ही गोला मारा। आप फ़रमाते हैं कि यहाँ पाव भर के बदले तीन पाव ग़िज़ा हजम होती है। आमदनी टका नहीं और खायँ चौगुना। तो कहिए, मरे या जिये? बंदा सबेरे ही बोरिया-बँधना उठा कर चंपत होगा। ऐसी जगह मेरी बला रहे, जहाँ सब हट्टे-कट्टे ही नजर आते हैं। भला कोई खास मरज भी है यहाँ? या मरज का इस तरफ़ गुजर ही नहीं हुआ?

आज़ाद—हजरत, यहाँ के पानी में यह असर है कि बरसों का मरीज आये, और एक कतरा पी ले, तो बस, खासा हट्टा-कट्टा हो जाय।

हकीम—पानी क्या अमृत है! तो सही, जो पानी मे जहर न मिला दिया हो।

आजाद—जनाब, हजारों कुएँ और पचासों बावलियाँ हैं, किस-किस में जहर मिलाते फिरएगा?

हकीम—खैर भाई, समझा जायगा; मगर बुरे फँसे! इस वक्त होश ठिकाने नहीं है! ओ भठियारी, जरी हमको पंसारी की दूकान से तोला भर सिकंजबीन तो ला देना।

भठियारी—ऐ मियाँ, पंसारी यहाँ कहाँ? किसी फ़कीर की दुआ ऐसी है कि यहाँ हकीम और पंसारी जमने ही नहीं पाता। कई हकीम आये, मगर कब्र में हैं। कई पंसारियों ने दूकान जमायी मगर चिता में फूँक दिये गये। यहाँ तो बीमारी ने आने की कसम खायी है।

हकीम—भई, बड़ा निकम्मा शहर है। खुदा के लिए हमें टट्टू किराये पर कर दो, तो रफ़ू-चक्कर हो जायें। ऐसे शहर की ऐसी-तैसी।

इन्हें धता बता कर आजाद सराय के दूसरे हिस्से में जा पहुँचे। क्या देखते हैं, एक बुजुर्ग आदमी बिस्तर जमाये बैठे हैं। आजाद बेतकल्लुफ तो थे ही, 'सलाम अलेक' कह कर पास जा बैठे। वह भी बड़े तपाक से पेश आये। हाथ मिलाया, गले मिले, मिजाज पूछा।

आजाद—आप यहाँ किस गरज से तशरीफ लाये हैं?

उन्होंने जवाब दिया—जनाब, मैं वकील हूँ। यहाँ वकालत करने का इरादा है। कहिए, यहाँ की अदालत का क्या हाल है?

आजाद—यह न पूछिए। यहाँ के लोग भीगी बिल्ली हैं; लड़ना-भिड़ना जानते ही नहीं। साल भर में दो-चार मुकदमे शायद होते हों। चोरी-चकारी यहाँ कभी सुनने ही

में नहीं आती। जमीन, आराजी, लगान, पट्टीदारी के मुकदमे कभी सुने ही नहीं। कर्ज़ कोई ले न दे।

वकील साहब का रंग उड़ गया। मगर हकीमजी की तरह झल्ले तो थे नहीं, आहिस्ता से बोले—सुभान अल्लाह, यहाँ के लोग बड़े भले आदमी हैं। खुदा इनको हमेशा नेक रास्ते पर ले जाय। मगर दिल मे अफसोस हुआ कि इस टीम-टाम, धूम-धाम से आये, और यहाँ भी वही ढाक के तीन पात। जब मुकदमे ही न होंगे, तो खाऊँगा क्या, दुश्मन का सिर। इन्हें भी झाँसा दे कर आजाद आगे बढ़े, तो देखा, चारपाई बिछाये शहतूत के पेड़ के नीचे एक साहब बैठे हुक्का उडा रहे हैं। आजाद ने पूछा—आपका नाम ?

वह बोले—गुम-नाम हूँ।

आजाद—वतन कहाँ है ?

वह—फकीर जहाँ पड़ रहे, वहीं उसका घर।

आजाद—आपका पेशा क्या है ?

वह—खूने-जिगर खाना।

आजाद—तो आप शायर हैं, यह कहिए।

आजाद चारपाई के एक कोने पर बैठ गये और बेतकल्लुफ हो कर बोले—जनाब, हुक्का तो मेरे हवाले कीजिए और आप अपना कलाम सुनाइए। शायर साहब ने बहुत कुछ चुना-चुनी के बाद दूसरे का कलाम अपना कह कर सुनाया—

क्या हाल हो गया है दिले-बेकरार का
आजार हो किसी को इलाही, न प्यार का।
मशहूर है जो रोजे-कयामत जहान में;
पहला पहर है मेरी शबे-इंतिजार का।
हमतास देखना मेरी वहशत के बलबले;
आया है धूमधाम से मौसम बहार का।
राह उनकी तकते-तकते जो मुद्दत गुजर गयी;
आँखों को हौसला न रहा इंतिजार का।

आजाद—सुभान-अल्लाह, आपका कलाम बहुत ही पाकीजा है। कुछ और उस्तादों के कलाम सुनाइए।

शायर—बहुत खूब; सुनिए—

दाग़ दे जाते हैं जब आते हैं;
यह शिगूफ़ा नया वह लाते हैं।

आजाद—सुभान-अल्लाह! दाग़ के लिए शिगूफा, क्या खूब!

शायर—यार तक बार कहाँ पाते हैं;
रास्ता नाप के रह जाते हैं।

आजाद—वाह, क्या बोलचाल है!

शायर—फिर जुनूँ दस्त न दिखलाये हमें;
आज तलवे मेरे खुजलाते हैं।

आजाद—वाह वाह, क्या जबान है!

शायर—फूल का जाम पिलाओ साकी;
काँटे तालू में पड़े जाते हैं।

आजाद—फूल के लिए काँटे क्या खूब।

शायर—कंघी के नाम से होते हैं खफा;
बात सुलझी हुई उलझाते हैं।

आजाद—बहुत खूब।

शायर—अच्छा जनाब, यह तो फ़र्माइए, यहाँ के रईसों मे कोई शायरी का कद्रदान भी है?

आजाद—किब्ला, यह न पूछिए। यहाँ मारवाड़ी अलबत्ता रहते हैं। शायर या मुंशी की सूरत से नफ़रत है। यहाँ के रईसों से कुछ भी भरोसा न रखिए।

शायर—तब तो यहाँ आना ही बेकार हुआ। आख़िर, क्या एक भी रंगीन मिजाज रईस नहीं है?

आजाद—अब आप तो मानते ही नही। यहाँ कदरदाँ खुदा का नाम है।

१७

आजाद के दिल में एक दिन समायी कि आज किसी मसजिद में नमाज़ पढ़ें, जुमे का दिन है, जामे-मसजिद में खूब जमाव होगा। फ़ौरन मसजिद में आ पहुँचे। क्या देखते हैं, बड़े-बड़े जाहिद और मौलवी, काजी और मुफ़्ती बड़े-बड़े अमामे सिर पर बाँधे नमाज पढ़ने चले आ रहे हैं; अभी नमाज शुरू होने में देर है, इसलिए इधर-उधर की बातें करके वक्त काट रहे हैं। दो आदमी एक दरख्त के नीचे बैठे जिन्न और चुड़ैल की बातें कर रहे हैं। एक साहब नवजवान हैं, मोटे-ताज़े; दूसरे साहब बुड्ढे हैं, दुबले-पतले।

बुड्ढे—तुम तो दिमाग के कीड़े चाट गये। बड़े बक्की हो। लाखों दफे समझाया कि यह सब ढकोसला है, मगर तुम्हें तो कच्चे घड़े की चढ़ी है, तुम कब सुननेवाले हो।

जवान—आप बुड्ढे हो गये, मगर बच्चों की सी बातें करते हैं। अरे साहब, बड़े-बड़े आलिम, बड़े-बड़े माहिर भूतों के कायल हैं। बुढ़ापे में आपकी अक्ल भी सठिया गयी?

बुड्ढे—अगर आप भूत-प्रेत दिखा दें, तो टाँग के रास्ते निकल जाऊँ। मेरी इतनी उम्र हुई, कभी किसी भूत की सूरत न देखी। आप अभी कल के लौंडे हैं, आपने कहाँ देख ली?

जवान—रोज ही देखते हैं जनाब! कौन सा ऐसा मुहल्ला है, जहाँ भूत और चुड़ैल न हों? अभी परसों की बात है, मेरे एक दोस्त ने आधी रात के वक्त दीवार पर एक चुड़ैल देखी। बाल-बाल मोती पिरोये हुए, चोटी कमर तक लटकती हुई, ऐसी हसीन कि परियाँ झख मारें। वह सन्नाटा मारे पड़े रहे, मिनके तक नहीं। मगर आप कहते हैं, झूठ है।

बुड्ढे—जी हाँ झूठ है—सरासर झूठ। हमारा खयाल वह बला है, जो सूरत बना दे, चला-फिरा दे, बातें करते सुना दे। आप क्या जानें, अभी जुमा-जुमा आठ दिन की तो पैदाइश है। और मियाँ, करोड़ बातों की एक बात तो यह है कि मैं बिना देखे न पतियाऊँगा। लोग बात का बतंगड़ और सुई का भाला बना देते हैं। एक सही, तो निन्यानबे झूठ। और आप ऐसे डुलमुलयकीन आदमियों का तो ठिकाना ही नहीं। जो सुना, फौरन मान लिया। रात को दरख्त की फुनगी पर बंदर देखा और थरथराने लगे कि प्रेत झाँक रहा है। बोले और गला दबोचा। हिले और शामत आयी। अँधेरे-घुप में तो यों ही इनसान का जी घबराता है। जो भूत-प्रेत का खयाल जम गया, तो सारी चौकड़ी भूल गये। हाथ-पाँव सब फूल गये। बिल्ली ने म्याऊँ किया और जान निकल गयी। चूहे की खड़बड़ सुनी और बिल ढूँढ़ने लगे। अब जो चीज सामने आयेगी, प्रेत बन जायगी। यहाँ सब पापड़ बेल चुके हैं। कई जिन्न हमने उतारे, कई चुड़ैलों से हमने महल्ले खाली कराये। जहाँ दस जूते खोपड़ी

पर जमाये और प्रेत ने बकचा सँभाला। यों गप उड़ाने को कहिए, तो हम भी गप बेपर की उड़ाने लगें। याद रखो, ये ओझे-सयाने सब रँगे सियार हैं। सब रोटी कमा खाने के लटके हैं। बंदर न नचाये, मुर्गे न लड़ाये, पतंग न उड़ाये, भूत-प्रेत ही झाड़ने लगे।

जवान—खैर, इस तू-तू मैं-मै से क्या वास्ता? चलिए हमारे साथ। कोई दो-तीन कोस के फ़ासले पर एक गाँव है, वहाँ एक साहब रहते हैं। अगर आपकी खोपड़ी पर उनके अमल से भूत न चढ़ बैठे, तो मूँछ मुड़वा डालूँ। कहिएगा, शरीफ़ नहीं चमार है। बस, अब चलिए, आपने तो जहाँ जरा सी चढ़ायी और कहने लगे कि पीर, पयंबर, देवी, देवता, भूत-प्रेत सब ढकोसला है। लेकिन आज ठीक बनाये जाइएगा।

यह कह कर दोनो उस गाँव की तरफ़ चले। मियाँ आजाद तो दुनिया भर के बेफ़िक्रे थे ही, शौक चर्राया कि चलो, सैर देख आओ। यह भी पुराने खयालों के जानी दुश्मन थे। कहाँ तो नमाज पढ़ने मसजिद आये थे, कहाँ छू-छक्का देखने का शौक हुआ; मसजिद को दूर ही से सलाम किया और सीधे सराय चले। अरे, कोई इक्का किराये का होगा? अरे मियाँ, कोई भठियारा इक्का भाड़े करेगा?

भठियारा—जी हाँ, कहाँ जाइएगा?

आजाद—सकजमलदीपुर।

भठियारा—क्या दीजिएगा?

आजाद—पहले घोड़ा-इक्का तो देखें—'घर घोड़ा नखास मोल!'

भठियारा—वह क्या कमानीदार इक्का खड़ा है और यह सुरंग घोड़ी है, हवा से बातें करती जाती है; बैठे और दन से पहुँचे।

इक्का तैयार हुआ। आजाद चले, तो रास्ते में एक साहब से पूछा—क्यों साहब, इस गाँव को सकजमलदीपुर क्यों कहते हैं? कुछ अजीब बेढंग सा नाम है। उसने कहा—इसका बड़ा किस्सा है। एक साहब शेख जमालुद्दीन थे। उन्होंने गाँव बसाया और इसका नाम रक्खा शेखजमालुद्दीनपुरा। गँवार आदमी क्या जानें, उन्होंने शेख का सक, जमाल का जमल और उद्दीन का दी बना दिया।

इक्केवाले से बातें होने लगीं। इक्केवाला बोला—हुजूर, अब रोजगार कहाँ! सुबह से शाम तक जो मिला, खा-पी बराबर। एक रुपया जानवर खा गया, दस-बारह आने घर के खर्च में आये, आने दो आने सुलफे-तमाखू में उड़ गये। फिर मोची के मोची। महाजन के पचीस रुपये छह महीने से बेबाक न हुए। जो कहीं कच्ची में चार-पाँच कोस ले गये, तो पुट्ठियाँ धँस गयीं पैंजनी, हाल, धुरा सब निकल गया। दो-चार रुपये के मत्थे गयी। रोज़गार तो तुम्हारी सलामती से तब हो, जब यह रेल उड़ जाय। देखिए, आप ही ने सात गंडे जमलदीपुर के दिये, मगर तीन चक्कर लगा कर।

कोई पौने दो घंटे में आजाद सकजमलदीपुर पहुँचे। पता-वता तो इनको मालूम

था ही, सीधे शाह साहब के मकान पर जा पहुँचे। ठट के ठट आदमी जमा थे। औरत-मर्द टूटे पड़ते थे। एक आदमी से उन्होंने पूछा—क्या आज यहाँ कोई मेला है? उसने कहा—मेला वेला नाहीं, एक मनई के मूड़ पर देवी आयी हैं, तीन मेहरारू, मनसेधू सब देखै आवत हैं। इसी झुंड में आजाद को वह बूढ़े मियाँ भी मिल गये, जो भूत-चुड़ैल को ढकोसला कहा करते थे। अकेले एक तरफ ले जा कर कहा—जनाब, मैंने मसजिद में आपकी बातें सुनी थीं। कसम खाता हूँ, जो कभी भूत-प्रेत का कायल हुआ हूँ। अब ऐसी कुछ तदबीर करनी चाहिए कि इन शाह साहब की कलई खुल जाय।

इतने में शाह साहब नीले रंग का तहमद बाँधे, लंबे-लंबे बालों में हिना का तेल डाले, माँग निकाले, खड़ाऊँ पहने तशरीफ़ लाये। आँखों में तेज भरा हुआ था। जिसकी तरफ़ नजर भर कर देखा, वही काँप उठा। किसी ने कदम लिये, किसी ने झुक कर सलाम किया। शाह साहब ने गुल मचाना शुरू किया—धूनी मेरी जलती है, जलती है और बलती है, धूनी मेरी जलती है। खड़ी मूँछोंवाला है, लंबे गेसूवाला है, मेरा दरजा आला है। झूम-झूम कर जब उन्होंने यह आवाज लगायी तो सब लोग सन्नाटे में आ गये। एकाएक आपने अकड़ कर कहा—किसी को दावा हो, तो आ कर मुझसे कुश्ती लड़े। हाथी को टक्कर दूँ, तो चिग्घाड़ कर भागे; कौन आता है?

अब सुनिए, पहले से एक आदमी को सिखा-पढ़ा रखा था। वह तो सधा हुआ था ही, झट सामने आकर खड़ा हो गया और बोला—हम लड़ेंगे। बड़ा कड़ियल जवान था; गैंडे की सी गरदन, शेर का सा सीना; मगर शाह साहब की तो हवा बँधी हुई थी। लोग उस पहलवान की हालत पर अफसोस करते थे कि बेचारा है; शाह साहब चुटकियों में चुर्र-मुर्र कर डालेंगे।

खैर दोनों आमने-सामने आये और शाह साहब ने गरदन पकड़ते ही इतनी जोर से पटका कि वह बेहोश हो गया। आजाद ने बूढ़े मियाँ से कहा—जनाब, यह मिली भगत है। इसी तरह गँवार लोग मूड़े जाते हैं। मैं ऐसे मक्कारों की कब्र तक से वाकिफ हूँ। ये बातें हो ही रही थीं कि शाह साहब ने फिर अकड़ते हुए आवाज लगायी—कोई और जोर लगाएगा? मियाँ आजाद ने आव देखा न ताव, झट लँगोट बाँध; चट से कूद पड़े। आओ उस्ताद; एक पकड़ हमसे भी हो जाय। तब तो शाह साहब चकराये कि यह अच्छे बिगड़े दिल मिले। पूछा—आप अँगरेजी पढ़े हैं? आजाद ने कड़क कर कहा—अँगरेजी नहीं, अँगरेजी का बाप पढ़ा हूँ। बस, अब सँभलिए, मैं आ गया। यह कह कर, घुटना टेक कलाजंग के पेच पर मारा, तो शाह साहब चारों खाने चित जमीन पर धम से गिरे। इनका गिरना था कि मियाँ आजाद छाती पर चढ़ बैठे। अब बताओ बच्चा, काट लूँ नाक, कतर लूँ कान, बाँधू दुम में नमदा! बदमाश कहीं का! बूढ़े मियाँ ने झपट कर आजाद को गोद में उठा लिया। वाह उस्ताद, क्यों न हो। शाह साहब उसी दिन गाँव छोड़ कर भागे।

शाह साहब को पटकनी दे कर और गाँव के ढुलमुल-यकीन गँवारों को समझा-

बुझा कर आजाद बूढ़े मियाँ के साथ-साथ शहर की तरफ चल खड़े हुए। रास्ते में उन्हीं शाह साहब की बातें होने लगीं—

आजाद—क्यों, सच कहिएगा, कैसा अडंगा दिया? बहुत मिलमिला रहे थे। यहाँ उस्तादों की आँखें देखी हैं। पोर-पोर मे पेंचैती कूट-कूट कर भरी है। एक-एक पेच के दो-दो सौ तोड़ याद हैं। मैं तो उसे देखते ही भाँप गया कि यह बना हुआ है। लड़ंतिए का तो कैंडा ही उसका न था। गरदन मोटी नहीं, छाती चौडी नही, बदन कटा-पिटा नही, कान टूटे नहीं। ताड़ गया कि चामड़ है। गरदन पकड़ते ही दबा बैठा।

बूढ़े मियाँ—अब इस गाँव में भूल कर भी न आयेगा। एक मर्तबा का जिक्र सुनिए, एक बने हुए सिद्ध पलथी मार कर बैठे और लगे अकड़ने की कोई क्रिया कर हाथ मे फूल ले, हम चुटकियो में बता देंगे। मेरे बदन में आग लग गयी मैंने कहा—अच्छा, मैंने फूल लिया, आप बतलाइये तो सही। पहले तो आँखें नीली-पीली करके मुझे डराने लगे। मैंने कहा—हजरत; मै इन गीदड़-भभकियों में नहीं आने का। यह पुतलियों का तमाशा किसी नादान को दिखाओ। बस, बताओ, मेरे हाथ मे क्या है? थोड़ी देर तक सोच-साच कर बोले—पीला फूल है। मैंने कहा—बिलकुल झूठ। तब तो घबराये और कहने लगे—मुझे धोखा हुआ। पीला नहीं, हरा फूल है। मैंने कहा—वाह भाई लालबुझक्कड़ क्यों न हो! हरा फूल आज तक देखा न सुना, यह नया गुल खिला। मेरा यह कहना था कि उनका गुलाब सा चेहरा कुम्हला गया। कोई उस वक्त उनकी बेकली देखता। मै जामे में फूला न समाता था। आखिर इतने शर-मिंदा हुए कि वहाँ से पत्तातोड़ भागे। हम ये सब खेल खेले हुए हैं।

आजाद—ऐसे ही एक शाह साहब को मैंने भी ठीक किया था। एक दोस्त के घर गया, तो क्या देखता हूँ कि एक फ़कीर साहब शान से बैठे हुए हैं और अच्छे-अच्छे पढ़े-लिखे आदमी उन्हें घेरे खड़े हैं। मैंने पूछा—आपकी तारीफ कीजिए, तो एक साहब ने, जो उस पर ईमान ला चुके थे, दबे दाँतों कहा—शाह साहब गैबदाँ (त्रिकाल-दर्शी) हैं। आपके कमालों के झंडे गड़े हुए हैं। दस-पाँच ने तो उन्हें आसमान ही पर चढ़ा दिया। मैंने दिल में कहा—बचा, तुम्हारी खबर न ली, तो कुछ न किया। पूछा, क्यों शाह जी, यह तो बताइए, हमारे घर में लड़का कब तक होगा? शाह जी समझे, यह भी निरे चोंगा ही हैं। चलो, अनाप-सनाप बता कर उल्लू बनाओ और कुछ ले मरो। मेरे बाप, दादे और उनके बाप के परदादे का नाम पूछा। यहाँ याद का यह हाल है कि बाप का नाम तो याद रहता है, दादाजान का नाम किस गधे को याद हो। मगर खैर, जो जबान पर आया, ऊल-जलूल बता दिया। तब फ़र्माते क्या हैं, बचा दो महीने के अदर ही अंदर बेटा ले। मैंने कहा—हैं शाह साहब, जरा सँभले हुए। अब तो कहा, अब न कहिएगा। पंद्रह दिन तो बंदे की शादी को हुए और आप फर्माते हैं कि दो महीने के अंदर ही अंदर लड़का ले। वल्लाह, दूसरा कहता, खून पी लेता। इस फिकरे पर यार लोग खिलखिला कर हँस पड़े और शाह जी के हवास गायब हो गये। दिल में तो करोड़ों ही गालियाँ दी होंगी, मगर मेरे सामने एक न चली। जनाब, उस

दयार में लोग उन्हें खुदा समझते थे। शाह जी कभी रुपये बरसाते थे, कभी बेफ़स्ल के मेवे मँगवाते थे, कभी घड़े को चकनाचूर करके फिर जोड़ देते थे। सैकड़ों ही अल्लेंटे याद थीं, मेरा जवाब सुना, तो हक्का-बक्का हो गये। ऐसे भागे कि पीछे फिर कर भी न देखा। जहाँ मैं हूँ, भला किसी सिद्ध या शाह जी का रंग जम तो जाय।

यही बातें करते हुए लोग फिर अपने-अपने घर सिधारे।

१८

मियाँ आज़ाद एक दिन चले जाते थे, तो देखते क्या हैं, एक चौराहे के नुक्कड़ पर भंगवाले की दूकान है और उस पर उनके एक लँगोटिये यार बैठे डींग की ले रहे हैं—हमने जो खर्च कर डाला, वह किसी को पैदा करना भी नसीब न हुआ होगा, लाखों कमाये, करोड़ों लुटाये, किसी के देने में न लेने में। आज़ाद ने झुक कर कान में कहा—वाह भई उस्ताद, क्यों न हो, अच्छी लंतरानियाँ हैं। बाबा तो आपके उम्र भर बर्फ़ बेचा किये और दादा जूते की दूकान रखते-रखते बूढ़े हुए। आपने कमाया क्या, लुटाया क्या? याद है, एक दफ़े साढ़े छह रुपये की मुहर्रिरी पायी, मगर उससे भी निकाले गये। उसने कहा—आप भी निरे गावदी हैं। अरे मियाँ, अब गप उड़ाने से भी गये? भंगवाले की दूकान पर गप न मारूँ, तो और कहाँ जाऊँ? फिर इतना तो समझो कि यहाँ हमको जानता कौन है। मियाँ आज़ाद तो एक सैलानी आदमी थे ही, एक तिपाई पर टिक गये। देखते क्या हैं, एक दरख्त के तले सिरकी का छप्पर पड़ा है, एक तख्त बिछा है, भंगवाला सिल पर रगड़े लगा रहा है। लगे रगड़ा, मिटे झगड़ा। दो-चार बिगड़े-दिल बैठे गुल मचा रहे हैं—दाता तेरी दूकान पर हुन बरसे, ऐसी चकाचक पिला, जिसमें जूती खड़ी हो। थोड़ा सा धतूरा भी रगड़ दो, जिसमें खूब रंग जमे। इतने में मियाँ आज़ाद के दोस्त बोल उठे—उस्ताद, आज तो दूधिया ढलवाओ। पीते ही ले उड़ें। चुल्लू में उल्लू हो जायँ। दूकानवाले ने उन्हें मीठी केवड़े से बसी हुई भंग पिलवायी। आप पी चुके, तो अपने दोस्त हरभज को भंग का एक गोला खिलाया और फिर वहाँ से सैर करने चले। इन्हें मुटापे के सबब से लोग भदभद कहा करते थे। चलते-चलते हरभज ने पूछा—क्यों यार, यह कौन मुहल्ला है?

भदभद—चीनीबाज़ार।

हरभज—वाह, कहीं हो न, यह चिनियाबाज़ार है।

भदभद—चिनियाबाजार कैसा, चीनीबाज़ार क्यों नहीं कहते।

हरभज—हम गली-गली, कूचे-कूचे से वाक़िफ़ हैं, आप हमें रास्ता बताते हैं? चिनियाबाजार तो दुनिया कहती है, आप कहने लगे चीनीबाजार है।

भदभद—अच्छा तो खबरदार, मेरे सामने अब चिनियाबाजार न कहिएगा।

हरभज—अच्छा किसी तीसरे आदमी से पूछो।

आजाद ने दोनों को समझाया—क्यों लड़े मरते हो? मगर सुनता कौन था। सामने से एक आदमी चला आता था। आजाद ने बढ़ कर पूछा—भाई, यह कौन मुहल्ला है? उसने कहा—चिनियाबाजार। अब हरभज और भदभद ने उसे दिक करना शुरू किया। चीनीबाजार है कि चिनियाबाजार, यही पूछते हुए आध कोस तक उसके साथ गये। उस बेचारे को इन भंगड़ों से पीछा छुड़ाना मुश्किल हो गया। बार-बार

कहता था कि भई, दोनों सही हैं। मगर ये एक न सुनते थे। जब सुनते-सुनते उसके कान पक गये, तो वह बेचारा चुपके से एक गली में चला गया।

तीनों आदमी फिर आगे चले। मगर वह मसला हल न हुआ। दोनों एक दूसरे को बुरा-भला कहते थे; पर दो में से एक को भी यह तसकीन न होती थी कि चिनियाबाजार और चीनीबाजार मे कौन सा बड़ा फ़र्क है।

हरभज—जानते भी हो, इसका नाम चिनियाबाजार क्यों पड़ा?

भदभद—जानता क्यों नहीं। पहले यहाँ दिसावर से चीनी आ कर बिका करती थी!

हरभज—तुम्हारा सिर! यहाँ चीन के लोग आ कर आबाद हो गये थे, जभी से यह नाम पड़ा;

भदभद—गावदी हो!

इस पर दोनों गुथ गये। इसने उसको पटका, उसने इसको पटका। भदभद मोटे थे, खूब पिटे।

आजाद ने उन दोनों को यहीं छोड़ा और खुद घूमते-घामते जौहरी बाजार की तरफ़ जा निकले। देखा, एक लड़का झुका हुआ कुछ लिख रहा है। आजाद ने लिफ़ाफा दूर से देखते ही खत का मजबून भाँप लिया। पूछा—क्यों भई इस गाँव का क्या नाम है?

लड़का—दिन को रतौंधी तो नहीं होती? यह गाँव है या शहर?

आजाद—हाँ, हाँ वही शहर। मैं मुसाफिर हूँ, सराय का पता बता दीजिए।

लड़का—सराय किस लिए जाइएगा? क्या किसी भठियारी से रिश्तेदारी है?

आजाद—क्यों साहब, मुसाफिरों से भी दिल्लगी! हम तरजुमा करते हैं! खत हो, अर्जी हो, दरख्वास्त हो, उसका वह तरजुमा कर दे कि पढ़नेवाला दंग रह जाय।

लड़का—तब तो जनाब, आप बड़े काम के आदमी हैं। लो, हमारी इस अर्जी का तरजुमा कर दो। एक चवन्नी दूँगा।

आजाद—खैर, लाइए, बोहनी कर लूँ। अर्जी पढ़िए।

लड़का—आप ही पढ़ लीजिए।

आजाद—(अर्जी पढ़ कर) सुभान-अल्लाह, यह अर्जी है या घर का दुखड़ा। भला तुम्हारे कितने लड़के-लड़कियाँ होंगी?

लड़का—अजी, अभी यहाँ तो शादी ही नही हुई।

आजाद—तो फिर यह क्या लिख मारा कि सारे कुनबे का भार मेरे सिर है। और नौकरी भी क्या माँगते हो कि जमाने भर का कूड़ा साफ करना पड़े! लड़का हुआ और बंपुलिस झाँकने लगे; कभी भंगियों से तकरार हो रही है; कभी भंगिनों से चख चल रही है। अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है, पढ़ो-लिखो, जम कर मेहनत करो, नौकरी की तुम्हें क्या फिक्र है?

लड़का—आप अर्जी लिखते हैं कि सलाह बताते हैं? मै तो आपसे सलाह नहीं पूछता।

आजाद—मियाँ, पढ़ने-लिखने का यह मतलब नहीं है कि नौकरी ही करे। और

नहीं, तो बंपुलिस का दारोगा ही सही। खासे जौहरी बने हो, ऐसी कौन सी मुसीबत आ पड़ी है कि इस नौकरी पर जान देते हो?

इतने में एक लाला साहब कलमदान लिये, ऐनक लगाये, आ कर बैठ गये।

आजाद—कहिए, आपको भी कुछ तरजुमा कराना है?

लाला—जी हाँ, इस अर्जी का तरजुमा कर दीजिए। मेरे बुढ़ापे पर तरस खाइए।

आज़ाद—अच्छा, अपनी अर्जी पढ़िए।

लाला—सुनिए—

'ग़रीबपरवर सलामत,

अपना क्या हाल कहूँ, कोई दो दर्जन तो बाल-बच्चे हैं। आखिर, उन्हें सेर-सेर भर आटा चाहिए या नहीं। जोड़िए कितना हुआ। और जो यह कहिए कि सेर भर कोई लड़का नहीं खा सकता, तो जनाब, मेरे लड़के बच्चे नहीं हैं, कई-कई बच्चों के बाप हैं। इस हिसाब से ८० रु० का तो आटा ही हुआ। १० रु० की दाल रखिए। बस, मैं और कुछ नहीं चाहता। मगर जो यह कहिए कि इससे कम में गुज़र करूँ, तो जनाब, यह मेरे किये न होगा। रोटियों में खुदा का भी साझा नहीं।

'मेरे लियाकत का आदमी इस दुनिया में तो आपको मिलेगा नहीं, हाँ शायद उस दुनिया में मिल जाय। बच्चे मैं खेला सकता हूँ, बाजार से सौदे ला सकता हूँ, बनिये के कान कतर लूँ, तो सही। किस्से-कहानियों का तो मैं खजाना हूँ। नित्य नयी कहानियाँ कहूँ। मौक़ा आ पडे, तो जूते साफ़ कर सकता हूँ; मेम साहब और बाबा लोगों को गा कर खुश कर सकता हूँ। ग़रज, हरफ़न-मौला हूँ। पढ़ा-लिखा भी हूँ। बदनसीबी से मिडिल पास तो नहीं हूँ; लेकिन अपने दस्तखत कर लेता हूँ। जी चाहे इम्तहान ले लीजिए।

'अब रही खानदान की बात। तो जनाब, कमतरीन के बुजुर्ग हमेशा बड़े-बड़े ओहदों पर रहे। मेरे बड़े भाई की बीबी जिसे फूफी कहते हैं और जिससे मजाक का भी रिश्ता है, उसके बाप के ससुर के चचेरे भाई नहर के मोहकमे में २० रु० महीने पर दारोगा थे। मेरे बाबाजान म्युनिसिपलिटी में सफाई के जमादार थे और १० रु० महीना मुशाहरा पाते थे। चूँकि सरकार का हुक्म है कि अच्छे खानदान के लोगों की परवरिश की जाय, इसलिए दो-एक बुजुर्गों का जिक्र कर दिया। वरना यहाँ तो सभी ओहदेदार थे। कहाँ तक गिनाऊँ।

'अब तो अर्जी में और कुछ लिखना नहीं बाकी रहा। अपनी ग़रीबी का जिक्र कर ही दिया। लियाकत की भी कुछ थोड़ी सी चर्चा कर दी और अपने खानदान का भी कुछ जिक्र कर दिया।

'अब अर्ज है कि हुजूर, जो हमारे आका हैं, मेरी परवरिश करें। अगर मुझ पर हुजूर की निगाह न हुई, तो मजबूर हो कर मुझे अपने बाल-बच्चों को मिर्च के टापू मे भरती करना पड़ेगा।'

मियाँ आजाद ने जो यह अर्जी सुनी तो लोटने लगे। इतना हँसे कि पेट में बल पड़-पड़ गये। जब जरा हँसी कम हुई, तो पूछा—लाला साहब, इतना और बता

दीजिए कि आप हैं कौन ठाकुर ?

लाला—जी, बंदा तो अगिनहोत्री है।

आजाद—तो फिर आपके शरीफ-खानदान होने में क्या शक है। मियाँ, आदमी बनो। जा कर बाप-दादों का पेशा करो। भाड़ झोंकने में जो आराम है, वह गुलामी करने में नहीं। मुझसे आपकी अर्जी का तरजुमा न होगा।

१९

एक दिन मियाँ आज़ाद साँड़नी पर सवार हो घूमने निकले, तो एक थिएटर में जा पहुँचे। सैलानी आदमी तो थे ही, थिएटर देखने लगे, तो वक्त का ख़याल ही न रहा। थिएटर बंद हुआ, तो बारह बज गये थे। घर पहुँचना मुश्किल था। सोचे, आज रात को सराय ही में पड़ रहें। सोये, तो घोड़े बेच कर। भठियारी ने आ कर जगाया—अजी, उठो, आज तो जैसे घोड़े बेच कर सोये हो! ऐ लो, वह आठ का गजर बजा। अँगड़ाइयों पर अँगड़ाइयाँ ले रहे हैं, मगर उठने का नाम नहीं लेते।

एक चंडूबाज़ भी बैठे हुए थे। बोले—तो तुमको क्या पड़ी है? सोने नहीं देतीं। क्या जाने, किस मौज में पड़े हैं। लहरी आदमी तो हई हैं। मगर सच कहना, कैसा धावत सैलानी है। दूसरा इतना घूमे, तो हलकान हो जाय। और जो जगाना ही मंज़ूर है, तो लोटे की टोंटी से जरा सा पानी कान में छोड़ दो। देखो, कैसे कुलबुला कर उठ बैठते हैं।

भठियारी ने चुल्लू से मुँह पर छींटे देने शुरू किये। दस ही पाँच बूँदें गिरी थीं कि आज़ाद हाँय-हाँय करते उठ खड़े हुए और बोले—यह क्या दिल्लगी है। कैसी मीठी नींद सो रहा था, लेके जगा दिया!

भठियारी—इतनी रात तक कहाँ घूमते रहे कि अभी नींद ही नहीं पूरी हुई?

आज़ाद—कहीं नहीं, जरा थिएटर देखने लगा था।

चंडूबाज—सुना, तमाशा बहुत अच्छा होता है। आज हमें भी दिखा देना। भई, तुम्हारी बदौलत थिएटर तो देख लें। कै बजे शुरू होता है?

आज़ाद—यही; कोई नौ बजे।

चंडूबाज़—तो फिर मैं चल चुका। नौ बजे शुरू हो, बारह बजे खत्म हो। कहीं एक बजे घर पहुँचें। मुहल्ले भर में आग ढूँढ़ें, हुक्का भरें, तवा जमाये, घंटा भर गुड़गुड़ायें। पलँग पर जायँ, तो नींद उचाट। करवटों पर करवटें लें, तब कहीं चार बजते-बजते आँख लगे। फिर जो भलेमानुस चार बजे सोये, वह दोपहर तक उठने का नाम न लेगा। लीजिए, दिन यों गया। रात यों गयी। अब इंसान चंडू कब पिये, दास्तान कब सुने, पीनक के मज़े कब उड़ाये? कौन जाय! क्या गुलाबो-शिताबो के तमाशे से अच्छा होता होगा? रीछवाले ही का तमाशा न देखे? मियाँ ऐंठा सिंह के मज़े न उड़ाये, बकरी पर तने बैठे हैं, छींक पड़ी और खट से फुँदनीदार टोपी अलग। भई, कोई बेघा हो, जो वहाँ जाय। और फिर रुपये किसके घर से आयें? जब से अफीम सोलह रुपये सेर हो गयी, तब से तो ग़रीबों का और भी दिवाला निकल गया। और चंडू के ठेकों ने तो सत्यानास ही कर दिया। सैलानी तो शहर का चूहा-चूहा है, मगर टिकट का नाम न हो। और भई, साफ़ तो यों है कि हम लोग मुफ़्त के तमाशा देखनेवालों में से हैं। मेला-ठेला तो कोई छूटने ही नहीं पाता। सावन भर ऐशबाग़ के मेले

न छोड़े; कभी इमलियों में झूल रहे हैं, कभी बंदरों की सैर देख रहे हैं। बहुत किया, तो एक गंडे के पौडे लिये। दो पैसे बढ़ाये और साकिन की दूकान पर दम लगाया। चलिए, पाँच-छःह पैसे में मेला हो गया। सबसे बड़ी मुसीबत तो यह है कि वहाँ नादिरी हुक्म है कि कोई धुआँ न उड़ाये, नहीं तो हम सोचे थे कि चंडू का सामान लेते चलेंगे और मजे से किसी कोने मे लेटे हुए उड़ाते जायँगे। इसमे किसी के बाप का क्या इजारा!

भठियारिन—भई, टिकट माफ़ हो जाय, तो मैं भी चलूँ।

आज़ाद—उनको क्या पड़ी है भला, जो बंबई से अंगड़-खंगड़ ले कर इतनी दूर बेगार भुगतने आये! वही बेठिकाने बात कहती हो, जिसके सिर न पैर।

चंडूबाज़—अच्छा, तो तुम्हारी खातिर ही सही। तुम भी क्या याद करोगी। एक दिन हम भी चवन्नी गलायेंगे। तमाशा होता कहाँ है?

आज़ाद—यही छतरमंज़िल में, दस क़दम पर।

चंडूबाज़—दस क़दम की एक ही कही। तुम्हारी तरह यहाँ किसी के पाँव में सनी-चर तो है नहीं। सात बजे से चलना शुरू करे, तो दस बजे पहुँचे। बग्घी किराये पर करे, तो एक रुपया आने का और एक रुपया जाने का और ठुक जाय। 'मुफ़लिसी में आटा गीला।'

आजाद—अजी, मेरी साँड़नी पर बैठ लेना।

भठियारिन—मुझे भी उसी पर बिठा लेना। रात का वक़्त है, कौन देखता है।

शाम हुई, तो मियाँ आजाद ने साँड़नी कसी और सराय से चले। भठियारी भी पीछे बैठ गयी। मगर चंडूबाज ने साँड़नी की सूरत देखी, तो बैठने की हिम्मत न पड़ी। जब साँड़नी ने तेज चलना शुरू किया, तो भठियारी बोली—इस मुई सवारी पर खुदा की सँवार! अल्लाह की कसम, मारे हचकोलों के नाक मे दम आ गया। आजाद को शरारत सूझी, तो एक एड़ लगायी वह और भी तेज हुई। तब तो भठियारी आग भभूका हो गयी—यह दिल्लगी रहने दीजिए; मुझे भी कोई और समझे हो? मैं लाखों सुनाऊँगी। ले बस, सीधी तरह चलना हो तो चलो; नहीं मैं चीखती हूँ। पेट का पानी तक हिल गया। ऐसी सवारी को आग लगे। मियाँ आजाद ने जरा लगाम खींचा, तो साँड़नी बलबलाने लगी। बी भठियारी तो समझीं कि अब जान गयी। देखो, यह छेड़छाड़ अच्छी नहीं। हमें उतार ही दो। लो, और सुनो, जरा से हचकोले में मुँह के बल आ रहूँ, तो चकनाचूर ही हो जाऊँ। तुम मुसंडों को इसका क्या डर! रोको, रोको, रोको। हाय, मेरे अल्लाह, मैं किस बला में फँस गयी! मियाँ, अपने खुदा से डरो, बस हमें उतार ही दो। इत्तफ़ाक से साँड़नी एक दरख्त की परछाहीं देख कर ऐसी भड़की कि दस क़दम पीछे हट आयी। उसका बिचकना था कि बी भठि-यारी धम से जमीन पर गिर पड़ी। खुदा की मार! वह तो कहो, पक्की सड़क न थी। नहीं तो हड्डी-पसली चूर-चूर हो जाती।

चंडूबाज—शाबाश है तेरी माँ को, पटकनी भी खायी, मगर वही तेवर। दूसरी हयादार होती, तो लाख बरस तक सवार होने का नाम न लेती। सवारी क्या है, जनाजा है।

भठियारी—चलिए, आपकी जूती की नोक से। हम वेश्या ही सही। क्या झाँसे देने आये हैं, जिसमें मैं उतर पड़ूँ और आप मज़े से जम जायँ। मुँह धो रखिए, हमने कच्ची गोलियाँ नहीं खेली हैं।

मगर इस झमेले में इतनी देर हो गयी कि जब थिएटर पहुँचे, तो तमाशा खत्म हो गया था। तमाशाई लोग बाहर निकल रहे थे।

आजाद—लीजिए, सारा मज़ा किरकिरा हो गया। इसी से मैं तुम लोगों को साथ न ले आता था।

चंडूबाज़—औरतों को तो मेले-ठेले में ले ही न जाना चाहिए। हमेशा अलसेट होती है।

भठियारी—जी हाँ, और क्या। मेले-ठेले तो आप जैसे खुर्राटों ही के लिए होते हैं। आजाद तमाशाइयों की बातें सुनने लगे—

एक—यार, इनके पास तो सामान खूब लैस है।

दूसरा—वाह, क्या कहना, परदे तो ऐसे कि देखे न सुने। बस, यही यकीन होता है कि बारहदरी का फाटक है या परीखाना! जंगल का सामान दिखाया, तो वही बेल-बूटे, वही दूब, वही पेड़, वही झाड़ियाँ, बस, बिलकुल सुंदरवन मालूम होता है।

तीसरा—और सब्जपरी की तारीफ ही न करोगे?

चौथा—हजरत, वह कहीं लखनऊ में छह महीने भी तालीम पाये, तो फिर आफ़त ही ढाये। लाखों लूट ले जाय, लाखों।

दूसरी तरफ़ गये, तो दो आदमी और ही तरह की बातें कर रहे थे—

एक—अजी, धोखा है, धोखा, और कुछ नहीं।

दूसरा—हाँ, टन-टन की आवाज़ तो आती है, बाकी खैर-सल्लाह।

अब आजाद यहाँ बैठ कर क्या करते। सोचे, आओ, साँड़नी पर बैठें और चल कर सराय में मीठी नींद के मजे लें। मगर बाहर आकर देखते हैं, तो साँड़नी गायब। थिएटर के अहाते में एक दरख्त से बाँध दिया था। मालूम नहीं, तड़प कर भागी या कोई चुरा ले गया। बहुत देर तक इधर-उधर ढूँढ़ा किये, मगर साँड़नी का पता न लगा। उधर और सवारियाँ भी तमाशाइयों को ले-ले कर चली गयीं। तब आज़ाद ने भठियारी से कहा—अब तो पाँव-पाँव चलने की ठहरेगी।

भठियारी—ना साहब, मुझसे पाँव-पाँव न चला जायगा।

चंडूबाज़—देखिए, कहीं कोई सवारी मिले, तो ले आइए। यह बेचारी पाँव-पाँव कहाँ तक चलेगी?

आजाद—तो तुम्हीं क्यों नहीं लपक जाते?

भठियारी (अलारक्खी)—ऐ हाँ, और क्या? चढ़ने को तो सब से पहले तुम्हीं दौड़ोगे। तुम्हें बात-चीत करने की भी तमीज नहीं।

आजाद—सवारी न मिलेगी, ठंडे-ठंडे घर की राह लो, बात-चीत करते-करते चले चलेंगे।

दूसरे दिन आज़ाद ने साँड़नी के खोने की थाने में रपट कर दी। मगर जिस आदमी को भेजा था, उसने आकर कहा—हुज़ूर थानेदार ने रपट नहीं लिखी और आपको बुलाया है।

आज़ाद—कौन, थानेदार? हमसे थानेदार से वास्ता? उनसे कहो कि आपको खुद मियाँ आज़ाद ने याद किया है, अभी हाज़िर हों।

अलारक्खी—ले, बस बैठे रहो। बहुत उजडुपना अच्छा नहीं होता। वाह, कहने लगे, हम न जायँगे। बड़े वह बने हैं। आखिर साँड़नी की रपट लिखवायी है कि नहीं? फिर अब दौड़ो-धूपोगे नहीं, तो बनेगी क्योंकर? और वहाँ तक जाते क्या चूड़ियाँ टूटती हैं, या पाँव की मेंहदी गिर जायगी?

आज़ाद—भई, हमसे थानेदार से एक दिन चख चल गयी थी। ऐसा न हो, वह कोतवाली के चबूतरे पर बैठ कर जोम में आ जायँ तो फिर मैं ले ही पड़ूँगा। इतना समझ लेना, मैं आधी बात सुनने का रवादार नहीं। साँड़नी मिले या जहन्नुम में जाय, इसकी परवाह नहीं, मगर कोई एँड़ा-बेंड़ा फ़िकरा सुनाया और मैंने कुर्सी के नीचे पटका। क्यों सुनें, चोर नहीं कि कोतवाल से डरूँ, जुवाड़ी नहीं कि प्यादे की सूरत देखते ही जान निकले, बदमाश नहीं कि मुँह छिपाऊँ, मरियल नहीं कि दो बातें सह जाऊँ। कोई बोला और मैंने तलवार निकाली; फिर वह नहीं या मैं नहीं।

अलारक्खी—अरे, वह बेचारा तो एक हँसमुख आदमी है। लड़ाई क्यों होने लगी।

आज़ाद—खैर, तुम्हारी खुशी है, तो चलता हूँ। मगर चलो तुम भी साथ, रास्ते में दो घड़ी दिल्लगी ही होगी।

आखिर मियाँ आज़ाद और अलारक्खी दोनों थाने चले। एक कानिस्टिबिल भी साथ था। राह में एक आदमी अकड़ता हुआ आ रहा था। आज़ाद उसका अकड़ना देख कर आग हो गये। क़रीब जा कर एक धक्का जो दिया, तो उसने पचास लुढ़कनियाँ खायीं। थोड़ी दूर और चले थे कि एक आदमी चादर बिछाये, उस पर जड़ी-बूटी फैलाये बैठा गप उड़ा रहा था। इस बूटी से अस्सी बरस का बूढ़ा जवान हो जाय, इस जड़ी को पानी में घिस कर एक तोला पिये, तो शेर का पंजा फेर दे। आज़ाद उसकी तरफ़ झुक पड़े—कहो भाई खिलाड़ी, यह क्या स्वाँग रचा है? आज कितने अक्ल के अंधे, गाँठ के पूरे जाल में फँसे? यह कह कर एक ठोकर जो मारी, तो सारी बूटियाँ, पत्तियाँ, जड़ें एक में मिल गयीं। और आगे चले, तो गुल-गपाड़े की आवाज़ आयी। एक हलवाई ग्राहक से तकरार कर रहा था।

हलवाई—खाली भजिया नाहीं बिकत है हमरी दुकान पर, कस-कस देई भला।

ग्राहक—अबे, मैं कहता हूँ, कहीं एक गुद्दा न दूँ।

आज़ाद—गुद्दा तो पीछे दीजिएगा, मैं एक गुद्दा कहीं आपकी गुद्दी पर न जमाऊँ।

ग्राहक—आप कौन हैं बोलनेवाले?

आज़ाद—उस बेचारे हलवाई को तुम क्यों ललकारते हो?

अलारक्खी—ऐ है, मियाँ, तुम कोई खुदाई फ़ौजदार हो? किसी के फटे में तुम कौन हो पाँव डालनेवाले?

कानिस्टिबिल—भइया, हो बड़े लड़ाका, बस काव कहों।

यहाँ से चले, तो थाने आ पहुँचे।

कानिस्टिबिल—हुजूर, ले आया, वह खड़े हैं।

थानेदार—अल्लाह! अलारक्खी भी हैं। मैं तो चाल ही से समझ गया था। कुछ बैठने को दो इन्हें, कोई है? सच कहना, तुम्हारी चाल से कैसा पहचान लिया?

आज़ाद—अपने-अपनों को सभी पहचान लेते हैं।

थानेदार—यह कौन बोला? कौन है भई?

अलारक्खी—ऐ, बस चलो, देख लिया। मुँह देखे की मुहब्बत है। घर की थानेदारी और अब तक मुई साँड़नी न मिली। तुमसे तो बड़ी-बड़ी उम्मीदें थीं।

थानेदार (आजाद से)—कहो जी, वह साँड़नी तुम्हारी है न?

आज़ाद—'तुम' का जवाब यहाँ नहीं देते; 'आप' कहिए; मैं कोई चरकटा हूँ।

भठियारी—हाय मेरे अल्लाह, मैं क्या करूँ? यह तो जहाँ जाते हैं, दंगा मचाते हैं।

थानेदार—क्या कुछ इनसे साँठ-गाँठ है? सच कहना, तुम्हें कसम है अपने शेख सद्दू की।

अलारक्खी—लो, तुम्हें मालूम ही नहीं। अच्छी थानेदारी करते हो। मै तो इनके घर पड़ गयी हूँ न।

थानेदार—तो यह कहिए, लाओ भई, साँड़नी काँजी-हाउस से निकलवाओ?

साँड़नी आ मौजूद हुई। मियाँ आजाद सवार हुए। भठियारी भी पीछे बैठी।

आज़ाद—आज तुम कई आदमियों के सामने हमें अपना मियाँ बना चुकी हो। मुकर न जाना।

अलारक्खी—जरा चोंच सँभाले हुए; कहीं साँड़नी पर से ढकेल न दूँ।

अलारक्खी को यकीन हो गया कि आजाद मुझ पर रीझ गये। अब निकाह हुआ ही चाहता है। यों ही बहुत नखरे किया करती थी, अब और भी नखरे बघारने लगी। नौ का अमल हो गया था। चारपाई पर धूप फैली हुई थी, मगर मक्कर किये पड़ी हुई थी। इतने में चंडूबाज आये। आते ही पुकारा—मियाँ आजाद, मियाँ आजाद! अलारक्खी! यह आज क्या है यहाँ, खुदा ही खैर करे। दस का अमल और अभी तक खटिया ही पर पड़े हैं। कल रात को तमाशा भी तो न था। (दरख्त की तरफ देख-कर और साँड़नी बँधी हुई पा कर) अभी खुश खुश सो रहे हैं। अरे मियाँ, क्या साँप सूँघ गया? यह माजरा क्या है? हाँ, अल्लाह कह कर उठ तो बैठ मेरे शेर।

आज़ाद—(अँगड़ाई ले कर) अरे, क्या सुबह हो गयी?

चंडूबाज—सुबह गयी खेलने, आँख तो खोलो, अब कोई दम में बारह की तोप दगा चाहती है दन से। देखना, आज दिन भर सुस्ती न रहे तो कहना। वह तो जहाँ आदमी जरा देर करके उठा और हाथ-पाँव टूटने लगे। अब एक काम करो, सिर से नहा डालो।

आजाद—क्या बक-बक लगायी है, सोने नहीं देता।

अलारक्खी चुपके-चुपके सब सुन रही है, मगर उठती नहीं। चडूबाज उसकी चार-,

पाई की पट्टी पर जा बैठे और बोले—ऐ उठ अल्लाह की बंदी, ऐसा सोना भी क्या ? यह कह कर आपने उसके बिखरे हुए बाल, जो जमीन पर लटक रहे थे, समेट कर चारपाई पर रखे। उधर मियाँ आजाद की आँख खुल गयी।

चंडूबाज (गुदगुदा कर)—उठो, मेरी जान की कसम, वह हँसी आयी, वह मुसकिरायी।

आज़ाद—ओ गुस्ताख, अलग हट कर बैठ, हमारे सामने यह बेअदबी !

चंडूबाज—उँह-उँह, बड़े वारिसअलीखाँ बन बैठे ! भई, आखिर तुमको भी तो जगाया था, अब इनको जगाना शुरू किया, तिनगते क्यों हो भला ? मैं तो सीधा-सादा, भोला-भाला आदमी हूँ।

आजाद—जी हाँ, हमें तो कंधा पकड़ कर जगाया। यह मालूम हुआ कि चारपाई को जूड़ी चढ़ी या भूचाल आ गया और उन्हें गुदगुदा कर जगाते हो। क्यों बचा ?

अलारक्खी जागी तो थी ही, खिलखिला कर हँस पड़ी, ऐ हट मरदुए, यह पलँग पर आ कर बैठ जाना क्या; मुझे कोई वह समझ रखा है ?

चंडूबाज ने तैश खा कर कहा—वाह-वाह, पलँग की अच्छी कही। 'रहें झोपड़ों में और ख्वाब देखें महलों का।' कभी बाबाराज ने भी पलँग देखा था।

अलारक्खी—मियाँ, मुझसे यह जली-कटी बातें न कीजिएगा जरी। वाह, हम झोपड़ों ही में रहती हैं सही; अब तो एक भलेमानस के घर पड़नेवाले हैं। क्यों मियाँ आजाद, है न, देखो, मुकर न जाना।

आजाद—वाह, मुकरने को एक ही कही, 'नेकी और पूछ-पूछ ?'

अलारक्खी—तिस पर भी तुम्हें शरम नहीं आती कि इस उचक्के ने मुझे हाथ लगाया और तुम मुखुर-मुखुर देखा किये। दूसरा होता, तो महनामथ मचा देता।

चंडूबाज—क्यों लड़वाती हो भला मुफ़्त में ? हमें क्या मालूम था कि यहाँ निकाह की तैयारियाँ हो रही हैं।

मियाँ आजाद हाथ-मुँह धोने बाहर गये, तो चंडूबाज और अलारक्खी में यों बातें होने लगीं।

चंडूबाज—यार, फाँसा तो बड़े मुड्ढ को ? अब जाने न देना। ऐसा न हो, निकल जाय। भई, कसम खुदा की, औरत क्या, बिस की गाँठ है तू।

अलारक्खी—मगर तुम भी कितने बेशहूर हो, उसके सामने आपने गुदगुदाना शुरू किया। अब वह खटके कि न खटके ? तुम्हारी जो बात है, दुनिया से अनोखी। ताड़ सा कद बढ़ाया, मगर तमीज छू नहीं गयी।

चंडूबाज—अब तुमसे झगड़े कौन ? मै किसी के दिल की बात थोड़े ही पढ़ा हूँ। मगर भई, पक्की कर लो।

अलारक्खी—हाँ पक्की-पोढ़ी होनी चाहिए। किसी अच्छे वकील से सलाह लो। वह कौन वकील हैं, जो कुम्मैत घोड़े की जोड़ी पर निकलते हैं—अजी वही, जो गवरू से हैं अभी।

चंडूबाज—वकीलों की न पूछो, तेरह सौ साठ हैं। किसी के पास ले चलेंगे।

अलारक्खी—नहीं, वाह, किसी बूढ़े वकील के यहाँ तो मैं न जाऊँगी। ऐसी जगह चलो, जो जवान हो, अच्छी सलाह दे।

चंडूबाज—अच्छा, आज इतवार है। शाम को मियाँ आज़ाद से कहना कि हमें अपनी बहन के यहाँ जाना है। बस, हम फाटक के उस तरफ़ दबके खड़े रहेंगे, तुम आना। हम-तुम चल कर सब मामला भुगता देंगे।

अलारक्खी—अच्छा अच्छा, तुम्हें खूब सूझी।

इतने में आजाद मुँह-हाथ धो कर आये, तो अलारक्खी ने कहा—हमें तो आज बहन के यहाँ न्योता है, कोई कच्ची दो घड़ी में आ जाऊँगी।

आजाद—जरा साली की सूरत हमें भी तो दिखा दो। ऐसा भी क्या परदा है, कहो तो हम भी साथ-साथ चले चलें।

अलारक्खी—वाह मियाँ, तुम तो उँगली पकड़ते ही पहुँचा पकड़ने लगे! यह कह कर अलारक्खी कोठरी में गयी और सोलह सिंगार करके निकली, तो आजाद फड़क गये। पटियाँ जमी हुई, गोरी-गोरी नाक मे काली-काली लौंग, प्यारे-प्यारे मुखड़े पर हलका सा घूँघट, हाथों में कड़े, पाँव में छडे, छम-छम करती चली।

चंडूबाज—उनके सामने चमक-चमक के बातें करना, यह नहीं कि झेपने लगो।

अलारक्खी—मुझे और आप सिखायें! चमकना भी कुछ सिखाने से आता है। मेरी तो बोटी-बोटी यों ही फड़का करती है। तुम चलो तो, जो मेरी बातों और आँखों पर लट्टू न हो जायँ, तो अलारक्खी नहीं। कुछ ऐसा करूँ कि वह भी निकाह पर रजामंद हो जायँ, तो उनसे और आजाद से जरा जूती चले।

वकील साहब अपने बाग़ में तख्त पर बैठे दोस्तों के साथ बातें कर रहे थे कि खिदमतगार ने आ कर कहा—हुजूर, एक औरत आयी है। कहती है, कुछ कहना है।

दोस्त—कैसी औरत है भई? जवान है या खप्पट?

खिदमतगार—हुजूर, यह तो देखने से मालूम होगा, मुल है अभी जवान।

वकील—कहो, सुबह आवे।

दोस्त—वाह-वाह, सुबह की एक ही कही। अजी बुलाओ भी। हमारे सिर की क़सम, बुलाओ। कहो, टोपी तुम्हारे कदमों पर रख दें।

अलारक्खी छड़ों को छम-छम करती, अजब मस्तानी चाल से इठलाती, बोटी बोटी फड़काती हुई आयी। जिसने देखा, फड़क गया। सब रँगीले, बिगड़े दिल, बेफ़िक्रे जमा थे। एक साहब नवाब थे, दूसरे साहब मुंशी। आपस में मजाक होने लगा—

नवाब—बंदगी अर्ज़ है! खुदा की कसम, आप एक ही न्यारिये हैं।

मुंशी—भई, सूरत से तो भलेमानस मालूम होते थे, लेकिन एक ही रसिया निकले।

वकील—भई, अब हम कुछ न कहेंगे। और कहें क्या, छा गयी। बी साहिबा, आप किसके पास आयी हैं? कहाँ से आना हुआ?

अलारक्खी—अब ऐसी अजीरन हो गयी।

वकील—नहीं-नहीं, वाह बैठो, इधर तख्त पर आओ।

अलारक्खी—हाँ, बनाइए, हम तो सीधे-सादे हैं साहब।

नवाब—आप भोली हैं, बजा है!

वकील—औरत हैं या परिस्तान की परी!

नवाब—रीझे-रीझे, लो बी, अब पौ-बारह हैं।

अलारक्खी—हुजूर, हम ये पौ-बारह और तीन काने तो जानते नहीं, हमारा मतलब निकल जाय, तो आप सब साहबों का मुँह मीठा कर देंगे।

दोस्त—आपकी बातें ही क्या कम मीठी हैं!

इतने में चंडूबाज़ भी आ पहुँचे।

चंडूबाज़—हुजूर तो इन्हें जानते न होंगे, ये अलारक्खी हैं। इनका नाम दूर-दूर तक रोशन है।

वकील—इनका क्या इनके सारे खानदान का नाम रोशन है।

चंडूबाज़—सराय में एक आज़ाद नामी जवान आ कर ठहरे हैं। वह इनके ऊपर जान देते हैं और यह उन पर मरती हैं। कई आदमियों के सामने वह कबूल चुके हैं कि इनके साथ निकाह करेंगे। मगर आदमी हैं रँगीले, ऐसा न हो कि इनकार कर जायँ। बस, इनकी यही अर्ज़ है कि हुजूर कोई ऐसी तदबीर बतायें कि वह निकल न सके।

अलारक्खी—मुझ ग़रीबनी से कोई छप्पन टके तो आपको मिलने नहीं हैं। रहा, इतना सवाब कीजिए, जिसमें यह शिकंजे में जकड़ जायँ।

मुंशी—अगर निकाह ही करने का शौक है तो हम क्या बुरे हैं?

वकील—एक तुम्हीं क्या, यहाँ सब झंडे-तले के शोहदे छटे हुए लुच्चे जमा हैं! जिसको यह पसंद करें, उसी के साथ निकाह हो जाय।

अलारक्खी—हुजूर लोग तो मुझसे दिल्लगी करते हैं।

वकील—अच्छा, कल आओ तो हम तुम्हें वह तरकीब बतायें कि तुम भी याद करो।

अलारक्खी—मगर बंदी ने कभी सरकार-दरबार की सूरत देखी नहीं। आप वकालत कीजिएगा?

मुंशी—हाँ जी हाँ, इसमें मिन्नत ही क्या है। मगर जानती हो, ये वकील तो रुपये के आशना हैं।

अलारक्खी—वाह, रुपया यहाँ अल्लाह का नाम है। हम हैं, चाहे बेच लो।

वकील—अच्छा, कल आओ, पहले देखो तो वह क्या कहते हैं।

अलारक्खी अब यहाँ से उठना चाहती थी, मगर उठे कैसे। कनखियों से चंडूबाज की तरफ देखा कि अब यहाँ से चलना चाहिए। वह भी उसका मतलब समझ गये, बोले—ऐ हुजूर, जरा घड़ी को तकलीफ दीजिएगा, देखिए तो, कै बजे हैं।

अलारक्खी—मैं अटकल से कहती हूँ, कोई बारह बजे होंगे।

चंडूबाज़—मैं भी कहूँ, यह जम्हाइयों पर जम्हाइयाँ क्यों आ रही हैं। नशे का वक़्त टल गया। हलवाइयों की दूकानें भी बंद गयी होंगी। मलाई से भी गये। हजूर, अब

तो रुखसत कीजिए। अब तो चंडू की लौ लगी है, आज सवेरे-सवेरे आज़ाद की मनहूस सूरत देखी थी, जभी यह हाल हुआ।

अलारक्खी—ले खबरदार, अब की कहा तो कहा, अब आज़ाद का नाम लिया, तो मुझसे बुरा कोई नहीं; ज़बान खींच लूँगी। नाहक किसी पर छुरा रखना अच्छा नहीं।

नवाब—अरे भई, कोई है, देखो, दूकानें बंद न गयी हों, तो इनको यहीं चंडू पिलवा दें। ज़रा दो घड़ी और भी अलारक्खी से सोहबत गरमावें।

खिदमतगार—जाने को कहिए मैं जाऊँ, मुल दुकानें कब की बंद गयी हैं; बाज़ार भर में सन्नाटा पड़ा है; चिड़ियाँ चुनगुन तक सो रहीं हैं; अब कोई दम में चक्कियाँ चलेंगी।

अलारक्खी—ऐं, क्या आधी रात ढल गयी? ले, अब तो बंदी रुखसत होती है।

मुंशी—वाह, इस अँधेरी रात में ठोकरें खाती कहाँ जाओगी!

अलारक्खी—नहीं हुजूर, अब आँखें बंद हुई जाती हैं। बस, अब रुखसत। हुजूर, भूलिएगा नहीं। इतनी देर मज़े से बातें की हैं। याद रखिएगा लौंडी को।

मुंशी—वह हँसते आये, यहाँ से हमें रुलाके चले;
न बैठे आप मगर दर्द-दिल उठा के चले।

वकील—दिखाके चाँद सा मुखड़ा छिपाया जुल्फों में;
दुरंगी हमको ज़माने की वह दिखाके चले।

नवाब—न था जो कूचे में अपना क़याम मद्दे-नज़र;
तो मेरे बाद मेरी खाक भी उड़ाके चले।

खुदा के लिए इतना तो इकरार करती जाओ कि कल ज़रूर मिलेंगे, हाथ पर हाथ मारो।

अलारक्खी—आप लोगों ने क्या जादू कर दिया; अब रुखसत कीजिए।

वकील—यह भी कोई हँसी है कि रुखसत का लेके नाम;
सौ बार बैठे-बैठे हमें तुम रुला चले।

नवाब—आँखों-आँखों में ले गये वह दिल;
कानों-कानों हमें खबर न हुई।

अलारक्खी यहाँ से चली, तो राह में डींग मारने लगी—क्यों, सब के सब हमारी छबि पर लोट गये न? यहाँ तो फ़क़ीर की दुआ है कि जिस महफ़िल में बैठ जाऊँ, वहीं कटाव होने लगे।

दोनों सराय में पहुँचे, तो देखा, आज़ाद जाग रहे हैं।

अलारक्खी—आज क्या है कि पलक तक न झपकी? यह किसकी याद में नींद उचाट है?

आज़ाद—हाँ, हाँ, जलाओ, दो-दो बजे तक हवा खाओ और हमसे आ कर बातें बनाओ।

अलारक्खी—ऐ वाह, यह शक, तब तो मीज़ान पट चुकी। अब इनके मारे कोई

भाई-बहन छोड़ दे। अब यह बताओ कि निकाह को कौन दिन ठीक करते हो? हम आज सबसे कह आये कि मियाँ आज़ाद के घर पड़ेंगे।

आजाद—क्या सचमुच तुम सबसे कह आयीं? कहीं ऐसा करना भी नहीं। मैं दिल्लगी करता था। खुदा की कसम फ़कत दिल्लगी ही थी। मैं परदेशी आदमी, शादी-ब्याह करता फिरूँगा, और भटियारी से? माना कि तुम हो परी, मगर फिर भटियारिन ही तो! चार दिन के लिए सराय में आ कर टिके, तो यहाँ से यह बला ले जायँ!

अलारक्खी—ऐ चोंच संभाल मरदुए! और सुनिएगा, हम बला हैं, जिस पर सारे शहर की निगाह पड़ती है? दूसरा कहता, तो खून-खराब कर डालती। मगर करूँ क्या, कौल हार चुकी हूँ। बिरादरी भर में कलंक का टीका लगेगा। बला की अच्छी कही; तुम्हारे मुँह से मेरी एड़ी गोरी है, चाहे मिला लो।

आजाद—तो बी साहबा, सुनिए, किसकी शादी और किसका ब्याह!

अलारक्खी—इन बातों से न निकलने पाइएगा। कल ही तो मै नालिश दागती हूँ। इकरार करके मुकर जाना क्या खाला जी का घर है? मियाँ, मैं तो अपनीवाली पर आयी, तो बड़ा घर ही दिखाऊँगी। किसी और भरोसे न भूलना। मुझसे बुरा कोई नहीं।

आजाद—खुदा की पनाह, मैं अब तक समझता था कि मैं ही बड़ा घाघ हूँ, मगर इस औरत ने मेरे भी कान काटे। भुला दी सारी चौकड़ी। खुदा तड़का जल्दी से हो, तो मैं दूसरी कोठरी लूँ।

अलारक्खी (नाक पर उँगली रख कर)—रो दे, रो दे! इससे छोकरी ही हुए होते, तो किसी भलेमानस का घर बसता। भला मजाल पड़ी है कि कोई भठियारी टिकाये?

आजाद—तो सारे शहर भर में आपका राज है कुछ?

अलारक्खी—हई है, हई है, क्या हँसी-ठट्ठा है? कल-परसों तक आटे-दाल का भाव मालूम हो जायगा?

आजाद—चलिए, आपकी बला से!

चंडूबाज—बला-बला के भरोसे न रहिएगा। दो-चार दिन तायेइया मचेगी।

आजाद—जरी आप चुपके बैठे रहिएगा। यह तो कामिनी हैं, लेकिन तुम्हारी मुफ़्त में शामत आ जायगी।

चंडूबाज—मेरे मुँह न लगिएगा, इतना कहे देता हूँ!

आजाद ने उठ कर दो-चार चाँटे जड़ दिये। अलारक्खी ने बीच-बचाव कर दिया। अल्लाह करे, हाथ टूटे, लेके ग़रीब को पीट डाला।

चंडूबाज—मेरी भी तो दो-एक पड़ गयी जी!

अलारक्खी—ऐ चुप भी रह, बोलने को मरता है।

इस तरह लड़-झगड़ कर तीनों सोये।

२०

दूसरे दिन सबेरे आजाद की आँख खुली, तो देखा, एक शाह जी उनके सिरहाने खड़े उनकी तरफ़ देख रहे हैं। शाह जी के साथ एक लड़का भी है, जो अलारक्खी को दुआएँ दे रहा है। आजाद ने समझा, कोई फ़क़ीर है, झट उठ कर उनको सलाम किया। फ़क़ीर ने मुसकिरा कर कहा—हुजूर, मेरा इनाम हुआ। सच कहिएगा, ऐसे बहुरुपिये कम देखे होंगे। आज़ाद ने देखा गच्चा खा गये, अब बिना इनाम दिये गला न छूटेगा। बस, अलारक्खी की भड़कीली दुलाई उठाकर दे.दी। बहुरुपिये ने दुलाई ली, झुक कर सलाम किया और लंबा हुआ। लौंडे ने देखा कि मैं ही रहा जाता हूँ। बढ़ कर आजाद का दामन पकड़ा। हुजूर, हमें कुछ भी नहीं? आज़ाद ने जेब से एक रुपया निकाल कर फेंक दिया। तब अलारक्खी चमक कर आगे बढ़ीं और बोलीं—हमें?

आजाद तुम्हारे लिए जान हाजिर है।

चंडूबाज़—यह सब ज़बानी दाखिल है। बीबी को यह खबर ही नहीं कि दुलाई इनाम में चली गयी। उलटे चली हैं माँगने। यह तो न हुआ कि चाँदी के छड़े बनवा देते, या किसी दिन हमी को दो-चार रुपये दे डालते। जाओ मियाँ, बस, तुमको भी देख लिया। गौं के यार हो, 'चमड़ी जाय दमड़ी न जाय।'

अलारक्खी—कहीं तेरे सिर गरमी तो नहीं चढ़ गयी। जरा चँदिया के पट्टे कतरवा डाल। यह चमड़ी और दमड़ी का कौन मौका था। यह बताइए, अब निकाह की कब तैयारियाँ हैं?

आजाद—अभी निकाह की उम्मेद आपको है? वल्लाह, कितनी भोली हो!

अलारक्खी—तो क्या आप निकल भी जायँगे? ऐ, मैं तो चढ़ूँगी अदालत! कह-कह कर मुकर जाना क्या हँसी-ठट्ठा है!

आज़ाद—तो क्या नालिश कीजिएगा?

अलारक्खी—क्यों, क्या कोई शक भी है! हम क्या किसी के दबैल हैं?

चंडूबाज—और गवाह को देख रखिए। दुलाई क्या झप से उठा दी। परायी दुलाई के आप कौन देनेवाले थे? अजी, मै तो चह-चह सवाल-जवाब करूँगा कि आपके होश उड़ जायँगे।

आजाद—अच्छी बात है, यह शौक से नालिश करें और आप गवाही दें। इन्हें तो क्या कहूँ, पर तुम्हें समझूँगा।

चंडूबाज—मुझसे ऐसी बातें न कीजिएगा, नहीं मैं फिर गुद्दा ही दूँगा।

अलारक्खी—चल, हट, बड़ा आया वहाँ से गुद्दा देनेवाला। अभी मैं चिमट जाऊँ, तो चीखने लगो, उस पर गुद्दा देंगे।

आज़ाद—तो फिर जाइए वकील के यहाँ, देर हो रही है।

अलारक्खी—तो क्या सचमुच तुम्हें इनकार है? मियाँ, आँखें खुल जायँगी। जब

सरकार का प्यादा आयेगा, तो भागने को जगह न मिलेगी।

चंडूबाज़—यह हैं शोहदे, यों नहीं मानने के। चलो चलें, दिन चढ़ता आता है। अभी कंघी-चोटी में तुम्हें घंटों लगेंगे और वह सरकारी-दरबारी आदमी ठहरे। मुवक्किल सुबह-शाम घेरे रहते हैं। जब देखो, बग्घियाँ, टमटम, फिटन, जोड़ी, गाड़ी, हाथी, घोड़े, पालकी, इक्के, ताँगे, याबू, फिनस, म्याने दरवाजे पर मौजूद।

आज़ाद—क्या और किसी सवारी का नाम याद नहीं था? आज सरूर खूब गठे हैं।

चंडूबाज़—अजी, यहाँ अलारक्खी की बदौलत रोज़ ही सरूर गठे रहते हैं।

अलारक्खी ने कोठरी में जा कर सिंगार किया और निखर कर चलीं, तो आज़ाद की निगाह पड़ ही गयी। चार आँखें हुईं, तो दोनों मुस्किरा दिये। चंडूबाज़ ने यह शेर पढ़ा— उनको देखो तो यह हँस देते हैं;
आँख छिपती ही नहीं यारी की।

अलारक्खी एक हरी-हरी छतरी लगाये छम-छम करती चली। बिगड़े-दिल आवाज़ें कसते थे, पर वह किसी तरफ़ आँख उठा कर न देखती थी। चंडूबाज 'हटो, बचो' करते चले जाते थे। ज़री हट जाना सामने से। एँ, क्या छकड़ा आता है, क्यों हट जायँ? अच्छाह, यह कहिए, आपकी सवारी आ रही है। लो साहब, हट गये। एक रसिया ने पीछा किया। ये लोग आगे-आगे चले जा रहे हैं और मियाँ रसिया पीछे-पीछे ग़ज़लें पढ़ते चले आ रहे हैं। चंडूबाज़ ने देखा कि यह अच्छे बिगड़े-दिल मिले। साथ जो हुआ, तो पीछा ही नहीं छोड़ते। आप हैं कौन? या आगे बढ़िए या पीछे चलिए। किसी भलेमानस को सताते क्यों हैं? इस पर अलारक्खी ने चडूबाज के कान में चुपके से कहा—यह भी तो शकल-सूरत से भलेमानस मालूम होते हैं। हमें इनसे कुछ कहना है।

चंडूबाज़—आप तो वकील के पास चलती थीं, कहाँ इस सिड़ी-सौदई से साँठ-गाँठ करने की सूझी? सच है, हसीनों के मिजाज का ठिकाना ही क्या। बोले—अजी साहब, ज़री इधर गली में आइयेगा, आपसे कुछ कहना है।

रसिया—वाह, 'नेकी और पूछ-पूछ!'

तीनों गली में गये, तो अलारक्खी ने कहा—कहीं तुम्हारे मकान भी है? यहाँ इस गलियारे में क्या कहूँ, कोई आवे, कोई जाय। खड़े-खड़े बातें हुआ करती हैं?

चंडूबाज ने सोचा कि दूसरा गुल खिला चाहता है। पूछा—मियाँ, तुम्हारा मकान यहाँ से कितनी दूर है। जो काले कोसों हो, तो मैं लपक कर बग्घी किराया कर लूँ। इनसे इतनी दूर न चला जायगा। इनको तो मारे नज़ाकत के छतरी ही का सँभालना भारी है।

रसिया—नहीं साहब, दूर नहीं है। बस, कोई दस कदम आइए। रसिया ने छतरी ले ली और खिदमतगार की तरह छतरी लगा कर साथ साथ चलने लगे। चंडूबाज़ ने देखा, अच्छा गावदी मिला। खुद भी छतरी के साये में रईस बने हुए चलने लगे। थोड़ी देर में रसिया के मकान पर आ पहुँचे।

रसिया—वह आये घर में हमारे, ख़ुदा की कुदरत है,
कभी हम उनको, कभी अपने घर को देखते हैं।

यहाँ तो सच्चे आशिक हैं। जिसको दिल दिया, उसको दिया। जान जाय; माल जाय; इज़्ज़त जाय; सब मंजूर है।

चंडूबाज़—अच्छा, अब इनका मतलब सुनिए। यह बेचारी अभी अठारह-उन्नीस बरस की होंगी। अभी कल तो पैदा हुई हैं। अब सुनिए कि इनके मियाँ इनसे लड़-झगड़ कर हैदराबाद भाग गये। वहाँ किसी को घर में डाल लिया। अब यह अकेली हैं, इनका जी घबराता है, इतने में एक शौकीन रईस सराय में उतरे, बड़े खूबसूरत कल्ले-छल्ले के जवान हैं।

अलारक्खी—मियाँ, आँखें तो ऐसी रसीली कि देखी न सुनीं।

चंडूबाज़—ऐ, तो मुझी को अब कहने दो। तुम तो बात काटे देती हो। हाँ, तो मैं कहता था कि इनकी-उनकी आँखें चार हुईं, तो इधर यह, उधर वह, दोनों घायल हो गये। पहले तो आँखों ही आँखों में बातें हुआ की। फिर खुल के साफ़ कह दिया कि हम तुमको ब्याहेंगे। फिर न जाने क्या समझ कर मुकर गये। अब इनका इरादा है कि उन पर नालिश ठोंक दें।

रसिया—अजी, उनको भाड़ में झोंको। जो ब्याह ही करना है, तो हमसे निकाह पढ़वाओ। उनको धता बताओ।

अलारक्खी—सच कहूँ, तुम मर्दों का हमें एतबार दमड़ी भर भी नहीं रहा। अब जी नहीं चाहता कि किसी से दिल मिलायें।

रसिया—तुमने अभी हमें पहिचाना ही नहीं। पाँचों उँगलियाँ बराबर नहीं होतीं। हम शरीफ़ज़ादे हैं।

अलारक्खी—लोग यही समझते हैं कि अलारक्खी बड़ी खुशनसीब है। मगर मियाँ, मैं किससे कहूँ, दिल का हाल कोई क्या जाने।

चंडूबाज़—यही देखिए, अर्जीदावा है

रसिया—अरे, यह किस पागल ने लिखा है जी? ऐसा भला कहीं हो सकता है कि सरकार आज़ाद से तुम्हारा निकाह करवा ही दे? हाँ, इतना हो सकता है कि हरजा दिलवा दे। पर उसका सबूत भी ज़रा मुश्किल है।

आलारक्खी—अजी, होगा भी, मसौदा फाड़ डालो। आजाद से अब मतलब ही क्या रहा?

रसिया—हम बतायें, नालिश तो दाग दो। हरजा मिला तो हर्ज ही क्या है। बाकी ब्याह किसी के अख्तियार में नहीं। उधर तुमने मुक़दमा जीता, इधर हम बरात ले कर आये।

अलारक्खी—तो चलो, तुम भी वकील के यहाँ तक चले चलो न।

रसिया—हाँ, हाँ, चलो।

तीनों आदमी वकील के यहाँ पहुँचे। लेकिन बड़ी देर तक बाहर ही टापा किये। यह

रईस आये, वह अमीर आये। कभी कोई महाजन आया। बड़ी देर के बाद इनकी तलबी हुई; मगर वकील साहब जो देखते हैं, तो अलारक्खी का मुँह उतरा हुआ है, न वह चमक-दमक है, न वह मुसकिराना और लजाना। पूछा—आखिर, माजरा क्या है? आज इतनी उदास क्यों हो? कहाँ वह छवि थी, कहाँ यह उदासी छायी हुई है? अलारक्खी ने इसका तो जवाब कुछ न दिया, फूट-फूट कर रोने लगी। आँसू का तार बंध गया। वकील सन्नाटे में। आज यह क्या माजरा है, इनकी आँखों में आँसू!

चंडूबाज—हुजूर, यह बड़ी पाकदामन हैं। जितनी ही चंचल हैं, उतनी ही समझदार। मेरा खुदा गवाह है, बुरी राह चलते आज तक नहीं देखा। इनकी पाकदामनी की कसम खानी-चाहिए। अब यह फ़रमाइए, मुकदमा कैसे दायर किया जाय।

रसिया—जी हाँ, कोई अच्छी तदबीर बताइए। जबरदस्ती शादी तो हो नहीं सकती। अगर कुछ हरजाना ही मिल जाय, तो क्या बुरा? भागते भूत की लँगोटी ही सही। कुछ तो ले ही मरेंगी।

चंडूबाज—मरें इनके दुश्मन, आप भी कितने फूहड़ हैं, वाह!

वकील—अच्छा, यह तो बताइए कि वह रईस कहाँ से आयेंगे, जो कहें कि हमसे और इनसे ब्याह की ठहरी थी?

रसिया—अब बता ही दूँ। बंदा ही कहेगा कि हमसे महीनों से बातचीत है, आजाद बीच में कूद पड़े। वल्लाह, वह-वह जवाब दूँ कि आप भी खुश हो जायँ।

वकील—वाह तो फिर क्या पूछना। हम आपको दो-एक चुटकिले बता देंगे, कि आप फर्राटे भरने लगिएगा। मगर दो-एक गवाह तो ठहरा लीजिए।

चंडूबाज—एक गवाह तो मैं ही बैठा हूँ, फर्राटेबाज।

खैर तीनों आदमी कचहरी पहुँचे। जिस पेड़ के नीचे जा कर बैठे, वहाँ मेला सा लग गया। कचहरी भर के आदमी टूटे पड़ते हैं। धक्कमधक्का हो रहा है। चंडूबाज वारिसअलीखाँ बने बैठे हुक्का गुड़गुड़ा रहे हैं। जाओ भई, अपना काम करो, आखिर यहाँ क्या मेला है, क्या भेड़िया-धसान है।

एक—आप लाये ही ऐसी हैं।

दूसरा—अच्छा, हम खड़े हैं, आपका कुछ इजारा है? वाह अच्छे आये।

तीसरा—भाई, जरी हँस-बोल लें, आखिर मरना तो है ही।

जब एक बजा, तो बी अलारक्खी इठलाती हुई सवाल देने चलीं। चंडूबाज एक हाथ में हुक्का लिये हैं, दूसरे में छतरी। खिदमतगार बने चले जाते हैं। लोग इधर-उधर झुंड के झुंड खड़े हैं; पर कोई बताता नहीं कि अर्जी कहाँ दी जाती है। एक कहता है, दाहने हाथ जाओ। दूसरा कहता है, नहीं-नहीं, बायें-बायें। बड़ी मुश्किल से इजलास तक पहुँचीं।

उधर आजाद पड़े-पड़े सोच रहे थे कि इस बेफिक्री का कहीं ठिकाना है? जो कहीं नवाब के आदमी छूटें तो चोर के चोर बनें और उल्लू के उल्लू बनाये जायँ। किसी को मुँह दिखाने लायक न रहें। आबरू पर पर पानी फिर गया। अभी देखिए, क्या क्या होता

है—कहाँ-कहाँ ठोकरें खाते हैं !

इतने में सराय में लेना-लेना का गुल मचा। यह भी भड़भड़ा कर कोठरी से बाहर निकले, तो देखते हैं कि साँड़नी ने रस्सी तोड़-ताड़ कर फेंक दी है और सराय भर में उचकती फिरती है। पहले एक मुसाफिर के टट्टू की तरफ़ झुकी और उसको मारे पुस्तों के बौखला दिया। मुसाफिर बेचारा एक लग्गा लिये खटाखट हाथ साफ कर रहा है। फिर जो वहाँ से उछली, तो दो-तीन बैलों का कचूमर ही निकाल डाला। गाड़ीवान हाँय-हाँय कर रहा है; लेकिन इस हाँय-हाँय से भला ऊँट समझा किये हैं। यहाँ से झपटी, तो तीन-चार इक्कों के अंजर-पंजर अलग कर दिये। आज़ाद तोबड़ा दिखा रहे हैं और आवाज़ें कर रहे हैं। लोग तालियाँ बजा देते हैं, तो वह और भी बौखला जाती है। बारे बड़ी मुश्किल से नकेल उनके हाथ में आयी। उसे बाँध कर कहीं जाने की तैयारी कर रहे थे कि अलारक्खी और चंडूबाज अदालत के एक मजकूरी के साथ आ पहुँचे। आजाद ने मुँह फेर लिया और मीठे सुरों में गाने लगे—

ठानी थी दिल में, अब न मिलेंगे किसी से हम;
पर क्या करें कि हो गये लाचार जी से हम।

मज़कूरी—हुजूर, सम्मन आया है।

आजाद—तुम मेरे पास होते हो गोया;
जब कोई दूसरा नहीं होता।

मजकूरी—सम्मन आया है, गाने को तो दिन भर पड़ा है, लीजिए, दस्तखत तो कर दीजिए!

आजाद—धो दिया अश्के-नदामत को गुनाहों ने मेरे;
तर हुआ दामन, तो बारे पाक-दामन हो गया।

मजकूरी—अजी साहब, मेरी भी सुनिएगा ?

आजाद—क्या हमसे कहते हो ?

मजकूरी—और नहीं तो किससे कहते हैं ?

आजाद—कैसा सम्मन, लाओ, जरा पढ़ें तो। लो, सचमुच ही नालिश जड़ दी।

मज़कूरी ने सम्मन पर दस्तख़त कराये और अलारक्खी को घेरा। आज तो हाथ गरमाओ, एक चेहराशाही लाओ। अलारक्खी ने कहा—ऐ, तो अभी सूत न कपास, इनाम-विनाम कैसा ? मुकदमा जीत जायँ, तो देते अच्छा लगे।

मजकूरी—तुम जीती दाख़िल हो बीबी। अच्छा, कल आऊँगा।

मियाँ आजाद के पेट में चूहे कूदने लगे कि यह तो बेढब हुई। मैंने जरा दिल-बहलाव के लिए दिल्लगी क्या कर दी कि यह मुसीबत गले आ पड़ी। अब तो खैरियत इसी में है कि यहाँ से मुँह छिपाकर भाग खड़े हों। बी अलारक्खी चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगीं—अब तो चाँदी है। जीते, तो घी के चिराग़ जलायेंगे। एक ने कहा—यह न कहा, मुँह मीठा करेंगे; गुलगुले खिलायेंगे। दूसरी ने कहा—न खिलायगी, तो निकाह के दिन

ढोलक कौन बजायेगा ? आजाद मौक़े की ताक में थे ही, अलारक्खी की आँख चूकते ही झट से काठी कसी और भागे। नाके तक तो उनको किसी ने न टोका, मगर जब नाके से कोई गोली भर के टप्पे पर बाहर निकल गये तो मियाँ चंडूबाज़ से चार आँखें हुईं। अरे! ग़ज़ब हो गया, अब धर लिये गये।

चंडूबाज़—ऐ, बड़े भाई, किधर की तैयारियाँ हैं ? यह भाग जाना हँसी-ठट्ठा नहीं है कि काठी कसी और चल खड़े हुए। आँखों में खाक झोंक कर चले आये होंगे। ले बस, उतर पड़ो, आओ, ज़री हुक्का तो पी लो।

आज़ाद—इस दम में हम न आयेंगे। ये फ़िक़रे किसी गँवार को दीजिए। आप अपना हुक्का रहने दें। बस, अब हम खूब पी चुके। नाकों दम कर दिया बदमाशों ने! चले थे मुकदमा दायर करने! किस मजे से कहते हैं कि हुक्का पिये जाओ। ऐसे ही तो आप बड़े दोस्त हैं!

चंडूबाज़—नेकी का ज़माना ही नहीं। हमने तो कहा, इतने दिन मुलाकात रही है, आओ भाई, कुछ खातिर कर दें, अब खुदा जाने, कब मिलना हो।

आज़ाद—खुदा न करे, तुम जैसे मनहूसों की सूरत ख्वाब में भी नज़र आये।

चंडूबाज़ ने गुल मचाना शुरू किया—दौड़ो, चोर है, लेना, चोर, चोर! मियाँ आज़ाद ने चंडूबाज़ पर सड़ाक से कोड़ा फटकारा और साँड़नी को एक एड़ लगायी। वह हवा हो गयी। शहर से बाहर हुए, तो राह में दो मुसाफ़िरों को यों बातें करते सुना—

पहला—अरे मियाँ, आजकल लखनऊ में एक नया गुल खिला है! किसी न्यारिये ने करोड़ों रुपये के जाली स्टाम्प बनाये और लंदन तक में जा कर कूड़े किये। सुना, काबुल में दो जालिये पकड़े गये, मुश्कें कस ली गयीं और रेल में बंद करके यहाँ भेज दिये गये। अल्लाह जानता है, ऐसा जाल किया कि जौ भर भी फ़र्क मालूम हो, तो मूँछें मुड़वा लो! सुना है, कोई, डेढ़ सौ दो सौ बरस से बेचते थे और कुछ चोरी-छिपे नहीं, खुल्लमखुल्ला।

दूसरा—वाह, दुनिया में भी कैसे-कैसे काइयाँ पड़े हैं। ऐसों के तो हाथ कटवा डाले।

पहला—वाह, वाह, क्या कदरदानी की है! उन्होंने ने तो वह काम किया कि हाथ चूम लें, जागीरें दें।

आज़ाद को पहले मुसाफ़िर की गपोड़ेबाजी पर हँसी आ गयी। क्या झप से जालियों को काबुल तक पहुँचा दिया और हिंदुस्तान के स्टाम्प लंदन में बिकवाये। पूछा—क्यों साहब, कितने जाली स्टाम्प बेचे ?

मुसाफ़िरों ने समझा, यह कोई पुलिस अफ़सर है, टोह लेने चले हैं, ऐसा न हो कि हमको भी गिरफ़्तार कर लें। बगलें झाँकने लगे।

आज़ाद—आप अभी कहते न थे कि जालिये गिरफ़्तार किये गये हैं ?

मुसाफ़िर—कौन ? हम ? नहीं तो!

आज़ाद—जी, आप बातें नहीं कर रहे थे कि स्टाम्प किसी ने बनाये और डेढ़ दो सौ बरस से बेचते चले आये ?

मुसाफ़िर—हुज़ूर, हमको तो कुछ मालूम नहीं।

आज़ाद—अभी बताओ सुअर, नहीं हम तुमको बड़ा घर दिखायेगा और बेड़ी पहनायेगा।

मियाँ आज़ाद तो उनकी चितवनों से ताड़ गये थे कि दोनों के दोनों चोंगा हैं, मारे डर के स्टाम्प का लफ़्ज़ ज़बान पर नहीं लाते। जैसे ही उन्होंने डाँट बतायी, एक तो बगटुट पच्छिम की तरफ़ भागा और दूसरा खड़भड़ करता हुआ पूरब की तरफ़। मियाँ आज़ाद आगे बढ़े। राह में देखा, कई मुसाफ़िर एक पेड़ के साये में बैठे बातें कर रहे हैं—

एक—कोई ऐसी तदबीर बताइए कि लू न लगे। आजकल के दिन बड़े बुरे हैं।

दूसरा—इसकी तरकीब यह है कि प्याज़ की गड्डी पास रखे। या दो-चार कच्चे आम तोड़ लो, आमों को पहले भून लो, जब पिलपिले हों, तो गूदा निकाल कर छिलका फेंक दो और ज़रा सी शकर, पानी में घोल कर पी जाओ।

पहला—कहीं ऐसा ग़ज़ब भी न करना! पानी में तो बरफ़ डालनी ही न चाहिए। पानी का गिलास बरफ़ में रख दो, जब खूब ठंडा हो जाय, तब पियो। बरफ़ का पानी नुकसान करता है।

दूसरा—वाह, लाखों आदमी पीते हैं।

पहला—अजी, लाखों आदमी झख मारते हैं। लाखों चोरियाँ भी तो करते हैं, फिर इससे मतलब? हमने लाखों आदमियों को देखा है कि गढ़ों और तालाबों का पानी सफ़र में पीते हैं। आप पीजिएगा? हज़ारों आदमी धूप में चल कर खड़े-खड़े तीन-चार लोटे पानी पी जाते हैं। मगर यह कोई अच्छी बात थोड़े ही है।

और आगे बढ़े, तो एक मझुरी आ निकला। वह आज़ाद को पहचानता था। देखते ही बोला—तुम्हारी नवाब सहब के यहाँ बड़ी तलाश है जी। तुम ग़ायब कहाँ हो गये थे ऊँट ले कर? अब मैं जा कर कहूँगा कि मैंने प्रश्न देखा, तो निकला, आज़ाद पाँच कोस के अंदर ही अंदर हैं। जब तुम छुपदेनी पहुँच जाओगे, तो फिर हमारी चढ़ती कला होगी। तुमको भी आधोआध बाँट देंगे। मगर भंडा न फोड़ना। चढ़ बाजी है।

आज़ाद—वल्लाह, क्या सूझी है। मंजूर है।

मझुरी ने पोथी सँभाल अपनी राह ली और नवाब के यहाँ धर धमके।

खोजी—अजी, जाओ भी, तुम्हारी एक बात भी ठीक न निकली।

नवाब—बरसों हमारा नमक तुमने खाया है, बरसों। एक-दो दिन नहीं बरसों। अब इस वक्त कुछ परख़न-वरख़न भी देखोगे, या बातें ही बनाओगे? हमको तो मुसल्मान भाई तुम्हारी वजह से काफ़िर कहने लगे और तुम कोई अच्छा सा हुक्म नहीं लगाते।

मझुरी—वह हुक्म लगाऊँ कि पट ही न पड़े।

खोजी—अजी, डींगिये हो खासे। कहीं किसी रोज़ मैं करौली न भोंक दूँ। सिवा बे-पर की उड़ाने के, बात सीखी ही नहीं। भले आदमी, साल भर में एक दफ़े तो सच बोला करो।

शम्मन—वाह, सच बोलते, तो कसाई के कुत्ते की तरह फूल न जाते।

नवाब—यह क्या वाहियात बात?

मझुरी—हुजूर, हमसे-इनसे हँसी होती है। यह हमें कहते हैं, हम इन्हें। अब आप कोई फूल मन में लें।

नवाब—ये ढकोसले हमको अच्छे नहीं मालूम होते। हमें साफ-साफ़ बता दो कि मियाँ आजाद कब तक आयेंगे?

मझुरी ने उँगलियों पर कुछ गिन-गिना कर कहा—पानी के पास हैं।

झम्मन—वाह उस्ताद! पानी के पास एक ही कही। लड़की न लड़का, दोनों तरह अपनी ही जीत।

मझुरी—यहाँ से कोई तीन कोस के अंदर हैं।

दुन्नी—हजूर, यह बड़ा फ़ैलिया है। आप पूछते हैं; आजाद कब आयेंगे। यह कहता है, तीन कोस के अंदर ही अंदर हैं। सिवा झूठ, सिवा झूठ।

मझुरी—अच्छा, जा कर देख लो। जो नाके के पास आज़ाद आते न मिलें, तो नाक कटा डालूँ, पोथी जला दूँ। कोई दिल्लगी है?

नवाब—चाबुक-सवार को बुला कर हुक्म दो कि अभी सरपट जाय और देखे, मियाँ अजाद आते हैं या नहीं। आते हों, तो इस मझुरी का आज घर भर दूँ। बस, आज से इसका कलमा पढ़ने लगूँ।

चाबुक-सवार ने बाँका मुड़ासा बाँधा और सुरंग घोड़ी पर चढ चला। मगर पचास ही क़दम गया होगा कि घोड़ी भड़की और तेज़ी में दूसरे नाके की राह ली। चाबुक सवार बहुत अकड़े बैठे हुए थे; मगर रोक न सके, धम से मुँह के बल नीचे आ रहे। खोजी ने नवाब साहब से कहा—हुजूर, घोड़ी ने नाज़िरअली को दे पटका, और क्या जाने किस तरफ़ निकल गयी।

नवाब—चलो, खैर समझा जायगा। तुम टाँघन कसवाओ और दौड़ जाओ।

खोजी—हुजूर, मैं तो बूढ़ा हो गया और रही-सही सकत अफ़ीम ने ले ली। टाँघन है बला का शरीर। कहीं फेंक-फाँक दे, हाथ-पाँव टूटें, तो दीन-दुनिया, दोनों से जाऊँ। आजाद खुद भी गये और हम सबको भी बला में डाल गये।

इधर चाबुक-सवार ने पटकनी खायी उधर लौंडों ने तालियाँ बजायीं। मगर शह-सवार ने गर्द झाड़ी, एक दूसरा कुम्मैत घोड़ा कसा और कड़कड़ा दिया। हवा से बातें करते जा रहे हैं। बगिया में पहुँचे, तो देखा, साँड़िनी की काकरेजी झूल झलक रही है और ऊँटनी गरदन झुकाये चौतरफा मटक रही है। जा कर आजाद के गले से लिपट गये।

आजाद—कहिए, नवाब के यहाँ तो खैरियत है?

सवार—जी हाँ, खैर-सल्लाह के ढेर हैं। मगर आपकी राह देखते-देखते आँखें पथरा गयीं। ओ मियाँ, कुछ और भी सुना? उस बटेर की क़ब्र बनायी गयी है। सामने जो बेल-बूटों से सजा हुआ मकबरा दिखायी देता है, वह उसी का है।

आजाद—यह कहिए, यार लोगों ने क़ब्र भी बनवा दी। वल्लाह, क्या-क्या फ़िक़रेबाज हैं।

सवार—बस, तुम्हारी ही कसर थी। कहो, हमने सुना, खूब गुलछर्रे उड़ाये। चलो, पर अब नवाब ने याद किया है।

आज़ाद—ऐं, उन्हें हमारे आने की कहाँ से खबर हो गयी ?

सवार—अजी, अब यह सारी दास्तान राह में सुना देंगे।

आज़ाद—अच्छा, तो पहले आप हमारा खत नवाब के पास ले जायें। फिर हम शान के साथ चलेंगे।

यह कह कर आजाद ने खत लिखा—

'आज क़लम की बाँछे खिली जाती हैं; क्योंकि मियाँ सफ़शिकन की सवारी आती है। हुजूर के नाम की कसम, इधर पाताल तक और उधर सातवें आसमान तक हो आया, तब जाके खोज पाया। शाह जी साहब रोज ढाढ़ें मार-मार कर रोते हैं। कल मैंने बड़ी ख़ुशामद की और आपकी याद दिलायी, तो ठंडी आह खींच कर रह गये। बड़ी-बड़ी दलीलें छाँटते थे। पहले फ़रमाया—दरों बज्म रह नेस्त बेगाना रा, मैंने छूटते ही जवाब दिया—कि परवानगी दाद परवाना रा।

'खिल-खिला कर हँस पड़े, पीठ ठोंकी और फ़रमाया—शाबाश बेटे, नवाब साहब की सोहबत में तुम बहुत बर्क़ हो गये। पूरे दो हफ़्ते तक मुझसे रोज़ बहस रही। आखिर मैंने कहा—आप चलिए, नहीं मैं ज़हर खा कर मर जाऊँगा। मुझे समझाया कि ज़िंदगी बड़ी न्यामत है। खैर, तुम्हारी खातिर से चलता हूँ। लेकिन एक शर्त यह है कि जब मैं वहाँ पहुँचूँ, तो नवाब के सामने खोजी पर बीस जूते पड़ें। मैंने क़ौल दिया, तब कहीं आये।'

सवार यह खत ले कर हवा की तरह उड़ता हुआ नवाब साहब के यहाँ पहुँचा।

नवाब—कहो, बेटा कि बेटी ? जल्दी बोलो। यहाँ पेट में चूहे कूद रहे हैं।

सावार—हुजूर, गुलाम ने राह में दम लिया हो, तो जरवाना दूँ।

खोजी – कितने बेतुके हो मियाँ! 'कहें खेत की, सुन खलिहान की।' भला अपनी कारगुजारी जताने का यह कौन मौका है ? मारे मशीखत के दुबले हुए जाते हैं!

सवार ने आज़ाद का खत दिया। मुंशी जी पढ़ने के लिए बुलाये गये। खोजी घबराये कि आज़ाद ने यह कब की कसर ली। बोले—हुजूर, यह मियाँ आजाद की शरारत है। शाह साहब ने यह शर्त कभी न की होगी। बंदे से तो कभी गुस्ताखी नहीं हुई।

नवाब—खैर, आने तो दो। क्यों भाई मीर साहब, रम्माल ने तो बयान किया था कि सफशिकन के दुश्मन जन्नत में दाखिल हुए। यह मियाँ आजाद को कहाँ से मिल गये ?

मीर साहब—हुजूर, खुदा का भेद कौन जान सकता है ?

भड्डरी—मेरा प्रश्न कैसा ठीक निकला जो है सो, मानों निशाने पर तीर खट से बैठ गया।

इतने में अंदर छोटी बेगम को खबर हुई। बोलीं—इनका जैसा पोंगा आदमी खुदाई भर मे न होगा। जरी-सा तो वटेर और पाजियों ने उसका मकबरा बनवा दिया। रोज कहाँ तक बकूँ।

लौंडी—बीवी, बुरा मानो या भला, तुम्हें वे राहें ही नहीं मालूम कि मियाँ काबू मे आ जायँ।

बेगम—मेरी जूती की नोक को क्या ग़रज़ पड़ी है कि उनके बीच में बोले। मैं तो आप ही डरा करती हूँ कि कोई मुझी पर तूफ़ान न बाँध दे।

उधर नवाब ने हुक्म दिया कि सफ़शिकन की सवारी धूम से निकले। इतना इशारा पाना था कि खोजी और मीरसाहब लगे जुलूस का इन्तज़ाम करने। छोटी बेगम कोठे पर खड़ी-खड़ी ये तैयारियाँ देख रही थीं और दिल में हँस रही थीं। उस वक़्त कोई खोजी को देखता, दिमाग़ नहीं मिलते थे। इसको डाँट, उसको डपट, किसी पर धौल जमायी, किसी के चाँटा लगाया; इसको पकड़ लाओ, उसको मारो। कभी मसालची को गालियाँ दीं, कभी पंशाखेवाले पर बिगड़ पड़े। आगे-आगे निशान का हाथी था। हरी-हरी झूल पड़ी हुई। मस्तक पर सेंदुर से गुल-बूटे बने हुए। इसके बाद हिंदोस्तानी बाजा कक्कड़-झय्यम। इसके पीछे फूलों के तख्त—चमेली खिला ही चाहती है, कलियाँ चिटकने ही को हैं। चंडूबाज़ों के तख्त ने तो कमाल कर दिया। दो-चार पीनक में हैं, दस-पाँच ऊँघे पड़े हुए। कोई चंडूखाना ठाट से पौंड़ा छील रहा है। एक गँडेरी चूस रहा है। शिकार का वह समा बाँधा कि वाह जी वाह! एक शिकारी बंदूक छतियाये, घुटना टेके, आँख दबाये निशाना लगा रहा है। बस, दाँय की आवाज़ आया ही चाहती है। हिरन चौकड़ियाँ भरते जाते हैं। इसके बाद अँगरेजी बाजा। इसके बाद घोड़ों की कतार—कुम्मैत, कुछ सुरंग, नुकरा, सब्ज़ा, अरबी, तुर्की, वैलर छम-छम करते जा रहे हैं। घोड़े दुलहिन बने हुए थे। इसके बाद फिर अरग़न बाजा; फिर तामदान, पालकी, नालकी, सुखपाल। इसके बाद परियों के तख्त एक से एक बढ़ कर। सब के पीछे रोशनचौकी वाले थे। रोशनी का इंतज़ाम भी चौकस था। पंशाखे और लालटेनें झक-झक कर रही थीं। इस ठाट से जुलूस निकला। सारा शहर यह बरात देखने को फटा पड़ता था। लोग चक्कर में थे कि अच्छी बरात है, दूल्हे का पता ही नहीं। बरात क्या, गोरख-धंधा है।

जब जुलूस बग़िया में पहुँचा, तो आजाद हाथी पर सवार होकर सफ़शिकन को काबुक में बिठाये हुए चले।

खोजी—मसल मशहूर है—'सौ बरस के बाद घूरे के भी दिन बहुरते हैं।' हमारे दिन आज बहुरे कि आप आये और शाह जी को लाये। नवाब के यहाँ सन्नाटा पड़ा हुआ था। सफ़शिकन के ग़म में सब पर मुर्दनी छायी हुई थी। बस, लोग यही कहते थे कि आज़ाद चाँदनी ले कर लंबे हुए। एक मैं ही तुम्हारी हिमायत किया करता था।

मीर साहब—जी हाँ, हम भी आप ही की तरफ़ से लड़ते थे, हम और यह, दोनों।

आज़ाद—भई, कुछ न पूछो। खुदा जाने, किन-किन जंगलों की ख़ाक छानी, तब कहीं यह मिले।

खोजी—यहाँ लोग गप उड़ा रहे थे। किसी ने कहा—भाँड़ों के यहाँ नौकरी कर ली। कोई तूफ़ान बाँधता था कि किसी भठियारी के घर पड़ गये। मगर मैं यही कहे जाता था कि वह शरीफ़ आदमी हैं। इतनी बेहयाई कभी न करेंगे।

खोजी और मीर साहब, दोनों आज़ाद को मिलाना चाहते थे, मगर वह एक ही

उस्ताद। समझ गये कि अब नवाब के यहाँ हमारी भी तूती बोलेगी, तभी ये सब हमारी खुशामद कर रहे हैं। बोले—अजी, रात जाती है या आती है? अब देर क्यों कर रहे हो? पंशाखे चढ़ाओ। घोड़े चलाओ। जब जुलूस तैयार हुआ, तो आजाद एक हाथी पर जा डटे। बटेर की काबुक को आगे रख लिया। खोजी और मीर साहब को पीछे बिठाया और जुलूस चला। चौक में तो पहले ही से हुल्लड़ था कि नवाबवाला बटेर बड़ी शान से आ रहा है। लाखों आदमी चौक में तमाशा देखने को डटे हुए थे, छतें फटी पड़ती थीं। बाजे की आवाज जो कानों में पड़ी, तो तमाशाई लोग उमड़ पड़े। निशान का हाथी झंडे का फुरेरा उड़ाता सामने आया। लेकिन ज्यों ही चौक में पहुँचा, वैसे ही दीवानी के दो मजकूरियों ने डाँट कर कहा—हाथी रोक ले। आजाद के नाम वारंट आया है।

लोगों के होश उड़ गये। फ़ीलबान ने जो देखा कि सरकारी आदमी लाल-लाल पगिया बाँधे, काली-काली वरदी डाटे, खाकी पतलून पहने, चपरास लटकाये हाथी रोके खड़े हैं, तो सिटपिटा गया और हाथी को जिधर उन्होंने कहा उधर ही फेर दिया। जुलूस में हुल्लड़ मच गया। कोई तख्त लिये भागा जाता है, कोई झंडे लिये दबका फिरता है। घोड़े थान पर पहुँचे। तामझान और पालकियों को छोड़ कर कहार अड्डे पर हो रहे। बाजे-वाले गलियों में घुस गये।

आज़ाद और खोजी मजकूरियों के साथ चले, तो शहर के बाहर जा पहुँचे। एकाएक हाथी जो गरजा, तो खोजी और मीर साहब पीनक से चौंक पड़े।

खोजी—ऐ, पंशाखे चढ़ाओ, पंशाखे! अबे, यह क्या अंधेर मचा रखा है! जरी यों ही आँख झपक गयी, तो सारी की-कराई मिहनत खाक में मिला दी। अब मैं उतर कर कोड़े फटकारूँगा, तब मानेंगे। लातों के आदमी कहीं बातों से मानते हैं!

मीर साहब—हैं, हैं! ओ फ़ीलबान! यह हाथी क्या आतशबाजी से भड़कता है? बढ़ा ले चलो। मील-मील, धत-धत। अरे भई खोजी, यह किस मैदान में आ निकले? आखिर यह माजरा क्या है भाई?

खोजी—पंशाखे चढ़ाओ, पंशाखे। और इन बाजेवालों को क्या साँप सूँघ गया है? जरा जोर-ज़ोर छेड़े जाओ। अब तो बिहाग का वक्त है, बिहाग का।

मीर साहब—अजी, आँखें तो खोलिए, रोशनी का चिराग गुल हो गया। मुसीबत में आ फँसे। आप वही बेवक्त की शहनाई बजा रहे हैं। इस जंगल में आपको बिहाग की धुन समायी है।

खोजी—पंशाखे चढाओ, पंशाखे। नहीं, मै कच्चा पैसा तो दूँगा नहीं। झप से चढ़ाना तो पंशाखे। शाबाश है बेटा!

मीर साहब तो जले-भुने बैठे ही थे; खोजी ने जब कई बार पंशाखों की रट लगायी तो वह झल्ला उठे। खोजी को हाथी पर से नीचे ढकेल ही तो दिया। अरा-रा-रा धम। कौन गिरा? जरी टोह तो लेना, कौन गिरा?

आजाद—तुम गिरे, तुम। आप ही तो लुढ़के हैं, टोह क्या लें?

खोजी—अरे, मैं! यह तो कहिए, हड्डी-पसली बच गयी? यारो, जरी देखना तो, हमारा सिर बचा था नहीं?

मजकूरी—बचा है, बचा। नाहीं फूट। पहिरि लिहिन सुथना, और चले फारसी छाँटे। ई बोझ उठाव।

खोजी—हौंय-हौंय, कोई मजदूरा समझा है! शरीफ़ और पाजी को नहीं पहचानता? ले, अब उतारता है बोझ, या नाले में फेक दूँ? ओ गीदी! लाना तो मेरी क़रौली। क्या मैं गधा हूँ?

मीर साहब—गधे नहीं, तो और हो कौन?

मजकूरी—तैं को हँस रे! अरे तैं को हस? उतर हाथी पर से। उतरत है कि हम आवन फिर, तैं अस न मनि है।

मीर साहब—कहता किससे है? कुछ बेधा तो नहीं है? कुछ नाबिर हैं, हम, लो आये।

मजकूरी—अच्छा, तो यह बोझ उठा। थरिया-लोटिया रख मूड़े पर और अगुवा।

मीर साहब ने नीचे उतर कर देखा, तो सरकारी प्यादा वरदी डाटे खड़ा है। लगे थर-थर काँपने। चुपके से बोझ उठाया और मचल-मचल कर चलने लगे। दोनों मज़-कूरी हाथी पर जा बैठे। खोजी और मीर साहब, दोनों लदे-फँदे गिरते-पड़ते जाने लगे।

खोजी—वाह री किस्मत। क्यों जी मीर साहब, हम तो खुदा की याद में थे, तुमको क्या हुआ था?

मीर साहब—जहाँ आप थे, वहीं मैं भी था। यह सारी शरारत आज़ाद की है।

आजाद—जरी चोंच सम्हाले हुए, नहीं मैं उतरता हूँ।

चलते-चलत तड़का हो गया। खोजी बोले—लो भाई, हमारा तो भोर ही हो गया। अब जो बोझ उठा कर ले चले, उसकी सत्तर पुश्त पर लानत। यह कह कर बोझ फेंक दिया। जब जरा दिन चढ़ा, तो गोमती के किनारे पहुँचे। एक मज़कूरी ने कहा—ओ फ़ीलवान, हाथी रोक दे, नहाय लेई।

फ़ीलवान—अरे, तो नहा लेना, कैसे गवँरदल हो?

आज़ाद—कहो खोजी, नहाओगे?

खोजी—यों ही न गला घोंट डालो!

नदी के पार पहुँचे, तो चंडूबाज़ की सूरत नज़र पड़ी।

चंडूबाज—बड़े भाई, सलाम। कहो, खैर सल्लाह? आँखें तुमको ढूँढ़ती थीं, देखने को तरस गये। अब कहो, क्या इरादे हैं? अलारक्खी ने यह खत दिया है, पढ़कर चुपके से जवाब लिख दो।

आजाद ने खत खोला और पढ़ा—

'क्यों जी, इसी मुँह से कहते थे कि तुमसे ब्याह करूँगा? तुम तो चकमा देकर सिधारे और यहाँ दिल कराहा करता है। नहा धोकर कुरानशरीफ पर हाथ धरो कि ब्याह का वादा नहीं किया था? क्यों नाहक इंसाफ़ का गला कुंद छुरी से रेतते हो? इस खत का जवाब लिखना, नहीं मैं अपनी जान दे दूँगी।'

आज़ाद ने जवाब लिखा—

'सुनो बीबी, हम कोई उठाईगीरे नहीं हैं। हम ठहरे शरीफ़, तुम हो भठियारी। भला, फिर हमसे क्योंकर बने। अब उस खयाल को दिल से निकाल दो। तुम्हारे कारन मजकूरियों की कैद में हूँ। तुम्हें मुँह न लगाता, तो इतना जलील क्यों होता?'

चंडूबाज़ तो खत ले कर रवाना हुए, उधर का क़िस्सा सुनिए। नवाब झूम-झूम कर बग़ीचे में टहल रहे थे, आँखें फाड़-फाड़ कर देखते थे कि जुलूस अब आया, और अब आया। एकाएक चोबदार ने आ कर कहा—खुदावंद, लुट गये! लुट गये! वह देखो साहब तुम्हारे, लुट गये।

नवाब—अरे कुछ मुँह से कहेगा भी, क्या ग़ज़ब हो गया?

चोबदार—खुदावंद, बरात को उठाईगीरों ने लूट लिया!

नवाब—बरात? बरात किसकी? कहीं शाह जी की सवारी से तो मतलब नहीं है? उफ्, हाथों के तोते उड़ गये।

चोबदार—वह देखो साहब तुम्हारे, बारात चली आ रही थी। तमाशाई इतने जमा थे कि छतें फटी पड़ती थीं। देखो साहब तुम्हारे, जैसे बादशाह की सवारी हो। मुदा जैसे ही चौक में पहुँचे कि देखो साहब तुम्हारे, दो चपरासियों ने हाथी को फेर दिया। बस साहब तुम्हारे, सारी बरात तितर-बितर हो गयी। कहाँ तो बाजे बज रहे थे, कहाँ साहब तुम्हारे, सन्नाटा छा गया।

नवाब—भला शाह जी कहाँ है?

चोबदार—हुजूर, शाह जी को लिये फिरते हैं। यहाँ देखो साहब तुम्हारे—

नवाब—कोई है, इधर आना, इसके कल्ले पर खड़े हो, जितनी बार इसके मुँह से 'वह देखो साहब तुम्हारे' निकले, उतने जूते इस पर पड़ें। गधा एक बात कहता है, तो तीन सौ साठ दफ़े 'ओ देखो साहब तुम्हारे।'

चाबुक-सवार—हुजूर, इस वक़्त ग़ुस्से का मौका नहीं, कोई ऐसी फ़िक्र कीजिए कि शाह जी तो छूट आयें।

नवाब—ऐं, क्या वह भी गिरफ़्तार हो गये?

सवार—जी, आजाद, खोजी, हाथी, सब के सब पकड़ लिये गये?

नवाब—तो यह कहिए, बेड़े का बेड़ा गया है। हमे यह क्या मालूम था भला, नहीं तो एक गारद साथ कर देते। आखिर, कुछ मालूम भी हुआ कि यह धर-पकड़ कैसी थी? सच तो यों है कि इस वक्त मेरे हाथ-पाँव फूल गये। रुपये हमसे लो, और दौड़-धूप तुम लोग करो।

मुसाहबों की बन आयी। अब क्या पूछना है! आपस में हँड़िया पकने लगी। वल्लाह, ऐसा मौका फिर तो हाथ आयेगा नहीं। जो कुछ लेना हो, ले लो, और उम्र भर चैन करो। इस वक्त यह बौखलाया हुआ है। जो कुछ कहोगे, बेधड़क दे निकलेगा। लेकिन, एक काम करो, दस-पाँच आदमी मिल जुल कर बातें बनाओ। एक आदमी के किये कुछ न होगा। कहीं भड़क गया, तो ग़ज़ब ही हो जायगा। खुदा करे रोज इसी

तरह वारंट जारी रहे। मगर इतना याद रखिएगा कि कहीं अंदर खबर हुई, तो बेगम साहब छछूँदर की तरह नाचेंगी। फिर करते-धरते कुछ न बन पड़ेगा।

मुबारकक़दम दरवाजे के पास खड़ी सब सुन रही थी। लपक कर गयी और छोटी बेगम को बुला लायी। जरी जल्दी-जल्दी कदम उठाइए, ये सब जाने क्या वाही-तबाही बक रहे हैं। मुँह झुलस दे पकड़ के। बेगम साहबा दबे पाँव गयीं, तो सुन कर मारे गुस्से के लाल हो गयीं और नवाब को अंदर बुलाया।

मुबारकक़दम—ये हुजूर के मुसाहब, अल्लाह जनता है, एक ही अड़ीमार हैं, जिनके काटे का मंतर ही नहीं। जो है, वह झूठों का सरदार। मगर हुजूर उनको क्या जाने क्या समझते हैं। पछुआ हवा चलती, तो ठंडा पानी पीते, अब दिन भर शोरे का झला पानी मिलता है पीने को, और खुदा ने न्यामत खाने को दी। फिर उन्हें दूर की न सूझे, तो किसे सूझे।

बेगम—ऐसे ही झूठे खुशामदियों ने तो लखनऊ का सत्यानाश कर दिया।

नवाब—यह आज क्या है, क्या?

बेगम—है क्या? तुम्हारे मुसाहब मुँह पर तो तुम्हारी झूठी तारीफें करते हैं और पीठ पीछे तुम्हें गालियाँ सुनाते हैं। इन सबको दुत्कार क्यों नहीं देते?

इधर तो ये बातें हो रही थीं, उधर मजकूरियों ने आजाद को एक बाग में उतारा।

खोजी—मियाँ फ़ीलवान, जरी जीना लगा देना।

फ़ीलवान—अब आपके लिए जीना बनवाऊँ, ऐसे तो खूबसूरत भी नहीं हैं आप?

मीर साहब—जीना क्या ढूँढ़ते हो, हाथी पर से कूदना कौन सी बड़ी बात है।

यह कह कर मीर साहब बहुत ही अकड़ कर दुम की तरफ़ से कूदे, तो सिर नीचे और पाँव ऊपर। रोक रोक, हत् तेरे फ़ीलवान की। सच है, गाड़ीवान, शुतुरबान, कोचवान जितने वान हैं, सब शरीर। लाख बचे, मगर औंधे हो गये। हमारा कल्ला ही जानता है। खट से बोला। वह तो कहिए, मैं ही ऐसा बेहया हूँ कि बातें करता हूँ, दूसरा तो पानी न माँगता।

खोजी खिलखिला कर हँस पड़े। अब कहिए, हमने जो जीना माँगा, तो हमें बनाने लगे।

मीर साहब—मियाँ, उतरते हो कि दूँ धक्का।

खोजी बेचारे जान पर खेल कर जैसे ही उतरने को थे कि हाथी उठ खड़ा हुआ। या अली, या अली, बचाइयो, खुदा, मैं बड़ा गुनहगार हूँ।

इतना कह चुके थे कि अररर-धम, जमीन पर आ कर ढेर हो गये।

मीर साहब ने कहा—शाबाश मेरे पट्ठे, ले झपाके से उठ तो जा।

खोजी—यहाँ हड्डी-पसली का पता नहीं, आप फ़रमाते हैं, उठ तो जा! कितने बेदर्द हो!

दो आदमी वहीं बैठे कुछ इधर-उधर की बातें कर रहे थे। खोजी और मीर साहब तो लकड़ियाँ खोजने लगे कि और नहीं तो सुलफा ही उड़े और आज़ाद इन दोनों अजनबियों की बातें सुनने लगे—

एक—भई, आखिर मुँह फुलाये क्यों बैठे हो? क्या मुहर्रम के दिनों में पैदा हुए थे?

दूसरा—हाँ यार, क्यों न कहोगे। यहाँ जान पर बनी है, आप मुहर्रम लिये फिरते हैं। हमने वी अलारक्खी से कई रुपये महीने भर के वादे पर लिये थे। उसको दो साल होने आये। अब वह कहती है, या हमारे रुपये दो, या हमारे मुकद्दमे में गवाह हो जाओ। नहीं तो हम दावा देंगे और बड़ा घर दिखायेंगे। वहाँ चक्की पीसनी होगी। सोचते हैं, गवाही दें, तो किस बिरते पर। मियाँ आज़ाद की तो सूरत ही नहीं देखी। और न दें, तो वह नालिश जड़े देती हैं। बस, यही ठान ली है कि आज शाम को झप से चल खड़े हों। रेल को खुदा सलामत रखे कि मागूँ तो पता भी न मिले।

दूसरा—अरे मियाँ, वह तरकीब बताऊँ, जिसमें 'साँप मरे न लाठी टूटे।' तुम मियाँ आज़ाद से मिल जाओ; उधर अलारक्खी से भी मिले रहो। गवाही में गोल-मोल बातें कहो और मूँछों पर ताव देते हुए अदालत से आओ। बचा, तुम हो किस भरोसे पर। चार-चार गंडे में तुमको गवाह मिलते हैं, जो तड़ से झूठा कुरान या झूठी गंगा उठा लें। हमको कोई दो ही रुपये दे, कुरान उठवा ले। जो चाहे कहवा ले। फिर वाही हो, खासे दस मिलते हैं, दस! तुम्हें झूठ-सच से मतलब? सच वही है, जिसमें कुछ हाथ लगे। भई, यह तो कलजुग है। इसमें सच बोलना हराम है। और जो कुत्ते ने काटा हो, तो सच ही बोलिए।

पहला—हज़रत सुनिए, सच फिर सच है, और झूठ फिर झूठ। इतना याद रखिएगा।

दूसरा—अबे जा, लाया वहाँ से झूठ फिर झूठ है। अरे नादान, इस ज़माने में झूठ ही सच है। एक ज़रा सा झूठ बोलने में दस चेहरेशाही आये गये होते हैं। ज़रा ज़बान हिला दी, और दस रुपये हज़म। दस रुपये कुछ थोड़े नहीं होते। हमें किसी से तुम दो गंडे ही दिलवा दो। देखो, हलफ उठा लेते हैं या नहीं।

आज़ाद—क्यों भई, और जो अपनी बात से फिर जाय, तो फिर कैसी हो? औरत की बात का एतबार क्या? बेहतर है कि अलारक्खी से स्टाम्प के कागज पर लिखवा लो।

पहला—वल्लाह, क्या सूझी है।

दूसरा—कैसा स्टाम्प जी? हम क्या जानें क्या चीज़ है, बातें कर रहे हैं, आप आये वहाँ से स्टाम्प पर लिखवा लो। क्या हम कोई चोर हैं!

दोनों मक्कूरियों ने उपले जलाये और खाना पकाने लगे। आजाद ने देखा, भागने का अच्छा मौका है। दोनों की आँख बचा कर चल दिये, चट से स्टेशन पर जा कर टिकट ले लिया और एक दर्बे में जा बैठे। दो-तीन स्टेशनों के बाद रेल एक बड़े स्टेशन पर ठहरी। मियाँ आजाद ने असबाब को बग्घी पर लादा और चल खड़े हुए। झट से सराय में दाखिल। एक कोठरी में जा डटे और बिछौना बिछा, खूब, लहरा-लहरा कर गाने लगे—

> वहशत अयाँ है खाक से मुझ खाकसार की,
> महके हिरन भी सूँघ के मिट्टी मज़ार की।

एकाएक एक शाह साहब फ़ालसई तहमत बाँधे, शरबती का केसरिया करता

पहने, माँग निकाले, आँखों में सुरमा लगाये, एक जवान, चंचल हसीन औरत के साथ आ कर आज़ाद की चारपाई पर डट गये और बोले—बाबा, हमारा नाम कुदमी शाह है। हसीनों पर जान देना हमारा खास काम है। इस वक्त आपने जो यह शेर पढ़ा, तो तबीयत फड़क गयी। मगर बिना शराब के गाने का लुत्फ कहाँ? शौक हो, तो निकालूँ प्याला और बोतल, खूब रंग जमे और सरूर गठे।

आजाद—मैं तो तौबा कर चुका हूँ।

शाह जी—बचा, तौबा कैसी? याद रख, तौबा तोड़ने के लिए और कसम खाने के लिए है।

यह कह कर शाह जी ने झोली से सौंफ की विलायती मीठी शराब निकाली और बोले—

सब्ज बोतल में लाल लाल शराब;
खैर ईमान का खुदा हाफिज।
शाह जी मैकदे में बैठे हैं;
इस मुसल्मान का खुदा हाफिज।

यह कह कर उस जवान औरत की तरफ देख कर शराब को प्याले में ढालने का इशारा किया। नाजनीन एक अदा से आकर आजाद की चारपाई पर डट गयी और शराब का का प्याला भरने लगी। भटियारी ने जो यह हाल देखा, तो बिजली की तरह चमकती हुई आयी और कड़क कर बोली—ऐ वाह मियाँ, अठारह-अठारह संडों को ले कर खटिया पर बैठते हो, और जो पाटी खट से टूट जाय, तो किसके माथे? ऐसे मुसाफिर भी नहीं देखे। एक तो खुद ही दुबले-पतले हैं, दूसरे दस-दस को ले कर बैठते हैं। ले चारपाई खाली कीजिए, हम ऐसे किराये से बाज आये। आज़ाद की तो भटियारियों के नाम से रूह काँपती थी, चुपके से चारपाई खाली कर दी और जमीन पर दरी बिछवा कर आ बैठे। नाजनीन ने प्याला आजाद की तरफ़ बढ़ाया। पहले तो बहुत नहीं-नहीं करते रहे, लेकिन जब उसने कसमें खिला दीं, तो मजबूर हो कर प्याला लिया और चढ़ा गये। दौर चलने लगा। वह भर-भरके जाम पिलाती जाती थी और आज़ाद के जिस्म में नयी जान आती जाती थी। अब तो वह मजे में आ कर खुल खेले, खूब पी। 'मुफ्त की शराब क़ाजी को भी हलाल है!' यहाँ तक कि आँखें झपकने लगीं, जबान लड़खड़ाने लगी। बहकी-बहकी बातें करने लगे और आखिर नशे में चूर हो कर धड़ से गिरे। शाह जी तो इस घात में आये ही थे, झपाक से कपड़े बाँधे, जमा-जथा ली और चलता धंधा किया। औरत भी उनके साथ-साथ रुंबी हुई। मियाँ आजाद रात भर बेहोश पड़े रहे। तड़के आँख खुली, तो हाल पतला। न वह शाह साहब हैं, न वह औरत, न दरी। जमीन पर पड़े लोट रहे हैं। प्यास के मारे गले में काँटे पड़े जाते हैं। उठे, तो लड़खड़ा कर गिर पड़े, फिर उठे, फिर मुँह के बल गिरे। बारे बड़ी मुश्किल से खड़े हुए, पानी ला कर मुँह-हाथ धोये और खूब पेट भर कर पानी पिया, तो दिल को तसकीन हुई। एकाएक चारपाई पर निगाह पड़ी। देखा सिरहाने एक ख़त रखा हुआ है। खोल कर पढ़ा—

'क्यों बचा ! और पियो ! अब पियोगे, तो जियोगे भी नहीं । कितने बड़े पियक्कड़ हो, बोतल की बोतल मुँह से लगा ली । अब अपनी किस्मत को रोओ । धत् तेरे की ! क्या मज़े से माशूक के पास बैठे हुए गट-गट उड़ा रहे थे । गठरी घूम गयी न ! भई, हमारी खातिर से एक जाम तो लो । कहो, तो उसी के हाथ भेजूँ । ले, अब हम जताये देते हैं, खबरदार, मुसाफिर का एतबार न करना, और सफ़र में तो किसी पर भरोसा रखना ही नहीं । देखो, आखिर हम ले-दे कर चल दिये । उम्र भर सफ़र किया मगर आदमी न बने ।'

यह खत पढ़ कर मियाँ आजाद पर सैकड़ों घड़े पड़ गये । बहुत कुछ गुल-गपाड़ा मचाया, सराय भर को सिर पर उठाया, भठियारे को दो-चार चपतें लगायीं, मगर माल न मिला, न मिला । लोगों ने सलाह दी कि जाओ, थाने पर रपट लिखाओ । गिरते-पड़ते थाने में पहुँचे, तो क्या देखते हैं, थानेदार साहब बैठे डींग रहे हैं—मैंने फ्लाँ गाँव में अट्ठारह डाकुओं से मुकाबिला किया और चौतीस बरस की चोरी बरामद की । सिपाही हाँ में हाँ मिलाते और भर्रे देते जाते थे कि आप ऐसे और आप वैसे, और आप डबल पैसे । इतने में आजाद पहुँचे । सलाम-बंदगी हुई ।

थानेदार—कहिए, मिजाज कैसे हैं ?

आज़ाद—मिजाज फिर पूछ लेना, अब गठरी दिलवाओ उस्ताद जी !

थानेदार—उस्तादजी किस मकुए का नाम है, और गठरी कैसी ? आप भंग तो नहीं पी गये ?

आजाद—जरा जबान सँभाल कर बातें कीजिएगा । मैं टेढ़ा आदमी हूँ ।

थानेदार—अच्छे-अच्छे टेढ़ों को तो हमने सीधा बनाया, आप हैं किसी खेत की मूली ? कोई है ? वह हुलिया तो मिलाओ, हम तो इन्हें देखते ही पहचान गये ।

ज्ञानसिंह ने हुलिया जो मिलाया, तो बाल का भी फर्क नहीं । पकड़ लिये गये, हवालात में हो गये । मगर एक ही छटे हुए आदमी थे । कानिस्टिबल को वह भर्रे दिये, बातों-बातों में दोस्ती पैदा कर ली कि वह भी उनका दम भरने लगा । अब उसे फिक्र हुई कि इनको हवालात से टहला दे । आखिर रात को पहरेदार की आँख बचा कर हवालात का दरवाजा खोल दिया । आजाद चुपके से खिसक गये । दायें-बायें देखते दबे-पाँव जाने लगे । जरा आहट हुई, और इनके कान खड़े हुए । बारे खुदा-खुदा करके रास्ता कटा । सराय मे पहुँचे और भठियारी को किराया दे कर स्टेशन पर जा पहुँचे ।

-

२१

मियाँ आज़ाद रेल पर बैठ कर नाविल पढ़ रहे थे कि एक साहब ने पूछा—जनाब, दो-एक दम लगाइए, तो पेचवान हाज़िर है। वल्लाह, वह धुँआधार पिलाऊँ कि दिल फड़क उठे। मगर याद रखिए, दो दम से ज़्यादा की सनद नहीं। ऐसा न हो, आप मैंसिया-जोंक हो जायँ।

आजाद ने पीछे फिर कर देखा, तो एक बिगड़े-दिल मज़े से बैठे हुक़्क़ा पी रहे हैं। बोले, यह क्या अंधेर है भाई ? आप रेल ही पर गुड़गुड़ाने लगे; और हुक्का भी नहीं, पेचवान। जो कहीं आग लग जाय, तो ?.

बिगड़े दिल—और जो रेल ही टकरा जाय, तो ? आसमान ही फट पड़े, तो ? इस 'तो' का तो जवाब ही नहीं है। ले, पीजिएगा, या बातें बनाइएगा ?

आज़ाद—जी, मुझे इसका शौक नहीं है।

यह कह कर फिर नाविल पढ़ने लगे। थोड़ी देर के बाद एक स्टेशन पर रेल ठहरी, तो खरबूज़े और आम पटे हुए थे। खैंचियों की खैंचिया भरी रखी थीं। बोले—क्यों भई, स्टेशन है या आम की दूकान ? या खरबूज़े की खान ? आम-पुर है या खरबूज़ानगर ?

एक मुसाफ़िर बोले—अजी हजरत, नजर न लगाइए। अब की फ़सल तो खा लेने दीजिए। इसी पर तो जिंदगी का दार-मदार है। खेत में बेल बढ़ी और यहाँ कच्चे घड़े की चढ़ी। आम बाजार में आये और ईं जानिब बौराये। आम और खरबूजे पर उधार खाये बैठे हैं। कपड़े बेच खायँ, बरतन नखास में पटील लायें, बदन पर लत्ता न रहे, चूल्हे पर तवा न रहे, उधार लें, सुथना तक गिरवी रखें, बगड़ा करें, झगड़ा करें, मगर खरबूज़े पर छुरी जरूर चले। तड़का हुआ, चाकू हाथ में लिया और खरबूजे की टोह में चला। बाज़ार है कि महक रहा है, ख़रीदार हैं कि टूटे पड़ते हैं। रसीली खटकिन जवानी की उमंग में अच्छे-अच्छों को डाँट बताती है। मियाँ, अलग रहो, खैंची पर न गिरे पड़ो। बस, दूर ही से भाव-ताव करो। लेना एक न देना दो, मुफ्त का झंझट। ईं जानिब ने एक तराशा, दूसरा तराशा, तीसरा तराशा, खूब चखे। आँख चूकी, तो दो-चार फाँके मुँह में दबायीं और चलते-फिरते नजर आये। आदमी क्या, बंदर हो गये। उधर खरबूज़े गये और आम की फ़सल आयी, मुँह-माँगी मुराद पायी। जिधर देखिए, ढेर के ढेर चुने हैं। यहाँ सनक सवार हो गयी। देखा और झप से उठाया; तराशा और खाया। माल-असबाब के कूड़े किये और बेगिनती लिये। खाने बैठे, तो दो दाढ़ी खा गये चार दाढ़ी खा गये।

आज़ाद—यह दाढ़ी खाने के क्या माने ?

मुसाफ़िर—अजी हज़रत, आमे इतने खाये कि गुठली और छिलके दाढ़ी तक पहुँचे।

मुसाफ़िर वह डींग हाँक ही रहे थे कि रेल ठहरी और एक चपरासी ने आकर पूछा—फलाँ आदमी कहाँ है?

आजाद—इस कमरे में इस नाम का कोई आदमी नहीं है।

मुसाफ़िर ने चपरासी की सूरत देखी; तो चादर से मुँह लपेट कर खिड़की की दूसरी तरफ झाँकने लगे। चपरासी दूसरे दर्जे में चला गया।

आज़ाद—उस्ताद, तुमने मुँह जो छिपाया, तो मुझे शक होता है कि कुछ दाल में काला जरूर है। भई, और किसी से न कहो, यारों से तो न छिपाओ।

मुसाफ़िर—मुँह क्यों छिपाऊँ जनाब, क्या किसी का कर्ज़ खाया है, या माल मारा है, या कहीं खून करके आये हैं?

आज़ाद—आप बहुत तीखे हुजिएगा, तो धरवा ही दूँगा। ले बस, कच्चा चिट्ठा कह सुनाओ, वरना मैं पुकारता हूँ फिर।

मुसाफ़िर—अरे, नहीं-नहीं ऐसा ग़ज़ब भी न करना। साफ़-साफ़ बता दें? हमने अबकी फ़सल में खरबूजे और आम खूब छक कर चखे, मगर टका कसम को पास नहीं। पूछो, लायें किसके घर से? यहाँ पहले तो कर्ज लिया, फिर एक दोस्त का मकान अपने नाम से पटील डाला। अब नालिश हुई है, सो हम भागे जाते हैं।

आजाद—ऐसे आम खाने पर लानत! कैसे नादान हो?

मुसाफिर—देखिए, नादान-वादान न बनाइएगा। वरना बुरी ठहरेगी!

आज़ाद—अच्छा बुलाऊँ चपरासी को?

मुसाफ़िर—जनाब, दस गालियाँ दे लीजिए, मगर जान तो छोड़ दीजिए।

इतने में एक मुसाफ़िर ने कई दर्जे फाँदे, यह उचका, यह आया. यह झपटा और धम से मियाँ आज़ाद के पास हो रहा।

मुसाफ़िर—ग़रीबपरवर!

आज़ाद—किससे कहते हो? हम ग़रीबपरवर नहीं अमीरपरवर हैं; गरीबपरवर हमारे दुश्मन हों।

मुसाफ़िर—अच्छा साहब, आप अमीर के बाप-परवर, दादा-परवर सही। हमारा आपसे एक सवाल है।

आजाद—सवाल स्कूल के लड़कों से कीजिए, या वकालत के उम्मेदवारों से।

मुसाफ़िर—दाता, ज़रा सुनो तो।

आज़ाद—दाता भंडारी को कहते हैं। दाता कहीं और रहते होंगे।

मुसाफिर—एक रुपया दिलवाओ, तो हजार दुआएँ दूँ।

आजाद—दुआ के तो हम कायल ही नहीं।

मुसाफिर—तो फिर गालियाँ सुनाऊँ?

आजाद—गालियाँ दो, तो बत्तीसी पेट में हो।

मुसाफिर—अरे ग़ज़ब, लो स्टेशन करीब आ गया। अब बेइज्जत होंगे।

आजाद—यह क्यों!

मुसाफ़िर—क्यों क्या, टिकट पास नहीं, घर से दो रुपये ले कर चले थे, रास्ते में लँगड़े आम दिखायी दिये। राल टपक पड़ी। आव देखा न ताव, दो रुपये टेंट से निकाले और आम पर छुरी तेज की। अब गिरह में कौड़ी नहीं, 'पास न लत्ता, पान खायँ अलबत्ता।'

आजाद—वाह रे पेटू! भला यहाँ तक आये क्योंकर?

मुसाफ़िर—इसकी न पूछिए। यहाँ सैकड़ों ही अलसेटें याद हैं।

इतने में रेल स्टेशन पर आ पहुँची। टिकट-बाबू की काली-काली टोपी और सफ़ेद चमकती हुई खोपड़ी नजर आयी। टिकट! टिकट! टिकट निकालो। मियाँ आज़ाद तो टिकट देकर लंबे हुए; बाबू ने इनसे टिकट माँगा, तो लगे बगलें झाँकने। वेल, तुम्हारा टिकट कहाँ?

मुसाफ़िर—बाबू जी, हम पर तो अब की साल टिकस-विकस नहीं बँधा।

बाबू—यू फूल! तुम बेटिकट के चलता है उल्लू!

मुसाफिर—क्या आदमी भी उल्लू होते हैं? इधर तो देखने में नहीं आया, शायद आपके बंगाल में होता हो।

टिकट-बाबू ने कानिस्टिबिल को बुला कर इनको हवालात भिजवाया। आम खाने का मजा मिला, मार और गालियाँ खायी, सो घाते में।

घटाटोप अँधेरा छाया है, काला मतवाला बादल झूम-झूम कर पूरब की तरफ़ से आया है। वह घनेरी घटा कि हाथ मारा न सूझे। अँधेरे ने कुछ ऐसी हवा बाँधी कि चाँद का चिराग गुल हो गया। यह रात है कि सियहकारों का दिल? हर एक आदमी जरीब टेकता चल रहा है, मगर कलेजा दहल रहा है कि कहीं ठोकर न खायँ, कहीं मुँह के बल जमीन पर न लुढ़क जायँ। मियाँ आजाद स्टेशन से चले, तो सराय का पता पूछने लगे। एकाएक किसी आदमी से सिर टकरा गया। वह बोला—अंधा हुआ है क्या? रास्ता बचा के चल, पतंग रखे हुए हैं, कहीं फट न जायँ।

आजाद—ऐ, रास्ते में पतंग कैसे? अच्छी बेपर की उड़ायी।

पतंगबाज—भई वल्लाह, क्या-क्या बिगड़े-दिलों से पाला पड़ जाता है! हम तो नरमी से कहते हैं कि मियाँ जरी दबा कर जाओ, और आप तीखे हुए जाते हैं।

आजाद—अरे नादान, यहाँ हाथ-मारा सूझता ही नहीं, पतंग किस भकुए को सूझेंगे।

पतंगबाज—क्या रतौंधी आती है?

आजाद—क्या पतंग बेचने जा रहे हो?

पतंगबाज—अजी, पतंग बेचें हमारे दुश्मन। हम खुद घर के अमीर हैं। यहाँ से चार कोस पर एक कस्बा है, वहाँ के रईस हमारे लँगोटिये यार हैं। उनसे हमने पतंगों का मैदान बदा था। हम अपने यारों के साथ बारहदरी के कोठे पर थे और वह अपने दीवानखाने की छत पर। कोई सात बजे से इधर भी कनकव्वे छपके, उधर भी बढ़े। खूब लमडोरे लड़े। पाँच रुपये फी पेच बदा था। यार, एक पतंग खूब लड़ा।

हमारा माँगदार बढा था और उधर का गोल-तुक्का। दस-बारह मिनट दाँव घात के बाद पेच पड गये। पहले तो हमारे कन्ने नथ गये, हाथों के तोते उड़ गये; समझे, अब कटे और अब कटे; मगर वाह रे उस्ताद, ऐसे कन्ने छुड़ाये कि वाह जी वाह! फिर पेच लड़ गये। दंसेरियों डोर पिला दी, कनकव्वा आसमान से जा लगा। जो कोई दम और ठहरता तो वहीं जल-भुन कर खाक हो जाता। उतने में हमने गोता देकर एक मबका जो दिया, तो वह काटा। अब कोई कहता है कि हत्थे पर से उखड़ गया; कोई कहता है, डोर उलझ गयी थी। एक कनकव्वे से हमने कोई नौ दस काटे। मगर उनकी तरफ कोई उस्ताद आ गया—उसने खींचके वह हाथ दिखाये कि खुदा की पनाह! हाथ ही टूटे मरदूद के! छक्के छुड़ा दिये। कभी सड़-सड़ करता हुआ नीचे से खींच गया। कभी ऊपर से पतंग पर छाप बैठा। आखिर मैंने हिसाब जो लगाया, तो पचास रुपये के पेटे मे आ गया। मगर यहाँ टका पास नही। हमने भी एक माल तक लिया है, घर के सोने के कडे किसी के हाथ पटीलेंगे, कोई दस तोले के होंगे, चुपके से उड़ा दूँगा, किसी को कानो-कान खबर भी न होगी।

आजाद—आपके वालिद क्या पेशा करते हैं?

पतगबाज—जमींदार हैं। मगर मुझे जमींदारी से नफरत है। जमींदार की सूरत से नफ़रत है, इस पेशे के नाम से नफरत है! शरीफ आदमी और लट्ठ लिये हुए मेड-मेड़ घूम रहे हैं। हमसे यह न होगा। हम कोई मजदूर तो हैं नहीं। यह गँवारों ही को मुबारक रहे।

आजाद—हुजूर ने तालीम कहाँ तक पायी है? आप तो लंदन के अजायबखाने में रखने लायक हैं।

पतंगबाज—यहीं के तहसीली स्कूल मे कुछ दिन तक घास छीली है।

आजाद—क्या घसियारा बनने का शौक चर्राया था?

पतंगबाज—जनाब, कोई छह-सात बरस पढे; मगर गंडेदार पढ़ाई, एक दिन हाजिर तो दस दिन नागा। पहले दर्जे का इम्तिहान दिया, मगर लुढ़क गये। अब्बाजान ने कहा, अब हम तुम्हें नहीं पढायेंगे। खैर, इस झंझट से छुट्टी पायी तो पेशकार साहब के लड़के से दोस्ती बढायी। तब तक हम निरे जगली ही थे। हद यह कि हुक्का पीना तक नहीं जानते थे। तो वजह क्या? अच्छी सोहबत मे कभी बैठे ही न थे। छोटे मिर्जा बेचारे ने हमें हुक्का पीना सिखाया। फिर तो उनके साथ चंडू के छींटे उड़ने लगे। पहले आप मुझे देखते तो कहते, कब्र में एक पाँव लटकाये बैठा है। बदन में गोश्त का नाम नहीं, हड्डी-हड्डी गिन लीजिए। जब से छोटे मिर्जा की सोहबत में ताड़ी पीने लगा, तब से जरा हरा हूँ। पहले हम निरे गावदी ही थे। यह पतंग लड़ाना तो अब आया है। मगर अबकी पचास के पेटे में आ गये। छोटे मिर्जा से हमने तदबीर पूछी, तो वल्लाह, तड़ से बतलाया कि अब बहन या भावज या बीबी की आँख चूके, तो कोई सोने की अदद साफ उड़ा दो। भई, जिला-स्कूल मे पढता, तो ऐसी अच्छी सोहबत न मिलती।

आजाद—वल्लाह, आप तो खराद पर चढ़ गये, 'सब गुन पूरे, तुम्हें कौन कहे लँडूरे!'

पतंगबाज—आप यहाँ कहाँ ठहरेंगे? चलिए, इस वक्त गरीबखाने ही पर खाना खाइए; सराय में तो तकलीफ़ होगी। हाँ, जो कोई और बात हो, तो क्या मुजायका, (मुसकिरा कर) सच कहना उस्ताद, कुछ लसरका है?

आजाद—मियाँ, यहाँ दिल ही नहीं है पास, मुहब्बत करेंगे क्या! चलिए, आप ही के यहाँ मेहमान हों—यहाँ तो बेफिक्री के हाथ बिक गये हैं। मगर उस्ताद, इतना याद रहे कि बहुत तकलीफ़ न कीजिएगा।

पतंगबाज़—वल्लाह, यह तो वही मसल हुई कि बस, एक दस सेर का पुलाव तो बनवाइएगा, मगर तकल्लुफ न कीजिएगा! मानता हूँ आपको।

आजाद और पतंगबाज इक्के पर बैठे। इक्का हवा से बातें करता चला, तो खट से मकान पर दाखिल। अंदर से बाहर तक खबर हो गयी कि मँझले मियाँ आ गये। मियाँ आजाद और वह दोनों उतरे। इतने में एक लौंडी अन्दर से आकर बोली—चलिए, बड़े साहब ने आपको याद किया है।

पतंगबाज—ऐ है, नाक में दम कर दिया, आते देर नहीं हुई और बुलाने लगे। चलो, आते हैं। आपके लिए हुक्का भर लाओ। हजरत, कहिए तो जरी वालिद से मिल आऊँ? गाना-वाना सुनिए, तो बुलाऊँ किसी को? इधर लौंडी अन्दर पहुँची, तो बड़े मियाँ से बोली—उनके पास तो उनके कोई दोस्त मसनद-तकिया लगाये बैठे हैं।

मियाँ—उनके दोस्तों की न कहो। शहर भर के बदमाश, चोर-मक्कार, झूठों के सरदार उनके लँगोटिये यार हैं। भलेमानस से मिलते-जुलते तो उन्हें देखा ही नहीं।

लौंडी—नहीं मियाँ, सकल सूरत से तो शरीफ भलेमानुस मालूम होते हैं।

खैर, रात को आजाद और मँझले मियाँ ने मीठी नींद के मजे उठाये, सुबह को हवाली मवाली जमा हुए।

एक—हुजूर, कल तो खूब-खूब पेंच लडे, और हवा भी अच्छी थी।

पतंगबाज—पेंच क्या लडे, पचास के माथे गयी। खैर, इसका तो यहाँ गम नहीं, मगर किरकिरी बड़ी हुई।

दूसरा—वाह हुजूर, किरकिरी की एक ही कही। कसम खुदा की, वह लमडोरा पेंच निकाला कि देखनेवाले दंग रह गये। जमाना भर यही कहता था कि भई, पेंच क्या काटा, कमाल किया। कुछ इनाम दिलवाइए, खुदावंद! आपके कदमों की कसम, आज शहर भर मे उस पेंच की धूम है। चालीस-पचास रुपयों की भी कोई हकीकत है!

शाम के वक्त आजाद और मियाँ पतंगबाज बैठे गप-शप कर रहे थे कि एक मौलवी साहब लटपटी दस्तार खोपड़ी पर जमाये, कानी आँख को उसके नीचे छिपाये, दूसरी मे बरेली का सुरमा लगाये कमरे मे आये। उन्होंने अलेकसलेम के बाद जेब से एक इश्तिहार निकाल कर आजाद के हाथ में दिया। आजाद ने इश्तिहार पढ़ा, तो फड़क गये। एक मुशायरा होनेवाला था। दूर-दूर से शायर बुलाये गये थे। तरह का मिसरा था—

"हमसे उस शोख़ ने ऐयारी की" ।

मौलवी साहब तो उलटे पाँव लौटे हुए, यहाँ मुशायरे की तारीख जो देखते हैं, तो इकतीस फ़रवरी लिखी हुई है। हैरत हुई कि फ़रवरी तो अट्ठाइस और कभी उनतीस ही दिन का महिना होता है, यह इकतीस फ़रवरी कौन सी तारीख है ! बारे मालूम हुआ कि इसी वक़्त मुशायरा था। ख़ैर, दोनों आदमी बड़े शौक़ से पता पूछते हुए गुलाबी बारहदरी मे दाखिल हुए। वहाँ बड़ी रौनक थी। नई-नई वज़ा, नये-नये फ़ैशन के लोग जमा हैं। किसी का दिमाग़ ही नहीं मिलता; जिसे देखो, तानाशाह बना बैठा है, दुनिया की बादशाहत को जूती की नोक पर मारता है।. शायरी के शौकीन उमड़े चले आते हैं। कहीं तिल रखने की जगह नहीं। जब रात भीगी और चाँदनी खूब निखरी, तो मुशायरा शुरू हुआ। शायरों ने चहकना शुरू किया। मजलिस के लोग एक-एक शेर पर इतना चीखे-चिल्लाये कि होंठ और गले सूख कर काँटा हो गये। ओहो हो-हो, आहा हा-हा, वाह-वाह सुभान अल्लाह के दौंगरे बरस रहे थे। शायर ने पूरा शेर पढ़ा भी नहीं कि यार लोग ले उड़े ! वाह हज़रत, क्यों न हो ! कसम खुदा की ! कलम तोड़ दिया ! वल्लाह, आज इस लखनऊ में आपका कोई सानी नहीं ! एक शायर ने यह ग़ज़ल पढ़ी—

हमको देखा, तो वह हँस देते हैं ;
आँख छिपती ही नहीं यारी की।

महफ़िल के लोगों ने पूरा शेर तो सुना नहीं, यारी को गाड़ी सुन लिया। गाड़ी की, वाह-वाह, क्या शेर फ़रमाया, गाड़ी की ! अब जिसे देखिए, गुल मचा रहा है—गाड़ी की, गाड़ी की। मगर गुलगपाड़े में सुनता कौन है। शायर बेचारा चीखता है कि हज़रत, गाड़ी की नहीं, यारी की; पर यार लोग अपना ही राग अलापे जाते हैं। तब तो मियाँ आज़ाद ने झल्ला कर कहा—साहबो, अगाड़ी न पिछाड़ी, चौपहिया न पालकी-गाड़ी, खुदा के वास्ते पहले शेर तो सुन लो, फिर तारीफ़ के पुल बाँधो। गाड़ी की नहीं, यारी की।' आँख छिपती ही नहीं यारी की।

दूसरे शायर ने यह शेर पढ़ा—

उम्मीद रोज़े-वस्ल थी किस बदनसीब को ;
किस्मत उलट गयी मेरे रोज़े-सियाह की।

हाज़िरीन—निगाह की, सुभान-अल्लाह। निगाह की, हज़रत, यह आप ही का हिस्सा है।

शायर—निगाह नहीं, रोज़े-सियाह। निगाह से तो यहाँ कुछ माने ही न निकलेंगे।
यह कह कर उन्होंने फिर उसी शेर को पढ़ा और सियाह के लफ़्ज पर खूब ज़ोर दिया कि कोई साहब फिर निगाह न कह उठें।

आधी रात तक हू-हक मचता रहा। कान-पड़ी आवाज़ न सुनायी देती थी। पड़ोसियों की नींद हराम हो गयी। एक-एक शेर पढ़ने की चार-चार दफ़े फ़रमाइश हो रही है और बीस मरतबा उठा-बैठी, सलाम पर सलाम और आदाब पर आदाब; अच्छी

और आदमी से ऊँट बन जाऊँ ! आप जाते हैं, तो जाइए, मगर जल्द आइएगा। सच कहते हैं, लंबा आदमी अक्ल का दुश्मन होता है। यह गप उड़ाने का वक़्त है, या जंगल में घूमने का ?

एक मुसाहिब—आप बजा फ़रमाते हैं. ... नसों को कभी जंगल की धुन समायी ही नहीं। और, हुजूर के यहाँ घोड़ा-बग्घी सब सवारियाँ मौजूद हैं। जूतियाँ चटखाते हुए आपके दुश्मन चलें।

आजाद—जनाब, यह नजाकत नहीं है, इसको तपेदिक कहते हैं। आप पाँच कोस न चलिए, दो ही कोस चलिए, आध ही कोस चलिए।

पतंगबाज—नहीं जनाब, माफ़ फ़रमाइए।

आजाद लंबे-लंबे डग बढ़ाते पश्चिम की तरफ रवाना हुए।

२२

मियाँ आज़ाद के पाँव में तो सनीचर था। दो दिन कहीं टिक जायँ तो तलवे खुजलाने लगे। पतंगबाज के यहाँ चार-पाँच दिन जो जम गये, तो तबीयत घबराने लगी लखनऊ की याद आयी। सोचे, अब वहाँ सब मामला ठंडा हो गया होगा। बोरिया-बँधना उठाया और शिक़रम-गाड़ी की तरफ चले। रेल पर बहुत चढ़ चुके थे, अब की शिक़रम पर चढ़ने का शौक हुआ। पूछते-पूछते वहाँ पहुँचे। डेढ़ रुपये किराया तय हुआ, एक रुपया बयाना दिया। मालूम हुआ, सात बजे गाड़ी छूट जायगी, आप साढ़े-छह बजे आ जाइए। आजाद ने असबाब तो वहाँ रखा, अभी तीन ही बजे थे, पतंगबाज के यहाँ आ कर गप-शप करने लगे। बातों-बातों में पौने सात बज गये। शिकरम की याद आयी, बचा-खुचा असबाब मज़दूर के सिर पर लाद कर लदे फँदे घर से चल खड़े हुए। राह में लंबे-लंबे डग धरते, मजदूरों को ललकारते चले आते हैं कि तेज चलो, कदम जल्द उठाओ। जहाँ सन्नाटा देखा, वहाँ थोड़ी दूर दौड़ने भी लगे कि वक्त पर पहुँचें; ऐसा न हो कि गाड़ी छूट जाय। वहाँ ठीक सात बजे पहुँचे, तो सन्नाटा पड़ा हुआ। आदमी न आदमज़ाद। पुकारने लगे, अरे मियाँ चपरासी, मुंशी जी, अजी मुंशी जी! क्या साँप सूँघ गया? बड़ी देर के बाद एक चपरासी निकला। कहिए, क्या डाक कीजिएगा?

आजाद—और सुनिए। डाक कीजिएगा की एक ही कही। मियाँ, बयाने का रुपया भी दे चुके।

चपरासी—अच्छा, तो इस घास पर बिस्तर जमाइए, ठंडी-ठंडी हवा खाइए, या जरा बाजार की सैर कर आइए।

आजाद—ऐं, सैर कैसी? डाक छूटेगी आखिर किस वक्त?

चपरासी—क्या मालूम, देखिए, मुंशी जी से पूछूँ।

आज़ाद ने मुंशी जी के पास जा कर कहा—अरे साहब, सात बजे बुलाया था, जिसके साढ़े सात हो गये! अब और कब तक बैठा रहूँ?

मुंशी जी—जनाब, आज तो आप ही आप हैं, और कोई मुसाफ़िर ही नहीं। एक आदमी के लिए चालान थोड़े छोड़ेंगे।

आज़ाद—कहीं इस भरोसे न रहिएगा! बयाना दे चुका हूँ।

मुंशी—अच्छा, तो ठहरिए।

आठ बज गये, नौ बज गये, दस बज गये, कोई ग्यारह बजे तीन मुसाफिर आये। तब जा कर शिकरम चली। कोई आध कोस तक तो दोनों घोड़े तेजी के साथ गये, फिर सुरंग बोल गया। यह गिरा, वह गिरा। कोचवान ने कोड़े पर कोड़े जमाना शुरू किया; पर घोड़े ने भी ठान ली कि टलूँगा ही नहीं। कोचमैन, घसियारा,

बारगीर, सब के सब ठोक रहे थे; मगर वह खड़ा हाँफता है। बारे बड़ी मुश्किल से फूँक-फूँक कर क़दम रखता हुआ दूसरी चौकी तक आया।

दूसरी चौकी में एक टट्टू दुबला-पतला, दूसरा घोड़ा मरा हुआ सा था; हड्डियाँ-हड्डियाँ गिन लीजिए। यह पहले ही से रंग लाये। कोचमैन ने खूब कोड़े जमाये, तब कहीं चले। मगर दस क़दम चले थे कि फिर दम लिया। साईस ने आँखें बंद करके रस्सी फटकारनी शुरू की। फिर दस-बीस कदम आहिस्ता-आहिस्ता बढ़े, फिर ठहर गये। खुदा-खुदा करके तीसरी चौकी आयी।

तीसरी चौकी में एक दुबला-पतला मुश्की रंग का घोड़ा और दूसरा नुकरा था। पहले ज़रा चीं-चप्पड़, फिर चले। एक-आध कोस गये थे कि कीचड़ मिली, फिर तो कयामत का सामना था। घोड़े थान की तरफ़ भागते थे, कोचमैन रास थामे टिक-टिक करता जाता था, बारगीर पहियों पर ज़ोर लगाते थे। मुसाफ़िरों को हुक्म हुआ कि उतर आइए; ज़रा हवा खाइए। बेचारे उतरे। आध कोस तक पैदल चले। घोड़े कदम-कदम पर मुँह मोड़ देते थे। वह चिल्ल-पों मची हुई थी कि खुदा की पनाह। आध कोस के बाद हुक्म हुआ कि अपना-अपना बोझ उठाओ, गाड़ी भारी है। चलिए साहब, सबने गठरियाँ सँभाली। सिर पर असबाब लादे चले आते हैं। तीन घंटे मे कहीं चौकी तय हुई, मुसाफ़िरों का दम टूट गया, कोचमैन और साईस के हाथ कोड़े मारते-मारते और पहियों पर ज़ोर लगाते-लगाते बेदम हो गये।

चौथी चौकी की जोड़ी देखने मे अच्छी थी। लोगों ने समझा था, तेज़ जायगी, मगर जमाली खरबूज़ों की तरह देखने ही भर की थी। कोचवान और बारगीरों ने लाख-लाख ज़ोर लगाया, मगर उन्होंने ज़रा कान तक न हिलाये, कनौती तक न बदली। बुत बने खड़े हैं, मैदान मे अड़े हैं। कोई तो घास का मुट्ठा लाता है, कोई दूर से तोबड़ा दिखाता है, कोई पहिये पर ज़ोर लगाता है, कोई ऊपर से कोड़े जमाता है। आखिर मुसाफ़िरों ने भी उतर कर ज़ोर लगाया, मगर टाँय-टाँय फिस। आखिर घोड़ों के एवज बैल जोते गये।

पाँचवीं चौकी में बाबा आदम के वक्त का एक घोड़ा आया। घोड़ा क्या, खच्चर था। आँखें माँग रहा था। मक्खियाँ भिन-भिन करती थीं। रात को भी मक्खियों ने इसका पीछा न छोड़ा।

आज़ाद—अरे मर्द, अब चलो न! आखिर यहाँ क्या हो रहा है? रास्ता चलने ही से कटता है।

कोचमैन—ऐ लो साहब, घोड़े का तो बंदोबस्त कर ले। एक ही घोड़ा तो इस चौकी पर है।

आज़ाद—अजी, दूसरी तरफ़ भैंस जोत देना।

एक मुसाफिर—या हम एक सहल तदबीर बतायें। मुसाफिरों से कहिए, उतर पड़ें, बोझ अपना-अपना सिर पर लादें और ज़ोर लगा कर बग्घी को एक चौकी तक ढकेल ले जायँ।

इतने मे एक भठियारा अपने टट्टू को टिक-टिक करता चला आता था। कोचवान ने पूछा—कहो भाई, भाड़ा करते हो? जो चाहे सो माँगो, देंगे। नकद दाम लो और बग्घी पर बैठ जाओ। एक चौकी तक तुम्हारे टट्टू को बग्घी में जोतेंगे।

भठियारा—वाह, अच्छे आये! टट्टुआ कभी गाड़ी मे जोता भी गया है? मुर्गी-के बराबर टट्टू, और जोतने चले हैं शिकरम में। यों चाहे पीठ पर सवार हो लो, मुदा डाकगाड़ी में कैसे चल सकता है?

कोचमैन—अरे भई, तुमको भाडे से मतलब है, या तक़रीर करोगे? हम तो अपनी तरकीब से जोत लेंगे।

आजाद ने भठियारे से कहा—रुपया टेंट मे रखो और कहो, अच्छा जोतो। कुछ थक-थका कर आप ही हार जायँगे। रुपया तुम्हारे बाप का हो जायगा! वह भी राज़ी हो गया। अब कोचमैन ने टट्टू को जोतना चाहा, मगर उसने सैकड़ों ही बार पुश्त उछाली, दुलत्तियाँ झाड़ी और गाडी के पास न फटका। इस पर कोचवान ने टट्टू को एक कोडा मारा। तब तो भठियारा आग हो गया। ऐ वाह मियाँ, 'अच्छे मिले, हमने पहले ही कह दिया था कि हमारा जानवर बग्घी में न चलेगा। आपने जबरदस्ती की। अब गधे की तरह गद्-गद् पीटने लगे।

वह तो टट्टू को बगल में दाब लंबा हुआ, यहाँ शिकरम मैदान में पड़ी हुई है। मुसाफ़िर जम्हाइयाँ ले रहे हैं। साईस चिलम पर चिलम उडाते हैं। सब मुसाफ़िरों ने मिल कर कसम खायी कि अब शिकरम पर न बैठेंगे। खुदा जाने, क्या गुनाह किया था कि यह मुसीबत सही। पैदल आना इससे कहीं अच्छा।

पाँचवीं चौकी के आगे पहुँचे, तो एक मुसाफिर ने, जिसका नाम लाला पल्टू था, ठर्रे की बोतल निकाली और लगा कुज्जी पर कुज्जी उड़ाने। मियाँ आजाद का दिमाग़ मारे बदबू के परेशान हो गया। मजहब से तो उन्हें कोई वास्ता न था, क्योंकि खुदा के सिवा और किसी को मानते ही न थे, लेकिन बदबू ने उन्हें बेचैन कर दिया। एक दूसरे मुसाफ़िर रिसालदार थे। उनकी जान भी आजाब में थी। वह शराब के नाम पर लाहौल पढते और उसकी बू से कोसों भागते थे। जब बहुत दिक हो गये, तो मियाँ आजाद से बोले—हजरत, यह तो बेढब हुई। अब तो इनसे साफ़-साफ़ कह देना चाहिए कि खुदा के वास्ते इस वक़्त न पीजिए। थोडी देर में हमको और आपको गालियाँ न देने लगे, तो कुछ हारता हूँ। जरा आँख दिखा दीजिए जिसमे बहुत बढ़ने न पायें।

आजाद—खुदा की कसम, दिमाग़ फटा जाता है। आप डपट कर ललकार दीजिए। न माने तो मै कान गरमा दूँगा।

रिसालदार—कहीं ऐसा ग़जब न कीजिएगा! पंजे झाड कर लड़ने को तैयार हो जायगा। शराबी के मुँह लगना कोई अच्छी बात थोडे है।

दोनों में यही बाते हो रही थीं कि लाला पल्टू ने हाँक लगायी—हरे-हरे बाग में गोला बोला. पग आगे, पग पीछे। यह बेतुकी कह कर हाथ जो छिड़का, तो

रिसालदार की दोनों टाँगों पर शराब के छींटे पड गये। हाँय-हाँय, बदमाश, अलग हट! उठ जा यहाँ से। नहीं तो दूँगा एक लप्पड़।

पलटू—बरसो राम झड़ाके से, रिसालदार की बुढ़िया मर गयी फाके से। हमारा बाप गधा था!

रिसालदार - चुप, खोस दूँ बाँस मुँह मे?

पलटू—अजी, तो हँसी-हँसी मे रोये क्यों देते हो? वाह, हम तो अपने बाप को बुरा कहते हैं।

आजाद—क्या तुम्हारे बाप गधे थे?

पलटू—और कौन थे? आप ही बताइए। उमर भर डोली उठायी, मगर मरते दम तक न उठानी आयी।

रिसालदार - क्या कहार था?

पलटू - और नहीं तो क्या चमार था, या बेल[illegible]था? या आपकी तरह रिसालदार था?

आजाद—है नशे में तो क्या, बात पक्की कहता है।

पलटू - अजी, इसमे चोरी क्या है? हम कहार, हमारा बाप कहार।

आजाद - कहिए आपकी महरी तो खैरियत से है।

पलटू—चल शिकरम, चल घोडे, बिगुल बजे भोंपू-भोंपू। सामने काँटा, दुकान मे आटा, कबड़िये के यहाँ भाँटा, रिसालदार के लगाऊँ चाँटा।

रिसालदार - ऐसा न हो कि मैं नशा-वशा सब हिरन कर दूँ। जबान को लगाम दे।

पलटू—अच्छा सईस है।

आजाद—अबे, साईस, ईल्म दरियाव है।

पलटू—तेरा सिर नाव है, तू बनबिलाव है।

रिसालदार—कोचमैन, बग्घी ठहराओ।

पलटू—कोचमैन, बग्घी चलाओ।

मियाँ आजाद ने देखा, रिसालदार का चेहरा मारे गुस्से के लाल हो गया, तो उन्होंने बात टाल दी और पूछा—क्यों पलटू महराज, सच कहना तुमने तो कभी डोली नहीं उठायी? पलटू बोले—नहीं, कभी नहीं। हाँ, बरतन माँजे हैं। मगर होश सँभालते ही मदरसे में पढ़ने लगे और अब तार-घर में नौकर हैं। रिसलदार जी, लो, पीते हो? रिसलदार के मुँह के पास कुज्जी ले जा कर कहा—पियो, पियो। इतना कहना था कि रिसालदार जल भुनके खाक हो गये, तड से एक चाँटा रसीद किया, दूसरा और दिया, फिर तीन-चार और लगाये। पलटू मजे से बैठे चपते खाया किये। फिर एक कहकहा लगा कर बोले—अबे जा, बड़ा रिसालदार बना है। नाम बडा, दरसन थोडे। एक जूँ भी न मरी। रिसालदारी क्या खाक करते हो? चलो, अब तो एक कुज्जी पियो। हूँ फिर!

रिसालदार—भई, इसने तो नाक में दम कर दिया। पीटते-पीटते हाथ थक गये।

कोचमैन—रिसालदार साहब, यह क्या गुल मच रहा है?

आजाद—बड़ी बात कि तुम जीते तो बचे! हम समझते थे कि साँप सूँघ गया। यहाँ मार धाड भी हो गयी, तुम्हें खबर ही नहीं।

कोचमैन—मार-धाड! यह मार-धाड कैसी?

रिसालदार—देखो यह सुअर शराब पी रहा है और सबको गालियाँ देता है। मैंने खूब पीटा, फिर भी नहीं मानता।

पलटू—झूठे हो! किसने पीटा? कब पीटा? यहाँ तो एक जूँ भी न मरी।

कोचमैन—लाला, थोड़ी सी हमको भी पिलाओ।

पलटू और कोचमैन, दोनों कोच-बक्स पर जा बैठे और कुल्जियों का दौर चलने लगा। जब दोनों बदमस्त हुए, तो आपस में धौलधप्पा होने लगा। इसने उसके लपड़ लगाया, उसने इसके एक टीप जड़ी। कोचमैन ने पलटू को ढकेल दिया। पलटू ने गिरते ही पाँव पकड़ कर घसीटा, तो कोचमैन भी धम से गिरे। दोनों चिमट गये। एक ने कूले पर लादा, दूसरा खाली हुआ। मुक्का चलने लगा। कोचमैन ने झपट के पलटू की टँगड़ी ली, पलटू ने उसके पट्टे पकड़े। रिसालदार को गुस्सा आया, तो पलटू के बेभाव की चपतें लगायीं। एक, दो, तीन करके कोई पचास तक गिन गये आजाद ने देखा कि मै खाली हूँ। उन्होंने कोचमैन को चपतियाना शुरू किया।

आजाद—क्यों बच्चा, पियोगे शराब? सुअर, गाडी चलाता है कि शराब पीता है?

रिसालदार—तोड़ दूँ सिर, पटक दूँ बोतल सिर पर!

पलटू—तो आप क्या अकड रहे हैं? आपकी रिसालदारी को तो हमने देख लिया! देखो, कोचमैन के सिर पर आधे बाल रह गये, यहाँ बाल भी न बाँका हुआ।

रिसालदार—बस भई अब हम हार गये।

इस झंझट में तड़का हो गया। मुसाफिर रात भर के जगे हुए थे, झपकियाँ लेने लगे। मालूम नहीं, कितनी चौकियाँ आयीं और गयीं। जब लखनऊ पहुँचे, तो दोपहर ढल चुकी थी।

२३

मियाँ आज़ाद शिकरम पर से उतरे, तो शहर को देख कर बाग-बाग हो गये। लखनऊ में घूमे तो बहुत थे, पर इस हिस्से की तरफ आने का कभी इत्तिफ़ाक न हुआ था। सड़कें साफ, कूड़े-करकट से काम नहीं, गंदगी का नाम नहीं, वहाँ एक रंगीन कोठी नजर आयी, तो आँखों ने वह तरावट पायी कि वाह जी, वाह! उसकी बनावट और सजावट ऐसी भायी कि सुभान-अल्लाह। बस, दिल में खुब ही तो गयी। रविशें दुनिया से निराली, पौदों पर वह जोबन कि आदमी बरसों घूरा करे।

मियाँ आजाद ने एक हरे-भरे दरख्त के साये में आसन जमाया। टहनियाँ हवा के झोंकों से झूमती थीं, मेवे के बोझ से ज़मीन को बार-बार चूमती थीं। आज़ाद ठंडे-ठंडे हवा के झोंकों का मज़ा ले रहे थे कि एक मुसाफिर उधर से गुज़ारा। आज़ाद ने पूछा—क्यों साहब, इस कोठी में कौन रईस रहता है?

मुसाफिर—रईस नहीं, एक रईसा रहती हैं! बड़ी मालदार हैं। रात को रोज बजरे पर दरिया की सैर को निकलती हैं। उनकी दोनों लड़कियाँ भी साथ होती हैं।

आजाद—क्यों साहब लड़कियों की उम्र क्या होगी?

मुसाफिर—अब उमर का हाल मुझे क्या मालूम। मगर सयानी हैं, बड़ी तमीज़दार हैं और, बुढिया तो आफ़त की पुड़िया।

आजाद—शादी अभी नहीं हुई?

मुसाफिर—अभी शादी नहीं हुई; न कहीं बातचीत है। दोनों बहनों को पढ़ने लिखने और सैर करने के सिवा कोई काम नहीं। सफाई का दोनों को ख्याल है। खुदा करे, उनकी शादी अच्छे घरों मे हो।

आज़ाद—आपने तो वह खबर सुनायी कि मुझे उन लड़कियों को सैर करते हुए देखने का शौक हो गया।

मुसाफिर—तो फिर इसी जगह बिस्तर जमा रखिए।

आजाद—आप भी आ जायँ, तो मजा आये।

मुसाफिर—आ जाऊँगा।

आज़ाद—ऐसा न हो कि आप न आयें और मुझे भेड़िया उठा ले जाय।

मुसाफ़िर—आप बड़े दिल्लगीबाज मालूम होते हैं। यहाँ अपने वादे के सच्चे हैं। बस, शाम हुई और बंदा यहाँ पहुँचा।

यह कह कर वह हजरत तो चलते हुए और आजाद दरख्तों से मेवे तोड-तोड कर खाने लगे। फिर चिड़ियों का गाना सुना। फिर दरिया की लहरें देखीं। कुछ देर तक गाते रहे। यहाँ तक कि शाम हो गयी और वह मुसाफ़िर न आया। आजाद दिल में सोचने लगे, शायद हजरत झाँसा दे गये। अब शाम में क्या बाकी है। आना होता,

तो आ न जाते। शायद आज बेगम साहबा बजरे पर सैर भी न करेंगी। सैर करने का यही तो वक्त है। इतने में मियाँ मुसाफिर ने आ कर पुकारा।

आज़ाद—खैर, आप आये तो! मैं तो आपके नाम को रो चुका था।

मुसाफिर—खैर, आप हँसिए। देखिए, वह हाथी आ रहा है। दोनों पालकियाँ भी साथ हैं।

आज़ाद—कहाँ-कहाँ? किधर?

मुसाफिर—ईंट की ऐनक लगाओ! इतनी बड़ी पालकी नहीं देख सकते! हाथी भी नहीं दिखायी देता! क्या रतौंधी आती है?

आज़ाद—आहा हा! वह देखिए। ऐ, वह तो दरख्त के साये में रुक रहा।

मुसाफ़िर—घबराहट न [illegible] भी आ रही हैं। अब कोई और ज़िक्र छेड़िए, जिसमें मालूम हो कि [illegible] कर खड़े बातें कर रहे हैं।

आज़ाद—यह आप [illegible] खूब सू[illegible]! हो साहब, अबकी [illegible] का फ़सल खूब हुई। जिधर देखा, पटे पड़े हैं; मंडी जा[illegible] खाँचियों की खाँचियाँ। तरबूज को देख आइए, कोई टके को नहीं पूछना। और आम के सामने तरबूज़ [illegible] कौन हाथ लगाये!

ये बातें हो ही रही थीं कि बजरा तैयार हुआ। दोनों बहनें और बेगम साहब उसमें बैठीं। एकाएक पूरब की तरफ़ से काली मतवाली घटा [illegible] हुई उठी और बिजली ने चमकना शुरू किया। मल्लाह ने बजरे को खूँटे से बाँध [illegible] लड़कियाँ हाथी पर बैठीं और घर की तरफ चलीं। आज़ाद ने कहा—यह [illegible] ने हत्थे ही पर टोंक दिया, नहीं तो इस वक्त बजरे की सैर देख कर दिल की कली खिल जाती। आखिर दोनों आदमी घूमते-घामते एक बाग में पहुँचे, तो मियाँ मुसाफिर बोले—हजरत, अब की आम इतनी कसरत से पैदा हुआ [illegible] टके हज़ार लग गये। लेकिन बगीचे वाले का यह हाल है कि [illegible] राह चलते कोई आम उठा लिया और बस, चिमट पड़ा। अभी [illegible] की तो बात है। यहाँ से कोई चार कोस पर एक मुसाफ़िर मैदान में चला जाता था। एक काना खुतरा [illegible] से ज़मीन पर टपक पड़ा। मुसाफिर को क्या मालूम कि कौन इधर-उधर ताक रहा है, चुपके से आम उठा लिया। उठाना था कि दो गँवार लठ कंधे पर रखे, मार सारे का, मार सारे का करते निकल आये। मुसाफिर ने आम झट ज़मीन पर पटक दिया। लेकिन एक गँवार ने आते ही गालियाँ देनी शुरू कीं और दूसरे ने घूँसा ताना। मुसाफिर भी क्षत्रिय आदमी था, आग हो गया। मारे गुस्से के उसका बदन थर-थर काँपने लगा। बढ़के जो एक चाँटा देता है, तो एक गँवार लड़खड़ा के धम से ज़मीन पर। दूसरे ने जो यह हाल देखा, तो लठ ताना। राजपूत बगली डूब कर जा पहुँचा, एक आँटी जो देता है, तो चारों खाने चित। हम भी कल एक बाग में फँस गये थे। शामत जो आयी, तो एक दरख्त के साये में दोपहरिया मनाने बैठ गये। बैठना था कि एक ने तड से गाली दी। अब सुनिए कि गाली तो दी हमको, लेकिन एक पहलवान भी करीब ही बैठा था। सुनते ही चिमट गया और चिमटते ही कूल्हे पर लादा। गिरे मुँह के बल। पहलवान छाप

बैठा, हफ्ते गा‍ उ गिगे, एलर्बींगड़ा बाँध कर आस‍ान दिखा दिया और अपने शागिर्दों से कहा – च‍ ‍पर, और आम, पत्ते, बौर, टहनी जो पाओ, तोड़-तोड़ कर ‍क दो, पेड़ ‍, लेकिन लोगों ने समझाया कि उस्ताद, जाने दो; गाली देना तो इन‍ ‍ाह तो इनके सामने कोई बात ही नहीं, ये इसी लायक हैं कि खूब धुने जा

आज़ाद—क्या .‍ब, धु‍ क्यों जायें? ऐसा न करें, तो सारा बाग मुसाफिरों ही के लिए हो जाय ‍ पेड़ का पेड़, जड़ और फुनगी तक चट कर जायें। आप तो समझे कि यह एक आम के लिए कट मरा, मगर इतना नहीं सोचते कि एक ही एक करके हजार होते ‍ ‍इस ताकीद पर तो यह हाल है कि लोग बाग के बाग लूट खाते हैं; और जो ‍ ‍ ‍ मैं-मैं ‍ हो तो न जाने क्या हो जाय।

मियाँ मुसाफिर ‍ ‍ ‍ ‍वादा करके चले गये। आज़ाद आगे बढ़े, तो क्या देखते हैं कि एक आदमी ‍ ‍ ‍के को गोदी में लिये थपकी दे दे कर सुला रहा है—'आ जा री निंदिया, तू ‍ क्यों न जा; मेरे बाले को गोद सुला क्यों न जा।' आजाद एक दिल्लगीबाज आदमी, जा कर उससे पूछते क्या हैं—किसका पिल्ला है? वह भी एक ही काइयाँ था, बोला—दूर रह, क्यों पिला पड़ता है? आजाद यह जवाब सुन कर खुश हो गये। बोले—उस्ताद, हम तो आज तुम्हारे मेहमान होंगे। तुम्हारी हाजिरजवाबी से जी खुश हो गया। अब रात हो गयी है, कहाँ जायें? उस हँसोड़ आदमी ने इनकी बड़ी खातिर की, खाना खिलाया और दोनों ने दरवाजे पर ही लंबी तानी। तड़के मियाँ आजाद की नींद खुली। हँसोड़ को जगाने लगे। क्यों हजरत, पड़े सोया ही कीजिएगा या उठिएगा भी; वाह रे माचा-तोड़! बारे बहुत हिलाने-डुलाने पर मियाँ हँसोड़ उठे और फिर लेट गये; मगर पैताने की तरफ सिर करके। इतने में दो-चार दोस्त और आ गये। वाह भई, वाह, हम दो कोस से आये और यहाँ अभी खाट ही नहीं छोड़ी? भई, बड़ा सोनेवाला है। हमने मुँह-हाथ धोया, हुक्का पिया, बालों में तेल डाला चपातियाँ खायीं, कपड़े पहने और टहलते हुए यहाँ तक आये; मगर यह अभी तक पड़े ही हुए हैं। आखिर एक आदमी ने उनके कान में पानी डाल दिया। तब तो आप कुलबुलाये। देखो, देखो, हैं-हैं नहीं मानते! वाह, अच्छी दिल्लगी निकाली है।

एक दोस्त—ज़रा आँखें तो खोलिए।

हँसोड़—नहीं खोलते। आपका कुछ इजारा है?

दोस्त—देखिए, यह मियाँ आजाद तशरीफ लाये हैं, इधर मौलवी साहब खड़े हैं। इनसे तो मिलिए, सो-सो कर नहूसत फैला रखी है।

मौलवी—अजी हजरत!

हँसोड़—भई, दिक न करो, हमें सोने दो। यहाँ मारे नींद के बुरा हाल है, आपको दिल्लगी सूझती है।

आज़ाद—भाई साहब!

हँसोड़—और सुनिए। आप भी आये वहाँ से जान खाने। सवेरे-सवेरे आपको बुलाया किस गधे ने था? भलेमानस के मकान पर जाने का यह कौन वक्त, है भला? कुछ आपका कर्ज तो नहीं चाहता? चलिए, बोरिया-बँधना उठाइए। (आखें खोल कर) अख्खा, आप, हैं? माफ कीजिएगा। मैंने आपकी आवाज़ नहीं पहचानी।

मौलवी—कहिए, खाकसार की आवाज तो पहचानी? या कुछ मीन-मेख है?

हँसोड़—अख्खा, आप हैं। माफ़ कीजिएगा, मैं अपने आपे में न था।

मौलवी—हज़रत, इतना भी नींद के हाथ बिक जाना भला कुछ बात है! आठ बजा चाहते हैं और आप पड़े सो रहे हैं। क्या कल रतजगा था? खैर, मैं तो रुख-सत होता हूँ; आप हकीम साहब के नाम खत लिख भेजिएगा। ऐसा न हो कि देर हो जाय। कहीं फिर न लुढ़क रहिएगा। आपकी नींद से हम हारे।

हँसोड़—अच्छा मियाँ आजाद, और बातें तो पीछे होंगी, पहले यह बतलाइए कि खाना क्या खाइएगा? आज मामा बीमार हो गयी है और घर में भी तबीयत अच्छी नहीं है। मैंने रोज़े की नीयत की है। आप भी रोजा रख लें। फ़ायदे का फायदा और सवाब का सवाब।

आजाद—रोज़ा आपको मुबारक रहे। अल्लाह मियाँ हमें यों हीं ही बख्श देंगे। यह दिल्लगी किसी और से कीजिएगा।

हँसोड़—दिल्लगी के भरोसे न रहिएगा। मैं खरा आदमी हूँ। हाँ, खूब याद आया। मौल्वी साहब खत लिखने को कह गये हैं। दो पैसे का खून और हुआ। कल भी रोजा रखना पड़ा।

आज़ाद—दो पैसे क्यो खर्च कीजिएगा? अब तो एक पैसे के पोस्टकार्ड चले हैं।

हँसोड़—सच? एक डबल में! भई अँगरेज बड़े हिकमती हैं। क्यों साहब, वह पोस्टकार्ड कहाँ बिकते हैं?

आजाद—इतना भी नहीं जानते? डाकखाने में आदमी भेजिए।

हँसोड़—रोशनअली, डाकखाने से जा कर एक आने के पोस्टकार्ड ले आओ।

रोशन—मियाँ, मैं देहाती आदमी हूँ। अँगरेजी नहीं पढ़ा।

हँसोड़—अरे भई, तुम कहना कि वह लिफ़ाफ़े दीजिए, जो पैसे-पैसे में बिकते हैं। जा झट से, कुत्ते की चाल जाना और बिल्ली की चाल आना।

रोशन—अजी, मुझसे कहिए, तो मैं गधे की चाल जाऊँ और बिसखोपड़े की चाल आऊँ। मुल डाकवाले मुझे पागल बनायेंगे। भला आज तक कहीं पैसे में लिफ़ाफा बिका है?

हँसोड़—अबे, तुझे इस हुज्जत से क्या वास्ता? डाकखाने तक जायगा भी, या यहीं बैठे-बैठे दलीलें करेगा?

रोशन डाकखाने गया और पोस्टकार्ड ले आया। मियाँ हँसोड़ झपट कर कलम-दावात ले आये और खत लिखने बैठे। मगर पुराने जमाने के आदमी थे, तारीफ

के इतने लंबे-लंबे जुमले लिखने शुरू किये कि पोस्टकार्ड भर गया और मतलब खाक न निकला। बोले—अब कहाँ लिखें ?

आजाद—दो टप्पी बातें लिखिए। आप तो लगे अपनी लियाकत बघारने! दूसरा लीजिए।

हँसोड़ ने दूसरा पोस्टकार्ड लिखना शुरू किया—'जनाब, अब हम थोड़े में बहुत सा हाल लिखेंगे। देखिए, बुरा न मानिएगा। अब वह जमाना नहीं रहा कि वह बीघे भर के आदाब लिखे जायें। वह लंबी चौड़ी दुआएँ दी जायें। वह घर का कच्चा चिट्ठा कह सुनाना अब रिवाज के खिलाफ़ है। अब तो हमने क़सम खायी है कि जब क़लम उठायेंगे, दस सतरों से ज्यादा न लिखेंगे इसमें चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय। अब आप भी इस फ़ैशन को छोड़ दीजिए।' अरे, यह खत भी गया। अब तो लिख ने की भी जगह नहीं। लीजिए, बात करते-करते दो पैसे का खून हो गया। इस ने पैसे का टिकट लाते, तो खरे का खर्रा लिख डालते।

आजाद— देखूँ तो; आपने क्या लिखा है। वाह-वाह इस पँवाड़े का कुछ ठिकाना है। अरे साहब, मतलब से मतलब रखिए। बहुत बेहूदा न बकिए। खैर, अब तीसरा कार्ड लीजिए। मगर कलम को रोके हुए। ऐसा न हो कि आप फिर वाही-तबाही लिखने लगे।

हँसोड़—अच्छा साहब, यों ही सही। बस, खास खास बातें ही लिखूँगा।

यह कह कर उन्होंने यह खत लिखा—'जनाब फजीलतमआब मौलाना साहब, आप यह पैसलूचा लिफाफा देख कर घबरायेंगे कि यह क्या बला है। डाकखानेवालों ने यह नयी फुलझड़ी छोड़ी है। आप देखते हैं, इसमें कितनी जगह है। अगर मुख्तसर न लिखूँ तो क्या करूँ। लिखनी तो बहुत सी बातें हैं, पर इस लिफ़ाफ़े को देख कर सब आरजूएँ दिल में रही जाती हैं। देखिए, अभी लिखा कुछ भी नहीं, मगर कागज को देखता हूँ, तो एक तरफ़ सब का सब लिप गया। दूसरी तरफ़ लिखूँ, तो पकड़ा जाऊँ।' 'लो साहब, यह पोस्टकार्ड भी खतम हुआ। मियाँ आजाद, ये तीनों पैसे आपके नाम लिखे गये। आप चाहे दें टका नहीं, लेकिन सलाह आप ही ने दी थी।

आजाद—मैंने यह कब कहा था कि आप खत में अपनी जिंदगी की दास्तान लिख भेजें? यह खत है या रोड़ का चर्खा? इतने बड़े हुए, खत लिखने की लियाकत नहीं। समझा दिया, सिखला दिया कि बस, मतलब से मतलब रखो। मगर तुम कब मानने लगे। खुदा की कसम, तुम्हारी सूरत से नफरत हो गयी। बस, बेतुकेपन की हद हो गयी।

हँसोड़—वाह री किस्मत! तीन पैसे गिरह से गये और उल्लू के उल्लू बने। भला आप ही लिखिए, तो जाने। देखें तो सही, आप इस जरा से कागज पर कुल मतलब क्योंकर लिखते हैं। इसके लिए तो बड़ा भारी उस्ताद चाहिए, जो पिस्ते पर हाथी की तस्वीर बना दे।

आजाद—आप अपना मतलब मुझसे कहिए, तो अभी लिख दूँ।

हँसोड़—अच्छा सुनिए—मौलवी जामिनअली आपकी खिदमत में पहुँचे होंगे। उनको वह तीस रुपयेवाली जगह दिला दीजिएगा। आपका उम्र भर एहसान होगा। बस, इसी को खूब बढ़ा दीजिए।

आजाद—फिर वही झक! बढ़ा क्यों दूँ? यह न कहा कि बस, यही मेरा मतलब है, इसको बढ़ा दीजिए। लाओ पोस्टकार्ड, देखो, यों लिखते हैं—

'हजरत सलामत, मौलवी जामिनअली पहुँचे होंगे। वह तीस रुपयेवाला ओहदा उनको दिलवा दीजिए, तो एहसान होगा। उम्मेद है कि आप खैरियत से होंगे।'

लो, देखो, इतनी सी बात को इतना बढ़ाया कि तीन-तीन खत लिखे और फाड़े।

हँसोड़—खूब, यह तो अच्छा दुम-कटा खत है! अच्छा, अब पता भी तो लिखिए।

आजाद ने सीधा-सादा पता लिख कर हँसोड़ को दिखलाया, तो आप पूछने लगे—क्यों साहब, यह तो शायद वहाँ तक पहुँचे ही नहीं। कहीं इतना जरा सा पता लिखा जाता है? इसमें मेरा नाम कहाँ है, तारीख कहाँ है?

आजाद—आपका नाम बेवकूफों की फिहरिस्त में है और तारीख डाकखाने में।

हँसोड़—अच्छा लाइए, दो-चार सतरें मैं भी बढ़ा दूँ।

हजरत ने जो लिखना शुरू किया, तो पते की तरफ़ भी लिख डाला।—थोड़े लिखने को बहुत समझिएगा। आपका पुराना गुलाम हूँ। अब कुछ करते-धरते नहीं बन पड़ती।

आजाद—हैं-हैं! गारत किया न इसको भी?

हँसोड़—क्यों, जगह बाकी है, पूरा पैसा तो वसूल करने दो।

आजाद—जी, पैसा नहीं, एक आना वसूल हो गया! एक ही तरफ़ मतलब लिखा जाता है, दूसरी तरफ सिर्फ़ पता। आपसे तो हमने पहले ही कह दिया था।

यह बातें हो ही रही थीं कि कई लड़के स्कूल से निकले उनमें एक बड़ा शरीर था। किसी पर धप जमायी, किसी के चपत लगायी, किसी के कान गरमा दिये। अपने से ड्योढ़े-दूने तक को चपतियाता था। आजाद ने कहा—देखो, यह लौंडा कितना बदमाश है! अपने दूने तक की खबर लेता है।

हँसोड़—भई, खुदा के लिए इसके मुँह न लगना। इसके काटे का मंतर ही नहीं। यह स्कूल भर में मशहूर है। हजरत दो दफे चोरी की इल्लत में धरे गये। इनके मारे महल्ले भर का नाकों दम है। एक किस्सा सुनिए। एक दफे हजरत को शरारत का शौक चर्राया, फिर सोचने की जरूरत न थी। फौरन सूझती है। शरारत तो इसकी खमीर में दाखिल है। एक पाँव का जूता निकाल कर हजरत ने एक आलमारी पर रख दिया। जूते के नीचे एक किताब रख दी। थोड़ी देर बाद एक लड़के से बोले—यार, जरा वह किताब उतारो, तो कुछ देख-दाख लूँ; नहीं तो मास्टर साहब बेतरह टोकेंगे। सीधा-सादा लड़का चुपके से वह किताब उठाने गया। जैसे किताब उठायी, वैसे ही जूती मुँह पर आयी। सब लड़के खिलखिला कर हँस पड़े। मास्टर साहब अँगरेज थे। बहुत ही झल्ला कर पूछा—यह किसकी जूती का पाँव है?

अब आप बैठे चुपचाप पढ़ रहे हैं। गोया इनसे कुछ वास्ता ही न था। मगर इनका तो दर्जा भर दुश्मन था। किसी लड़के ने इशारे से कह दी। मास्टर ने आपको बुलाया और पूछा—वेल, दूसरा पाँव कहाँ तुम्हारा? दूसरा पाँव किडर?

लड़का—पाँव दोनों ये हैं।

मास्टर—वेल, जूती, जूती?

लड़का—जूती को खावे तूती।

मास्टर—बेंच पर खड़ा हो।

लड़का—यह सजा मंजूर नहीं; कोई और सजा दीजिए।

मास्टर—अच्छा, कल के सबक को सौ बार लिख लाना।

लड़का—वाह-वाह, और सबक याद कब करूँगा?

मास्टर—अच्छा, आठ आना जुर्माना।

दूसरे दिन आप आठ आने लाये, तो मोटे पैसे खट-खट करके मेज पर डाल दिये। मास्टर ने पूछा—अठन्नी क्यों नहीं लाया? बोले—यह शर्त नहीं थी।

इसी तरह एक बार एक भलेमानस के यहाँ कह आये कि तुम्हारे लड़के को स्कूल में हैजा हुआ है। उनके घर में रोना-पीटना मच गया। लड़के का बाप, चचा, भाई, मामू, सब दौड़ते हुए स्कूल पहुँचे। औरतों ने आठ-आठ आँसू रोना शुरू किया। वे लोग जो स्कूल गये, तो क्या देखते हैं, लड़का मजे से गेंद खेलता है। अजी, और क्या कहूँ, इसने अपने बाप को एक बार नमक के धोखे में फिटकरी खिला दी, और उस पर तुर्रा यह कि कहा, क्यों अब्बाजान, कैसा गहरा चकमा दिया?

शाम के वक्त बूढ़े मियाँ आजाद के पास आ कर बोले—चलिए, उधर बजरा तैयार है। आजाद तो उनकी ताक में बैठे ही थे, हँसोड़ को ले कर उनके साथ चल खड़े हुए। नदी के किनारे पहुँचे, तो देखा, बजरे लहरों पर फर्राटे से दौड़ रहे हैं। एक दरख्त के साये में छिपकर यह बहार देखने लगे। उधर उन दोनों हसीनों ने बजरे पर से किनारे की तरफ़ देखा, तो आजाद नजर पड़े। शरम से दोनों ने मुँह फेर लिये। लेकिन कनखियों से ताक रही थीं। यहाँ तक कि बजरा निगाहों से ओझल हो गया।

थोड़ी देर के बाद आजाद उन्हीं बूढ़े मियाँ के साथ उस कोठी की तरफ़ चले, जिसमें दोनों लड़कियाँ रहती थीं। कदम-कदम पर शेर पढ़ते थे, ठंडी साँसें भरते थे और सिर धुनते थे। हालत ऐसी खराब थी कि कदम-कदम पर उनके गिर पड़ने का खौफ था। हँसोड़ ने जो यह कैफियत देखी, तो झपट कर मियाँ आजाद का हाथ पकड़ लिया और समझाने लगे। इस रोने-धोने से क्या फायदा? आखिर यह तो सोचो कि कहाँ जा रहे हो? वहाँ तुम्हें कोई पहचानता भी है? मुफ्त में शरमिंदा होने को क्या ज़रूरत?

आजाद—भई, अब तो यह सिर है और वह दर। बस, आज़ाद है और उन बुतों का कूचा।

हँसोड़—यह महज नादानी है; यही हिमाकत की निशानी है। मेरी बात मानो,

बूढ़े मियाँ को फँसाओ, कुछ चटाओ, फिर उनकी सलाह के मुताबिक़ काम करो, बेसमझे-बूझे जाना और अपना सा मुँह लेकर वापस आना हिमाकत है।

ये बातें करते हुए दोनों आदमी कोठी के करीब पहुँचे। देखा, बूढ़े मियाँ इनके इंतजार में खड़े हैं। आज़ाद ने कहा—हज़रत, अब तो आप ही रास्ता दिखायें, तो मंजिल पर पहुँच सकते हैं; वर्ना अपना तो हाल खराब है।

बूढ़े मियाँ—भई, हम तुम्हारे सच्चे मददगार और पक्के तरफ़दार हैं। अपनी तरफ़ से तुम्हारे लिए कोई बात उठा न रखेंगे। लेकिन यहाँ का बाबा, आलम ही निराला है। यहाँ परिंदों के पर जलते हैं। हवा का भी गुजर होना मुश्किल है। मगर दोनों मेरी गोद की खिलायी हुई हैं, मौका पा कर आपका जिक्र जरूर करूँगा। मुश्किल यही है कि एक ऊँचे घर से पैगाम आया है, उनकी माँ को शौक चर्राया है कि वहीं ब्याह हो।

आजाद—यह तो आपने बुरी खबर सुनायी! कसम खुदा की, मेरी जान पर बन जायगी।

बूढ़े मियाँ—सब्र कीजिए, सब्र। दिल को ढारस दीजिए। अब इस वक्त जाइए, सुबह आइएगा।

आजाद रुखसत होने ही वाले थे, तो क्या देखते हैं, दोनों बहनें झरोखों से झाँक रही हैं। आजाद ने यह शेर पढ़ा—

हम यही पूछते फिरते हैं जमाने भर से;
जिनकी तकदीर बिगड़ जाती है, क्या करते हैं?

झरोखे में से आवाज आयी—

जीना भी आ गया मुझे, मरना भी आ गया;
पहचानने लगा हूँ तुम्हारी नजर को मैं।

इतना सुनना था कि मियाँ आजाद की आँखें मारे खुशी के डबडबा आयीं। झरोखे की तरफ फिर जो ताका, तो वहाँ कोई न था। चकराये कि किसने यह शेर पढ़ा। छलावा था, टोना था, जादू था, आखिर था क्या? इतने में बूढ़े मियाँ ने इशारे से कहा कि बस, अब जाओ और तड़के आओ।

दोनों दोस्त घर की तरफ चले, तो मियाँ हँसोड़ ने कहा—हजरत, खुदा के वास्ते मेरे घर पर कूद-फाँद न कीजिएगा, बहुत शेर न पढ़िएगा, कहीं मेरी बीबी को खबर हो गयी, तो जीना मुश्किल हो जायगा।

आजाद—क्या बीबी से आप इतना डरते हैं। आखिर खौफ काहे का?

हँसोड़—आपको इस झगड़े से क्या मतलब? वहाँ जरा भले आदमी की तरह बैठिएगा, यह नहीं कि गुल मचाने लगे। जो सुनेगा, वह समझेगा कि कहाँ के शोहदे जमा हो गये हैं।

आज़ाद—समझ गया, आप बीबी के गुलाम हैं। मगर हमें इससे क्या वास्ता। आम खाने से मतलब कि पेड़ गिनने से?

दोनों आदमी घर पहुँचे, तो लौंडी ने अन्दर से आ कर कहा—बेगम साहबा आपको कोई बीस बेर पूछ चुकी हैं। चलिए, बुलाती हैं। मियाँ हँसोड़ ने ड्योढ़ी पर कदम रखा ही था कि उनकी बीबी ने आड़े हाथों ही लिया। यह दिन-दिन भर आप कहाँ गायब रहने लगे? अब तो आप बड़े सैलानी हो गये। सुबह के निकले-निकले शाम को खबर ली। चलो, मेरे सामने से जाओ। आज खाना-वाना खैर-सल्लाह है। हलवाई की दूकान पर दादा जी का फ़ातिहा पढ़ो, तंदूरी रोटियाँ उड़ाओ। यहाँ किसी को कुत्ते ने नहीं काटा कि वक्त-बे-वक्त चूल्हे का मुँह काला किया जाय। भले आदमी दो-एक घड़ी के लिए कहीं गये तो गये; यह नहीं कि दिन-दिन भर पता ही नहीं। अच्छे हथकंडे सीखे हैं।

हँसोड़ ने चुपके से कहा—जरा आहिस्ता-आहिस्ता बातें करो। बाहर एक भलामानस टिका हुआ है। इतनी भी क्या बेहयाई?

इस पर वह चमक कर बोली—बस, बस, जबान न खुलवाओ बहुत। तुम्हें जो दोस्त मिलता है, वही ग..सवार, जिसके घर न द्वार, जाने कहाँ के उल्फ़ती इनको मिल जाते हैं, कभी किसी शरीफ आदमी से दोस्ती करते नहीं देखा। चलिए, अब दूर हूजिए, नहीं हम बुरी तरह पेश आयेंगे। मुझसे बुरा कोई नहीं।

मियाँ हँसोड़ बेचारे की जान अजाब में कि घर में बीबी कोसने सुना रही है, बाहर मियाँ आजाद आड़े हाथों लेंगे कि आपकी बीबी ने आपको तो खैर जो कुछ कहा, वह कहा ही मुझे क्यों ले डाला? मैंने उनका क्या बिगाड़ा था? अपना सा मुँह ले कर बाहर चले आये और आजाद से कहा—यार आज रोजे की नीयत कर लो। बीबी-जान फ़ौजदारी पर आमदा हैं। बात हुई और तिनक गयीं। महीनों ही रूठी रहती हैं। मगर क्या करूँ, अमीर की लड़की हैं, नहीं तो मैं एक झल्ला हूँ। मुझे यह मिजाज कहाँ पसंद। इसलिए भई, आज फ़ाका है।

आजाद—फ़ाका करें आपके दुश्मन। चलिए, किसी नानबाई हलवाई की दूकान पर। मजे से खाना खायँ।

हँसोड़—अरे यार, इतने ही होते तो बीबी की क्यों सुनते। टका पास नहीं, हलवाई क्या हमारा मामू है?

आज़ाद—इसकी फ़िक्र न कीजिए। आप हमारे साथ चलिए और मज़े से मिठाई चखिए। वह तदबीर सूझी है कि कभी पट ही न पड़े।

दोनों आदमी बाजार पहुँचे। आजाद ने रास्ते में हँसोड़ को समझा-बुझा दिया। हँसोड़ तो हलवाई की दूकान पर गये और आजाद जरा पीछे रह गये। हँसोड़ ने जाते ही जाते हलवाई से कहा—मियाँ आठ आने के पैसे दो और आठ आने की पँचमेल मिठाई। हलवाई ने ताज़ी-ताजी मिठाई तौल दी और आठ आने पैसे भी गिन दिये। हँसोड़ ने पैसे तो गाँठ में बाँधे और मिठाई उसी की दूकान पर चखने लगे। इतने में मियाँ आजाद भी पहुँचे और बोले—भई लाला, ...सन के लड्डू तो एक रुपये के तौल देना। उसने एक रुपये ... ...गर

उनके हाथ में दी। इतने में मियाँ हँसोड़ ने लकड़ी उठायी और अपनी राह चले। हलवाई ने ललकारा—मियाँ, चले कहाँ? पहले रुपया तो देते जाओ।

हँसोड़—रुपया! अच्छा मज़ाक है! अबे, क्या तूने रुपया नहीं पाया। यहाँ पहले रुपया देते हैं, पीछे सौदा लेते हैं। अच्छे मिले! क्या दो-दो दफ़े रुपया लोगे? कहीं मैं थाने में रपट न लिखवा दूँ! मुझे भी कोई गँवार समझे हो! अभी चेहरेशाही दे चुका हूँ। अब क्या किसी का घर लेगा?

अब हलवाई और हँसोड़ में तकरार होने लगी। बहुत से आदमी जमा हो गये। कोई कहता है, लाला घास तो नहीं खा गये हो; कोई कहता है, मियाँ एक रुपये के लिए नियत डामाडोल न करो; ईमान सलामत रहेगा, तो बहुत रुपये मिलेंगे।

आज़ाद—लाला, कहीं इसी तरह मेरा भी रुपया न भूल जाना

हलवाई—क्या, आपका रुपया! आपने रुपया किसको दिया?

अब तो मुग़ालता है, वही हलवाई को उल्लू बनाता है। लोगों ने बहुत कुछ लानत-मलामत की कि शरीफ आदमी को बेइज़्ज़त करते हो। इतने में उस हलवाई का बुड्ढा बाप आया, तो देखता क्या है कि दूकान पर भीड़ लगी हुई है। पूछा, क्या माजरा है? क्या दूकान लुट गयी? एक दिल्लगी-दिल ने कहा—अजी, लुट तो नहीं गयी मगर अब तुम्हारी दूकान की साख जाती रही! अभी एक भलेमानस ने इनको रुपया फेंका। अब कहता है कि हमने रुपया पाया ही नहीं। उसको छोड़ा, तो दूसरे शरीफ का दामन पकड़ लिया कि तुमने रुपया नहीं दिया; हालाँकि वह बेचारे सैकड़ों क़समें खाते हैं कि मैं दे चुका हूँ। हलवाई बड़ा तीखा बुड्ढा था, सुनते ही आग हो गया। झल्ला कर अपने लड़के की खोपड़ी पर तान के एक चपत लगायी और बोला—कहता हूँ कि भंग न खाया कर, मानता ही नहीं। जा कर बैठा दूकान पर।

मियाँ आज़ाद और हँसोड़ ने मज़े से डेढ़ रुपये की मिठाई बाँध ली, और आठ आने के पैसे वादे में। जब घर पहुँचे, तो खूब मिठाई चखी। बची बचायी अंदर भेज दी। हँसोड़ ने कहा—यार इसी तरह कहीं से रुपया दिलवाओ, तो जानें। आज़ाद ने कहा—यह कितनी बड़ी बात है? अभी चलो। मगर किसी से माँग-मूँग कर कुछ अशर्फ़ियाँ बाँध लो। मियाँ हँसोड़ ने अपने एक दोस्त से शाम को लौटा देने के वादे पर कुछ अशर्फ़ियाँ लीं! दोनों ने रोशनअली को साथ लिया और बाज़ार चले। पहले एक महाजन को अशर्फ़ियाँ दिखायीं और परखवायीं। बेचते हैं, खरी-खोटी देख लीजिए। महाजन ने उनको खूब कसौटी पर कसा और कहा—उन्नीस के हिसाब से लेंगे। तब हँसोड़ दूसरी दूकान पर पहुँचे। वहाँ भी अशर्फ़ियाँ गिनवायीं और परखवायीं। इसके बाद आज़ाद ने तो अशर्फ़ियाँ ले कर घर की राह ली और मियाँ हँसोड़ एक कोठी में पहुँचे। वहाँ कहा कि हमको दो सौ अशर्फ़ियाँ खरीदनी हैं। महाजन ने देखा, आदमी शरीफ है, फ़ौरन दो सौ अशर्फ़ियाँ उनके

सामने ढेर कर दीं। बीस रुपये की दर बतायी। हँसोड़ ने महाजन के मुनीम से एक पर्चे पर हिसाब लिखवाया और अशर्फियाँ बाँध कर कोठी के बाहर पहुँचे। गुल मचा—हाँय-हाँय, लेना-लेना, कहाँ-कहाँ! मियाँ हँसोड़ पैतरा बदल सामने खड़े हो गये। बस, दूर ही से बात चीत हो। सामने आये और मैंने तुला हाथ दिया।

महाजन—ऐ साहब, रुपये तो दीजिए?

हँसोड़—कैसे रुपये? हम नहीं बेचते।

महाजन—क्या कहा, नहीं बेचते? क्या अशर्फियाँ आपकी हैं?

हँसोड़—जी, और नहीं तो क्या आपके बाप की हैं? हम नहीं बेचते, आपका इजारा है कुछ? आप हैं कौन जबर्दस्ती करनेवाले?

इतने मे आजाद भी वहाँ आ पहुँचे। देखा, तो महाजन और उनके मुनीम जी गुल मचा रहे हैं—तुम अशर्फियाँ लाये कब थे? और हँसोड़ कह रहे हैं, हम नही बेचते। सैकड़ों आदमी जमा थे। पुलीस का एक जमादार भी आ मौजूद हुआ।

जमादार—यह क्या झगड़ा है लाला चुन्नामल? वह नहीं बेचते, तो जबर्दस्ती क्यों करते हो? अपने माल पर सबको अख्तियार है।

महाजन—अच्छी पंचायत करते हो जमादार! यहाँ चार हजार रुपये पर पानी फिरा जाता है, आप कहते हैं, जाने भी दो। ये अशर्फियाँ तो हमारी हैं। यह मियाँ खरीदने आये थे, हमने गिन दीं। बस, बाँध बूँध कर चल खड़े हुए।

एक आदमी—वाह, भला कोई बात भी है! यह अकेले, आप दस। जो ऐसा होता, तो यह कोठी के बाहर भी आने पाते? आप सब मिल कर इनका अचार न निकाल लेते? इतने बड़े महाजन, और दो सौ अशर्फियों के लिए ईमान छोड़े देते हो!

जमादार—बुरी बात!

हँसोड—देखिए, आप बाजार भर में दरियाफ्त कर लें कि हमने कितनी दूकानों मे अशर्फियाँ दिखलायी और परखवायी हैं? बाजार भर गवाह है, कुछ एक-दो आदमी वहाँ थोड़े थे? इसको भी जाने दीजिए। यह पर्चा पढ़िए। अगर यह बेचते होते, तो बीस की दर से हिसाब लगाते, या साढे उन्नीस से? मुफ्त मे एक शरीफ के पीछे पड़े हैं, लेना एक न देना दो।

आखिर यह तय हुआ कि बाजार मे चल कर तहकीकात की जाय। मियाँ हँसोड साहूकार, उनके मुनीम, जमादार और तमाशाई, सब मिलकर बाजार चले। वहां तहकीकात की, तो दल्लालों और दूकानदारों ने गवाही दी कि बेशक इनके पास अशर्फियाँ थीं और इन्होंने परखवायी भी थीं। अभी-अभी यहाँ से गये थे।

जमादार—लाला साहब, अब खैर इसी में है कि चुपके रहिए; नहीं तो बेढब ठहरेगी। आपकी साख जायगी और मुनीम की शामत आ जायगी।

महाजन—क्या अंधेर है! चार हजार रुपयों पर पानी पड गया, इतने रुपये कभी

उम्र भर में नहीं जमा किये थे, और जो है, हमी को उल्लू बनाता है। खैर साहब, लीजिए, हाथ धोये।

तीनों आदमी घर पहुँचे, तो बाँछे खिली जाती थीं। जाते ही दो सौ अशर्फ़ियाँ खन-खन करके डाल दीं।

आजाद—देखा, यों लाते हैं। अब ये अशर्फियाँ हमारी भाभीजान के पास रखो।

हँसोड़—भाई, तुम एक ही उस्ताद हो। आज से मैं तुम्हारा शागिर्द हो गया।

आजाद—ले, भाभी से तो खुश-खबरी कह दो। बहुत मुँह फुलाये बैठी थीं।

मियाँ हँसोड़ ने घर में जा कर कहा—कहाँ हो! क्या सो रहीं?

बीबी—क्या कमाई करके लाये हो, डपट रहे हो?

हँसोड़—(अशर्फ़ियाँ खनका कर) लो, इधर आओ, बहुत मिज़ाज न करो। ये लो, दस हज़ार रुपये की अशर्फ़ियाँ।

बीबी—ये बुत्ते किसी और को दीजिएगा। ये तो वही हैं, जो अभी मिर्ज़ा के यहाँ से मँगवायी थीं।

हँसोड़—वह यह हैं, इधर।

बीबी—देखूँ, (खिलखिला कर) किसी के यहाँ फाँदे थे क्या? आखिर लाये किसके घर से? बस, चुपके से हमारे संदूकचे में रख दो।

हँसोड़—क्यों न हो, मार खायँ गाज़ी मियाँ, माल खायँ मुजाविर।

बीबी—सच बताओ, कहाँ मिल गयी? तुम्हें हमारी क़सम!

हँसोड़—यह उन्हीं की करामात है, जिन्हें तुम शोहदा और लुच्चा बनाती थीं।

बीबी—मियाँ, हमारा क़ुसूर माफ़ करो। आदमी की तबीयत हमेशा एक सी थोड़े ही रहती है। मैं तो तुम्हारी लौंडी हूँ।

आजाद—(बाहर से) हम भी सुन रहे हैं भाभी साहब! अभी तो आपने हमारे भाई बेचारे को डपट लिया था, घर से बाहर कर दिया था; हमको जो गालियाँ दीं, सो घाते में। अब जो अशर्फ़ियाँ देखीं, तो प्यारी बीबी बन गयीं। अब इनके कान न गरमाइएगा; यह बेचारे बेबाप के हैं।

बीबी ने अन्दर से कहा—आप हमारे मेहमान हैं। आपको क्या कहूँ, आपकी हँसी सिर आँखों पर।

२४

बड़ी बेगम साहबा पुराने जमाने की रईसजादी थीं, टोने टोटके में उन्हें पूरा विश्वास था। बिल्ली अगर घर में किसी दिन आ जाय, तो आफ़त हो जाय। उल्लू बोला और उनकी जान निकली। जूते पर जूता देखा और आग हो गयीं। किसी ने सीटी बजायी और उन्होंने कोसना शुरू किया। कोई पाँव पर पाँव रख कर सोया और आपने ललकारा। कुत्ता गली में रोया और उनका दम निकल गया। रास्ते में काना मिला और उन्होंने पालकी फेर दी। तेली की सूरत देखी और खून सूख गया। किसी ने जमीन पर लकीर बनायी और उसकी शामत आयी। रास्ते में कोई टोक दे, तो उसके सिर हो जाती थीं। सावन के महीने में चारपाई बनवाने की कसम खायी थी। जब देखा कि लड़कियाँ सयानी हो गयीं तो शादी की फ़िक्र हुई। ऊँचे-ऊँचे घरों से पैग़ाम आने लगे। बड़ी लड़की हुस्नआरा की शादी एक रईस के लड़के से तय हो गयी। हुस्नआरा पढ़ी-लिखी औरत थी। उसे यह कब मंजूर हो सकता था कि बिना देखे-भाले शादी हो जाय। जिसकी सूरत ख्वाब में भी नहीं देखी, जिसकी लियाक़त और आदत की ज़रा भी खबर नहीं, उसके साथ हमेशा के लिए बाँध दी जाऊँगी। सहेलियाँ तो उसे मुबारकबाद देती थीं और उसकी जान पर बनी हुई थी। या खुदा, किससे अपने दिल का दर्द कहूँ? बोलूँ; तो अड़ोस-पड़ोस की औरतें ताने दें कि यह लड़की तो सवार को खड़े-खड़े घोड़े पर से उतार ले। दिल ही दिल में बेचारी कुढ़ने लगी। अपनी छोटी बहन सिपहआरा से अपना दुःख कहती थी और दोनों बहनें गले मिल कर रोती थीं।

एक दिन दोनों बहनें बैठी हुई अखबार पढ़ रही थीं। उसमें एक शरीर लड़के की दास्तान छपी हुई थी। पढ़ने लगीं—

'यह हजरत दो बार क़ैद भी रह चुके हैं, और अफ़सोस तो यह है कि एक रईस के साहबज़ादे हैं। परसों रात को आपने यह शरारत की कि एक रईस के यहाँ कूदे और कोठरी का ताला तोड़ कर अंदर घुसने लगे। महाजन की लड़की ने जो आहट पायी तो कुलबुला कर उठ खड़ी हुई और अपनी माँ को जगाया। जरी जागो तो, बिल्ली ने तेल का घड़ा गिरा दिया; बिल-बिल! उसकी माँ गड़बड़ा कर जो उठी, तो आप कोठरी के बाहर एक चारपाई के नीचे दबक रहे। उसने अपने लड़के को जगाया। वह जवान ताल ठोक कर चारपाई पर से कूदा, चोर का कलेजा कितना? आप चारपाई के नीचे से घबरा कर निकले। महाजन का लड़का भी उनकी तरफ़ झपट पड़ा और उन्हें उठा कर दे मारा। तब उस बदमाश ने कमर से छुरी निकाली और उस महाजन के पेट में भोक दी। आनन-फानन जान निकल गयी। पड़ोसी और चौकीदार दौड़ पड़े और उस शरीफ़जादे को गिरफ्तार कर लिया। अब वह हवालात

में है। अफसोस की बात तो यह है कि उसकी शादी नवाब फरेदूँजंग की लड़की से करार पायी थी जिसका नाम हुस्नआरा है।'

यह लेख पढ़ कर हुस्नआरा आठ-आठ आँसू रोने लगी। उसकी छोटी बहन उसके गले से चिमट गयी और उसको बहुत कुछ समझा बुझा कर अपनी बूढ़ी माँ के पास गयी। अखबार दिखा कर बोली—देखिए, क्या गज़ब हो गया था, आपने बेदेखे-भाले शादी मंजूर कर ली थी। बूढ़ी बेगम ने यह हाल सुना, तो सिर पीट कर बोलीं—बेटी, आज तड़के जब मैं पलँग से उठी, तो पट से किसी ने छींका और मेरी बायीं आँख भी फड़कने लगी। उसी दम पाँव तले मिट्टी निकल गयी। मैं तो समझती ही थी कि आज कुछ असगुन होगा। चलो, अल्लाह ने बड़ी खैर की। हुस्नआरा को मेरी तरफ से छाती से लगाओ और कह दो कि जिसे तुम पसंद करोगी, उसी के साथ निकाह कर दूँगी।

सिपहआरा अपनी बहन के पास आयी, तो बाँछे, खिली हुई थीं। आते ही बोली—लो बहन, अब तो मुँह-माँगी मुराद पायी? अब उदास क्यों बैठी हो? खुदा-कसम, वह खुश-खबरी सुनाऊँ कि जी खुश हो जाय।

हुस्नआरा—ऐ है, तो कुछ कहोगी भी। यहाँ क्या जाने, इस वक़्त किस ग़म मे बैठे हैं, यह खुशी का कौन मौका है?

सिपहआरा—ऐ वाह, हम यो बता चुके। बिना मिटाई लिये न बतावेंगे। अम्माँ-जान ने कह दिया कि आप जिसके साथ जी चाहे, शादी कर ले। वह अब दखल न देंगी। हाँ, शरीफ़ज़ादा और कल्ले-ठल्ले का जवान हो।

हुस्नआरा—खूबसूरती औरतों में देखी जाती है, मरदों को इससे क्या काम? हाँ, काला-कलूटा न हो, बस।

सिपहआरा—यह आप क्या कहती हैं। 'आदमी-आदमी अंतर, कोई हीरा कोई कंकर।' क्या चाँद मे गरहन लगाओगी?

हुस्नआरा—ऐ, तो सूत न कपास, कोरी से लटम-लठा!

इतने में बुड्ढे मियाँ पीर बख्श ने आवाज दी—बेटी, कहाँ हो, मैं भी आऊँ?

सिपहआरा—आओ, आओ, तुम्हारी ही तो कसर थी। आज सवेरे-सबेरे कहाँ थे? कल तो बजरा ऐसा डावाडोल होता था, जैसे तिनका बहा चला जाता है। कलेजा धक-धक करता था।

पीरबख्श—तुमसे कुछ कहना है बेटी। देखो, तुम हमारी पोतियों से भी छोटी हो। तुम दोनों को मैंने गोदियों खिलाया है, और तुम्हारी माँ हमारे सामने ब्याह आयी हैं। तुम दोनों को मै अपने बेटे से ज्यादा चाहता हूँ। मैं जो कहूँ, उसे कान लगा कर सुनना। तुम अब सयानी हुई। अब मुझे तुम्हारी शादी की फिक्र है। पहले तुमसे सलाह ले लूँ, तो बेगम साहब से अर्ज करूँ। यों तो कोई लड़की आज तक बिन ब्याही नहीं रही; लेकिन वर उन्हीं लड़कियों को अच्छा मिलता है, जो खुश-नसीब हैं। तुम्हारी माँ हैं तो पुरानी लकीर की फकीर, मगर यह मेरा जिम्मा कि जिसे तुम पसंद

करो, उसे वह भी मंजूर कर लेगी। आजकल यहाँ एक शरीफ नौजवान आकर ठहरे हैं। सूरत शाहजादों की सी, आदत फ़रिश्तों की सी, चलन भलेमानसों का सा, बदन छरहरा, दाढ़ी-मूँछ का नाम नहीं। अभी उठती जवानी है। शेर कहने मे, बोलचाल में, इल्म व कमाल मे अपना सानी नहीं रखते। तसवीर ऐसी खींचे कि बोल उठे। बाँक-पटे मे अच्छे-अच्छे बाँकों के दाँत खट्टे कर दिये। उनकी नस नस मे खूबियाँ कूट-कूट कर भरी हैं। अगर हुस्नआरा के साथ उनका निकाह हो जाय, तो खूब हो। पहले तुम देख लो। अगर पसंद आये, तो तुम्हारी माँ से जिक्र करूँ। हाँ, यह वही जवान हैं, जो बजरे के साथ तुमको देखते हुए बाग मे जा रहे थे। याद आया?

हुस्नआरा—वहाँ तो बहुत से आदमी थे, क्या जाने, किसको कहते हो। बेदेखे-भाले कोई क्या कहे।

सिपहआरा—मतलब यह कि दिखा दो। भला देखे तो, हैं कैसे!

पीरबख्श—ऐसे जवान तो हमने आज तक कभी देखे न थे। वह नूर है कि निगाह नहीं ठहरती। कसम खुदा की, जो बात करे, रीझ जाय।

हुस्नआरा—हम बतावें, जब हम बजरों पर हवा खाने चले तो उन्हें भी वहाँ लाओ? हम उनको देख ले, तब तुम अम्माँ से कहो।

यहाँ ये बाते हो रही थीं, उधर मियाँ आजाद अपने हँसोड़ दोस्त के साथ इसी कोठी की तरफ़ टहलते चले आ रहे थे। रास्ते में आठ-दस गधे मिले। गधेवाला उन सबों पर कोड़े फटकार रहा था। आजाद ने कहा—क्यों भई, आखिर इन गधो ने तुम्हारा क्या बिगाडा है, जो पीटते जाते हो? कुछ खुदा का भी खौफ है, या नही? गधेवाले ने इसका तो कुछ जवाब न दिया, गट से एक और जमायी। तब तो मियाँ आजाद आग हो गये। बढ़ कर गधेवाले के कई चोटे लगाये, अबे आखिर इनमें जान है या नहीं? अगर न चलते, तो हम कहते—खैर यों ही सही; खासे जा रहे हैं खटाखट, और आप पीट रहे हैं।

हँसोड़—आप कौन होते हैं बोलनेवाले? उसके गधे हैं, जो चाहता है, करता है।

आजाद—भई, हमसे तो यह नहीं देखा जाता कि किसी बेजबान पर कोई आदमी जुल्म करे और हम बैठे देखा करें।

कोई दस ही कदम आगे बढ़े होंगे कि देखा, एक चिड़ीमार कंपे में लासा लगाये, टट्टी पर पत्ते जमाये चिड़ियों को पकड़ता फिरता है। मियाँ आजाद आग भभूका हो गये। इतने में एक तोता जाल में आ फँसा। तब तो मियाँ आजाद बौखला गये। गुल मचा कर कहा—ओ चिडीमार, छोड़ दे इस तोते को, अभी-अभी छोड़। छोड़ता है या आऊँ? चिडीमार हक्का-बक्का हो गया। बोला—साहब, यह तो हमारा पेशा है। आखिर इसको छोड़ दें, तो करे फिर क्या? आजाद बोले—भीख माँग, मजदूरी कर, मगर यह पेशा छोड़ दे। यह कह कर आपने झोला, कंपा, जाल, सब छीन-छान लिया। झोले को जो खोला तो, सब जानवर फुर से उड़ गये। इतना ही नहीं, कंपे को काट-

कूट कर फेंका, जाल को नोच-नाच कर बराबर किया। तब जेब से निकाल कर दस रुपये चिड़ीमार को दिये और बड़ी देर तक समझाया।

हँसोड़—यार, तुम बड़े बेढब आदमी हो। मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि तुम सनक गये हो।

आजाद—भई, तुम समझते ही नहीं कि मेरा असल मतलब क्या है?

हँसोड़—आप अपना मतलब रहने दीजिए। मेरा-आपका साथ न होगा। कहीं आप किसी बिगड़े-दिल से भिड़ पडे, तो आपके साथ मेरी भी शामत आ जायगी।

आजाद—अच्छा, गुस्से को थूक दीजिए। चलिए हमारे साथ।

हँसोड़—अब तो रास्ते में न लड़ पड़िएगा?

आजाद—कह तो दिया कि नहीं।

दोनों आदमी आगे चले, तो क्या देखते हैं, राह मे एक गाड़ीवान बैल की दुम ऐंठ रहा है। आजाद ने ललकारा—अबे ओ गाड़ीवान, खबरदार, जो आज से बैल की दुम ऐंठी।

हँसोड़—फिर वही बात! इतनी जल्दी भूल गये?

आजाद चुप हो गये। दोनों आदमी चुपचाप चलने लगे। थोड़ी देर में कोठी के करीब जा पहुँचे। एकाएक बूढ़े मियाँ पीरबख्श आते दिखायी दिये। अलेकसलेम के बाद बातें होने लगीं।

आज़ाद—कहिए, उधर भी गये थे?

पीरबख्श—हाँ साहब, गया क्यों न था। सवेरे-सवेरे जा पहुँचा और आपकी इतनी तारीफ़ की कि पुल बाँध दिये। और फिर आप जानिए, गोकि बंदा आलिम नहीं, फ़ाजिल नहीं, मुंशी नहीं, लेकिन बड़े-बड़े आलिमों की आँखें तो देखी हैं, ऐसी लच्छेदार बातें कीं कि आपका रंग जम गया। अब आपको देखने को बेकरार हैं। हाँ, एक बुरी पख यह है कि आपका इम्तिहान लेंगी। ऐसा न हो कि वह कुछ पूछ बैठें और आप बग़लें झाँकने लगें।

हँसोड़—भई, इम्तिहान का तो नाम बुरा। शायद रह गये, तो फिर?

आजाद—फिर आपका सिर! रह जाने की एक ही कही। इम्तिहान के नाम से आप जैसे गौखों की जान निकलती है या मेरी?

पीरबख्श—तो मैं जा कर कह दूँ कि वह आये हैं।

यह कह कर पीरबख्श घर में गये और कहा—वह आये हैं, कहो, तो बुला लाऊँ।

सिपहआरा ने कहा—अजनबी का खट से घर में चला आना बुरा। पहले उनसे कहिए, चल कर बाग़ की सैर करें।

पीरबख्श बाहर गये और मियाँ आज़ाद को ले कर बाग में टहलने लगे। दोनों बहनें झरोखों से देखने लगीं। सिपहआरा बोली—बहन, सचमुच यह तो तुम्हारे लायक हैं। अल्लाह ने यह जोड़ी अपने हाथों से बनायी है।

हुस्नआरा—ऐं वाह, कैसी नादान हो! भला शादी-ब्याह भी यों हुआ करते हैं?

सिपहआरा—मै एक न मानूँगी।

हुस्नआरा—मुझसे क्यों झगड़ती हो, अम्माँजान से कहो।

सिपहआरा—अच्छा, तो मैं अम्माँजान के यहाँ जाती हूँ; मगर देखिए, मुकर न जाइएगा।

यह कहकर सिपहआरा बड़ी बेगम के पास पहुँची और आजाद का जिक्र छेड कर बोली—अम्माँजान, मैंने तो आज तक ऐसा खूबसूरत आदमी देखा ही नहीं। शरीफ़, हँसमुख और पढ़े-लिखे। आप भी एक दफ़े देख ले।

बड़ी बेगम ने सिपहआरा को छाती से लगाया और हँस कर कहा—तू मुझसे उड़ती है? यह क्यों नहीं कहती कि सिखायी पढ़ायी आयी हूँ।

सिपहआरा—नहीं अम्माँजान, आप उन्हें ज़रूर बुलायें।

बेगम—हुस्नआरा से भी पूछा? वह क्या कहती हैं?

सिपहआरा—वह तो कहती हैं, अम्माँजान जिससे चाहें, उससे करें। मगर दिल उनका आया हुआ है।

बेगम—अच्छा, बुलवा लो।

सिपहआरा वहाँ से लौटी, तो मारे खुशी के उछली पड़ती थी। फौरन पीरबख्श को बुला कर कहा—आप मियाँ आजाद को अन्दर लाइए। अम्माँजान उन्हें देखना चाहती हैं।

जरा देर में पीरबख्श मियाँ आजाद को लिये हुए बेगम के पास पहुँचे।

आजाद—आदाब बजा लाता हूँ।

बेगम—जीते रहो बेटा! आओ, इधर आकर बैठो। मिजाज तो अच्छे हैं? सिपहआरा तुम्हारी बड़ी तारीफ करती थी, और बेशक तुम हो इस लायक। तुमको देख कर तबीयत बहुत खुश हुई।

आजाद—आपकी जियारत का बहुत दिनों से शौक था। सच है, बड़े-बूढ़ों की क्या बात है।

बेगम—क्यों बेटा, हाथी को ख्वाब में देखे, तो कैसा?

आजाद—बहुत बुरा। मगर हाँ, अगर हाथी किसी पर अपनी सूँड़ फेर रहा हो, तो समझना चाहिए कि आयी हुई बला टल गयी।

बेगम—शाबाश, तुम बडे लायक हो।

बेगम साहब ने मियाँ आजाद को बडी देर तक बिठाया और साथ ही खाना खिलाया। आजाद हाँ में हाँ मिलाते जाते थे और दिल ही दिल में खिलखिलाते थे। जब शाम हुई, तो आजाद रुखसत हुए।

आसमान पर बादल छाये हुए थे, तेज हवा चल रही थी, मगर दोनों बहनों को बजरे पर सैर करने की धुन समायी। दरिया के किनारे आ पहुँचीं। पीरबख्श ने बजरा खोला और दोनों बहनों को बिठा कर सैर कराने लगे। बजरा बहाव पर फर्राटे से बहा जाता था। ठंढी-ठंढी हवाएँ, काली-काली घटाएँ, सिपहआरा की प्यारी-

प्यारी बातें, बूँदों का गिरना, लहरों का थिरकना अजब बहार दिखाता था। इतने में हवा ने वह जोर बाँधा कि बेड़ा उछलने लगा। अब बजरे कि यह हालत है कि डाँवाडोल हो रहा है। यह डूबा, वह डूबा। पीरबख्श था तो खुर्राट, लेकिन उसके भी हाथ-पाँव फूल गये. सैर-दरिया की कहानियाँ सब भूल गये। दोनों बहनें काँपने लगीं। एक दूसरे को हसरत की निगाह से देखने लगीं। दो भी दोनो रो रही थीं। मियाँ आजाद अभी तक दरिया के किनारे टहल रहे थे। बजरे को पानी में चक्कर खाते देखा, तो होश उड़ गये। इतने में एक दफे बिजली चमकी। सिपहआरा डर कर दौड़ी, मगर मारे घबराहट के नदी में गिर पड़ी। डूबते ही पहले गोता खाया और लगी हाथ-पाँव फटफटाने। जरा देर के बाद फिर उभरी और फिर गोता खाया। आज़ाद ने यह कैफियत देखी, तो झटपट कपड़े उतार कर धम से कूद ही तो पड़े। पहली डुबकी मारी, तो सिपाहआरा के बाल हाथ में आये। उन्होंने झप से जुल्फ को पकड़कर खींचा, तो वह उभरी। यह वही सिपहआरा है, जो किसी अनजान आदमी को देख कर मुँह छिपा लेती और फुर्ती से भाग जाती थी। मियाँ आजाद उसे साथ लिये, मल्लाही चीरते और खड़ी लगाते बजरे की तरफ चले। लेकिन बजरा हवा से बातें करता चला जाता था। पानी बल्लियों उछलता था। आजाद ने जोर से पुकारा—ओ मियाँ पीरबख्श, बजरा रोको, खुदा के वास्ते रोको, पीरबख्श के होश-हवाश उड़े हुए थे। बजरा खुदा की राह पर जिधर चाहता था, जाता था। मियाँ आजाद बहुत अच्छे तैराक थे; लेकिन बरसों से आदत छुटी हुई थी। दम फूल गया। इत्तिफ़ाक से एक भँवर में पड़ गये। बहुत जोर मारा, मगर एक न चल सकी। उस पर एक मुसीबत यह और हुई कि सिपहआरा छूट गयी। आजाद की आँखों से आँसू निकल पड़े। फिर बड़ी फुर्ती से झपटे, लाश को उभारा और लादकर चले। मगर अब देखते हैं, तो बजरे का कहीं पता ही नहीं। दिल में सोचे, बजरा डूब गया और हुस्नआरा लहरों का लुकमा बन गयी। अब मैं सिपहआरा को लादे-लादे कहाँ तक जाऊँ। लेकिन दिल में ठान ली कि चाहे बचूँ, चाहे डूबूँ, सिपह आरा को न छोड़ूँगा। फिर चिल्लाये—यारो, कोई मदद को आओ। एक बुड्ढा आदमी किनारे पर खड़ा यह नजारा देख रहा था। आजाद को इस हालत में देख-कर आवाज दी—शाबाश बेटा, शाबाश। मैं अभी आता हूँ। यह कह कर उसने कपड़े उतारे और लँगोट बाँध कर धम से कूद ही तो पड़ा। उसकी आवाज का सुनना था कि मियाँ आजाद को ढारस हुआ, वह तेजी के साथ चलने लगे। बुड्ढे आदमी ने दो ही हाथ खड़ी के लगाये थे कि साँस फूल गयी और पानी ने इस जोर से थपेड़ा दिया कि पचास गज के फासले पर हो रहा। अब न आजाद को वह सूझता है और न उसको आजाद नजर आते हैं। मल्लाह ने बजरे पर से बुड्ढे को देख लिया। समझा कि मियाँ आजाद हैं। पुकारा—अरे भई आजाद, जोर करके इधर आओ। बुड्ढे ने बहुत हाथ-पैर मारे, मगर न आ सका। तब पीरबख्श ने डाँड सँभाले और बुड्ढे की तरफ चले। मगर अफ़सोस, दो-चार ही हाथ रह गया

था कि एक मगर ने भाड़ सा मुँह खोल कर बुड्ढे को निगल लिया। मल्लाह ने सिर पीटकर रोना शुरू किया—हाय आजाद, तुम भी जुदा हुए, बेचारी सिपहआरा का साथ दिया, यह आवाज मियाँ आजाद के कानों में भी पड़ी। समझे, वही बुड्ढा, जो टीले पर से कूदा था, चिल्ला रहा है। इतने में बजरा नजर आया तो बाग-बाग हो गये। अब यह बिलकुल बेदम हो चुके थे; लेकिन बजरे को देखते ही हिम्मत बँध गयी। जोर से खड़ी लगानी शुरू की। बजरे के करीब आये, तो पीरबख्श ने पह-चाना। मारे खुशी के तालियाँ बजाने लगे। आजाद ने सिपहआरा को बजरे मे लिटा दिया और दोनों ने मिल कर उसके पेट से पानी निकाला। फिर लिटा कर अपने बैग में से कोई दवा निकाली और उसे पिला दी। अब हुस्नआरा की फिक्र हुई। वह बेचारी बेहोश पड़ी हुई थी। आजाद ने उसके मुँह पर पानी के छींटे दिये, तो जरा होश आया। मगर आँखें बंद। होश आते ही पूछा—प्यारी सिपहआरा कहाँ है? आजाद जीते बचे? पीरबख्श ने पुकार कर कहा—आजाद तुम्हारे सिरहाने बैठे हैं और सिपहआरा तुम्हारे पास लेटी हैं। इतना सुनना था कि हुस्नआरा ने आँख खोली और आजाद को देख कर बोली—आजाद, मेरी जान अगर तुम पर से फिदा हो जाय, तो इस वक्त मुझे उससे ज्यादा खुशी हो, जितनी सिपहआरा के बच जाने से हुई। मैं सच्चे दिल से कहती हूँ, मुझे तुमसे सच्ची मुहब्बत है।

इतने में दवा का असर जो पहुँचा, तो सिपहआरा भी आहिस्ता से उठ बैठी। दोनों बहनें गले मिल कर रोने लगीं। हुस्नआरा बार-बार आजाद की बलाएँ लेती थी। मैं तुम पर वारी हो जाऊँ, तुमने आज वह किया, जो दूसरा कभी न करता। हवा बँध गयी थी, बजरा आहिस्ता-आहिस्ता किनारे पर आ लगा। आजाद ने घास पर लेट कर कहा। उफ, मर मिटे!

हुस्नआरा—बेशक सिपहआरा की जान बचायी, मेरी जान बचायी, इस बेचारे बुड्ढे की जान बचायी। इससे बढ कर अब और क्या होगा!

पीरबख्श—मियाँ आजाद, खुदा तुमको ऐसा बुड्ढा करे कि तुम्हारे परपोते मुझसे बड़े हो-होकर तुम्हारे सामने खेलें। मैंने कुछ और ही समझा था। एक आदमी तैरता हुआ जाता था। मैंने समझा, तुम हो।

आजाद—हाँ, हाँ, मैं तो उसे भूल ही गया था। फिर वह कहाँ गया?

पीरबख्श—क्या कहूँ, उसको तो एक मगर निगल गया।

आजाद—अफसोस! कितना दिलेर आदमी था। मुझे मुसीबत में देख कर धम से कूद पड़ा।

सिपहआरा—मुझ नसीबों-जली के कारन उस बेचारे की जान मुफ्त में गयी। मेरी आँखों में अँधेरा सा छाया हुआ है। इस दरिया का सत्यानाश हो जाय! जिस वक्त मैं अपना गिरना और गोते लगाना याद करती हूँ, तो रोएँ खड़े हो जाते हैं। पहले तो मैंने खूब हाथ पाँव मारे, मगर जब नीचे बैठ गयी तो मुँह में पानी जाने लगा। मैंने दोनों हाथों से मुँह बंद कर लिया। फिर मुझे कुछ याद नहीं।

हुस्नआरा—बड़े गाढ़े वक़्त काम आये।

पीरबख्श—अब आप ज़रा सो रहिएगा, तो थकावट कम हो जायगी।

तीनों आदमी थक कर चूर हो गये थे। वहीं हरी-हरी घास पर लेटे, तो तीनों की आँख लग गयी। चार घंटे तक सोते रहे। जब नींद खुली, तो घर चलने की ठहरी। पीरबख्श ने कहा—इस वक़्त तो बजरे पर सवार होना हिमाकत है। सड़क-सड़क चलें।

आज़ाद—अजी, तो क्या हर दम तूफ़ान आया करता है!

दोनों बहनों ने कहा—हम तो इस वक़्त बजरे पर न चढ़ेंगे, चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय।

आज़ाद ने कहा—जो इस वक़्त झिझक गयीं, तो उम्र भर खौफ़ लगता रहेगा।

हुस्नआरा—चलिए, रहने दीजिए, अब तो मारे थकावट के आपके बदन में इतनी ताक़त भी नहीं रही होगी कि किसी की लाश को दो कदम भी ले चलिए। ना साहब, बंदी नहीं जाने की। बजरे की सूरत देखने से बदन काँपता है। हम तुम्हें भी न जाने देंगे।

सिपहआरा—आप बजरे पर बैठें, और हम इधर दरिया में फाँद पड़े!

आख़िर यह तय हुआ कि पीरबख्श बजरा लायें और तीनों आदमी ऊपर-ऊपर घर की तरफ चलें।

आज़ाद ने मौक़ा पाया, तो बोले—अब तो हमसे कभी परदा न होगा? हम आपको अपना दिल दे चुके। हुस्नआरा ने कुछ जवाब न दिया, शरमा कर सिर झुका लिया।

रात बहुत ज्यादा बीत गयी थी। आज़ाद पीरबख्श के साथ सोये। सुबह को उठे, तो क्या देखते हैं, हुस्नआरा के साथ उनकी दो फुफेरी बहनें छमाछम करती चली आती हैं। एक का नाम जहानआरा था, दूसरी का गेतीआरा। दोनों बहनों ने आज़ाद को झरोखे से देखा। तब जहानआरा हुस्नआरा से बोली—बहन, तुम्हारी पसंद की मैं क़ायल हो गयी। ऐसा बाँका जवान हमारी नज़र से नहीं गुज़रा।

सिपहआरा—हम कहते न थे कि मियाँ आज़ाद सा तरहदार जवान कम होगा। फिर, मेरी तो उन्होंने जान ही बचायी है। जब तक जिऊँगी, तब तक उनका दम भरूँगी।

इतने में पीरबख्श भी आ पहुँचे। जहानआरा ने उनसे कहा—क्यों जी, इन सन से सफेद बालों में खिज़ाब क्यों नहीं लगाते? अब तो आप कोई दो सौ से ऊपर होंगे। क्या मरना बिलकुल भूल बैठे? तुम्हें तो मौत ने भी साँड़ की तरह छोड़ दिया!

पीरबख्श—बेटी, बहुत कट गयी, थोड़ी बाकी है! यह भी कट जायगी। खिज़ाब लगा कर रुसियाह कौन हो!

सिपहआरा—आज़ाद से तो अब कोई परदा है नहीं। उन्हें भी न बुला लें?

गेतीआरा—कभी की जान-पहचान होती, तो मुज़ायक़ा न था।

आज़ाद ने सामने से आकर कहा—फ़क़ीरों से भी जान-पहचान की ज़रूरत! फ़क़ीरों से कैसा परदा?

गेतीआरा—यह फ़क़ीर आप कब से हुए?

आज़ाद—जब से हसीनों की सोहबत हुई।

गेतीआरा—आप शायर भी तो हैं! अगर तबीयत हाजिर हो, तो इस मिसरे पर एक ग़ज़ल कहिए—

मरज़ें-इश्क लादवा देखा।

आजाद—तबीयत की तो न पूछिए, हर वक्त हाजिर रहती है; रहा दिमाग़, वह अपने में नहीं। फिर भी आपका हुक्म कैसे टालूँ। सुनिए—

शेख, काबे में तूने क्या देखा;
हम बुतों से मिले; खुदा देखा।
सोज-नाला ने कुछ असर न किया;
हमने यह साज भी बजा देखा।
आह ने मेरी कुछ न काम किया;
हमने यह तीर भी लगा देखा।
हर मरज की दवा मुकर्रर है;
मरज़े-इश्क लादवा देखा।
अक्ले नाखुन है गरचे अबरुए-यार;
पर न इसको गिरहकुशा देखा।
हमने देखा न आशिके आज़ाद;
और जो देखा तो मुब्तिला देखा!

गेतीआरा—माशा-अल्लाह, कैसी हाज़िर तबीयत!

आजाद—इन्साफ के तो यह माने हैं कि मैंने आपको खुश किया, अब आप मुझको खुश करें।

गेतीआरा—आप कुछ फ़र्माएँ, मैं कोशिश करूँगी।

आजाद—यह तो मेरी सूरत ही से जाहिर है कि अपना दिल हुस्नआरा को दे चुका हूँ।

गेतीआरा—क्यों हुस्नआरा, मान क्यों नहीं जातीं? यह बेचारे तुम्हें अपना दिल दे चुके।

हुस्नआरा—वाह, क्या सिफारिश है! क्यों मान लें, शादी भी कोई दिल्लगी है? मै बेसमझे-बूझे हाँ न करूँगी। सुनिए साहब, मैं आप की अदा, आपकी वफ़ा, आपकी चाल-ढाल, आपकी लियाक़त और शराफत पर दिल और जान से आशिक हूँ; मगर यह याद रखिए, मैं ऐसा काम नहीं करना चाहती, जिससे पढ़ी-लिखी औरत बदनाम हों। हमें ऐसा चाल-चलन रखना चाहिए, जो औरों के लिए नमूना हो। इस शहर की सब औरतें मुझे देखती रहती हैं कि यह किस तरफ़ को जाती है। आपको कोई यहाँ जानता नहीं। आप पहले यहाँ शरीफों में इज्जत पैदा कीजिए, आपके यहाँ पंद्रहवें दिन मुशायरा हो और लोग आपको जानें। कोई कोठी किराये पर लीजिए ओर उसे खूब सजाइए, ताकि लोग समझें कि सर्लके का आदमी है और रोटियों

को मुहताज नहीं। शरीफ़ज़ादों के सिवा ऐरों-ग़ैरों से सोहबत न रखिए और हर रोज जुमा की नमाज पढ़ने के लिए मसजिद जाया कीजिए। लेकिन दिखावा भी जरूरी है। एक सवारी भी रखिए और सुबह-शाम हवा खाने जाइए, अगर इन बातों को आप मानें, तो मुझे शादी करने में कुछ उज्र नहीं। यों तो मैं आपके एहसान से दबी हुई हूँ, लेकिन आप समझदार आदमी हैं, इसलिए मैंने साफ़-साफ़ समझा दिया।

आजाद—ऐसे समझदार होने से बाज आये! हम गँवार ही सही। आपने जो कुछ कहा, सब हमें मंजूर है; लेकिन आप भी मुझे कभी-कभी यहाँ तक आने की इजाजत दीजिए और आपकी ये बहनें मुझसे मिला करें।

गेतीआरा—जरी फिर तो कहिएगा! आपको अपनी हुस्नआरा से काम है, या उनकी बहनों से? हुस्नआरा ने आपसे जो कुछ कहा, उसको ग़ौर कीजिए। अभी जल्दी न कीजिए। आप शराब तो नहीं पीते?

आज़ाद—शराब की सूरत और नाम से नफ़रत है।

हुस्नआरा—फिर आपके पास बजरे पर कहाँ से आयी, जो आपने सिपहआरा को पिलायी।

आजाद—वाह, वह तो दवा थी।

जहानआरा—ऐ बाजी, भैया कब से सो रहा है। जरा जगा दो। दो घड़ी खेलने को जी चाहता है।

गेतीआरा—ना, कहीं ऐसा ग़ज़ब भी न करना। बच्चे जब सोते हों, तो उनको जगाना न चाहिए। उनको जगाना उनकी बाढ़ को रोकना है।

हुस्नआरा—इस वक्त हवा बड़े जोर से चल रही है और तुमने भैया को बारीक शरबती पहना दी है। ऐ दिलबहार, फलालेन का कुर्ता नीचे पहना दो। यह रुपया कौन भैया के हाथ में दे गया? और जो खेलते-खेलते मुँह मे ले जाय तो?

दिलबहार—ऐ हुजूर, छीन तो लूँ, जब वह दे भी। वह तो रोने लगता है।

हुस्नआरा—देखो, हम किस तरकीब से ले लेते हैं, भला रोवे तो, (चुमकार कर) भैया, (तालियाँ बजा कर) भैया, ला, तुझे चीज मँगा दूँ।

यह कह कर हुस्नआरा ने लड़के को गुदगुदाया। लड़का हँस पड़ा और रुपया हाथ से अलग।

दिलबहार—मौसी को कैसे चुपचुपाते रुपया दे दिया और हमने हाथ ही लगाया था कि गुल मचाने लगा।

गेतीआरा—उम्र भर तुमने लड़के पाले, मगर पालना न आया। बच्चों का पालना कुछ हँसी-खेल थोड़े ही है।

दिलबहार—अभी मेरा सिन ही क्या है कि ये बातें जानूँ।

गेतीआरा—देखो, रात को दरख़्त के तले बच्चे को न सुलाया करो। बच्चा बीमार हो जाता है।

दिलबहार—हाँ, सुना है, लड़के भूत-प्रेत के झपेट में आ जाते हैं।

हुस्नआरा—झपेट और भूत-प्रेत सब ढकोसला है। रात को दरख्त के नीचे सोना इसलिए बुरा है कि रात को दरख्त से जहरीली हवा निकलती है।

इधर तो ये बातें हो रही थीं, औरतों की तालीम का ज़िक्र छिड़ा हुआ था, हुस्नआरा औरतों की तालीम पर ज़ोर दे रही थी, उधर मियाँ पीरबख्श को बाल बनवाने का शौक जो चर्राया, तो हज्जाम को बुलवाया। हज्जाम बाल बनाते-बनाते कहने लगा—हुज़ूर, एक दिन मैं सराय में गया था, तो वहाँ यह भी टिके हुए थे—यही जो जवान से हैं, गोरे-गोरे, बजरे पर सैर करने गये थे—हाँ, याद आ गया, मियाँ आज़ाद, वह भी वहाँ मिले। वह साहब तुम्हारे, उस सराय की भठियारी से शादी करने को थे, मुल फिर निकल गये। उसने इन पर नालिश जड़ दी, तो वहाँ से भागे। उस भठियारी को ऊँट पर सवार करके रात को लिये फिरते थे। पीरबख्श ने यह किस्सा सुना, तो सन्नाटे में आ गये। बोले—खबरदार, और किसी से न कहना।

मियाँ आजाद हुस्नआरा के यहाँ से चले, तो घूमते-घामते हँसोड़ के मकान पर पहुँचे और पुकारा। लौंडी बोली कि वह तो कहीं गये हैं, आप बैठिए।

आजाद—भाभी साहब से हमारी बंदगी कह दो और कहो, मिज़ाज पूछते हैं।

लौंडी—बेगम साहबा सलाम कहती हैं और फ़र्माती हैं कि कहाँ रहे?

आज़ाद—इधर-उधर मारा-मारा फिरता था।

लौंडी—वह कहती हैं, हमसे बहुत न उड़िए। यहाँ कच्ची गोलियाँ नहीं खेलीं। कहिए, आपकी हुस्नआरा तो अच्छी है। यह बजरे पर हवा खाना और यहाँ आ कर बुत्ते बताना।

आजाद—आपसे यह कौन कच्चा चिट्ठा कह गया?

लौंडी—कहती हैं कि मुझसे भी परदा है? इतना तो बता दीजिए कि बरात किस दिन चढ़ेगी? हमने सुना है, हुस्नआरा आप पर बेतरह रीझ गयीं। और, क्यों न रीझें, आप भी तो माशाअल्लाह गबरू जवान हैं।

आजाद—फिर भाई किसके हैं, जैसे वह खूबसूरत, वैसे हम।

लौंडी—फ़र्माती हैं कि धाँधली रहने दीजिए।

आजाद—भाभी साहब, यह घूँघट कैसा? हमसे कैसा परदा?

इतने में किसी ने पीछे से मियाँ आज़ाद की आँखें बंद कर लीं।

आजाद चिल्ला उठे—भाई साहब।

हँसोड़—वहाँ तो आपने खूब रंग जमाया।

आज़ाद—अजी, आपकी दुआ है, मैं भला क्या रंग जमाता। मगर दोनों बहनें एक से एक बढ़ कर हैं। हुस्नआरा की दो बहनें और आयी थीं। वल्लाह, खूब-मज़े रहे।

हँसोड़—खुशनसीब हो भाई, जहाँ जाते हो, वहीं पौ-बारह होते हैं। वल्लाह, मान गया।

आजाद—मगर भाई, एक ग़लती हो गयी। उन्होंने किसी तरह भाँप लिया कि मैं शराब भी पीता हूँ।

हँसोड़—बड़े अहमक हो भई, कोई ऐसी हरकत करता है। तुम्हारी सूरत से नफ़रत हो गयी।

आजाद—अजी, मुझे तो अपनी सूरत से आप नफ़रत हो गयी। मगर अब कुछ तदबीर तो बताओ?

हँसोड़—उसी बुड्ढे को साँटो, तो काम चले।

इस वक़्त दोनों आदमी खाना खा कर लेटे। जब शाम हुई, तो दोनो हुस्नआरा की तरफ़ चले। भरी बरसात के दिन, कोई गोली के टप्पे पर गये होंगे कि पश्चिम की तरफ़ से मतवाली काली घटा झूमती हुई आयी और दम के दम में चारों तरफ

अँधेरा छा गया। दूकानदार दूकानें झटपट बंद करने लगे। खोंचेवालों ने खोंचा सँभाला, और लंबे हुए। कोई टट्टू को सोंटे पर सोंटा लगाता है; किसी का बैल दुम दबाये भागा जाता है। कहार पालकी उठाये, कदम जमाये उड़े जाते हैं, दहने बंगी, बायें चरखा—हूँ-हूँ-हूँ। पैदल चलनेवाले तेज कदम उठाते हैं, पाँयचे चढ़ाते हैं। किसी ने जूतियाँ बगल में दबायीं और सरपट भागा। किसी ने कमर कसी और घोड़े को एँड़ दी। अँधेरा इस गज़ब का है कि राह सूझती ही नहीं, एक पर एक भद-भद करके गिरता है और मियाँ आज़ाद कहकहे लगाते हैं। क्यों हज़रत, पूछना न पाछना और धमाक से छुदक जाना!

आजाद—बस, और थोड़ी दूर रह गया है।

हँसोड़—आपको थोड़ी दूर होगा, यहाँ तो कदम भर चलना मुश्किल हो रहा है। जरी देख-भाल कर कदम उठाइएगा। उफ्, हवा ने क्या जोर बाँधा, मैं तो वल्लाह, काँपने लगा। अगर सलाह हो, घर पलट चलें। वह लीजिए, बूँदें भी पड़ने लगीं। किसी भले-मानुस के पास जाने का भला यह कौन मौका है।

आजाद—अजी, ये बातें उससे कीजिए, जो अपने होश में हो। यहाँ तो दीवाना-पन सवार है।

इतने में बड़ी बेगम का महल नज़र पड़ा। आज़ाद ने मारे खुशी के टोपी उछाल दी। तब तो हँसोड़ ने बिगड़ कर उसे एक अंधे कुएँ में फेंक दिया और कहा—बस, तुममें यही तो ऐब है कि अपने आपे में नहीं रहते। 'ओछे के घर तीतर, बाहर रखूँ कि भीतर।'

आजाद—या तंग न कर नासेह नादाँ, मुझे इतना,
या लाके दिखा दे दहन ऐसा, कमर ऐसी।

तुम रूखे-फीके आदमी, चेहरे पर भूसा उड़ रहा है। तुम ये मुहब्बत की बातें क्या जानो!

जब महल के करीब पहुँचे, तो चौकीदार ने ललकारा—कौन? मियाँ हँसोड़ तो झिझके, मगर, आजाद ने बढ़ कर कहा—हम हैं, हम।

चौकीदार—अजी, हम का नाम तो फ़र्माइए, या ठंडी-ठंडी हवा खाइए।

आज़ाद—हम! हमारा नाम मियाँ आज़ाद है। तुम दिलबहार को इत्तिला कर दो।

खैर, किसी तरह आज़ाद अंदर पहुँचे। हुस्नआरा उस वक्त सो रही थीं और सिपहआरा बैठी एक शायर का दीवान पढ़ रही थी। आजाद की खबर सुनते ही बोली—कहाँ हैं कहाँ, बुला लाओ। मियाँ आजाद मकान में दाखिल हुए।

सिपहआरा—वह आयें घर में हमारे
खुदा की क़ुदरत है;
कभी हम उनको, कभी
अपने घर को देखते हैं।

आज़ाद—यह रूखी खातिरदारी कब तक होगी? हमें दूल्हा भाई कब से कहिएगा?

सिपहआरा—खुदा वह दिन दिखाये तो।

आज़ाद—आपकी बाजी कहाँ हैं?

सिपहआरा—आज कुछ तबीयत नासाज़ है। दिलबहार, जगा दो। कहो मियाँ आज़ाद आये हैं।

हुस्नआरा अँगड़ाई लेती अठखेलियाँ करती चलीं और आज़ाद के करीब आ कर बैठ गयीं।

आजाद—इस वक़्त हमारे दिल की कली खिल गयी।

सिपहआरा—क्यों नहीं, फिर मुँह-माँगी मुराद भी तो मिल गयी।

आज़ाद—आखिर अब हम कब तक तरसा करें? आज मैं बेकबुलवाये रहूँ, तो आज़ाद नहीं।

हुस्नआरा—हमारा तो इस वक़्त बुरा हाल है। नींद उमड़ी चली आती है। अब हमें सोने जाने दीजिए।

आज़ाद—(दुपट्टा पाँव से दबाकर) हाँ, जाइए, आराम कीजिए।

हुस्नआरा—शरारत से आप बाज नहीं आते। दामन तो दबाये हैं और कहते हैं, जाइए-जाइए, क्योंकर जायँ?

आज़ाद—दुपट्टे को फेंक जाइए।

हुस्नआरा—बला है, यह किसी और को सिखाइए, (बैठकर) अब साफ़ कह दूँ

आज़ाद—ज़रूर; मगर आपके तेवर इस वक़्त बेढब हैं, खुदा ही खैर करे। जो कुछ कहना हो कह डालिए। खुदा करे, मेरे मतलब की बात मुँह से निकले!

हुस्नआरा—आप लायक हैं, मगर एक परदेसी आदमी, ठौर न ठिकाना, घर न बार। किसी से आपका ज़िक्र करूँ, तो क्या कहूँ? किसके लड़के हैं? किसके पोते हैं? किस खानदान के हैं? शहर भर में यही खबर मशहूर हो जायगी कि हुस्नआरा ने एक परदेसी के साथ शादी कर ली। मुझे तो इसकी परवा नहीं; लेकिन डर यह है कि कहीं इस निकाह से लोग पढ़ी-लिखी औरतों को नीची नज़र से न देखने लगें। बात वह करनी चाहिए कि धब्बा न लगे। मैं पहले भी कह चुकी हूँ और अब फिर कहती हूँ कि शहर में नाम पैदा कीजिए, इज्जत कमाइए, चार भले आदमियों में आपकी कदर हो।

आज़ाद—कहिए, आग में फाँद पड़ूँ?

हुस्नआरा—माशा-अल्लाह, कही भी तो निराली? अगर आप आग में फाँद पड़ें, तो लोग आपको सिड़ी समझेंगे।

सिपहआरा—कोई किताब लिखिए।

हुस्नआरा—नहीं; कोई बहादुरी की बात हो कि जो सुने, वाह-वाह करने लगे, और फिर अच्छी-अच्छी रईसजादियाँ चाहें कि उनके साथ मियाँ आज़ाद का ब्याह हो जाय। इस वक्त मौका भी अच्छा है। रूम और रूस में लड़ाई छिड़नेवाली है।

रूम की मदद करना आपका फ़र्ज़ है। आप रूम की तरफ़ से लड़िए और जवाँमर्दी के जौहर दिखाइए, तमगे लटकाये हुए आइए, तो फिर हिंदोस्तान भर में आप ही की चर्चा हो।

आज़ाद—मंजूर, दिलोजान से मंजूर। जाऊँ और बीच खेत जाऊँ। मरे, तो सीधे जन्नत में जायँगे। बचे, तो तुमको पायँगे।

सिपहआरा—मेरे तो लड़ाई के नाम से होश उड़े जाते हैं। (हुस्नआरा से चिमट कर) बाजी, तुम कैसी बेदर्द हो, कहाँ काले कोसों भेजती हो। तुम्हें खुदा की कसम, इस खयाल से बाज़ आओ। आज़ाद जायँगे, तो फिर उनकी सूरत देखने को तरस जाओगी। दिन-रात आँसू बहाओगी। क्यों मुफ़्त में किसी की जान की दुश्मन हुई हो?

किनारे दरिया पहुँच के पानी
पिया नहीं एक बूँद तिस पर,
चढ़ी है मौजों की हमसे त्यौरी
हुबाब आँखें बदल रहे हैं।

यह कहते-कहते सिपहआरा की आँखों से गोल-गोल आँसू की बूँदें गिरने लगीं।

हुस्नआरा—हैं-हैं, बहन, यह मुफ़्त का रोना धोना अच्छा स्वाँग है, वह मुबारक दिन मेरी आँखों के सामने फिर रहा है, जब आज़ाद तमगे लटकाये हुए हमारे दरवाजे पर खड़े होंगे।

मियाँ आज़ाद पर इस वक्त वह जोबन था कि ओहोहो, जवानी फटी पड़ती थी। आँखें सुर्ख, जैसे कबूतर का खून; मुखड़ा गोरा, जैसे गुलाब का फूल; कपड़े वह बाँके पहने थे कि सिर से पाँव तक एक-एक अंग निखर गया था; टोपी वह बाँकी की बाँकपन भी लोट जाय; कमर से दोहरी तलवारें लटकी हुई। हुस्नआरा को उनका चाँद सा मुखड़ा ऐसा भाया कि जी चाहा, इसी वक्त निकाह कर लूँ; मगर दिल पर ज़ब्त किया।

आज़ाद—आज हम घर से मौत की तलाश में ही निकले थे—

जब से सुना कि मरने का है. नाम जिंदगी;
सिर से कफ़न को बाँधे कातिल को ढूँढते हैं।

सिपहआरा—प्यारे आज़ाद, खुदा के वास्ते इस खयाल से बाज़ आओ।

आज़ाद—या हाथ तोड़ जायँगे, या खोलेंगे नकाब। हुस्नआरा सी बीबी पाना दिल्लगी नहीं। अब हम फिर शादी का हर्फ़ भी जबान पर लायें, तो जवाँमर्द नहीं। अब हमारी इनकी शादी उसी रोज होगी, जब हम मैदान से सुर्खरू हो कर लौटेंगे। हम सिर कटवायें, जख्म पर जख्म खायेंगे मगर मैदान से कदम न हटायेंगे।

सिपहआरा—जो आपने दालान तक भी कदम रखा तो हम रो-रो कर जान दे देंगे।

आज़ाद—तुम घबराओ नहीं, जीते बचे, तो फिर आयेंगे। हमारे दिल से हुस्न

आरा की और तुम्हारी मुहब्बत जाती रहे, यह मुश्किल है। तुम मेरी खातिर से रोना-धोना छोड़ दो। आखिर क्या लड़ाई मे सब के सब मर ही जाते हैं?

सिपहआरा—इतनी दूर जा कर ऐसी ही तकदीर हो, तो आदमी लौटे। अब मेरी जिंदगी मुहाल है। मुझे दफ़ना के जाना। अल्लाह जाने, किन-किन जंगलों में रहोगे, कैसे-कैसे पहाड़ों पर चढ़ना होगा, कहाँ-कहाँ लड़ना-भिड़ना होगा। एक जरा सी गोली तो हाँथी का काम तमाम कर देती है, इन्सान की कौन कहे। तुम वहाँ गोलियाँ खाओगे और हम दिन-रात बैठे-बैठे कुढ़ा करेंगे। एक-एक दिन एक-एक बरस हो जाएगा। और फिर क्या जाने, आओ न आओ, लड़ाई-चढ़ाई पर जाना कुछ हँसी थोड़े ही है। यह तो तुम्हीं मरदों का काम है। हम तो यहीं से नाम सुन-सुन कर काँपते हैं।

हुस्नआरा—मेरी प्यारी बहन, जरा सब्र से काम लो।

सिपहआरा—न मानूँगी, न मानूँगी।

हुस्नआरा—सुन तो लो।

सिपहआरा—जी, बस, सुन चुकी। खून कीजिए, और कहिए, सुन तो लो।

हुस्नआरा—यह क्या बुरी-बुरी बातें मुँह से निकालती हो। हमें बुरा मालूम होता है। मैं उनको जबरदस्ती थोड़े ही भेजती हूँ। वह तो आप जाते हैं।

सिपहआरा—समुंदर समुंदर जाना पड़ेगा। कोई तूफ़ान आ गया, तो जहाज ही डूब जायगा।

आज़ाद—अब रात ज़्यादा आयी, आप लोग आराम करें, हम कल रात को यहाँ से कूच करेंगे।

सिपहआरा—इस तरह जाना था, तो हमारे पास दिल दुखाने आये क्यों थे? (हाँथ पकड़ कर) देखूँ, क्योंकर जाते हैं,

आज़ाद—दिलोजिगर खून हो चुके हैं।

हवास तक अपने जा चुके हैं।
वही मुहब्बत का हौसला है,
हजार सदमे उठा चुके हैं

हुस्नआरा—हाय, किस गजब में जान पड़ी। हाथ पाँव टूटे जाते हैं, आँखें जल रही हैं। आज़ाद, अगर मुझे दुनियाँ में किसी की चाह है, तो तुम्हारी। लेकिन दिल से लगी है कि तुम रूसियों को नीचा दिखाओ। मरना-जीना मुकद्दर के हाथ है। कौन रहा है, और कौन रहेगा।

ताज में जिनके टकते थे गौहर;
ठोकरें खाते हैं वह सर-ता-सर।
है न शीरीं न कोहकन का पता;
न किसी जा है नल-दमन का पता;
यही दुनियाँ का कारखाना है;
यह उलट फेर का जमाना है।

आजाद—हम तो जाते हैं, तुम सिपहआरा को समझाती रहना। नहीं तो राह में मेरे कदम न उठेंगे। कल रात को मिल कर कूच करूँगा।

हुस्नआरा—बहन, इनको जाने दो, कल आयेंगे।

सिपहआरा—जाइए, मैं आपको रोकनेवाली कौन?

आजाद यहाँ से चले कि सामने से मियाँ चंडूबाज आते हुए मिल गये। गले से लिपट कर बोले—वल्लाह, आँखें आपको ढूँढ़ती थीं। सूरत देखने को तरस गये। वह जो चलते वक्त आपने तान कर चाबुक जमाया था, उसका निशान अब तक बना है। बारे मिले खूब। बी अलारक्खी तो मर गयी, बेचारी मरते वक़्त खुदा की कसम, अल्लाह-अल्लाह कहा कीं और दम तोड़ने के पहले तीन दफ़ा आजाद-आजाद कह कर चल बसीं।

आजाद ने चंडूबाज की सूरत देखी, तो हाथ-पाँव फूल गये। रूस का जाना और तमगों लटकाना भूल गये। सोचे, अब इज्जत खाक में मिली। लेकिन जब चंडूबाज ने बयान किया कि अलारक्खी चल बसीं और मरते वक्त तक मेरे ही नाम की रट लगाती रहीं, तो बड़ा अफ़सोस हुआ। आँखों से आँसू बहने लगे। बोले—भाई, तुमने बुरी खबर सुनायी। हाय, मरते वक़्त दो बातें भी न करने पाये।

चंडूबाज—क्या अर्ज करूँ, कसम खुदा की, इस प्यार और इस हसरत से तुम्हें याद किया कि क्या कहूँ। मेरी तो रोते-रोते हिचकी बँध गयी। जरा सा भी खटका होता तो कहतीं—आजाद आये। आप अपना एक रूमाल वहाँ भूल आये हैं, उसको हर रोज देख लिया करती थीं, मरते वक्त कहा कि हमारी कब्र पर यह रूमाल रख देना।

आजाद—(रो कर) उफ्, कलेजा मुँह को आता है। मुझे क्या मालूम था कि उस ग़रीब को मुझसे इतनी मुहब्बत थी।

चंडूबाज़—एक गुलदस्ता अपने हाथ से बना कर दे गयी हैं कि अगर मियाँ आजाद आ जायँ, तो उनको दे देना और कहना, अब हश्र में आपकी सूरत देखेंगे।

आजाद—भई, इसी वक़्त दो। खुदा के वास्ते अभी लाओ। मैं तो मरा बेमौत, लाओ, गुलदस्ता जरा चूम लूँ। आँखों से लगाऊँ, गले से लगाऊँ।

चंडूबाज़—(आँसू बहा कर) चलिए, मैं सराय मे उतरा हुआ हूँ। गुलदस्ता साथ है। उसको जान से भी ज्यादा प्यार करता हूँ।

दोनों आदमी मिल कर चले, राह में अलारक्खी के रूप-रंग और भोली-भोली बातों का ज़िक्र रहा। चलते-चलते दोनों सराय में दाखिल हुए। मियाँ आजाद जैसे ही चंडूबाज की कोठरी में घुसे, तो क्या देखते हैं कि बी अलारक्खी बगले के पर जैसा सफ़ेद कपड़ा पहने खड़ी हैं। देखते ही मियाँ आजाद का रंग फक हो गया। चुप, अब हिलते हैं न बोलते हैं।

अलारक्खी—(तालियाँ बजा कर) आदाब अर्ज करती हूँ। जरी इधर नजर कीजिए! यह कोसों की राह तय करके हम आप ही की जियारत के लिए आये हैं और आपको हमसे ऐसी नफरत कि आँख तक नहीं मिलाते! वाह री किस्मत! अब

ज़रा सिर तो हिलाइए, गरदन तो उठाइए, वह चाँद सा मुखड़ा तो दिखाइए ! हाय, क्या जुल्म है; जिन पर हम जान देते हैं, वह हमारी सूरत से बेज़ार हैं ! कहिए, आपकी हुस्नआरा तो अच्छी हैं ? ज़रा हमको तो उनका जोबन दिखाओ । हमने सुना, कभी-कभी बजरों पर दरिया की सैर को जाती हैं, कभी हमजोलियों को ले कर जश्न मनाती हैं । क्यों हज़रत, हम बक रहे हैं ? हमारा ही लहू पिये, जो इधर न देखे ।

आज़ाद—खुदा की कसम, सिर्फ़ तुम्हीं को देखने आया हूँ ।

चंडूबाज़—भई, आज़ाद की रोते-रोते हिचकी बँध गयी थी । कसम खुदा की, मैंने जो यह फ़िकरा चुस्त किया कि अलारक्खी ने मरते वक्त आज़ाद-आज़ाद कह के दम तोड़ा, तो यह बेहोश हो कर गिर पड़े ।

अलारक्खी—खैर, इतनी तो ढारस हुई कि मरने के बाद भी हमको कोई पूछेगा । लेकिन—

आये तुरबत पे बहुत रोये, किया याद मुझे ;
खाक उड़ाने लगे, जब कर चुके बरबाद मुझे ।

आज़ाद—अलारक्खी, अब हमारी इज्ज़त तुम्हारे हाथ है । अगर तुम्हें हमसे मुहब्बत है, तो हमें दिक न करो । नहीं हम संखिया खा कर जान दे देंगे । अगर हमें जिलाना चाहती हो, तो हमें आज़ाद कर दो ।

अलारक्खी—सुनो आज़ाद, हम भी शरीफ़ज़ादी हैं, मगर अल्लाह को यही मंज़ूर था कि हम भठियारी बन कर रहें । याद है, हमारे बूढ़े मियाँ ने तुम्हें खत दे कर हमारे मकान पर भेजा था और तुम कई दिन तक हमारे घर का चक्कर लगाते रहे थे ? हम दिन-रात कुढ़ा करते थे । आखिर वह तो कब्र में पाँव लटकाये बैठे ही थे, चल बसे । उस दिन हमने मसजिद में घी के चिराग़ जलाये । मुकद्दर खींच कर यहाँ लाया । लेकिन अल्लाह जानता है, जो मेरी आँखें किसी से लड़ी हों । तुमसे ब्याह करने का बहुत शौक था, लेकिन तुम राजी न हुए । अब हमने सुना है कि हुस्नआरा के साथ तुम्हारा निकाह होनेवाला है । अल्लाह मुबारक करे । अब हमने आपको इजाज़त दे दी, खुशी से ब्याह कीजिए; लेकिन हमें भूल न जाना । लौंडी बन कर रहूँगी, मगर तुमको न छोड़ूँगी ।

आज़ाद—उफ्, तुम वह हो, जिसका उस बूढ़े से ब्याह हुआ था ? यह भेद तो अब खुला । मगर हाय, अफसोस, तुमने यह क्या किया । तुम्हारी माँ ने बड़ी ही बेवकूफ़ी की, जो तुम-जैसी कामिनी का एक बुड्ढे के साथ ब्याह कर दिया ।

अलारक्खी—अपनी तकदीर !

कुछ देर तक आज़ाद बैठे अलारक्खी को तसल्ली देते रहे । फिर गला छुड़ा कर, चकमा देकर निकल खड़े हुए । कुछ ही दूर आगे बढ़े थे कि तबले की थपक कानों में आयी । घर का रास्ता छोड़ महफ़िल में जा पहुँचे । देखा, वहाँ खूब धमा चौकड़ी मच रही है । एक ने ग़ज़ल गायी, दूसरी ने ठुमरी, तीसरी ने टप्पा । आज़ाद एक ही रसिया,

वहीं जम गये। अब इस सनक को देखिए कि शेर की महफ़िल और आप इंतजाम करते हैं, किसी हुक्के की चिलम भरवाते हैं, किसी गुड़गुड़ी को ताजा करवाते हैं; कभी ठुमरी की फ़रमाइश की, कभी ग़ज़ल की। दस-पन्द्रह गँवारों ने जो गाने की आवाज सुनी, तो घुस पड़े। मियाँ आजाद ने उन्हें धक्के दे कर बाहर किया। आखिर नवाब ने जो देखा कि एक शरीफ़ नौजवान आदमी इंतजाम कर रहे हैं, तो इनको पास बुलाया, तपाक से बिठाया, खाना खिलाया। यही बहार देखते-देखते आजाद ने रात काट दी। वहाँ से उठे, तो तड़का हो गया था।

मियाँ आजाद को आज ही रूम के सफ़र की तैयारी करनी थी। इसी फ़िक्र में [illegible] जा रहे थे। क्या देखते हैं, एक बाग में झूले पड़े हैं; कई लड़कियाँ हाथ-पाँव में मेंहदी लगाये, गले में हार डाले पेंग लगा रही हैं और सब की सब सुरीली आवाज से लहरा लहरा कर यों गा रही हैं—

नदिया-किनारे बेला किसने बोया, नदिया-किनारे;
बेला भी बोया, चमेली भी बोयी बिच-
बिच बोया रे गुलाब, नदिया-किनारे।

आजाद को यह गीत ऐसा भाया कि थोड़ी देर ठहर गये। फिर खुद झूले पर जा बैठे और पेंग लगाने लगे। कभी-कभी गाने भी लगते, इस पर लड़कियाँ खिल-खिला कर हँस पड़ती थीं। एकाएक क्या देखते हैं कि एक काला-कलूटा मरियल सा आदमी खड़ा लड़कियों को घूर रहा है। आजाद ने कई बार यह कैफ़ियत देखी, तो उनसे रहा न गया, एक चपत जमा ही तो दी। चीप खाते ही वह झल्ला उठा और गालियाँ दे कर कहने लगा—न हुई विलायती इस वक्त पास, नहीं तो भुट्टा सा सिर उड़ा देता। और जो कहीं जवान होता, तो खोद कर गाड़ देता। और, जो कहीं भूखा होता, तो कच्चा ही खा जाता। और जो कहीं नशे की चाट होती, तो घोल के पी जाता।

आजाद पहचान गये, यह मियाँ खोजी थे। कौन खोजी? नवाब के मुसाहब। कौन नवाब? वही बटेरबाज, जिनके सफ़शिकन को ढूँढने आजाद निकले थे। बोले—अरे, भाई खोजी हैं? बहुत दिनों के बाद मुलाक़ात हुई। मिजाज तो अच्छा है?

खोजी—जी हाँ, मिजाज तो अच्छा है; लेकिन खोपड़ी भन्ना रही है। भला हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था। वह तो कहिए मैं तुम्हें पहचान गया; नहीं तो इस वक्त जान से मार डालता।

आजाद—इसमें क्या शक, आप हैं ही ऐसे दिलेर। आप इधर कैसे आ निकले?

खोजी—आप ही की तलाश में तो आया था।

आजाद—नवाब तो अच्छे हैं?

खोजी—अजी वह गये चूल्हे में। यहाँ सर भन्ना रहा है। ले अब चलो, तुम्हारे साथ चलें। कुछ तो खिलवाओ यार। मारे भूख के बेदम हुए जाते हैं।

आजाद—हाँ, हाँ चलिए खूब शौक से।

दोनों मिल कर चले, तो आजाद ने खोजी को शराब की दूकान पर ले जा कर

इतनी शराब पिलायी कि वह टे हो गये, उन्हें वहीं छोड़ मियाँ हँसोड़ के घर जा पहुँचे।

मियाँ हँसोड़ बहुत नाराज हुए कि मुझे तो ले जा कर हुस्नआरा के मकान के सामने खड़ा कर दिया और आप अंदर हो रहे। आधी रात तक तुम्हारी राह देखता रहा। यह आखिर आप रात को थे कहाँ?

आज़ाद अभी कुछ जवाब देनेवाले ही थे कि एक तरफ से मियाँ पीरबख्श को आते देखा और दूसरी तरफ से चंडूबाज को। आप दूर ही से बोले—अजीब तरह के आदमी हो मियाँ! वहाँ से कह कर चले कि अभी आता हूँ, पल भर की भी देर न होगी, और तब के गये-गये अब तक सूरत नहीं दिखायी, अलारक्खी बेचारी ढाढे मार-मार कर रो रही हैं। चलिए उनके आँसू तो पोंछिए।

मियाँ पीरबख्श ने बातें सुनीं, तो उनके कान खड़े हुए। हज्जाम के मुँह से तो यह सुन ही चुके थे कि मियाँ आजाद किसी सराय में एक भठियारिन पर लट्टू हो गये थे, पर अब तक हुस्नआरा से उन्होंने यह बात छिपा रखी थी। इस वक़्त जो फिर वही ज़िक्र सुना, तो दिल में सोचने लगे कि यहाँ तो लड़कियों को रात-रात भर नींद नहीं आती; हुस्नआरा तो किसी कदर ज़ब्त भी करती हैं, मगर सिपहआरा बेचारी फूट फूट कर रोती है; और यहाँ यह है कि कान पर जूँ तक नहीं रेंगती। बोले—आप चल रहे हैं, या यहाँ बैठे हुए बी अलारक्खी के दुखड़े सुनिएगा? अगर कहीं दोनों बहनें सुन लें, तो कैसी हो? बस, अब भलमंसी इसी में है कि मेरे साथ चले चलिए; नहीं तो हुस्नआरा से हाथ धोइएगा और फिर अपनी फूटी किस्मत को रोइएगा।

चंडूबाज—मियाँ, होश की दवा करो? भला मजाल है कि यह अलारक्खी को छोड़ कर यहाँ से जायँ। क्या खूब, हम तो सैकड़ों कुएँ झाकते यहाँ आये, आप बीच में बोलनेवाले कौन?

आजाद—अजी, इन्हें बकने भी दो, हम तुम्हारे साथ अलारक्खी के पास चलेंगे। उस मुहब्बत की पुतली को दग़ा न देंगे। तुम घबराते क्यों हो? खाना तैयार है, आज मीठा पुलाव पकवाया है, तुम जरा बाजार से लपक कर चार आने की बालाई ले लो। मजे से खाना खायँ। क्यों उस्ताद, है न मामले की बात, लाना हाथ।

चंडूबाज बालाई का नाम सुनते ही खिल उठे। झप से पैसे लिये और लुढ़कते हुए चले बालाई लाने। मियाँ आजाद उन्हें झुत्ता दे कर पीरबख्श से बोले—चलिए हजरत, हम और आप चलें। रास्ते में बातें होती जायँगी।

दोनों आदमी वहाँ से चले। आजाद तो डबल चाल चलने लगे, पर मियाँ पीर-बख्श पीछे रह गये। तब बोले—अजी, जरा कदम रोके हुए चलिए। किसी जमाने में हम भी जवान थे। अब यह फ़र्माइए कि यह अलारक्खी कौन है? जो कहीं हुस्न-आरा सुन पायें, तो आपकी सूरत न देखें; बड़ी बेगम तो तुमको अपने महल के एक मील इधर-उधर फटकने न दें। आप अपने पाँव में आप कुल्हाड़ी मार रहे हैं। अब

शादी-वादी होना खैर-सल्लाह है। सोच लीजिए कि अगर वहाँ इनकी बात चली, तो क्या जवाब दीजिएगा।

आजाद—जनाब, यहाँ सोचने का मरज नहीं। उस वक्त जो ज़बान पर आयेगा, कह जाऊँगा। ऐसी वकालत करूँ कि आप भी दंग हो जायँ—ज़बान से फुलझड़ी छूटने लगे।

इतने में कोठी सामने नज़र आयी और ज़रा देर में दोनों आदमी महल में दाखिल हुए। सिपहआरा तो आज़ाद से मिलने दौड़ी, मगर हुस्नआरा अपनी जगह से न उठी। वह इस बात पर रूठी हुई थी कि इतना दिन चढ़ आया और मियाँ आजाद ने सूरत न दिखायी।

हुस्नआरा—बहन, इनसे पूछो कि आप क्या करने आये हैं ?

आज़ाद—आप खुद पूछिए। क्या मुँह नहीं है या मुँह में ज़बान नहीं है।

सिपहआरा—यह अब तक आप कहाँ गायब रहे ?

हुस्नआरा—अजी, हमें इनकी क्या परवा। कोई आये या न आये, हम किसी के हाथ बिके थोड़े ही हैं।

सिपहआरा—बाजी की आँखें रोते-रोते लाल हो गयीं।

हुस्नआरा—पूछो, आखिर आप चाहते क्या हैं ?

आजाद—पूछे कौन, आखिर आप खुद क्यों नहीं पूछतीं—

कहूँ क्या मैं तुझसे कि क्या चाहता हूँ,
जफ़ा हो चुकी, अब वफ़ा चाहता हूँ।
बहुत आशना हैं ज़माने में, लेकिन—
कोई दोस्त दर्द-आशना चाहता हूँ।

हुस्नआरा—इनसे कह दो, यहाँ किसी की वाही-तबाही बकवाद सुनने का शौक नहीं है। मालूम है, आप बड़े शायर की दुम हैं !

सिपहआरा—बहन, तुम लाख बनों, दिल की लगी कहीं छिपाने से छिपती है।

हुस्नआरा—चलो, बस, चुप भी रहो। बहुत कलेजा न पकाओ। हमारे दिल पर जो गुज़र रही है, हमी जानते हैं। चलो, हम और तुम कमरा खाली कर दें, जिसका जी चाहे बैठे, जिसका जी चाहे जाय। हयादार के लिए एक चुल्लू काफ़ी है।

यह कह कर हुस्नआरा उठी और सिपहआरा भी खड़ी हुई। मियाँ आजाद ने सिपहआरा का पहुँचा पकड़ लिया। अब दिल्लगी देखिए कि मियाँ आजाद तो उसे अपनी तरफ खींचते हैं और हुस्नआरा अपनी तरफ घसीटती हुई कह रही हैं—हमारी बहन का हाथ कोई पकड़े, तो हाथ ही टूटें। जब हमने टका सा जवाब दे दिया, तो फिर यहाँ आनेवाला कोई कौन। वाह, ऐसे हयादार भी नहीं देखे।

आजाद—साहब, आप इतना खफा क्यों होती हैं ? खुदा के वास्ते जरा बैठ जाइए। माना कि हम खतावार हैं, मगर हमसे जवाब तो सुनिए। खुदा गवाह है, हम बेकसूर हैं।

हुस्नआरा—बस बस, ज़बान न खुलवाइए। बस अब रुखसत। आप अब छह महीने के बाद सूरत दिखाइएगा, हम भी कलेजे पर पत्थर रख लेंगे।

यह कह कर हुस्नआरा तो वहाँ से चली गयी और मियाँ आज़ाद अकेले बैठे-बैठे सोचने लगे कि इसे कैसे मनाऊँ। आखिर उन्हें एक चाल सूझी। अरगनी पर से चादर उतार ली और मुँह ढाँप कर लेट रहे। चेहरा बीमारों का सा बना लिया और कराहने लगे। इत्तिफ़ाक़ से मियाँ पीरबख्श उस कमरे में आ निकले। आज़ाद की सूरत जो देखी, तो होश उड़ गये। जा कर हुस्नआरा से बोले—जल्द पलँग बिछवाओ, मियाँ आजाद को बुखार हो आया है।

हुस्नआरा—हैं हैं, यह क्या कहते हो! पाँव-तले से मिट्टी निकल गयी।

सिपहआरा—कलेजा धड़-धड़ करने लगा! ऐसी सुनानी अल्लाह सातवें दुश्मन को भी न सुनाये।

हुस्नआरा—हाय मेरे अल्लाह, मैं क्या करूँ! मैंने अपने पैरों में आप कुल्हाड़ी मारी।

ज़रा देर में पलँग बिछ गया। हुस्नआरा, उसकी बहन, पीरबख्श और दिलबहार चारपाई के पास खड़े हो कर आँसू बहाने लगे।

दिलबहार—मियाँ, किसी हकीम जी को बुलाओ।

सिपहआरा—चेहरा कैसा जर्द हो गया!

पीरबख्श—मैं अभी जा कर हकीम साहब को लाता हूँ।

हुस्नआरा—हकीम जी का यहाँ क्या काम है? और, यों आप चाहे जिसको बुलायें।

मियाँ पीरबख्श तो बाहर गये और हुस्नआरा पलँग पर जा बैठी, मियाँ आजाद का सिर अपने जानू पर रखा। सिपहआरा फूलों का पंखा झलने लगी।

हुस्नआरा—मेरी जबान कट पड़े। मेरी ही जली-कटी बातों ने यह बुखार पैदा किया।

यह कह कर उसने आहिस्ता-आहिस्ता आजाद की पेशानी को सहलाना शुरू किया। आजाद ने आँखे खोल दीं और बोले—

> मेरे जनाजे को उनके कूचे में
> नाहक़ अहबाब लेके आये;
> निगाहे-हसरत से देखते हैं
> वह रुख से परदा हटा-हटा कर।
> सहर है नजदीक, शब है आखिर,
> सरा से चलते हैं हम मुसाफ़िर;
> जिन्हें है मिलना, वे सब हैं हाजिर,
> जरस से कह दो, कोई सदा कर।

हुस्नआरा—क्यों हजरत, यह मक्कारी! खुदा की पनाह, मेरी तो बुरी गत हो गयी।

अज़ाद—ज़रा उसी तरह इन नाजुक हाथों से फिर माथा सहलाओ।

हुस्नआरा—मेरी बला जाती है, वह वक्त ही और था।

आजाद—मैंने कहा जो उनसे कि शब को यहीं रहो ;

आँखें झुकाये बोले कि किस एतबार पर ?

हुस्नआरा—आपने आखिर यह स्वाँग क्यों रचा ? छिपाइए नहीं, साफ़-साफ़ बताइए।

आजाद—अब कहती हो कि तुम मेरी
महफ़िल में आये क्यों ;
आता था कौन, कोई
किसी को बुलाये क्यों ?
कहता हूँ साफ़-साफ़
कि मरता हूँ आप पर ;
जाहिर जो बात हो,
उसे कोई छिपाये क्यों ?

यहाँ मारे बुखार के दम निकल रहा है, आप मक्र समझती हैं।

यहाँ दोंनो में यही नोकझोंक हो रही थी, इतने में मियाँ खोजी पता पूछते हुए आ पहुँचे।

खोजी—मियाँ होत, ज़रा आजाद को तो बुलाओ।

दरबान—किससे कहते हो ? आये कहाँ से ? हो कौन ?

खोजी—ऐं, यह तो कुछ बातूनी सा मालूम होता है। अबे, इत्तला कर दे कि ख्वाजा साहब आये हैं।

दरबान—ख्वाजा साहब ! हमें तो जुलाहे से मालूम होते हो। भलेमानसों की सूरत ऐसी ही हुआ करती है ?

आजाद ने ये बातें सुनीं, तो बाहर निकल आये और खोजी को बुला लिया।

खोजी—भाई, ज़रा आईना तो मँगवा देना।

आज़ाद—यह आईना क्या होगा ? बंदगी न सलाम, बात न चीत, आते ही आते आईना याद आया। बंदर के हाथ में आईना भला कौन देने लगा !

खोजी—अजी मँगवाते हो या दिल्लगी करते हो। दरबान से हमसे झौड़ हो गयी। मरदूद कहता है, तुम्हारी सूरत भलेमानसों की सी नहीं। अब कोई उससे पूछे, फिर क्या चमार की सी है, या पाजी की सी।

आजाद—भई अगर सच पूछते हो, तो तुम्हारी सूरत से एक तरह का पाजीपन बरसता है। खुदा चाहे पाजी बनाये, मगर पाजी की सूरत न बनाये। पर अब उसका इलाज ही क्या ?

खोजी—वाह, इसका कुछ इलाज ही नहीं ? डाक्टरों ने मुरदे तक के जिला

लेने का तो बंदोबस्त कर लिया है; आप फ़रमाते हैं, इलाज ही नहीं। अब पाजी न बनेंगे, पाजी बनके जिये तो क्या।

आजाद—कल हम रूम जानेवाले हैं, चलते हो साथ?

खोजी—न चले, उस पर भी लानत, न ले चले, उस पर भी लानत!

आजाद—मगर वहाँ चंडू न मिलेगा, इतना याद रखिए।

खोजी—अजी अफ़ीम मिलेगी कि वह भी न मिलेगी? बस, तो फिर हम अपना चंडू बना लेंगे। हमें जरूर ले चलिए।

आज़ाद अंदर जा कर बोले—हुस्नआरा, अब रुखसत का वक्त क़रीब आता जाता है; हँसी-खुशी रुखसत करो; खुदा ने चाहा तो फिर मिलेंगे।

हुस्नआरा की आँखों से टप-टप आँसू गिरने लगे। बोली—हाय, अंदरवाला नहीं मानता। उसको भी तो समझाते जाओ। यह किसका होकर रहेगा?

आजाद—तुम्हारी यह हालत देख कर मेरे कदम रुके जाते हैं। अब हमें जाने दो। जिंदगी शर्त है, हम फिर मिलेंगे और जश्न करेंगे। यह कह कह आजाद बाहर चले आये और खोजी के साथ चले। खोजी ने समझा था, रूम कहीं लखनऊ के आस-पास होगा। अब जो सुना कि सात समुंदर पार जाना पड़ेगा, तो हक्का-बक्का हो गये। हाँथ-पाँव काँपने लगे। भई, हम समझते थे, दिल्लगी करते हो। यह क्या मालूम था कि सचमुच तंग-तोबड़ा चढ़ा कर भागा ही चाहते हो। मियाँ, तुम लाख आलिम-फ़ाजिल सही, फिर भी लड़के ही हो। यह खयाल दिल से निकाल डालो। एक जरा सी चने के बराबर गोली पड़ेगी, तो टाँय से रह जाओगे। आपको कभी मोरचे पर जाने का शायद इत्तिफ़ाक नहीं हुआ। खुदा भलेमानस को न ले जाय। गजब का सामना होता है। वह गोली पड़ी, यह मर गया। दाँय-दाँय की आवाज से कान के परदे फट जाते हैं। तोप का गोला आया और अठारह आदमियों को गिरा दिया। गोला फटा और बहत्तर टुकड़े हुए, और एक-एक टुकड़े ने दस-दस आदमियों को उड़ा दिया। जो कहीं तलवार चलने लगी, तो मौत सामने नजर आती है, बेमौत जान जाती है। खटाखट तलवार चल रही है और हजारों आदमी गिरते जाते हैं। सो भई, वहाँ जाना कुछ खाला जी का घर थोड़े ही है। खुदा के लिए उधर रुख न करना। और, बंदा तो अपने हिसाब, जानेवाले को कुछ कहता है। हम एक तरकीब बतायें, वह काम क्यों न कीजिए कि हुस्नआरा आपको खुद रोके और लाखों कसमें दे। आप अंदर जा कर बैठिए और हमको चिक के पास बिठाइए। फिर देखिए, मैं कैसी तकरीर करता हूँ कि दोनों बहनें काँप उठें; उनको यकीन हो जाय कि मियाँ आजाद गये और अंटागफील हुए। मैं साफ़-साफ कह दूँगा कि भई आजाद जरा अपनी तसवीर तो खिंचवा लो। आखिर अब तो जाते ही हो। वल्लाह, जो कहीं यह तकरीर सुन पायें, तो हश्र तक तुम्हें न जाने दें और झप से शादी हो जाय।

आजाद—बस, अब और कुछ न फ़रमाइयेगा। मरना-जीना किसी के अख्तियार की बात तो है नहीं; लाखों आदमी कोरे आते हैं और हजारों राह चलते लोट

आते हैं। हुस्नआरा हमसे कहे कि टर्की जाओ और हम बातें बनायें, उसको धोखा दें! जिससे मुहब्बत की उससे फ़रेब! यह मुझसे हरगिज न होगा, चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय। आप मियाँ हँसोड़ के यहाँ जाइए और उनसे कहिए कि हम अभी आते हैं। हम पहुँचे और खाना खा कर लंबे हुए। खोजी तो गिरते-पड़ते चले, मगर दो कदम जा कर फिर पलटे। भई, एक बात तो सुनो। क्या-क्या पकवा रखूँ? आज़ाद बहुत ही झल्लाये। अजब नासमझ आदमी हो! यह भी कोई पूछने की बात है भला! उनके यहाँ जो कुछ मुमकिन होगा, तैयार करेंगे। यह कहकर आज़ाद तो अपने दो-चार दोस्तों से मिलने चले, उधर मियाँ खोजी हँसोड़ के घर पहुँचे। आ कर गुल मचाना शुरू किया कि जल्द खाना तैयार करो, मियाँ आज़ाद अभी-अभी आनेवाले हैं। उन्होंने कहा है कि पाँच सेर मीठे टुकड़े, सात सेर पुलाव, दस सेर फीरनी, दस ही सेर खीर, कोई चौदह सेर ज़रदा, कोई पाँच सेर मुरब्बा और मीठे अचार की अचारियाँ जल्द तैयार हों। मियाँ हँसोड़ की बीबी खाना पकाने में बर्क थीं। हाथोंहाथ सब सामान तैयार कर दिया। मियाँ आज़ाद शाम को पहुँचे।

हँसोड़—कहिए, आज तो सफ़र का इरादा है। खाना तैयार है; कहिए, तो निकलवाया जाय। बर्फ़ भी मँगवा रखी है।

आज़ाद—खाना तो हम इस वक़्त न खायँगे, ज़रा भी भूख नहीं है।

हँसोड़—खैर, आप न खाइएगा, न सही। आपके और दोस्त कहाँ हैं? उनके साथ दो निवाले तुम भी खा लेना।

आज़ाद—दोस्त कैसे! मैंने तो किसी दोस्त के लिए खाना पकाने को नहीं कहा था!

हँसोड़—और सुनिएगा! क्या आपने अपने ही लिए दस सेर खीर, अठारह सेर मीठे टुकड़े और खुदा जाने क्या-क्या अल्लम-गल्लम पकवाया है।

आज़ाद—आपसे यह कहा किस नामाकूल ने?

हँसोड़—खोजी ने, और किसने? बैठे तो हैं, पूछिए न।

आज़ाद—खोजी तुम मरभुखे ही रहे। यह इतनी चीजें क्या सिर पर लाद कर ले जाओगे? लाहौल विला कूवत।

खोजी—लाहौल काहे की? आप न खाइए, मै तो डट कर चख चुका। रास्ते के लिए भी बाँध रखा है।

आज़ाद—अच्छा, तो अब बोरिया-बँधना उठाइए, लादिए-फाँदिए।

खोजी—जनाब, इस वक्त तो यह हाल है, जैसे चूहे को कोई पारा पिला दे। अब बंदा लोट मारेगा। और यह तो बताओ, सवारी क्या है?

आज़ाद—इक्का।

खोजी—गजब खुदा का! तब तो मै जा चुका। इक्के पर तो यहाँ कभी सवार ही नहीं हुए। और फिर खाना खा कर तो मर ही जाऊँगा।

खैर, मियाँ आज़ाद ने झटपट खाना खाया और असबाब कस कर तैयार हो गये। खोजी पड़े खर्राटे ले रहे थे; रोते-गाते उठे। बाहर जा कर देखते हैं, तो एक

समंद घोड़ी पूरी, दूसरा मरियल टट्टू। आज़ाद घोड़ी पर सवार हुए और मियाँ हँसोड़ की बीबी से बोले—भाभी, भूल न जाइएगा। भाई साहब तो फुक्कड़ आदमी हैं, आप याद रखिएगा। आपके हाथ का खाना उम्र-भर न भूलूँगा। उन्होंने रुख़सत करते हुए कहा—जिस तरह पीठ दिखाते हो, खुदा करे, उसी तरह मुँह भी दिखाओ। इमाम ज़ामिन को सौंपा।

अब सुनिए कि मियाँ खोजी ने अपने मरियल टट्टू को जो देखा, तो घबराये। घोड़े पर कभी जिन्दगी भर सवार न हुए थे। लाख चाहते हैं कि सवार हो जायँ, मगर हिम्मत नहीं पड़ती। यार लोग डराते हैं—देखो, देखो, वह पुस्त उछाली, वह दुलत्ती झाड़ी, वह मुँह खोल कर लपका; मगर टट्टू खड़ा है, कान तक नहीं हिलाता। एक दफ़े आँख बंद करके हजरत ने चाहा कि लद लें, मगर यारों ने तालियाँ जो बजायीं, तो टट्टू भागा और मियाँ खोजी मद से जमीन पर। देखा, कहते न थे कि हम इस टट्टू पर न सवार होंगे। मगर आज़ाद ने बड़ी दिल्लगी देखने के लिए हमको उल्लू बनाया। वह तो कहो, हड्डी-पसली बच गयी, नहीं तो चुरमुर ही हो जाती। खैर, दो आदमियों ने उनको उठाया और लाद कर घोड़ी की पीठ पर रख दिया। उन्होंने लगाम हाथ में ली ही थी कि एक बिगड़े-दिल ने चाबुक जमा दिया। टट्टू दुम दबा कर भागा और मियाँ खोजी लुढ़क गये। बारे आज़ाद ने आ कर उनको उठाया।

खोजी—अब क्या रूम तक बराबर इस टट्टू ही पर जाना होगा?

आज़ाद—और नहीं क्या आपके वास्ते उड़नखटोला आयेगा?

खोजी—भला इस टट्टू पर कौन जायेगा?

आजाद—टट्टू, आप तो इसे टाँघन कहते थे!

खोजी—भई, हमें आज़ाद कर दो। हम बाज आये इस सफ़र से!

आज़ाद—अरे बेवक़ूफ़, रेल-तक इसी पर चलना होगा। वहाँ से बंबई तक रेल पर जायँगे।

मियाँ आजाद और खोजी आगे बढ़े। थोड़ी देर में खोजी का टट्टू भी गरमाया और आजाद की घोड़ी के पीछे कदम बढ़ाकर चलने लगा। चलते-चलते टट्टू ने शरारत की। बूट के हरे-भरे खेत देखे, तो उधर लपका। किसान ने जो देखा, तो लट्ठ ले कर दौड़ा और लगा बुरा-भला कहने। उसकी जोरू भी चमक कर लपकी और कोसने लगी कि पलवइया मर जाय, कीड़े पड़ें, अभी-अभी पेट फटै, दाढ़ीजार की लहास निकलै। और किसान भी गालियाँ देने लगा—अरे यो टट्टू कौन सार केर आय? ससुर हमरे खेत में पैठाय दिहिस। मियाँ खोजी गालियाँ खा कर बिगड़ गये। उनमें एक सिफ़त यह थी कि बे-सोचे-समझे लड़ पड़ते थे; चाहे अपने से दुगुना-चौगुना हो, वह चिमट ही जाते थे। गुस्से की यह खासियत है कि जब आता है, कमजोर पर। मगर मियाँ खोजी का गुस्सा भी निराला था, वह जब आता था, शहज़ोर-पर। किसान ने उनके टट्टू को कई लट्ठ जमाये, तो मियाँ खोजी तड़

से उतर कर किसान से गुथ गये। वह गँवार आदमी, बदन का करारा और यह दुबले-पतले महीन आदमी, हवा के झोंके में उड़ जायँ। उसने इनकी गरदन दबोची और गद से ज़मीन पर फेका। फिर उठे, तो उसकी जोरू इनसे चिमट गयी और लगी हाथापाई होने। उसने घूँसा जमाया और इनके पट्टे पकड़ कर फेका, तो चारों खाने चित। दो थप्पड़ भी रसीद किये—एक इधर, एक उधर। किसान खड़ा हँस रहा है कि मेहरारू से जीत नाहीं पावत, यह मुसंडन से का लड़िहै भला! किसान की जोरू तो ठोंक-ठोंक कर चल दी, और आपने पुकारना शुरू किया—कसम अब्बा-जान की, जो कहीं छुरा पास होता, तो इन दोनों की लाश इस वक्त फड़कती होती। वह तो कहिए, खुदा को अच्छा करना मंजूर था कि मेरे पास छुरा न था, नहीं तो इतनी करौलियाँ भोंकता कि उमर भर याद करते। खड़ा तो रह ओ गीदी! इस पर गाँववालों ने खूब कहकहा उड़ाया। एक ने पूछा—क्यों मियाँ साहब, छुरी होती, तो क्या भोंक कर मर जाते? इस पर मियाँ खोजी और भी आग हो गये।

मियाँ आज़ाद कोई दो गोली के टप्पे पर निकल गये थे। जब खोजी को पीछे न देखा, तो चकराये कि माजरा क्या है? घोड़ी फेरी और आ कर खोजी से बोले—यहाँ खेत में कब तक पड़े रहोगे? उठो, गर्द झाड़ो।

खोजी—करौली न हुई पास, नहीं तो इस वक्त दो लाशें यहाँ फड़कती हुई देखते।

आजाद—अजी, वह तो जब देखते तब देखते, इस वक्त तो तुम्हारी लोथ देख रहे हैं।

उन्होंने फिर खोजी को उठाया और टट्टू पर सवार कराया। थोड़ी देर मे फिर दोनों आदमियों में एक खेत का फासला हो गया। खोजी से एक पठान ने पूछा कि शेख जी, आप कहाँ रहते हैं? हजरत ने झट से एक कोड़ा जमाया और कहा—अबे, हम शेख नहीं, ख्वाजा हैं। वह आदमी गुस्से से आग हो गया और टाँग पकड़ कर घसीटा, तो खोजी खट से जमीन पर। अब चारों खाने चित पड़े हैं, उठने का नाम नहीं लेते। आजाद ने जो पीछे फिर कर देखा, तो टट्टू आ रहा है, मगर खोजी नदारद। पलटे, देखें, अब क्या हुआ। इनके पास पहुँचे, तो देखा, फिर उसी तरह ज़मीन पर पड़े करौली की हाँक लगा रहे हैं।

आजाद—तुम्हें शर्म नहीं आती! कमजोरी मार खाने की निशानी। दम नहीं है, तो कटे क्यों मरते हो? मुफ्त में जूतियाँ खाना कौन जवाँमरदी है?

खोजी—वल्लाह, जो करौली कहीं पास हो, तो चलनी ही कर डालूँ। वह तो कहिए, खैरियत हुई कि करौली न थी, नहीं तो इस वक्त कब्र खोदनी पड़ती।

आज़ाद—अब उठोगे भी, या परसों तक यों ही पड़े रहोगे। तुमने तो अच्छा नाक में दम कर दिया।

खोजी—अजी, अब न उठेंगे, जब तक करौली न ला दोगे, बस अब बिना करौली के न बनेगी।

आजाद—बस, अब बेहूदा न बको; नहीं तो मैं अबकी एक लात जमाऊँगा।

ख़ैर, दोनों आदमी यहाँ से चले तो ख़ोजी बोले—यहाँ जोड़-जोड़ में दर्द हो रहा है। उस किसान की मुसंढ़ी औरत ने तो कचूमर ही निकाल डाला। मगर कसम है ख़ुदा की, जो कहीं करौली पास होती, तो ग़ज़ब ही हो जाता। एक को तो जीता छोड़ता ही नहीं।

आजाद—ख़ुदा गंजे को पंजे नहीं देता। करौली की आपको हमेशा तलाश रही, मगर जब आये, पिट ही के आये, जूतियाँ ही खायीं। ख़ैर, यह दुखड़ा कोई कहाँ तक रोये, अब यह बताओ कि हम क्या करें? जी मतला रहा है, बंद-बंद टूट रहा है, आँखें भी जलती हैं।

ख़ोजी—लैनडोरी आ गयी। अब हज़रत भी आते होंगे।

आजाद—यह लैनडोरी कैसी? और हज़रत कौन? मैं कुछ नहीं समझा। जरा बताओ तो?

खोजी—अभी लड़के न हो, बुखार की आमद है। आँखों की जलन, जी का मतलाना, बदन का टूटना, सब उसी की अलामतें हैं। इस वक़्त घोड़े पर सवार हो कर चलना बुरा है। अब आप घोड़े से उतर पड़िए और चल कर कहीं लेट रहिए, कहना मानिए।

आजाद—यहाँ कोई अपना घर है, जो उतर पड़ूँ? किसी से पूछो तो कि गाँव कितनी दूर है। ख़ुदा करे, पास ही हो, नहीं तो मैं यहीं गिर पड़ूँगा और क़ब्र भी यहीं बनेगी।

खोजी—अजी, जरा दिल को सँभालो। कोई इतना घबराता है? क़ब्र कैसी? जरा दिल को ढारस दीजिए।

आजाद—वल्लाह, फुँका जाता हूँ, बदन से आग निकल रही है।

खोजी—वह गाँव सामने ही है, जरा घोड़ी को तेज कर दो।

आजाद ने घोड़ी को जरा तेज किया, तो वह उड़ गयी। ख़ोजी ने भी कोड़े पर कोड़ा जमाना शुरू किया। मगर लद्दू टट्टू कहाँ तक जाता? आख़िर ख़ोजी ने झल्ला कर एक एड़ दी, तो टट्टू अगले पाँव पर खड़ा हो गया और मियाँ ख़ोजी सँभल न सके, धम से जमीन पर आ रहे। अब टट्टू पर बिगड़ रहे हैं कि न हुई करौली इस वक्त, नहीं तो इतनी भोंकता कि बिलबिलाने लगता। ख़ैर, किसी तरह उठे, टट्टू को पकड़ा और लद कर चले। दो-चार दिल्लगीबाज आदमियों ने तालियाँ बजायीं और कहना शुरू किया—लदा है, लदा है, लेना, जाने न पाये। ख़ोजी बिगड़ खड़े हुए। हटो सामने से, नहीं तो हंटर जमाता हूँ। मुझे भी कोई ऐसा-वैसा समझे हो! मैं सिपाही आदमी हूँ। नवाबी में दो-दो तलवारें कमर से लगी रहती थीं। अब लाख कमजोर हो गया हूँ, लेकिन अब भी तुम जैसे पचास पर भारी हूँ। लोगों ने खूब हँसी उड़ायी। जी हाँ, आप ऐसे ही जवाँमर्द हैं। ऐसे सूरमा होते कहाँ हैं।

ख़ोजी—उतरूँ घोड़े से, आऊँ?

यारों ने कहा—नहीं साहब, ऐसा गजब भी न कीजिएगा ! आप ठहरे पहलवान और सिपाही आदमी, कहीं मार डालिए आ कर तो कोई क्या करेगा।

इस तरह गिरते-पड़ते एक सराय में पहुँचे और अंदर जा कर कोठरियाँ देखने लगे। सराय भर में चक्कर लगाये, लेकिन कोई कोठरी पसंद न आयी। भठियारियाँ पुकार रही हैं कि मियाँ मुसाफ़िर इधर आओ, इधर देखो, खासी साफ-सुथरी कोठरी है। टट्टू बाँधने की जगह अलग। इतना कहना था कि मियाँ खोजी आग हो गये। क्या कहा, टट्टू है, यह पीगू का टाँघन है। एक भठियारी ने चमक कर कहा—टाँघन है या गधा ? तब तो खोजी झल्लाये और छुरी और करौली की तलाश करने लगे। इस पर सराय भर की भठियारियों ने उन्हें बनाना शुरू किया। आखिर आप इतने दिक हुए कि सराय के बाहर निकल आये और बोले—भई, चलो, आगे के गाँव में रहेंगे। यहाँ सब के सब शरीर हैं। मगर आज़ाद में इतना दम कहाँ कि आगे जा सकें। सराय में गये और एक कोठरी में उतर पड़े। खोजी ने भी वहीं बिस्तर जमाया। साईस तो कोई साथ था नहीं, खोजी को अपने ही हाथ से दोनों जानवरों के खरेरा करना पड़ा। भठियारी ने समझा, यह साईस है।

भठियारी—ओ साईस भैया, जरा घोड़ी को उधर बाँधो।

खोजी—किसे कहती है री, साईस कौन है ?

भठियारी—ऐ तो बिगड़ते क्यों हो मियाँ, साईस नहीं, चरकटे सही।

आजाद—चुप रहो, यह हमारे दोस्त हैं।

भठियारी—दोस्त हैं, सूरत तो भलेमानसों की सी नहीं है।

खोजी—भई आजाद, जरा आईना तो निकाल देना। कई आदमी कह चुके। आज मैं अपना चेहरा जरूर देखूँगा। आखिर सबब क्या कि जिसे देखो, यही कहता है।

आजाद—चलो, वाहियात न बको, मेरा तो बुरा हाल है।

भठियारी ने चारपाई बिछा दी और आजाद लेटे।

खोजी ने कहा—अब तबीयत कैसी है ?

आजाद—बुरी गत है; जी चाहता है, इस वक़्त जहर खा लूँ।

खोजी—जरूर, और उसमें थोड़ी संखिया भी मिला लेना।

आजाद—मर कमबख्त, दिल्लगी का यह मौका है ?

खोजी—अब बूढ़ा हुआ, मरूँ किस पर। मरने के दिन तो आ गये। अब तुम जरा सोने का खयाल करो। दो-चार घड़ी नींद आ जाय, तो जी हलका हो जाय।

इतने में भठियारी ने आ कर पूछा—मियाँ कैसे हो ?

आजाद—क्या बताऊँ, मर रहा हूँ।

भठियारी—किस पर ?

आज़ाद—तुम पर।

भठियारी—खुदा की सँवार।

आज़ाद—किस पर ?

भठियारी ने खोजी की तरफ़ इशारा करके कहा—इन पर

खोजी—अफ़सोस, न हुई करौली !

आजाद—होती, तो क्या करते ?

खोजी—भोंक लेते अपने पेट मे ।

आज़ाद—भई, अब कुछ इलाज करो, नहीं तो मुफ़्त में दम निकल जायगा।

भठियारी—एक हकीम यहाँ रहते हैं । मैं बुलाये लाती हूँ ।

यह कह कर बी भठियारी जा कर हकीमजी को बुला लायी । मियाँ आजाद देखते हैं, तो अजब ढंग के आदमी—धोती बाँधे, गाढ़े की मिरजई पहने, चेहरे से देहातीपन बरस रहा है, आदमियत छू ही नहीं गयी ।

आज़ाद—हकीम साहब, आदाब ।

हकीम—नाहीं, दबवाव नाहीं । बुखार में दाबे नुकसान होत है ।

आजाद—आपका नाम ?

हकीम—हमारा नाम दौंगलू ।

आज़ाद—दौंगलू या जौंगलू ?

हकीम—नुस्खा लिखूँ ?

अजाद—जी नहीं, माफ़ कीजिए । बस, यहाँ से तशरीफ़ ले जाइए ।

हकीम—बुखार में अक-बक करत हैं, चाँद के पट्टे कतरवा डालो ।

खोजी—कुछ वेधा तो नहीं हुआ ! न हुई करौली, नहीं तो तोंद पर रख देता ।

हकीम—भाई, हमसे इनका इलाज न हो स किहै । अब एक होय, तो इलाज करे । यो पागल को है हो ? हमका अलई का पलवा बकत है ससुर ।

आखिर खोजी ने झल्ला कर उनको उठा दिया और यह नुस्खा लिखा—

आलूबुखारा दो दाना, तमरहिंदी छह माशा, अर्क गावजबाँ दो तोला ।

आजाद—यह नुस्खा तो आप कल पिलायेंगे, यहाँ तो रात-भर मे काम ही तमाम हो जायगा ।

खोजी—इस वक्त बंदा कुछ नहीं देने का । हाँ, आलू का पानी पीजिए, पाँच दाने भिगाये देता हूँ । खाना इस वक़्त कुछ न खाना ।

आजाद—वाह, खाना न मिला, तो मैं आप ही को चट कर जाऊँगा । इस भरोसे न रहिएगा ।

खोजी—वल्लाह, एक दाना भी आपके पेट में गया और आप बरस भर तक यों ही पड़े रहे । आलू का पानी भी घूँट-घूँट करके पीना । यह नहीं कि प्याला मुँह से लगाया और गट-गट पी गये ।

यह कह कर खोजी ने चंदन घिस कर आज़ाद की छाती पर रखा । पालक के पत्ते चारपाई पर बिछा दिये । खीरा काट कर माथे पर रखा और जरा सा नमक बारीक पीस कर पाँव में मला । तलवे सहलाये ।

आजाद—यहाँ तो कोई हकीम भी नहीं।

खोजी—अजी, हम खुद इलाज करेंगे। हकीम न सही, हकीमों की आँखें तो देखी हैं।

आजाद—इलाज तक मुजायका नहीं, मगर मार न डालना भाई! हाँ, जरा इतना एहसान करना।

आजाद की बेचैनी कुछ कम हुई, तो आँख लग गयी। एकाएक पड़ोस की कोठरी से शोर गुल की आवाज आयी। आज़ाद चौंक पड़े और पूछा—यह कैसा शोर है? भठियारी, तुम जरा जा कर उनको ललकारो।

खोजी—कहो कि एक शरीफ़ आदमी बुखार में पड़ा हुआ है। खुदा के वास्ते जरा खामोश हो जाओ।

भठियारी—मियाँ, मैं ठहरी औरतजात और वे मरदुए। और फिर अपने आपे मे नहीं। जो मुझी पर पिल पड़े, तो क्या करूँगी? हाँ, भठियारे को भेजे देती हूँ।

भठियारे ने जा कर जो उन शराबियों को डाँटा, तो सब के सब उस पर टूट पड़े और चपतें मार-मार कर भगा दिया। इस पर भठियारी तैश में आ कर उठी और उँगलियाँ मटका कर इतनी गालियाँ सुनायीं कि शराबियों का नशा हिरन हो गया। वे इतना डरे कि कोठरी का दरवाजा बंद कर लिया।

लेकिन थोड़ी देर में फिर शोर हुआ और आजाद की नींद उचट गयी खोजी को जो शामत आयी, तो शराबियों की कोठरी के दरवाजे को इस जोर धमाया कि चूल निकल आयी। सब शराबी झल्लाकर बाहर निकल आये और खोजी पर बेभाव की पड़ने लगी। उन्होंने इधर-उधर छुरी और करौली की बहुत कुछ तलाश की, मगर खूब पिटे। इसके बाद वे सब सो गये, रात भर कोई न मिनका। सुबह को उस कोठरी से रोने की आवाज आयी। खोजी ने जा कर देखा, तो एक आदमी मरा पड़ा है और बाकी सब खड़े रो रहे हैं। पूछा, तो एक शराबी ने कहा—भाई, हम सब रोज शराब पिया करते हैं। कल की शराब बहुत तेज थी। हमने बहुत मना किया; पर बोतल की बोतल खाली कर दी। रात को हम लोग सोये, तो इतना अलबत्ता कहा कि कलेजा फुँका जा रहा है। अब जो देखते हैं, तो मरा हुआ है। आप तो जान से गया और हमको भी क़त्ल कर गया।

खोजी—गजब हो गया! अब तुम धरे जाओगे और सजा पाओगे!

शराबी—हम कहेंगे कि साँप ने काटा था।

खोजी—कहीं ऐसी भूल भी न करना।

शराबी—अच्छा, भाग जायँगे।

खोजी—तब तो जरूर ही पकड़े जाओगे। लोग ताड़ जायँगे कि कुछ दाल में काला है।

शराबी—अच्छा, हम कहेंगे कि छुरी मार कर मर गया और गले में छुरी भी भोंक देंगे।

खोजी—यह बात हिमाकत है, मैं जैसे कहूँ, वैसे करो। तुम सब के सब रोओ और सिर पीटो। एक कहे कि मेरा सगा भाई था। दूसरा कहे कि मेरा बहनोई था; तीसरा उसे मामूँ बताये। जो कोई पूछे कि क्या हुआ था, तो गुर्दे का दर्द बताना। खूब चिल्ला-चिल्ला कर रोना। जो यों आँसू न आवें तो मिरचे लगा लो। आँखों में धूल झोंक लो। ऐसा न हो कि गड़बड़ा जाओ और जेलखाने जाओ।

इधर तो शराबियों ने रोना-पीटना शुरू किया, उधर किसी ने जा कर थाने मे जड़ दी कि सराय में कई आदमियों ने मिल कर एक महाजन को मार डाला। थानेदार और दस चौकीदार रप-रप करते आ पहुँचे। अरे ओ भठियारी, बता, वह महाजन कहाँ टिका हुआ था?

भठियारिन—कौन महाजन? किसी का नाम तो लीजिए।

थानेदार—तेरा बाप, और कौन!

भठियारिन—मेरा बाप? उसकी तालाश है, तो कब्रिस्तान जाइए।

थानेदार—खून कहाँ हुआ?

भठियारिन—खूब! अरे तोबा कर बंदे! खून हुआ होगा थाने पर।

थानेदार—अरे इस सराय में कोई मरा है रात को?

भठियारिन—हाँ, तो यों कहिए। वह देखिए, वेचारे खडे रो रहे हैं। उनके भाई थे। कल दर्द हुआ। रात को मर गये।

थानेदार—लाश कहाँ है?

शराबी—हुजूर, यह रखी है। हाय, हम तो मर मिटे। घर में जा कर क्या मुँह दिखायेंगे, किस मुँह से अब घर जायँगे। किसी डाक्टर को बुलवाइए, ज़रा नब्ज तो देख ले।

थानेदार—अजी, अब नब्ज में क्या रखा है। वेचारा बुरी मौत मरा। अब इसके दफ़न-कफ़न की फ़िक्र करो।

थानेदार चला गया, तो मियाँ खोजी खूब खिल-खिला कर हँसे कि वल्लाह, क्या बात बनायी है। शराबियों ने उनकी खूब आवभगत की कि वाह उस्ताद, क्या झाँसा दिया। आपकी बदौलत जान बची; नहीं तो न जाने किस मुसीबत में फँस जाते।

थोड़ी ही देर बाद किसी कोठरी से फिर शोर-गुल सुनायी दिया।

आजाद—अब यह कैसा गुल है भाई? क्या यह भी कोई शराबी है।

भठियारिन—नहीं, एक रईस की लड़की है। उस पर एक परेत आया है। जरा सी लड़की, लेकिन इतनी दिलेर हो गयी है कि किसी के सँभाले नहीं सँभलती।

आज़ाद—यह सब ढकोसला है।

भठियारिन—ऐ वाह, ढकोसला है। इस लड़की का भाई आगरे में था और वहाँ से पाँच सौ रुपये अपने बाप की थैली से चुरा लाया। यहाँ जो आया, तो लड़की ने कहा कि तू चोर है, चोरी करके आया है।

आज़ाद—अजी, उस लड़के ने अपनी बहन से कह दिया होगा; नहीं तो भला उसे क्या खबर होती !

मठियारी—भला ग़ज़लें उसे कहाँ से याद हैं ?

आज़ाद—इसमें अचरज की कौन सी बात है ? तुम्हें भी दो-चार ग़ज़लें याद ही होंगी !

मठियारी—मैं यह न मानूँगी। अपनी आँखों देख आयी हूँ।

आज़ाद तो खिचड़ी पकवा कर खाने लगे और मियाँ खोजी घास लाने चले। जब घसियारी ने बारह आने माँगे, तो आपने करौली दिखायी। इस पर घसियारी ने गट्ठा इन पर फेंक दिया। बेचारे गट्ठे के बोझ से ज़मीन पर आ रहे। निकलना मुश्किल हो गया। लगे चीखने—न हुई करौली, नहीं तो बता देता। अच्छे अच्छे डाकू मेरा लोहा मानते हैं। एक नहीं, पचासों को मैंने चपरगट्टू किया है। यह घसियारिन मुझसे लड़े। अब उठाती है गट्ठा या आ कर करौली भोंक दूँ ?

लोगों ने गट्ठा उठाया, तो मियाँ खोजी बाहर निकले। दाढ़ी-मूँछ पर मिट्टी जम गयी थी, लत-पत हो गये थे। उधर आज़ाद खिचड़ी खा कर लेटे ही थे कि कै हुई और फिर बुखार हो आया। तड़पने लगे। तब तो खोजी भी घबराये। सोचे, अब बिना हकीम के काम न चलेगा ? मठियारी से पूछ कर हकीम के यहाँ पहुँचे।

हकीम साहब पालकी पर सवार हो कर आ पहुँचे।

आज़ाद—आदाब बजा लाता हूँ।

खोजी—बेहद कमज़ोरी है। बात करने की ताकत नहीं।

हकीम—यह आपके कौन हैं ?

खोजी—जी हुज़ूर, यह गुलाम का लड़का है।

हकीम—आप मुझे मसखरे मालूम होते हैं।

खोजी—जी हाँ, मसखरा न होता, तो लड़के का बाप ही क्यों होता !

आज़ाद—जनाब, यह बेहया-बेशर्म आदमी है। न इसको जूतियाँ खाने का डर, न चपतियाये जाने का खौफ़। इसकी बातों का तो खयाल ही न कीजिए।

खोजी—हकीम साहब, मुझे तो कुछ दिनों से बवासीर की शिकायत हो गयी है।

हकीम—अजी, मैं खुद इस शिकायत में गिरफ्तार हूँ। मेरे पास इसका आज़माया हुआ नुस्खा मौजूद है।

खोजी—तो आपने अपने बावासीर का इलाज क्यों न किया ?

आज़ाद—खोजी, तुम्हारी शामत आयी है। आज पिटोगे।

खैर, हकीम साहब ने नुस्खा लिखा और रुखसत हुए। अब सुनिए कि नुस्खे में लिखा था—रोग़न-गुल। आपने पढ़ा रोग़नगिल, यानी मिट्टी का तेल। आप नुस्खा बँधवा कर लाये और मिट्टी के तेल में पका कर आज़ाद को पिलाया, तो मिट्टी के तेल की बदबू आयी। आज़ाद ने कहा—यह बदबू कैसी है ? इस पर मियाँ खोजी

ने उन्हें खूब ही ललकारा। वाह, बड़े नाजुक-मिज़ाज हैं, अब कोई इत्र पिलाये आपको, या केसर का खेत चराये, तब आप खुश हों। आज़ाद चुप हो रहे, लेकिन थोड़ी ही देर बाद इतने जोर का बुखार चढ़ा कि खोजी दौड़े हुए हकीम साहब के पास गये और बोले—जनाब, मरीज बेचैन है। और क्यों न हो, आपने भी तो मिट्टी का तेल नुस्खे में लिख दिया।

हकीम—मिट्टी का तेल कैसा? मैं कुछ समझा नहीं।

खोजी—जी हाँ, आप काहे को समझने लगे। आप ही तो रोगन-गिल लिख आये थे।

हकीम—अरे भले आदमी, क्या गजब किया! कैसे जाँगलुओं से पाला पड़ा है! हमने लिखा रोग़न-गुल, और आप मिट्टी का तेल दे आये! वल्लाह, इस वक़्त अगर आप मेरे मकान पर न आये होते, खड़े-खडे निकलवा देता।

खोजी—आपके हवास तो खुद ही ठिकाने नहीं। आपके मकान पर न आया होता, तो आप निकलवा कहाँ से देते? जनाब, पहले फ़रद खुलवाइए।

यह कह-कर मियाँ खोजी लौट आये। आजाद ने कहा—भाई, हकीम को तो देख चुके, अब कोई डॉक्टर लाओ।

खोजी—डॉक्टरों की दवा गरम होती है। बुखार का इलाज इन लोगों को मालूम ही नहीं।

आजाद—आप हैं अहमक! जा कर चुपके से किसी डॉक्टर को बुला लाइए।

खोजी पता पूछते हुए अस्पताल चले और डॉक्टर को बुला लाये?

डॉक्टर—ज़बान दिखाओ, ज़बान!

आजाद—बहुत खूब!

डॉक्टर—आँखें दिखाओ!

आज़ाद—आँखें दिखाऊँ, तो घबरा कर भागो।

डॉक्टर—क्या बक-बक करता है, आँख दिखा।

खैर डॉक्टर साहब ने नुस्ख़ा लिखा और फीस ले कर चंपत हुए। आजाद ने चार घंटे उनकी दवा की, मगर प्यास और बेचैनी बढ़ती गयी। सेरों बर्फ़ पी गये, मगर तसकीन न हुई। उल्टे और पेचिश ने नाक में दम कर दिया। सुबह-होते मियाँ खोजी एक वैद्यराज को बुला लाये। उन्होंने एक गोली दी और शहद के साथ चटा दी। थोड़ी देर में आजाद के हाथ-पाँव अकड़ने लगे। खोजी बहुत घबराये और दौड़े वैद्य को बुलाने। राह में एक होम्योपैथिक डॉक्टर मिल गये। यह उन्हें घेर-घार कर लाये। उन्होंने एक छोटी सी शीशी से दवा की दो बूँदें पानी में डाल दीं। उसके पीते ही आजाद की तबीयत और भी बेचैन हो गयी।

मियाँ आजाद ने दो-तीन दिन में इतने हकीम, डाक्टर और वैद्य बदले कि अपनी ही मिट्टी पलीद कर ली। इस कदर ताकत भी न रही कि खटिया से उठ सकें। खोजी ने अब उन्हें डाँटना शुरू किया—और सोइए ओस में! जरा सी हुंगी

बाँध ली और तर बिछौने पर सो रहे। फिर आप बीमार न हों, तो क्या हम हों। रोज कहता था कि ओस में सोना बुरा है; मगर आप सुनते किसकी हैं। आप अपने को तो जाली नूस समझते हैं और बाकी सबको गधा। दुनिया में बस, एक आप ही तो बुकरात हैं।

भठियारी—ऐ, तुम भी अजीब आदमी हो! भला कोई बीमार को ऐसे डाँटता है? जब अच्छे हो जायँ, तो खूब कोस लेना। और जो ओस की कहते हो, तो मियाँ, यह तो आदत पर है। हम तो दस बरस से ओस ही में सोते हैं। आज तक जुकाम भी जो हुआ हो, तो कसम ले लो।

आजाद—कोसने दो। अब यहाँ घड़ी दो घड़ी के और मेहमान हैं। अब मरे। न जाने किस बुरी साइत घर से चले थे। हुस्नआरा के पास खत भेज दो कि हमको आ कर देख जायँ। आज इस वक्त सराय में लेटे हुए बातें कर रहे हैं, कल परसों तक कब्र में होंगे—

आगोश-लहद में जब कि सोना होगा,
जुज़ खाक, न तकिया, न बिछौना होगा।
तनहाई में आह कौन होवेगा अनीस;
हम होवेंगे और कब्र का कोना होगा।

खोजी—मैं डरता हूँ कि कहीं तुम्हें सरसाम न हो जाय।

भठियारी—चुप भी रहो, आखिर कुछ अक़्ल भी है?

आजाद—मेरे दिन ही बुरे आये हैं। इनका कोई कसूर नहीं।

भठियारी—आपने भी तो हकीम की दवा की। हकीम लटकाये रहते हैं।

आजाद—खुदा हकीमों से बचाये। मूँग की खिचड़ी दे-दे कर मरीज को अध-मरा कर डालते हैं। उस पर प्याले भर-भर दवा। अगर दो महीने में भी खटिया छोड़ी, तो समझिए कि बड़ा खुशनसीब था।

खोजी—जी हाँ, जब डॉक्टर न थे, तब तो सब मर ही जाते थे।

आज़ाद—खैर, चुप रहो, सिर मत खाओ। अब हमें सोने दो।

मियाँ आजाद की आँख लग गयी। खोजी भी ऊँघने लगे। एक आदमी ने आ कर उनको जगाया और कहा—मेरे साथ आइए, आपसे कुछ कहना है। खोजी ने देखा, तो इनकी खासी जोड़ थी। उनसे अंगुल दो अंगुल दबते ही थे।

खोजी—तो आप पिले क्यों पड़ते हैं? दूर ही से कहिए, जो कुछ कहना हो।

मुसाफिर—मियाँ आजाद कहाँ हैं?

खोजी—आप अपना मतलब कहिए। यहाँ तो आजाद-वाज़ाद कोई नहीं है। आप अपना खास मतलब कहिए।

मुसाफिर—अजी, आजाद हमारे बहनोई हैं। हमारी बहन ने भेजा है कि देखो कहाँ हैं।

खोजी—उनकी शादी तो हुई नहीं, बहनोई क्योंकर बन गये?

मुसाफ़िर—कितने अक़्ल के दुश्मन हो ! भला कोई बेवजह किसी को अपना बहनोई बनावेगा ?

खोजी—भला आजाद की बीबी कहा हैं ? हमको तो दिखा दीजिए ।

मुसाफ़िर—अजी, इसी सराय के उस कोने में । चलो, दिखा दे । तुमसे क्या चोरी है ।

मियाँ खोजी कोठरी के अंदर गये । बालों में तेल डाला । सफ़ेद कपड़े पहने । लाल फुँदनेदार टोपी दी । मियाँ आजाद का एक खाकी कोट डाटा और जब खूब बन-ठन चुके, तो आईना ले कर सूरत देखने लगे । बस, ग़जब ही तो हो गया । दाढ़ी के बाल ऊँचे-नीचे पाये, मूँछे गिरी पड़ीं । आपने कैंची ले कर बाल बराबर करना शुरू किया । कैंची तेज थी, एक तरफ की मूँछ बिलकुल उड़ गयी । अब क्या करते, अपने पाँव में कुल्हाड़ी मारी । मजबूर होकर बाहर आये, तो मुसाफ़िर उन्हें देख कर हँस पड़ा । मगर आदमी था चालाक, जब्त किये रहा और खोजी को साथ ले चला । जा कर क्या देखते हैं कि एक औरत, इत्र में बसी हुई, रंगीन कपड़े पहने चारपाई पर सो रही है । जुल्फ़ें काली नागिन की तरह लहराती हुई गरदन के इर्द-गिर्द पड़ी हुई हैं । खोजी लगे आँखे सेकने । इतने में उस औरत ने आँखे खोल दीं और खोजी को देख कर ललकारा—तुम कौन हो ? यहाँ क्या काम ?

खोजी—आपके भाई पकड़ लाये ।

औरत—अच्छा, पंखा झलो, मगर आँखे बंद करके । खबरदार मुझे न देखना ।

खोजी पंखा झलने लगे और उस औरत ने झूठ-मूठ आँखें बंद कर लीं । जरा देर में आँख जो खोली, तो देखा कि खोजी आँखे फाड़-फाड़ कर देख रहे हैं । उसका आँखें खोलना था कि मियाँ खोजी ने आँखें खूब जोर से बंद कर लीं ।

औरत—क्यों जी, घूरते क्यों हो ! बताओ, क्या सजा दूँ ?

खोजी—इत्तिफ़ाक से आँख खुल गयी ।

औरत—अच्छा बताओ, मियाँ आजाद कहाँ हैं ?

उधर मियाँ आज़ाद की आँख जो खुली, तो खोजी नदारद ! जब घंटों हो गये और खोजी न आये, तो उनका माथा ठनका कि कमजोर आदमी हैं ही, किसी से टर्राये होंगे, उसने गरदन नापी होगी । भठियारे को भेजा कि जा कर जरा देखो तो । उसने हँस कर कहा—जरी से तो आदमी हैं, भेड़िया उठा ले गया होगा । दूसरा बोला—आज हवा सन्नाटे की चलती है, कहीं उड़ गये होंगे । आखिर भठियारी ने कहा कि उन्हें तो एक आदमी बुला कर ले गया है । खोजी खूब बन-ठन कर गये हैं ।

आजाद के पेट में चूहे दौड़ने लगे कि खोजी को कौन पकड़ ले गया । गिड़गिड़ा कर भठियारी से कहा—चाहे जो हो, खोजी को लाओ । किसी से पूछो-पाछो । आखिर गये कहाँ ?

इधर मियाँ खोजी उस औरत के साथ बैठे दस्तरख्वान पर हत्थे लगा रहे थे

खाते जाते थे और तारीफ़ें करते जाते थे। एक लुकमा खाया और कई मिनट तक तारीफ की। यह तो तारीफ़ ही करते रहे, उधर मियाँ मुसाफ़िर ने दस्तरख्वान साफ कर दिया। खोजी दिल में पछताये कि हमसे क्या हिमाकत हुई। पहले खूब पेट-भर खा लेते, फिर चाहे दिन भर बैठे तारीफ़ करते। उस औरत ने पूछा कि कुछ और लाऊँ? शर्माइएगा नहीं। यह आपका घर है। खोजी कुछ माँगनेवाले ही थे कि मियाँ मुसाफिर ने कहा—नहीं जी, अब क्या हैजा कराओगी? यह कह कर उसने दस्तरख्वान हटा दिया और खोजी मुँह ताकते रह गये। खाना खाने के बाद पान की बारी आयी। दो ही गिलौरियाँ थीं। मुसाफ़िर ने एक तो उस औरत को दी और दूसरी अपने मुँह में रख ली। खोजी फिर मुँह देख कर रह गये। इसके बाद मुसाफ़िर ने उनसे कहा—मियाँ होत, अरे भाई, तुमसे कहते हैं।

खोजी—किससे कहते हो जी? क्या कहते हो?

मुसाफिर—यही कहते हैं कि जरा पलँग से उतर कर बैठो। क्या मजे से बराबर आ कर डट गये! उतरा कि मैं पहुँचूँ? और देखिएगा, आप पलँग पर चढ़ कर बैठे हैं। अपनी हैसियत को नहीं देखता।

खोजी—चुप गीदी, न हुई करौली, नहीं तो भोंक देता।

औरत—करौली पीछे ढूँढ़िएगा, पहले जरा यहाँ से खिसक कर नीचे बैठिए।

खोजी—बहुत अच्छा, अब बैठूँ तो तोप पर उड़ा देना।

मुसाफिर—ले चलो, उठो, यह लो, झाड़ू। अभी झाड़ू दे डालो।

खोजी—झाड़ू तुम दो। हमको भी कोई भड़भूजा समझा है? हम खानदानी आदमी हैं। रईसों से इस तरह बातें कहता है गीदी!

मुसाफिर—हमें तो नानबाई सा मालूम होता है। चलिए, उठिए, झाड़ू दीजिए। बड़े रईसजादे बन कर बैठे हैं। रईसों की ऐसी ही सूरत हुआ करती है?

खोजी ने दिल में सोचा कि जिससे मिलता हूँ, वह यही कहता है कि भलेमानस की ऐसी सूरत नहीं होती। और, इस वक्त तो एक तरफ की मूँछ ही उड़ गयी है, भलामानस कौन कहेगा। कुछ नहीं, अब हम पहले मुँह बनवायेंगे। बोले—अच्छा, रुखसत।

मुसाफिर—वाह, क्या दिल्लगी है। बैठिए, चिलम भरके जाइएगा।

मियाँ खोजी ऐसे झल्लाये कि चिमट ही तो गये। दोनों में चपतबाजी होने लगी। दोनों का कद कोई छह छह बालिश्त का, दोनों मरियल, दोनों चंडूबाज। यह आहिस्ता से उनको चपत लगाते हैं, वह धीरे से इन पर धप जमाते हैं। उन्होंने इनके कान पकड़े इन्होंने उनकी नाक पकड़ी। उन्होंने इनको काट खाया, इन्होंने उनको नोच लिया। और मजा यह कि दोनों रो रहे हैं। मियाँ खोजी करौली की धुन बाँधे हुए हैं। आखिर दोनों हाँप गये। न यह जीते, न वह। खोजी लड़खड़ा कर गिरे, तो चारों खाने चित। उस हसीना ने दो-तीन धौल ऊपर से जमा दिये। इनका तो यह हाल हुआ, उधर मियाँ मुसाफिर ने चक्कर खाया और धम से जमीन पर। आखिर

हसीना ने दोनों को उठाया और कहा—बस, लड़ाई हो चुकी। अब क्या कट ही मरोगे ? चलो, बैठो।

खोजी—न हुई करौली, नहीं तो भोंक देता। हात् तेरे की !

मुसाफिर—वह तो मैं हाँप गया, नहीं तो दिखा देता आपको मजा। कुछ ऐसा-वैसा समझ लिया है। सैकड़ों पेच याद हैं।

हसीना—खबरदार, जो अब किसी की जबान खुली ! चलो, अब चलें मियाँ आजाद के पास। उनकी भी तो खबर ले, जिस काम के लिए यहाँ तक आये हैं।

शाम हो गयी थी। हसीना दोनों आदमियों के साथ आजाद की कोठरी में पहुँची, तो क्या देखती है कि आजाद सोये हैं और भठियारी बैठी पंखा झल रही है। उसने चट आज़ाद का कंधा पकड़ कर हिलाया। आज़ाद की आँखें खुल गयीं। आँख का खुलना था कि देखा, अलारक्खी सिरहाने खड़ी हैं और मियाँ चंडूबाज सामने खड़े पाँव दबा रहे हैं। आजाद की जान सी निकल गयी। कलेजा धड़-धड़ करने लगा, होश पैतरे हो गये। या खुदा, यहाँ यह कैसे पहुँची ? किसने पता बताया ? जरा बीमारी हलकी हुई, तो इस बला ने आ दबोचा—

एक आफत से तो मर-मरके हुआ था जीना;
पड़ गयी और यह कैसी, मेरे अल्लाह, नयी।

खोजी—हजरत, उठिए, देखिए, सिरहाने कौन खड़ा है। वल्लाह, फड़क जाओ तो सही।

आज़ाद—(अलारक्खी से) बैठिए-बैठिए, खूब मिलीं ?

खोजी—अजी, अभी हमसे और आपके साले से बड़ी ठाँय-ठाँय हो गयी। वह तो कहिए, करौली न थी, नहीं सालारजंग के पलस्तर बिगाड़ दिये होते।

आजाद ने खोजी, चंडूबाज और भठियारी को कमरे के बाहर जाने को कहा। जब दोनों अकेले रह गये, तो आजाद ने अलारक्खी से कहा—कहिए, आप कैसे तशरीफ लायी हैं ? हम तो वह आजाद ही नहीं रहे। वह दिल ही नहीं, वह उमंग ही नहीं। अब तो रूम ही जाने की धुन है।

अलारक्खी—प्यारे आजाद, तुम तो चले रूम को, हमे किस के सुपुर्द किये जाते हो ? न हो, जमीन ही को सौंप दो। अब हम किसके हो कर रहें ?

आजाद—अब हमारी इज्जत और आबरू आप ही के हाथ है। अगर रूम से जीते वापस आये, तो तुमको न भूलेंगे। अल्लाह पर भरोसा रखो, वही बेड़ा पार करेगा। मेरी तबीयत दो-तीन दिन से अच्छी नहीं है। कल तो नहीं, परसों जरूर रवाना हूँगा।

खोजी—(भीतर आ कर) बी अलारक्खी अभी पूछ रही थीं कि मुझको किसके सुपुर्द किये जाते हो; आपने इसका कुछ जवाब न दिया। जो कोई और न मिले, तो हमीं यह मुसीबत सहें। हमारे ही सिपुर्द कर दीजिए। आप जाइए, हम और वह यहाँ रहेंगे।

आजाद—तुम यहाँ क्यों चले आये ? निकलो यहाँ से।

अलारक्खी बड़ी देर तक आज़ाद को समझाती रही—हमारा कुछ ख़याल न करो, हमारा अल्लाह मालिक है। तुम हुस्नआरा से कौल हारे हो, तो रूम जाओ और ज़रूर जाओ, ख़ुदा ने चाहा तो सुर्खरू हो कर आओगे। मैं भी जा कर हुस्न-आरा ही के पास रहूँगी। उन्हें तसल्ली देती रहूँगी। ज़रा जो किसी पर खुलने पावे कि मुझसे-तुमसे क्या ताल्लुक है। इतना ख़याल रहे कि जहाँ-जहाँ डाक जाती हो, वहाँ-वहाँ से ख़त बराबर भेजते जाना। ऐसा न हो कि भूल जाओ। नहीं तो वह कुढ़-कुढ़ कर मर ही जायँगी। और, मेरा तो जो हाल है, उसको ख़ुदा ही जानता है। अपना दुःख किससे कहूँ?

आज़ाद—अलारक्खी, ख़ुदा की क़सम, हम तुमको अपना इतना सच्चा दोस्त नहीं जानते थे। तुमको मेरा इतना ख़याल और मेरी इतनी मुहब्बत है, यह तो आज मालूम हुआ।

इस तरह दो-तीन घंटे तक दोनों ने बातें कीं। जब अलारक्खी रवाना हुई, तो दोनों गले मिल कर खूब रोये।

२६

आजाद ने सोचा कि रेल पर चलने से हिंदोस्तान की हालत देखने में न आयेगी। इसलिए वह लखनऊ के स्टेशन पर सवार न हो कर घोड़े पर चले थे। एक शहर से दूसरे शहर जाना, जंगल और देहात की सैर करना, नये-नये आदमियों से मिलना उन्हें पसंद था। रेल पर ये मौके कहाँ मिलते। अलारक्खी के चले जाने के एक दिन बाद वह भी चले। घूमते-घामते एक क़स्बे में जा पहुँचे। बीमारी से तो उठे ही थे, थक कर एक मकान के सामने बिस्तर बिछाया और डट गये। मियाँ खोजी ने आग सुलगायी और चिलम भरने लगे। इतने में उस मकान के अंदर से एक बूढ़े निकले और पूछा—आप कहाँ जा रहे हैं?

आजाद—इरादा तो बड़ी दूर का करके चला हूँ, रूम का सफर है, देखूँ पहुँचता हूँ या नहीं।

बूढ़े मियाँ—खुदा आपको सुर्खरू करे। हिम्मत करनेवाले की मदद खुदा करता है। आइए, आराम से घर में बैठिए। यह भी आप ही का घर है।

आजाद उस मकान में गये, तो क्या देखते हैं कि एक जवान औरत चिक उठाये मुसकिरा रही है। आजाद ज्यों ही फर्श पर बैठे वह हसीना बाहर निकल आयी और बोली—मेरे प्यारे आजाद, आज बरसों के बाद तुम्हें देखा। सच कहना, कितनी जल्दी पहचान गयी। आज मुँह-माँगी मुराद पायी।

मियाँ आजाद चकराये कि यह हसीना कौन है, जो इतनी मुहब्बत से पेश आती है। अब साफ़ साफ़ कैसे कहें कि हमने तुम्हें नहीं पहचाना। उस हसीना ने यह बात ताड़ ली और मुसकिरा कर कहा—

> हम ऐसे हो गये अल्लाह-अकबर, ऐ तेरी क़ुदरत।
> हमारा नाम सुन कर हाथ वह कानों पे धरते हैं।

आप और इतनी जल्द हमें भूल जायँ! हम वह हैं जो लड़कपन में तुम्हारे साथ खेला किये हैं। तुम्हारा मकान हमारे मकान के पास था। मै तुम्हारे बाग में रोज फूल चुनने जाया करती थी। अब समझे कि अब भी नहीं समझे?

आज़ाद—आहाहा, अब समझा, ओफ् ओह! बरसों बाद तुम्हें देखा। मै भी सोचता था कि या खुदा यह कौन है कि ऐसी बेझिझक हो कर मिली। मगर पहचानते, तो क्यों कर पहचानते? तब में और अब में जमीन-आसमान का फर्क है। सच कहता हूँ ज़ीनत, तुम कुछ और ही हो गयी हो।

जीनत—आज किसी भले का मुँह देख कर उठी थी। जब से तुम गये, जिंदगी का मजा जाता रहा—

यह हसरत रह गयी किस-किस मजे से जिंदगी कटती ;
अगर होता चमन अपना, गुल अपना, बाग़बाँ अपना।

आजाद—यहाँ भी बड़ी-बड़ी मुसीबतें झेलीं, लेकिन तुम्हें देखते ही सारी कुल-फतें दूर हो गयीं—

तब लुत्फ़े-जिंदगी है, जब अब्र हो, चमन हो ;
पेशे-नज़र हो साक़ी, पहलू में गुलबदन हो।

यहाँ अख्तर नहीं नज़र आती!

जीनत—है तो, मगर उसकी शादी हो गयी। तुम्हें देखने के लिए बहुत तड़पती थी। उस बेचारी को चचाजान ने जान-बूझ कर खारी कुएँ में ढकेल दिया। एक लुच्चे के पाले पड़ी है, दिन-रात रोया करती है। अब्बाजान जब से सिधारे, इनके पाले पड़े हैं। जब देखो, सोटा लिये कल्ले पर खड़े रहते हैं। ऐसे शोहदे के साथ ब्याह दिया, जिसका ठौर न ठिकाना। मैं यह नहीं कहती कि कोई रुपयेवाला या बहादुरशाह के खानदान का होता। ग़रीब आदमी की लड़की कुछ ग़रीबों ही के यहाँ खूब रहती है। सबसे बड़ी बात यह है कि समझदार हो, चाल-चलन अच्छा हो; यह नहीं कि पढ़े न लिखे, नाम मुहम्मदफ़ाज़िल; अलिफ़ के नाम बे नहीं जानते, मगर दावा यह है कि हम भी हैं पाँचवे सवारों में। हमारे नजदीक जिसकी आदत बुरी हो उससे बढ़ कर पाजी कोई नहीं। मगर अब तो जो होना था, सो हुआ; तुम खूब जानते हो आज़ाद कि साली को अपने बहनोई का कितना प्यार होता है; मगर क़सम लो, जो उसका नाम लेने को भी जी चाहता हो। बीबी का जेवर सब बेच कर चट कर गया—कुछ दाँव पर रख आया, कुछ के औने-पौने किये। मकान-बकान सब इसी जुए के फेर में घूम गया। अब टके-टके को मुहताज है। डर मालूम होता है कि किसी दिन यहाँ आ कर कपड़े-लत्ते न उठा ले जाय। चचा को उसका सब हाल मालूम था, मगर लड़की को भाड़ में झोंक ही दिया। आती होगी, देखना, कैसी घुल के काँटा हो गयी है। हड्डी-हड्डी गिन लो। ऐ अख्तरी, जरी यहाँ आओ। मियाँ आजाद आये हैं।

जरा देर में अख्तर आयी। आजाद ने उसको और उसने आजाद को देखा, तो दोनों बेअख्तियार खिल-खिला कर हँस पड़े। मगर जरा ही देर में अख्तर की आँखें भर आयीं और गोल-गोल आँसू टप-टप गिरने लगे। आज़ाद ने कहा—बहन, हम तुम्हारा सब हाल सुन चुके; पर क्या करें, कुछ बस नहीं। अल्लाह पर भरोसा रखो, वही सबका मालिक है। किसी हालत में आदमी को घबराना न चाहिए। सब्र करनेवालों का दर्जा बड़ा होता है।

इस पर अख्तर ने और भी आठ-आठ आँसू रोना शुरू किया।

ज़ीनत बोली—बहन, आजाद बहुत दिनों के बाद आये हैं। यह रोने का मौका नहीं।

आजाद—अख्तर, वह दिन याद हैं, जब तुमको हम चिढ़ाया करते थे और तुम

अंगूर की टट्टी में रूठ कर छिप रहती थीं; हम ढूँढ़ कर तुम्हें मना लाते थे और फिर चिढ़ाते थे ? हमको जो तुम्हारी दोनों की मुहब्बत है, इसका हाल हमारा खुदा ही जानता है। काश, खुदा यह दिन न दिखाता कि मैं तुमको इस मुसीबत में देखता। तुम्हारी वह सूरत ही बदल गयी।

अख्तर—भाई, इस वक्त तुमको क्या देखा, जैसे जान में जान आ गयी। अब पहले यह बताओ कि तुम यहाँ से जाओगे तो नहीं ? इधर तुम गये, और उधर हमारा जनाजा निकला। बरसों बाद तुम्हें देखा है, अब न छोड़ूँगी।

इसी तरह बातें करते-करते रात हो गयी। आजाद ने दोनों बहनों के साथ खाना खाया। तब जीनत बोली—आज पुरानी सोहबतों की बहार आँखों में फिर गयी। आइए, खाना खा कर चमन में चलें। बाग तो वीरान है; मगर चलिए, जरा दिल बहलायें। क़सम लीजिए, जो महीनों चमन का नाम भी लेती हों—

नजर आता है गुल आजर्दा, दुश्मन बाग़बाँ मुझको ;
बनाना था न ऐसे बोस्ताँ में आशियाँ मुझको।

खाना खा कर तीनों बाग़ की सैर करने चले।

आजाद—ओहोहो, यह पुराना दरख्त है। इसी के साये में हम रात-रात बैठे रहते थे। आहाहा, यह वह रविश है, जिस पर हमारा पाँव फिसला था और हम गिरे, तो अख्तर खूब खिल-खिला कर हँसी। तुम्हारे यहाँ एक बूढ़ी औरत थी, जैनब की माँ।

अख्तर—थी क्यों, क्या अब नहीं है ? ऐं वह हमसे तुमने हट्टी-कट्टी है; ख़ासी कठौता सी बनी हुई है।

आजाद—क्या वह बूढ़ी अभी तक जिंदा है ? क्या आकबत के बोरिये बटोरेगी ?

चलते-चलते बाग़ मे एक जगह दीवार पर लिखा देखा कि मियाँ आजाद ने आज इस बाग की सैर की।

इतने मे जीनत के बूढ़े चचा आ पहुँचे और बोले—भई, हमने आज जो तुम्हें देखा, तो ख़याल न आया कि कहाँ देखा है। खूब आये। यह तो बतलाओ, इतने दिन रहे कहाँ ? जीनत तुम्हें रोज याद किया करती थी, उठते-बैठते तुम्हारा ही नाम जबान पर रहता था ? अब आप यहीं रहिए। जीनत को जो तुमसे मुहब्बत है, वह उसका और तुम्हारा, दोनों का दिल जानता होगा। मेरी दिली आरजू है कि तुम दोनों का निकाह हो जाय। इसी बाग में रहिए और अपना घर सँभालिए। मैं तो अब गोशे बैठ कर खुदा की बंदगी करना चाहता हूँ।

मियाँ आजाद ये बातें सुन कर पानी-पानी हो गये। 'हाँ' कहें, तो नहीं बनती, 'नहीं' कहें, तो शामत आये। सन्नाटे में थे कि कहें क्या। आख़िर बहुत देर के बाद बोले—आपने जो कुछ फ़रमाया, वह आपकी मेहरबानी है। मैं तो अपने को इस लायक नहीं समझता। जिसका ठौर न ठिकाना, वह जीनत के काबिल कब हो सकता है ?

मियाँ आज़ाद तो यहाँ चैन कर रहे थे, उधर मियाँ खोजी का हाल सुनिए। मियाँ आजाद की राह देखते-देखते पीनक जो आ गयी, तो टट्टू एक किसान के खेत में जा पहुँचा। किसान ने ललकारा—अरे, किसका टट्टू है? आप ज़रा भी न बोले। उसने खूब गालियाँ दीं। आप बैठे सुना किये। जब उसने टट्टू को पकड़ा और काँजी-हौस ले चला, तब आप उससे लिपट गये। उसने झल्ला कर एक धक्का जो दिया, तो आपने बीस लुढ़कनियाँ खायीं। वह टट्टू को ले चला। जब खोजी ने देखा कि वह हारी-जीती एक नहीं मानता, तो आप धम से टट्टू की पीठ पर हो रहे' अब आगे-आगे किसान, पीछे-पीछे टट्टू और टट्टू की पीठ पर खोजी। राह चलते लोग देखते थे। खोजी बार-बार करौली की हाँक लगाते थे। इस तरह काँजीहौस पहुँचे। अब काँजीहौस का चपरासी और मुंशी बार-बार कहते हैं कि हज़रत, टट्टू पर से उतरिए, इसे हम भीतर बंद करें; मगर आप उतरने का नाम नहीं लेते; ऊपर बैठे-बैठे करौली और तमंचे का रोना रो रहे हैं। आखिर मजबूर हो कर मुंशी ने खोजी को छोड़ दिया। आप टट्टू लिये हुए मूँछों पर ताव देते घर की तरफ चले, गोया कोई किला जीत कर आये हैं।

उधर आजाद से अख्तर ने कहा—क्यों भाई, वे पहेलियो भी याद हैं, जो तुम पहले बुझवाया करते थे? बहुत दिन हुए, कोई चीसताँ सुनने में नहीं आयी।

आजाद—अच्छा, बूझिए—

आँ चीस्त दहन हजार दारद;
(वह क्या है जिसके सौ मुँह होते हैं)
दर हर दहने दो मार दारद;
(हर मुँह में दो साँप होते हैं)
शाहेस्त नशिस्ता बर सरे-तख्त।
(एक बादशाह तख्त पर बैठा हुआ है)
आँ रा हमा दर शुमार दारद।
(उसी को सब गिनते हैं)

अख्तर—हज़ार मुँह! यह तो बड़ी टेढ़ी खीर है!

जीनत—गिनती कैसी?

आजाद—कुछ न बतायेंगे। जो खुदा की बंदगी करते हैं, वह आपी समझ जायँगे।

अख्तर—अहाहा, मैं समझ गयी। अल्लाह की कसम, समझ गयी। तसबीह है; क्यों कैसी बूझी?

आजाद—हाँ। अच्छा, यह तो कोई बूझे—

राजा के घर आयी रानी,
औघट-घाट वह पीवे पानी।
मारे लाज के डूबी जाय,
नाहक चोट परोसी खाय।

जीनत—भई, हमारी समझ में तो नहीं आता। बता दो, बस, बूझ चुकी।

अख्तर—वाह, देखो, बूझते हैं। घड़ियाल है।

आजाद—वल्लाह, खूब बूझी। अब की बूझिए—

एक नार जब सभा में आवे,
सारी सभा चकित रह जावे।
चातुर चातुर वाके यार,
मूरख देखे मुँह पसार।

जीनत—जो इसको कोई बूझ दे, तो मिठाई खिलाऊँ।

आजाद—वह इस वक़्त यहाँ है। बस, इतना इशारा बहुत है।

अख्तर—हम हार गये, आप बता दें।

आजाद—बता ही दूँ, यह पहेली है।

जीनत—अरे, कितनी मोटी बात पूछी और हम न बता सके!

अख्तर—अच्छा, बस एक और कह दीजिए। लेकिन अबकी कोई कहानी कहिए। अच्छी कहानी हो, लड़कों के बहलाने की न हो।

आजाद ने अपनी और हुस्नआरा की मुहब्बत की दास्तान बयान करनी शुरू की। बजरे पर सैर करना, सिपहआरा का दरिया में डूबना और आजाद का उसको निकालना, हुस्नआरा का आजाद से रूम जाने के लिए कहना और आजाद का कमर बाँध कर तैयार हो जाना, ये सारी बातें बयान कीं।

अख्तर—बेशक सच्ची मुहब्बत थी।

आजाद—मगर मियाँ आशिक वहाँ से चले, तो राह मे नीयत डावाँडोल हो गयी। किसी और के साथ शादी कर ली।

अख्तर—तोबा! तोबा! बड़ा बुरा किया! बस, जबानी दाखिला था!

जीनत—सच्ची मुहब्बत होती, तो हूर पर भी आँख न उठाता। रूम जाता और फिर आता। मगर वह कोई मक्कार आदमी था।

आजाद—वह आशिक मै हूँ और माशूक हुस्नआरा है। मैंने अपनी ही दास्तान सुनायी और अपनी ही हालत बतायी। अब जो हुक्म दो, वह मंजूर, जो सलाह बताओ वह कबूल। रूम जाने का वादा कर आया हूँ, मगर यहाँ तुमको देखा, तो अब कदम नहीं उठता। क़सम ले लो, जो तुम्हारी मर्जी के खिलाफ करूँ।

इतना सुनना था कि अख्तर की आँखे डबडबा आयीं और जीनत का मुँह उदास हो गया। सिर झुका कर रोने लगी।

अख्तर—तो फिर आये यहाँ क्या करने?

जीनत—तुम तो हमारे दुश्मन निकले। सारी उमंगों पर पानी फेर दिया—

शिकवा नहीं है आप जो अब पूछते नहीं;
वह शक्ल मिट गयी, वह शबाहत नहीं रही।

अख्तर—बाजी, अब इनको यही सलाह दो कि रूम जायँ। मगर जब वापस आयें, तो हमसे भी मिलें, भूल न जायँ।

इतने में बाहर से आवाज़ आयी कि न हुई करौली, वर्ना खून की नदी बहती होती, कई आदमियों का खून हो गया होता। वह तो कहिए, खैर गुजरी। आज़ाद ने पुकारा—क्यों भाई खोजी, आ गये ?

खोजी—वाह-वाह ! क्या साथ दिया ! हमको छोड़ कर भागे, तो खबर भी न ली। यहाँ किसान से डंडा चल गया, काँजीहौस में चौकीदार से लाठी-पोंगा हो गया; मगर आपको क्या।

आज़ाद—अजी चलो, किसी तरह आ तो गये।

खोजी—अजी, यही बूढ़े मियाँ राह में मिले, वह यहाँ तक ले आये। नहीं तो सचमुच घास खाने की नौबत आती।

मियाँ आजाद दूसरे दिन दोनों बहनों से रुखसत हुए। रोते-रोते जीनत की हिचकियाँ बँध गयीं। आजाद भी नर्म-दिल आदमी थे। फूट-फूट कर रोने लगे। कहा—मैं अपनी तसवीर दिये जाता हूँ, इसे अपने पास रखना। मैं खत बराबर भेजता रहूँगा। वापस आऊँगा, तो पहले तुमसे मिलूँगा, फिर किसी से। यह कह कर दोनों बहनों को पाँच-पाँच अशर्फ़ियाँ दीं। फिर जीनत के चचा के पास जा कर बोले—आप बुजुर्ग हैं, लेकिन इतना हम जरूर कहेंगे कि आपने अख्तरी को जीते जी मार डाला। दीन का रखा न दुनिया का। आदमी अपनी लड़की का ब्याह करता है, तो देख लेता है कि दामाद कैसा है; यह नहीं कि शोहदे और बदमाश के साथ ब्याह कर दिया। अब आपको लाजिम है कि उसे किसी दिन बुलाइए, और समझाइए, शायद सीधे रास्ते पर आ जाय।

बूढ़े मियाँ—क्या कहें भाई, हमारी किस्मत ही फूट गयी। क्या हमको अख्तरी का प्यार नहीं है ? मगर करें क्या ? उस बदनसीब को समझाये कौन ? किसी की सुने भी।

आजाद—खैर, अब जीनत की शादी जरा समझ-बूझ कर कीजिएगा। अगर जीनत किसी अच्छे घर ब्याही जाय और उसी का शौहर चलन का अच्छा हो, तो अख्तर के भी आँसू पुँछें कि मेरी बहन तो खुश है, यही सही। चार दिन जो कहीं बहन के यहाँ जा कर रहेगी, तो जी खुश होगा, बड़ी ढारस होगी। अब बंदा तो रुखसत होता है, मगर आपको अपने ईमान और मेरी जान की क़सम है, जीनत की शादी देख-भाल कर कीजिएगा।

यह कह कर आजाद घर से बाहर निकले, तो दोनों बहनों ने चिल्ला-चिल्ला कर रोना शुरू किया।

आजाद—प्यारी अख्तर और प्यारी जीनत, खुदा गवाह है, इस वक्त अगर मुझे मौत आ जाय, तो समझूँ, जी उठा। मुझे खूब मालूम है, मेरी जुदाई तुम्हें अखरेगी, लेकिन क्या करूँ, किसी ऐसी-वैसी जगह जाना होता, तो खैर, कोई मुजायका न था,

मगर एक ऐसी मुहिम पर जाना है, जिससे इनकार करना किसी मुसलमान को गवारा नहीं हो सकता। अब मुझे हँसी-खुशी रुख़सत करो।

ज़ीनत ने कलेजा थाम कर कहा—जाइए। इसके आगे मुँह से एक बात भी न निकली।

अख़्तर—जिस तरह पीठ दिखायी, उसी तरह मुँह भी दिखाओ।

२७

मियाँ आजाद और खोजी चलते-चलते एक नये कस्बे में जा पहुँचे और उसकी सैर करने लगे। रास्ते में एक अनोखी सज-धज के जवान दिखायी पड़े। सिर से पैर तक पीले कपड़े पहने हुए, ढीले पाँयचे का पाजामा, केसरिये केचुल-लोट का अँगरखा, केसरिया रँगी दुपल्ली टोपी, कंधों पर केसरिया रूमाल, जिसमें लचका टका हुआ। सिन कोई चालीस साल का।

आजाद—क्यों भई खोजी, भला भाँपो तो, यह किस देश के हैं।

खोजी—शायद काबुल के हों।

आजाद—काबुलियों का यह पहनावा कहाँ होता है?

खोजी—वाह, खूब समझे! क्या काबुल में गधे नहीं होते?

आजाद—जरा हजरत की चाल तो देखिएगा, कैसे कूंदे झाड़ते हुए चले जाते हैं। कभी जरी के जूते पर निगाह है, कभी रूमाल फड़काते हैं, कभी अँगरखा चमकाते हैं, कभी लचके की झलक दिखाते हैं। इस दाढ़ी-मूँछ का भी खयाल नहीं। यह दाढ़ी और यह लचके की गोट, सुभान-अल्ला!

खोजी—आपको जरा छेड़िए तो; दिल्लगी ही सही।

आजाद—जनाब, आदाबअर्ज है। वल्लाह, आपके लिबास पर तो वह जोबन है कि आँख नहीं ठहरती, निगाह के पाँव फिसले जाते हैं।

जर्दपोश—(शरमा कर) जी, इसका एक खास सबब है।

आजाद—वह क्या? क्या किसी सरकार से वर्दी मिली है? या, सच कहना उस्ताद, किसी नाई से तो नहीं छीन लाये?

जर्दपोश—(अपने नौकर से) रमजानी, जरा बता तो देना, हमें अपने मुँह से कहते हुए शरम आती है।

रमजानी—हुजूर, मियाँ का निकाह होनेवाला है। इसी पहनावे की रस्म है हुजूर!

आजाद—रस्म की एक ही कही। यह अच्छी रस्म है—दाढ़ी-मूँछवाले आदमी, और लचका, वजत पट्ठा लगा कर कपड़े पहने! अरे भई, ये कपड़े दुलहिन के लिए हैं, या आप-जैसे मुछक्कड़-फक्कड़बेग के लिए? खुदा के लिए इन कपड़ों को उतारो, मरदों की पोशाक पहनो!

इधर आजाद तो यह फटकार सुना कर अलग हुए, उधर खिदमतगार ने मियाँ जर्दपोश को समझाना शुरू किया—मियाँ, सच तो कहते थे। जिस गली-कूँचे में आप निकल जाते हैं, लोग तालियाँ बजाते और हँसी उड़ाते हैं।

जर्दपोश—हँसने दो जी; हँसते ही घर बसते हैं।

खिदमतगार—मियाँ, मै जाहिल आदमी हूँ, मुल बुरी बात बुरी ही है। हम ग़रीब आदमी हैं, फिर भी ऐसे कपड़े नहीं पहनते।

मियाँ आज़ाद उधर आगे बढ़े तो क्या देखते हैं, एक टुकड़ी सामने से आ रही है। उस पर तीन नौजवान रईस बड़े ठाट से बैठे हैं। तीनों ऐनकबाज़ हैं। आज़ाद बोले—यह नया फ़ैशन देखने में आया। जिसे देखो, ऐनकबाज़। अच्छी-खासी आँखें रखते हुए भी अंधे बनने का शौक़!

मियाँ आज़ाद को यह क़स्बा ऐसा पसंद आया कि उन्होंने दो-चार दिन यहीं रहने की ठानी। एक दिन घूमते-घामते एक नवाब के दरबार में जा पहुँचे। सजी-सजायी कोठी, बड़े-बड़े कमरे। एक कमरे में गलीचे बिछे हुए, दूसरे में चौकियाँ, मेज़, मसहरियाँ क़रीने से रखी हुई। खोजी यह ठाट-बाट देख कर अपने नवाब को भूल गये। जा कर दोनों आदमी दरबार में बैठे। खोजी तो नवाबों की सोहबत उठाये थे, जाते ही जाते कोठी की इतनी तारीफ़ की कि पुल बाँध दिये—हुज़ूर, ख़ुदा जानता है, क्या सजी-सजायी कोठी है। क़सम है हुसेन की, जो आज तक ऐसी इमारत नज़र से गुज़री हो। हमने तो अच्छे-अच्छे रईसों की मुसाहबत की है, मगर कहीं यह ठाट नहीं देखा। हुज़ूर बादशाहों की तरह रहते हैं। हुज़ूर की बदौलत हज़ारों ग़रीबों-शरीफ़ों का भला होता है। ख़ुदा ऐसे रईस को सलामत रखे।

मुसाहब—अजी, अभी आपने देखा क्या है? मुसाहब लोग तो अब आ चले हैं। शाम तक सब आ जायँगे। एक मेले का मेला रोज लगता है।

नवाब—क्यों साहब, यह फ्रीमेशन भी जादूगर है शायद? आखिर जादू नहीं, तो है क्या?

मुसाहब—हुज़ूर बजा फ़रमाये हैं। कुछ दिन हुए, मेरी एक फ्रीमेशन से मुलाक़ात हुई। मैं, आप जानिए, एक ही काइयाँ। उनसे ख़ूब दोस्ती पैदा की। एक दिन मैंने उनसे पूछा, तो बोले—यह वह मज़हब है, जिससे बढ़ कर दुनिया में कोई मजहब ही नहीं। क्यों नहीं हो जाते फ्रीमेशन? मेरे दिल में भी आ गयी। एक दिन उनके साथ फ्रीमेशन हुआ। वहाँ हुज़ूर, करोड़ों लाशें थीं। सब की सब मुझसे गले मिलीं और हँसीं। मैं बहुत ही डरा। मगर उन लोगों ने दिलासा दिया—इनसे डरते क्यों हो? हाँ, ख़बरदार, किसी से कहना नहीं; नहीं तो ये लाशें कच्चा ही खा जायँगी। इतने में ख़ुदावंद, आग बरसने लगी और मैं जल-भुन कर ख़ाक हो गया। इसके बाद एक आदमी ने कुछ पढ़ कर फूँका, तो फिर हट्टा-कट्टा मौजूद। हुज़ूर, सच तो यों है कि दूसरा होता, तो रो देता, लेकिन मैं जरा भी न घबराया। थोड़ी देर के बाद एक देव जैसे आदमी ने मुझे एक हौज में ढकेल दिया। मै दो दिन और दो रात वहीं पड़ा रहा। जब निकाला गया, तो फिर टैयाँ सा मौजूद। सबकी सलाह हुई कि इसको यहाँ से निकाल दो। हुज़ूर, ख़ुदा-ख़ुदा करके बचे, नहीं तो जान ही पर बन आयी थी!

ग़प्पी—हुज़ूर, सुना है; कामरूप में औरतें मर्दों पर मात्र पढ़ कर फूँकती और

बकरा, बैल गधा, वगैरह बना डालती हैं। दिन भर बकरे बने, में-में किया किये, सानी खाया किये, रात को फिर मर्द के मर्द। दुनिया में एक से एक जादूगर पड़े हैं।

खुशामदी—हुज़ूर, यह मूठ क्या चीज़ है? कल रात को हुज़ूर तो यहाँ आराम फरमाते थे, मैं दो बजे के वक्त कुरान पढ़ कर टहलने लगा, तो हुज़ूर के सिरहाने के ऊपर रोशनी सी हुई। मेरे तो होश उड़ गये।

मुसाहब—होश उड़ने की बात ही है।

खुशामदी—हुज़ूर, मैं रात भर जागता रहा और हुज़ूर के पलँग के इर्द-गिर्द पहरा दिया किया।

नवाब—तुम्हें कुरान की कसम।

खुशामदी—हुज़ूर की बदौलत मेरे बाल-बच्चे पलते हैं; भला आपसे और झूठ बोलूँ? नमक की कसम, बदन का रोआँ-रोआँ खड़ा हो गया। अगर मेरा बाप भी होता; तो मैं पहरा न देता; मगर हुज़ूर का नमक जोश करता था।

जमामार—हुज़ूर, यहाँ एक जोड़ी बिकाऊ है। हुज़ूर खरीदें, तो दिखाऊँ। क्या जोडी है कि ओहोहोहो! डेढ़ हज़ार से कम में न देगा।

मुसाहब—ऐ, तो आपने खरीद क्यों न ली! इतनी तारीफ करते हो और फिर हाथ से जाने दी! हुज़ूर, इन्हें हुक्म हो कि बस, खरीद ही लायें! बादशाही में इनके यहाँ भी कई घोड़े थे; सवार भी खूब होते हैं; और चाबुक-सवारी में तो अपना सानी नहीं रखते।

नवाब—मुनीम से कहो, इन्हें दो हज़ार रुपये दें, और दो साईस इनके साथ जायँ।

जमामार मुनीम के घर पहुँचे और बोले—लाला जवाहिरमल, सरकार ने दो हज़ार रुपये दिलवाये हैं, जल्द आइए।

जवाहिरमल—तो जल्दी काहे की है? ये रुपये होंगे क्या?

जमामार—एक जोड़ी ली जायगी। उस्ताद, देखो, हमको बदनाम न करना। चार सौ की जोड़ी है। बाकी रहे सोलह सौ। उसमें से आठ सौ यार लोग खायँगे बाकी आठ सौ में छह सौ हमारे, दो सौ तुम्हारे। है पक्की बात न?

जवाहिरमल—तुम लो छह सौ, और हम लें दो सौ! मियाँ भाई हो न! अरे यार, तीन सौ हमको दे, पाँच सौ तू उड़ा। यह मामले की बात है?

जमामार—अजी, मियाँ भाई की न कहिए। मियाँ भाई तो नवाब भी हैं, मगर अल्लाह मियाँ की गाय। तुम तो लाखों खा जाओ, मगर गाढ़े की लँगोटी लगाये रहो। खाने को हम भी खायँगे, मगर शरबती के अँगरखे डाटे हुए नवाब बने हुए, क़ोरमा और पुलाव के बगैर खाना न खायँगे। तुम उबाली खिचड़ी ही खाओगे। खैर, नहीं मानते, तो जैसी तुम्हारी मरजी।

मियाँ जमामार जोड़ी ले कर पहुँचे, तो दरबार मे उसकी तारीफें होने लगीं। कोई उसके थूथन की तारीफ करता है, कोई माथे की, कोई छाती की। खुशामदी बोले—वल्लाह, कनौटियाँ तो देखिए, प्यार कर लेने को जी चाहता है।

गप्पी - हुजूर, ऐसे जानवर किस्मत से मिलते हैं। कसम खुदा की, ऐसी जोड़ी सारे शहर में न निकलेगी।

मतलबी—हुजूर, दो-दो हजार की एक-एक घोड़ी है। क्या खूबसूरत हाँथ-पाँव हैं। और मजा यह कि कोई ऐब नहीं।

नवाब—कल शाम को फिटन में जोतना। देखें कैसी जाती है।

गप्पी—हुजूर, आँधी की तरह जाय, क्या दिल्लगी है कुछ।

रात को मियाँ आजाद सराय में पड़ रहे। दूसरे दिन शाम को फिर नवाब साहब के यहाँ पहुँचे। दरबार जमा हुआ था, मुसाहब लोग गप्पें उड़ा रहे थे। इतने में मसजिद से अजान की आवाज सुनायी दी। मुसाहबों ने कहा—हुजूर, रोजा खोलने का वक्त आ गया।

नवाब—कसम कुरान की, हमें आज तक मालूम ही न हुआ कि रोज़ा रखने से फ़ायदा क्या होता है? मुफ्त में भूखों मरना कौन सा सवाब है? हम तो हाफिज के चेले हैं, वह भी रोजा-नमाज कुछ न मानते थे।

आजाद—हुजूर ने खूब कहा—

दोश अज मसजिद सुए मैखाना आदम पीरे मा ;
चीस्त याराने तरीकत बाद अजीं तदबीरे मा।

(कल मेरे पीर मसजिद से शराबखाने की तरफ आये। दोस्तो, बतलाओ, अब मैं क्या करूँ?)

खुशामदी—वाह-वाह, क्या शेर है। सादी का क्या कहना!

गप्पी—सुना, गाते भी खूब थे। बिहाग की धुन पर सिर धुनते हैं।

आजाद दिल में खूब हँसे। यह मसखरे इतना भी नहीं जानते कि यह सादी का शेर है या हाफ़िज का! और मज़ा यह कि उनको बिहाग भी पसंद था! कैसे-कैसे गौखे जमा हैं।

मुसाहब—हुजूर, बजा फ़रमाते हैं। भूखों मरने से भला खुदा क्या खुश होगा?

नवाब—भई, यहाँ तो जब से पैदा हुए, कसम ले लो, जो एक दिन भी फ़ाका किया हो। फिर भूख में नमाज की किसे सूझती है?

खुशामदी—हुजूर, आप ही के नमक की कसम, दिन-रात खाने ही की फ़िक्र रहती है। चार बजे और लौंडी की जान खाने लगे—लहसुन ला, प्याज ला, कबाब पके, तौबा!

हिंदू मुसाहब—हुजूर, हमारे यहाँ भी वर्त रखते हैं लोग, मगर हमने तो हर वर्त के दिन गोस्त चखा।

खुशामदी—शाबाश लाला, शाबाश! वल्लाह, तुम्हारा मजहब पक्का है।

नवाब—पढ़े-लिखे आदमी हैं, कुछ जाहिल-गँवार थोड़े ही हैं।

खोजी—वाह-वाह, हुजूर ने वह बात पैदा की कि तौबा ही भली।

खुशामदी—वाह भई, क्या तारीफ की है। कहने लगे, तौबा ही भली। किस

जंगल से पकड़ के आये हो भई? तुमने तो वह बात कही कि तौबा ही भली। खुदा के लिए जरी समझ-बूझ कर बोला करो।

रुप्पी—ऐ हजरत, बोलें क्या, बोलने के दिन अब गये। बरसात हो चुकी न?

खोजी—मियाँ, एक-एक आओ, या कहो, चौमुखी लड़ूँ। हम इससे भी नहीं डरते। यहाँ उम्र भर नवाबों ही की सोहबत में रहे। तुम लोग अभी कुछ दिन सीखो। आप, और हम पर मुँह आयें। एक बार हमारे नवाब साहब के यहाँ एक हजरत आये, बड़े बुलबकड़। आते ही मुझ पर फिकरे कसने लगे। बस, मैंने जो आड़े हाथों लिया, तो झेंप कर एकदम भागे। मेरे मुकाबले में कोई ठहरे तो भला! ले बस आइए, दो-दो चोंचें हों। पाली से नोकदम न भागो, तो मूँछें मुड़वा डालूँ।

मुसाहब—आइए, फिर आप भी क्या याद करेंगे। बंदे की जबान भी वह है कि कतरनी को मात करे। ज़बान आगे जाती है, बात पीछे रह जाती है।

खोजी—जबान क्या चर्खा है राँड़ का! खुदा झूठ न बुलाये, तो रोटी को हुजूर लोती कहते होंगे।

मुसाहब—जब खुदा झूठ न बुलाये, तब तो! आप और झूठ न बोलें! जब से होश सँभाला, कभी सच बोले ही नहीं। एक दफे धोखे से सच्ची बात निकल आयी थी, जिसका आज तक अफसोस है।

खोजी—और वह उस वक्त जब आपसे किसी ने आपके बाप का नाम पूछा था और आपने जल्दी में साफ-साफ बता दिया था।

इस पर सब के सब हँस पड़े और खोजी मूँछों पर ताव देने लगे। अभी ये बातें हो ही रही थीं कि एक टुकड़ी आयी, और उस पर से एक हसीना उतर पड़ी। वह पतली कमर को लचकाती हुई आयी, नवाब का मसनद घसीटा और बड़े ठाट से बैठ गयी।

नवाब—मिजाज शरीफ?

आबादी—आपकी बला से!

मुसाहब—हुजूर, खुदा की कसम, इस वक्त आप ही का जिक्र था।

आबादी—चल झूठे! अली की सँवार तुझ पर और तेरे नवाब पर।

मुसाहब—खुदा की कसम।

आबादी—अब हम एक चपत जमायेंगे। देखो नवाब, अपने इन गुर्गों को मना करो, मेरे मुँह न लगा करें।

इतने में एक महरी पाँच-छह बरस के एक लड़के को गोद में लायी।

आबादी—हमारी बहन का लड़का है। लड़का क्या, पहाड़ी मैना है। भैया, नवाब को गालियाँ तो देना। क्यों नवाब, इनको मिठाई दोगे न?

नवाब—हाँ, अभी-अभी।

लड़का—पहले मिठाई लाओ, फिल हम दाली दे देंगे।

अब चारों तरफ से मुसाहिब बुलाते हैं—आओ, हमारे पास आओ। लड़के ने नवाब को इतनी गालियाँ दीं कि तौबा ही भली। नवाब साहब खूब हँसे और सारी

महफ़िल लड़के की तारीफ़ करने लगी। खुदावंद, अब इसको मिठाई मँगवा दीजिए।

नवाब—अच्छा भई, इनको पाँच रुपये की मिठाई ला दो।

आबादी—ऐ हटो भी ! आप अपने रुपये रहने दें। क्या कोई फ़क़ीर है ?

नवाब—अच्छा, एक अशर्फ़ी की ला दो।

आबादी – भैया, नवाब को सलाम कर लो।

नवाब—अच्छा, यह तो हुआ, अब कोई चीज़ सुनाओ। पीलू की कोई चीज हो, तुम्हें क़सम है।

आबादी—ऐ हटो भी, आज रोजे से हूँ। आपको गाने की सूझती है।

फ़र्श पर कई नीबू पड़े हुए थे। बी साहबा ने एक नीबू दाहने हाथ में लिया और दूसरा नीबू उसी हाथ से उछाला और रोका। कई मिनट तक इसी तरह उछाला और रोका कीं। लोग शोर मचा रहे हैं—क्या तुले हुए हाथ है, सुभान-अल्लाह ! वह बोलीं कि भला नवाब, तुम तो उछालो। जब जाने कि नीबू गिरने न पाये। नवाब ने एक नीबू हाथ में लिया और दूसरा उछाला, तो तड़ से नाक पर गिरा। फिर उछाला, तो खोपड़ी पर तड से।

आबादी—बस, जाओ भी। इतना भी शऊर नहीं है।

नवाब—यह उँगली में कपड़ा कैसा बँधा है ?

आबादी—बूझो, देखे, कितनी अक़्ल है।

नवाब—यह क्या मुश्किल है, छालियाँ कतरती होगी।

आबादी—हाँ, वह खून का तार बँधा कि तोबा। मैंने पानी डाला और कपड़ा बाँध दिया।

मुसाहब—हुजूर, आज इस शहर में इनकी जोड़ नहीं है।

नवाब—भला कभी नवाब खफ़क़ानहुसैन के यहाँ भी जाती हो ? सच सच कहना।

आबादी—अली की सँवार उस पर ! हज कर आया है। उस मनहूस से कोई इतना तो पूछे कि आप कहाँ के ऐसे बड़े मौलवी बन बैठे ?

नवाब—जी, बजा है, जो आपको न बुलाये, वह मनहूस हुआ !

आबादी—बुलायेगा कौन ? जिसको ग़रज होगी, आप दौड़ा आवेगा।

आजाद और खोजी यहाँ से चले, तो आजाद ने कहा—आप कुछ समझे ? यह जोड़ी वही थी, जो रोशनअली खरीद लाये थे।

खोजी—यह कौन बड़ी बात है, इसी मे तो रईसों का रुपया खर्च होता है। इनकी सोहबत में जब बैठिए खूब गप्प उड़ाइए और झूठ इस कदर बोलिए कि जमीन-आसमान के कुलावे मिलाइए। रंग जम जाय, तो दोनों हाथों से लूटिए और सोने की ईंटें बनवा कर संदूक में रख छोड़िए। लेकिन ऐसे माल को रहते न देखा; मालूम नहीं होता, किधर आया और किधर गया।

आजाद—यह नवाब बिलकुल चोंगा है।

खोजी—और नहीं तो क्या, निरा चोंच।

आज़ाद—खुदा करे, ये रईसजादे पढ़-लिख कर भले आदमी हो जायँ।

खोजी—अरे, खुदा न करे भाई, ये जाहिल ही रहें तो अच्छा। जो कहीं पढ़-लिख जायँ, तो फिर इतने भलेमानसों की परवरिश कौन करे?

तीसरे दिन दोनों फिर नवाब की कोठी पर पहुँचे।

खोजी—खुदा ऐसे रईस को सलामत रखे। आज यहाँ सन्नाटा सा नज़र आता है; कुछ चहल-पहल नहीं है।

मुसाहब—चहल-पहल क्या खाक हो! आज मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा।

आज़ाद—खुदा खैर करे, कुछ तो फ़रमाइए।

नवाब—क्या अर्ज़ करूँ, जब बुरे दिन आते हैं, तो चारों ही तरफ़ से बुरी ही बुरी बातें सुनने में आती हैं। घर में वज़ा-हमल (प्रसव) हो गया।

आज़ाद—यह तो कुछ बुरी बात नहीं। वज़ा-हमल के माने लड़का पैदा होना। यह तो खुशी का मौका है।

मुसाहब—हमारे हुजूर का मंशा इस्क़ात-हमल (गर्भपात) से था।

खुशामदी—अजी, इसे वज़ा-हमल भी कहते हैं—लुग़ात देखिए।

नवाब—अजी, इतना ही होता, तो दिल को किसी तरह समझा लेते। यहाँ तो एक और मुसीबत ने आ घेरा।

मुसाहब—(ठंडी साँस ले कर) खुदा दुश्मन को भी यह दिन न दिखाये।

खुशामदी—हजरत, क्या अर्ज़ करूँ, हुजूर का एक मेढ़ा मर गया, कैसा तैयार था कि क्या कहूँ, गैंडा बना हुआ।

गप्पी—अजी, यों नहीं कहते कि गैंडे को टकरा देता, तो टें करके भागता। एक दफे मैं अपने साथ बाग़ ले गया। इत्तिफ़ाक से एक राजा साहब पाठे पर सवार बड़े ठाट से आ रहे थे। बंदा मेढ़े को ऐन सड़क पर लिये हुए डटा खड़ा है। सिपाही ने ललकारा कि हटा बकरी को सड़क से। इतना कहना था कि मैं आग ही तो हो गया। पूछा—क्या कहा भाई? फिर तो कहना। सिपाही आँखें नीली-पीली करके बोला—हटा बकरी को सामने से, सवारी आती है। तब तो जनाब, मेरे खून में जोश आ गया। मैंने मेढ़े को ललकारा, तो उसने झपट कर हाथी के मस्तक पर एक टक्कर लगायी। वह आवाज़ आयी। जैसे कोई दरख्त जमीन पर आ रहा हो। बंदर डाल-डाल चीखने लगे, बँदरियाँ बच्चों को छाती से लगाये दबक रहीं, तो वजह क्या, उनको मेढ़े पर भेड़िये का धोखा हुआ।

खोजी—मेढ़े को भेड़िया समझा! मगर वल्लाह, आपको तो बेदुम का लंगूर समझा होगा!

गप्पी—बस हजरत, एक टक्कर लगा कर पीछे हटा और बदन को तोल कर छलाँग जो मारता है, तो हाथी के मस्तक पर! वहाँ से फिर उचका, तो पीलवान के माथे पर एक टक्कर लगायी, मगर आहिस्ता से। ज़रा इस तमीज़ को देखिएगा, समझा कि इसमें हाथी का सा ज़ोर कहाँ। मगर राजा का अदब किया। अब मैं लाख-लाख

ज़ोर करता हूँ, पर वह किसकी सुनता है ? ग़ुस्सा आया, सो आया, जैसे सिर पर भूत सवार हो गया। छुडा कर फिर लपका और एक, दो, तीन, चार—बस, खुदा जाने, इतनी टक्करें लगायीं कि हाथी हवा हो गया और चिंघाड कर भागा। आदमी पर आदमी गिरते हैं। आप जानिए, पाठे का बिगड़ना कुछ हँसी ठट्ठा तो है नहीं। जनाब, वही मेढा आज चल बसा।

आजाद—निहायत अफसोस हुआ।

खोजी—सिन शरीफ क्या था ?

नवाब—सिन क्या था, अभी बच्चा था।

मुसाहब—हुजूर, वह आपका दुश्मन था, दोस्त न था।

नवाब—अरे भई, किसका दोस्त, कैसा दुश्मन। उस बेचारे का क्या कसूर ? वह तो अच्छा गया; मगर हम सबको जीते-जी मार डाला।

आजाद—हजरत, यह दुनिया सराय-फ़ानी है। यहाँ से जो गया, अच्छा गया। मगर नौजवान के मरने का रंज होता है।

मुसाहब—और फिर जवान कैसा कि होनहार। हाथ मल कर रह गये यार, बस और क्या करे।

आज़ाद—मरज क्या था ?

मुसाहब—क्या मरज बताये। बस, किस्मत ही फूट गयी।

खुशामदी—मगर क्या मौत पायी है, रमजान के महीने में, उसकी रूह जन्नत में होगी। तूबा* के तले जो घास है, वह चर रहा होगा।

इतने में एक महरी गुलबदन का लँहगा, जिसमें आठ-आठ अंगुल गोखरू लगी थी, फड़काती और गुलाबी दुपट्टे को चमकाती आयी और नवाब के कान में झुक कर बोली—बेगम साहिबा हुजूर को बुलाती हैं।

नवाब—यह नादिरी हुकम ? अच्छा साहब, चलिए। यहाँ तो बेगम और महरी, दोनों से डरते हैं।

नवाब साहब अंदर गये, तो बेगम ने खूब ही आड़े हाथों लिया—ऐ, मैं कहती हूँ, यह कैसा रोना-धोना है ? कहाँ की ऐसी मुसीबत पड़ गयी कि आँखें खून की बोटी बन गयीं ? मेढ़े निगोड़े मरा ही करते हैं। ऐसी अक़्ल पर पत्थर पड़े कि मुए जानवर की जान को रो रहे हैं। तुम्हारी अक्ल को दिन-दिन दीमक चाटे जाती है क्या ? और इन मुफ़्तखोरों ने तो आपको और भी चंग पर चढ़ाया है। अल्लाह की क़सम, अगर आपने रंज-वज किया, तो हम जमीन-आसमान एक कर देंगे। आखिर वह मेढ़ा कोई आपका...बस, अब क्या कहूँ। भीगी बिल्ली बने गटर-गटर सुन रहे हो।

नवाब—तुम्हारे सिर की क़सम, अब हम उसका जिक्र भी न करेंगे। मगर जब आपकी बिल्ली मर गयी थी, तो आपने दिन-भर खाना नहीं खाया था ? अब हमारी दफ़े आप गुर्राती हैं ?

* स्वर्ग का एक वृक्ष।

मुसाहब—(परदे के पास से) वाह हुजूर, बिल्ली के लिए गुर्राना भी क्या खूब। वल्लाह, जिले से तो कोई फ़िकरा आपका खाली नहीं होता।

बेगम—देखो, इन मुए मुसंडों को मना कर दो कि ड्योढ़ी पर न आने पायें।

दरबान ने जो इतनी शह पायी, तो एक डाँट बतायी। बस जी, सुनो, चलते-फिरते नजर आओ। अब ड्योढ़ी पर आने का नाम लिया, तो तुम जानोगे। बेगम साहबा हम पर खफा होती हैं। तुम्हारी गिरह से क्या जायगा, हम सिपाही आदमी. हम तो नौकरी से हाथ धो बैठेंगे।

मुसाहब सिपाही से तो कुछ न बोले, मगर बड़बड़ाते हुए चले। लोगों ने पूछा—क्यों भई, इस वक़्त नाक-भौं क्यों चढ़ाये हो? बोले—अजी, क्या कहें, हमारे नवाब तो बस, बछिया के बाबा ही रहे! बीबी ने डपट लिया। जन-मुरीद हैं जी! आबरू का भी कुछ खयाल नहीं। औरतजात, फिर जोरू और उलटे डाँट बताये और दाढ़ी-मूँछोंवाले हो कर चुपचाप सुना करें! वल्लाह, जो कहीं मेरी बीबी कहती, तो गला ही घोट देता। यहाँ नाक पर मक्खी तक बैठने नहीं देते।

आजाद—भई, गुस्से को थूक दो। गुस्सा हराम होता है। उनकी बीबी हैं, चाहे घुड़कियाँ सुनें, चाहे झिड़कियाँ सहें, आप बीच में बोलनेवाले कौन? और फिर जिसका खाते हो, उसी को कोसते हो! उस पर दावा यह है कि नमकहलाल और कट मरनेवाले लोग हैं।

इतने में नवाब साहब बाहर निकले। अमीरों के दरबार में आप जानिए, एक का एक दुश्मन होता है। सैकड़ों चुगलखोर रहते हैं। हरदम यही फ़िक्र रहती है कि दूसरे की चुग़ली खायें और सबको दरबार से निकलवा कर हमी-हम नजर आयें। दो मुसाहबों ने सलाह की कि आज नवाब निकलें, तो इसकी चुग़ली खायें और इसको खड़े-खड़े निकलवा दें। नवाब को जो आते देखा, तो चिल्ला कर कहने लगे—सुना भई, बस, अब जो कोई कलमा कहा, तो हमसे न बनेगी। जिसका खाये, उसी की गाये। यह नहीं कि जिसका खायें उसी को गालियाँ सुनायें। नवाब साहब को चाहे आप पीठ पीछे जन-मुरीद बतायें, या भीगी बिल्ली कहें, मगर खबरदार जो आज से बेगम साहबा की शान में कोई गुस्ताखी की, खून ही पी लूँगा।

नवाब—(त्योरियाँ बदल कर) क्या?

हाफ़िज जी—कुछ नहीं हुजूर, खैरियत है।

नवाब—नहीं, कुछ तो है जरूर।

रोशनअली—तो छिपाते क्यों हो, सरकार से साफ़-साफ़ क्यों नहीं कह देते? हुजूर, बात यह है कि मियाँ साहब जब देखो तब हुजूर की हजो किया करते हैं। लाख-लाख समझाया, यह बुरी बात है, मियाँ कह कर, भाई कह कर, बेटा कह कर, बाबा कह कर, हाथ जोड़ कर, हर तरह समझाया, मगर यह तो लातों के आदमी हैं, बातों से कब मानते हैं। हम भी चुपके हो रहते थे कि भई, चुग़ली कौन खाये; मगर आप जनानी ड्योढ़ी से.. हुजूर, बस, क्या कहूँ, अब और न कहलाइए।

नवाब—इनको हमने मौकूफ़ कर दिया।

मियाँ मुसाहब तो खिसके। इतने में मटरगश्त आ पहुँचे और नवाब को सलाम करके बोले—खुदावंद, आज खूब सैर सपाटा किया। इतना घूमा कि टाँगों के टट्टू की गामचियाँ दर्द करने लगीं। कोई इलाज बताइए।

हाफ़िज जी—घास खाइए या, किसी सालोत्री के पास जाइए।

नवाब—खूब! टट्टू के लिए घास और सालोत्री की अच्छी कही! अब कोई ताजा-ताजा खबर सुनाइए, बासी न हो, गरमागरम।

मटरगश्त—वह खबर सुनाऊँ कि महफ़िल भर को लोटपोट कर दूँ हुजूर, किसी मुल्क से चंद परीजाद औरतें आयी हैं। तमाशाइयों की भीड़ लगी हुई है। सुना, थिएटर में नाचती हैं और एक-एक कदम और एक एक ठोकर में आशिकों के दिल को पामाल करती हैं। उन्ही में से एक परीज़ाद जो दन से निकल गयी, तो बस, मेरी जान सन से निकल गयी। दरिया किनारे खीमे पडे हैं। वहीं इंदर का अखाड़ा सजा हुआ है। आज शाम को नौ बजे तमाशा होगा।

नवाब—भई, तुमने खूब मजे की खबर सुनायी। ईंजानिब जरूर जायँगे।

इतने में खुदायारखाँ, जिन्हें जरा पहले नवाब ने मौकूफ कर दिया था, आ बैठे और बोले—हुजूर, इधर खुदाबंद ने मौकूफ़ी का हुक्म सुनाया, उधर घर पहुँचा, तो जोरू ने तलाक दे दी। कहती है, 'रोटी न कपरा, सेत-मेत का भतरा।'

आजाद—हुजूर, इन गरीब पर रहम कीजिए। नौकरी की नौकरी गयी और बीबी की बीबी।

नवाब—हाफिजजी, इधर आओ, कुल हाल ठीक-ठीक बताओ।

हाफिज—हुजूर, इन्होंने कहा कि नवाब तो निरे बछिया के ताऊ ही हैं, ज़न-मुरीद! और बेगम साहबा को इस नाबकार ने वह-वह बातें कहीं कि बस, कुछ न पूछिए! अजीब शैतान आदमी है। आप को यकीन न आये, तो उन्हीं से पूछ लीजिए।

नवाब—क्यों मियाँ आजाद, सच कहो, तुमने क्या सुना?

आजाद—हुजूर, अब जाने दीजिए, कुसूर हुआ। मैंने समझा दिया है।

हाफिज—यह बेचारे तो अभी अभी समझा रहे थे कि ओ गीदी, तू अपने मालिक को ऐसी-ऐसी खोटी-खरी कहता है!

नवाब—(दरबान से) देखो जी हुसेन अली, आज से अगर खुदायारखाँ को आने दिया, तो तुम जानोगे। खडे-खडे निकाल दो। इसे फाटक में कदम रखने का हुक्म नहीं।

खुदायार—हुजूर, गुलाम से भी तो सुनिए। आज मियाँ रोशनअली ने मुझे ताडी पिला दी और यही मनसूबा था कि यह नशे में चूर हो, तो इसे किसी लिम में निकलवा दे। सो हुजूर, इनकी मुराद बर आयी। मगर हुजूर, मै इस दर को छोड कर और जाऊँ-कहाँ? खुदा आपके बाल-बच्चों को सलामत रखे, यहाँ तो रोआँ-रोआँ

हुजूर के लिए दुआ करता है। हुजूर तो पोतड़ों के रईस हैं, मगर चुग़लख़ोरों ने कान भर दिये—

खुदा के ग़ज़ब से ज़रा दिल में काँप;
चुग़लख़ोर के मुँह को डसते हैं साँप।

नवाब—अच्छा, यह बात है। ख़बरदार, आज से ऐसी बेअदबी न करना। जाओ, हमने तुमको बहाल किया।

मुसाहबों ने गुल मचाया—वाह हुजूर, कितना रहम है। ऐसे रईस पैदा काहे को होते हैं। मगर ख़ुदायार खाँ को तो उनकी जोरू ने बचा लिया। न वह तलाक देती, न यह बहाल होते। वल्लाह, जोरू भी किस्मत से मिलती है।

दूसरे दिन नौ बजे रात को नवाब साहब और उनके मुसाहब थिएटर देखने चले।

नवाब—भई, आबादीजान को भी साथ ले चलेंगे।

मुसाहब—ज़रूर, जरूर। हुजूर, उनके बगैर मज़ा किरकिरा हो जायगा।

इतने में फिटन आ पहुँची और आबादीजान छम-छम करती हुई आ कर मसनद पर बैठ गयीं।

नवाब—वल्लाह, अभी आप ही का ज़िक्र था।

आबादी—तुमसे लाख दफ़े कह दिया कि हमसे झूठ न बोला करो। हमें कोई देहाती समझा है!

नवाब—खुदा की कसम, चलो, तुमको तमाशा दिखा लाये। मगर मरदाने कपड़े पहन कर चलिए, वर्ना हमारी बेइज़्ज़ती होगी।

आबादी ने तिनग कर कहा—जो हमारे चलने में बेआबरूई है, तो सलाम।

यह कह कर वह जाने को उठ खड़ी हुई। नवाब ने दुपट्टा दबा कर कहा—हमारा ही खून पिये, जो एक क़दम भी आगे बढ़ाये, हमीं को रोये, जो रूठ कर जाय! हाफ़िज जी, जरा मरदाने कपड़े तो लाइए।

गरज आबादीजान ने अमामा सिर पर बाँधा; चुस्त अँगरखा और कसा हुआ घुटन्ना, टाटबाफी बूट, फुँदना झलकता हुआ, उनके गोरे बदन पर खिल उठा। नवाब साहब उनके साथ फिटन पर सवार हुए और मुसाहबों में कोई बग्घी पर, कोई टम-टम पर, कोई पालकी-गाड़ी पर लदे हुए तमाशा-घर में दाखिल हुए। मगर आबादीजान जल्दी में पाजेब उतारना भूल गयी थी। वहाँ पहुँच कर नवाब ने अव्वल दर्जे के दो टिकट लिये और सरकस में दाखिल हुए। लेकिन पाजेब की छम-छम ने वह शोर मचाया कि सभी तमाशाइयों की निगाहें इन दोनों आदमियों की तरफ उठ गयीं। जो है, इसी तरफ देखता है; ताड़नेवाले ताड़ गये, भाँपनेवाले भाँप गये। नवाब साहब अकड़ते हुए एक कुर्सी पर जा डटे और आबादीजान भी उनकी बग़ल में बैठ गयीं। बहुत बड़ा शामियाना टँगा हुआ था। बिजली की बत्तियों से चकाचौंध का आलम था। बीचो-बीच एक बड़ा मैदान, इर्द-गिर्द कोई दो हजार कुर्सियाँ। खीमा भर जग मग कर रहा था। थोड़ी देर में दस-बारह जवान घोड़े कड़कड़ाते हुए मैदान में आये और चक्कर काटने लगे, इसके बाद एक जवान नाजनीन, आफत की परकाला, घोड़े पर सवार, इस शान से आयी कि महफिल भर पर आफत ढायी। सारी महफिल मस्त हो गयी। वह घोड़े से फ़ुर्ती के साथ उचकी और फिर पीठ पर आ पहुँची। चारों तरफ़ से वाह-वाह का शोर मच गया। फिर उसने घोड़े को मैदान में चक्कर देना शुरू किया। घोड़ा सरपट जा रहा था, इतना तेज

कि निगाह न ठहरती थी। यकायक वह लेडी तड़ से ज़मीन पर कूद पड़ी। घोड़ा ज्यों का त्यों दौड़ता रहा। एक दम में वह झपट कर फिर पीठ पर सवार हो गयी इस पर इतनी तालियाँ बजीं कि खीमा भर गूँज उठा। इसके बाद शेरों की लड़ाई, बंदरों की दौड़ और खुदा जाने, कितने और तमाशे हुए। ग्यारह बजते, बजते तमाशा खतम हुआ। नवाब साहब घर पहुँचे, तो ठंडी साँसे भरते थे और मियाँ आजाद दोनों हाथों से सिर धुनते थे। दोनों मिस बरजिना (तमाशा करनेवाली औरत) की निगाहों के शिकार हो गये।

हाफिज जी बोले—हुजूर, अभी मुश्किल से तेरह-चौदह बरस का सिन होगा, और किस फुर्ती से उचक कर घोडे की पीठ पर हो रहती थी कि वाह जी वाह। मियाँ रोशनअली बड़े शहसवार बनते थे। कसम खुदा की जो उनके बाप भी कब्र से उठ आयें, तो यह करतब देख कर होश उड़ जायँ।

नवाब—क्या चाँद सा मुखड़ा है।

आबादीजान—यह कहाँ का दुखड़ा है? हम जाते हैं।

मुसाहब—नहीं हुजूर, ऐसा न फ़र्माइए, कुछ देर तो बैठिए।

लेकिन आबादीजान रूठ कर चली ही गयीं अब नवाब का यह हाल है कि मुँह फुलाये, ग़म की सूरत बनाये बैठे सर्द आहें खींच रहे हैं। मुसाहब सब बैठे समझा रहे हैं; मगर आपको किसी तरह सब्र ही नहीं आता। अब जिंदगी बवाल है, जान जंजाल है। यह भी फ़ख्र है कि हमारा दिल किसी परीजाद पर आया है, शहर भर में धूम हो जाय कि नवाब साहब को इश्क चर्राया है—

ताकि मशहूर हों हजारों में;
हम भी हैं पाँचवें सवारों में।

मुसाहबों ने सोचा, हमारे शह देने से यह हाथ से जाते रहेंगे, इसलिए वह चाल चलिए कि 'साँप मरे न लाठी टूटे।' लगे सब उस औरत की हजो करने। एक ने कहा—भाई, जादू का खेल था। दूसरे बोले—जी हाँ, मैंने दिन के वक्त देखा था, न वह रंग, न वह रोग़न; न वह चमक-दमक, न वह जोबन; रात की परी है की टट्टी है। आखिर मिस बरजिना नवाब की नज़रों से गिर गयी। बोले—जाने भी दो, उसका ज़िक्र ही क्या। तब मुसाहबों की जान में जान आयी। नवाब साहब के यहाँ से रुखसत हुए, तो आपस में बातें होने लगीं—

हाफिज़ जी—हमारे नवाब भी कितने भोले-भाले रईस हैं।

रोशनअली—अजी, निरे बछिया के ताऊ हैं। खुदाशारखाँ ने ठीक ही तो कहा था।

खुदायारखाँ—और नहीं तो क्या झूठ बोले थे? हमें लगी-लिपटी नहीं आती। चाहे जान जाती रहे, मगर खुशामद न करेंगे।

हाफिज जी—भई, यह आजाद ने बड़ा अड़ंगा मारा है। इसको न पछाड़ा, तो हम सब नजरों से गिर जायँगे।

रोशनअली—अजी, मैं तरकीब बताऊँ, जो पट पडे, तो नाम न रखूँ। नवाब

डरपोक तो हैं ही, कोई इतना जा कर कह दे कि मियाँ आजाद इश्तिहारी मुजरिम हैं। बस, फिर देखिए, क्या ताथैया मचती है। आप मारे खौफ के घर में घुस रहें और जनाने में तो कुहराम ही मच जाय। आजाद और उनके साथी अफीमची, दोनों खडे-खडे निकाल दिये जायँ।

खुशामदी—वाह उस्ताद, क्या तर्ह से सोच लेते हो! वल्लाह, एक ही न्यारिये हो।

रोशनअली—फिर इन झाँसों के बगैर काम भी तो नहीं चलता।

हाफिज जी—हाँ, खूब याद आया। परसों तेगबहादुर दक्खिन से आये हैं। बेचारे बड़ी तकलीफ़ में हैं। हमारे सच्चे दोस्तों में हैं। उनके लिए एक रोटी का सहारा हो जाय, तो अच्छा। आपमें से कोई छेड़ दे तो जरा, बस, फिर मैं ले उड़ूँगा। मगर तारीफ के पुल बाँध दीजिए। नवाब को झाँसे में लाना कोई बडी बात तो है नहीं। थाली के बैंगन हैं।

हाफ़िज जी—एक काम कीजिए, कल जब सब जमा हो जायँ, तो हम पहले छेड़ें कि इस दरबार में हर फ़न का आदमी मौजूद है और रियासत कहते इसी को हैं कि गुनियों की परवरिश की जाय, शरीफ़ों की कदरदानी हुजूर ही का हिस्सा है। इस पर कोई बोल उठे कि और तो सब मौजूद हैं, बस, यहाँ एक बिनवटिये की कसर है। फिर कोई कहे कि आजकल दक्खिन से एक साहब आये हैं, जो बिनवट के फन में अपना सानी नहीं रखते। दो-चार आदमी हाँ में हाँ मिला दें कि उन्हें वह वह पेच याद हैं कि तलवार छीन लें, जरा से आदमी, मगर सामने आये और बिजली की तरह तड़प गये। हम कहेंगे—वल्लाह, आप लोग भी कितने अहमक हैं कि ऐसे आदमी को हुजूर के सामने अब तक पेश नहीं किया और जो कोई रईस उन्हें नौकर रख ले, तो फिर कैसी हो? बस, देख लेना, नवाब खुद ही कहेंगे कि अभी अभी लाओ। मगर तेगबहादुर से कह देना कि खूब बाँके बन कर आयें, मगर बातचीत नरमी से करें, जिसमें हम लोग कहेंगे कि देखिए खुदावंद, कितनी शराफत है। जिन लोगों को कुछ आता-जाता नहीं, वे ही जमीन पर कदम नहीं रखते।

मुसाहब—मगर क्यों मियाँ, यह तेगबहादुर हिंदू हैं या मुसलमान? तेगबहादुर तो हिंदुओं का नाम भी हुआ करता है। किसी हिंदू के घर मुहर्रम के दिनों में लडका पैदा हुआ और इमामबख्श नाम रख दिया। हिंदू भी कितने बेतुके होते हैं कि तोबा ही भली। पूछिए कि तुम जो ताजिये को सिजदा करते हो, दरगाहों में शरबत पिलाते हो, इमामबाड़े बनवाते हो, तो फिर मुसल्मान ही क्यों नहीं हो जाते।

हाफिज जी—मगर तुम लोगों में भी तो ऐसे गौखे हैं जो चेचक में मालिन को बुलाते हैं, चौराहे पर गधे को चने खिलाते हैं, जनमपत्री बनवाते हैं। क्या यह हिंदूपन नहीं है? इसकी न कहिए।

उधर मियाँ आजाद भी मिस क्लारिसा पर लट्टू हो गये। रात तो किसी तरह करवटें बदल बदल कर काटी, सुबह होते ही मिस क्लारिसा के पास जा पहुँचे। उसने जो मियाँ आजाद की सूरत से उनकी हालत ताड ली, तो इस तरह चमक-चमक कर

चलने लगी कि उनकी जान पर आफत ढायी। आजाद उसके सामने जा कर खड़े हो गये, मगर मुँह से एक लफ्ज भी न निकला।

वरजिना—मालूम होता है, या तो तुम पागल हो, या अभी पागलखाने से रस्सियाँ तुड़ा कर आये हो।

आजाद—हाँ, पागल न होता, तो तुम्हारी अदा का दीवाना क्यों होता?

वरजिना—बेहतर है कि अभी से होश में आ जाओ, मेरे कितने ही दीवाने पागलखाने की सैर कर रहे हैं। रूस के तीन जनरल मुझ पर रीझे, यूनान में एक रईस लट्टू हो गये, इँगलिस्तान के कितने ही बाँके आहें भरते रहे, जरमनी के बड़े-बड़े अमीर साये की तरह मेरे साथ घूमा किये, रूम के कई पाशा जहर खाने पर तैयार हो गये। मगर दुनिया में दगाबाजी का बाजार गरम है, किसी से दिल न मिलाया, किसी को मुँह न लगाया। हमारे चाहनेवाले को लाजिम है कि पहले आईने में अपना मुँह तो देखे।

आजाद—अब मुझे दीवाना कहिए या पागल, मै तो मर मिटा—

फिरी चश्मे-बुते-बेपीर देखो;
हमारी गर्दिशे-तकदीर देखो।
उन्हे है तौक मन्नत का गराँ बार;
हमारे पाँव की जंजीर देखो।

वरजिना—मुझे तुम्हारी जवानी पर रहम आता है। क्यों जान देने पर तुले हुए हो?

आजाद—जी कर ही क्या करूँगा? ऐसी जिंदगी से तो मौत ही अच्छी।

वरजिना—आ गये तुम भी झाँसे मे! अरे मियाँ, मैं औरत नहीं हूँ, जो तुम सो मै। मगर कसम खाओ कि किसी से यह बात न कहोगे। कई साल से मैंने यही भेष बना रखा है। अमीरों को लूटने के लिए इससे बढ़ कर और कोई तदबीर नहीं। एक-एक चितवन के हजारों पौंड लाता हूँ, फिर भी किसी को मुँह नहीं लगाता। आज तुम्हारी बेकरारी देख कर तुमको साफ साफ बता दिया।

आजाद—अच्छा मर्दाने कपडे पहन कर मेरे सामने आओ, तो मुझे यकीन आये।

मिस वरजिना जरा देर में कोट और पतलून पहन कर आजाद के सामने आयी और बोली—अब तो तुम्हें यकीन आया, मेरा नाम टामस हुड है। अगर तुमको वे चिट्ठियाँ दिखाऊँ, जो ढेर की ढेर मेरे पास पड़ी हैं, तो हँसते-हँसते तुम्हारे पेट मे बल पड़ जाय। देखिए, एक साहब लिखते हैं—

जनाजा मेरा गली में उनकी जो पहुँचे ठहराके इतना कहना;
उठानेवाले हुए हैं माँदे सो थकके काँधा बदल रहे हैं।

दूसरे साहब लिखते हैं—

हम भी कुश्ता तेरी नैरंगी के हैं याद रहे,
ओ जमाने की तरह रंग बदलनेवाले।

एक बार इटली गया, वहाँ अक्सर अमीरों और रईसों ने मेरी दावतें कीं और अपनी लड़कियों से मेरी मुलाकात करायी। मैं कई दिन तक उन परियों के साथ हवा खाता रहा। और एक दिल्लगी सुनिए। एक अमीरजादी ने मेरे हाथों को चूम कर कहा कि हमारे मियाँ तुमसे शादी करना चाहते हैं। वह कहते हैं कि अगर तुमसे उनकी शादी न हुई, तो वह जहर खा लेंगे। यह अमीरजादी मुझे अपने घर ले गयी। उसका शौहर मुझे देखते ही फूल उठा और ऐसी-ऐसी बातें कीं कि मैं मुश्किल से अपनी हँसी को जब्त कर सका।

आजाद बहुत देर तक टामस हुड से उनकी जिंदगी के किस्से सुनते रहे। दिल में बहुत शरमिंदा थे कि यहाँ कितने अहमक बने। यह बातें दिल में सोचते हुए सराय में पहुँचे, तो फाटक ही के पास से आवाज आयी, लाना तो मेरी करौली, न हुआ तमंचा, नहीं तो दिखा देता तमाशा। आजाद ने ललकारा कि क्या है भाई, क्या है, हम आ पहुँचे। देखा, तो खोजी एक कुत्ते को दुत्कार रहे हैं।

२६

आज तो निराला समा है। ग़रीब, अमीर, सब रँगरलियाँ मना रहे हैं। छोटे-बड़े खुशी के शादियाने बजा रहे हैं। कहीं बुलबुल के चहचहे, कहीं क़ुमरी के कह-कहे। ये ईद की तैयारियाँ हैं। नवाब साहब की मसजिद का हाल न पूछिए। रोजे तो आप पहले ही चट कर गये थे; लेकिन ईद के दिन धूमधाम से मजलिस सजी। नूर के तड़के से मुसाहबों ने आना शुरू किया और मुबारक-मुबारक की आवाज़ ऐसी बुलंद की कि फ़रिश्तों ने आसमान को थाम लिया, नहीं तो जमीन और आसमान के कुलावे मिल जाते।

मुसाहब—खुदा ईद मुबारक करे। मेरे नवाब जुग जुग जियें।

हाफिज जी—बरस दिन का दिन मुबारक करे।

रोशनअली—खुदा हुजूर की ईद मुबारक करे।

नवाब—आपको भी मुबारक हो। मगर सुना कि आज तो ईद में फ़र्क़ है। भई, आधा तीतर और आधा बटेर नहीं अच्छा।

मुसाहब—हुजूर, फिरंगीमहल के उलमा ने तो आज ही ईद का फतवा लगाया है।

नवाब—भला चाँद कल किसी ने देखा भी?

मुसाहब—हुजूर, पक्के पुल पर चार मिश्तियों ने देखा, राजा की बाजार में हाफिज जी ने देखा और मेरे घर मे भी देखा।

नवाब—आपकी बेगम साहब का सिन क्या है? हैं कोई चौदह-पंद्रह बरस की?

मुसाहब ने शरमा कर गरदन झुका ली।

नवाब—आप अपनी बेगम साहबा की उम्र तो छिपाते हैं, फिर उनकी शहादत ही क्या? बाक़ी रहे हाफिज़ जी, उनकी आँखें पढ़ते-पढते जाती रहीं; उनको दिन को ऊँट तो सूझता ही नहीं, भला सरेशाम, दोनों वक्त मिलते, नाखून के बराबर चाँद क्या सूझेगा!

आज़ाद—हजरत, मैने और मियाँ खोजी ने कल शाम को अपनी आँखों देखा।

नवाब—तो तीन गवाहियाँ मोतबर हुई। हमारी ईद तो हर तरह आज है।

इतने में फिटन पर से आबादीजान मुसकिराती हुई आयी।

नवाब—आइए-आइए, आपकी ईद किस दिन है?

आबादीजान—क्या कोई भारी जोड़ा बनवा रखा है? फटे से मुँह शर्म नहीं आती?

नवाब—ईद क़ुरबाँ है यही दिन तो है क़ुरबानी का;

आज तलवार के मानिंद गले मिल क़ातिल।

हमको क्या, यहाँ तो तीसों रोजे चट किये बैठे हैं। दोवक्ता पुलाव उड़ता था। यह फ़िक्र तो उसको होगी जो दीन का टोकरा सिर पर लादे-लादे फिरते हैं।

आजादी—इन्हीं लच्छनों तो दोजख मे जाओगे।

नवाब—खैर, एक तसकीन तो हुई ! आपसे तो वहाँ ज़रूर गले मिलेंगे।

मुसाहब—सुभान-अल्लाह ! क्या खूब सूझी, वल्लाह, खूब सूझी ! क्या गरमा-गरम लतीफा कहा है।

इतने मे चंपा लौंडी अंदर से घबरायी हुई आयी। लुट गये, लुट गये ! ऐ हुजूर, चोरी हो गयी। सब मूस ले गया।

नवाब—क्या, क्या, चोरी हो गयी ! कब ?

चंपा—रात को, और कब ? इस वक्त जो बेगम साहबा कोठरी मे जाती हैं, तो रोशनी देखते ही आँखों तले अँधेरा छा गया। जा कर देखती हैं, तो एक बिल्का। कपड़े-लत्ते सब तितर-बितर पडे हैं।

मुसाहब—ऐ खुदावंद, कल तो एक बजे तक यहाँ दरबार गरम रहा। मालूम होता है, कोई पहले ही से घुसा बैठा था।

नवाब—जरी हमारी तलवार तो लाना भई ! एहतियात शर्त है। शायद छिपा बैठा हो।

तलवार ले कर घर मे गये, तो देखते हैं कि बेगम साहबा एक नाजुक पलँगड़ी पर सिर पकडे बैठी हैं, और लौडियाँ समझा रही हैं कि नवाब की सलामती रहे, एक से एक बढ़िया जोड़ा बन जायगा। आप घबराती काहे को हैं ! नवाब ने जा कर कोठरी को देखा और तलवार हाथ में लिये पैंतरे बदलते हुए घर-भर का मुआयना किया। फिर बेगम से बोले—हमारा लहू पिये, जो रोये। आखिर यह रोना काहे का, माल गया, गया !

लौंडी—हाँ, सच तो फ़रमाते हैं। जान की सलामती रहे, माल भी कोई चीज है?

बेगम—आज ईद के दिन खुशियाँ मनाते, डोमनियाँ आतीं, मुबारकबादियाँ गातीं, दिन भर धमा-चौकड़ी मचती, रात को रतजगा करते, सो आज यह नया गुल खिला ! मगर गहने की संदूकची छोड़ गया, इतना एहसान किया। अभी तक कलेजा धक-धक कर रहा है।

नवाब—हमारे सिर की कसम, लो उठो, मुँह धो डालो। ईद मनाओ, हमारा ही जनाजा देखे जो चोरी का गम करे। दो हजार कोई बडी चीज है !

आखिर बहुत कहने-सुनने पर बेगम साहबा उठी। लौंडी ने मुँह धुलाया। नवाब साहब ने कहा—तुम्हें वल्लाह, हँस तो दो, वह होंठ पर हँसी आयी ! देखो मुसकिराती हो। वह नाक पर आयी।

बेगम साहबा खिलखिला कर हँस पड़ीं और घर-भर में कहकहे पडने लगे। यों बेगम साहबा को हँसा कर नवाब साहब बाहर निकले, तो मुसाहब, हवाली-मवाली, खिदमतगार गुल मचाने लगे—हुजूर, कुछ तो बतलाइए, यह मामला क्या है ? आखिर किधर से चोर आया ? कोई कहता है—हुजूर, बेघर के भेदी के चोरी नहीं होती; हमको उस हबशिन पर शक है। हबशिन अंदर से गालियाँ दे रही है—

अल्लाह करे झूठे पर बिजली गिरे, आसमान फट पड़े। किसी ने कहा—खुदावंद, चौकीदार की शरारत है। चौकीदार है कि लाखों कसमें खाता है। घर भर में हर-बोंग मचा हुआ है। इतने मे एक मसखरे ने बढ़ कर कहा—हुजूर, कसम है कुरान की, हमें मालूम है। भला बे भला, हम पहचान गये, हमसे उड़ कर कोई जायगा कहाँ?

मुसाहब—मालूम है, तो फिर बताते क्यों नहीं?

मसखरा—अजी, बताने से फ़ायदा क्या? मगर मालूम मुझको बेशक है। इसमे शुबहा नहीं। ग़लत हो, तो हाथ-हाथ बदते हैं।

नवाब—अरे, जिस पर तुझे शक है, उसका नाम बता क्यों नहीं देता।

मुसाहब—बताओ, तुम्हें खुदा की कसम। किस पर तुमको शक है? आखिर किसको ताका है? भई, हमको बचा देना उस्ताद।

मसखरा—(नवाब साहब के कान में) हुजूर, यह किसी चोर का काम है।

मुसाहब—क्या कहा हुजूर, किसका नाम लिया?

नवाब—(हँस कर) आप चुपके से फ़रमाते हैं, यह किसी चोर का काम है।

लोगों के हँसते-हँसते पेट में बल पड़-पड़ गये। जिसे देखो, लोट रहा है। इतने में रेल के एक चपरासी ने आ कर तार का लिफाफा दिया। लिफाफा देखते ही नवाब साहब का चेहरा फक़ हो गया, हाथ-पाँव फूल गये। बोले—भई, किसी अँगरेजीदाँ को बुलाओ और तार पढ़वाओ। खुदा जाने, कहाँ से गोला आया है।

मुसाहब—क्यों मियाँ जवान, यह तार बड़े साहब के दफ्तर से आया है न?

चपरासी—नाहीं, रेलघर से आवा है।

मुसाहब—वाह रे अँगरेजो, अल्लाह जानता है, अपने फ़न के उस्ताद हैं। और सुनिए, जल्दी के लिए अब तार की खबर भी रेल पर आने लगी। वाह रे उस्ताद, अक़्ल काम नही करती।

हाफिज जी—खुदा जाने, यह तार बोलता क्योंकर है? आखिर तार के तो जान नहीं होती!

खिदमतगार एक अँगरेजीदाँ को ले आया। तार पढ़ा गया, तो मालूम हुआ कि किसी ने मिरजापुर से पूछा है कि ईद आज है, या कल होगी?

मुसाहब—यह तो फरमाइए, भेजा किसने?

बाबू—निसारहुसेन ने।

नवाब—समझ गया। मिरजापुर मे हमारे एक दोस्त हैं निसारहुसेन। उन्हीं ने तार भेजा होगा। इसका जवाब किसी से लिखवाइए जिसमें आज ही पहुँच जाय। एक रुपया, दो रुपया, जो खर्च हो, दारोग़ा से दिलवा दो। और मियाँ कुदरत को तारघर भेजो और कहो कि अगर बाबू कुछ माँगे तो दे देना। मगर इतना कह देना कि खबर जरूर पहुँचे। ऐसा न हो कि कहीं राह मे रुक रहे, तो गजब ही हो जाय।

मियाँ नुदरत लखनऊ के आदमी, नखास के बाहर उम्र भर कदम ही नहीं रखा। वह क्या जानें कि तारघर किस बला का नाम है। राह में एक-एक से पूछते जाते हैं— क्यों भई, तारघर कहाँ है? आखिरकार एक चपरासी ने कहा—कलकी बरक के सामने है। मियाँ नुदरत घबरा रहे थे, बुरे फँसे यार, तारघर में न जाने क्या वारदात हो। हम अँगरेजी कानून-वानून नहीं जानते। देखें, आज क्या मुसीबत पड़ती है? खैर, खुदा मालिक है। चलते-चलते कोई दो घंटे में ऐशबाग़ पहुँचे। यहाँ से पता पूछते-पूछते चले हुसेनगंज। वहाँ एक बाबू सड़क पर खड़े थे। उनसे पूछा—क्यों बाबूजी, तारघर कहाँ है? उन्होंने कहा, सामने चले जाओ। फिर पलटे। बाबू जी एक रुपया लाया हूँ और लिखवाना यह है कि आज ईद सुन्नियों की है, कल शियों की होगी। भला वहाँ बैठा रहूँ? जब खबर पहुँच जाय, तब आऊँ? बाबू ने कहा—ऐसा कुछ जरूरी नहीं। खैर, तारघर पहुँचे, तो कलेजा धक-धक कर रहा है कि देखिए जान क्योंकर बचती है। थोड़ी देर फाटक पर खड़े रहे और वहाँ से मारे डर के बैरंग वापस। राह में दोनों रुपये उन्होंने भुनाये और बीबी के लिए पँचमेल मिठाई चँगेल में ले चले। रास्ते में यही सोचते रहे कि नवाब से यों चकमा चलेंगे, यों झाँसा देंगे। चैन करो। उस्ताद, अब तुम्हारे पौ-बारह हैं। हलवाई की दूकान और दादा जी का फ़ातिहा, घर में जो खुश-खुश घुसे, तो बीबी देखते ही खिल गयीं। झपट कर चँगेल उनके हाथ से छीनी। देखा, तो मुँह में पानी भर आया। बरफी पर चाँदी का वरक लगा हुआ, इमर्तियाँ ताजी, लड्डू गरमागरम। पेडे वह, जो मथुरा के पेड़ों के दाँत खट्टे कर दें। दो-तीन लड्डू और एक बरफ़ी तो देखते ही देखते चट कर गयीं। पेड़ा उठाने ही को थीं कि मियाँ नुदरत ने झल्ला कर पहुँचा पकड़ लिया और बोले—अरे, बस भी तो करोगी? एक लड्डू खाया, मैं कुछ न बोला, दूसरा निकाला, मैं चुपचाप देखा किया। तीसरे लड्डू पर हाथ बढ़ाया, बरफ़ी खायी और अब चली पेडे पर हाथ डालने। अब खाने-पीने की चीज में टोके कौन, इतनी बड़ी लूमड़ हो गयीं, मगर खिलड़ ही बनी रहीं। मरभुक्खों की तरह मिठाई पर गिर पड़ने के क्या माने? दो प्यालियाँ लाओ, अफ़ीम घोलो, पियो। जब खूब नशे गठें, तो मिठाइयाँ चखो। खुदा की कसम, यह अफीम भी नेमत की माँ का कलेजा है।

बीबी—(तिनक कर) बस, नेमत की माँ का कलेजा तुम्हीं खाओ। खाओ, चाहे भाड़ में जाओ। वाह, आज इतने बड़े त्यौहार के दिन मिठाई क्या लाये कि दिमाग़ ही नहीं मिलता। मोती की सी आब उतार ली। एक पेडे के खातिर पहुँचा धरके मरोड़ डाला।

इतने में बाहर से आवाज़ आयी—मियाँ नुदरत हैं?

बीबी—सुनते हो, या कानों में ठेठियाँ हैं? एक आदमी गला फाड़-फाड़ कर चिल्ला रहा है, दरवाजे को चूल से निकाले डालता है। बोलते क्यों नहीं? कहीं चोरी करके तो नहीं आये हो?

नुदरत—जरी आहिस्ते-आहिस्ते बातें करो।

बीबी—ऐ है, सच कहिएगा। हम तो खूब गुल मचायेंगे। मामा, हम परदे में हुए जाते हैं। जा कर उनसे कह दो—घर में घुसे बैठे हैं।

नुदरत—नहीं, नहीं, यह दिल्लगी अच्छी नहीं। कह दो, नवाब साहब के यहाँ गये हैं।

मामा—(बाहर जा कर) मियाँ, क्या गुल मचा रहे हो ? मैं तो समझी, कहीं से दौड़ आयी है। वह तो सवेरे नवाब साहब के यहाँ गये थे, अभी आये नहीं। जो मिलें, तो भेज दीजिएगा।

पुकारनेवाला—यह कैसी बात ? नवाब साहब के यहाँ से तो हम भी अभी-अभी आ रहे हैं। वहाँ ढुँढस मची हुई है कि चल कहाँ दिये। अच्छा भाभी साहब से कहो, आज ईद के दिन दरवाजे पर आये हैं, कुछ सेवइयाँ-वेवइयाँ तो खिलायें। हम तो बेतकल्लुफ आदमी हैं। तकाजा करके दावत लेते हैं।

मामा ने अंदर से ले जा कर बाहर बरामदे में एक मोढा डाल दिया। उधर मियाँ-बीबी मे तकरार होने लगी।

मियाँ—अजी, टाल भी दो। ऐसे-ऐसे मुफ़्तखोरे बहुत आया करते हैं। मामा, तुम भी पागल ही रहीं। मोढ़ा डालने की भला क्या जरूरत थी ?

बीबी—ऐ वाह ! हम तो जरूर खातिर करेंगे। यह अच्छा कि नवाब के यहाँ जा कर हमको गँवारिन बनाये ? इसमें तुम्हारी नाक न कटेगी !

बीबी ने एक तश्तरी मे पाँच-छह डलियाँ मिठाई की करीने से लगाकर उस पर रेशमी हरा रूमाल ढक दिया और मामा से कहा—जाओ, दे आओ। मियाँ नुदरत की रूह पर सदमा हुआ कि चार-पाँच डली तो बीबी बातें करते-करते चख गयीं और पाँच-छह अब निकल गयीं। गजब ही हो गया। मामा मिठाई ले कर चली, तो ड्योढ़ी में दो लड्डू चुपके से निकाल कर एक ताक में रख दिये। इत्तिफाक से एक छोकरा देख रहा था। जैसे मामा बाहर गयी, वैसे ही दोनों लड्डू मजे से खा गया। चलिए, चोर के घर मे मोर पैठा। मुसाहब ने रूमाल हटाया, तो कहा—वाह, भाभी साहब तो भाई साहब से भी बढ़ कर निकलीं। यह हाथी के मुँह मे जीरा। खैर, पानी तो लाओ। हजरत ने मिठाई खायी और पानी पिया, तो पान की फ़र्माइश की। बीबी ने अपने हाथ से दो गिलौरियाँ बनायीं। मुसाहब ने चखीं, तो हुक्का माँगा। नुदरत ने कहा—देखा न, हाथ देते ही पहुँचा पकड़ लिया। मिठाई लाओ, पान खिलाओ, पानी पिलाओ, हुक्का भर लाओ; गोया बाबा के घर में बैठे हैं। इन मूजियों की तो कब तक से मैं वाक़िफ हूँ। और एक इस पर क्या मौकूफ है। नवाब के यहाँ जितने हैं, सब गुरगे, मुफ्तखोरे, पराया माल ताकनेवाले। मामा, जा कर कह दो, हुक्का यहाँ कोई नहीं पीता। लेकिन बीबी ने हुक्का भरवा कर भेज ही दिया। जब पी चुके, तो बाहर से आवाज दी कि मामा, चारपाई यहाँ मौजूद है। जरा दरी या गलीचा दे जाइएगा। अब ठीक दोपहर में कौन इतनी दूर जाय। जरा

कमर सीधी कर ले। तब तो मियाँ नुदरत खूब ही झल्लाये। आखिर शैतान का मनसूबा क्या है? देख रहा है कि मालिक घर मे नही है; फिर यह दरवाजे पर चारपाई पर सोना क्या माने? और मुझसे-इससे कहाँ का ऐसा याराना है कि आते ही भाभी साहब से फरमाइशे होने लगीं।

इधर मामा ड्योढी मे गयी कि लड्डू चुपके-चुपके खाय। ताक मे ढूँढ मारा, पर लड्डुओं का कही पता नही। छोकरे ने पूछा—मामा, वहाँ क्या ढूँढ़ रही हो? वह तो चूहा खा गया। सच कहना, कैसी हुई? चूहे ने तुम्हारे अच्छे कान कतरे!

मुसाहब—मामा जी, जरी दरी दे जाइए।

मामा—यहाँ दरी-वरी नहीं है।

मुसाहब—हम जानते हैं, बड़े भाई कहीं इस वक्त ईद मिलने गये हैं। बस, समझ जाइए।

नुदरत ने कहा—खुश हुई? कुछ समझी भी? अब यह इस फिक्र में हैं कि तुमको हमको लडा दे। और मिठाई भेजो! गिलौरियाँ चखाओ!

जब मियाँ मुसाहब चंपत हुए, तो मियाँ नुदरत भी चँगेल की तरफ बढ़े और अफीम की पीनक मे खूब छक कर मिठाई चखी। फिर चले नवाब के घर। कदम-कदम पर फ़िकरे सोचते जाते हैं। बारे दाखिल हुए, तो लोगों ने आसमान सिर पर उठाया।

नवाब—शुक्र है, जिंदा तो बचे! यह आप अब तक रहे कहाँ आखिर?

मुसाहब—हुजूर, तारघर तो यह सामने है।

हाफिज—हाँ, और नहीं तो क्या? बात करते तो आदमी पहुँचता है।

रोशनअली—कौन, मुझसे कहिए, तो इतनी देर में अठारह फेरे करूँ।

नुदरत—हाँ भाई, घर बैठे जो चाहे कह लो, कोई जाय, तो आटे-दाल का भाव मालूम हो। चलते-चलते आँधी-रोग आ जाता है। बकरी मर गयी और खानेवाले को मजा ही न आया। आप लोग थान के टर्रे हैं। कहने लगे, दो कदम पर है। यहाँ से गये सआदतगंज वहाँ से घनिया महरी के पुल, वहाँ से ऐशबाग, वहाँ से गनेशगंज, वहाँ से अमीनाबाद होते हुए तारघर पहुँचे। दम टूट गया, शल हो गये, मर मिटे, न खाना, न दाना। आप लोग बैठे-बैठे यहाँ जो चाहे फ़रमाये, कहने और करने मे फ़र्क है।

नवाब—तो इस ठॉय-ठोय से वास्ता, यह कहिए, खबर पहुँची कि नही?

नुदरत—खुदावंद, भला मैं इसका क्या जवाब दूँ? खबर दे आया। बाबू ने मेरे सामने खट-खट किया, साहब ने रुपये लिये, चपरासियों को इनाम दिया। चार रुपये अपनी जेब से देने पडे। वह तो कहिए, वहाँ मेरे एक जान-पहचान के निकल आये, नहीं बैरंग वापस आना पड़ता।

नवाब—खैर, तसकीन हुई। अब फरमाइए, इतनी देर कहाँ हुई?

नुदरत—खुदावद, जल्दी के मारे बग्घी किराये करके गया था; लौटती बार

उसने वह पलटा खाया कि मै तो समझा, बस, कुचल ही गया। मगर खुदा कार-साज है, गिरा तो, लेकिन बच गया। कोई दो घंटे तक कोचवान बम ही दुरुस्त किया किया। इससे देर हुई। हुजूर, अब घर जाता हूँ।

नवाब—अरे भई, खाना तो खाते जाओ। अच्छा, चार रुपये वे हुए और बग्घी के किराये के भी कोई तीन रुपये हुए होंगे ? सात रुपये दारोगा से ले लो।

नुदरत—नहीं खुदावंद, झूठ नहीं बोलूँगा। चाहे फ़ाका करूँ, मगर कहूँगा सच ही। यही तो गुलाम में जौहर है। दो रुपये और पाँच पैसे दिये। देखिए, खुदा को मुँह दिखाना है।

नवाब—दारोगा, इनको दस रुपये दे दो। सच बोलने का कुछ इनाम भी तो दूँ।

दूसरे दिन सुबह को नवाब साहब ज़नानख़ाने से निकले, तो मुसाहबों ने झुक-झुक कर सलाम किया। खिदमतगार ने चाय की साफ़-सुथरी प्यालियाँ और चमचे ला कर रखे। नवाब ने एक-एक प्याली अपने हाथ से मुसाहबों को दी और सबने गरम-गरम दूधिया चाय उड़ानी शुरू की। एक-एक घूँट पीते जाते हैं और गप भी उड़ाते जाते हैं।

मुसाहब—हुज़ूर, कश्मीरी ख़ूब चाय तैयार करते हैं।

हाफ़िज़—हमारी सरकार में जो चाय तैयार होती है, सारी ख़ुदाई में तो बनती न होगी। ज़रा रंग तो देखिए। हिंदू भी देखे, तो मुँह में पानी भर आये।

रोशनअली—क़ुरबान जाऊँ हुज़ूर, ऐसी चाय तो बादशाह के यहाँ भी नहीं बनती थी। ख़ुदा जाने, मियाँ रहीम कहाँ से नुस्ख़ा पा गये। मगर ज़रा तल्ख़ी बाक़ी रह जाती है।

रहीम—सुभान अल्लाह! आप तो बादशाहों के यहाँ चाय पी चुके हैं और इतना भी नहीं जानते कि चाय में तल्ख़ी न हो, तो वह चाय ही नहीं।

खिदमतगार—ख़ुदावंद, शिवदीन हलवाई हाज़िर है।

नवाब—दारोग़ा जी, इस हलवाई का हिसाब कर दो, और समझा दो कि अगर ख़राब या सड़ी हुई बासी मिठाई भेजी, तो इस सरकार से निकाल दिया जायगा। परसों बर्फ़ी ख़राब भेजी थी। घर में शिकायत करती थीं।

दारोग़ा—सुनते हो शिवदीन? देखो, सरकार क्या फ़रमाते हैं? ख़बरदार जो सड़ी-गली मिठाई भेजी। अब तुमने नमकहरामी पर कमर बाँधी है! खड़े-खड़े निकाल दिये जाओगे।

हलवाई—नहीं ख़ुदावंद, अव्वल माल हूँ, अव्वल। चाशनी ज़रा बहुत आ गयी, तो दाना कम पड़ा। कड़ी हो गयी। चाशनी की गोली देर में देखी, नहीं तो इस दूकान की बरफ़ी तो शहरभर में मशहूर है। वह लज़्ज़त होती है कि ओंठ बँधने लगते हैं।

दारोग़ा—चलो, तुम्हारा हिसाब कर दें। ले बतलाओ, कितने दिन से ख़र्च नहीं पाया, और तुम्हारा क्या आता है?

हलवाई—अगले महीने में २५ रु० और कुछ आने की आयी थी। और अबकी १० तारीख़ अँगरेज़ी तक कोई सत्तर या अस्सी की। ·

दारोग़ा—अजी, तुम तो गड़बड़ियाँ करते हो। सत्तर या अस्सी, सौ या पाँच सौ; उस महीने में उतनी और इस महीने में इतनी। यह बखेड़ा तुमसे पूछता कौन है? हमें तो बस, गठरी बता दो, कितना हुआ?

हलवाई—अच्छा, हिसाब तो कर लूँ, (थोड़ी देर के बाद) बस, १४२ रुपये और दस आने दीजिए। चाहे हिसाब कर लीजिए, बोलता जाऊँ।

दारोग़ा—अजी, तुम कोई नये तो हो नहीं। बताओ इसमें यारों का कितना है? सच बोलना लाला! (पीठ ठोंक कर) आओ, वारे-न्यारे हों। क्यों, है न?

हलवाई—बस, सौ हमको दे दो, बयालीस तुम ले लो। सीधा-सीधा मैं तो यह जानता हूँ।

दारोग़ा—अच्छा, मंजूर। मगर बयालीस के बावन करो। एक सौ तुम्हारे, बावन हमारे। सच कहना, दोनों महीनों में चालीस की मिठाई आयी होगी या कम?

हलवाई—अजी हुज़ूर; अब इस भेद से आपको क्या वास्ता? आपको आम खाने से ग़रज़ है, या पेड़ गिनने से। सच-सच यह कि सब मिला कर अड़तीस रुपये की आयी होगी। मुल वज़न में मार देता हूँ। सेर भर लड्डू माँग भेजे, हमने पाव सेर कम कर दिये।

दारोग़ा—ओह, इसकी न कहिए, यहाँ अँधेर-नगरी चौपट-राज है। यह दिमाग़ किसे कि तौलने बैठे। मियाँ लखलुट, बीबी उनसे बढ़ कर। दस के पचास लो, और सेर के तीन पाव भेजो। मज़े हैं। अच्छा, ये सौ रुपये गिन लो और एक सौ बावन की रसीद हमें दो।

हलवाई—यह मोल-तोल है। सौ और पाँच हम लें और बाकी हुज़ूर को मुबारक रहें।

अब सुनिए, मियाँ खोजी ने ये सारी बातें सुन लीं। जब छिबदीन चला गया, तो बढ़ कर बोले—अजी, हज़रत, आदाबअर्ज़ है। कहिए, इसमें कुछ यारों का भी हिस्सा है? या बावन के बावन खुद ही हज़म कर जाओगे और डकार तक न लोगे? अब हमारा और आपका साझा न होगा, तो बुरी ठहरेगी।

दारोग़ा—क्या? किससे कहते हैं आप? यह साझा कैसा? भंग तो नहीं पी गये हो कहीं? यह क्या वाही-तबाही बक रहे हो? यहाँ बेहूदा बकनेवालों की ज़बान खींच ली जाती है। तुम टुकड़गदों को इन बातों से क्या वास्ता?

खोजी—(कमर कस कर) ओ गीदी, क़सम खुदा की, इतनी करौलियाँ भोंकी हों कि याद करो। मुझे भी कोई ऐसा-वैसा समझे हो? मैं आदमी को दम के दम में सीधा बना देता हूँ। किसी और भरोसे न भूलिएगा। क्या खूब, अड़तीस के डेढ़ सौ दिलवाये, पचास खुद उड़ाये और ऊपर से गुर्राता है मर्दक। अभी तो नवाब साहब से सारा कच्चा चिट्ठा जड़ता हूँ। खड़े-खड़े न निकाल दिये जाओ, तो सही। हम भी तमाम उम्र रईसों की ही सोहबत में रहे हैं, घास नहीं छीला किये हैं। बायें हाथ से बीस रुपये इधर रख दीजिए। बस, इसी में खैर है; वर्ना उलटी आँतें गले पड़ेंगी। अब सोचते क्या हो? ज़रा चीं-चपड़ करोगे, तो कलई खोल दूँगा। बोलो, अब क्या राय है? बीस रुपये से ग़म खाओगे, या ज़िल्लत उठाओगे? अभी तो कोई कानोंकान नहीं सुनेगा, पीछे अलबत्ता बड़ी टेढ़ी खीर है।

दारोगा—वाह री फूटी किस्मत ! आज सुबह-सुबह बोहनी अच्छी हुई थी, अच्छे का मुँह देख कर उठे थे; मगर हजरत ने अपनी मनहूस सूरत दिखायी। अब बावन में से आपको बीस रुपये, रकम की रकम निकाल दे, तो हमारे पास क्या खाक रहे ? और हाँ, खूब याद आया, बावन किस मरदूद को मिले। सैंतालिस ही तो हमारे हत्थे चढ़े। दस तुम भी लो भई। (गर्दन मे हाथ डाल कर) मान जाओ उस्ताद। हमें जरूरत थी इससे कहा, वरना क्या बात थी। और फिर हम-तुम जिंदा हैं तो सैकड़ों लूटेंगे मियाँ, ये हाथ दोनों लूटने ही के लिए हैं, या कुछ और ?

खोजी—दस में तो हमारा पेट न भरेगा। अच्छा भई, पंद्रह दो।

आखिर दारोगा ने मजबूर हो कर पंद्रह रुपये मियाँ खोजी को नजर किये और दोनों आदमी जाकर महफिल मे शरीक हुए। थोड़े ही देर बैठे होंगे कि चोबदार ने आकर कहा—हुजूर, वह बजाज आया है, जो विलायती कपड़ा बेचता है। कल भी हाजिर हुआ था; मगर उस वक्त मौका न था, मैंने अर्ज न किया।

नवाब—दारोगा से कहो, मुझे क्या घडी-घड़ी आके परचा जडते हो। (दारोगा से) जाओ भई, उसको भी लगे हाथों भुगता ही दो। झंझट क्यों बाकी रह जाय। कुछ और कपड़ा आया है विलायत से ? आया हो, तो दिखाओ; मगर बाबा मोल की सनद नहीं।

बजाज—अब कोई दूज तक सब कपडा आ जायगा। और, हुजूर ऐसी बाते कहते हैं ! भला, इस ड्योढ़ी पर हमने कभी मोल-तोल की बात की है आज तक ? और यों तो आप अमीर हैं, जो चाहे कहें, मालिक हैं हमारे।

दारोगा और बजाज चले। जब दारोगा साहब की खपरैल मे दोनों जा कर बैठे, तो मियाँ खोजी भी रेंगते हुए चले और दन से मौजूद ! दारोगा ने जो इनको देखा, तो काटो तो बदन में लहू नहीं; मुर्दनी सी चेहरे पर छा गयी ! चुप ! हवाइयाँ उड़ी हुई। समझे कि यह खोजी एक ही कांइयाँ है। इससे खुदा पनाह मे रखे। सुबह को तो मरदूद ने हत्थे ही पर टोक दिया, और पंद्रह पटीले। अब जो देखा कि बजाज आया, तो फिर मौजूद। आज रात को इसकी टाँग न तोडी हो, तो सही। मगर फिर सोचे कि गुड़ से जो मरे, तो जहर क्यों दे। आओ इस वक्त चुनीं-चुनाँ करे, फिर समझा जायगा। बोले—आओ भाईजान, इधर मोढ़े पर बैठो। अच्छी तरह भई ? हुक्का लाओ, आपके लिए।

बजाज सदर-बाजार का रहनेवाला एक ही उस्ताद था। ताड़ गया कि इसके बैठने से मेरा और दारोगा का मतलब खब्त हो जायगा ? किसी तदबीर से इसको यहाँ से निकालना चाहिए। पहले तो कुछ देर दारोगा से इशारों में बातें हुआ की। फिर थोड़ी देर के बाद बजाज ने कहा—मियाँ साहब, आपको यहाँ कुछ काम है ?

खोजी—तुम अपनी कहो लालाजी, हमसे क्या वास्ता ?

बजाज—तुम यहाँ से उठ जाओ। उठते हो कि मै दूँ एक लात ऊपर से।

खोजी—ओ गीदी, जबान सँभाल; नहीं तो इतनी करौलियाँ भोंकूँगा कि खून-खराब हो जायगा।

बजाज—उठूँ फिर मै?

खोजी—उठके तमाशा भी देख ले!

बजाज—वेधा है क्या?

खोजी—वल्लाह, जो वे-ते किया, तो इतनी करौलियाँ...

खोजी कुछ और कहने ही को थे कि बजाज ने बैठे-बैठे मुँह दबा दिया और एक चपत जमायी। चलिए, दोनों गुँथ गये। अब दारोगा जी को देखिए। बीच बचाव किस मजे से करते हैं कि खोजी के दोनों हाथ पकड़ लिये और कमर दबाये हुए हैं और बजाज ऊपर से इनको ठोक रहा है। दारोगा साहब गला फाड़-फाड़ कर गुल मचाये जाते हैं कि मियाँ, क्यों लड़े मरते हो? भई, धौल-धप्पे की सनद नहीं। खोजी अपने दिल में झल्ला रहे हैं कि अच्छे मीरफैसली बने। इतने में किसी ने नवाब साहब से जा कर कह दिया कि मियाँ खोजी, दारोगा और बजाज तीनों गुँथे पड़े हैं। उसी वक्त बजाज भी दौड़ा हुआ आया और फ़रियाद की कि हुजूर, हम आपके यहाँ तो सस्ता माल देते हैं, मगर यह खोजी हिसाब-किताब के वक्त सर पर सवार हो गये। लाख-लाख कहा किये कि भई, हम अपने माल का भाव तुम्हारे सामने न बतायेंगे; मुल इन्होंने हारी मानी न जीती, और उल्टे पंजे झाड़ के चित-पट की ठहरायी। कमजोर, मार खाने की निशानी। मैंने वह गुद्दा दिया कि छठी का दूध याद करते होंगे। दारोगा भी रोते-पीटते आये कि दोहाई है, चारपाई की पट्टी तोड़ डाली, खासदान तोड़ डाला और सैकड़ों गालियाँ दीं।

मियाँ खोजी ऐसे धपियाये गये और इतनी वेभाँव की पड़ी कि बस, कुछ पूछिए नहीं। नवाब ने पूछ—आखिर झगड़ा क्या था?

दारोगा—हुजूर यह खोजी बड़े ही तीखे आदमी हैं। बात-बात पर करौली भोंकते हैं, और गीदी तो तकिया-कलाम है। इस वक्त लाला बलदेव ही से भिड़ पड़े। वह तो कहिए, मैंने बीच-बचाव कर दिया। वर्ना एक-आध का सिर ही फूट जाता।

बजाज—बड़े झल्ले आदमी हैं। दारोगा जी बेचारे न आ जाँय तो कपड़े-वपड़े फाड़ डाले।

खोजी—तो अब रोते काहे को हो? अब यह दुखड़ा लेके क्या बैठे हो।

नवाब—लप्पा-डग्गी तो नहीं हुई।

खोजी—नहीं हुजूर, शरीफों में कहीं हाथा-पाई होती है भला? हमने इनको ललकारा, इन्हों ने हमको डाँटा, मगर कुंदे तौल-तौल कर दोनों रह गये। भलेमानस पर हाथ उठाना कोई दिल्लगी है।

खैर, मियाँ खोजी तो महफिल में जा कर बैठे और उधर लाला बलदेव और दारोगा साहब हिसाब करने गये।

दारोगा—हाँ भाई, बताओ।

लाला—अबी बताये क्या, जो चाहे दिलवा दो।

दारोगा—पहले यह बताओ, तुम्हारा आता क्या है? सौ, दो सौ, दस, बीस, पचास जो हो, कह दो।

लाला—दारोगा जी, आजकल कपड़ा बड़ा मँहगा है।

दारोगा—लाला, तुम निरे गावदी ही रहे। हमको मँहगे-सस्ते से क्या वास्ता? हमको तो अपने हक़ से मतलब। तुम तो इस तरह कहते हो, जैसे हमारी गिरह से जाता है।

लाला—फिर तो ७५३) निकालिए।

दारोगा—बस, अरे मियाँ, अबकी इतने दिनों में सात-साढ़े सात सौ ही की नौबत आयी?

लाला—जी हाँ, आप से कुछ परदा थोड़े ही है। दो सौ और पचपन रुपये का कपड़ा आया है; अंदर-बाहर, सब मिला कर। मगर परसों नवाब साहब कहने लगे। कि अबकी तो तुम्हारा कोई पाँच-छह सौ का माल आया होगा। मैंने कहा कि ऐसे मौके पर चूकना गधापन है। वह तो पाँच-छह सौ बताते थे, मेरे मुँह से निकल गया कि हिसाब किये से मालूम होगा। मुल कोई आठ-सात सौ का आया होगा। तो अब ७५३) ही रखिए। इसमे हमारा और आपका समझौता हो जायगा।

दारोगा—अजी, समझौता कैसा, हम-तुम कुछ दो तो हैं नहीं; और हमारे-तुम्हारे तो बाप-दादा के वक्त से दोस्ताना है। बोलो, कितने पर फैसला होता है?

लाला—बस, दो सौ छब्बीस तो हमको एक दीजिये और तीन सौ और दीजिए। इसके बाद बढ़े सो आपका।

दारोगा—(हँस कर) अच्छा भई, मंजूर। हाथ पर हाथ मारो। मगर ७५३) रु० ६ आ० की रसीद लिखो, जिनमें मालूम हो कि आने-पाई से हिसाब लेना है।

लाला—बड़े काइयाँ हो दारोगा जी! अजी, २२७) रु० ६ आ० कुल आपका!

ख़ोजी—बल्कि आपके बाप का।

यह आवाज़ सुन कर दोनों चौंके। इधर-उधर देखते हैं, कोई नजर ही नहीं आता। दारोगा के हवास ग़ायब। बजाज के बदन मे खून का नाम नहीं। इतने में फिर आवाज़ आयी—कहो, कुछ यारों का भी हिस्सा है? तब दोनों के रहे-सहे होश और भी उड़ गये।

अब सुनिए—मियाँ ख़ोजी खपरैल के पिछवाड़े एक मोखे की राह से सब सुन रहे थे। जब कुल कारवाई खतम हो गयी, तो आवाज़ लगायी। खैर, दारोगा और लाला बलदेव ने उनको ढूँढ़ निकाला और लल्लो-पत्तो करने लगे।

बजाज—हमारा कसूर फिर माफ कीजिए।

दारोगा—अजी, ये ऐसे आदमी नहीं हैं। ये बेचारे किसी से लड़ने-भिड़ने वाले नहीं। बाकी लड़ाई-झगड़ा तो हुआ ही करता है। दिल मे कुदरत आयी और साफ़ हो गये।

खोजी—ये बातें तो उम्र भर हुआ करेंगी। मतलब की बात फ़रमाइए। लाओ कुछ इधर भी।

दारोग़ा—जो कहो।

खोजी—सौ दिलवाइए पूरे। एक सौ लिये बग़ैर न टलूँगा। आज तुम दोनों ने मिल कर हमारी ख़ूब मरम्मत की है।

दरोग़ा—यह तीस रुपए तो एक लीजिए और यह दस का नोट। बस। और जो अल्सेट कीजिए, तो इससे भी हाथ धोइए।

खोजी—ख़ैर लाइए, चालीस ही क्या कम हैं।

दारोग़ा—हम समझते थे कि बस, हमी-हम हैं; मगर आप हमारे भी गुरु पैदा हुए।

मियाँ खोजी और दारोग़ा साहब हाथ में हाथ दिये जा कर महफ़िल में बैठे, गोया दोनों में दाँत-काटी रोटी थी। मगर दारोग़ा का बस चलता, तो खोजी को कालेपानी ही भेज देते, या ज़िंदा चुनवा देते। महफ़िल में लतीफ़े उड़ रहे थे।

मुदरत—हुज़ूर, आज एक आदमी ने हमसे पूछा कि अगर दरिया में नहायँ, तो मुँह किस तरफ़ रखें। हमने कहा कि भाई, अगर अक्लमंद हो, तो अपने कपड़ों की तरफ़ रुख़ रखो, वर्ना चोर उठा ले जायगा और आप ग़ोते ही खाते रह जायँगे।

हाफ़िज़—पुराना लतीफ़ा है।

आज़ाद—एक हकीम ने कहा कि जब तक मैं बिन ब्याहा था, तो बीबीवाले गूँगे हो गये थे और अब जो शादी कर ली, तो एक-एक मुँह में सौ-सौ ज़बानें हैं।

इतने में गंधी ने आ कर सलाम किया।

नवाब—दारोग़ा जी, इनको भी भुगता दो।

दारोग़ा और गंधी खपरैल में पहुँचे, तो दारोग़ा ने पूछा—कितना इत्र आया?

गंधी—देखिए, आपके यहाँ तो लिखा होगा।

दारोग़ा—हाँ, लिखा तो है। मगर ख़ुदा जाने वह काग़ज़ कहाँ पड़ा है। तुम अपनी याद से जो जी में आये, बता दो।

गंधी—३५ रु० तो कल के हुए, और ८० रु० उधर के। बेगम साहब ने अब की इत्र की भरमार ही कर दी। करावे के करावे ख़ाली कर दिये।

दारोग़ा—अच्छा भई, फिर इसमें किसी के बाप का क्या इजारा। शौकीन हैं, रईसज़ादी हैं, अमीर हैं। इत्र उन्हीं के लिए है, या हमारे आपके लिए? अच्छा, तो कुल ११५ रु० हुए न! तुम भी क्या याद करोगे। लो, सौ ये हैं और तीन नोट पाँच-पाँच के।

गंधी—अच्छा लीजिए, यह इत्र की शीशी आपके लिए लाया हूँ।

दारोग़ा—किस चीज़ का है?

गंधी—सूँघिए, तो मालूम हो। ख़ुदा जानता है, १० रु० तोले में झड़ाझड़ उड़ा जा रहा है।

-१

मियाँ गंधी उधर रवाना हुए, इधर दारोग़ा जी खुश-खुश चले, तो आवाज आया कि उस्ताद, इस शीशी में यारों का भी हिस्सा है। पीछे फिर के देखते हैं, तो मियाँ खोजी घूमते हुए चले आते हैं।

दारोग़ा—यार, तुमने तो बेतरह पीछा किया।

खोजी—अब की तो तुमको कुछ न मिला। मगर इस इत्र में से आधी शीशी लेंगे।

दारोग़ा—अच्छा भई, ले लेना। तुमसे तो कोर ही दबी है। दोनों आदमी जा कर महफ़िल में फिर शरीक हो गये।

३१

एक दिन पिछले पहर से खटमलों ने मियाँ खोजी के नाक में दम कर दिया। दिन भर का खून जोंक की तरह पी गये। हजरत बहुत ही झल्लाये; चीख उठे, लाना क़रौली, अभी सबका खून चूस लूँ। यह हाँक जो औरों ने सुनी, तो नींद हराम हो गयी। चोर का शक हुआ। लेना लेना, जाने न पाये। सराय भर में हुल्लड़ मच गया। कोई आँखे मलता हुआ अँधेरे में टटोलता है, कोई आँखें फ़ाड़-फाड़ कर अपनी गठरी को देखता है, कोई मारे डर के आँखें बंद किये पड़ा है। मियाँ खोजी ने जो चोर-चोर की आवाज़ सुनी, तो खुद भी गुल मचाना शुरू किया—लाना मेरी क़रौली। ठहर! मैं भी आ पहुँचा। पीनक में सूझ गयी कि चोर आगे भागा जाता है, दौड़ते-दौड़ते ठोकर खाते हैं तो अररर धों! गिरे भी तो कहाँ, जहाँ कुम्हार के हंडे रखे थे। गिरना था कि कई हंडे चकनाचूर हो गये। कुम्हार ने ललकारा कि चोर-चोर। यह उठने ही को थे कि उसने आकर दबोच लिया और पुकारने लगा—दौड़ो-दौड़ो, चोर पकड़ लिया। मुसाफ़िर और भठियारे सब के सब दौड़ पड़े। कोई डंडा लिये है, कोई लट्ठ बाँधे। किसी को क्या मालूम कि यह चोर है, या मियाँ खोजी। खूब बेभाव की पड़ी। यार लोगों ने ताक ताक कर जमाटे के हाथ लगाये। खोजी की सिट्टी-पिट्टी भूल गयी; न क़रौली याद रही, न तमंचा। जब खूब पिट-पिटा चुके, तो एक मुसाफ़िर ने कहा—भई, यह तो खोजी मालूम होते हैं। जब चिराग़ जलाया गया, तो आप दबके हुए नजर आये। मियाँ आज़ाद से किसी ने जा कर कह दिया कि तुम्हारे साथी खोजी चोरी की इल्लत में फँसे हैं, किसी मुसाफ़िर की टोपी चुरायी थी। दूसरे ने कहा—नहीं-नहीं, यह नहीं हुआ। हुआ यह कि एक कुम्हार की हाँड़ियाँ चुराने गये थे। गुल जाग हो गयी।

मियाँ आज़ाद को यह बात कुछ जँची नहीं। सोचे, खोजी बेचारे चोरी-चकारी क्या जानें। फिर चोरी भी करते तो हाँड़ियों की? दिल में ठान ली कि चलें और खोजी को बचा लायें। चारपाई से उतरे ही थे कि देखा, खोजी साहब झूमते चले आते हैं और बड़बड़ाते जाते हैं—हत् तेरी गीदी की, बड़ा आज़ाद बना है। चारपाई पर पड़ा खर्र-खर्र किया किया और हमारी खबर ही नहीं।

आज़ाद—खैर, हमको तो पीछे गालियाँ देना, पहले यह बताओ कि हाथ-पाँव तो नहीं टूटे?

खोजी—हाथ-पाँव! अजी, आप उस वक़्त होते तो देखते कि बंदे ने क्या-क्या जौहर दिखाये। पचास आदमी घेरे हुए थे, पूरे पचास, एक कम न एक ज्यादा, और मैं फुलझड़ी बना हुआ था। बस, यह कैफ़ियत थी कि किसी को अंटी दी धम से ज़मीन पर, किसी को कूले पर लाद कर मारा। दो-चार मेरे रोब में आ कर थरथरा के

गिर ही तो पड़े। दस-पाँच की हड्डी-पसली चकनाचूर कर दी। जो सामने आया, उसे नीचा दिखाया।

आज़ाद—सच ?

खोजी—खुदाई भर में कोई ऐसा जीवट्टार आदमी दिखा तो दीजिए।

आजाद—भई, खुदाई भर का हाल तो खुदा ही को खूब मालूम है। मगर इतनी गवाही तो हम भी देंगे कि आप-सा बेहया दुनिया भर में न होगा।

दोनों आदमी इस वक़्त सो रहे, दूसरे दिन सवेरे नवाब साहब के यहाँ पहुँचे।

आज़ाद—जनाब, रुखसत होने आया हूँ। जिंदगी है, तो फिर मिलूँगा।

नवाब—क्या कूच की तैयारी कर दी ? भई, वापस आना, तो मुलाकात जरूर करना।

आज़ाद और खोजी रुखसत हुए, तो खोजी पहुँचे ज़नानी ड्योढ़ी पर और दरबान से बोले—यार, जरा बुआ ज़ाफ़रान को नहीं बुला देते। दरबान ने आवाज़ दी—बुआ ज़ाफ़रान, तुम्हारे मियाँ आये हैं।

बुआ ज़ाफ़रान के मियाँ खोजी से बिलकुल मिलते-जुलते थे, जरा फ़र्क नहीं। वही सवा बालिश्त का कद, वही दुबले-पतले हाथ-पाँव। ज़ाफ़रान उनसे रोज कहा करती थी—तुम अफीम खाना छोड़ दो। वह कब छोड़नेवाले थे भला। इसी सबब से दोनों में दम भर नहीं बनती थी। ज़ाफ़रान ने जो बाहर आ कर देखा, तो हज़रत पीनक ले रहे हैं। जल-भुनकर खाक ही तो हो गयी। जाते ही मियाँ खोजी के पट्टे पकड़ कर एक, दो, तीन, चार, पाँच चाँटे लगा ही तो दिये। खोजी का नशा हिरन हो गया। चौंक कर बोले—लाना तो करौली, खोपड़ी पिलपिली हो गयी। हाथ छुड़ा-कर भागना चाहा; मगर वह देवनी नवाब का माल खा-खा कर हथनी बनी फिरती थी। इनको चुरमुर कर डाला। इधर गुल-गपाड़े की आवाज़ हुई, तो बेगम साहबा, मामा, लौंडियाँ, सब परदे के पास दौड़ीं।

बेगम—ज़ाफ़रान, आखिर यह है क्या ? रुई की तरह इस बेचारे को धुन के धर दिया।

मामा—हुजूर, ज़ाफ़रान का क़सूर नहीं, यह उस मरदुए का कसूर है जो जोरू के हाथ बिक गया है। (खोजी के कान पकड़ कर) जोरू के हाथ से जूतियाँ खाते हो, और ज़रा चूँ नहीं करते ?

खोजी—हाय अफ़सोस ! अजी, यह जोरू किस मरदूद की है। खुदा-खुदा करो ! भला मैं इस हुड़दंगी, काली-कलूटी डाइन के साथ ब्याह करता ! मार-मार के भुरकस निकाल लिया।

बुआ ज़ाफरान ने जो ये बातें सुनीं, तो वह आवाज़ ही नहीं। ग़ौर करके देखती है, तो यह कोई और ही है। दाँतों के तले उँगली दबाकर खामोश हो रहीं।

लौंडी—ऐ वाह बुआ ज़ाफरान ! इतनी भी नहीं पहचानतीं। यह बेचारे तो नवाब साहब के यहाँ बने रहते थे। आखिर तुमको सूझी क्या

बेगम साहब ने भी ज़ाफ़रान को खूब आड़े हाथों लिया। इतने में किसी ने नवाब साहब से सारा क़िस्सा कह दिया। महफ़िल भर में क़हक़हा पड़ गया।

नवाब—ज़ाफ़रान की सज़ा यही है कि खोजी को दे दी जायँ।

खोजी—बस, ग़ुलाम के हाल पर रहम कीजिए। ग़ज़ब ख़ुदा का! मियाँ के धोखे-धोखे में तो इसने हमारे हाथ-पाँव ढीले कर दिये और जो कहीं सचमुच मियाँ ही होते, तो चटनी ही कर डालती। क्या कहूँ, कुछ बस नहीं चलता, नहीं नवाबी होती, तो इतनी करौलियाँ भोंकी होतीं कि उम्र भर याद करती। यहाँ कोई ऐसे-वैसे नहीं। घास नहीं खोदा किये हैं।

बड़ी देर तक अंदर-बाहर क़हक़हे पड़े, तब दोनों आदमी फिर से रुख़सत हो कर चले। रास्ते में मियाँ आज़ाद मारे हँसी के लोट-लोट गये।

खोजी—जनाब, आप हँसते क्या हैं? मैंने भी ऐसी-ऐसी चुटकियाँ ली हैं कि ज़ाफ़रान भी याद ही करती होगी।

आज़ाद—मियाँ, डूब मरो जा कर। एक औरत से हाथापाई में जीत न पाये!

खोजी—जी, वह औरत सौ मर्द के बराबर है। चिमट पड़े, तो आपके भी हवास उड़ जायँ।

दोनों आदमी सराय पहुँच कर चलने की तैयारी करने लगे। खाना खा कर बोरिया-बकचा सँभाल स्टेशन को चले।

खोजी—हज़रत, चलने को तो हम चलते हैं, मगर इतनी शर्तें आपको कबूल करनी होंगी—

(१) करौली हमको ज़रूर ले दीजिए।

(२) बरस भर के लिए अफ़ीम ले लीजिए। मैं अपने लादे-लादे फिरूँगा। वर्ना जँभाइयों पर जँभाइयाँ आयेंगी और बेमौत मर जाऊँगा। आप तो औरतों की तरह नशे के आदी नहीं; मगर मैं बग़ैर अफ़ीम पिये एक क़दम न चलूँगा। परदेस में अफ़ीम मिले, या न मिले, कहाँ ढूँढ़ता फिरूँगा?

(३) इतना बता दीजिए कि वहाँ बुआ ज़ाफ़रान की सी डंडपेल देवनियाँ तो नज़र न आयेंगी? वल्लाह, क्या कस-कस के लातें लगायी हैं, और क्या तान-तान के मुक्केबाज़ी की है कि पलेथन ही निकाल डाला।

(४) सराय में हम अब तमाम उम्र न उतरेंगे, और जो जहाज़ पर कुम्हार हुए तो हम डूब ही मरेंगे। हम ठहरे आदमी भारी-भरकम, कहीं पाँव फिसल गया और एक-आध हँडा टूट गया, तो कुम्हार से ठाँय ठाँय हो जायगी।

(५) जिस रईस की सोहबत में बज़ाज़ आते होंगे, वहाँ हम न जायँगे।

(६) जहाँ आप चलते हैं, वहाँ काँजीहौस तो नहीं है कि गधे के धोखे में कोई हमको कान पकड़ के काँजीहौस पहुँचा दे।

(७) टट्टू पर हम सवार न होंगे, चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय।

(८) मीठे पुलाव रोज़ पकें।

(९) हमको मियाँ खोजी न कहना। जनाब ख्वाजा साहब कहा कीजिए। यह खोजी के क्या माने ?

(१०) मोरचे पर हम न जायँगे। लूट-मार में जो कुछ हाथ आये, वह हमारे पास रखा जाय।

(११) गोली खाने के तीन घंटे पहले और मरने के दो घड़ी पहले हमें बतला देना।

(१२) अगर हम मर जायँ, तो पता लगा कर हमारे वालिद के पास ही हमारी लाश दफ़न करना। अगर पता न लगे, तो किसी क़बरिस्तान में जा कर सबसे अच्छी कबर के पास हमको दफ़न करना। और लिख देना कि यह इनके वालिद की कबर है।

(१३) पीनक के वक़्त हमको हरगिज़ न छेड़ना।

आज़ाद—तुम्हारी सब शर्तें मंजूर। अब तो चलिएगा।

खोजी—एक बात और बाक़ी रह गयी।

आज़ाद—लगे हाथों वह भी कह डालिए।

खोजी—मैं अपनी दादीजान से तो पूछ लूँ।

आज़ाद—क्या वह अभी जिंदा हैं ? खुदा झूठ न बुलाये, तो आप कोई पचास के पेटे में होंगे ? और वह इस हिसाब से कम से कम क्या डेढ़ सौ बरस की भी न होंगी ?

खोजी—अजी, मैं दिल्लगी करता था। उनकी तो हड्डियों तक का पता न होगा।

स्टेशन पर पहुँचे। गुल-गपाड़ा मचा हुआ था। दोनों आदमी भीड़ काट कर अंदर दाखिल हुए, तो देखा, एक आदमी गेरुए कपड़े पहने खड़ा है। फ़क़ीरों की सी दाढ़ी, बाल कमर तक, मूँछें मुड़ी हुई, कोई पचास के पेटे में। मगर चेहरा सुर्ख़, जैसे लाल अंगारा; आँखें आगभभूका।

आज़ाद—(एक सिपाही से) क्यों भई, क्या यह कोई फ़क़ीर हैं ?

सिपाही—फकीर नहीं, चंडाल है। कोई चार महीने हुए, यहाँ आया और एक आदमी को सब्ज़ बाग़ दिखा कर अपना चेला बनाया। रफ़्ता-रफ़्ता और लोग भी शागिर्द हुए। फिर तो हजरत पुजने लगे। अब कोई तो कहता है कि बाबा जी ने दस सेर मिठाई दरिया में डाल दी और दूसरे दिन जा कर कहा—गंगा जी, हमारी अमानत हमको वापस कर दो। दरिया लहरें मारता हुआ बाबा जी के पास आया और दस सेर गरमागरम मिठाई किसी ने आप ही आप उनके दामन में बाँध दी। कोई कसमें खा-खा कर कहता है कि कई मुर्दे इन्होंने ज़िंदा कर दिये। एक साहब ने यहाँ तक बढ़ाया कि एक दिन मूसलाधार मेंह बरस रहा था और इन पर बूँद ने असर न किया। कोई फ़रिश्ता इन पर छतरी लगाये रहा।

आज़ाद—चिकने घड़े बन गये।

सिपाही—कुछ पूछिए नहीं। उन लोगों ने कहना शुरू कर दिया था कि यह क़ैदखाने से निकल जायँगे; मगर तीन दिन से हवालात मे हैं, और अब सिट्टी-पिट्टी

भूली हुई है। मैं जो उधर से आऊँ-जाऊँ, तो रोज़ देखूँ कि भीड़ लगी हुई है; मगर औरतें ज़्यादा और मर्द कम। जो आता है, वह सिजदा करता है आपकी देखा-देखी मैं गया, मेरी देखा-देखी आप गये। बाबा जी के यहाँ रोज दरबार लगने लगा।

एक दिन का ज़िक्र है कि बाबा जी ने अपनी कोठरी में टाट के नीचे दस-पाँच रुपये रख दिये और चुपके से बाहर निकल आये। जब दरबार जम गया, तो एक आदमी ने कहा—बाबा जी, हमको कुछ दिखाइए। बिना कुछ देखे हम एक न मानेंगे। बाबा जी ने आँखें नीली-पीली कीं और शेर की तरह गरजे—लोगों के होश उड़ गये। दो-चार डरपोक आदमियों ने तो मारे डर के आँखें बंद कर लीं। एक आदमी ने कहा—बाबा, अनजान है। इस पर रहम कीजिए.। दूसरा बोला—नादान है, जाने दीजिए।

'फ़क़ीर—नहीं, इससे पूछो, क्या देखेगा ?

'आदमी—बाबा, मैं तो रुपयों का भूखा हूँ।

फ़क़ीर—बच्चा, फकीरों को दौलत से क्या काम ? मगर तेरी खातिर करना भी जरूरी है। चल, चल, चल। बरसो, बरसो, बरसो। खन, खन, खन। अच्छा बच्चा, कुटी में देख; टाट का कोना उठा। खुदा ने तेरे लिए कुछ भेजा ही होगा। मगर दाहना सुर चलता हो, तभी जाना; नहीं तो धोखा खायगा। वहाँ कोई डरावनी सूरत दिखायी दे, तो डर मत जाना; नहीं तो मर जायगा।

'बाबा जी ने कुटी के एक कोने मे परदा डाल दिया था और उस परदे में एक आदमी का मुँह काला करके बिठा दिया था। अब तो आदमी डरा कि न जाने कैसी भयानक सूरत नजर आयेगी। कहीं डर जाऊँ, तो जान ही जाती रहे। बाबा जी एक-एक से कहते हैं, मगर किसी की हिम्मत नहीं पड़ती। तब एक नौजवान ने उठ कर कहा—लीजिए, मै जाता हूँ।

'फ़कीर—बच्चा, जाता तो है, मगर जरा सँभल कर जाना।

'नौजवान बेधड़क कोठरी में घुस गया। टाट के नीचे से रुपए निकाल कर जेब में रख लिये और चलने ही को था कि परदे में से वह काला आदमी निकल पड़ा और जवान की तरफ़ मुँह खोल कर झपटा। जवान ने आव देखा न ताव, लकड़ी उसकी हलक में डाल दी और इतनी चोटें लगायीं कि बौखला दिया। जब वह रुपये लिये अकड़ता हुआ बाहर निकला, तो हवाली मवाली सब दंग कि यह तो खुश-खुश आते हैं और हम समझे थे कि अब इनकी लाश देखेंगे।

'नौजवान—(फकीर से) कहिए हज़रत, और कोई करामात दिखाइएगा ?

'फ़क़ीर—बच्चा, तुम्हारी जवानी पर हमे तरस आ गया।

'नौजवान—पहले जा कर अंदर देखिए तो आपके देव साहब की क्या हालत है ? जरा मरहम-पट्टी कीजिए।

'अगर वहाँ समझदार लोग होते, तो समझ जाते कि बाबा जी पूरे ठग हैं· मगर

वहाँ तो सभी जाहिल थे। वे समझे, वेशक बाबा जी ने नौजवान पर रहम किया। खैर बाबा जी ने खूब हाँथ-पाँव फैलाये। एक दिन किसी महाजन के यहाँ गये। वहाँ महल्ले भर के मर्द और औरतें जमा हो गयीं। रात को जब सब लोग चले गये, तो इन्होंने महाजन के लड़के से कहा—हम तुमसे बहुत खुश हैं। जो चाहे माँग ले। लड़का इनके कदमों पर गिर पड़ा। आपने फ़रमाया कि एक कोरी हाँड़ी लाओ, चूल्हा गरम करो; मगर लकड़ी न हो, कंडे हों। कुम्हार ने सब सामान चुटकियों में लैस कर दिया। तब आपने लोहे का एक पत्तर मँगवाया। उसे हाँड़ी में पानी भर कर डाल दिया। पानी को ले कर कुछ पढ़ा। थोड़ी देर के बाद एक पुड़िया दी और कहा—यह सफेद दवा उसमें डाल दे। थोड़ी देर के बाद जब महाजन का लड़का अंदर गया, तो बाबा जी ने लोहे का पत्तर निकाल दिया और अपने पास से सोने का पत्तर हाँड़ी में डाल दिया, और चल दिये। महाजन का लड़का बाहर आया, तो बाबा जी का पता नहीं। हाँड़ी को जो देखो, तो लोहे का पत्तर ग़ायब, सोने का थक्का मौजूद। महल्ले भर में शोर मच गया। लोग बाबा जी को ढूँढ़ने लगे। आखिर यहाँ तक नौबत पहुँची कि एक मालदार की बीबी ने चकमें में आ कर अपना पाँच-छ हजार का ज़ेवर उतार दिया। बाबा जी ज़ेवर ले कर उड़ गये। साल भर तक कहीं पता न चला। परसों पकड़े गये हैं।'

थोड़ी देर के बाद गाड़ी आयी। दोनों आदमी जा बैठे।

सुबह को गाड़ी एक बड़े स्टेशन पर रुकी। नये मुसाफ़िर आ-आ कर बैठने लगे। मियाँ खोजी अपने कमरे के दरवाजे पर खड़े घुड़कियाँ जमा रहे थे—आगे जाओ, यहाँ जगह नहीं है; क्या मेरे सिर पर बैठोगे? इतने में एक नौजवान दूल्हा बराती कपड़े पहने आ कर गाड़ी में बैठ गया। बरात के और आदमी असबाब लदवाने में मसरूफ़ थे। दुलहिन और उसकी लौंडी जनाने कमरे में बैठायी गयी थीं। गाड़ी चलनेवाली ही थी कि एक बदमाश ने गाड़ी में घुस कर दूल्हे की गरदन पर तलवार का ऐसा हाथ लगाया कि सिर कट कर धड़ से अलग हो गया। उस बेगुनाह की लाश फड़कने लगी। स्टेशन पर कुहराम मच गया। सैकड़ों आदमी दौड़ पड़े और कातिल को गिरफ़्तार कर लिया। यहाँ तो यह आफ़त थी, उधर दुलहिन और महरी में और ही बातें हो रही थीं।

दुलहिन—दिलबहार, देखो तो, यह गुल कैसा है? जरी झाँक कर देखना तो!

दिलबहार—हैं-हैं! किसी ने एक आदमी को मार डाला है। चबूतरा सारा लहू-लुहान है।

दुलहिन—अरे ग़जब! क्या जाने, कौन था बेचारा!

दिलबहार—अरे! बात क्या है! लाश के सिरहाने खड़े तुम्हारे देवर रो रहे हैं।

एक दफ़े लाश की तरफ़ से आवाज आयी—हाय, भाई, तू किधर गया! दुल-हिन का कलेजा धक-धक करने लगा। भाई-भाई करके कौन रोता है। अरे ग़ज़ब! वह घबरा कर रेल से उतरी और छाती पीटती हुई चली। लाश के पास पहुँच कर बोली—हाय, लुट गयी! अरे लोगो, यह हुआ क्या?

दिलबहार—हैं-हैं दुलहिन, तुम्हारा नसीब फूट गया।

इतने में स्टेशन की दो-चार औरतें—तार-बाबू की बीबी, गार्ड की लड़की, ड्राइ-वर की भतीजी वगैरह ने आ कर समझाना शुरू किया। स्टेशन मातमसरा बन गया। लोग लाश के इर्द-गिर्द खड़े अफ़सोस कर रहे थे। बड़े-बड़े संगदिल आठ-आठ आँसू रो रहे थे। सीना फटा जाता था। एकाएक दुलहिन ने एक ठंडी साँस ली, जोर से हाय करके चिल्लायी और अपने शौहर की लाश पर धम से गिर पड़ी। चंद मिनट में उसकी लाश भी तड़प कर सर्द हो गयी। लोग दोनों लाशों को देखते थे, और हैरत से दाँतों उँगली दबाते थे। तकदीर के क्या खेल हैं, दुलहिन के हाथ-पाँव मे मेंहदी लगी हुई, सिर से पाँव तक जेवरों से लदी हुई; मगर दम के दम मे कफ़न की नौबत आ गयी। अभी स्टेशन से एक पालकी पर चढ़ कर आयी थी, अब ताबूत मे जायगी। अभी कपड़ों से इत्र की महक आ रही थी कि काफूर की तदबीरें होने लगीं। सुबह को दरवाजे पर रोशनचौकी और शहनाई बज रही थी, अब मातम की सदा है। थोड़ी ही देर हुई कि शहर के लोग छतों और दूकानों

से बरात देख रहे थे, अब जनाज़ा देखेंगे। दिलबहार दोनों लाशों के पास बैठी थी; मगर आँसुओं का तार बँधा हुआ था। वह दुलहिन के साथ खेली थी। दुनिया उसकी नज़रों में अँधेरी हो गयी थी। दूल्हा के खिदमतगार कातिल को ज़ोर-ज़ोर से जूते और थप्पड़ लगा रहे थे और मरनेवाले को याद करके ढाड़ें मार-मार के रोते थे। ख़ैर, स्टेशन मास्टर ने लाशों को उठवाने का इंतज़ाम किया। गाड़ी तो चली गयी। मगर बहुत से मुसाफ़िर रेल पर से उतर आये। बला से टिकट के दाम गये। उस क़ातिल को देख कर सबकी आँखों से ख़ून टपकता था। यही जी चाहता था कि इसको इसी दम पीस डालें। इतने में लाल कुर्ती का एक गोरा, जो बड़ी देर से चिल्ला-चिल्ला कर रो रहा था, गुस्से को रोक न सका, जोश में आके झपटा और क़ातिल की गरदन पकड़ कर उसे ख़ूब पीटा।

आज़ाद और मियाँ ख़ोजी भी रेल से उतर पड़े थे। दोनों लाशों के साथ उनके घर गये। राह में हज़ारों आदमियों की भीड़ साथ हो गयी। जिन लोगों ने उन दोनों की सूरत ख्वाब में भी न देखी थी, जानते भी न थे कि कौन हैं और कहाँ रहते हैं, वे भी ज़ार-ज़ार रोते थे। औरतें बाज़ारों, झरोखों और छतों पर से छाती पीटती थीं कि खुदा ऐसी घड़ी सातवें दुश्मन को भी न दिखाये। दूकानदारों ने जनाज़े को देखा और दूकान बढ़ा के साथ हुए। रईसज़ादे सवारियों पर से उतर-उतर पड़े और जनाज़े के साथ चले। जब दोनों लाशें घर पर पहुँचीं, तो सारा शहर उस जगह मौजूद था। दुलहिन का बाप हाय-हाय कर रहा था और दूल्हे का बाप सब्र की सिल छाती पर रखे उसे समझाता था — भाई सुनो, हमारी और तुम्हारी उम्र एक है, हमारे मरने के दिन नज़दीक हैं। और दो-चार बरस बेहयाई से जिये तो जिये, वर्ना अब चल-चलाव है। किसी को हम क्या रोयें। जिस तरह तुम आज अपनी प्यारी बेटी को रो रहे हो, इसी तरह हज़ारों आदमियों को अपनी औलाद का ग़म करते देख चुके हो। इसका अफ़सोस ही क्या ?- वह ख़ुदा की अमानत थी, ख़ुदा के सिपुर्द कर दी गयी।

उधर कातिल पर मुकदमा पेश हुआ और फाँसी का हुक्म हो गया। सुबह के वक्त क़ातिल को फाँसी के पास लाये। फाँसी देखते ही बदन के रोएँ खड़े हो गये। बड़ी हसरत के साथ बोला—सब भाइयों को सलाम। यह कह कर फाँसी की तरफ़ नज़र की और ये शेर पढ़े—

कोई दम कीजिए किसी तौर से आराम कहीं;
चैन देती ही नहीं गरदिशे अय्याम कहीं।
सैद लाग़र हूँ, मेरी जल्द ख़बर ले सैयाद;
दम निकल जाय तड़प कर न तहे दाम कहीं।

ख़ोजी—क्यों मियाँ, शेर तो उसने कुछ बेतुके से पढ़े। भला इस वक़्त शेर का क्या ज़िक्र था।

आज़ाद—चुप भी रहो। उस बेचारे की जान पर बन आयी है, और तुमको मज़ाक सूझता है—

उन्हें कुछ रहम भी आता है या रब, वक़्ते खूँ-रेज़ी;
छुरी जब हल्के-आशिक़ पर रवाँ जल्लाद करते हैं।

कातिल फाँसी पर चढ़ा दिया गया और लाश फड़कने लगी। इतने में लोगों ने देखा कि एक आदमी घोड़ा कड़कड़ाता सामने से आ रहा है। वह सीधा जेलखाने में दाखिल हुआ और चिल्ला कर बोला—खुदा के वास्ते एक मिनिट की मुहलत दो। मगर वहाँ तो लाश फड़क रही थी। यह देखते ही सवार धम से घोड़े से गिर पड़ा और रो कर बोला—यह तीसरा था। जेल के दारोगा ने पूछा—तुम कौन हो? उसने फिर आहिस्ता से कहा—यह तीसरा था। अब एक एक आदमी उससे पूछता है कि मियाँ, तुम कौन हो और रोक लो, रोक लो की आवाज क्यों दी थी? वह सबको यही जवाब देता है—यह तीसरा था।

आज़ाद—आपकी हालत पर अफ़सोस आता है।

सवार—मई, यह तीसरा था।

इनसान का भी अजब हाल है। अभी दो ही दिन हुए कि शहर भर इस कातिल के खून का प्यासा था। सब दुआ कर रहे थे कि इसके बदन को चील-कौए खायँ। वे भी इस बूढ़े की हालत देख कर रोने लगे। कातिल की बेरहमी याद न रही। सब लोग उस बूढ़े सवार से हमदर्दी करने लगे। आखिर, जब बूढ़े के होश-हवास दुरुस्त हुए, तो यों अपना किस्सा कहने लगा—

मैं कौम का पठान हूँ। तीन ऊपर सत्तर बरस का सिन हुआ। खुदा ने तीन बेटे दिये। तीनों जवान हुए और तीनों ने फाँसी पायी। एक ने एक काफ़िले पर छापा मारा। उस तरफ़ लोग बहुत थे। काफ़िलेवालों ने उसे पकड़ लिया और अपने-आप एक फाँसी बना कर लटका दिया। जिस वक़्त उसकी लाश को फाँसी पर से उतारा मैं भी वहाँ जा पहुँचा। लड़के की लाश देख कर गश की नौबत आयी मगर चुप। अगर ज़रा उन लोगों को मालूम हो जाय कि यह उसका बाप है; तो मुझे भी जीता न छोड़ें। एकाएक किसी ने उनसे कह दिया कि यह उसका बाप है। यह सुनते ही दस-पंद्रह आदमी चिपट गये और आग जला कर मुझसे कहा कि अपने लड़के की लाश को इसमें जला। भाई, जान बड़ी प्यारी होती है। इन्हीं हाथों से, जिनसे लड़के को पाला था, उसे आग में जला दिया।

'अब दूसरे लड़के का हाल सुनिए—वह रावलपिंडी में राह-राह चला जाता था कि एक आदमी ने, जो घोड़े पर सवार था, उसको चाबुक से हटाया। उसने झल्ला कर तलवार म्यान से खींची और उसके दो टुकड़े कर डाले। हाकिम ने फाँसी का हुक्म दिया। और आज का हाल तो आप लोगों ने खुद ही देखा। इस लड़की के बाप ने करार किया था कि मेरे बेटे के साथ निकाह पढ़वावेगा। लड़के ने जब देखा कि यह दूसरे की बीबी बनी, तो आपे से बाहर हो गया।'

मियाँ आज़ाद और खोजी बड़ी हसरत के साथ वहाँ से चले।

खोजी—चलिए, अब किसी दूकान से अफ़ीम खरीद लें।

आज़ाद—अजी, भाड़ में गयी आपकी अफ़ीम। आपको अफ़ीम की पड़ी है, यहाँ मारे ग़म के खाना-पीना भूल गये।

खोजी—भई, रंज घड़ी दो घड़ी का है। यह मरना-जीना तो लगा ही रहता है।

दोनों आदमी बातें करते हुए जा रहे थे, तो क्या देखते हैं कि एक दूकान पर अफ़ीम झड़ाझड़ बिक रही है। खोजी की बाँछें खिल गयीं, मुरादें मिल गयीं। जाते ही एक चवन्नी दूकान पर फेंकी। अफ़ीम ली, लेते ही घोली और घोलते ही गट-गट पी गये।

खोजी—अब आँखें खुलीं।

आजाद—यों नहीं कहते कि अब आँखें बंद हुईं!

खोजी—क्यों उस्ताद, जो हम हाकिम हो जायँ, तो बड़ा मजा आये। मेरा कोई अफ़ीमची भाई किसी को क़त्ल भी कर आये, तो बेदाग़ छोड़ दूँ।

आज़ाद—तो फिर निकाले भी जल्द जाइए।

दोनों आदमी यही बातें करते हुए एक सराय में जा पहुँचे। देखा, एक बूढ़ा हिंदू जमीन पर बैठा चिलम पी रहा है।

आजाद—राम-राम भई, राम-राम!

बूढ़ा—सलाम साहब, सलाम। सुथना पहने हो और राम-राम कहते हो?

आजाद—अरे भाई, राम और ख़ुदा एक ही तो हैं। समझ का फेर है। कहाँ जाओगे?

बूढ़ा—गाँव यहाँ से पाँच कोसी है। पहर रात का घर से चलेन, नहावा, पूजन कीन, चबेना बाँधा और ठंडे-ठंडे चले आयन। आज कचहरी माँ एक तारीख हती। साँझ ले फिर चले जाब। जमींदारी माँ अब कचहरी धावे के सेवाय और का रहिगा?

आज़ाद—तो जमींदार हो? कितने गाँव हैं तुम्हारे?

बूढ़ा—ऐ हजूर, अब यो समझो, कोइ दुइ हजार खरच-बरच करके बच रहत हैं।

आजाद ने दिल में सोचा कि दो हज़ार साल की आमदनी और बदन पर ढंग के कपड़े तक नहीं! गाढ़े की मिरज़ई पहने हुए है; इसकी कंजूसी का भी ठिकाना है? यह सोचते हुए दूसरी तरफ़ चले, तो देखा, एक क़ालीन बड़े तकल्लुफ़ से बिछा है और एक साहब बड़े ठाट से बैठे हुए हैं। जामदानी का कुरता, अद्धी का अँगरखा, तीन रुपये की सफ़ेद टोपी, दो-ढाई सौ की जेबघड़ी, उसकी सोने की ज़ंजीर गले में पड़ी हुई। क़रीब ही चार-पाँच भले आदमी और बैठे हुए हैं और दोसेरा तंबाकू उड़ा रहे हैं। आज़ाद ने पूछा, तो मालूम हुआ, आप भी एक जमींदार हैं। पाँच-छह कोस पर एक क़सबे में मकान है। कुछ 'सीर' भी होती है। जमींदारी से सौ रुपए माहवार की बचत होती है।

आज़ाद—यहाँ किस ग़रज से आना हुआ।

रईस—कुछ रुपये क़र्ज लेना था, मगर महाजन दो रुपये सैकड़ा सूद माँगता है।

गया आज़ाद ने ज़मींदार साहब के मुंशी को इशारे से बुलाया, अलग ले जा कर यों बातें करने लगे—

आज़ाद—हजरत, हमारे ज़रिये से रुपया लीजिए। दस हजार, बीस हजार, जितना कहिए; मगर जागीर कुर्क करा लेंगे और चार रुपये सैकड़ा सूद लेंगे।

मुंशी—वाह! नेकी और पूछ-पूछ! अगर आप चौदह हजार भी दिलवा दें, तो बड़ा एहसान हो। और, सूद चाहे पाँच रुपए सैकड़ा लीजिए तो कोई परवा नहीं। सूद देने में तो हम आँधी हैं।

आज़ाद—बस, मिल चुका। यह सूद की क्या बात-चीत है भला? हम कहीं सूद लिया करते हैं? मुनाफ़ा नहीं कहते?

मुंशी—अच्छा हुजूर, मुनाफ़ा सही।

आज़ाद—अच्छा, यह बताओ कि जब सौ रुपये महीना बच रहता है, तो फिर चौदह हजार कर्ज क्यों लेते हैं?

मुंशी—जनाब, आपसे तो कोई परदा नहीं। सौ पाते हैं, और पाँच सौ उड़ाते हैं। अच्छा खाना खाते हैं, बारीक और कीमती कपड़े पहनते हैं, यह सब आये कहाँ से? बंक से लिया, महाजनों से लिया; सब चौदह हजार के पेटे में आ गये। अब कोई टका नहीं देता।

आज़ाद दिल में उस बूढ़े ठाकुर का इन रईस साहब से मुकाबिला करने लगे। वह भी ज़मींदार, यह भी ज़मींदार; उनकी आमदनी डेढ़ सौ से ज्यादा, इनकी मुश्किल से सौ; वह गाढ़े की धोती और गाढ़े की मिरज़ई पर खुश हैं और यह शरबती और जामदानी फड़काते हैं। वह ढाई तल्ले का चमरौधा जूता पहनते हैं, यहाँ पाँच रुपया की सलीमशाही जूतियाँ। वह पालक और चने की रोटियाँ खाते हैं और यह दो वक्त शीरमाल और मुर्ग़पुलाव पर हाथ लगाते हैं, वह टके गज की चाल चलते हैं, यहाँ हवा के घोड़ों पर सवार। दोनों पर फटकार! वह कंजूस और यह फ़ज़ूलखर्च। वह रुपये को दफ़न किये हुए, यह रुपये लुटाते फिरते हैं। वह खा नहीं सकते, तो यह बचा नहीं सकते।

शाम को दोनों आदमी रेल पर सवार हो कर पूना जा पहुँचे।

३३

रेल से उतर कर दोनों, आदमियों ने एक सराय में डेरा जमाया और शहर की सैर को निकले। यों तो यहाँ की सभी चीजें भली मालूम होती थीं, लेकिन सबसे ज़्यादा जो बात उन्हें पसंद आयी, वह यह थी कि औरते बिला चादर और घूँघट के सड़कों पर चलती-फिरती थीं। शरीफ़जादियाँ बेहिजाब नक़ाब उठाये; मगर आँखों में हया और शर्म छिपी हुई।

खोजी—क्यों मियाँ, यह तो कुछ अजब रस्म है? ये औरतें मुँह खोले फिरती हैं। शर्म और हया सब भून खायी। वल्लाह, क्या आजादी है!

आजाद—आप खासे अहमक़ हैं। अरब में, अजम में अफ़गानिस्तान में, मिस्र में, तुर्किस्तान में, कहीं भी परदा है? परदा तो आँख का होता है। कहीं चादर हया सिखाती है? जहाँ घूँघट काढ़ा, और नज़र पड़ने लगी।

खोजी—अजी, मैं दुनिया की बात नहीं चलाता। हमारे यहाँ तो कहारियाँ और मालिनें तक परदा करती हैं, न कि शरीफ़जादियाँ ही! एक कदम तो बेपरदे के जाती नहीं।

आजाद—अरे मियाँ, नक़ाब को शर्म से क्या सरोकार? आँख की हया से बढ़ कर कोई परदा ही नहीं; हमारे मुल्क में तो परदे का नाम नहीं; मगर हिंदुस्तान का तो बाबा आदम ही निराला है।

खोजी—आपका मुल्क कौन? जरा आपके मुल्क का नाम तो सुनूँ।

आजाद—कश्मीर। वही कश्मीर जिसे शायरों ने दुनिया का फ़िरदौस माना है। वहाँ हिंदू-मुसलमान औरतें बुरक़ा ओढ़ कर निकलती हैं; मगर यह नहीं कि औरते घर के बाहर कदम ही न रखें। यह रोग तो हिंदुस्तान ही में फैला है। हम तो जब तुर्की से आयँगे, तो यहीं बिस्तर जमायेंगे और हुस्नआरा को साथ ले कर आजादी के साथ हवा खायँगे।

खोजी—यार, बात तो अच्छी है, मगर मेरी बीबी तो इस लायक ही नहीं कि हवा खिलाने ले जाऊँ। कौन अपने ऊपर तालियाँ बजवाये? फिर अब तो बूढ़ी हुई और रंग भी ऐसा साफ़ नहीं।

आजाद—तो इसमें शरम की कौन सी बात है? आप उनके काले मुँह से झेंपते क्यों हैं?

खोजी—जब हब्श जाऊँगा, तो वहाँ हवा खिलाऊँगा। आप नई रोशनी के लोग हैं। आपकी हुस्नआरा आपसे भी बढ़ी हुई, जो देखे फड़क जाय कि क्या चाँद-सूरज की जोड़ी है। ऐसी शक्ल-सूरत हो, तो हवा खिलाने में कोई मुज़ायका नहीं। हम अब क्या जोश दिखायें, न वह उमंग है, न वह तरंग।

आजाद—हम कहते हैं, बुआ जाफ़रान को ब्याह लो और एक टट्टू ले दो। बस, इसी तरह वह भी बाज़ारों में हवा खायँ।

खोजी—(कान पकड़ कर) या खुदा, बचाइयो। पीच पी, हजार निआमत खाईं। मारे चपतों के खोपड़ी गंजी कर दी थी। क्या वह भूल गया?

आजाद—यहाँ से बंबई भी तो करीब है।

खोजी—अरे ग़जब! क्या जहाज पर बैठना होगा? तो भई, मेरे लिए अफ़ीम ले दो।

पूने से बंबई तक दिन में कई गाड़ियाँ जाती थीं। दोनों आदमियों ने सराय में पहुँच कर खाना खाया और बंबई रवाना हुए। शाम हो गयी थी। एक होटल में जा कर ठहरे। आज़ाद तो दिन भर के थके हुए थे, लेटते ही खर्राटे लेने लगे। खोजी अफीमची आदमी, नींद कहाँ? इसी फ़िक्र में बैठे हुए थे कि नींद को क्योंकर बुलाऊँ। इतने में क्या देखते हैं कि एक लंबी-तड़ंगी, पँचहत्थी औरत चमकती-दमकती चली आती है। पूरे सात फुट का कद, न जौ-भर कम, न जौ-भर ज़्यादा। धानी चादर ओढ़े, इठला-इठला कर चलती हुई मियाँ खोजी के पास आ कर खड़ी हो गयी। खोजी ने उसकी तरफ़ नज़र डाली, तो उसने एक तीखी चितवन से उनको देखा और आगे चली। आपको शरारत जो सूझी तो सीटी बजाने लगे। सीटी की आवाज सुनते ही वह इनकी तरफ़ झुक पड़ी और छमाछम करती हुई कमरे में चली आयी। अब मियाँ खोजी के हवास पैतरे हुए कि अगर आजाद की आँख खुल गयी, तो ले ही डालेंगे; और जो कहीं रीझ गये, तो हमारी खैरियत नहीं। हम बस, नीबू और नोन चाट कर रह जायँगे। इशारे से कहा—जरी आहिस्ता बोलो।

औरत—अरे वाह मियाँ! अच्छे मिले।

खोजी—मियाँ आजाद सोये हुए हैं।

औरत—इनका बड़ा लिहाज़ करते हो; क्या बाप हैं तुम्हारे?

खोजी—खुदा के वास्ते चुप भी रहो।

औरत—चलो, हम-तुम दूसरी कोठरी में चल कर बैठें।

दोनों पास की एक कोठरी में जा बैठे। औरत ने अपना नाम केसर बतलाया और बोली—अल्लाह जानता है, तुम पर मेरी जान जाती है। खुदा की कसम, क्या हाथ-पाँव पाये हैं कि जी चाहता है, चूम लूँ। मगर दाढ़ी मुड़वा डालो।

खोजी—(अकड़ कर) अभी क्या, जवानी में देखना हमको!

क्या खूब अभी जवानी शायद आनेवाली है। कुछ ऊपर पचास का सिन हुआ, और आप अभी लड़के ही बने हुए हैं। उस औरत ने आपको उँगलियों पर नचाना शुरू किया, लेकिन आप समझे कि सचमुच रीझ ही गयी और भी बफलने लगे।

औरत—डील-डौल कितना प्यारा है कि जी खुश हो गया। मगर दाढ़ी मुड़वा डालो।

खोजी—अगर मैं कसरत करूँ, तो अच्छे-अच्छे पहलवानों को लड़ा दूँ।

औरत—जरा कान तो फटफटा लो, शाबाश !

खोजी—एक बात कहूँ, बुरा तो न मानोगी ?

औरत—बुरा मानूँगी, तो जरा खोपड़ी सहला दूँगी

खोजी—जाँबख्शी करो, तो कहूँ ।

औरत—(चपत लगा कर) क्या कहता है, कह ।

खोजी—भई, यह धौल-धप्पा शरीफ़ों में जायज नहीं ।

औरत—तुझ मुए को कौन निगोड़ी शरीफ समझती है ।

एक चपत और पड़ी । खोजी ने त्योरियाँ बदल कर कहा—भई, आदत मुझे पसंद नहीं । मुझे भी ग़ुस्सा आ जायगा ।

औरत—आँखें क्या नीली-पीली करता है ? फोड़ दूँ दोनों आँखें ?

खोजी—अब हमारा मतलब तो इस झंझट में खब्त हुआ जाता है । अब तो बताओ, कुछ माँगें, तो दोगी ?

औरत—हाँ, क्यों नहीं, एक लप्पड़ इधर और दूसरा उधर । क्या माँगते हो ?

खोजी—कहना यह है कि...मगर कहते हुए दिल काँपता है ।

औरत—अब मैं तुमको ठीक न बनाऊँ कहीं ?

खोजी—तुम्हारे साथ ब्याह करने को जी चाहता है ।

औरत—ऐ, अभी तुम बच्चे हो । दूध के दाँत तक तो टूटे नहीं । ब्याह क्या करोगे भला ?

खोजी—वाह-वाह ! मेरे दो बच्चे खेलते हैं । अभी तक इनके नजदीक लौंडे ही हैं हम ।

औरत—अच्छा, कुछ कमाई-धमाई तो निकाल, और दाढ़ी मुड़वा ।

खोजी—(दस रुपये दे कर) लो, यह हाज़िर है ।

औरत—देखूँ । ऊँह, हाथी के मुँह में जीरा !

खोजी—लो, यह पाँच और लो । अजी, मैं तुमको बेगम बना कर रखूँगा ।

औरत—अच्छा, एक शर्त से शादी करूँगी । तड़के उठ के पहले सात बार सलाम करना और मैं सात चपतें लगाऊँगी ।

खोजी—अजी, बल्कि और दस ।

औरत—अच्छा, इसी बात पर कुछ और निकालो ।

खोजी—लो, यह पाँच और लो । तुम्हारे दम के लिए सब कुछ हाजिर है ।

औरत ने झट से मियाँ खोजी को गोद में उठा लिया और बगल में दबा कर ले चली, तो खोजी बहुत चकराये । लाख हाथ-पाँव मारे, मगर उसने जो दबाया, तो इस तरह ले चली, जैसे कोई चिड़ीमार जानवरों को फड़फड़ाते हुए ले चले । अब सारा जमाना देख रहा है कि खोजी फड़कते हुए जाते हैं और वह औरत छम-छम करती चली जाती है ।

खोजी—अब छोड़ती है, या नहीं ?

औरत—अब उम्र-भर तो छोड़ने का नाम न लूँगी। हम भलेमानसों की बहू-बेटियाँ छोड़ देना क्या जानें। बस, एक के सिर हो रहीं। भागे कहाँ जाते हो मियाँ।

खोजी—मैं कुछ कैदी हूँ?

औरत—(चपत लगा कर) और नहीं, कौन है तू? अब मैं कहीं जाने भी दूँगी?

खोजी पीछे हटने लगे, तो उसने पट्टे पकड़ कर खूब बेभाव की लगायी। अब यह झल्लाये और गुल मचाया कि कोई है? लाना क़रौली? बहुत से तमाशाई खड़े हँस रहे थे।

एक—क्या है मियाँ? यह घर पकड़ कैसी?

औरत—आप कोई काज़ी हैं? यह हमारे मियाँ हैं; हम चाहे चपतियायें चाहे पीटें। किसी को क्या?

दूसरा—मेहरारू गर्दन दाबे उठाये लिये जात है, वह करौली निकारत है।

खोजी—बुरे फँसे! यारो, ज़रा मियाँ आज़ाद को सराय से बुलाना।

औरत ने फिर खोजी को गोद में उठाया और मशक की तरह पीठ पर रख कर 'मसक दरियाव, ठंडा पानी' कहती हुई ले चली।

एक आदमी—कैसे मर्द हो जी! औरत से जीत नहीं पाते? बस, इज्ज़त डुबो दी बिलकुल।

खोजी—अजी, इस औरत पर शैतान की फटकार। यह तो मरदों के कान काटती है।

इतने में मियाँ आज़ाद की नींद खुली, तो खोजी ग़ायब। बाहर निकले, तो देखा खोजी को एक औरत दबाये खड़ी है। ललकार कर कहा—तू कौन है! उन्हें छोड़ती क्यों नहीं?

औरत ने खोजी को छोड़ दिया और सलाम करके बोली—हुज़ूर, मेरा इनाम हुआ। मैं बहुरुपिया हूँ।

दूसरे दिन खोजी मियाँ आज़ाद के साथ शहर की सैर करने चले, तो शहर भर के लौंडे-लहाड़िये साथ, पीछे-पीछे तालियाँ बजाते जाते हैं। एक बोला—कहो चच्चा, बीवी ने चाँद गंजी कर दी न? हत् तेरे की! दूसरा बोला—कहो उस्ताद, खोपड़ी का क्या रंग है?

बेचारे खोजी को रास्ता चलना मुश्किल हो गया। दो-चार आदमियों ने बहुरुपिये की तारीफ़ की, तो खोजी जल-भुन कर खाक हो गये। अब किसी से न बोलते हैं, न चालते। दुम दबाये, डग बढ़ाये, गर्दन, झुकाये पत्तातोड़ भाग रहे हैं। मारे खुदा-खुदा करके दोपहर को फिर सराय में आये। नीम की ठंडी-ठंडी छाँह में लेट गये, तो एक भठियारी ने मुसकिरा के कहा—गाज पडे ऐसी औरत पर, जो मियाँ को गोद में उठाये और बाज़ार भर में नचाये। ग़रज़ सराय की भठियारियों ने खोजी को ऐसा उँगलियों पर नचाया कि खुदा की पनाह! ऐसे झेंपे कि करौली तक भूल गये।

इतने में क्या देखते हैं कि एक लम्बे डील-डौल का खूबसूरत जवान तमंचा

क़मर से लगाये, ऊदी पगड़ी सिर पर जमाये, बाँकी-तिरछी छवि दिखाता हुआ अकड़ता चला आता है। भठियारियाँ छिप-छिप के झाँकने लगीं। समझीं कि मुसाफिर है, बोलीं—मियाँ, इधर आओ, यहाँ बिस्तर जमाओ। मियाँ मुसाफिर, देखो, कैसा साफ-सुथरा मकान है! पकरिया की ठंडी-ठंडी छाँह है, जरा तो तकलीफ़ होगी नहीं। सिपाही बोला—हमें बाजार से कुछ सौदा खरीदना है। कोई हमारे साथ चले, तो सौदा खरीद कर हम आ जायँ। एक भठियारी बोली—चलिए, हम चलते हैं। दूसरी बोली—लौंडी हाजिर है। सिपाही ने कहा—मैं किसी परायी औरत को नहीं ले जाना चाहता। कोई पढ़ा-लिखा मर्द चले, तो पाँच रुपये दे। मियाँ खोजी के कान में जो भनक पड़ी, तो कुलबुला कर उठ बैठे और कहा—मैं चलता हूँ, मगर पाँचों नक्द गिनवा दीजिए। मैं अलसेट से डरता हूँ। सिपाही ने झट से पाँचों गिन दिये। रुपये तो खोजी ने टेंट में रखे और सिपाही के साथ चले। रास्ते में जो इन्हें देखता है, क़हक़हा लगाता है—बचा की खोपड़ी जानती होगी, छठी का दूध याद आ गया होगा! जब चारों ओर से बौछारें पड़ने लगीं तो खोजी बहुत ही झल्लाये और गुल मचा कर एक-एक को डाँटने लगे। चलते-चलते एक अफीम की दूकान पर पहुँचे।

सिपाही—कहो भई जवान, है शौक? पिलवाऊँ?

खोजी—अजी, मैं तो इस पर आशिक़ हूँ।

सिपाही ने मियाँ खोजी को खूब अफीम पिलायी। जब खूब सरूर गँठे तो सिपाही ने उनको साथ लिया और चला। बातें होने लगीं। खोजी बोले—भई, अफ़ीम पिलायी है, तो मिठाई भी खिलवाओ। एहसान करे, तो पूरा।

सिपाही—अजी, अभी लो। ये चार गंडे की पँचमेल मिठाई हलवाई की दूकान से लाओ।

हलवाई की दूकान से खोजी ने लड़-लड़ के खूब मिठाई ली और झूमते हुए चले। भूख के मारे रास्ते ही में डलियाँ निकाल कर चखनी शुरू कर दीं। सिपाही कनखियों से देखता जाता था; मगर आँख चुरा लेता था। आखिर दोनों आदमी एक बजाज की दूकान पर पहुँचे। सिपाही ने खोजी की तरफ़ इशारा करके कहा—इनके अँगरखे के बराबर जामदानी निकाल दीजिए।

बज़ाज़—हुजूर, अपने अँगरखे के लिए लें, तो कुछ हमे भी मिल रहे। इनका तो अँगरखा और पाजामा सब गज भर में तैयार है।

खोजी—निकालो, जामदानी निकालो। बहुत बातें न बनाओ। अभी एक धक्का दूँ, तो पचास लुढकनियाँ खाओ।

बज़ाज—लीजिए, क्या जामदानी है। बहुत बढ़िया! मोल तोल दस रुपये गज। मगर सात रुपये गज से कौड़ी कम न होगी।

सिपाही—भई, हम तो पाँच रुपये के दाम देंगे।

बज़ाज—अब तकरार कौन करे। आप छह के दाम दे दें।

सिपाही—अच्छा, दो गज उतार दो।

सिपाही ने बजाज से सब मिला कर कोई पचीस रुपये का कपड़ा लिया और गट्ठा बाँध कर उठ खड़ा हुआ।

बज़ाज—रुपये ?

सिपाही—अभी घर से आकर देंगे ? जरा कपड़े पसंद तो करा लाये। यह हमारा साला बैठा है, हम अभी आये।

वह तो ले-दे कर चल दिया। खोजी अकेले रह गये। जब बहुत देर हो गयी, तो बजाज़ ने गर्दन नापी—कहाँ चले आप ! कहाँ, चले कहाँ ?

खोजी—हम क्या किसी के गुलाम हैं ?

बजाज—गुलाम नहीं हो तो और हो कौन ? तुम्हारे बहनोई तुमको बिठा कर कपड़ा ले गये हैं।

खोजी पीनक से चौंके थे। सिपाही और बजाज में जब बातें हो रही थीं तब वह पीनक में थे। झल्ला कर बोले—अबे किसका बहनोई ? और कौन साला ? कुछ बाही हुआ है ?

इतने में एक आदमी ने आ कर खोजी से कहा—तुम्हारे बहनोई तुम्हें यह खत दे गये हैं। खोजी ने खोल कर पढ़ा तो लिखा था—

'हत् तेरे की, क्यों ? खा गया न झाँसा ? देख, अबकी फिर फाँसा। तब की बीवी बनके चपतियाया, अब की बहनोई बनके झाँसा दिया। और अफ़ीम खाओगे ?'

खोजी 'अरे !' करके रह गये। वाह रे बहुरुपिये, अच्छा घनचक्कर बनाया। ख़ैर, और तो जो हुआ, वह हुआ, अब यहाँ से छुटकारा कैसे हो। बज़ाज इस दम टुटरूँ-टूँ, और करौली पास नहीं। मगर एक दफ़े रोब जमाने की ठानी। दूकान के नीचे उतर कर बोले—इस फेर में भी न रहना ! मैंने बड़े-बड़ों की गर्दनें ढीली कर दी हैं।

बजाज़—यह रोब किसी और पर जमाइएगा। जब तक आप के बहनोई न आयेंगे, दूकान से हिलने न दूँगा।

बारे थोड़ी ही देर में एक आदमी ने आ कर बजाज को पचीस रुपये दिये और कहा—अब इनको छोड़ दीजिए।

३४

इधर तो ये बातें हो रही थीं, उधर आज़ाद से एक आदमी ने आकर कहा—जनाब, आज मेला देखने न चलिएगा ? वह-वह सूरतें देखने में आती हैं कि देखता ही रह जाय।

नाज से पायँचे उठाये हुए, शर्म से जिस्म को चुराये हुए।
नशए-बादए शबाब से चूर, चाल मस्ताना, हुस्न पर मग़रूर।
सैकड़ों बल कमर को देती हुई, जाने ताऊस कब्क लेती हुई।

चलिए और मियाँ खोजी को साथ लीजिए। आज़ाद रँगीले थे ही, चट तैयार हो गये। सज-धज कर अकड़ते हुए चले। कोई पचास क़दम चले होंगे कि एक झरोखे से आवाज आयी—

ख़ुदा जाने यह आराइश करेगी क़त्ल किस-किसको;
तलब होता है शानः आइने को याद करते हैं।

मियाँ आज़ाद ने जो ऊपर नज़र की, तो झरोखे का दरवाज़ा खोजी की आँख की तरह बंद हो गया। आजाद हैरान कि ख़ुदा, यह माजरा क्या है ? यह जादू था, छलावा था, आखिर था क्या ? आजाद के साथी ने यह रंग देखा, तो आहिस्ते से कहा—हजरत, इस फेर में न पड़िएगा।

इतने में देखा कि वह नाजनीन फिर नक़ाब उठाये झरोखे पर आ खड़ी हुई और अपनी महरी से बोली—फीनस तैयार कराओ, हम मेले जायँगे।

आजाद कुछ कहनेवाले ही थे कि ऊपर से एक काग़ज़ नीचे आया। आज़ाद ने दौड़ कर उठाया, तो मोटे कलम से लिखा था—

'दिल्लगी करती हैं परियाँ मेरे दीवाने से'।

आज़ाद पढ़ते ही उछल पड़े। यह शेर पढ़ा—

'हम ऐसे हो गये अल्लाहो-अकबर ! ऐ तेरी क़ुदरत;
हमारे नाम से अब हाथ वह कानों पै धरते हैं।'

इतने में एक महरी अंदर से आयी और मुसकिरा कर मियाँ आजाद को इशारे से बुलाया। आज़ाद खुश-खुश महताबी पर पहुँचे, तो दिल बाग़ बाग़ हो गया। देखा, एक हसीना बड़े ठाट-बाट से एक कुर्सी पर बैठी है। मियाँ आजाद को कुर्सी पर बैठने का इशारा किया और बोली—मालूम होता है, आप चोट खाये हैं; किसी के जुल्फ में दिल फँसा है—

खुलते हैं कुछ इश्तियाक के तौर;
रुख मेरी तरफ, नजर कहीं और।

आजाद ने देखा तो इस नाजनीन की शक्ल व सूरत हुस्नआरा से मिलती थी।

वही सूरत, वही गुलाब सा चेहरा ! वही नशीली आँखें ! बाल बराबर भी फ़र्क नहीं ! बोले—बरसों इस कूचे की सैर की; मगर अब दिल फँसा चुके ।

हसीना—तो बिसमिल्लाह, जाइए ।

आजाद—जैसी हुजूर की मरज़ी ।

हसीना—वाह री, बददिमाग़ी ! कहिए, तो आपका कच्चा चिट्ठा कह चलूँ ? मियाँ आज़ाद आप ही का नाम है न ? हुस्नआरा से आप ही की शादी होनेवाली है न ?

आज़ाद—ये बातें आपको कैसे मालूम हुईं ?

हसीना—क्यों, क्या पते की कही ! अब बता ही दूँ ? हुस्नआरा मेरी छोटी चचाजाद बहन है । कभी-कभी खत आ जाता है । उसने आपकी तसवीर भेजी है और लिखा है कि उन्हें बंबई में रोक लेना । अब आप हमारे यहाँ ठहरें । मैं आपको आज़माती थी कि देखूँ, कितने पानी में हैं । अब मुझे यक़ीन आ गया कि हुस्नआरा से आपको सच्ची मुहब्बत है ।

आज़ाद—तो फिर मैं यहीं उठ आऊँ ?

हसीना—ज़रूर ।

आज़ाद—शायद आपके घर में किसी को नागवार गुज़रे ?

हसीना—वाह, आप खूब जानते हैं कि कोई शरीफ़ज़ादी किसी अजनबी आदमी को इस तरह बेधड़क अपने यहाँ न बुलायेगी । क्या मैं नहीं जानती कि तुम्हारे भाई साहब किसी ग़ैर आदमी को बैठे देखेंगे, तो उनकी आँखों से खून टपकने लगेगा ? मगर वह तो खुद इस वक्त तुम्हारी तलाश में निकले हैं । बहुत देर से गये हुए हैं, आते ही होंगे । अब आप मेरे आदमी को भेज दीजिए । आपका असबाब ले आये ।

आजाद ने खोजी के नाम यह रुक्का लिखा—

ख्वाजा साहब,

असबाब ले कर इस आदमी के साथ चले आइए । यहाँ इत्तिफ़ाक से हुस्नआरा की बहन मिल गयीं । यार, हम-तुम दोनों है किस्मत के धनी । यहाँ अफ़ीम की दूकान भी क़रीब ही है ।

तुम्हारा
आजाद ।'

३५

खोजी ने दिल मे ठान ली कि अब जो आयेगा, उसको खूब गौर से देखूँगा। अब की चकमा चल जाय, तो टाँग की राह निकल जाऊँ। दो दफ़े क्या जानें, क्या बात हो गयी कि वह चकमा दे गया। उड़ती चिड़िया पकड़नेवाले हैं। हम भी अगर यहाँ रहते होते, तो उस मरदूद बहुरुपिये को चचा ही बना कर छोड़ते

इतने में सामने एकाएक एक घसियारा घास का गट्ठा सिर पर लादे, पसीने मे तर आ खड़ा हुआ और खोजी से बोला—हुजूर, घास तो नहीं चाहिए?

खोजी—(खूब गौर से देख कर) चल, अपना काम कर। हमें घास-वास कुछ नहीं चाहिए। घास कोई और खाते होंगे।

घसियारा—ले लीजिए हुजूर, हरी हरी दूब है।

खोजी—चल बे चल, हम पहचान गये। हमसे बहुत चकमेबाजी न करना बचा। अब की पलेथन ही निकाल डालूँगा। तेरे बहुरुपिये की दुम में रस्सा।

इत्तिफ़ाक से घसियारा बहरा था। वह समझा, बुलाते हैं। इनकी तरफ आने लगा। तब तो मियाँ खोजी गुस्सा जब्त न कर सके और चिल्ला उठे—ओ गीदी, बस, आगे न बढ़ना; नहीं तो सिर धड़ से जुदा होगा। यह कह कर लपके और गट्ठा पकड़ कर चाहा कि घसियारे को चपत लगावें। उसने जो छुड़ाने के लिए जोर किया, तो मियाँ खोजी मुँह के बल ज़मीन पर आ रहे और गट्ठा उनके ऊपर गिर पड़ा। तब आप गट्ठे के नीचे से गुर्राने लगे—अबे ओ गीदी, इतनी करौलियाँ भोंकूँगा कि छठी का दूध याद आ जायगा। बदमाश ने नाकों दम कर दिया। बारे बड़ी मुश्किल से आप गट्ठे के नीचे से निकले और मुँह फुलाये बैठे थे कि आजाद का आदमी आ कर बोला—चलिए, आपको मियाँ आजाद ने बुलाया है।

खोजी—किससे कहता है? कंबख्त अब की सँदेसिया बन कर आया! तब की घसियारा बना था। पहले औरत का भेस बदला! फिर सिपाही बना। चल, भाग।

आदमी—रुक्क़ा तो पढ़ लीजिए।

खोजी—मैं जलती-जलती लकड़ी से दाग दूँगा, समझे? मुझे कोई लौंडा मुकरेर किया है? तेरे जैसे बहुरुपिये यहाँ जेब मे पड़े रहते हैं।

आदमी ने आ कर आज़ाद से सारा हाल कहा—हुजूर, वह तो कुछ झल्लाये से मालूम होते हैं। मैं लाख-लाख कहा किया, उन्होंने एक तो सुनी नहीं। बस, दूर ही दूर से गुर्राते रहे।

आजाद—खत का जवाब लाये?

आदमी—गरीबपरवर, कहता जाता हूँ कि करीब फटकने तो दिया नहीं जवाब किससे लाता?

ये बातें हो ही रही थीं कि उस हसीना के शौहर आ पहुँचे और कहने लगे—शहर भर घूम आया, सैकड़ों चक्कर लगाये, मगर मियाँ आजाद का कहीं पता न चला। सराय में गया, तो वहाँ खबर मिली कि आये हैं। एक साहब बैठे हुए थे, उनसे पूछा तो बड़ी दिल्लगी हुई। ज्यों ही मै करीब गया, तो वह कुलबुला कर उठ खड़े हुए—कौन? आप कौन? मैंने कहा—यहाँ मियाँ आजाद नामी कोई साहब तशरीफ लाये हैं? बोले—फिर आपसे वास्ता? मैंने कहा—साहब, आप तो काटे खाते हैं। तो मुझे ग़ौर से देख कर बोले—इस बहुरुपिये ने तो मेरी नाक में दम कर दिया। आज भले-मानस की सूरत बना कर आये हैं।

बेगम—जरी ऊपर आओ देखो, हमने मियाँ आज़ाद को घर बैठे बुलवा लिया। न कहोगे।

आजाद—आदाब बजा लाता हूँ।

मिरज़ा—हजरत, आपको देखने के लिए आँखें तरसती थीं।

आजाद—मेरी वजह से आपको बड़ी तकलीफ हुई।

मिरजा—जनाब, इसका जिक्र न कीजिए। आपसे मिलने की मुद्दत से तमन्ना थी।

उधर मियाँ खोजी अपने दिल में सोचे कि बहुरुपिये को कोई ऐसा चमका देना चाहिए कि वह भी उम्र भर याद करे। कई घंटे तक इसी फ़िक्र में गोते खाते रहे। इतने में मिरजा साहब का आदमी फिर आया। खोजी ने उससे खत ले कर पढ़ा, तो लिखा था—आप इस आदमी के साथ चले आइए, वर्ना बहुरुपिया आपको फिर धोखा देगा। भाई, कहा मानो, जल्द आओ। खोजी ने आजाद की लिखावट पहचानी, तो असबाब वगैरह समेट कर खिदमतगार के सिपुर्द किया और कहा—तू जा, हम थोड़ी देर में आते हैं। खिदमतगार तो असबाब ले कर उधर चला, इधर आप बहुरुपिये के मकान का पता पूछते हुए जा पहुँचे। इत्तिफ़ाक से बहुरुपिया घर में न था, और उसकी बीबी अपने मैके भेजने के लिए कपड़ों का एक पार्सल बना रही थी। तीस रुपये की एक गड्डी भी उसमें रख दी थी। पार्सल तैयार हो चुका, तो लौंडी से बोली—देख, कोई पढ़ा-लिखा आदमी इधर से निकले, तो इस पार्सल पर पता लिखवा लेना। लौंडी राह देख रही थी कि मियाँ खोजी जा निकले।

खोजी—क्यों नेकबख्त, जरा पानी पिला दोगी?

लौंडी यह सुनते ही फूल गयी। खोजी की बड़ी खातिरदारी की, पान खिलाया, हुक्का पिलाया और अंदर से पार्सल ला कर बोली—मियाँ, इस पर पता तो लिख दो।

खोजी—अच्छा, लिख दूँगा। कहाँ जायगा? किसके नाम है? कौन भेजता है?

लौंडी—मैं बीबी से सब हाल पूछ आऊँ, बतलाऊँ।

खोजी—अच्छी बात है, जल्द आना।

लौंडी दौड़ कर पूछ आयी और पता-ठिकाना बताने लगी।

खोजी चकमा देने तो गये ही थे, झट पार्सल पर अपना लखनऊ का पता लिख दिया और अपनी राह ली। लौंडी ने फ़ौरन डाकखाने में पार्सल दिया और

रजिस्ट्री कराके चलती हुई। थोड़ी देर के बाद बहुरूपिया जो घर में घुसा, तो बीबी ने कहा—तुम भी बड़े भुलक्कड़ हो। पार्सल पर पता तो लिखा ही न था। हमने लिखवा कर भेज दिया।

बहुरूपिया—देखूँ, रसीद कहाँ है? (रसीद पढ़ कर) ओफ़! मार डाला। बस, ग़ज़ब ही हो गया।

बीबी—खैर तो है?

बहुरूपिया—तुमसे क्या बताऊँ? यह वही मर्द है, जिससे मैंने कई रुपये ऐंठे थे। बड़ा चकमा दिया।

३६

मियाँ आज़ाद मिरजा साहब के साथ जहाज की फ़िक्र में गये। इधर खोजी ने अफीम की चुस्की लगायी और पलँग पर दराज़ हुए। जैनब लौंडी जो बाहर आयी, तो हज़रत को पीनक में देख कर खूब खिलखिलायी और बेगम से जाकर बोली— बीबी, जरी परदे के पास आइए, तो लोट-लोट जाइए। मुआ खोजी अफ़ीम खाये औंधे मुँह पड़ा हुआ है। जरी आइए तो सही। बेगम ने परदे के पास से झाँका, तो उनको एक दिल्लगी सूझी। झप से एक बत्ती बनायी और जैनब से कहा कि ले, चुपके से इनकी नाक में बत्ती कर। जैनब एक ही शरीर; बिस की गाँठ। वह जा कर बत्ती में तीता मिर्च लगा लायी और खोजी की खटिया के नीचे घुस कर मियाँ खोजी की नाक में आधी बत्ती दाखिल ही तो कर दी। उफ! इस वक्त मारे हँसी के लिखा नहीं जाता। खोजी जो कुल बुला कर उठे, तो आःछीं, छीं-छीं, ओ गेद—अःछीः। ओ गीदी कहने को थे कि छींक आ गयी, और बिगड़े। ओ ना—आछ। ओ नामाकूल कहने को थे कि छींक ने जबान बंद कर दी। इत्तिफाक से पड़ोस में एक पुराने फैशन के भले आदमी नौकरी की तलाश मे एक हाकिम के पास जानेवाले थे। वह जैसे ही सामने आये, वैसे ही खोजी ने छींका। बेचारे अंदर चले गये। पान खाया, ज़रा देर इधर-उधर टहले। फिर ड्योढ़ी तक पहुँचे कि छींक पड़ी। फिर अंदर गये। चिकनी डली खायी। रवाना होने ही को थे कि इधर आःछीं की आवाज आयी और उधर बीबी ने लौंडी दौड़ायी कि चलिए, अंदर बुलाती हैं। अंदर जाके उन्होंने जूते बदले, पानी पिया और रुख्सत हुए। बाहर आ कर इक्के पर बैठने ही को थे कि खोजी ने नाक की दुनाली बंदूक से एक और फैर दाग दी। तब तो बहुत ही झल्लाये। हत् तेरी नाक काटूँ और पाऊँ तो कान भी साफ़ कतर लूँ। मर्दक ने मिर्चों की नास ली है क्या? नाक क्या नकछींकनी की झाड़ी है। मनहूस ने घर से निकलना मुश्किल कर दिया। बीबी अंदर से बोली कि नाक ही कटे मुए की। जरी जैनब को बुला कर पूछो तो कि यह किस नकटे को बसाया है? अल्लाह करे, गधे की सवारी नसीब हो।

मियाँ बीबी पानी पी-पी कर बेचारे को कोस रहे थे। उधर खोजी का छींकते-छींकते हुलिया बिगड़ रहा था। बेगम साहबा घर के अंदर हँसी के मारे लोटी पड़ती थीं। मगर वाह री जैनब! वह दम साधे अब तक चारपाई के नीचे दबकी पड़ी थी। मगर मारे हँसी के बुरा हाल था। जब छींकों का जोर जरा कम हुआ, तो उन्होंने गुल मचाया, ओ गीदी, भला वे बहुरुपिये, निकाली न कसर तूने! अच्छा बचा, चचा ही बना कर छोड़ूँ तो सही। चारपाई से उठे, मुँह हाथ धोया। ठंडे-ठंडे पानी से खूब तरेड़े दिये; खोपड़ी पर खूब पानी डाला, तब जरा तसकीन हुई। बैठ कर बहु-

रुपिये को कोसने लगे—खुदा करे, साँप काटे मरदूद को। न जाने मेरे साथ क्या जिद पड़ गयी है। कल तेरे छप्पर पर चिनगारी न रख दी, तो कहना।

यों कोसते हुए उन्होंने सब दरवाजे बंद कर लिये कि बहुरुपिया फिर न आ जाय। अब तो जैनब चकरायी। कलेजा धक-धक करने लगा और करीब था कि चीख कर निकल भागे, मगर जब मियाँ खोजी चारपाई पर दराज हो गये और नाक पर हाथ रख लिया, तो जैनब की जान में जान आयी। चुपके से खिसकती हुई निकली और अंदर भागी।

बेगम—जाओ, फिर नाक मे बत्ती करो।

जैनब—ना बीबी, अब मैं नहीं जाने की। सिड़ी-सौदाई आदमी के मुँह कौन लगे।

जैनब का देवर दस बरस का छोकड़ा बड़ा ही शरीर था। नस-नस में शरारत भरी हुई थी। कमरे में जाके झाँका, तो देखा, हजरत पीनक ले रहे हैं। कुत्ता घर में बँधा था। झट उसको जंजीर से खोल जंजीर में रस्सी बाँधी और बाहर ले आ कर चारपाई के पाये मे कुत्ते को बाँध दिया। खोजी की टाँग में भी वही रस्सी बाँध दी और चंपत हो गया। कुत्ते ने जो भूँकना शुरू किया, तो खोजी चौंक कर उठे। देखते हैं तो टाँग मे रस्सी और रस्सी मे कुत्ता। अब इधर खोजी चिल्लाते हैं, उधर कुत्ता चिल्ल-पों मचाता है। जैनब दौड़ी हुई घर में से आयी। खैर तो है! क्या हुआ? अरे, तुम्हारी टाँग में कुत्ता कौन बाँध गया?

खोजी—यह उसी बहुरुपिये मर्दक का काम है, किसी और को क्या पड़ी थी?

जैनब—मगर, मुआ आया किधर से? किवाड़े तो सब बंद पड़े हुए हैं।

खोजी—यही तो मुझे भी हैरत है। मगर अब की मैंने भी नाक पर इस जोर से हाथ रखा कि बहुरुपिया भी मेरा लोहा मान गया होगा। मगर यह तो सोचो कि आया किस तरफ से?

जैनब—मियाँ, कहते डर मालूम होता है। इस जगह एक शैतान रहता है।

खोजी—शैतान! अजी नहीं, यह उस बहुरुपिये ही का काम है।

जैनब—अब तुम यों थोड़े ही मानोगे। एक दिन शैतान चारपाई उलट देगा, तो मालूम होगा।

खोजी—यह बात थी, तो अब तक हमसे क्यों न कहा भला! जान लोगी किसी की?

जैनब—मैं भी कहूँ कि बंद दरवाजे से कुत्ता आया कैसे? मेरा माथा ठनका था, मुदा बोली नहीं।

खोजी—अब आजाद आये, तो उनको आड़े हाथों लूँ। वह भूत चुड़ैल एक के भी कायल नहीं। सोयें तो मालूम हो।

खोजी तो इसी फिक्र में बैठे-बैठे पीनक लेने लगे। आजाद और मिरजा साहब आये, तो उन्हें ऊँघते देख कर दोनों हँस पड़े।

आजाद—(खोजी के कान में) क्या पहुँच गये?

खोजी ने हाँक लगायी—'बहुरुपिया, बहुरुपिया', और इस ज़ोर से आज़ाद का हाथ पकड़ लिया कि अपने हिसाब चोर को गिरफ़्तार किया था। आँखें तो हज़रत की बंद हैं, मगर बहुरुपिया बहुरुपिया गुल मचाते जाते हैं। मियाँ आज़ाद ने इस ज़ोर से झटका दिया कि हाथ छूट गया और खोजी फट से मुँह के बल ज़मीन पर आ रहे। आज़ाद ने गुल मचाया कि भागा, भागा, वह बहुरुपिया भागा जाता है। खोजी भी 'लेना-लेना' कहते हुए लपके। दस ही पाँच कदम चल कर आप हाँफ गये और बोले—'निकल गया, निकल गया।' मैंने तो गर्दन नापी थी, मगर नाली बीच में आ गयी इससे बच गया, वर्ना पकड़ ही लेता।

आज़ाद—अजी, मैं तो देख ही रहा था कि आप बहुरुपिये के कल्ले तक पहुँच गये थे।

इतने में एक काज़ी साहब मियाँ आज़ाद से मिलने आये। आज़ाद ने नाम पूछा, तो बोले—अब्दुल क़ुद्दूस।

खोजी—क्या! उस्तु खुद्दूस! यह नयी गढ़त का नाम है।

आज़ाद—निहायत गुस्ताख आदमी हो तुम। बस, चोंच सँभालो।

खोजी की आँखें बंद थीं। जब आज़ाद ने डाँट बतायी तो आपने आँखें खोल दीं। काज़ी साहब पर नजर पड़ी। देखते ही आग हो गये और बकने लगे—और देखिएगा जरी, मरदूद आज मौलाना बन कर आया है। भई, गिरगिट के से रंग बदलता है। उस दिन घसियारा बना था; आज मौलवी बन बैठा।

काज़ी साहब बहुत झेंपे। मगर आज़ाद ने कहा कि जनाब, यह दीवाना है। यों ही ऊल जलूल बका करता है।

जब काज़ी साहब चले गये, तब आज़ाद ने खोजी को खूब ललकारा—नामाकूल! बिना देखे-भाले, बेसमझे-बूझे, जो चाहता है, बक देता है। कुछ पढ़े-लिखे होवे, तो आदमियों की क़द्र करते। लिखे न पढ़े, नाम मुहम्मद फ़ाज़िल।

खोजी—जी हाँ, बस, अब एक आप ही बड़े लुकमान बने हैं। हमको यह समझाते हैं कि कोई गधा है। और यहाँ अरबी चाटे बैठे हैं। अफ़आल, फ़ाऊआ मा फ़ालअत। और सुनिए—ग़ल्लम्, ग़ल्लमा, ग़ल्लमू।

मिरज़ा—यह कौन सीग़ा है भाई?

खोजी—जी, यह सीग़ा अल्लम-ग़ल्लम है। यहाँ दीवान के दीवान ज़बान पर हैं। मगर मुफ़्त की शेख़ी जताने से क्या फ़ायदा!

मिरज़ा साहब के घर के सामने एक तालाब था। खोजी अभी अपने कमाल की डींग मार ही रहे थे कि शोर मचा—एक लड़का डूब गया। दौड़ो, दौड़ो। पैराक अपने करतब दिखाने लगे। कोई पुल पर से कूदा धम। कोई चबूतरे से आया तड़। कोई मल्लाही चीरता है, कोई खड़ी लगा रहा है। नैसिखिये अपने किनारे ही पर हाथ पाँव मारते हैं, और डरपोक आदमी तो दूर से ही सैर देख रहे हैं। भई, पानी और आग से ज़ोर नहीं चलता, इनसे दूर ही रहना चाहिए।

आज़ाद ने जो शोर सुना तो दौड़े हुए पुल पर आये और धम से कूद पड़े। गोता लगाते ही उस लड़के का हाथ मिल गया। निकाल कर किनारे लाये, तो देखा, जान बाकी है। लोगों ने मिल कर उसको उलटा लटकाया। जब पानी निकल गया, तो लड़के को होश आया।

अब सुनिए कि वह लड़का बंबई के एक पारसी रईस रुस्तम जी का इकलौता लड़का था। अभी आजाद लड़के को होश में लाने की फिक्र ही कर रहे थे कि किसी ने जाकर रुस्तम जी को यह खबर सुनायी। बेचारे दौड़े आये और आजाद को गले से लगा लिया।

रुस्तम—आपने अपने लड़के को डूबने से बचाया। बंदा आपका बहुत शुक्रगुज़ार है।

आजाद—अगर आपस में इतनी हमदर्दी भी न हो, तो आदमी ही क्या?

खोजी—सच है, सच है। हम ऐसे शेरों के तुम ऐसे शेर ही होते हैं। मैं भी अगर वहाँ होता, तो जरूर कूद पड़ता। मगर यार, अब दुआ माँगनी पड़ी कि यह मोटी तोंदवाला भी किसी दिन गोता खाय, तो फिर यारों के गहरे हैं।

आज़ाद—(पारसी से) मैं बड़े मौके से पहुँच गया।

रुस्तम—अपने को बड़ी खुशी का बातचीत।

खोजी—कुछ उल्लू का पट्ठा मालूम होता है।

रुस्तम—काल आप आवे, तो हमारा लेडी लोग आपको गाना सुनावें।

खोजी—अजी, क्या बेवक्त की शहनाई बजाते हो? अजी, कुछ अफीम घोलो, चुस्की लगाओ, मिठाई मँगवाओ। रईस की दुम बने हैं।

आजाद—कल मैं जरूर आऊँगा।

रईस—आप तो अपना का बाप है।

खोजी—बल्कि दादा। खूब पहचाना, वाह पट्ठे!

रुस्तम जी आजाद से यह वादा ले कर चले गये, तो खोजी और आजाद भी घर आये। शाम को रुस्तम जी ने पाँच हजार रुपयों की एक थैली आजाद के पास भेजी और खत में लिखा कि आप इसे जरूर कबूल करें। मगर आजाद ने शुक्रिये के साथ लौटा दिया।

जरा ख्वाजा साहब की किता देखिएगा। वल्लाह, इस वक़्त फोटो उतारने के काबिल है। न हुआ फोटो। सुबह का वक्त है। आप खारुए की एक लुंगी बाँधे पीपल के दरख़्त के साये में खटिया बिछाये ऊँघ रहे हैं, मगर गुड़गुड़ी भी एक हाथ में थामे हैं। चाहे पिये न, मगर चिलम पर कोयले दहकते रहें! इत्तिफ़ाक़ से एक चील ने दरख़्त पर से बीट कर दी। तब आप चौंके और चौंकते ही आ ही गये। बहुत उछले-कूदे और इतना गुल मचाया कि मुहल्ला भर सिर पर उठा लिया। हत् तेरे गीदी की, हमें भी कोई वह समझ लिया है। आज चील बन कर आया है। करौली तो वहाँ तक पहुँचेगी नहीं; तोड़ेदार बंदूक होती, तो वह ताक के निशाना लगाता कि याद ही करता।

आजाद—यह किस पर गर्म हो रहे हो ख्वाजा साहब?

खोजी—और ऊपर से पूछते हो, किस पर गर्म हो रहे हो? गर्म किस पर होंगे! वही बहुरुपिया है, जो मौलवी बन कर आया था।

मिरजा—तो फिर अब उसे कुछ सजा दीजिए।

खोजी—सजा क्या ख़ाक दूँ! मैं जमीन पर, वह आसमान पर। कहता तो हूँ कि तोड़ेदार बंदूक़ मँगवा दीजिए, तो फिर देखिए, कैसा निशाना लगाता हूँ। मगर आपको क्या पड़ी है। जायगा तो गरीब ख्वाजा के माथे ही।

मिरज़ा—हम बतायें, एक जीना मँगवा दें और आप पेड़ पर चढ़ जायँ; भाग कर जायगा कहाँ?

खोजी—(उछल कर) लाना हाथ।

मिरजा साहब ने आदमी से कहा कि बड़ा जीना अंदर से ले आओ; मगर जल्द लाना। ऐसा न हो कि बैठ रहो।

खोजी—हाँ मियाँ, इसी साल आना। मेरे यार, देखो, ऐसा न हो कि गीदी भाग निकले।

आदमी जब अंदर सीढ़ी लेने गया, बेगम ने पूछा—सीढ़ी क्या होगी?

आदमी—हुजूर, वही जो सिड़ी हैं ख़फ़क़ान, उन पर कहीं चील ने बीट कर दी; तो अब सीढ़ी लगा कर पेड़ पर चढ़ेंगे।

हँसोड़ औरत, खूब ही खिलखिलायीं और फौरन, छत पर जा पहुँचीं। आधी दुपट्टा खिसका जाता है, जूड़ा खुला पड़ता है और जैनब को ललकार रही हैं कि उससे कहो, जल्द सीढ़ी ले जाय। मियाँ खोजी ने सीढ़ी देखी, तो कमर कसी और काँपते हुए जीने पर चढ़ने लगे। जब आखिरी जीने पर पहुँच कर दरख़्त की टहनी पर बैठे, तो चील की तरफ़ मुँह करके बोले—गाँस लिया, गाँस लिया; फाँस लिया, फाँस लिया, हत् तेरे गीदी की, अब जाता कहाँ है? ले, अब मैं भी कल्ले पर

आ पहुँचा। बचा, आज ही तो फँसे हो। रोज झाँसे देकर उड़ंछू हो जाया करते थे। अब सोचो तो, जाओगे किधर से ? ले, आइए बस, अब चोट के सामने। मैंने भी करौली तेज कर रखी है।

इतने में पीछे फिर कर जो देखते हैं, तो जीना ग़ायब। लगे सिर पीटने। इधर चील भी फुर से उड़ गयी। इधर के रहे न उधर के। बेगम साहबा ने जो यह कैफियत देखी, तो तालियाँ बजा कर हँसने लगीं।

खोजी—यह मिरज़ा साहब कहाँ गये। जरी चार आँखें तो कीजिए हमसे। आखिर हमको आसमान पर चढ़ा कर ग़ायब कहाँ हो गये ? अरे यारो, कोई साँस डकार ही नहीं लेता। अरे मियाँ आजाद ! मिरज़ा साहब ! कोई है, या सब मर गये ? आखिर हम कब तक यहाँ टँगे रहें ?

बेगम—अल्लाह करे, पीनक आये।

खोजी—यह कौन बोला ? (बेगम को देख कर) वाह हुजूर, आपको तो ऐसी दुआ न देनी चाहिए।

मियाँ आजाद सोचे कि खोजी अफीमी आदमी, ऐसा न हो, पाँव डगमगा जायँ, तो मुफ्त का खून हमारी गर्दन पर हो। आदमी से कहा—ज़ीना लगा दो। बेगम ने जो सुना, तो हजारों कसमें दीं—खबरदार, सीढ़ी न लगाना। बारे सीढ़ी लगा दी गयी और खोजी नीचे उतरे। अब सबसे नाराज हैं। सबको आँखें दिखा रहे हैं—आप लोगों ने क्या मुझे मसखरा समझ लिया है। आप लोगों जैसे मेरे लड़के होंगे।

इतने में एक आदमी ने आ कर मिरजा साहब को सलाम किया।

मिरजा—बंदगी। कहाँ रहे सलारी, आज तो बहुत दिन के बाद दिखायी दिये।

सलारी—कुछ न पूछिए खुदावंद, बड़ी मुसीबत में फँसा हूँ।

मिरज़ा—क्या है क्या ? कुछ बताओ तो ?

सलारी—क्या बताऊँ, कहते शर्म आती है। परसों मेरा दामाद मेरी लड़की को लिये गाँव जा रहा था। जब थाने के करीब पहुँचा, तो थानेदार साहब घोड़े पर सवार हो कर कहीं जा रहे थे। इनको देखते ही बाग रोक ली और मेरे दामाद से पूछा—तुम कौन हो ? उसने अपना नाम बताया। अब थानेदार साहब इस फ़िक्र में हुए कि मेरी लड़की को बहला कर रख लें और दामाद को धता बता दें। बोले—बदमाश, यह तेरी बीबी नहीं हो सकती। सच बता, यह कौन है ? और तू इसे कहाँ से भगा लाया है ?

दामाद—यह मेरी जोरू है।

थानेदार—सुअर, हम तेरा चालान कर देंगे। तेरी ऐसी क़िस्मत कहाँ कि यह हसीना तुझको मिले ! अगर तू हमारी नौकरी कर ले तो अच्छा, नहीं तो हम चालान करते हैं। (औरत से) तुम कौन हो, बोलो ?

दामाद—दरोग़ा जी, आप मुझसे बातें कीजिए।

मेरी लड़की मारे शर्म के गड़ी जाती थी। गर्दन झुका कर थर-थर काँपती थी

अपने दिल में सोचती थी कि अगर जमीन में गढ़ा हो जाता, तो मैं धँस जाती। सिपाही अलग ललकार रहा है और थानेदार अलग कल्ले पर सवार,,

दामाद—मेरे साथ किसी सिपाही को भेज दीजिए। मालूम हो जाय कि यह मेरी ब्याहता बीबी है या नहीं।

थानेदार—चुप बदमाश, मैं बदमाशों की आँख पहचान जाता हूँ। तुम कहाँ के ऐसे खुशनसीब हो कि ऐसी परी तुम्हारे हाथ आयी। यह सब बनावट की बातें हैं।

सिपाही—हाँ, दारोगा जी, यही बात है।

आखिर थानेदार साहब मेरी लड़की को एक दरख्त की आड़ में ले गये और सिपाही ने मेरे दामाद को दूसरी तरफ़ ले जाके खड़ा किया। थानेदार बोला—बीबी, जरा गर्दन तो उठाओ। भला तुम इस परकटे के काबिल हो! खुदा ने चेहरा तो नूर सा दिया है, लेकिन शौहर लंगूर सा।

लड़की—मुझे वह लंगूर ही पसंद है।

इधर तो थानेदार साहब यह इजहार ले रहे थे, उधर सिपाही मेरे दामाद को और ही पट्टी पढ़ा रहे थे। भाई, सुनो, सूबेदार साहब के सामने तो मैं उनकी सी कह रहा था। न कहूँ, तो जाऊँ कहाँ? मगर इनकी नीयत बहुत खराब है। छटा हुआ गुरगा है।

दामाद—और कुछ नहीं, बस, मैं समझ गया कि फाँसी जरूर पाऊँगा। अब तो मुझे चाहे जाने दे या न जाने दे मैं इसे बेमारे न रहूँगा। अब बेइज्जती में बाकी क्या रह गया।

थानेदार—सिपाही, सिपाही, यह कहती हैं कि यह आदमी इन्हें भगा लाया है।

लड़की—जिसने यह कहा हो, उस पर आसमान फट पड़े।

दामाद—अब आपकी मरजी क्या है? जो हो, साफ़-साफ कहिए।

खैर, थानेदार साहब एक कुर्सी पर डट गये और मेरी लड़की से कहा कि तुम इस सामनेवाली कुर्सी पर बैठो। अब खयाल कीजिए कि गृहस्थ औरत बिना घूँघट निकाले कुएँ तक पानी भरने भी नहीं जाती, वह इतने आदमियों के सामने कुर्सी पर कैसे बैठती। सिपाही झुक-झुक कर देख रहे थे और वह बेचारी गर्दन झुकाये बुत की तरह खड़ी थी। तब थानेदार ने धमक कर कहा—तुम दस बरस के लिए भेजे जाओगे। पूरे दस बरस के लिए!

दामाद—जब कोई जुर्म साबित हो जाय।

थानेदार—हाँ, आप कानून भी जानते हैं? तो हम अब जाब्ते की कारंवाई करें।

दामाद—यह कुल कारंवाई जाब्ते ही की तो है। खैर, इस वक्त तो आपके बस में हूँ, जो चाहे कीजिए। मगर मेरा खुदा सब देख रहा है।

थानेदार—तुम हमारा कहा क्यों नहीं मान लेते? हम बस, इतना चाहते हैं कि तुम नौकरी कर लो और अपनी जोरू को ले कर यहीं रहा करो।

दामाद—आपसे मैं अब भी मिन्नत से कहता हूँ कि इस बात को दिल से निकाल डालिए। नहीं तो बात बढ़ जायगी।

इतने में किसी ने पीछे से आ कर मेरे दामाद की मुश्कें कस लीं और ले चले, और एक सिपाही मेरी लड़की को थानेदार साहब के घर की तरफ़ ले चला। अब रात का वक्त है। एक कमरे में थानेदार लड़की के पैरों पर गिर पड़ा। उसने एक ठोकर दी और झपट कर इस तेजी से भागी कि थानेदार के होश उड़ गये। अब ग़ौर कीजिए कि कमसिन औरत, परदेस का वास्ता, अँधेरी रात, रास्ता गुम, मियाँ नदारद। सोची, या खुदा, कहाँ जाऊँ और क्या करूँ? कभी मियाँ की मुसीबत पर रोती, कभी अपनी हालत पर। इस तरह गिरती पड़ती चली जाती थी कि एक तिलंगे से भेंट हो गयी। बोला—कौन जाता है? कौन जाता है छिपा हुआ? लड़की थर-थर काँपने लगी। डरते-डरते बोली—ग़रीब औरत हूँ। रास्ता भूल कर इधर निकल आयी। आखिर बड़ी मुश्किल से कानों का करन-फूल दे कर अपना गला छुड़ाया। आगे बढ़ी, तो उसका शौहर मिल गया। सिपाहियों ने उसे एक मकान मे बंद कर दिया था, मगर वह दीवार फाँद कर निकल भागा आ रहा था। दोनों ने खुदा का शुक्र किया और एक सराय में रात काटी। सुबह को मेरे दामाद ने थानेदार को घोडे पर से खींच कर इतनी लकड़ियाँ मारीं कि बेदम हो गया। गाँववाले तो थानेदार के दुश्मन थे ही, एक ने भी न बचाया; बल्कि जब देखा कि अधमरा हो गया, तो दो-चार ने लातें भी जमायीं। अब मेरा दामाद मेरे घर में छिपा बैठा है। बतलाइए, क्या करूँ?

खोजी—मुझे तो मालूम होता है कि यह भी उसी बहुरुपिये की शरारत थी।

सलारी—कौन बहुरुपिया?

मिरजा—तुम्हारी समझ में न आयेगा। यह किस्सा-तलब बात है।

सलारी—तो फिर मुझे क्या हुक्म होता है? हम तो गरीब टके के आदमी हैं। मगर आबरूदार हैं।

आजाद—बस, जा कर चैन करो। जब शोर-गुल मचे, तो आना। सलाह की जायगी।

सलारी ने सलाम किया और चला गया।

खोजी ने एक दिन कहा—अरे यारो, क्या अंधेर है। तुम रूम चलते-चलते बुड्ढे हो जाओगे। खीचें सुनीं, दावतें खायीं, अब बकचा सँभालो और चलो। अब चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय, हम एक न मानेंगे। चलिए, उठिए। कूच बोलिए।

आजाद—मिरजा साहब, इतने दिनों में खोजी ने एक यही तो बात पक्की कही। अब जहाज का जल्द इंतिजाम कीजिए।

खोजी—पहले यह बताइए कि कितने दिनों का सफ़र है?

आजाद—इससे क्या वास्ता? हम कभी जहाज पर सवार हुए हों तो बतायें।

खोजी—जहाज! हाय गजब! क्या तरी-तरी जाना होगा? मेरी तो रूह काँपने लगी। भैया, मैं नहीं जाने का।

आजाद—अजी, चलो भी, वहाँ तुरकी औरत के साथ तुम्हारा ब्याह कर देंगे।

खोजी—खुश्की-खुश्की चलो तो भई, मैं चलूँगा। समुद्र में जाते पाँव डग-मगाता है।

मिरजा—जनाब, आपको शर्म नहीं आती? इतनी दूर तक साथ आये, अब साथ छोड़ देते हो? डूब मरने की बात है।

खोजी—क्या खूब! यों भी डूबूँ और वों भी डूबूँ। खुश्की ही खुश्की क्यों नहीं चलते?

मिरजा—आप भी वल्लाह, निरे चोंच ही रहे। खुश्की की राह से कितने दिनों में पहुँचोगे भला? खुश्की की एक ही कही।

खोजी—अब आपसे हुज्जत कौन करे। जहाज का कौन एतबार। जरा किसी सूराख की राह से पानी आया, और बस, पहुँचे जहन्नुम सीधे।

आजाद—तो न चलोगे? साफ-साफ बता दो। अभी सवेरा है।

खोजी—चले तो बीच खेत, मगर पानी का नाम सुना और कलेजा दहल उठा। भला क्यों साहब, यह तो बताइए कि समुद्र का पाट गंगा के पाट से कोई दूना होगा या कुछ कम-बेश?

मिरजा—जी, बस, और क्या। चलिए, आपको समुंदर दिखलावें न, थोड़े ही फासले पर है।

खोजी—क्यों नहीं। हमको ले चलिए और झप से चपरगट्टू करके जहाज पर बिठा दीजिए। एक शर्त से चलते हैं। बेगम साहबा जमानत करें। हमारे सिर की कसम खायें कि जबरदस्ती न करेंगे।

आजाद—इसमें क्या दिक्कत है। चलिए, हम बेगम साहबा से कहलाये देते हैं। आप और आपके बाप, दोनों के सिर की कसम खा लें तो सही।

मिरज़ा—हाँ-हाँ, वह ज़मानत कर देंगी। आइए, उठिए।

मियाँ आज़ाद और मिरज़ा, दोनों मिल कर गये और बेगम से कहा—इस सिड़ी से इतना कह देना कि तू जहाज़ देखने जा। ये लोग ज़बरदस्ती सवार न करेंगे। बेगम साहबा ने जो सारी दास्तान सुनी, तो तिनक कर बोलीं कि हम न कहेंगे। आप लोगों ने ज़रा सी बात न मानी और सीढ़ी हटा ली। अच्छा, ख़ैर, परदे के पास बुला लो।

खोजी ने परदे के पास आ कर सलाम किया; मगर जवाब कौन दे। बेगम साहबा तो मारे हँसी के लोटी जाती हैं। मियाँ आज़ाद के ख़याल से अपनी चुलबुलाहट पर लजाती भी हैं और खिलखिलाती भी। शर्म और हँसी, दोनों ने मिल कर रुख़सारों को और भी सुर्ख़ कर दिया। इतने में खोजी ने फिर हाँक लगायी कि हुज़ूर ने गुलाम को क्यों याद फ़रमाया है?

मिरज़ा—कहती हैं कि हम ज़मानत किये लेते हैं।

खोजी—आप रहने दीजिए, उन्हीं को कहने दीजिए।

बेगम—ख़्वाजा साहब, बंदगी। आप क्या पूछते हैं।

खोजी—ये लोग मुझे जहाज़ दिखाने लिये जाते हैं। जाऊँ या न जाऊँ? जो हुक्म हो, वह करूँ।

बेगम—कभी भूले से न जाना। नहीं फिर के न आओगे।

खोजी—आप इनकी ज़मानत करती हैं।

बेगम—मैं किसी की ज़ामिन-वामिन नहीं होती। 'ज़र दीजिए ज़ामिन न हूजिए'। ये डुबो ही देंगे। मुई करौली रखी ही रहेगी।

खोजी—चलिए, बस, हद हो गयी। अब हम नहीं जाने के।

आज़ाद—भई, तुम ज़रा साथ चल कर सैर तो देख आओ।

खोजी—वाह! अच्छी सैर है। किसी की जान जाय, आपके नज़दीक सैर है। उस जानेवाले पर तीन हरफ़।

ख़ैर, समझा-बुझा कर दोनों आदमी खोजी को ले चले। जब समुद्र के किनारे पहुँचे तो खोजी उसे देखते ही कई कदम पीछे हटे और चीख पड़े। फिर दस पाँच क़दम पीछे खिसके और रोने लगे। या ख़ुदा, बचाइए! लहरें देखते ही किसी ने कलेजे को मसोस लिया।

मिरज़ा—क्या लुत्फ़ है! ख़ुदा की क़सम, जी चाहता है, फाँद ही पड़ूँ।

खोजी—कहीं भूल से फाँदने कोदने का इरादा न करना। हयादार के लिए एक चुल्लू काफी है।

आज़ाद—अजब मसख़रा है भई एक आँख से रोता है, एक आँख से हँसता है।

इतने में दो-चार मल्लाह सामने आये। खोजी ने जो उन्हें ग़ौर से देखा, तो मिरज़ा साहब से बोले—ये कौन हैं भई? इनकी तो कुछ वज़ा ही निराली है। भला, ये हमारी बोली समझ लेंगे?

मिरज़ा—हाँ हाँ, खूब। उन्हें खूब समझते हैं।

खोजी—(एक मल्लाह से) क्यों भई माँझी, जहाज़ पर कोई जगह ऐसी भी है, जहाँ समुंदर नज़र न आये और हम आराम से बैठे रहें? सच बताना उस्ताद! अजी, हम पानी से बहुत डरते हैं भई!

माँझी—हम आपको ऐसी जगह बैठा देंगे, जहाँ पानी क्या, आसमान तो सूझ ही न पड़े।

खोजी—अरे, तेरे क़ुरबान। एक बात और बता दो। गन्ने मिलते जायँगे राह में या उनका अकाल है?

माँझी—गन्ने यहाँ कहाँ? क्या कुछ मंडी है? अपने साथ चाहे जितने ले चलिए।

खोजी—हाय, गँडेरियाँ ताज़ी-ताज़ी खाने में न आयेंगी। भला हलवाई की दूकान तो होगी? आख़िर ये इतने शौक़ीन अफ़ीमची जो जाते हैं, तो खाते क्या हैं?

माँझी—अजी, जो चाहो, साथ रख लो।

खोजी—और जो मुँह-हाथ धोने को पानी की ज़रूरत हो तो कहाँ से आवे?

आज़ाद—पागल है पूरा! इतना नहीं समझता कि समुंदर में जाता है और पूछता है कि पानी कहाँ से आयेगा।

खोजी—तो आप क्यों उलझ पड़े? आपसे पूछता कौन है? क्यों यार माँझी, भला हम गन्ने यहाँ से बाँध ले चलें और जहाज़ पर चूसें, मगर छिलके फेकेंगे कहाँ। आख़िर हम दिन भर में चार-छह पौंड़े खाया ही चाहें।

आज़ाद—यह बड़ी टेढ़ी खीर है, गन्नों के छिलके खाने पड़ेंगे।

खोजी—आपसे कौन बोलता है? क्यों भई, जो क़रौली बाँधें तो हर्ज तो नहीं है कुछ?

माँझी—लैसन ले लीजिएगा, और क्या हर्ज है?

खोजी—देखिए, एक बात तो मालूम हुई न! अच्छा यह बताओ कि बहुरुपिये तो जहाज़ पर नहीं चढ़ने पाते?

माँझी—चाहे जो सवार हो। दाम दे, सवार हो ले।

खोजी—यह तो तुमने बेढब सुनायी। जहाज पर कुम्हार तो नहीं होते?

माँझी—आज तलक कोई कुम्हार नहीं गया।

खोजी—ऐ, मैं तेरी ज़बान के क़ुरबान। बड़ी ढारस हुई। ख़ैर कुम्हार से तो बचे। बाक़ी रहा बहुरुपिया। उस गीदी को समझ लूँगा। इतनी क़रौलियाँ भोंकूँ कि याद ही करे। हाँ, बस एक और बात भी बता देना। यह क़ैद तो नहीं है कि आदमी सुबह-शाम ज़रूर ही नहाय?

माँझी—मालूम देता है, अफ़ीम बहुत खाते हो?

खोजी—हाँ खूब पहचान गये। यह क्योंकर बूझ गये भाई? शौक़ हो, तो निकालूँ?

माँझी—राम-राम! हम अफ़ीम छूते तक नहीं।

खोजी—ओ गीदी! टके का आदमी और झल्ल मारता है। निकालूँ करौली?

मिरजा—हाँ, हाँ, ख्वाजा साहब! देखिए, जरी करौली म्यान ही में रहे।

खोजी—खैर, आप लोगों की खातिर है। वर्ना उधेड़ कर धर देता पाजी को। आप लोग बीच में न पड़ें, तो भुरकुस ही निकाल दिया होता।

इतने में घोडे पर सवार एक अँगरेज आ कर आजाद से बोला—इस दरख्त का क्या नाम है?

आजाद—इसका नाम तो मुझे मालूम नहीं। हम लोग जरा इन बातों की तरफ कम ध्यान देते हैं।

अँगरेज—हम अपने मुल्क की सब घास फूस पहचानता है।

खोजी—विलायत का घसियारा मालूम होता है।

अँगरेज—चिडिया का इल्म जानता है आप?

आजाद—जी नहीं यह इल्म यहाँ नहीं सिखाया जाता।

अँगरेज—चिड़िया का इल्म हम खूब जानता है।

खोजी—चिडीमार है लंदन का। बस, कलई खुल गयी।

अँगरेज घोडा बढा कर निकल गया। इधर आजाद और मिरजा साहब के पेट मे हँसते-हँसते बल पड़ गये।

३९

शाम के वक्त मिरजा साहब की बेगम ने परदे के पास आ कर कहा—आज इस वक्त कुछ चहल-पहल नहीं है; क्या खोजी इस दुनिया से सिधार गये?

मिरजा—देखो खोजी, बेगम साहबा क्या कैह रही हैं।

खोजी—कोई अफ़ीम तो पिलवाता नहीं, चहल-पहल कहाँ से हो? लतीफ़े सुनाऊँ, तो अफीम पिलवाइएगा?

बेगम—हाँ, हाँ, कहो तो। मरो भी, तो पोस्ते ही के खेत में दफ़नाये जाओ। काफ़ूर की जगह अफ़ीम हो, तो सही।

खोजी—एक खुशनवीस थे। उनके कलम से ऐसे हरूफ निकलते थे, जैसे साँचे के ढले हुए। मगर इन हजरत में एक सख्त ऐब यह था कि ग़लत न लिखते थे।

आजाद—कुछ जाँगलू हो क्या?

खोजी—खुदा इन लोगों से बचाये। भई, मेरे तो नाकों दम हो गया। बात पूरी सुनी नहीं और एतराज करने को मौजूद। बात काटने पर उधार खाये हुए हो। मेरा मतलब यह था कि वह ग़लत न लिखते थे; मगर ऐब यह था कि अपनी तरफ से कुछ मिला देते थे। एक दफ़े एक आदमी को कुरान लिखाने की जरूरत हुई। सोचे कि इनसे बढ़ कर कोई खुशनवीस नहीं, अगर दस-पाँच रुपये ज्यादा भी खर्च हों, तो बला से, लिखवायेंगे इन्हीं से।

बेगम—ऐ वाह री अकल! कोई आप ही के से जाँगलू होंगे। गली-गली तो छापेखाने हैं। कोई छपा हुआ कुरान क्यों न मोल ले लिया?

खोजी—हुजूर, वह सीधे-सादे मुसलमान थे। मतिक (न्याय) नहीं पढ़े थे। खैर, साहब खुशनवीस के पास पहुँचे और कहा—हजरत, जो उजरत माँगिए, दूँगा; मगर अर्ज यह है, कहिए, कहूँ, कहिए, न कहूँ। खुशनवीस ने कहा—जरूर कहिए। खुदा की कसम, ऐसा लिखूँ कि जो देखे, फड़क जाय। वह बोले—हजरत, यह तो सही है, लेकिन अपनी तरफ से कुछ न बढ़ा दीजिएगा। खुशनवीस ने कहा—क्या मजाल; आप इतमीनान रखिए, ऐसा न होने पावेगा। खैर, वह हजरत तो घर गये, इधर मियाँ खुशनवीस लिखने बैठे। जब खतम कर चुके, तो किताब ले कर चले। लीजिए हुजूर कुरान मौजूद है। उन्होंने पूछा—एक बात साफ़ फ़रमा दीजिए। कहीं अपनी तरफ से तो कुछ नही मिला दिया? खुशनवीस ने कहा—जनाब, बदलते या बढ़ाते हुए हाथ काँपते थे। मगर इसमें जगह-जगह शैतान का नाम था। मैंने सोचा, खुदा के कलाम में शैतान का क्या जिक्र? इसलिए कहीं आपके बाप का नाम लिख दिया, कहीं अपने बाप का।

बेगम—बस, यही लतीफा है? यह तो सुन चुकी हूँ।

खोजी—इस धाँधली की सनद नहीं। जब अफ़ीम पिलाने का वक़्त आया तो धाँधली करने लगीं।

मिरज़ा साहब बोले—अजी, यह पिलवावें या न पिलवावें, मैं पिलवाये देता हूँ। यह कह कर उन्होंने एक थाली में थोड़ा सा कत्था घोल कर खोजी को पिला दिया। खोजी को दिन को तो ऊँट सूझता न था; रात को कत्थे और अफ़ीम के रंग में क्या तमीज़ करते। पूरा प्याला चढ़ा लिया और अफ़ीम पीने के खयाल से पीनक लेने लगे। मगर जब रात ज़्यादा गयी तो आपको अँगड़ाइयाँ आने लगीं; जम्हाइयों की झाक बैठ गयी, आँखों से पानी जारी हो गया। डिबिया जेब से निकाली कि शायद कुछ खुरचन-उरचन पड़ी-पड़ायी हो, तो इस दम जी जायँ। मगर देखा, तो सफाचट। बस, सन से जान निकल गयी। आधी रात का वक़्त, अब अफ़ीम आये तो कहाँ से? सोचे, भई, चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय, अफ़ीम कहीं न कहीं से हूँढ़ ही लावेंगे। दन से चल ही तो खड़े हुए। गली में सिपाही से मुठभेड़ हुई।

सिपाही—कौन?

खोजी—हम हैं ख्वाजा साहब।

सिपाही—किस दफ़्तर में काम करते हो?

खोजी—पुलिस के दफ्तर में। मानिकजी-माईजी की जगह पर ब्याज से काम करते हैं। यार, इस वक़्त कहीं से जरा सी अफीम लाओ, तो बड़ा एहसान हो। आखिर उस्ताद, पाला हमीं से पड़ेगा। तुम्हारे ही दफ़्तर में हैं।

सिपाही—हाँ, हाँ, लीजिए, इसी दम। मैं तो खुद अफ़ीम खाता हूँ। अफीम तो लो यह है, मगर इस वक़्त घोलिएगा काहे में?

खोजी—वाह! सिपाही हो कि बातें? घर की हुकूमत है! सरकारी सिपाही सभी मानते हैं।

सिपाही—अच्छा, चलो, पिला दें।

खोजी—वाह सूबेदार साहब! बड़े बुरे वक़्त काम आये। हम, आप जानिए, अफ़ीमची आदमी, शाम को अफ़ीम खाना भूल गये, आधी रात को याद आया। डिबिया खोली, तो सन्नाटा! ले, कहीं से पानी और प्याली दिलवाओ, तो जी उठें।

खैर, सिपाही ने खोजी को खूब अफीम पिलवायी। यहाँ तक कि घर को लौटे, तो रास्ता भूल गये। एक भलेमानस के दरवाज़े पर पहुँचे, तो पीनक में सूझी कि यही मिरज़ा साहब का मकान है। लगे ज़ंजीर खड़खड़ाने—खोलो, खोलो! भई, अब तो खड़ा नहीं रहा जाता। दरवाज़ा खोल देना।

ख्वाजा साहब तो बाहर खड़े गला फाड़-फाड़ कर चिल्लाते हैं, और अंदर उस मकान में मियाँ का दम निकला जाता है। कोई एक ऊपर दस बरस का सिन, खेल-कूद के दिन, खोजी के भी चचा, दुबले-पतले हाथ-पाँव, कद तीन कम सवा दो इंच का। सिवा हड्डी और चमड़े के गोश्त का कहीं नाम नहीं। और उनकी बीबी ख़ासी देवनी, हट्टी कट्टी मुसंडी, बड़े डील-डौल की औरत, उठती जवानी, मगर एक आँख

की कानी। एक घूँसा तानके लगावें, तो खोजी लँदौर का भुरकस निकल जाय। कोई दो-तीन कम बीस बरस की उम्र। दोनों मीठी नींद सो रहे थे कि खोजी ने धमधमाना शुरू किया।

मियाँ—या खुदा, बचाइयो। इस अँधेरी रात में कौन आया? मारे डर के रूह काँपती है; मगर जो बीबी को जगाऊँ और मर्दाने कपड़े पहना कर ले जाऊँ, तो यह हजरत भी काँपने लगें।

खोजी—खोलो, मीठी नींद सोनेवालो, खोलो। यहाँ जाते देर नहीं हुई, और किवाड़े झप से बंद कर लिये? खटिया-चटिया सब गायब कर दी?

मियाँ—बेगम, बेगम, क्या सो गयीं?

वहाँ सुनता कौन है, जवानी की नींद है कि दिल्लगी। कोई चारपाई भी उलट दे, तो कानों-कान खबर न हो। सिर पर चक्की चले। तो भी आँख न खुले। मियाँ आँखों को मारे डर के एक हाथ से बंद किये बीबी के सिरहाने खड़े हैं; मगर थर-थर काँप रहे हैं। आखिर एक बार किचकिचाके खूब जोर से कंधा हिलाया और बोले—ओ बेगम, सुनती हो कि नहीं? जगी हैं, मगर दम साधे पड़ी हैं। बेगम—(हाथ झटक-कर) ऐ हटो, लेके कंधा उखाड़ डाला। अल्लाह करे, ये हाथ टूटें। हमारी मीठी मीठी नींद खराब कर दी। खुदा जानता है, मैं तो समझी, हालाडोला आ गया। खुदा-खुदा करके ज़रा आँख लगी, तो यह आफ़त आयी। अब की जगाया, तो तुम जानोगे। फिर अपने दाँव को तो बैठ कर रोते हैं। बेहया, चल दूर हो।

मियाँ—अरे, क्या फिर सो गयी? जैसे नींद के हाथों बिक गयी हो। बेगम, सुनती हो कि नहीं?

बेगम—क्या है क्या? कुछ मुँह से बोलोगे भी? बेगम-बेगम की अच्छी रट लगायी है। डर लगता हो तो मुँह ढाँप कर सो रहो। एक तो आप न सोयें, दूसरे हमारी नींद भी हराम करें।

खोजी—अरे, भई खोलो! मर गया पुकारते-पुकारते।

मियाँ—बेगम खुदा करें, बहरी हो जायँ। देखो तो यहाँ किवाड़ कौन तोड़े डालता है? बंदा तो इस अँधियारी में हुमसनेवाला नहीं। ज़री तुम्हीं दरवाज़े तक जा कर देख लो।

बेगम—जी! मेरी पैजार उठती है। तुम्हारी तो वही मसल हुई कि 'रोटी खाय दस-बारह, दूध पिये मटका सारा, काम करने को नन्हा बेचारा।' पहले तो मैं औरत ज़ात डर गयी तो फिर कैसी हो? चोर-चाकर से बीबी को भिड़वाते हैं। मर्द बने हैं, जोरुआ से कहते हैं कि बाहर जा कर चोर से लड़ो।

खोजी—अजी, बेगम साहब, खुदा की कसम, अफ़ीम लाने गया था। ज़री दरवाज़ा खुलवा दीजिए। यह मिरज़ा साहब, और मौलाना आज़ाद तो मेरी जान के दुश्मन हैं।

बेगम ने जो अफीम का नाम सुना, तो आग-भभूका हो गयीं। उठ कर मियाँ क

एक लात लगायी और ऊपर से कोसने लगीं—इस अफीम को आग लगे, पीनेवाले का सत्यानाश हो जाय। एक तो मेरे माँ बाप ने इस निखट्टू के खूँटे में बाँधा, दूसरे इसके माँ-बाप ने अफीम इसकी घुट्टी में डाल दी। क्यों जी, तुमने तो कसम खायी थी कि आज से अफीम न पिऊँगा? न तुम्हारी कसम का एतबार, न जबान का। कसम भी क्या मूली-गाजर है कि कर-कर करके चबा गये।

मियाँ—(गर्द झाड-पोंछ कर) क्यों जी, और जो मै भी एक लात कसके जमाने के लायक होता तो फिर कैसी ठहरती?

बीबी—मै तो पहले बातों से समझाती हूँ और कोई न समझे तो फिर लातों से खबर लेती हूँ। मैं तो इस फिक्र में हूँ कि तुमको खिला-पिला कर हट्टा-कट्टा बना दूँ, पड़ोसी ताने न दें। और तुम पियो अफीम तो जी जले या न जले?

मियाँ साहब दिल ही दिल मे अपने माँ-बाप को गालियाँ दे रहे थे। यहाँ धान-पान आदमी, बीबी लाके बिठा दी देवनी। वे तो ब्याह करके छुट्टी पा गये, लातें हमें खानी पड़ती हैं। मै तो समझा कि अपना काम ही तमाम हो गया; मगर बेहया ज्यों का त्यों मौजूद। बोले—तुम्हारी जान की कसम, कौन मरदूद चंडू के करीब भी गया हो। आज या कभी अफीम की सूरत भी देखी हो। और यों खामख्वाह बदगुमानी का कौन सा इलाज है। जरी चलके देखो तो! आखिर है कौन? आव देखा न ताव, कस कर एक लात जमा दी, बस। और जो कहीं कमर टूट जाती?

खोजी पीनक में जंजीर पकडे थे। इधर मियाँ-बीबी चले, तो इस तरह कि बीबी आगे-आगे चिमटा हाथ में लिये हुए और मियाँ पीछे-पीछे मारे डर के आँखें बंद किये हुए। दरवाज़ा खुला, तो खोजी धम से गिरे सिर के बल और मियाँ मारे खौफ के खोजी पर अर-र-र करके आ रहे। बीबी ने ऊपर से दोनों को दबोचा। खोजी का नशा हिरन हो गया। निकल कर भागे तो नाक की सीध पर चलते हुए मिरज़ा साहब के मकान पर दाखिल। वहाँ देखा, खिदमतगार पडा खर्राटे ले रहा है। चुपके से अपनी खटिया पर दराज हुए; मगर मारे हँसी के बुरा हाल था। सोचे, हम तो थे ही, यह मियाँ हमारे भी चचा निकले।

४०

सुबह का वक्त था। मियाँ आज़ाद पलँग से उठे तो देखा, बेगम साहबा मुँह खोले बेतकल्लुफी से खड़ी उनकी ओर कनखियों से ताक रही हैं। मिरज़ा साहब को आते देखा, तो बदन को चुरा लिया, और छलाँग मारी, तो जैनब की ओट में थीं।

मिरज़ा—कहिए, आज क्या इरादे हैं ?

आजाद—इस वक्त हमको किसी ऐसे आदमी के पास ले चलिए, जो तुरकी के मामलों से खूब वाकिफ हो। हमे वहाँ का कुछ हाल मालूम ही नहीं। कुछ सुन तो ले। वहाँ के रंग-ढंग तो मालूम हों।

मिरज़ा—बहुत खब; चलिए, मेरे एक दोस्त हेडमास्टर हैं। बहुत ही जहीन और यारबाश आदमी हैं।

आजाद तैयार हुए तो बेगम ने कहा—ऐ, तो कुछ खाते तो जाओ। ऐसी अभी क्या जल्दी है ?

आजाद—जी नही। देर होगी।

बेगम—अच्छा, चाय तो पी लीजिए,

थोड़ी देर में दोनो आदमियों ने चाय पी, पान खाये और चले। हेडमास्टर का मकान थोड़ी ही दूर था, खट से दाखिल। सलाम-वलाम के बाद आजाद ने रूम और रूस की लड़ाई का ताजा हाल पूछा।

हेडमास्टर—तुरकी की हालत बहुत नाजुक हो गयी है।

खोजी—यह बताइए कि वहाँ तोप दग रही है या नहीं ? दनादन की आवाज कान मे आती है या नहीं ?

हेडमास्टर—दनादन की आवाज़ तो यहाँ तक आ चुकी; मगर लड़ाई छिड गयी है और खूब जोरों से हो रही है।

खोजी—उफ्, मेरे अल्लाह! यहाँ तो जान ही निकल गयी।

आजाद—मियाँ, हिम्मत न हारो। खुदा ने चाहा, तो फतह है।

खोजी—अजी,हिम्मत गयी भाड में, यहाँ तो काफिया तंग हुआ जाता है।

आजाद—लड़ाई रूस से हो रही है, या आपस में ?

हेडमास्टर—आपस ही मे समझिए। अक्सर सूबे बिगड गये और लड़ाई हो रही है।

आजाद—यह तो बुरी हुई।

खोजी—बुरी हुई, तो फिर जाते क्यों हो ? क्या तबाही आयी है ?

हेडमास्टर—सर्विया की फौज सरहद को पार कर गयी। तुरकों से एक लड़ाई भी

हुई। सुना है कि सर्विया हार गया। मगर उसका कहना है कि यह सब ग़लत है। ईल डटे हुए हैं, और तुरकों को बाल्गिनिया की सरहद पर जक दी।

खोजी—अब मेरे गये बगैर बेड़ा न पार होगा। क़सम ख़ुदा की, इतनी करौलियाँ भोंकी हों कि परे के परे साफ़ हो जायें। दिल्लगी है कुछ।

हेडमास्टर—दूसरी खबर यह है कि सर्विया और तुरकों में सख्त लड़ाई हुई, मगर न कोई हारा, न जीता। सर्विया वाले कहते हैं कि हमने तुरकों को भगा दिया।

खोजी—भई आजाद, सुनते हो? वापस चलो। अजी, शर्त तो यही है न कि तमग़े लटका कर आओ? आप वापस चलिए मैं एक तमसा बनवा दूँगा।

कुछ देर तक मियाँ आजाद और हेडमास्टर साहब में यही बातें होती रहीं। दस बजते-बजते यहाँ से रुखसत हो कर घर आये। जब खाना खा कर बैठे तो बेगम साहबा ने आजाद से कहा—हजरत, ज़रा इस मिसरे पर कोई मिसरा लगाइए—

इसलिए तसवीर जानाँ हमने खिंचवायी नहीं।

आजाद—हाँ-हाँ सुनिए—

ग़ैर देखे उनकी सूरत इसकी ताब आयी नहीं;
इसलिए तसवीर जानाँ······नहीं।
उसकी फ़ुरकत जेहन में अपने कभी आयी नहीं;
इसलिए तसवीर जानाँ······नहीं।

बेगम—कहिए, आपकी ख़ातिर से तारीफ़ कर दें। मगर मिसरे ज़रा फीके हैं।

आजाद—अच्छा, ले आप ही कोई चटपटा मिसरा कहिए।

बेगम—ऐ, हम औरतजात, भला शेर-शायरी क्या जानें। और जो आपकी यही मरज़ी है, तो लीजिए—

लौहे-दिल ढूँढा किये पर हाथ ही आयी नहीं,
इसलिए ... ... नहीं।

खोजी—वाह, बेगम साहब! आपने तो सुलेमान सावजी के भी कान काटे। पर अब ज़रा मेरी उपज भी सुनिएगा—

पीनके-अफ़यूँ से दुक फ़ुरसत कभी पायी नहीं,
इसलिए ... ... नहीं।

इस मिसरे का सुनना था कि मिरज़ा साहब, उनकी हँसोड़ बीबी और मियाँ आज़ाद—हँसते हँसते लोट गये। अभी यही चर्चा हो रही थी कि इतने में एक आदमी ने बाहर से आवाज दी। मिरज़ा ने जैनब से कहा कि जाओ, देखो तो कौन है? मियाँ खलीफा हों तो कहना, इस वक्त हम बाल न बनवायेंगे। तीसरे पहर को आ जाइए। जैनब आटा गूँध रही थी। 'अच्छा' कह कर चुप हो रही। आदमी ने फिर बाहर से आवाज दी। तब तो जैनब को मजबूर हो कर उठना ही पड़ा। नाक-भौं चढ़ाती, नौकर को जली-कटी सुनाती चली। जो है, मेरी ही जान का गाहक है। जिसे देखो, मेरा ही दुश्मन। वाह, एक काम छोड़ दूसरे पर लपको। अबकी

चाँद हो, तो मैं तनख्वाह लेके अपने घर बैठ रहूँ। क्यों, निगोड़ी नौकरी का भी कुछ अकाल है? जैनब का कायदा था कि काम सब करती थी, मगर बड़बड़ा कर। बात-बात पर तिनक जाना तो गोया उसकी घुँटी में पड़ा था। मगर अपने काम में चुस्त थी। इसलिए उसकी खातिर होती थी। मुँह फुला कर बाहर गयी। पहले तो जाते ही खिदमतगार को खूब आड़े हाथों लिया—क्या घर भर में मैं ही अकेली हूँ? जो पुकारता है, मुझी को पुकारता है। मुए उल्लू के मुँह में नाम पड़ गया है।

खिदमतगार ने कहा—मुझसे क्यों बिगड़ती हो? यह मियाँ आये हैं; हुजूर से जा कर इनका पैग़ाम कह दो। मगर ज़रा समझ-बूझ कर कहना। सब बातें सुन लो अच्छी तरह।

जैनब—(उस आदमी से) कौन हो जी? क्या कहते हो? तुम्हें भी इसी वक़्त आना था?

आदमी—मल्लाह हूँ, और हूँ कौन? जा कर अपने मियाँ से कह दो, आज जहाज़ रवाना होगा। अभी दस घंटे की देर है। तैयार हो जाइए।

जैनब ने अंदर जा कर यह खबर दी। बेगम साहबा ने जहाज़ का नाम सुना, तो धक से रह गयीं। चेहरे का रंग फीका पड़ गया। कलेजा धड़-धड़ करने लगा। अगर ज़ब्त न करतीं, तो आँसू जारी हो जाते।

मिरज़ा—लीजिए हज़रत, अब कूच की तैयारी कीजिए।

आज़ाद—तैयार बैठा हूँ। यहाँ कोई बड़ा लंबा चौड़ा सामान तो करना नहीं। एक बैग, एक दरी, एक लोटा, एक लकड़ी। चलिए, अल्लाह-अल्लाह, खैरसल्लाह। वक़्त पर दन से खड़ा हूँगा।

खोजा—यहाँ भी वही हाल है। एक डिबिया, एक प्याली, चंडू पीने की एक निगाली; एक कतार, एक दोना मिठाई का, एक चाकू, एक करौली; बस, अल्लाह अल्लाह, खैरसल्लाह। बंदा भी कील-काँटे से दुरुस्त है।

यह सुन कर मियाँ आज़ाद और मिरज़ा साहब- दोनों हँस पड़े। मगर बेगम साहबा के होंठों पर हँसी न आयी। मिरज़ा साहब, तो उसी वक़्त मल्लाह से बातें करने के लिए बाहर चले गये और यहाँ मियाँ आज़ाद और बेगम साहबा, दोनों अकेले रह गये। कुछ देर तक बेगम ने मारे रंज के सिर तक न उठाया। फिर बहुत सँभल कर बोलीं—मेरा तो दिल बैठा जाता है।

आज़ाद—आप घबराइए नहीं, मैं जल्दी वापस आऊँगा।

बेगम—हाय, अगर इतनी ही उम्मेद होती, तो रोना काहे का था?

आज़ाद—सब्र को हाथ से न जाने दीजिए। खुदा बड़ा कारसाज़ है।

बेगम—आँखों में अँधेरा सा छा गया। क्या आज ही जाओगे? आज ही? तुम्हारे जाने के बाद मेरी न जाने क्या हालत होगी?

आज़ाद—खुदा ने चाहा, तो हँसी-खुशी फिर मिलेंगे।

इतने में मिरजा साहब ने आ कर कहा कि सुबह को तड़के जहाज रवाना होगा।

बेगम—यों जाने को सभी जाते हैं, लाखों मर्द-औरत हर साल हज कर आते हैं; मगर लड़ाई में शरीक होना! बस, यही खयाल तो मारे डालता है।

आजाद—ये लाखों आदमी जो लड़ने जाते हैं, क्या सब के सब मर ही जाते हैं? फिर कजा का वक्त कौन टाल सकता है? जैसे यहाँ, वैसे वहाँ।

मिरजा—भई, मेरा तो दिल गवाही देता है कि आप सुर्खरू हो कर आयेंगे। और यों तो जिंदगी और मौत खुदा के हाथ है।

बेगम—ये सब बातें तो मैं भी जानती हूँ! मगर समझाऊँ किसे?

मिरजा—जब जानती हो, तब रोना-धोना बेकार है। हाथ-मुँह धो डालो। जेनब, पानी लाओ। यही तो तुममें ऐब है कि सुबह का काम शाम को और शाम का काम सुबह को करती हो। लाओ पानी झटपट।

जैनब—या अल्लाह! अब आलू छीलूँ या पानी लाऊँ!

आखिर जैनब दिल ही दिल में बुरा-भला कहती पानी लायी। बेगम ने मुँह धोया और बोली—अब मैं कोई ऐसी बात न कहूँगी, जिससे मियाँ आज़ाद को रंज हो।

खोजी—अजी मियाँ आजाद! चलने का वक्त करीब आया। कुछ मेरी भी फिक्र है? वह करौली लेते ही लेते रह गये? अफीम का क्या बंदोबस्त किया? यार, कहीं ऐसा न हो कि अफीम राह में न मिले और हम जीते जी मर मिटें। जरी जैनब को बाजार तक भेज कर कोई साठ-सत्तर कतारे तो नर्म नर्म मँगवा दीजिए। नहीं तो मैं जीता न फिरूँगा।

जैनब—हाँ, जैनब ही तो घर भर में फालतू है। लपक कर बाजार से ले क्यों नहीं आते? क्या चूड़ियाँ टूट जायँगी? और मैं औरतजात अफीम लेने कहाँ जाऊँगी भला?

बेगम—रास्ते में इस पगले के सबब से खूब चहल-पहल रहेगी।

आजाद—हाँ, इसी लिए तो लिये जाता हूँ। मगर देखिए, क्या क्या बेहूदगियाँ करते हैं?

खोजी—अजी, आपसे सौ कदम आगे रहूँ, तो सही।

मिरजा—इसमें क्या शक है? लेकिन उस तरफ कोई बहुरुपिया हुआ, तो कैसी ठहरेगी?

खोजी—सच कहता हूँ, इतनी करौलियाँ भोकूँ कि याद करे। मैं दसानेवाली पलटन में रिसालदार था। अवध में खुदा जाने कितनी गढ़ियाँ जीत लीं।

बेगम—ऐ रिसालदार साहब, आपकी करौली क्या हुई? मोरचा खा गयी हो तो साफ कर लीजिए। ऐसा न हो, मोरचे पर म्यान ही में रहे।

जैनब—रिसालदार साहब, हमारे लिए वहाँ से क्या लाइएगा?

खोजी—अजी, जीते आवें, तो यही बड़ी बात है। यहाँ तो बदन काँप रहा है।

इन्हीं बातों में चलने का वक्त आ गया। आजाद ने अपना और खोजी का सामान बाँधा। बग्घी तैयार हुई। जब मियाँ आजाद ने चलने के लिए लकड़ी उठायी, तो बेगम बेचारी बेअख्तियार रो दीं। काँपते हुए हाथों से इमामजामिन की अशरफी बाँधी और कहा—जिस तरह पीठ दिखाते हो, उसी तरह मुँह भी दिखाना।

मियाँ आजाद, मिरजा और खोजी जा कर बग्घी पर बैठे। जब गाड़ी चली, तो खोजी बोले—हमसे कोई नहाने को कहेगा, तो हम करौली ही भोंक देंगे।

मिरजा—तो जब कोई कहे न ?

खोजी—हाँ, बस, इतना याद रखिएगा जरा। और, हम यह भी बताये देते हैं कि गन्ना चूस-चूस कर समुंदर के बाप में फेकेंगे, और जो कोई बोलेगा, तो दबोच बैठेंगे। हाँ, ऐसे-वैसे नहीं हैं यहाँ।

सामने समुद्र नजर आने लगा।

५१

हुस्नआरा मीठी नींद सो रही थी। ख्वाब में क्या देखती है कि एक बूढ़े मियाँ सब्ज़ कपड़े पहने उसके करीब आ कर खड़े हुए और एक किताब दे कर फ़रमाया कि इसे लो और इसमें फ़ाल देखो। हुस्नआरा ने किताब ली और फ़ाल देखा, तो यह शेर था—

हमें क्या खौफ़ है, तूफ़ान आवे या बला टूटे।

आँख खुल गयी तो न बूढ़े मियाँ थे, न किताब। हुस्नआरा फ़ाल-वाल की कायल न थी; मगर फिर भी दिल को कुछ तसकीन हुई। सुबह को वह अपनी बहन सिपहआरा से इस ख्वाब का ज़िक्र कर रही थी कि लौंडी ने आज़ाद का खत ला कर उसे दिया।

हुस्नआरा—हम पढ़ेंगे।

सिपहआरा—वाह, हम पढ़ेंगे।

हुस्नआरा—(प्यार से झिड़क कर) बस, यही बात तो हमें भाती नहीं।

सिपहआरा—न भावें, धमकाती क्या हो?

हुस्नआरा—मेरी प्यारी बहन, देखो, बड़ी बहन का इतना कहना मान जाओ। लाओ खत खुदा के लिए।

सिपहआरा—हम तो न देंगे।

हुस्नआरा—तुम तो खाहमख्वाह ज़िद करती हो, बच्चों की तरह मचली जाती हो।

सिपहआरा—रहने दीजिए, वाह-वाह! हम आज़ाद का खत न पढ़ें?

यह कहकर सिपहआरा ने आज़ाद का खत पढ़ सुनाया—

'अब तो जाते हैं हिंद से आज़ाद,
फिर मिलेंगे अगर खुदा लाया।

आज जहाज़ पर सवार होता हूँ। दो घंटे और हिंदुस्तान में हूँ। उसके बाद सफ़र, सफ़र, सफर। मैं खुश हूँ। मगर इस खयाल से जी बेचैन है कि तुम बेक़रार होगी। अगर यह मालूम हो जाता कि तुम भी खुश हो, तो जी जाता। अब तो यही धुन है कि कब रूम पहुँचूँ। बस, रुखसत।

—तुम्हारा आज़ाद।

'हाँ, प्यारी सिपहआरा को खूब समझाना। उनका दिल बहुत नर्म है। इस वक्त खोजी पानी की सूरत देख कर मचल रहे हैं।'

हुस्नआरा—यह मुआ खोजी अभी जीता ही है!

सिपहआरा—उसे तो पानी का नाम सुन कर जूड़ी चढ़ आती थी।

हुस्नआरा—आखिर बेचारे जहाज़ पर सवार हो गये! अब देखें, रूम से कब खत आता है!

सिपहआरा—अब तो फ़ाल पर ईमान लायी ? देखा, मैं क्या कहती थी ? अब मिठाई खिलवाइए। जरी, कोई यहाँ आना। पाँच रुपये की पँचमेल मिठाई लाओ।

हुस्नआरा—यह क्या खब्त है ?

सिपहआरा—आपकी बला से। एक डली तुम भी खा लेना।

हुस्नआरा—खूब ! पाँच रुपये की मिठाई, और उसमें हमको एक डली मिले ? आते ही आते आधी न चख जाऊँ, तो कहना।

सिपहआरा—वाह, दे चुकी मैं ! ऐसी कच्ची नहीं हूँ।

हुस्नआरा—भला, किताब से आगे का हाल क्या मालूम होगा ? मुझे बड़ी हँसी आती है, जब कोई फ़ाल देखता है। आँखें बंद किये हुए थोड़ी देर बड़बड़ाये, और किताब खोली। फिर अपने-अपने तौर पर मतलब निकालने लगे। यह सब ढकोसला है। हमको बड़े उस्ताद ने सबक पढ़ाया है।

थोड़ी देर में सिपाही ने बाहर से आवाज़ दी कि मामा, मिठाई ले जाओ। सिपहआरा दौड़ी—मुझे देना। हुस्नआरा अलग फ़ुर्ती से झपटी कि हमें, हमें। अब मामा बेचारी किसको दे, एक चंगेल, दो गाहक। उसने हुस्नआरा को चंगेली दे दी।

हुस्नआरा—अब बतलाइए, खाने में लग्गा लगाऊँ ? बरफ़ी पर चाँदी के चमकते हुए वर्क़ कितनी बहार देते हैं।

सिपहआरा—मामा, तुम दीवानी हो गयी हो कुछ ? रुपये हमने दिये थे या इन्होंने ? पराया माल क्या झप से उठा दिया ! वाह-वाह ! हाँ-हाँ—कहती जाती हूँ, सुनती ही नहीं।

मामा—यह आपकी बड़ी...

सिपहआरा—चलो, बस रहने भी दो। ऊपर से बातें बनाती हो।

सिपहआरा ने मिठाई बाँटी, तो मामा हुस्नआरा की बूढ़ी दादी को भी उसमें से दस-पाँच डलियाँ दे आयी।

बूढ़ी—यह मिठाई कैसी !

मामा—हुजूर, हुस्नआरा ने फ़ाल देखी थी।

बूढ़ी—फ़ाल कैसी ?

मामा—चिट्ठी आयी थी कहीं से।

बूढ़ी—चिट्ठी कैसी ?

मामा—बीबी, वही जो हैं, देखिए, क्या नाम है उनका जदाई।

बूढ़ी—जदाई कैसी ? ला, मेरी छड़ी तो दे।

बूढ़ी बेगम कमर झुकाये, लठिया टेकते हुए चलीं। आ कर देखा, दोनों बहन मिठाई चख रही हैं।

बूढ़ी—यह मिठाई कैसी आयी है ?

सिपहआरा—अम्माँजान, हुस्नआरा हमसे शर्त हारी है। कहती थीं, हमारे दीवान-हाफ़िज़ में चार सौ सफ़े हैं; मैंने कहा, नहीं चार सौ चालीस हैं।

बूढी—यह बात थी! मामा सठिया गयी है क्या? जाने क्या-क्या बकती था।

शाम के वक्त दोनों बहनें सहेलियों के साथ हाथ में हाथ दिये छत पर अठखेलियाँ कर रही थीं। एक ने दूसरे के चुटकी ली, किसी ने किसी को गुदगुदाया, ज़रा ख़याल नहीं कि तिमंजिले पर खड़ी हैं, जरा पाँव डगमगाया तो ग़जब ही हो जाय। हवा सन-सन चल रही थी। एकाएक एक पतंग आ कर गिरी। सिपहआरा ने लपक कर लूट लिया। आहाहा, इस पर तो किसी ने कुछ लिखा है—माहीजालवाला पतंग, सब की सब दौड़ पड़ीं। हुस्नआरा ने ये शेर पढ कर सुनाये—

> बहुत तेज है आजकल तीरे मिजगाँ;
> कोई दिल निशाना हुआ चाहता है।
> मेरे कत्ल करने को आता है कातिल;
> तमाम आज किस्सा हुआ चाहता है।

हुस्नआरा का माथा ठनका कि कुछ दाल मे काला है। ताड गयी कि कोई नये आशिक पैदा हुए, मुझ पर या सिपहआरा पर शैदा हुए। मालूम नहीं, कौन है? कहीं मुझे बाहर देख तो नहीं लिया? दिमाग फिर गया है मुए का। जब सब सहेलियाँ अपने-अपने घर चली गयीं तो हुस्नआरा ने बहन से कहा—तुम कुछ समझीं? यह पतंग पर क्या लिखा था? तुम तो खेल रही थीं; मै उस वक्त से इसी फिक्र में हूँ कि माजरा क्या है?

सिपहआरा—कुछ-कुछ तो मै भी समझती हूँ; मगर अब किसी से कहो-सुनो नहीं।

हुस्नआरा—लच्छन बुरे हैं। इस पतग को फाड-फूड़ कर फेक दो। कोई देखने न पाये।

इतने मे खिदमतगार ने मामा को आवाज दी और मामा बाहर से एक लिफाफ़ा ले आयी। हुस्नआरा ने जो लिफाफा लिया, तो मारे खुशबू के दिमाग़ तर हो गया। फिर माथा ठनका। खुशबू कैसी! मामा से बोली—किसने दिया है?

मामा—एक आदमी खिदमतगार को दे गया है। नाम नहीं बताया। दिया और लंबा हुआ।

सिपहआरा—खोलो तो, देखो है क्या?

लिफाफा खोला, तो एक खत निकला। लिखा था—'एक ग़रीब मुसाफिर हूँ, कुछ दिनों के लिए आपके पडोस मे आ कर ठहरा हूँ। इसलिए कोई गैर न समझिएगा। सुना है कि आप दोनों बहनें शतरंज खेलने में बर्क हैं। यह नक्शा भेजता हूँ। मेरी ख़ातिर से इसे हल कर दो, तो बडा एहसान हो। मैंने तो बहुत दिमाग लडाया, पर नक्शा समझ में न आया।

—मिरज़ा हुमायूँ फर।'

इस ख़त के नीचे शतरंज का एक नक्शा दिया हुआ था।

सिपहआरा—आपा जी, सच कहना, यह तो कोई बड़े उस्ताद मालूम होते हैं। मगर

तुम ज़रा ग़ौर करो, तो चुटकियों में हल कर लो। तुम तो बड़े-बड़े नक्शे हल लेती हो। भला इसकी क्या हक़ीक़त है?

हुस्नआरा—बहन, यह नक्शा इतना आसान नहीं है। इसको देखो तो अच्छी तरह। मगर यह तो सोचो कि भेजा किसने है।

सिपहआरा—हुमायूँ फ़र तो किसी शाहज़ादे ही का नाम होगा। मामा को बुलाओ और कहो, सिपाही से पूछे, कौन लाया था? क्या कहता था? आदमी का पता मिल जाय, तो भेजनेवाले का पता मिला दाख़िल है।

मामा ने बाहर जा कर इशारे से सिपाही को बुलाया।

सिपाही—कहो, क्या कहती हो?

मामा—ज़री, इधर तो आ।

सिपाही—वहाँ कोने में क्या करूँ आनके। कोई वहाँ हौले-हौले बातें करते देखेगा, तो क्या कहेगा। यहाँ से निकलवा दोगी क्या?

मामा—ऐ चल छोकरे! कल का लौंडा, कैसी बातें करता है! छोटी बेगम पूछती हैं कि जो आदमी लिफ़ाफ़ा लाया था, वह किधर गया? कुछ मालूम है?

सिपाही—वह तो बस लाया, और देके चम्पत हुआ; मगर मुझे मालूम है, वह, सामनेवाले बाग़ में एक शाहज़ादे आनके टिके हैं, उन्हीं का चोबदार था।

हुस्नआरा ने यह सुना, तो बोली—शाहज़ादे तो हैं, मगर बदतमीज़।

सिपहआरा—यह क्यों?

हुस्नआरा—अव्वल तो किसी कुँआरी शरीफ़ज़ादी के नाम ख़त भेजना बुरा, दूसरे पतंग गिराया। ख़त भेजा, वह भी इत्र में बसा हुआ।

सिपहआरा—बा जी, यह तो बदगुमानी है कि ख़त को इत्र से बसाया। शाह-ज़ादे हैं, हाथ की ख़ुशबू ख़त में भी आ गयी। मगर ख़त अदब से लिखा है।

हुस्नआरा—उनको ख़त भेजने की जुर्रत क्योंकर हुई। अब ख़त आये, तो न लेना, ख़बरदार। वह शाहज़ादे, हमारा उनका मुक़ाबला क्या? और फिर बदनामी का डर।

सिपहआरा—अच्छा, नक्शा तो सोचिए। इसमें तो कोई बुराई नहीं!

हुस्नआरा ने बीस मिनट तक ग़ौर किया और तब हँस कर बोली—लो, हल कर दिया। न कहोगी। अल्लाह जानता है, बड़ी टेढ़ी खीर है। लाओ, फिर अब जवाब तो लिख भेजें। मगर डर मालूम होता है कि कहीं उँगली देते ही पहुँचा न पकड़ लें। जाने भी दो। मुफ़्त की बदनामी उठाना भला कौन सी दानाई है?

सिपहआरा—नहीं-नहीं बहन, ज़रूर लिख भेजो। फिर चाहे कुछ न लिखना।

हुस्नआरा—अच्छा, लाओ लिखें, जो होना होगा, सो होगा!

सिपहआरा—हम बतायें। ख़त-वत तो लिखो नहीं, बस, इस नक्शे को हल करके डाक में भेज दो।

शहर से कोई दो कोस के फ़ासले पर एक बाग़ है, जिसमें एक आलीशान इमारत बनी हुई है। इसी में शाहज़ादा हुमायूँ फ़र आ कर ठहरे हैं। एक दिन शाम के वक्त शाहज़ादा साहब बाग़ में सैर कर रहे थे और दिल ही दिल में सोचते जाते थे कि शाम भी हो गयी मगर खत का जवाब न आया। कहीं हमारा खत भेजना उन्हें बुरा तो न मालूम हुआ। अफ़सोस, मैंने जल्दी की। जल्दी का काम शैतान का। अपने खत और उसकी इबारत को सोचने लगे कि कोई बात अदब के खिलाफ़ ज़बान से निकल गयी हो तो ग़ज़ब ही हो जाय। इतने में क्या देखते हैं कि एक आदमी साँड़नी पर सवार दूर से चला आ रहा है। समझे, शायद मेरे खत का जवाब लाता होगा। खिदमतगारों से कहा कि देखो, यह कौन आदमी है? खत लाया है या खाली हाथ आया है? आदमी लोग दौड़े ही थे कि साँड़नी सवार हवा हो गया।

थोड़ी देर में एक चपरासी नज़र आया। समझे, बस, यह क़ासिद है। चपरासी ने दरबान को खत दिया और शाहज़ादा साहब की बाँछें खिल गयीं। दिल ने गवाही दी कि सारी मुरादें मिल गयीं। खत खोला, तो एक लेक्चर का नोटिस था। मायूस हो कर खत को रख दिया और सोचा कि अब खत का जवाब आना मुश्किल है। ग़म ग़लत करने को एक ग़ज़ल गाने लगे। इतने ही में डाक का हरकारा लाल पगिया जमाये, धानी दगला फड़काये, लहबर तोते की सूरत बनाये आ पहुँचा और खत दे कर रवाना हुआ। शाहज़ादे ने खत खोला और इबारत पढ़ी तो फड़क गये। हाय, क्या प्यारी ज़बान है, क्या बोल-चाल है। ज़बान और बयान में भी निगाह की तरह जादू कूट-कूट कर भरा है। उस नाज़ुक हाथ के सदक़े, जिसने ये सतरें लिखी हैं। लिखते वक्त कलाई लचकी जाती होगी। एक-एक लफ़्ज़ से शोखी टपकती है, एक-एक हरफ़ से रंगीनी झलकती है। और नक्शा तो ऐसा हल किया कि कलम तोड़ दिये। आखिर में लिखा था—

इश्क का हाल बेसवा जानें,
हम बहू-बेटियाँ ये क्या जानें?

खुद ही शेर पढ़ते थे और खुद ही जवाब देते थे।

एकाएक उनके एक दोस्त आये और बोले—कहिए, कुछ जवाब आया? या धता बता दिया?

शाहज़ादा—वाह, धता तुम जैसों को बताती होंगी। लो, यह जवाब है।

दोस्त—(लिफ़ाफ़ा पढ़ कर) वाह, बड़े अदब से खत लिखा है।

शाहज़ादा—जनाब, कुछ बाज़ारी औरतें थोड़े हैं। एक-एक लफ़्ज़ से शराफ़त बरसती है।

दोस्त—फिर पूछते क्या हो! गहरे हैं। हमें न भूलिएगा।

अब शाहजादे को फ़िक्र हुई कि किसी तरह मुलाकात की ठहरे। बने या बिगड़े। जब आमने-सामने बात हो, तब दिल को चैन आये। सोचते-सोचते आपको एक हिकमत सूझ ही गयी। मूँछों का सफ़ाया कर दिया, नकली बाल लगा लिये, ज़नाने कपड़े पहने और पालकी पर सवार हो कर हुस्नआरा के दरवाजे पर जा पहुँचे। अपनी महरी को साथ ले लिया था। महरी ने पुकारा—अरे, कोई है? जरी अंदर खबर कर दो कि मिरज़ा हुमायूँ फ़र की बहन मिलने आयी हैं।

बड़ी बेगम ने जो सुना, तो आ कर हुस्नआरा से बोलीं—जरा करीने से बैठाना। तमीज से बातें करना। कोई भारी सा जोड़ा पहन लो, समझीं!

हुस्नआरा—अम्मीजान, कपड़े तो बदल लिये हैं?

बड़ी बेगम—देखूँ। यह क्या सफ़ेद दुपट्टा है?

हुस्नआरा—नहीं, अम्मीजान, गुलाबी है। वही जामदानी का दुपट्टा जिसमें कामदानी की आड़ी बेल है।

बड़ी बेगम—बेटा, कोई और भारी जोड़ा निकालो।

हुस्नआरा—हमें तो यही पसंद है।

इतने में आशिक बेगम पालकी से उतरीं और जा कर बोलीं—आदाब बजा लाती हूँ।

हुस्नआरा—तस्लीम! आइए।

आशिक—आओ बहन, गले तो मिलें।

दोनों बहनें बेझिझक आशिक़ बेगम से गले मिलीं।

सिपहआरा—

आमद हमारे घर में किसी महलक़ा की है;
यह शाने किर्दगार यह क़ुदरत खुदा की है।

हुस्नआरा—

यह कौन आया है रख कर फूल, मुए अंबर अफ़शाँ में,
सबा इतरायी फिरती है जो इन रोज़ों गुलिस्ताँ में।

आशिक—

'सफ़दर' जबाँ से राजे मुहब्बत अयाँ न हो;
दिल आशनाए-दर्द हो, लब पर फ़ुग़ाँ न हो।

सिपहआरा—आपने आज ग़रीबों पर करम किया। हमारे बड़े नसीब।

आशिक—बहन, हमारी तो कई दिन से ख्वाहिश थी कि आपसे मिलें, मगर फिर हम सोचे कि शायद आपको नागवार हो। हम तो ग़रीब हैं। अमीरों से मिलते हुए ज़रा वह मालूम होता है।

हुस्नआरा—बजा है। आप तो खुदा के फ़ज़्ल से शाहज़ादी हैं, हम तो आपकी रिआया हैं।

आशिक—आप दोनों बहनें एक दिन कोठे पर टहल रही थीं, तो हुमायूँ फर ने मुझे बुला कर दिखाया था।

हुस्नआरा ने गिलौरी बना कर दी और आशिक बेगम ने उन्हीं के हाथों से खायी। कत्था केवडे में बसा हुआ, चाँदी-सोने का वर्क लगा हुआ, चिकनी डली और इलायची। ग़रज कि बड़े तकल्लुफ वाली गिलौरियाँ थी। थोड़ी देर के बाद तरह-तरह के खाने दस्तरख्वान पर चुने गये और तीनों ने मिल कर खाना खाया। खाना खा कर आशिक बेगम ने बेतकल्लुफी से हुस्नआरा की रानों पर सिर रख दिया और लेट रही। सिपहआरा ने उठ कर कश्मीर का एक दुशाला उढ़ा दिया और करीब आ कर बैठ गयी।

आशिक—बहन, अल्लाह जानता है, तुम दोनों बहनें चाँद को भी शरमाती हो।

हुस्नआरा—और आप ?

अपने जोबन से नहीं यार खबरदार हनोज ;
नाजो अंदाज से वाकिफ़ नहीं जिनहार हनोज।

तीनों मे बहुत देर तक बातें होती रहीं। दस बजे के करीब आशिक बेगम उठ बैठीं और फ़रमाया कि बहन, अब हम रुख्सत होंगे। जिंदगी है तो फिर मिलेंगे।

सिपहआरा—

बेचैन कर रहा है क्या-क्या दिलोजिगर को ;
हरदम किसी का कहना, जाते हैं हम तो घर को।

इस तरह मुहब्बत की बातें करके आशिक बेगम रुख्सत हुईं और जाते वक्त कह गयीं कि एक दिन आपको हमारे यहाँ आना पडेगा। पालकी पर सवार हो कर आशिक बेगम ने मामाओं, ख़िदमतगारों और दरबानों को दो-दो अशर्फियाँ इनाम की दीं और चुपके से मामा को एक तसवीर दे कर कहा कि यह दे देना।

कहारों ने तो पालकी उठायी और मामा ने अंदर जा कर तसवीर दी। हुस्नआरा ने देखा, तो धक से रह गयीं। तसवीर के नीचे लिखा था—

'प्यारी,

मैं आशिक बेगम नहीं हूँ, हुमायूँ फर हूँ। अब अगर तुमने बेवफाई की तो जहर खा कर जान दे दूँगा।'

हुस्नआरा—बहन, ग़जब हो गया !

सिपहआरा—क्या, हुआ क्या ? बोलो तो !

हुस्नआरा—लो, यह तसवीर देखो।

सिपहआरा—(तसवीर देख कर) अरे, गजब हो गया ! इसने तो बड़ा जुल दिया।

हुस्नआरा—(हीरे की कील नाक से निकाल कर) बहन, मै तो यह खा कर सो रहती हूँ।

सिपहआरा—(कील छीन कर) नफ् जालिम ने बड़ा धोखा दिया।

हुस्नआरा—हम गले मिल चुकीं। जालिम जानू पर सिर रख कर सोया।

सिपहआरा—मगर बा जी, इतना तो सोचो कि बहन कह-कह कर बात करते थे। बहन बना गये हैं।

हुस्नआरा—यह सब बातें हैं। किसकी बहन और कैसा भाई।—

वह यों मुझे देख कर गया है;
खाल उसकी जो खींचिए, सजा है।

सिपहआरा—वाह! किसी की मजाल पड़ी है जो हमसे शरारत करे?

हुस्नआरा—खबरदार, अब उससे कुछ वास्ता न रखना। आदमियों को ताकीद कर दो कि किसी का खत बेसमझे-बूझे न लें, वर्ना निकाल दिये जायँगे?

सिपहआरा—जरा सोच लो। लोग अपने दिल में क्या कहेंगे कि अभी तो इतने जोश से मिलीं और अभी यह नादिरी हुक्म।

हुस्नआरा—हाँ, सच तो है। अभी तक हमी तुम जानते हैं।

सिपहआरा—कहीं ऐसा न हो कि वह किसी से जिक्र कर दें।

हुस्नआरा—इससे इतमिनान रखो। वह शोहदे तो हैं नहीं।

सिपहआरा—वाह, शोहदे नहीं, तो और हैं कौन! शोहदों के सिर पर क्या सींग होते हैं?

हुस्नआरा—अब आज से छत पर न चढ़ना।

सिपहआरा—वाह बहन, बीच खेत चढ़ें। किसी ने देख ही लिया तो क्या! अपना दिल साफ रहना चाहिए।

हुस्नआरा—मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि शाहजादे साहब तुम्हारी फिक्र में हैं।

सिपहआरा—चलिए, बस, अब छेड़खानी रहने दीजिए।

हुस्नआरा—अरे वाह! दिल में तो खुशी हुई होगी। चाहे जबान से न कहो।

सिपहआरा—आप भी क्या वाही-तबाही बकती हैं?

हुस्नआरा—आखिर बुरा क्या है? शाहजादे हैं कि नहीं। और सूरत तो तुम देख ही चुकी हो। लो आज के दूसरे ही महीने दरवाजे पर शहनाई बजती होगी।

सिपहआरा—हम उठ कर चले जायँगे, हाँ! यह हँसी हमको गवारा नहीं!!

हुस्नआरा—खुदा की कसम, मैं दिल्लगी से नहीं कहती। आखिर उस बेचारे में क्या बुराई है। हसीन, मालदार, शौकीन, नेकबख्त।

सिपहआरा—बस, और दस-पाँच बातें कहिए न।

सिपहआरा के दिल पर इन बातों का बहुत बड़ा असर हुआ। आदमी की तबीयत भी क्या जल्द पलटा खाती है। अभी तो हुमायूँ फर को बुरा-भला कह रही थीं और अब दिल ही दिल में खिली जाती हैं कि हाँ, है तो सच। आखिर उनमें ऐब ही क्या है?

दोनों बहनों मे तो ये बाते हो रही थीं और वह महरी, जो आशिक बेगम के साथ

आयी थी, दरवाजे पर चुपकी खड़ी सुन रही थी। जब हुस्नआरा चुप हुईं, तो उसने अंदर पहुँच कर सलाम किया।

हुस्नआरा—कौन हो?

महरी—हुजूर, मैं हूँ अच्छन।

हुस्नआरा—कहाँ से आयी हो?

महरी—आप मुझे इतनी जल्द भूल गयीं! बेगम साहबा ने भेजा है।

हुस्नआरा—बेगम साहबा कौन?

महरी—वही आशिक बेगम जो आपसे मिल गयी हैं।

हुस्नआरा—कहो, क्या पैग़ाम भेजा है।

महरी—(मुसकिरा कर) हुजूर को ज़रा वहाँ तक तकलीफ़ दी है।

महरी का मुसकिराना दोनों बहनों को बहुत बुरा लगा। मगर करतीं क्या। महरी उन्हें चुप देख कर फिर बोली—बेगम साहबा ने फ़रमाया है कि अगर कुछ हर्ज न हो, तो इस वक्त हमारे यहाँ आइए।

सिपहआरा—कह देना, हमें फ़ुरसत नहीं।

महरी—उन्होंने कहा है कि अगर आपको फ़ुरसत न हो, तो मैं खुद ही आ जाऊँ।

सिपहआरा—जी, कुछ जरूरत नहीं है। बस, अब दूर ही से सलाम है। और अब आज से तुम न आना यहाँ। सुना कि नहीं?

महरी—बहुत अच्छा। लौंडी हुक्म बजा लावेगी। बेगम साहबा की जैसी नौकरी, वैसी ही हुजूर की।

सिपहआरा—चलो, बस। बहुत बातें न बनाओ। कह देना, खैर इसी में है कि अब कोई खत वत न आये। शाहजादे हैं, इससे छोड़ दिया, कोई दूसरा होता तो खून हो जाता। इतने बड़े शाहज़ादे और ग़रीब शरीफ़जादियों पर नज़र डालते हैं। बस चले, तो वह सजा दूँ कि उम्र भर याद करें। वाह! अच्छा जाल फैलाया है।

हुस्नआरा—बस, अब खामोश भी रहो। कोई सुन लेगा। अब कुछ कहो न सुनो। (महरी से) चलो, सामने से हटो।

महरी—हुजूर, जानबख्शी हो तो अर्ज़ करूँ।

हुस्नआरा—अब तुम जाओ, हमने कई दफ़े कह दिया। नहीं पछताओगी।

महरी रवाना हुई। क़सम खायी कि अब नहीं आने की। सिपहआरा का चेहरा मारे ग़ुस्से के लाल-भभूका हो गया। हुस्नआरा समझाती थीं कि बहन, अब और बातों का खयाल करो। लेकिन सिपहआरा ठंडी न होती थीं। बहुत देर के बाद बोलीं—बस, मालूम हुआ कि कोई शोहदा है; अगर सच्ची मुहब्बत है, तो हया और शर्म के साथ ज़ाहिर करना चाहिए या इस बेतुकेपन से?

४२

शाहजादा हुमायूँ फ़र महरी को भेज कर टहलने लगे, मगर सोचते जाते थे कि कहीं दोनों बहनें खफ़ा न हो गयी हों, तो फिर बेढब ठहरे। बात की बात जाय, और शायद जान के भी लाले पड़ जायँ। देखें, महरी क्या खबर लाती है। खुदा करे, दोनों महरी को साथ ले कर छत पर चली आवें। इतने में महरी आयी और मुँह फुला कर खड़ी हो गयी।

शाहजादा—कहो, साफ़-साफ़।

महरी—हुजूर, क्या अर्ज करूँ!

शाहजादा—यह तो हम तुम्हारी चाल ही से समझ गये थे कि बेढब हुई। कह चलो, बस।

महरी—अब लौंडी वहाँ नहीं जाने की।

शाहजादा—पहले मतलब की बात तो बताओ कि हुआ क्या?

महरी—मैंने जा कर परदे के पास से सुना कि आप ही की बातें चुपके-चुपके कर रही हैं। मैं जो गयी, तो बड़ी बहन ने रुखाई के साथ बातें कीं, और छोटी बहन तो बस, बरस ही पडीं। मैं खड़ी काँप रही थी कि किस मुसीबत में पड़ी। बहुत तेज होके बोलीं—अब न आना, नहीं तो तुम जानोगी। और उनसे भी कान खोलके कह देना कि बहुत चलें न निकलें। बहुत ही बिगड़ीं। मैं चोर की तरह चुपके-चुपके सुनती रही।

हुमायूँ—अफ़सोस! तो बहुत ही बिगड़ीं?

महरी—क्या कहूँ हुजूर, अपने आपे ही में नहीं थीं।

हुमायूँ—हमने बड़ी गलती की। पहले तो हमें जाना न था, और गये तो पढ़ चलवाना न था।

महरी—अब जाने वाने का इरादा न कीजिएगा?

दूसरे दिन हुमायूँ फ़र छत पर निकले, तो क्या देखते हैं कि हुस्नआरा बेगम अपने कोठे पर चढ़ी हैं और मुँह पर नकाब डाले खड़ी हैं। इतने में सिपहआरा भी ऊपर आयीं और शाहजादे को देखते ही उचक कर आड़ में हो रहीं। दम के दम में हुस्नआरा भी आँखों से ओझल हो गयीं। बेचारे नजर भर कर देखने भी न पाये थे कि दोनों नजर से गायब हो गयीं। सोचे, ऐसी ही हया फट पड़ी थी, तो कोठे पर क्यों आयीं!

अब उधर की कैफ़ियत सुनिए। हुस्नआरा को मालूम ही न था कि हजरत इस वक्त कोठे पर टहल रहे हैं। जब सिपहआरा ने कोठे पर आ कर शाहजादे को देख लिया तो चुपके से कहा—बहन, यहीं बैठ जाओ, वह ताक-झाँक से बाज़ न आवेंगे

हुस्नआरा ने छलाँग भरी, तो खट से नीचे। सिपहआरा भी उचक कर जीने पर जा पहुँची।

हुस्नआरा—पटकी पड़े। ऐ वाह, अच्छा घर परख लिया है।

सिपहआरा—मेरा बस चले, तो उसका घर उजड़वा दूँ।

हुस्नआरा—यह क्या सितम करती हो? घर आबाद करते हैं या उजड़वाते हैं?

सिपहआरा—बा जी, अल्लाह खैर करे। यह मुआ जब देखो, कोठे पर खड़ा रहता है।

हुस्नआरा—तो तुम काहे को अपनी ज़बान खराब करती हो? आदमी ही तो वह भी है।

सिपहआरा—बा जी, तुम चाहे मानो, चाहे न मानो; यह मुआ बहुरुपिया है कोई।

इतने में एक लौंडी ने आ कर कहा—लीजिए, बड़ी बेगम साहब ने यह मिठाई दी है। वह जो उस दिन आयी नहीं थीं, उन्होंने मिठाइयों के दो ख्वान भेजे हैं।

लौंडी की लड़की का नाम प्यारी था। उसने मिठाई जो देखी, तो तुतला कर बोली—जला सी हमे दीजिए।

सिपहआरा—अरे वाह, इनको दीजिए। बड़ी वह बनके आयी हैं! अच्छा, इतना बता दे कि कै ब्याह करेगी?

प्यारी—पहले मिठाई दीजिए, तो बताऊँ।

सिपहआरा—तो मिल चुकी। गड़ैया में मुँह धो आ।

प्यारी—मैं एक खसम करूँगी, औल फिल छोड़के दूसला। और फिल तीसला। फिल चौथा। उन सबको लातें माल माल के निकाल दूँगी। ले, अब दीजिए।

सिपहआरा—जा अब न दूँगी।

हुस्नआरा—दे दो, दे दो, रो रही है।

सिपहआरा—अच्छा ले, मगर पानी न पीने दूँगी।

प्यारी—हाँ, न पीऊँगी। लाओ तो जला।

इस पर कहकहा पड़ा। जरा सी लड़की और कैसी बातें बनाती है! इतने में बड़ी बेगम आ कर बोलीं—अरे, तुम्हारी वही गोइयाँ जो उस दिन आयी थीं, उन्हीं के यहाँ से मिठाई के दो ख्वान आये हैं। एक औरत साथ थी। कह गयी है कि दोनों बहनों को कल बुलाया है। सो कल किसी वक्त चली जाना, घड़ी दो घड़ी दिल बहलाके चली आना। नहीं तो मुफ्त की शिकायत होगी।

हुस्नआरा—कल की कल के हाथ है अम्माँजान!

बेगम साहबा तो चली गयीं। इधर हुस्नआरा का रंग उड़ गया। बोलीं—बहन, यह टेढ़ी खीर है।

सिपहआरा—एक काम कीजिए। अब वे खुशामद के काम न चलेगा। उनके नाम एक खत लिखिए और साफ-साफ मतलब समझा दीजिए। मुए को अच्छे-अच्छे

लटके याद हैं। जब इधर दाल न गली, तो अम्माँजान से लासा लगाया और वह भी कितनी भोली हैं !

एकाएक दरवाजे पर एक नया गुल खिला। दस बारह आदमियों ने मिल कर गाना शुरू किया—

मान करे नँदलाल सों,
सोहागिन जचा मान करे नँदलाल सों।
दूध-पूत और अन्न-धन-लच्छमी
गोद खिलाये नँदलाल सों। मान०।

दस पाँच आदमी गाते हैं। दो-चार ताल देते जाते हैं। दो-एक मजीरा बजाते हैं। एक हजरत ढोलकी थप-थपाते हैं।

घर भर में खलबली मच गयी कि यह माजरा क्या है? लड़का किसके हुआ है? बड़ी बेगम बेवा, दोनों बहनें कुँआरी। यह क्या अंधेर है भई!

मामा—अरे, तुम कौन लोग हो?

कई आदमी—ऐ हुजूर, खुदा सलामत रखे। भाँड़ हैं।

एक साहब हिनहिना कर बोले—मेरे बछेड़े की कुछ न पूछो। यह माँ के पेट ही से हिनहिनाता निकला था।

दूसरे साहब ने उचक कर फ़रमाया - हैं-हैं-हैं, दो बागे है, और उधर तालियाँ बज रही हैं। 'मान करे नँदलाल...'

बड़ी बेगम—अरे लोगों, यह है क्या? यह दिन-दहाड़े क्या अंधेर है? इन निगोड़े भाँड़ों से पूछो—आये किसके यहाँ हैं?

दरबान—चुप रहो जी, आखिर कहाँ आये हो?

एक भाँड—वाह शेरा, क्यों न हो। क्या तुम हिलाके भूँके हो।

दरबान—आखिर तुम लोगों से किसने क्या कहा? कुछ घास तो नहीं खा गये हो?

मामा—यह क्या गजब करते हो!

भाँड—गजब पड़े बुरे की जान पर, और आँख लड़े हमसे।

सिपाही—मियाँ, कसम खा कर कहते हैं कि यहाँ लड़का-बड़का नहीं हुआ। तुम मानते ही नहीं हो।

भाँड—वाह जवान! क्यों न हो, खड़ी मूँछे और चढ़ी दाढ़ी।

सिपाही—(आहिस्ता) भला लड़का होगा किसके? दो लड़कियाँ, वे कुँआरी हैंगी, एक बड़ी बेगम, वह बढ़ी खप्पट। और तो कोई औरत ही नहीं; तुम यह बक क्या रहे हो!

भाँड—यह अच्छी दिल्लगी है भई, फिर उस मर्दक ने कहा ही क्यों था?

सिपाही—यह काँटे किसके बोये हुए हैं?

भाँड—अरे साहब, कुछ न पूछिए। बड़ा चकमा हो गया।

दरबान—ले, अब मजीरा वजीरा हटाओ; नहीं तो यहाँ ठीक किये जाओगे।

भाँड़—वल्लाह, हो बड़े नमकहलाल।

उधर दोनों बहनो में यों बातें होने लगीं—

सिपहआरा—यह उसी की शरारत है।

हुस्नआरा—किनकी? नहीं; तोबा।

सिपहआरा—आप चाहे न मानें, हम तो यही कहेंगे।

हुस्नआरा—बहन, वह शाहज़ादा हैं, उनसे यह हरकत नहीं हो सकती।

सिपहआरा—अच्छा, फिर ये भाँड़ क्यों आये? अगर किसी ने बहका कर भेजा नहीं, तो आये कैसे?

हुस्नआरा—हाँ, कहती तो सच हो; मगर अल्लाह जानता है, उससे ऐसी हरकत नहीं हो सकती।

सिपहआरा—आप मेरे कहने से उन्हें एक खत लिख भेजिए कि फिर ऐसी हरकत की, तो हम जहर ही खा लेंगे।

हुस्नआरा खत लिखने पर राजी हो गयीं और यों खत लिखा—

'हया से मुँह न मोड़ेंगे, सताये जिसका जी चाहे;
वफ़ादारी में हमको आजमाये जिसका जी चाहे।
कभी मानिंदे गौहर आबरू 'सफदर' न जायेगी;
बजाहिर खाक में हमको मिलाये जिसका जी चाहे।

अरे जालिम, कुछ खुदा का डर भी है? क्यों जी, शरीफ़ों की ये ही हरकतें होती है? शर्म नहीं आती! बहन बना कर अब ये शरारतें करते हो! ये ही मरदों के काम हैं! अगर अब किसी को भेजा तो हम हीरे की कनी खा लेंगी। खून तुम्हारी गर्दन पर होगा! आखिर तुम अपने दिल में हमको समझते क्या हो? अगर भूत सिर पर सवार है, तो कहीं और मुँह काला कीजिए। हम घरगिरस्त शरीफ़ज़ादियाँ, इन बातों से क्या वास्ता? दिल लेना जानें न दिल देना।

'काँटों में न हो अगर उलझना,
थोड़ा लिखा बहुत समझना।'

हुमायूँ फ़र के पास जब यह खत पहुँचा तो बहुत शरमाये। समझ गये कि यहाँ हमारी दाल न गलेगी। दिल में इरादा कर लिया कि अब भूल कर भी ऐसी चालें न चलेंगे।

४४

हुस्नआरा और सिपहआरा, दोनों रात को सो रही थीं कि दरबान ने आवाज दी—मामा जी, दरवाजा खोलो।

मामा—दिलबहार, देखो कौन पुकारता है?

दिलबहार—ऐ वाह, फिर खोल क्यों नहीं देतीं?

मामा—मेरी उठती है जूती, दिन भर की थकी-माँदी हूँ।

दिलबहार—और यहाँ कौन चंदन-चौकी पर बैठा है?

दरबान—अजी, लड़ लेना पीछे, पहले किवाँड़े खोल जाओ।

मामा—इतनी रात गये क्यों आफत मचा रखी है?

दरबान—अजी, खोलो तो, सवारियाँ आयी हैं।

हुस्नआरा—कहाँ से? अरे दिलबहार! मामा! क्या सब की सब मर गयीं? अब हम जायँ दरवाजा खोलने?

हुस्नआरा की आवाज सुन कर सब की सब एक दम उठ खड़ी हुईं। मामा ने परदा करा कर सवारियाँ उतरवायीं।

सिपहआरा—अख्खा रूहअफ़ज़ा बहन हैं, और बहारबेगम! आइए, बंदगी।

ये दोनों हुस्नआरा की चचेरी बहनें थीं। दोनों की शादी हो चुकी थी। ससुराल से दोनों बहनों से मुलाकात करने आयी थीं। चारों बहनें गले मिलीं। खैर-आफ़ियत के बाद हुस्नआरा ने कहा—दो बरस के बाद आप लोगों से मुलाकात हुई।

बहारबेगम—हाँ, और क्या!

सब की सब बातें करते-करते सो गयीं। सुबह को हुस्नआरा ने बड़ी बेगम से दोनों बहनों के आने की खबर सुनायी।

बड़ी बेगम—तभी मेरी बायीं आँख फड़कती थी। मैं भी कहूँ कि अल्लाह, क्या खुशखबरी सुनूँगी। कहाँ, हैं कहाँ, जरा बुलाओ तो।

हुस्नआरा—अभी सो रही हैं।

बड़ी बेगम—ऐ, तो जगा दे बेटा! अच्छी तो हैं?

हुस्नआरा ने आ कर देखा, तो दोनों ग़ाफ़िल सो रही हैं। रूहअफ़ज़ा की लटें काली नागिन की तरह बल खा कर तकिये पर से पलँग के नीचे लहरा रही हैं। बहारबेगम का दुपट्टा कहीं है, दुलाई कहीं। हाथ सीने पर रखे हुए खर्राटे ले रही हैं।

हुस्नआरा—अजी, सोती ही रहिएगा! अम्माँजान बुलाती हैं।

रूहअफज़ा—बहन, अब तक आँखों में नींद भरी है। नमाज़ पढ़ लूँ, तो चलूँ।

हुस्नआरा—(बहारबेगम का हाथ हिला कर) ऐ बहन, अब उठो।

बहारबेगम—अल्लाह, इतना दिन चढ़ आया! सारे घर में धूप फैल गयी।

हुस्नआरा—उठिए, अम्मीँजान बुला रही हैं।

बहारबेगम—रूहअफजा को तो जगाओ।

सिपहआरा—वह क्या बैठी हैं सामने।

दोनों ने उठ कर नमाज पढ़ी और बड़ी बेगम के पास चलीं। रूहअफ़जा जाते ही बड़ी बेगम से चिमट गयीं। बहार भी उनसे गले मिलीं और अदब के साथ फर्श पर बैठीं।

बड़ी बेगम—क्यों रूहअफ़जा, अब तो उस बीमारी ने पीछा छोड़ा? क्या कहते हैं, तोबा मुझे तो उसका नाम भी नहीं आता।

सिपहआरा—(मुसकिरा कर) डेंगू बुखार। आप तो रोज-रोज भूल जाती हैं।

बड़ी बेगम—हाँ, वही डंकू।

सिपहआरा—डंकू नहीं, डेंगू।

रूहअफजा—अब एक महीने से पीछा छुटा है कहीं। मेरी तो जान पर बन आयी थी।

बड़ी बेगम—चेहरा कैसा जर्द पड़ गया है!

बहारबेगम—अब तो आप इन्हें अच्छी देखती हैं! यह तो घुल कर काँटा हो गयी थीं।

बड़ी बेगम—हकीम मुहम्मदहुसेन ने इलाज किया था न वहाँ?

रूहअफजा—जी नहीं, एक डॉक्टर था।

बड़ी बेगम—ऐ है, भूले से इलाज न करना डागडर-वागडर का।

रूहअफजा—मैं तो उसकी बोली ही न समझूँ। कहे, जबान दिखाओ। जब मुँह दिखावें तब तो जबान दिखावें? मैंने कहा—यह तो हश्र तक नहीं होने का। फिर नब्ज देखी, तो हाथ परदे से निकाल लिया और कहा, चूड़ियाँ उतार डालो। मैंने सोने की चूड़ियाँ तो उतार डालीं, मगर शीशे की एक चूड़ी पहने रही। तब कहने लगा, हमसे बातें करो। तब तो मैंने दूल्हा भाई को बुलाया और कहा—वाह साहब, आप तो अच्छे डॉक्टर को लाये! मुँह क्या, हम तो एड़ी भी न दिखावें और कहता है, हमसे बातें करो। यहाँ निगोड़ी गिटपिट किसे आती है! बस, दर-गुजरी ऐसे इलाज से। आप इन्हें चलता बताइए। इतने में उसने घड़ी जेब से निकाली और कहने लगा—गिनती गिनो। सुनिए, जैसे लड़कियों के मदरसे में इम्तहान ले रहे हों। आखिर मैंने एक-दो-पाँच-बीस ग्यारह—अनाप-शनाप बका। बड़ी कड़वी दवाइयाँ दीं। मारे बच गयी।

बड़ी बेगम—बहार। यह तुम महीनों खत क्यों नहीं भेजती हो?

बहारबेगम—अम्मीँजान, खतों का तो मैं तार बाँध दूँ, मगर जब कोई लिखने-वाला भी हो।

रूहअफजा—यह तो गिरस्ती के धंधे मे ऐसी पड़ गयीं कि पढ़ा लिखा सब चौपट कर दिया।

हुस्नआरा—और दूल्हा भाई ने तो खत लिखने की कसम खायी है।

रूहअफजा—दिन भर बैठे शेर कहा करते हैं।

बड़ी बेगम—कहो, तुम्हारी सास तो अच्छी हैं?

बहारबेगम—हाँ, न मुझे मौत आती है, न उन्हें।

हुस्नआरा—कल परसों तक दूल्हा भाई यहाँ आवेंगे, तो मैं उनको खूब झाड़ूँगी।

बड़ी बेगम—बहार, सच्ची बात तो यह है कि तुम भी जरा तेज-मिजाज हो।

सिपहआरा—जो एक गर्म और एक नर्म हो, तो बात बने। और जो दोनों तेज हुए, तो कैसे बने?

बहारबेगम—अब तुम अपनी सास से न लड़ना। तुम नर्म ही रहना। मेरे तो नाक मे दम आ गया।

बड़ी बेगम—अबकी मिरजा यहाँ आयें, तो समझाऊँ।

बहारबेगम—अम्माँजान, मुझसे उनसे हश्र तक न बनेगी। जो कोई लौंडी-बाँदी भी मुझसे अच्छी तरह बातें करे, तो जल मरती हैं। और मैं जान-बूझ कर और जलाती हूँ।

हुस्नआरा—बहन, मिल-जुल कर रहना चाहिए।

बहारबेगम—जब तुम ससुराल जाओगी, ऐसी ही सास पाओगी और फिर मिल-जुल कर रहोगी, तो सात बार सलाम करूँगी।

रूहअफजा—झगड़ा सारा यह है कि दूल्हा भाई इनकी खातिर बहुत करते हैं। बस, इनकी सास जली मरती हैं कि यह जोरू की खातिर क्यों करता है?

बहारबेगम—अल्लाह जानता है, हजारों दफे तरह दे जाती हूँ; मगर जब नहीं रहा जाता, तो मैं भी बकने लगती हूँ। मुझे तो उन्होंने बेहया कर दिया। अब वह एक कहती हैं, तो मैं दस सुनाती हूँ।

बड़ी बेगम—(पीठ ठोक कर) शाबाश!

हुस्नआरा—मेरी तरफ़ से पीठ ठोक दीजिएगा।

बहारबेगम—बहन, अभी किसी से पाला नहीं पड़ा। हमको तो ऐसा दिक कर रखा है कि अल्लाह करे, अब वह मर जायँ, या हम।

चारों बहनें यहाँ से उठ कर अपने कमरे में गयीं और बनाव-सिंगार करने लगीं। हुस्नआरा, सिपहआरा और रूहअफजा तो बन-ठन कर मौजूद हो गयीं; मगर बहारबेगम अभी बाल ही सँवार रही थीं।

रूहअफजा—इन्हें जब देखो, बाल ही सँवारा करती हैं।

बहारबेगम—तुम आये दिन यही ताना दिया करती हो।

रूहअफजा—ऐसी तो सूरत भी नहीं अल्लाह ने बनायी है!

बहारबेगम ने कोई दो घंटे में कंघी-चोटी से फ़रागत पायी। फिर चारों निकल कर बातें करने लगीं। सिपहआरा डली कतरती थीं, हुस्नआरा गिलौरियाँ बनाती थीं,

रूहअफ़ज़ा एक तसवीर की तरफ़ गौर से देखती थीं; मगर बहारबेगम की निगाह आईने ही पर थी।

सिपहआरा—अरे, अब तो आईना देख चुकीं? या घंटों सूरत ही देखा कीजिएगा?

बहारबेगम—तुम कहती जाओ, हम जवाब ही न देंगे।

रूहअफ़ज़ा—अल्लाह जानता है, इन्हें यह मरज़ है।

सिपहआरा—हाँ, मालूम तो होता है।

बहारबेगम—तुम सब बहनें एक हो गयीं। अपनी ही ज़बान थकाओगी।

हुस्नआरा—रूहअफ़ज़ा, तुम उठ कर आईने पर कपड़ा गिरा दो।

रूहअफ़ज़ा—चिढ़ जायँगी।

हुस्नआरा—हाँ बहन, बताओ तो, यह बात क्या है? सास से बनती क्यों नहीं तुमसे?

बहारबेगम—ऐसी सास को तो बस, चुपके से ज़हर दे दे। कुछ कम सत्तर की होने आयीं, अभी ख़ासी कटौता सी बनी हैं। मेरा हाथ पकड़ लें, तो छुड़ाना मुश्किल हो जाय। मुई देवनी है।

हुस्नआरा—क्या यह भी कोई ऐब है?

बहारबेगम—एक दिन का ज़िक्र सुनो, किसी के यहाँ से महरी आयी। कुछ मेवे लायी थी। वह उस वक्त झूठ-मूठ क़ुरान-शरीफ पढ़ रही थीं। महरी ने आके मुझको सलाम किया और मेवे की तश्तरी सामने रख दी। बस, दिन भर मुँह फुलाये रहीं।

हुस्नआरा—मगर बातें तो बड़ी मीठी-मीठी करती हैं।

बहारबेगम—एक दिन किसी ने उनको दो चकोतरे दिये। उन्होंने एक चकोतरा मुझको भेजा और एक मेरी ननँद को। वह उनसे भी बढ़ कर बिस की गाँठ। जा कर माँ से जड़ दिया कि भाई ने हमको आधा सड़ा हुआ चकोतरा दिया और भाभी को बड़ा सा! बस, इस पर सुबह से शाम तक चरखा कातती रहीं।

हुस्नआरा—मैं एक बात पूछूँ? सच-सच कहना। दूल्हा भाई तो प्यार करते हैं?

बहारबेगम—यही तो ख़ैर है।

हुस्नआरा—दिल से?

बहारबेगम—दिल और जान से

हुस्नआरा—भला, माँ से बनती है।

बहारबेगम—वह ख़ुद जानते हैं कि बुढ़िया चिड़चिड़ी औरत है।

हुस्नआरा—बहन, वह तो बड़ी हैं ही, मगर तुम भी तेज़ी के मारे उनको और जलाती हो। जो मिलके चलो, वह तुम्हारा पानी भरने लगें।

बहारबेगम—अच्छा तुम्हीं बताओ, कैसे मिल के चलूँ?

हुस्नआरा—अब की जब जाओ, तो अदब के साथ झुक कर सलाम करो।

बहारबेगम—किसको?

हुस्नआरा—अपनी सास को, और किसको।

बहारबेगम—वाह ! मर जाऊँ, मगर सलाम न करूँ मुरदार को ।

हुस्नआरा—बस, यही तो बुरी बात है ।

बहारबेगम—रहने दीजिए, बस । वह तो हमको देख कर जल मरें, और हम उनको झुकके सलाम करें । एक दिन मामा से बोलीं कि हमारा पानदान उसको क्यों दे आयी ? मेरे मुँह से बस, इतनी-सी बात निकल गयी कि मेरी सास काहे को हैं, यह तो मेरी सौत हैं । बस, इस पर इतना बिगड़ीं कि तोबा ही भली !

हुस्नआरा—बहन, तुमने भी तो ग़ज़ब किया । तुम्हारे नज़दीक यह इतनी सी ही बात थी ? सास को सौत बनाया, और उसको इतनी सी ही बात कहती हो ! अगर तुम्हारी बहू आये और तुम्हें सौत बनाये, तब देखूँगी, उछलती-कूदती हो कि नहीं ।

सिपहआरा—उफ् ! बड़ी बुरी बात कही ।

रूहअफ़ज़ा—तो अब बन चुकी बस ।

बहारबेगम—तुम सबको उसने कुछ रिशवत ज़रूर दी है । जब कहती हो, उसी की सी ।

सिपहआरा—हमारी बहन, और ऐसी मुँह फ़ट ! सास को सौत बनाये !

हुस्नआरा—और फिर शरमाये न शरमाने दे ।

बहारबेगम—अच्छा बताइए, तो पहले झुकके सलाम करूँ खूब जमीन पर सो कर । फिर ?

हुस्नआरा—मेरे तो बहन, रोंगटे खड़े हो गये कि तुमसे यह कहा क्योंकर गया !

बहारबेगम—बताओ-बताओ । हमारी क़सम, बताओ ।

हुस्नआरा—तुम हँसोगी, और हमें होगा रंज ।

बहारबेगम—नहीं, हँसेंगे नहीं । बोलो ।

हुस्नआरा—जा कर सलाम करो ।

बहारबेगम—जो वह जवाब न दें, तो अपना-सा मुँह ले कर रह जाऊँ ?

सिपहआरा—वाह ! ऐसा हो नहीं सकता ।

हुस्नआरा—न जवाब दें, तो कदमों पर गिर पड़ो ।

बहारबेगम—मेरी पैजार गिरती है क़दमों पर । वह जैसा मेरे साथ करती हैं, वैसा उनकी आँखों, घुटनों के आगे आये ।

हुस्नआरा—खर्च तो उजला है, या कंजूस है ?

बहारबेगम—तीन सौ वसीके के हैं, ढाई सौ गाँव से आते हैं । नकद कोई डेढ़ लाख से ज्यादा ही ज़्यादा होगा । मकान, बाग़ दूकानें अलग हैं । वकालत में कोई छह सात सौ का महीना मिलता है ।

हुस्नआरा—तुमको क्या देते हैं ?

बहारबेगम—बुढ़िया से चुरा कर मेरे ऊपर के खर्च के लिए सौ रुपये मुकर्रर हैं ।

सिपहआरा—रूहअफ़ज़ा बहन, तुम्हारे मियाँ क्या तनख्वाह पाते हैं ?

रूहअफ़ज़ा—चार सौ हुए हैं । चार-पाँच सौ ज़मीन से मिल जाते हैं ।

हुस्नआरा—तुम्हारी सास तो अच्छी हैं।

रूहअफ़ज़ा—हाँ, बेचारी बड़ी सीधी हैं। हाँ, उनकी लड़की ने अलबत्ता मेरी नाक में दम कर दिया है। जब आती है, रोज माँ को मरा करती है।

सिपहआरा—बहारबेगम जो वहाँ होतीं, तो उनसे भी न बनती।

बहारबेगम—अच्छा, चुप ही रहिएगा, नहीं तो काट खाऊँगी। बड़ी वह बनके आयी हैं।

इतने मे काली-काली घटा छा गयी। ठंडी-ठंडी हवा चलने लगी। बहार ने कहा—जी चाहता है, छत पर से दरिया की सैर करें। सबने कहा—हाँ-हाँ, चलिए। मगर हुस्नआरा को याद आ गयी कि हुमायूँ फर जरूर खबर पायेंगे और कोठे पर आ के सतायेंगे। लेकिन मजबूर थी। चारों चौकड़ियाँ भरती हुई छत पर जा पहुँचीं। हवा इस जोर से चलती थी कि दुपट्टा खिसका जाता था। गोरा-गोरा बदन साफ नजर आता था। किसी ने जा कर हुमायूँ फ़र से कह दिया कि इस वक्त तो सामने-वाला कोठा इंदर का अखाड़ा हो रहा है। उनको ताब कहाँ? चट से कोठे पर आ पहुँचे। सिपहआरा ऊपर के कमरे में हो रहीं। रूहअफ़ज़ा वहीं बैठ गयीं। हुस्नआरा ने एक छलाँग भरी, तो रावटी मे। मगर बहारबेगम ने बेढब आँखें लड़ायीं। हुमायूँ फ़र ने बहुत झुक कर सलाम किया।

बहारबेगम—आँखें ही फूटे, जो इधर देखे।

हुमायूँ—(हाथ के इशारे से) अपना गला आप काट डालूँगा।

बहारबेगम—शौक से।

नन्हीं-नन्हीं बूँदे पड़ने लगीं और चारों परियाँ नीचे चल दीं। मिरजा हुमायूँ फ़र मुँह ताकते रह गये।

हुस्नआरा—(बहार से) आप तो खूब डटके खड़ी हो गयीं।

बहारबेगम—क्यों, क्या कोई घोल कर पी जायगा! मैं इन्हें जानती हूँ, हुमायूँ फ़र तो हैं।

सिपहआरा—तुम क्योंकर जानती हो बहन!

बहारबेगम—ऐ वाह, और सुनिएगा लड़कपन में हम खेला किये हैं। इनके साथ। खूब चपतें जमाया किये हैं इनको! इनकी माँ और दादी में खूब झोटमझोटा हुआ करता था।

इतने में मामा ने आ कर कहा—बड़ी बेगम साहबा ने ये मेवे भेजे हैं।

सिपहआरा—देखूँ। ये चिलगोजे लेती जाओ।

प्यारी—हमको दीजिए।

सिपहआरा—इनको दीजिए। 'पीर न शहीद, नकटों को छापा।' सबके बदले इनको दीजिए।

हुस्नआरा—अच्छा, पहले सलाम कर।

चारों बहनों ने मजे से मेवे चखे। एक दूसरी के हाथ से छीन-छीन कर खाती थीं। जवानी की उमंग का क्या कहना!

उधर मिरजा हुमायूँ फ़र अपनी छत पर खड़े यह शेर पढ़ रहे थे—

न मुड़ कर भी बेदर्द कातिल ने देखा,
तड़पते रहे नीम जाँ कैसे-कैसे।

जब बड़ी देर तक छत पर किसी को न देखा तो, यह शेर जबान पर लाये—

कल बदामोज (रकीब) ने क्या तुमको सिखाया है हाय!
आज वह आँख, वह चमक, वह इशारा ही नहीं।

४५

एक दिन हुस्नआरा को सूझी कि आओ, अब की अपनी बहनो को जमा करके एक लेक्चर दूँ। बहारबेगम बोलीं—क्या ? क्या दोगी ?

हुस्नआरा—लेक्चर-लेक्चर। लेक्चर नहीं सुना कभी ?

बहारबेगम—लेक्चर क्या बला है ?

हुस्नआरा—वही, जो दूल्हा भाई जलसों मे आये दिन पढ़ा करते हैं।

बहारबेगम—तो हम क्या तुम्हारे दूल्हा भाई के साथ-साथ घूमा करते हैं ? जाने कहाँ-कहाँ जाते हैं, क्या पढ़-पढके सुनाते हैं। इतना हमको मालूम है कि शेर बहुत कहते हैं। एक दिन हमसे कहने लगे—चलो, तुमको सैर करा लाये। फिटन पर बैठ लो। रात का वक्त है, तुम दुशाले से खूब मुँह और जिस्म चुरा लेना। मैने कानों पर हाथ धरे कि न साहब, बंदी ऐसी सैर से दरगुजरी। वहाँ जाने कौन-कौन हो, हम नहीं जाने के।

सिपहआरा—अब की आवें तो उनके साथ हम जरूर जायें।

बहारबेगम—चलो, बैठो, लड़कियाँ बहनोइयों के साथ यों नहीं जाया करतीं।

रूहअफजा—मगर सुनेगा कौन ? दस-पाँच लड़कियाँ और भी तो हों कि हमी-तुम टुटरूँ टूँ ?

सिपहआरा—देखिए, मै बुलवाती हूँ। अभी मामा को भेजे देती हूँ।

हुस्नआरा—मगर नजीर को न बुलवाओ। उनके साथ जानीबेगम भी आयेंगी वह बात बात में शाखें निकालती हैं। उन्हें खब्त है कि हमसे बढ़ कर कोई हसीन ही नहीं। 'शक्ल चुडैलों की, नाज परियों का'; दिन-रात बनाव-सँवार ही में लगी रहती हैं।

सिपहआरा—फिर अच्छा तो है ! बहारबेगम से भिड़ा देना।

थोड़ी देर मे डोलियों पर-डोलियाँ और बग्घियों पर बग्घियाँ आने लगी। दरबान बार-बार आवाज देता था कि सवारियाँ आयी हैं। लौंडियाँ जा-जा कर मेहमानों को सवारियों पर से उतरवाती थीं और वे चमक-चमक कर अंदर आती थीं। आखिर में जानीबेगम और नजीरबेगम भी आयीं। जानीबेगम की बोटी-बोटी फड़कती थी; आँखें नाचती रहती थीं। नजीरबेगम भोली-भाली शरमीली लड़की थी। शरम से आँखें झुकी पड़ती थीं। जब सब आ चुकीं, तो हुस्नआरा ने अपना लेक्चर सुनाना शुरू किया—

'मेरी प्यारी बहनो, सास-बहुओं के झगड़े, ननँद-भावजों के बखेड़े, बात-बात पर तकरार, मियाँ-बीबी की जूती-पैजार से खुदा की पनाह। इन बुरी बातों से खुदा बचाये। भलेमानसों की बहू-बेटियों में ऐसी बात न आने पाये। इस फूट की हमारे ही देश में इतनी गर्म्बाजारी है कि सास की जबान पर कोसना जारी है, बहू मसरूफ

भिरिया व जारी है और मियाँ की अक्ल मारी है। ननँद भावज से मुँह फुलाये हुए, भावज ननँद से त्योरियाँ चढ़ाये हुए। बहू हिचकियाँ ले ले कर रोती है, सास ज़हर खा कर सोती है। और, जो सास गुस्सेवर हुई और बहू ज़बान की तेज़, तो मार-पीट की नौबत पहुँचती है। मियाँ अगर बीवी की सी कहें, तो अम्माँ की झुड़कियाँ सहें; अम्माँ की सी कहें, तो बीवी की बातें सुनें। माँ उधर, बीवी इधर कान भरती है, वह इनके और यह उनके नाम से कानों पर हाथ धरती हैं।

'मगर ताली एक हाथ से नहीं बजती। सास भली हो, तो बहू को मना ले; और बहू आदमी हो, तो सास को आदमी बना ले। एक शरीफ़ज़ादी ने अपनी मामा से कहा कि हमारी सास तो हमारी सौत हैं। खुदा जाने, उनकी ज़बान से यह बात कैसे निकली! इस पर भी उन्हें दावा है कि हम शरीफ़ज़ादी हैं। अगर वह हमारी राय पर चलें, तो उनकी सास उन्हें अपने सिर पर बिठाये। वह सीधी जा कर सास के क़दमों पर गिर पड़ें और आज से उनकी किसी बात का जवाब न दें। क्या उनकी सास का सिर फिर गया है, या उन्हें बावले कुत्ते ने काटा है? बहू अगर सास की खिदमत करे, तो दुनिया भर की सासों में कोई ऐसी न मिले, जो छेड़ कर बहू से लड़े।

'अब सोचो तो ज़रा दिल में, इस तकरार और जूती-पैज़ार का अंजाम क्या है? घर मे फूट, एक दूसरे की सूरत से बेज़ार, लौंडियों-बाँदियों में ज़लील, सारी दुनिया मे बदनाम, घर तबाह। एक चुप हज़ार बला को टालती है, फ़साद को जहन्नुम में डालती है। हाँ, जो यह खयाल हो कि सास एक कहें, तो दस सुनायें, वह दो बातें कहें, तो बीस मरतबे उनको उल्लू बनायें, तो बस, मेल हो चुका। सास न हुई, भूनी मूँग हुई। आखिर उसका भी कोई दरजा है या नहीं? या बस, बहू ससुराल में जाते ही मालकिन बन बैठे, सास को ताक पर रख दे और मियाँ पर हुकूमत चलाने लगे! अब मैं आप लोगों से इतना चाहती हूँ कि सच-सच अपनी-अपनी सासों का हाल बयान कीजिए।'

एक—अल्लाह करे, हमारी सास को आज रात ही को हैज़ा हो।

दूसरी—अल्लाह करे, हमारी सास को हैज़ा हो गया हो।

तीसरी—अल्लाह करे, हमारी सास ऐसी जगह मरे, जहाँ एक बूँद पानी न मिले।

बहारबेगम—या खुदा, मेरी सास के पाँव मे बावला कुत्ता काटे और वह भूँक-भूँक कर मरे।

चौथी—हम तो अपनी सास को पहले ही चट कर गये। जहन्नुम चली गयीं।

पाँचवीं—सास तो सास, हमारी ननँद ने नाक मे दम कर दिया।

जानीबेगम—मेरी सास तो मेरे आगे चूँ नहीं कर सकतीं! बोलीं, और मैंने गला घोंटा।

इस लेक्चर का और किसी पर तो ज़्यादा नहीं, मगर नज़ीरबेगम पर बहुत असर

हुआ। हुस्नआरा से बोलीं—बहन, हम कल से आया करेंगे, हमें कुछ पढ़ाओगी?

हुस्नआरा—हाँ, हाँ, ज़रूर आओ।

जानीबेगम—ऐ वाह, यह क्या पढ़ायेंगे भला! हमारे पास आओ, तो हम रोज पढ़ा दिया करें।

नजीरबेगम—आपके तो पड़ोस ही में रहते हैं हम, मगर बहन, तुम तो हुड़दंगा सिखाती हो। दिन भर कोठे पर घोड़े की तरह दौड़ा करती हो, कभी नीचे कभी ऊपर।

जानीबेगम—(नज़ीरबेगम का हाथ पकड़ कर) मरोड़ डालूँ हाथ!

नज़ीर—देखा, देखा; बस, कभी हाथ मरोड़ा, कभी ढकेल दिया।

जानीबेगम—(नजीर का गाल काट कर) अब खुश हुई?

सिपहआरा—ऐ वाह, लेके गाल काट लिया।

जानीबेगम—फिर औरत हैं, या मर्द हैं कोई!

नजीरबेगम—अब आप अपनी मुहब्बत रहने दें।

जब सब मेहमान बिदा हुए, तो चारों बहनें मिलकर गयीं और बड़ी बेगम के साथ एक ही दस्तरख्वान पर खाना खाया। खाते वक्त यों गुफ्तगू हुई—

बहारबेगम—हुस्नआरा की शादी कहीं तजवीजी?

बड़ी बेगम—हाँ, फ़िक्र में तो हूँ।

बहारबेगम—फिक्र नहीं अम्मीजान, अब दिन-दिन चढ़ता है।

बड़ी बेगम—अपने जान तो जल्दी ही कर रही हूँ।

बहारबेगम—जल्दी क्या दो-चार बरस में?

रूहअफ़ज़ा—बहन, अल्लाह-अल्लाह करो।

बहारबेगम—बेचारी सिपहआरा भी ताक रही हैं कि हम इनका भी जिक्र करें।

सिपहआरा—देखिए, यह छेड़खानी अच्छी नहीं, हाँ!

बड़ी बेगम—(मुस्करा कर) तुम जानो, यह जानें।

बहारबेगम—अभी कल शाम ही को तो तुमने कहा था कि अम्मीजान से हमारे ब्याह की सिफ़ारिश करो। आज मुकरती हो? भला खाओ तो कसम कि तुमने नहीं कहा?

सिपहआरा—वाह, ज़रा-ज़रा सी बात पर कोई कसम खाया करता है!

रूहअफ़ज़ा—पानी मरता है कुछ?

सिपहआरा—जी हाँ, आप भी बोलीं?

रूहअफ़ज़ा—अच्छा, कसम खा जाओ न!

सिपहआरा—काहे को खायें?

बड़ी बेगम—ऐ, तो चिढ़ती क्यों हो बेटी!

सिपहआरा—अम्मीजान, झूठ-मूठ लगाती हैं। चिढ़ें नहीं?

रूहअफ़ज़ा—क्या! झूठ-मूठ?

सिपहआरा—और नहीं तो क्या?

रूहअफजा—अच्छा, हमारे सिर की कसम खाओ।

सिपहआरा—अल्लाह करे, मैं मर जाऊँ।

रूहअफजा—चलो बस, रो दीं। अब कुछ न कहो।

बहारबेगम—अम्मीजान, एक रईस हैं। उनका लड़का कोई उन्नीस-बीस बरस का होगा। खुदा जानता है, बड़ा हसीन है। आजकल सिकन्दरनामा पढ़ता है।

बड़ी बेगम—खाने पीने से खुश हैं?

रूहअफजा—खुश? आठ तो घोड़े हैं उनके यहाँ।

बहारबेगम—अम्मीजान, वह लड़का हुस्नआरा के ही लायक है। दो लड़के हैं। दोनों लायक, होशियार, नेकचलन। हमारे यहाँ दूसरे-तीसरे आया करते हैं।

रूहअफजा—जरूर मंजूर कीजिए।

बड़ी बेगम—अच्छा, अच्छा, सोच लूँ।

हुस्नआरा ने यह बात चीत सुनी तो होश उड़ गये। खुदा ही खैर करे। ये दोनों बहनें अम्मीजान को पक्का कर रही हैं। कहीं मंजूर कर लें, तो गजब ही हो जाय। बेचारे आजाद वहाँ मुसीबतें झेल रहे हैं, और यहाँ जश्न हो। इस फिक्र में उससे अच्छी तरह खाना भी न खाया गया। अपने कमरे में आ कर लेट रही और मुँह ढाँप कर खूब रोयी। खाना खाने के बाद वे तीनों भी आयीं और हुस्नआरा को लेटे देख कर झल्लायीं।

बहारबेगम—मकर करती होंगी। सोयेगी क्या अभी।

सिपहआरा—नहीं बहन, यह तकिये पर सिर रखते ही सो जाती हैं।

बहारबेगम—जी हाँ, सुन चुकी हूँ। एक तुमको तकिये पर सिर रखते ही नींद आ जाती है, दूसरे इनको।

रूहअफजा—(गुदगुदा कर) उठो बहन, हमारा ही खून पिये, जो न उठे। मेरी बहन न, उठ बैठो। शाबाश!

सिपहआरा—सोने दीजिए। आँखें मारे नींद के मतवाली हो रही हैं।

बहारबेगम—रसीली मतवालियों ने जादू डाला। हमारे यहाँ पड़ोस में रोज तालीम होती है। मगर हमारे मियाँ को इसकी बड़ी चिढ़ है कि औरतें नाच देखें या गाना सुनें। मर्दों की भी क्या हालत है! घर की जोरू से बातें न करें, बाहर शेर। अल्लाह जानता है, हम तो उन सब मुई वेसवाओं को एड़ी-चोटी पर कुरबान कर दें। एक ने मिस्सी की धड़ी जमायी थी, जैसे बत्तख ने कीचड़ खायी हो।

रूहअफजा—(हुस्नआरा को चूम कर) उठो बहन!

हुस्नआरा—(आँखें खोल कर) सिर में दर्द है।

बहारबेगम—संदली-रंगों से माना दिल मिला;

दर्द सर की किसके माथे जायगी।

हुस्नआरा—यहाँ इन झगड़ों में नहीं पड़ते।

बहारबेगम—दुरुस्त।

रूहअफ़ज़ा—जरूर किसी से आँख लड़ायी है, इसी से नींद आयी है। अच्छा अब सच-सच कह दो, किससे दिल मिला है?—दिल दीजिए तो यार तरहदार देख कर।

सिपहआरा और क्या!—

माशूक कीजिए तो परीज़ाद कीजिए।

हुस्नआरा—किसी से मिलने का अब हौसला नहीं है जाँ;

बहुत उठाये मज़े उनसे आशना हो कर।

रूहअफ़ज़ा—बस, बहुत बातें न बनाइए। हम सब सुन चुकी हैं। भला किसी पर दिल नहीं आया, तो आँखों से आँसू क्यों कर निकले? जरी, आइने में सूरत देखिए।

सिपहआरा—ऐ बहन, यह धान-पान आदमी, जरी सिर मे दर्द हुआ, और लेट रहीं।

बहारबेगम—लड़की बातें बनाती है। हमको चुटकियों पर उड़ाती है।

हुस्नआरा—अब आप जो चाहे कहें। यहाँ न कोई आशिक है, न कोई माशूक।

रूहअफ़ज़ा—उड़ो न। कह चलूँ सब?

हुस्नआरा—हाँ, हाँ, कहिए। सौ काम छोड़के। आपको खुदा की कसम।

रूहअफ़ज़ा—अच्छा, इस वक्त दिल क्यों भर आया?

हुस्नआरा—

दिल ही तो है न संग व खिश्त, दर्द से भर न आये क्यों,

रोयेंगे हम हजार बार, कोई हमें रुलाये क्यों?

बहारबेगम—(तालियाँ बजा कर) खुल गयी न बात?

रूहअफ़ज़ा—जादू वह, जो सिर पर चढ़के बोले।

हुस्नआरा—मुँह में जबान है, जो चाहो, बको।

बहारबेगम—अच्छा, बड़ी सच्ची हो, तो एक बात करो। हम एक हाथ में कोई चीज लें और दूसरा हाथ खाली रखें। फिर मुट्ठी बाँधके आयें, और तुम एक हाथ पर हाथ मारो। जो खाली हाथ पर पड़े, तो तुम झूठी। दूसरे हाथ पर पड़े, तो हम झूठे।

हुस्नआरा—ऐ वाह, छोकरियों का खेल।

रूहअफ़ज़ा—अल्लाह, और आप हैं क्या?

सिपहआरा—अच्छा, आप आइए। मगर हम दोनों हाथ देख लेंगे।

बहारबेगम—हाँ-हाँ, देख लेना।

बहारबेगम ने दूसरे कमरे में जा कर एक छोटी-सी शीशे की गोली दाहिने हाथ में रखी और बायाँ हाथ खाली। दोनों मुट्ठियाँ खूब जोर से बंद कर लीं और आ कर बोलीं—अच्छा, मारो हाथ पर हाथ।

हुस्नआरा—ये वाहियात बातें हैं।

रूहअफ़ज़ा—तो काँपी क्यों जाती हो?

सिपहआरा—बा जी, बोलो, किस हाथ में है?

हुस्नआरा—उधरवाले में।

सिपहआरा—नहीं बा जी, धोखा खाती हो। हम तो बाये हाथ पर मारते हैं।

बहारबेगम—(बायाँ हाथ खोल कर) सलाम।

सिपहआरा—अरे, वह हाथ तो दिखाओ।

बहारबेगम—देखो। है शीशे की गोली कि नहीं?

हुस्नआरा—देखा! कहा था कि उस हाथ में है। कहा न माना।

रूहअफ़ज़ा—कहिए, अब तो सच है?

हुस्नआरा—ये सब ढकोसले हैं।

बहारबेगम—अच्छा बहन, अब इतना बता दो कि मियाँ आजाद कौन हैं?

हुस्नआरा—क्या जानें, क्या वाही-तबाही बकती हो।

बहारबेगम—अब छिपाने से क्या होता है भला! सुन तो चुके ही हैं हम।

हुस्नआरा—बतायें क्या, जब कुछ बात भी हो?

सिपहआरा—इन दोनों बहनों ने ख्वाब देखा था कल मालूम होता है।

हुस्नआरा—हाँ, सच कहा। ख्वाब देखा होगा।

रूहअफ़ज़ा—ख्वाब तो नहीं देखा; मगर सुना है कि सूरत-शक्ल मे करोड़ों में एक हैं।

बहारबेगम—हुस्नआरा ने तो अपना जोड़ छाँट लिया, अब सिपहआरा का निकाह हुमायूँ फ़र के साथ हो जाय, तो हम समझे कि यह बड़ी खुशनसीब हैं।

सिपहआरा—मेरे तो तलवों को भी न पहुँचें।

हुस्नआरा—तूती का कौए से जोड़ लगाती हो?

बहारबेगम—वाह, चेहरे से नूर बरसता है। जी चाहता है कि घंटों देखा करें। अम्माँ से आज ही तो कहूँगी मैं।

हुस्नआरा—कह दीजिएगा, धमकाती क्या हो!

सिपहआरा—आपके कहने से होता क्या है? यहाँ कोई पसंद भी करे।

रूहअफ़ज़ा—इनकार करोगी, तो पछताओगी।

४६

सबेरे हुस्नआरा तो कुछ पढ़ने लगी और बहारबेगम ने सिंगारदान मँगा कर निखरना शुरू किया।

हुस्नआरा—बस, सुबह तो सिंगार, शाम तो सिंगार। कंघी-चोटी, तेल-फुलेल। इसके सिवा तुम्हें और किसी चीज से वास्ता नहीं। रूहअफ़ज़ा सच कहती हैं कि तुम्हें इसका रोग है।

बहारबेगम—चलो, फिर तुम्हें क्या? तुम्हारी बातों में खयाल बँट गया, माँग टेढ़ी हो गयी।

हुस्नआरा—है-है! गजब हो गया। यहाँ तो दूल्हा भाई भी नहीं हैं। आखिर यह निखार दिखाओगी किसे?

बहारबेगम—हम उठ कर चले जायँगे। तुम छेड़ती जाती हो और यह मुआ छपका सीधा नहीं रहता।

हुस्नआरा—अब तक माँग का खयाल था, अब छपके का खयाल है।

बहारबेगम—अच्छा, एक दिन हम तुम्हारा सिंगार कर दें, खुदा की कसम, वह जोबन आ जाय कि जिसका हक है।

हुस्नआरा—फिर अब साफ़-साफ़ कहलाती हो। तुम लाख बनो-ठनो, हमारा जोबन खुदादाद होता है। हमें बनाव-चुनाव की क्या जरूरत भला!

बहारबेगम—अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बन लो।

हुस्नआरा—अच्छा, सिपहआरा से पूछो। जो यह कहें वह ठीक।

सिपहआरा—जिस तरह बहार बहन निखरती हैं, उस तरह अगर तुम भी निखरो, तो चाँद का टुकड़ा बन जाओ। तुम्हारे चेहरे पर सुर्खी और सफ़ेदी के सिवा नमक भी बहुत है। मगर वह गोरी-चिट्टी हैं बस, नमक नहीं।

रूहअफ़ज़ा—सच्ची बात तो यह है कि हुस्नआरा हम सबमें बढ़-चढ़ कर हैं।

इतने में एक फिटन खड़खड़ाती हुई आयी, मुश्की जोड़ी जुती हुई। नवाब खुरशेदअली उतर कर बड़ी बेगम के पास पहुँचे और सलाम किया।

बड़ी बेगम—आओ बेटा, बायीं आँख जब फड़कती है, तब कोई न कोई आता जरूर है। उस दिन आँख फड़की, तो लड़कियाँ आयीं। यह रूहअफ़ज़ा की क्या हालत हो गयी है?

नवाब साहब—अब तो बहुत अच्छी हैं! मगर परहेज नहीं करतीं। तीता मिर्च न हो, तो खाना न खायँ। फिर भला अच्छी क्योंकर हों?

यहाँ से बातें करके नवाब साहब उस कमरे में पहुँचे, जिसमें चारों बहनें बैठी थीं। नवाब साहब का लिबास देखिए, जुर्राब खाकी रंग का, घुटन्ना चुस्त, कुर्ता सफ़ेद फलालैन का। उस पर स्याह बनात का दगला और हरी गिरंट की गोट। बाँकी तुक्के-

दार टोपी। पाँव में स्याह वारनिश का बूट, एक सफ़ेद दुलाई ओढ़े हुए। हुस्नआरा और सिपहआरा ने नीची गरदन करके बंदगी की। रूहअफ़ज़ा ने कहा—आप बे-इत्तला किये हमारे कमरे में क्यों चले आये साहब ?

नवाब साहब—हुक्म हो, तो लौट जाऊँ।

बहारबेगम—शौक़ से। बिन बुलाये कोई नहीं आता। लो सिपहआरा, अब इनके साथ बग्घी पर हवा खाने जाओ।

सिपहआरा—वाह, क्या झूठ-मूठ लगाती हो। भला मैंने कब कहा था।

रूहअफ़ज़ा—हम गवाह हैं।

नवाब साहब—अच्छा, फिर उसमे ऐब ही क्या है ?

इतने में रूहअफ़ज़ा एक शीशे की तश्तरी में चिकनी डलियाँ रख कर लायी। नवाब साहब ने दो उठा कर खा ली और 'आख थू, आख थू !' करते-करते बोले—पानी मँगाओ खुदा के वास्ते।

वह चिकनी डली असल मे मिट्टी की थी। चारों बहनों ने कहक़हा लगाया और हजरत बहुत झेपे। जब मुँह धो चुके, तो सिपहआरा ने एक गिलौरी दी।

नवाब साहब—(गिलौरी खोल कर) अब बे देखे भाले खानेवाले की ऐसी-तैसी। कहीं इसमें मिरचें न झोंक दी हों। इस वक्त तो भूख लगी हुई है। ऑतें कुलहु-अल्लाह पढ़ रही हैं।

हुस्नआरा—बासी खीर खाइए, तो लाऊँ ?

नवाब साहब—नेकी और पूछ-पूछ ?

हुस्नआरा जा कर एक कुफ़ली उठा लायी। नवाब साहब ने बड़ी खुशी से ली, मगर खोलते हैं तो मेंढकी उचक कर निकल पड़ी।

नवाब साहब—खूब ! यह रूहअफ़ज़ा से भी बढ कर निकलीं। 'बड़ी बी तो बड़ी बी, छोटी बी सुभान अल्लाह !'

रात को नवाब साहब आराम करने गये, तो बहारबेगम ने पूछा—कहो, तुम्हारी अम्मॉजान तो जीती हैं ? या ढुलक गयी ?

नवाब साहब—क्या बेतुकी उड़ाती हो, ख्वाहमख्वाह दिल दुखाती हो। ऐसी बातें करती हो कि सारा शौक ठंडा पड़ जाता है।

बहारबेगम—हाँ, उनकी तो मुहब्बत फट पड़ी है तुमको। बत्तीस धार का दूध पिलाया है कि नहीं।

नवाब साहब—इसी से आने को जी नहीं चाहता था।

बहारबेगम—तो क्यों आये ? क्या चकला निगोड़ा उजड़ गया है ? या बाज़ार मे किसी ने आग लगा दी ?

नवाब साहब—अच्छा, इस वक्त तो खुदा के लिए ये बातें न करो ? कोई छह दिन के बाद मुलाकात हुई है।

बहारबेगम—क्या कहीं आज और ठिकाना न लगा ?

नवाब साहब—तुम तो जैसे लड़ने पर तैयार हो कर आयी हो।

बहारबेगम—क्यों? आज प्राटन साहब न बनोगे? कोट-पतलून पहनके न जाओगे? मुझसे उड़ते हो!

नवाब साहब रंगीन-मिजाज आदमी थे। बहारबेगम को उनके सैर-सपाटे बुरे मालूम होते थे। इसी सबब से कभी-कभी मियाँ-बीबी में चख चल जाती थी। मगर अबकी मरतबा बहारबेगम ने एक ऐसी बात सुनी थी कि आँखों से खून बरसने लगा था। एक दिन नवाब साहब कोट-पतलून डाट कर एक बँगले पर जा पहुँचे और दरवाजा खटखटाया। अंदर से आदमी ने आ कर पूछा—आप कहाँ से आते हैं? आपने कहा—हमारा नाम प्राटन साहब है। मेम साहब को बुलाओ। अब सुनिए, एक कुँजड़िन जो पड़ोस में रहती थी. वहाँ तरकारी बेचने गयी हुई थी। वह इन हजरत को पहचान गयी और घर में आ कर बहारबेगम से कच्चा चिट्ठा कह सुनाया। बेगम सुनते ही आग-भभूका हो गयीं और सोचीं कि आज आने तो दो, कैसा आड़े-हाथों लेती हूँ कि छठी का दूध याद आ जाय। मगर उसी दिन यहाँ चली आयीं और बात ज्यों की त्यों रह गयी। भरी तो बैठी ही थीं, इस वक्त मौका मिला, तो उबल पड़ीं। नवाब ने जो पते-पते की सुनी, तो सन्नाटे में आ गये।

बहारबेगम—कहिए प्राटन साहब, मिज़ाज तो अच्छे हैं?

नवाब साहब—तुम क्या कहती हो? मेरी समझ ही में नहीं आता कुछ।

बहारबेगम—हाँ, हाँ, आप क्या समझेंगे। हम हिंदोस्तानी और आप खासी विलायत के प्राटन साहब! हमारी बोली आप क्या समझेंगे?

नवाब साहब—कहीं भंग तो नहीं पी गयी हो?

बहारबेगम—अब भी नहीं शरमाते!

नवाब साहब—खुदा गवाह है, जो कुछ समझ मे भी आया हो।

बहारबेगम—जलाये जाओ और फिर कहो कि धुआँ न निकले। मैं क्या जानती थी कि तुम प्राटन साहब बन जाओगे!

इधर तो मियाँ-बीबी में नोक-झोंक हो रही थी, उधर उनकी सालियाँ दरवाजे के पास खड़ी चुपके-चुपके झाँकतीं और सारी दास्तान सुन रही थीं। मारे हँसी के रहा न जाता था। आखिर जब एक मरतबा बहार ने ज़ोर से नवाब का हाथ झटक कर कहा—आप तो प्राटन साहब हैं, मैं आपको अपने घर में न घुसने दूँगी—तो सिपहआरा खिलखिला कर हँस पड़ी। बहार ने हँसी की आवाज सुनी, तो धक से रह गयी। नवाब भी हक्का-बक्का हो गये।

नवाब साहब—तुम्हारी बहनें बड़ी शोख हैं।

रूहअफज़ा—बहन, सलाम!

सिपहआरा—दूल्हा भाई, बंदगीअर्ज।

हुस्नआरा—मैं भी प्राटन साहब को आदाबअर्ज करती हूँ।

नवाब साहब—समझा दो, यह बुरी बात है।

सिपहआरा—बिगड़ते क्यों हो प्राटन साहब !

बहारबेगम—(कमरे से निकल कर) ऐ, तो अब भागी कहाँ जाती हो ?

रूहअफज़ा—बहन, अब आइए। प्राटन साहब से बातें कीजिए।

बहारबेगम—आओ-आओ, तुम्हें खुदा की कसम।

सिपहआरा—कोई माई-बंद अपना हो, तो आयें। भला प्राटन साहब को क्या मुँह दिखायें ?

नवाब साहब—इस प्राटन के नाम ने तो हमें खूब झंडे पर चढ़ाया। कैसे रुसवा हुए !

बहारबेगम—अपनी करतूतों से।

सिपहआरा—अब तो कलई खुल गयी !

तीनों बहनों ने नवाब साहब को खूब आड़े हाथों लिया। बेचारे बहुत झेंपे। जब वे चली गयीं, तो बहारबेगम ने भी प्राटन साहब का कसूर माफ कर दिया—

दिलों में कहने-सुनने से अदावत आ ही जाती है ;
जब आँखें चार होती हैं, मुहब्बत आ ही जाती है।

आज हम उन नवाब साहब के दरबार की तरफ चलते हैं, जहाँ खोजी और आजाद ने महीनों मुसाहबत की थी और आजाद बटेर की तलाश में महीनों सैर-सपाटे करते रहे थे। शाम का वक्त था। नवाब साहब एक मसनद पर शान से बैठे हुए थे। इर्द-गिर्द मुसाहब लोग बैठे हुक्के गुड़गुड़ाते थे। बी अलारक्खी भी जा कर मसनद का कोना दबा कर बैठीं।

नवाब साहब—यों आइए, बी साहब!

अलारक्खी—(खिसक कर) बहुत खूब!

मुसाहब—(दूसरे मुसाहब के कान में) क्या जमाना है, वाह! हम शरीफ़ और शरीफ़ के लड़के और यह इज़्ज़त कि जूतियों पर बैठे हैं। कोई टके को नहीं पूछता।

नुदरत—यार, क्या कहें, अब्बाजान चकलेदार थे, जिसका चाहा, भुट्टा-सा सिर उड़ा दिया। डंका सामने बजता था। इन्हीं आँखों के सामने दोनों तरफ आदमी झुक-झुक कर सलाम करते थे, और इन्हीं आँखों यह भी देख रहे हैं कि बेसवा आ कर मसनद पर बैठ गयी और हम नीचे बैठे हैं। वाह री किस्मत! फूट गयी।

नवाब साहब—आपका नाम क्या है बी साहब?

अलारक्खी—हुजूर, मुझे अलारक्खी कहते हैं।

नवाब साहब—क्या प्यारा नाम है!

नुदरत—हुजूर, चाहे आप बुरा मानें या भला, हम तो बीच खेत कहेंगे कि आपके यहाँ शरीफों की कदर नहीं। गजब खुदा का, यह टके की बाजारी औरत मसनद पर आके बैठ जाय और हम शरीफ़ लोग ठोकरें खायें! आसमान नहीं फट पडता! कैसे-कैसे गौखे रईस जमा हैं दुनिया में।

इतना कहना था कि हाफिज जी बिगड खडे हुए और लपक के नुदरत के मुँह पर एक लप्पड़ जमाया। वह आदमी थे करारे, लप्पड खाते ही आग हो गये। झपटके हाफिज जी को दे पटका। इस पर कुल मुसाहब और हवाली-मवाली उठ खडे हुए।

एक—छोड़ दे बे!

दूसरा—इतनी लातें लगाऊँगा कि भुरकस निकल जायगा।

तीसरा—मर्दक, जिसका नमक खाता है, उसी को गालियाँ सुनाता है!

नवाब साहब—निकाल दो इसे बाहर।

हाफिज—देखिए तो नमकहराम की बातें!

नवाब साहब—आज से दरबार में न आने पाये।

तीन-चार आदमियों ने मिल कर हाफिज जी को छुड़ाया दरबार में हुल्लड़ मचा हुआ था। अलारक्खी खडे-खड़े थरथराती थीं और नवाब साहब उनको दिलासा देते जाते थे।

एक मुसाहब—(अलारक्खी से) ऐ हुज़ूर, आप न घबरायें।

दूसरा मुसाहब—वल्लाह बी साहबा, जो आप पर ज़रा भी आँच आने पाये।

नवाब—तुम तो मेरी पनाह में हो जी!

अलारक्खी—जी हाँ, मगर खौफ मालूम होता है।

नवाब—अभी उस मूज़ी को यहाँ से निकलवाये देता हूँ।

हाफ़िज़—हुज़ूर, वह बाहर खड़े सबको गालियाँ दे रहे हैं।

सबने मिल कर मियाँ नुदरत को बाहर तो निकाल दिया; पर वह टर्रा आदमी था, बाहर जा कर एँड़ी-बेड़ी सुनाने लगा—ऐसे रईस पर आसमान फट पड़े, जो इन टके-टके की औरतों को शरीफ़ों से अच्छा समझे। किसी ज़माने में हम भी हाथी-नशीन थे। चौदह-चौदह हाथी हमारे दरवाज़े पर झूमते थे। आज इस नवबढ़ रईस ने हमको फर्श पर बिठाया और मालज़ादी को मसनद पर जगह दी। खुदा इस मर्दक से समझे!

नवाब साहब—यह कौन गुल मचा रहा है।

एक मुसाहब—वही है हुज़ूर।

दूसरा मुसाहब—नहीं हुज़ूर, वह कहाँ! वह भागा पत्तातोड़। यह कोई फ़क़ीर है। भूखों मरता है।

नवाब—कुछ दिलवा दो भई!

एक मुसाहब ने दारोग़ा जी को बुलाया और उनसे दस रुपये ले कर बाहर चला। जब उसके लौट आने पर भी बाहर का शोर न बंद हुआ, तो नवाब ने खिदमतगार को भेजा कि देख, अब कौन चिल्ला रहा है? खिदमतगार ने बाहर जा कर जो देखा, तो मियाँ नुदरत खड़े गालियाँ सुना रहे हैं। जब वह नवाब साहब के पास जाने लगा, तो दारोग़ा जी ने उसे रोक कर समझाया—अगर तुमने ठीक-ठीक बतला दिया, तो हम तुमको मार ही डालेंगे। खबरदार, यह न कहना कि मियाँ नुदरत गालियाँ दे रहे हैं। बल्कि यों बयान करना कि वह फ़क़ीर तो दस रुपये ले कर चल दिया, मगर और कई फ़क़ीर, जो उस वक्त वहाँ मौजूद थे, आपको दुआएँ दे रहे हैं। उनका सवाल है कि हुज़ूर के दरबार से कुछ उन्हें भी मिले।

नवाब साहब ने यह सुना, तो उन्हें यक़ीन आ गया। बेचारे भोले-भाले आदमी थे, हुक्म दिया कि इसी वक्त सब फ़क़ीरों को इनाम मिले, कोई दरबार से नामुराद न लौटे; वर्ना मैं ज़हर खा कर मर जाऊँगा।

हाफ़िज़—दारोग़ा जी, इन फ़क़ीरों को चालीस रुपये दे दीजिए।

नवाब—क्या, चालीस! भला सौ रुपये तो तक़सीम करो!

मुसाहब—ऐ, खुदा सलामत रखे।

हाफ़िज़—वाह-वाह, क्यों न हो मेरे नवाब।

दारोग़ा ने सौ रुपये लिये और बाहर निकले। कई मुसाहब भी उनके साथ-साथ बाहर आ पहुँचे।

एक—ऐसे गौखे रईस कहाँ मिलेंगे ?

दूसरा—क्या पागल है, वल्लाह !

हाफ़िज़—बेवकूफ़, काठ का उल्लू।

दारोगा—कह देंगे कि दे आये।

हाफ़िज़—लेकिन जो फिर गुल मचाये ?

दारोगा—अजी, उसको निकाल बाहर कर दो। दो धक्के।

सबने मियाँ नुदरत को घेर लिया और कोसों तक रगेदते हुए ले गये। वह गालियाँ देते हुए चले। अलारक्खी को भी खूब कोसा।

नवाब ने लाखों कसमें दीं कि अलारक्खी खाना खायें और कुछ दिन उसी बागीचे में आराम से रहें मगर अलारक्खी ने एक न मानी। मियाँ नुदरत का उसे बार-बार ताने देना, उसे टके की औरत और वेसवा कहना उसके दिल में काँटे की तरह खटक रहा था। उसकी आँखों में आँसू भर आये।

नवाब—सच कहिए बी साहबा, आखिर आप क्यों इस क़दर रंजीदा हैं। अगर मुझसे कोई खता हुई हो, तो माफ करो।

अलारक्खी—जाने हमें इस वक्त क्या याद आया। आपसे क्या बतायें। दिल ही तो है।

नवाब—मुझसे तो कोई कसूर नहीं हुआ !

अलारक्खी—हुजूर, ये सब किस्मत के खेल हैं। हमारी सी बेहया ज़िंदगी किसी की न हो ! माँ बाप ने अंधे कुएँ में ढकेल दिया; आप तो चैन उड़ाया किये, हमें भाड़ में झोंक गये। हमारे बूढ़े मियाँ शादी करते ही दूसरे शहर में जा बसे। हम उनके नाम को रो बैठे। जब वह अंटागफील हो गये, तो हमारी माँ ने बड़ा जश्न किया और एक दूसर लड़के से शादी ठहरायी। मगर अम्माँ से किसी ने कह दिया—खबरदार, लड़की को अब न ब्याहना, भलेमानसों में बेवा का निकाह नहीं होता। बस, अम्माँ चट से बदल गयीं। आखिर मैं एक रात को घर से निकल भागी। लेकिन उस दिन से आज तक जैसी पाक पैदा हुई थी, वैसी ही हूँ। आज उस आदमी ने जो मुझे टके की औरत और वेसवा बनाया, तो मेरा दिल भर आया। कसम ले लीजिए, जो मियाँ आजाद के सिवा किसी से कभी आँखें लड़ी हों।

नवाब—कौन, कौन ? किसका नाम तुमने लिया ?

हाफ़िज़—अच्छा पता लगा। वह तो नवाब साहब के दोस्त हैं।

नवाब—हमको उनकी खबर मिले, तो फ़ौरन बुलवा लें।

अलारक्खी—वह तो कहीं बाहर गये हैं। कुछ दिनों हमारी सराय में ठहरे थे। अच्छे खूबसूरत जवान हैं। उनको एक भोले-भाले नवाब मिल गये थे। नवाब ने एक बटेर पाला था। मियाँ आजाद ने उसे काबुक से निकाल कर छिपा लिया। नवाब के मुसाहबों ने बटेर की खूब तारीफ़ें कीं। किसी ने कहा, कुरान पढ़ता था; किसी ने कहा, रोज़े रखता था। सबने मिल कर नवाब को उल्लू बना लिया। मियाँ आजाद

को ऊँटनी दी गयी कि जा कर बटेर ढूँढ लाओ। आजाद ऊँटनी ले कर हमारे यहाँ बहुत दिन तक रहे।

नवाब साहब मारे शर्म के गले जाते थे। उम्र भर में आज ही तो उन्हें खयाल आया कि ऐसे मुसाहबों से नफ़रत करना लाजिम है। मुसाहबों ने लाख-लाख चाहा कि रंग जमायें, मगर नवाब और भी बददिमाग हो गये।

नवाब—वह भोला-भाला नवाब मैं ही हूँ। आपने इस वक़्त मेरी आँखे खोल दीं।

मुसाहब—गरीबपरवर, खुदा जानता है, हम लोग कट मरनेवाले हैं।

नवाब—बस, हम समझ गये।

हाफ़िज—हुजूर, तोप-दम कर दीजिए, जो जरा खता हो। हम लोग जान देनेवाले आदमी हैं।

नवाब—बस, चिढाओ नहीं। अब कलई खुल गयी।

मुसाहब—खुदा जानता है।

नवाब—अब कसमें खाने की कुछ जरूरत नहीं। जो हुआ सो हुआ, आगे समझा जायगा।

अलारक्खी—जो मुझको मालूम होता, तो यह जिक्र ही कभी न करती।

नवाब—खुदा की कसम, तुमने मुझ पर और मेरे बाप पर, दोनों पर इस वक्त एहसान किया। तुम जिक्र न करतीं, तो मै हमेशा अंधा बना रहता, तुमने तो इस वक्त मुझे जिला लिया।

मुसाहब—जिसने जो कह दिया, वही हुजूर ने मान लिया। बस, यही तो खराबी है। जरा हमारी खिदमतों को देखें, तो हमको मोतियों में तोलें—कसम खुदा की—मोतियों में तोलें।

नवाब—मेरा बस चले, तो तुम सबको कालेपानी भेज दूँ। और ऊपर से बातें बनाते हो? बटेर भी रोजा रखते हैं?

हाफिज—खुदावंद, खुदा की खुदाई में क्या कुछ बईद है।

नवाब—चलो बस, खुदाई में दखल न दो। मालूम हुआ, बडे दीनदार हो। मेरा बस चले, तो तुमको ऐसी जगह कत्ल करूँ, जहाँ पानी तक न मिले।

हाफ़िज—अगर कोई कसूर साबित हो, तो कत्ल कर डालिए।

मुसाहब—खुदावंद, वह आजाद एक ही गुर्गा है, बड़ा दगाबाज।

अलारक्खी—बस, बस, उनको न कुछ कहिएगा। उनका सा आदमी कोई हो तो ले!

नवाब—क्या शक है। खैर, अब भी सवेरा है, सस्ते छूटे।

अलारक्खी—छूटे तो सस्ते। ऐ हाँ, यह कहाँ की नमकहलाली है कि बटेर को रोजादार और नमाजी बना दिया? जो सुनेगा, क्या कहेगा?

नवाब—नमकहलाल के बच्चे बने हैं!

मुसाहब—खुदावंद! जो चाहे, कह लीजिए, हम लोग हुज्जत और तकरार थोडे ही कर सकते हैं।

नवाब—अजी, तुम तो जहर दे दो, संखिया खिला दो! खूब देख चुका।

अलारक्खी—ऐसे बेईमानों से खुदा बचाये।

मुसाहब—हाँ, मसनद पर बैठ कर जो चाहो कह लो। बज़ार में झोटमझोट करती फिरती हो, और यहाँ आके बातें बनाती हो।

नवाब—बस, जबान बंद करो। मेरा दिल खट्टा हो गया।

मुसाहब—जो हम खतावार हों, तो हमारा खुदा हमसे समझे। ज़रा भी किसी बात में नमकहरामी की हो, तो हम पर आसमान फट पड़े। हुजूर चाहे न मानें, मगर दुनिया कहती है कि जैसे मुसाहब हुजूर को मिले हैं, वैसे बड़े खुश किस्मतों को मिलते हैं।

नवाब—यों कहो कि जिसकी किस्मत फूट जाती है, उसको तुम जैसे गुर्गे मिलते हैं। बस, आप लोग बोरिया-बँधना उठाइए और चलते-फिरते नजर आइए।

मुसाहब—हुजूर, मरते दम तक साथ न छोड़ेंगे, न छोड़ेंगे।

हाफ़िज—यह दामन छोड़ कर कहाँ जायें?

मिरजा—कहीं ठिकाना भी है?

हाफ़िज—ठिकाना तो सब कुछ हो जाय, मगर छोड़ कर जाने को भी जब जी चाहे। जिसका इतने दिन तक नमक खाया, उससे भला अलग होना कैसे गवारा हो? मार डालिए, मगर हम तो इस ड्योढ़ी से नहीं जाने के। यह दर और यह सर। मरें भी, तो हुजूर ही की चौखट पर, और जनाजा भी निकले, तो इसी दरवाजे से।

नवाब—बातें न बनाओ। जहाँ सींग समाय, चले जाओ।

हाफ़िज—हुजूर को खुदा सलामत रखे। जहाँ हुजूर का पसीना गिरे, वहाँ हमारा खून जरूर गिरेगा।

मगर नवाब साहब इन चकमों में न आये। खिदमतगारों को हुक्म दिया कि इन सबों को पकड़ कर बाहर निकाल दो। अगर न जायें, तो ठोकर मार कर निकाल दो।

अब जी अलारक्खी का भी हाल सुनिए। उनको मियाँ खुदरत की बातों का ऐसा कलक हुआ, दिल पर ऐसी चोट लगी कि अपने कुल जेवर और असबाब बेच कर बस्ती के बाहर एक टीले पर फ़क़ीरों की तरह रहने लगीं। क़सम खा ली कि जब तक आज़ाद रूम से न लौटेंगे, इसी तरह रहूँगी।

जिस जहाज पर मियाँ आज़ाद और खोजी सवार थे, उसी पर एक नौजवान अँगरेज अफसर और उसकी मेम भी थी। अँगरेज का नाम चार्ल्स अपिल्टन था और मेम का वेनेशिया। आजाद को उदास देख कर वेनेशिया ने अपने शौहर से पूछा—इस जेंटिलमैन से क्योंकर पूछें कि यह बार-बार लंबी साँसें क्यों ले रहा है?

साहब—तुम ऐसे-वैसे आदमियों को जेंटिलमैन क्यों कहती हो? यह तो निगर (काला आदमी) है।

मेम—निगर तो हम हबशी को कहते हैं। यह तो गोरा-चिट्टा, खूबसूरत आदमी है।

साहब—तो क्या खूबसूरत होने से ही कोई जेंटिलमेन हो जाता है? इँगलैंड के सब सिपाही गोरे होते हैं, तो क्या इससे ये सब के सब जेंटिलमैन हो गये?

मेम—तुम तो अपनी दलील से आप कायल हो गये। जब गोरे चमड़े से कोई जेंटिलमैन नहीं होता, तो फिर तुम सब क्यों जेंटिलमैन कहलाओ? और इन लोगों को निगर क्यों कहो? वाह, अच्छा इंसाफ है!

इतने में जहाज के एक कोने से आवाज आयी कि ओ गीदी, न हुई करौली, नहीं तो लाश फड़कती होती।

मियाँ आज़ाद डरे कि ऐसा न हो, मियाँ खोजी किसी अँगरेज से लड़ पड़ें, अफीम की लहर में किसी से बेवजह झगड़ पड़े। करीब जा कर पूछा—यह क्यों बिगड़े जी? किस पर गुल मचाया?

खोजी—अजी, जाओ भी, यहाँ शिकार हाथ से जाता रहा। वल्लाह, गिरफ्तार ही कर लिया था। गीदी को पाता, तो इतनी करौलियाँ लगाता कि छठी का दूध याद आ जाता। मगर मेरा पाँव फिसल गया और वह निकल गया।

आजाद—तुम्हें एक आँच की हमेशा कसर रह जाती है। यह था कौन?

खोजी—था कौन, वही बहुरूपिया! और किसको पड़ी थी भला!

आजाद—बहुरूपिया!

खोजी—जी हाँ, बहुरूपिया! बड़ा ताज्जुब हुआ आपको?

आजाद—भई हाँ, ताज्जुब कहीं लेने जाना है। क्या बहुरूपिया भी जहाज पर सवार हो लिया है? बड़ा लागू है भई?

खोजी—सवार नहीं हुआ, तो आया कहाँ से?

आजाद—क्या सोते हो खोजी, या पीनक में हो?

खोजी—खोजी की ऐसी-तैसी! फिर तुमने खोजी कहा हमको!

आजाद—माफ करना भई, कसूर हुआ।

खोजी—वाह, अच्छा क़सूर हुआ! किसी के जूते लगाइए और कहिए, क़सूर हुआ। जब देखो, खोजी-खोजी।

आज़ाद—अच्छा जनाब ख्वाजा साहब, अब तो राज़ी हुए! यह बहुरूपिया कहाँ से आ गया?

खोजी—अरे साहब, अब तो ख्वाब में भी आने लगा। अभी मैं सोता था, आप आ पहुँचे। मेरे हाथ में उस वक्त अफ़ीम की डिबिया थी। फेंकके डिबिया और लेके कतारा जो पीछे झपटा, तो दो कोस निकल गया। मगर शामत यह आयी कि एक जगह ज़रा सा पानी पड़ा था। मेरी तो जान ही निकल गयी। फिसला, तो आरा रा रा धों।

आज़ाद—क्या गिर पड़े? जाओ भी!

खोजी—बस, कुछ न पूछिए। मेरा गिरना ऐसा मालूम हुआ, जैसे हाथी पहाड़ से गिरा। धड़ाम-धड़ाम!

आज़ाद—इसमें क्या शक है! आपके हाथ-पाँव ही ऐसे हैं। वह तो कहिए, बड़ी खैरियत गुज़री।

खोजी—और क्या! मगर जाता कहाँ है गीदी। रगेद के मारूँ। यहाँ पल्टन में सूबेदारी कर चुके हैं।

मेम और साहब, दोनों मियाँ आज़ाद और खोजी की बातें सुन रहे थे। साहब तो उर्दू खूब समझते थे, मगर मेम साहब कोरी थीं। साहब ने तर्जुमा करके बताया, तो वेनेशिया भी मारे हँसी के लोट गयी! यह इंच भर का आदमी, एक-एक माशे के हाथ पाँव और आपके गिरने से इतनी बड़ी आवाज़ हुई कि जैसे हाथी गिरे!

साहब—सिड़ी है कोई। जाने क्या वाही-तबाही बकता है।

मेम—तुम चुप रहो। हम इस जेंटिलमैन से पूछते हैं, यह कौन पागल है।

साहब—अच्छा, मगर हिंदोस्तानी बदतमीज़ होते हैं। तुम इससे बातें न करो।

मेम—अच्छा, तुम्हीं पूछो।

इस पर साहब ने उँगली के इशारे से आज़ाद को बुलाया। आज़ाद भला कब सुननेवाले थे। बोले ही नहीं। साहब पल्टनी आदमी, चेहरा मारे गुस्से के लाल हो गया। खयाल हुआ कि वेनेशिया तालियाँ बजायेगी कि एक निगर तक मुखातिब न हुआ, बात का जवाब तक न दिया। वेनेशिया ने जब यह हालत देखी तो इठलाती और मुस्कराती हुई मियाँ आज़ाद की तरफ़ गयी। आज़ाद लेडियों से बोलने-चालने के आदी तो थे ही, एक खूबसूरत लेडी को आते देखा, तो टोपी उतार कर सलाम किया और पूछा—आप कहाँ तशरीफ़ ले जायँगी?

मेम—घर जा रही हूँ। यह ठिगना आदमी कौन है? खूब बातें करता है। हँसते-हँसते पेट में बल पड़-पड़ गये।

आज़ाद—जी हाँ, बड़ा मसखरा है।

मेम—चार्ली, यह तो कहते हैं कि वह बौना मसखरा है।

साहब—इसकी बातें बड़े मजे की होती हैं।

साहब का गुस्सा ठंडा हो गया। आज़ाद का डील-डौल देख कर डर गये। इधर-उधर की बातें होने लगीं। इतने में जहाज पर एक दिल्लगीबाज़ को सूझी कि आओ, खोजी को बनायें। दो-चार और शोहदे उससे मिल गये। जब देखा कि मियाँ खोजी पीनक में सो गये, तो एक आदमी ने दो लाल मिरचें उनकी नाक में डाल दीं। खोजी ने जो आँख खोली, तो मारे छींकों के बौखला गये। बावले कुत्ते की तरह इधर-उधर दौड़ने लगे। मेम और साहब तालियाँ बजा-बजा कर हँसने लगे।

आजाद—जनाब ख्वाजा साहब!

खोजी—बस, अलग रहिएगा, आक् छीं!

आज़ाद—आखिर यह हुआ क्या? कुछ बताओ तो!

खोजी—चलिए, आपको क्या; चाहे जो कुछ हुआ! आ...छीं!

आज़ाद—यार, यह उसी बहुरूपिये की शरारत है।

खोजी—देखिए तो, कितनी क़रौलियाँ भोंकी हों कि आ...छीं। याद ही तो करे—छीं।

आजाद—मगर तुम तो गिर-गिर पड़ते हो मियाँ! एक दफ़े जी कड़ा करके पकड़ क्यों नहीं लेते?

खोजी—नाक में मिरचें डाल दीं। गीदी ने।

आजाद—अबकी आप ताक में बैठे रहिए। बस, आते ही पकड़ लीजिए। मगर है बड़ा शरीर, सचमुच नाक में दम कर दिया।

खोजी—कुछ ठिकाना है! नाक में मिरचें झोंकने की कौन सी दिल्लगी है?

आजाद—और क्या साहब, यह बेजा बात है।

खोजी—बेजा-बेजा के भरोसे न रहिएगा, मैं किसी दिन हाथ-पाँव ढीले कर दूँगा। कहाँ के बड़े कड़ेखाँ हैं आप! मैंने भी सूबेदारी की है।

आज़ाद—तो आप मेरे हाथ-पाँव क्यों ढीले करते हैं? मैंने तो आपका कुछ बिगाड़ा नहीं।

खोजी—[आँखें खोल कर] अरे! यह आप थे! भई, माफ़ करना। बस, देखते जाओ, अब गिरफ़्तार ही किया चाहता हूँ गीदी को।

आजाद—लेकिन, जरा होशियार रहिएगा? बहुरूपिया गया जहन्नुम में, ऐसा न हो, कोई हजरत रुपये-पैसे गायब कर दें, बेवकूफ़ कहीं का! अबे गधे, यहाँ बहु-रूपिया कहाँ?

खोजी—बस, चोंच सँभालिए, बंदा चलता है। दोस्ती हो चुकी। कुछ आपके गुलाम नहीं हैं। और सुनिए, हम गधे हैं। क्या जाने कितने गधे हमने बना डाले।

आजाद—खैर, यही सही। लेकिन जाइएगा कहाँ? यहाँ भी कुछ खुश्की है?

खोजी—अरे ओ जहाज़ के कप्तान! जहाज़ रोक ले—अभी रोक ले।

साहब—वह यों न सुनेगा। दो-चार हाथ क़रौली के लगाइए, तो फिर सुने।

इतने में हाजरी खाने का वक्त आया। आजाद ने बेतकल्लुफी के साथ उन दोनों के साथ खाना खाया। फिर तीनों टहलने लगे। आज़ाद को वेनेशिया की एक-एक छवि भाती थी और वह हसीना कभी शोखी से इठलाती थी, कभी नाज के साथ मुसकिराती थी। इतने में खोजी ने यह शेर पढ़ा—

गर तुम नहीं तो और बुते महजबीं सही,
हमको तो दिल्लगी से ग़रज है, कहीं सही।

आजाद ने जो यह शेर सुना, तो खोजी के पास आ कर बोले—यह क्या ग़जब करते हो जी? इसका शौहर शेर खूब समझ लेता है।

खोजी—वह गीदी इन इशारों को क्या जाने।

आजाद—तुम बड़े शरीर हो।

खोजी—क्यों उस्ताद, हमी से यह उड़नघाइयाँ बताते हो, क्यों? सच कहना, हुस्नआरा के लगभग है कि नहीं। बम्बईवाली बेगम भी ऐसी ही शोख थी।

वेनेशिया ने खोजी को मुसकिराते देखा, तो उँगली के इशारे से बुलाया। खोजी तो रेशाखतमी हो गये। बहुत ऐंठते और अकड़ते हुए चले। गोया लँधौर पहलवान के भी चचा हैं। वाह, क्यों न हो। इस वक्त जरा पाँव फिसले, तो दिल्लगी हो। मेम साहब के पास पहुँचे।

आजाद—टोपी उतार कर सलाम करो खोजी।

खोजी का लफ्ज सुनना था कि ख्वाजा साहब का ग़ुस्सा एक सौ बीस दरजे पर जा पहुँचा। बस, पलट पड़े और पलटते ही उलटे पाँव भागने लगे।

आजाद—ओ गीदी, जो पलट गया, तो इतनी करौलियाँ भोंकी होंगी कि छठी का दूध याद आ गया होगा।

मेम—क्यों खोजी, क्या मुझसे खफ़ा हो गये?

आज़ाद—क्यों भई, क्या शैतान ने फिर उँगली दिखा दी? मियाँ खोजी?

खोजी—खोजी पर खुदा की मार! खोजी पर शैतान की फटकार! एक दफ़ा खोजी कहा, मैं खून पी कर रह गया, अब फिर दोहराया। खुदा जाने, कब का दिया इस गाढ़े वक्त काम आया। नहीं तो मारे करौलियों के भुट्टा सा सिर उड़ा देता। लाख गया-गुजरा हूँ, तो क्या हुआ, उम्र भर रिसालदारी की है, घास नहीं खोदी।

मेम—अच्छा, यह खोजी के नाम पर बिगड़े! हम समझे, हमसे रूठ गये।

खोजी—नहीं मेम साहब, कैसी बात आप फरमाती हैं!

आज़ाद—जरा इनसे इनकी बीबी जान का हाल पूछिए। उसका नाम बुआ जाफ़रान है। देवनी है देवनी।

खोजी ने बुआ जाफ़रान का नाम सुना, तो रंग फ़क हो गया और सहम कर आँखें बंद कर लीं। आजाद ने जब वेनेशिया से सारा किस्सा कहा, तो मारे हँसी के लोट लोट गयी।

एक आलीशान महल की छत पर हुस्नआरा और उनकी तीनों बहनें मीठी नींद सो रही हैं। बहारबेगम की जुल्फ से अम्बर की लपटें आती थीं; रूहअफ़ज़ा के घूँघरवाले बाल नौजवानों के मिजाज की तरह बल खाते थे; सिपहआरा की मेंहदी अजब लुत्फ दिखाती थी और हुस्नआरा बेगम के गोरे-गोरे मुखड़े के गिर्द काली-काली ज़ुल्फों को देख कर धोखा होता था कि चाँद ग्रहण से निकला है।

इधर तो ये चारों परियाँ बेखबर आराम में हैं, उधर शाहज़ादा हुमायूँ फ़र अपने दोस्त मीर साहब से इधर-उधर की बातें कर रहे हैं।

मीर—कुछ अड़ोसी-पड़ोसियों का तो हाल कहिए। दोनों हसीनें नजर आती हैं या नहीं?

शाहज़ादा—अरे मियाँ, अब तो चौकड़ी है। एक से एक बढ़-चढ़-कर। सब मस्त हैं। मगर बला की हयादार।

मीर—यह कहिए, गहरे हो उस्ताद!

शाहजादा—अजी, अभी ख्वाब देख रहा था एक महरी हुस्नआरा का खत लायी है। खत पढ़ रहा था कि आप बला की तरह आ पहुँचे। जी चाहता है, गोली मार दूँ।

मीर—क्यों साहब, आपने तो कान पकड़े थे।

शाहजादा—दिल पर काबू भी तो हो?

मीर—कलंक का टीका लगाओगे? खुदा के लिए फिर तोबा करो। आखिर चारों छोकड़ियों में से आप रीझे किस पर? या चारों पर दिल आया है?

शाहजादा—चार निकाह तो जायज हैं!

मीर—तो यह कहिए, चारों पर दाँत हैं।

शाहजादा—नहीं मियाँ, हँसता हूँ। दो ही तो कुँआरी हैं।

ये बातें हो ही रही थी कि एकाएक महल्ले में चोर-चोर का गुल मचा। कोई चिराग जलाता है कोई बीबी के जेवर टटोलता है। चारों तरफ खलबली मच गयी। पूछने से मालूम हुआ कि बड़ी बेगम साहबा के घर में चोर घुसा था। शाहज़ादे ने जो यह बात सुनी, तो मीर साहब से बोले—भई मौका तो अच्छा है। चलो, इस वक्त जरा हो आयें। इसी बहाने एहसान जतायें।

मीर—सोच लो, ऐसा न हो, पीछे मेरे माथे जाय। तुम तो शाहजादे बन कर छूट जाओगे, उल्लू मैं बनूँगा। आखिर वहाँ चल कर क्या कहोगे?

शाहजादा—अजी, कहेंगे क्या! बस, अफसोस करेंगे। शायद इसी फेर में एक झलक मिल जाय। और नहीं, तो आवाज ही सुन लेंगे।

दोनों आदमी बेगम साहबा के मकान पर पहुँचे, तो क्या देखते हैं कि चालीस-पचास आदमी एक चोर को घेरे खड़े हैं और चारों तरफ़ से उस पर बेभाव की पड रही हैं। एक ने तड़ से चपत जमायी, दूसरे ने खोपड़ी पर धौल लगायी। चोर पर इतनी पड़ी कि बिलबिला गया। झल्ला-झल्ला कर रह जाता था। दो-तीन भले आदमी लोगों को समझा रहे थे, बस करो, अब तो खोपड़ी पिलपिली कर दी। क्या जमाते ही जाओगे?

एक—भाई, खूब हाथ गरमाये।

दूसरा—हम तो पोले हाथ से लगाते थे। जिसमें चोट कम आये, मगर आवाज़ खूब हो।

चोर—छूटूँगा तो एक-एक से समझूँगा। क्या करूँ, बेबस हूँ; वर्ना सबको पीस कर धर देता।

बहारबेगम के मियाँ भी खड़े थे। बोले—एक ही शैतान है।

शाहज़ादा—आखिर, यह आया किधर से?

नवाब साहब—मैं घूम कर कोई दस बजे के लगभग आया। खाना खा कर लेटा ही था कि नींद आ गयी। यह गुल मचा, तो तलवार ले कर दौड़ पड़ा। अब सुनिए, मैं तो ऊपर से आ रहा हूँ, और चोर नीचे से ऊपर जाता है। रास्ते में मुठ-भेड़ हुई। इसने छुरी निकाली, मगर मैंने भी तलवार का वह हाथ चलाया कि ज़रा हाथ ओछा न पड़े, तो भंडारा खुल जाय। फिर तो ऐसा सहमा की होश उड़ गये। भागते राह न मिली। अब छत पर पहुँचा और चाहता था कि झपट कर नीचे कूद पड़े; मगर मेरी छोटी साली ने इस फुरती से रस्सी का फंदा बना कर फेंका कि उलझ कर गिरा। उठ कर भागने को ही था कि मैं गले पर पहुँच गया और जाते ही छाप बैठा। औरतों ने दोहाई देना शुरू की; लेकिन मैंने न छोड़ा। आपने इस वक्त कहाँ तकलीफ़ फ़रमायी?

शाहज़ादा—मैंने कहा, चल कर देखूँ क्या बात हुई। बारे शुक्र है कि खैरियत हुई। मगर आपकी साली बड़ी दिलेर हैं। दूसरी औरत हो, तो डर जाय।

यहाँ तो यह बातें हो रही थीं, उधर अंदर चारों बहनों में भी यही ज़िक्र था। चारों हँस-हँस कर यही बातें कर रही थीं—

सिपहआरा—है-है- बाजी, मैंने जब उस काले-काले संडे को देखा, तो तन से जान निकल गयी।

रूहअफ़ज़ा—मुआ तंबाकू का पिंडा।

हुस्नआरा—वह तो खैर गुज़री कि संदूक हाथ से गिर पड़ा, नहीं तो सब मूस ले जाता।

सिपहआरा—बहारबेगम की चिड़चिड़ी सास लाखों ही सुनाती कि मेरी बहू के गहने सब बेच खाये।

बहारबेगम—चोर-चोर की भनक कान में पड़ी, तो मैं कुलबुला कर चौंक पड़ी।

भागी, तो जूड़ा भी खुल गया। अल्लाह जानता है, बड़ी मिहनत से बाँधा था। चलो खैर!

रूहअफ़ज़ा—बस, हमारी बाजी को चोटी कंघी की फ़िक्र रहती है।

हुस्नआरा—जितना इनको इस बात का खयाल है, उतना हमारे खानदान-भर में किसी को नहीं है। जभी तो दूल्हा भाई इतने दीवाने रहते हैं।

बहारबेगम—चलो, बैठी रहो; छोटे मुँह बड़ी बात!

हुस्नआरा—दूल्हा भाई को इनके साथ इश्क़ है।

बहारबेगम—क्या टर-टर लगायी है नाहक!

अब दिल्लगी सुनिए कि मिरज़ा हुमायूँ फ़र बाहर बैठे चुपके-चुपके सारी बातें सुन रहे थे। नवाब बेचारे कट-कट गये, मगर चुप। अंदर जा कर समझायें, तो अदब के खिलाफ़; चुपके बैठे रहें, तो भी रहा नहीं जाता। जान अज़ाब में थी। खैर, हुक्का पी कर शाहज़ादा रुखसत हुए। उनके चले जाने के बाद नवाब साहब अंदर आये और बोले—तुम लोगों की भी अजब आदत है। जब देखोगी कि कोई ग़ैर आदमी आके बैठा है, बस, तभी गुल मचाओगी। इस वक्त एक भलेमानस बैठे थे और यहाँ चुहल हो रही थी।

बहारबेगम—वह भलामानस निगोड़ा कौन था, जो इतने वक्त पंचायत करने आ बैठा?

रूहअफ़ज़ा—तो अब कोई उनके मारे अपने घर में बात न करे? घोट कर मार न डालिए।

हुस्नआरा—हम भी तो सुनें, वह भलेमानस कौन थे?

नवाब—अजी, वही, जो सामने रहते हैं, शाहज़ादे।

हुस्नआरा—तो आपने आ कर हमसे कह क्यों न दिया? फिर हम काहे को बोलते?

बहारबेगम—अपनी खता न कहेंगे, दूसरों को ललकारेंगे।

नवाब—उस वक़्त वहाँ से आने का मौका न था। मुझसे पूछा कि चोर को किसने पकड़ा। मैंने कहा, मेरी छोटी साली ने तो बहुत ही हँसे।

नवाब साहब बाहर चले गये, तो फिर बातें होने लगीं—

सिपहआरा—ज़रा उसकी ढिठाई तो देखो कि चोर का नाम सुनते ही आ डटा। भला क्या वजह थी इसकी? ऐसा कहाँ का बड़ा रुस्तम था?

हुस्नआरा—तीन बजे के वक़्त आप जो आये, तो क्यों आये?

रूहअफ़ज़ा—मैं बताऊँ? उसको यह खबर न होगी कि दूल्हा भाई घर पर हैं। यह न होते, तो घर में घुस पड़ता।

सिपहआरा—काम तो शोहदों के जैसे हैं।

अब एक और दिल्लगी सुनिए। चोर आया, गुल गपाड़ा हुआ, पकड़ा गया

जमाने भर में हुल्लड़ मचा, महल्ला भर जाग उठा; चोर थाने पर पहुँचा; मगर बड़ी बेगम साहबा अभी तक खर्राटे ही ले रही हैं। जब जागीं, तो मामा से बोलीं—कुछ गुल सा मचा था अभी?

मामा—हाँ, कुछ आवाज तो आयी थी।

बेगम—जरी, किसी से पूछो तो।

मामा—ऐ बीबी, पूछना इसमें क्या है? भेड़िया-वेड़िया आया होगा।

बेगम—मैंने आज हाथी को ख्वाब में देखा है; अल्लाह बचाये।

इतने में चोर के आने की खबर मिली। तब तो बेगम साहबा के होश उड़ गये। मामा को भेजा कि जा पूछ, कुछ ले तो नहीं गया।

हुस्नआरा—अम्माँजान बहुत जल्द जागीं! क्या तू भी घोड़े बेच कर सोयी थी! अल्लाह री नींद!

मामा—जरी आँख लग गयी थी। मगर कुछ गुल की आवाज जरूर आयी थी।

हुस्नआरा—महल्ला भर जाग उठा, तुम्हारे नजदीक कुछ ही कुछ गुल था। ठीक! जाके अम्माँ से कह दे कि चोर आया था, मगर जाग हो गयी।

सिपहआरा—ऐ, काहे के वास्ते बहकती हो। मामा, तू जाके सो रह; शोर-गुल कहीं कुछ न था, कोई सोते में बर्रा उठा होगा।

हुस्नआरा—नहीं मामा, यह दिल्लगी करती हैं। चोर आया था।

मामा—ऐ, गया चूल्हे मे निगोड़ा चोर! इधर आने का रुख करे, तो आँखें ही फूट जायँ। क्या हँसी-ठट्ठा है।

सिपहआरा—देखो तो सही भला!

मामा—अभी बेगम साहबा सुन लें, तो दुनिया सिर पर उठा लें।

मामा ने जा कर बेगम से कहा—हुजूर, कुछ है न वै, बेकार को जगाया। न भेड़िया, न चोर, कोई सोते-सोते बर्रा उठा था।

बेगम—जरा बाहर जा कर तो पूछ कि यह गुल कैसा था?

महरी—बीबी, मैं अभी बाहर से आयी हूँ, कोठे पर कलमुँहा आया था। कोठरी का कुफ़्फ़ तोड़ कर जब संदूक उठाया, तो जाग हो गयी। इतने मे नवाब साहब कोठे पर से नंगी तलवार लिये दौड़ आये।

बेगम—नवाब साहब के दुश्मनों को तो कहीं चोट-ओट नहीं आयी?

महरी—ना बीबी, एक फाँस तक तो चुभी नहीं।

बेगम—चोर कुछ ले तो नहीं गया।

महरी—एक झंझी तक नहीं।

बेगम—चोर अब कहाँ है?

महरी—खादिमहुसैन थाने पर ले गया।

मामा—अब चक्की पीसनी पड़ेगी।

बेगम—तू तो कहती थी कि कोई सोते-सोते बर्रा उठा था। झूठी जमाने भर की! चल, जा, हट!

अब थाने का हाल सुनिए। थानेदार नदारद; जमादार शराब पिये मस्त; कास्टेबिल अपनी-अपनी ड्यूटी पर। एक कास्टेबिल पहरे पर पड़ा सो रहा था। खादिमहुसैन ने बहुत गुल मचाया। तब जाके हजरत की नींद खुली। बिगड़े कि मुझे जगाया क्यों? चोर को छोड़ दो।

खादिमहुसैन—वाह, छोड़ देने की एक ही कही। मैं भी थाने में मुहर्रिर रह चुका हूँ।

कास्टेबिल—न छोड़ोगे तुम?

खादिमहुसैन—होश की दवा करो मियाँ! इसके साथ तुमको भी फँसाऊँ तो सही।

कांस्टेबिल—(चोर से) तुझे इन्होंने अपने यहाँ कै घंटे रखा था?

चोर—पकड़ के बस यहाँ ले आये?

कास्टेबिल—दुत गौखे! अबे, तू कहना कि मैं राह-राह चला जाता था, इनसे मुझसे लागडाट थी। इन्होंने घात पा कर मुझे पकड़ लिया, खूब पीटा और चार घंटे तक अस्तबल की कोठरी में बंद रखा।

चोर—लागडाट क्या बताऊँ?

कास्टेबिल—कह देना कि मेरी जोरू पर यह बुरी निगाह डालते थे। बस, लाग-डाट हो गयी।

चोर—मगर मेरी जोरू तो चार बरस हुए, एक के साथ निकल गयी।

कास्टेबिल—बस, तो बात बन गयी! कह देना, इन्हीं की साजिश से निकली थी। तो इन पर दो जुर्म कायम होंगे। एक यह कि तुमको झूठ-मूठ फाँस लिया, दूसरे जबरदस्ती कैद रखा।

खादिमहुसैन—तुम्हारी बातों पर कुछ हँसी आती है, कुछ गुस्सा।

कास्टेबिल—जब बडा घर देखोगे, तब हँसी का हाल खुल जायगा।

खादिमहुसैन—हमारे घर में चोरी हो और हमीं फँसें?

खैर कास्टेबिल साहब रोजनामचा लिखने बैठे। खादिमहुसैन ने सारी दास्तान बयान की। जब उसने यह कहा कि नवाब साहब तलवार ले कर दौड़े, तो कास्टेबिल ने कलम रोक दिया और कहा—जरा ठहरो, तलवार का लैसंस उनके पास है?

खादिमहुसैन—उनके साथ तो बीस सिपाही तलवार बाँधे निकलते हैं। तुम एक लैसंस लिये फिरते हो!

आखिर रिपोर्ट खतम हुई और खादिम अपने घर आया।

एक दिन मियाँ आज़ाद मिस्टर और मिसेज़ अपिल्टन के साथ खाना खा रहे थे कि एक हँसोड़ आ बैठे और लतीफ़े कहने लगे। बोले—अजी, एक दिन बड़ी दिल्लगी हुई। हम एक दोस्त के यहाँ ठहरे हुए थे। रात को उसके खिदमतगार की बीवी दस अंडे चट कर गयी। जब दोस्त ने पूछा, तो खिदमतगार ने बिगड़ी बात बना कर कहा कि बिल्ली खा गयी। मगर मैंने देख लिया था। जब बिल्ली आयी तो वह औरत उसे मारने दौड़ी। मैंने कहा—बिल्ली को मार न डालना, नहीं तो फिर अंडे हज़म न होंगे।

आज़ाद—बात तो यही है। खाय कोई, बिल्ली का नाम बद।

अपिल्टन—आप शादी क्यों नहीं करते?

हँसोड़—शादी करना तो आसान है, मगर बीबी का सँभालना मुश्किल। हाँ, एक शर्त पर हम शादी करेंगे। बीवी दस बच्चों की माँ हो।

मेम—बच्चों की क़ैद क्यों की?

हँसोड़—आप नहीं समझीं। अगर जवान आयी, तो उसके नखरे उठाते-उठाते नाक में दम आ जायगा; अधेड़ बीबी हुई तो नखरे न करेगी और बच्चे बड़े काम आयेंगे।

आज़ाद—वह क्या?

हँसोड़—कहत के दिनों में बेच लेंगे।

इतने में क्या देखते हैं कि मियाँ खोजी लुढ़कते हुए चले आते हैं। एक सूखा कवारा हाथ में है।

आज़ाद—आइए। बस, आप ही की कसर थी।

खोजी—मुझे बैठे-बैठे खयाल आया कि किसी से पूछूँ तो कि यह समुंदर है क्या चीज़ और किसकी दुआ से बना है?

हँसोड़—मैं बताऊँ! अगले ज़माने में एक मुल्क था बामड़-नगर।

खोजी—ज़री ठहर जाइएगा। वहाँ अफ़ीम भी बिकती थी?

हँसोड़—उस मुल्क के बाशिंदे बड़े दिलेर होते थे, मगर कद के छोटे। बिलकुल टेनी मुर्गे के बराबर।

खोजी—(मूँछों पर ताव दे कर) हाँ-हाँ, छोटे कद के आदमी तो दिलेर होते ही हैं।

हँसोड़—और कोई बगैर करौली बाँधे घर से न निकलता था।

खोजी—(अकड़ कर) क्यों मियाँ आज़ाद, अब न कहोगे?

हँसोड़—मगर उन लोगों में एक ऐब था, सब के सब अफीम पीते थे।

खोजी—(त्योरियाँ चढ़ा कर) ओ गीदी !

आज़ाद—हैं-हैं ! शरीफ़ आदमियों से यह बदज़बानी !

खोजी—हम तो सिर से पाँव तक फुँक गये, आप शरीफ़ लिये फिरते हैं।

हँसोड़—वहाँ की औरतें बड़ी गराडील होती थीं। जहाँ मियाँ ज़रा बिगड़े, और बीवी ने बगल में दबा कर बाज़ार में घसीटा।

खोजी—अहाहा, सुनते हो यार ! वह बहुरूपिया वहीं का था। अब तो उस गीदी का मकान भी मिल गया। चचा बना कर छोड़ूँ, तो सही।

हँसोड़—वे सब रिसालदारी करते थे।

खोजी—और वहाँ क्या-क्या होता था ? उस मुल्क के आदमियों की तसवीरें भी आपके पास हैं ?

हँसोड़—थीं तो, मगर अब नहीं रहीं। बस, बिलकुल तुम्हारे ही से हाथ-पाँव थे। करारे जवान। पौंडे बहुत खाते थे।

खोजी—ओहोहो ! वे सब हमारे ही बाप-दादा थे। देखो भाई आज़ाद, अब यह बात अच्छी नहीं। वहाँ से तो लम्बे-चौड़े वादे कर के लाये थे कि करौली ज़रूर ले देंगे, और यहाँ साफ़ मुकर गये। अब हमें करौली मँगा दो, तो खैरियत है, नहीं तो हम बिगड़ जायँगे। वल्लाह, कौन गीदी दम भर ठहरे यहाँ।

आज़ाद—और यहाँ से आप जायँगे कहाँ ? जहन्नुम में ?

वेनेशिया—कुछ रुपये भी हैं ? जहाज़ का किराया कहाँ से दोगे ?

आज़ाद—मैं इनका खज़ानची हूँ। यह घर जायँ, किराया मैं दे दूँगा।

हँसोड़—इस खज़ानची के लफ़्ज़ पर हमें एक लतीफ़ा याद आया। शादी के पहले नौजवान लेडियाँ अपने आशिक़ को अपना खजाना कहती हैं। शादी होने के बाद उसे खज़ानची कहने लगती हैं। खज़ानची के खज़ानची और मियाँ के मियाँ।

वेनेशिया—अच्छा हुआ, तुम्हारी बीवी चल बसीं; नहीं तो तुम्हारी किफ़ायत उनकी जान ही ले लेती।

हँसोड़—अजीब औरत थी, शादी के बाद ऐसी रोनी सूरत बनाये रहती थी कि मालूम होता था, आज बाप के मरने की खबर आयी है। दो बरस के बाद हमसे छह महीने के लिए जुदाई हुई। अब जो देखता हूँ, तो और ही बात है। बात-बात पर मुसकिराना और हँसना। बात हुई और खिल गयी। मैंने पूछा, क्या तुम वही हो जो नाक-भौं चढ़ाये रहती थीं ? मुसकिरा कर कहा—हाँ, हूँ, तो वही। मैंने कहा—खैर, काया-पलट तो हुई। हँसके बोली—वाह इसमें ताज्जुब काहे का। एक दिन मुझे खयाल आ गया, बस, तब से अब हर वक़्त हँसती हूँ। तब तो मैंने अपना मुँह पीट लिया। रोनी सूरत बना कर बोला—हम तो खुश हुए थे कि अब हमसे तुमसे खूब बनेगी, मगर मालूम हो गया कि तुम्हारी हँसी और रोने, दोनों का एतबार नहीं। अगर तुम्हें इसी तरह बैठे-बैठे किसी दिन खयाल आ गया कि रोना अच्छा, तो फिर रोना ही शुरू कर दोगी।

आजाद—मुझे भी एक बात याद आ गयी। हमारे महल्ले में एक ख्वाजा साहब रहते थे। उनके एक लड़की थी, इतनी हसीन कि चाँद भी शरमा जाय। बात करते वक्त बस यही मालूम होता था कि मुँह से फूल झड़ते हैं। उसकी शादी एक गँवार जाहिल से हुई, जो इतना बदसूरत था कि उससे बात करने का भी जी न चाहता था। आखिर लड़की इसी ग़म में कुढ़-कुढ़ कर मर गयी।

५१

कई दिन तक तो जहाज खैरियत से चला गया, लेकिन पेरिस के करीब पहुँच-कर जहाज के कप्तान ने सबको इत्तिला दी कि एक घंटे में बड़ी सख्त आँधी आनेवाली है। यह खबर सुनते ही सबके होश-हवास गायब हो गये। अक्ल ने हवा बतलायी, आँखों में अँधेरी छायी, मौत का नक्शा आँखों के सामने फिरने लगा। तुर्रा यह कि आसमान फकीरों के दिल की तरह साफ था, चाँदनी खूब निखरी हुई, किसी को सानगुमान भी नहीं हो सकता था कि तूफ़ान आयेगा; मगर बेरोमिटर से तूफ़ान की आमद साफ़ ज़ाहिर थी। लोगों के बदन के रोंगटे खड़े हो गये, जान के लाले पड़ गये, या खुदा, जायें तो कहाँ जायें, और इस तूफ़ान से नजात क्योंकर पायें? कप्तान के भी हाथ-पाँव फूल गये और उसके नायब भी सिट्टी-पट्टी भूल गये। सीढ़ियों से तख्ते पर आते थे और घबरा कर फिर ऊपर चढ़ जाते थे। कप्तान लाख-लाख समझाता था, मगर किसी को उसकी बात का यकीन न आता था—

किसी तरह से समझता नहीं दिले नाशाद;
वही है रोना, वही चीखना, वही फ़रियाद।

इतने में हवा ने वह ज़ोर बाँधा कि लोग त्राहि-त्राहि करने लगे। कप्तान ने एक पाल तो रहने दिया, और जहाज को खुदा की राह पर छोड़ दिया। लहरों की यह कैफियत की आसमान से बातें करती थीं। जहाज झोंके खा कर गेंद की तरह इधर से उधर उछलता था। सब-के-सब जिंदगी से हाथ धो बैठे, अपनी जानों को रो बैठे। बच्चे सहम कर अपनी माँओं से चिपटे जाते थे। कोई औरत मुँह ढँक कर रोती थी कि उम्र भर की कमाई इस समुद्र में गँवायी। कोई अपने प्यारे बच्चे को छाती से लगा कर कहती—बेटा, अब हम रुखसत होते हैं। पर वह नादान मुसकिराता था और इस भोलेपन से माँ के दिल पर बिजलियाँ गिराता था। किसी को मारे खौफ़ के चुप लग गयी थी, किसी के हाथ-पाँवों में कँपकँपी थी। कोई समुद्र मे कूद पड़ने का इरादा करके रह जाता था, कोई बैठा देवतों को मनाता था। क्या बूढ़े, क्या जवान, सबकी अक्ल गुम थी। वेनेशिया के चेहरे का रँग काफूर हो गया। हँसोड़ के दिल से हँसी का खयाल कोसों दूर हो गया। मियाँ आजाद का चेहरा जर्द, अपिल्टन के हाथ-पाँव सर्द। मियाँ आजाद सोचने लगे, या खुदा, यह किस मुसीबत से दो-चार किया, माशूक के एवज मौत को गले का हार किया! जी लगाने की खूब सजा पायी, इश्क की धुन में जान भी गँवायी। हमारी हड्डियाँ तक गल जायँगी; पर हुस्नआरा हमारी खबर भी न पायेगी। सिपहआरा बार-बार फ़ाल देखेंगी कि आजाद कब मैदान से सुर्खरू हो कर आयेंगे और हम कब मसजिद में घी के चिराग जलायेंगे; मगर आजाद की किश्ती गोते खाती है और ज़रा देर में तह की खबर लाती है।

जहाज़ में तो यह कुहराम मचा था, मगर खोजी लंबी ताने सो ही रहे थे। इस नींद पर खुदा की मार, इस पीनक पर शैतान की फटकार! आजाद ने जगाया कि ख्वाजा साहब, उठिए, तूफ़ान आया है। हज़रत ने लेटे ही लेटे भुनभुना कर फ़रमाया कि चुप गीदी, हमने ख्वाब में बहुरूपिया पकड़ पाया है। तब तो आज़ाद झल्लाये और कस कर एक लात लगायी। खोजी कुलबुला कर उठ बैठे और समुद्र की भयानक सूरत देखी, तो काँप उठे।

कप्तान खूब समझता था कि हालत हर घड़ी नाजुक होती जाती है; लेकिन पुराना आदमी था, कलेजा मजबूत किये हुए था। इससे लोगों को तसल्ली होती थी कि शायद जान बच निकले। सामने पेरिम का जजीरा नज़र आता था; मगर वहाँ तक पहुँचना मुहाल था। सब के सब दुआ कर रहे थे कि जहाज किसी तरह इस टापू तक पहुँच जाय। मरने की तैयारियाँ हो रही थीं। इतने में आजाद ने क्या देखा कि अपिल्टन बेनेथिया का हाथ पकड़ कर तख्ते पर खड़े रो रहे हैं। आजाद को देखते ही बेनेथिया ने कहा—मिस्टर आज़ाद, रुखसत! हमेशा के लिए रुखसत!

आजाद—रुखसत!

हँसोड़—है-है! लो, अब भँवर में जहाज़ आ गया।

यह सुन कर औरतों ने वह फ़रियाद मचायी कि लोगों के कलेजे दहल गये।

अपिल्टन—बस, इतनी ही दुनिया थी!

आज़ाद—हाँ, इतनी ही दुनिया थी!

खोजी—भई आज़ाद, खुदा गवाह है, मैं इस वक्त अफ़ीम के नशे मे नहीं। अफ़सोस, तुम्हारी जान जाती है, हुस्नआरा समझेंगी कि आजाद ने धोखा दिया। हाय आज़ाद, तेरी जवानी मुफ्त गयी।

एकाएक जहाज तीन बार घूमा और हवा के झोंके से कई गज के फ़ासले पर जा पहुँचा। अब लाइफ-बोट के सिवा और कोई तदबीर न थी। जहाज डूबने ही को था, दस फ़ुट से ज्यादा पानी उसमें समा गया था। लाइफ-बोट समुद्र में उतारे गये और आजाद लड़कों और औरतों को उठा-उठा कर लाइफबोट में बैठाने लगे। उनकी अपनी जान खतरे मे थी, मगर इसकी उन्हें परवा न थी। जब वह बेनेथिया के पास पहुँचे, तो उसने इनसे हाथ मिलाया और अपिल्टन और वह, दोनों लाइफ-बोट में कूद पडे। आजाद की दिलेरी पर लोग हैरत से दाँतों तले उँगली दबाते थे। लोगों को यकीन हो गया था कि यह कोई फ़रिश्ता है, जो बेगुनाहों की जान बचाने के लिए आया है।

टापू के बाशिंदे किनारे पर खड़े रोशनी कर रहे थे कि शोले उठें और जहाज़ के लोग समझ जायँ कि ज़मीन करीब है। सैकड़ों आदमी गुल मचाते थे, तालियाँ बजाते थे। कुछ लोग रो रहे थे। मगर कुछ ऐसे भी थे, जो दिल में खिले जाते थे कि अब पौ बारह हैं।

एक—बस, अब जहाज़ डूबा। तड़के ही से लैस होकर आ बढूँगा।

दूसरा—हमें एक बार जवाहिरात का एक संदूक मिल गया था।

तीसरा—अजी हमने इसी तरह बहुत-कुछ पैदा किया।

चौथा—अजी, क्या बकते हो? कुछ तो खुदा से डरो। वे सब तो मुसीबत में हैं, और तुम लोगों को लूट की धुन सवार है। शर्म हो, तो चुल्लू-भर पानी में डूब मरो।

मियाँ खोजी बार-बार हिम्मत बाँध कर लाइफ-बोट की तरफ़ जाते और डर कर लौट आते थे। आखिर आज़ाद ने उन्हें भी घसीट कर लाइफ-बोट में पहुँचाया। वहाँ जाते ही उन्होंने गुल मचाया कि अफ़ीम की डिबिया तो वहीं रह गयी! मियाँ जरा कोई लपकके हमारी डिबिया ले आये। आज़ाद ने कहा—मियाँ तुम भी कितने पागल हो? यहाँ जानों के लाले पड़े हैं, तुम्हें अपनी डिबिया ही की फ़िक्र है।

लाइफ-बोट कुल तीन थे उनमें मुश्किल से पचास-साठ आदमी बैठ सकते थे। लेकिन हर शख्स चाहता था कि मैं भी लाइफ-बोट में पहुँच जाऊँ। कप्तान ने यह हालत देखी, तो जंजीरें खोल दीं। किश्तियाँ बह निकलीं। अब बाकी आदमियों की जो हालत हुई, वह बयान में नहीं आ सकती। अगर कोई फ़ोटोग्राफ़र इन बद-नसीबों की तसवीर उतारता, तो बड़े से बड़े संगदिल भी उसे देख कर सिर धुनते। मौत चिमटी जाती है, और मौत के पंजों में फँसी हुई जान फड़फड़ा रही है। मगर जान बड़ी प्यारी चीज है। लोग खूब जानते थे कि जहाज के डूबने में देर नहीं,

लाइफ-बोट भी दूर निकल गये। मगर फिर भी यह उम्मेद है, शायद किसी तरह बच जायँ। दो बदनसीब बहनें यों बातें कर रही थीं—

बड़ी बहन—कूद पड़ो पानी में। शायद बच जायँ।

छोटी बहन—लहरें कहीं न कहीं पहुँचा ही देंगी।

बड़ी—अम्माँ सुनेंगी तो क्या करेंगी?

छोटी—मैं तो कूदती हूँ।

बड़ी—क्यों जान देती है?

एक औरत ने अपने प्यारे बच्चे को समुद्र में फेंक दिया और कहा—यह लड़का तेरे सिपुर्द करती हूँ।

यह कह कर खुद भी गिर पड़ी।

अब सुनिए; जिस लाइफ-बोट पर वेनेशिया, और अपिल्टन थे, वह हवा के झोंके से पेरिम से दूर हट गया। वेनेशिया ने कहा—अब कोई उम्मेद नहीं।

अपिल्टन—खुदा पर भरोसा रखो।

वेनेशिया—या खुदा, हमें बचा ले। हम बेगुनाह हैं।

अपिल्टन—सब्र, सब्र!

वेनेशिया—लो, आज़ाद की किश्ती भी इधर ही आने लगी। अब कोई न बचेगा।

दोनों किश्तियाँ थोड़े ही फासले पर जा रही थीं, इतने में एक लहर ने अपिल्टन की किश्ती को ऐसा झोंका दिया कि वह नीचे ऊपर होने लगी और तीन आदमी समुद्र में गिर पड़े। अपिल्टन भी उनमें से एक थे। उनके गिरते ही वेनेशिया ने एक चीख मारी और बेहोश हो गयी। आजाद ने यह हाल देखा, तो फौरन बोट पर से कूद पड़े और जान हथेली पर लिये हुए, लहरों को चीरते, अपिल्टन की मदद को चले। इधर अपिल्टन का कुत्ता भी पानी मे कूदा और उनके सिर के बाल दाँतों से पकड़े ऊपर लाया। मियाँ आजाद भी तैरते हुए जा पहुँचे और अपिल्टन को पकड़ लिया। उसी वक्त किश्ती भी आ पहुँची और लोगों ने मदद दे कर अपिल्टन को खींच लिया। मगर किश्ती इतनी तेजी से निकल गयी कि आजाद उस पर न आ सके। अब उनके लिए मौत का सामना था। मगर वह कलेजा मजबूत किये टापू की तरफ तैरने चले जाते थे। टापूवालों ने उन्हें आते देखा, तो और भी हौसला बढ़ाया, और हिम्मत दिलायी। सब के सब दुआ कर रहे थे कि या खुदा, इस जवान को बचा। ज्यों ही आजाद टापू के करीब पहुँचे, रस्सियाँ फेंकी गयीं और आज़ाद ऊपर आये। सब ने उनकी पीठ ठोंकी। वेनेशिया ने मियाँ आजाद से कहा—तुम न होते तो, मैं कहीं की न रहती। तुम्हारा एहसान कभी न भूलूँगी।

अपिल्टन—भाई, देखना, भूल न जाना। टर्की से खत लिखते रहना।

आजाद—जरूर, जरूर!

वेनेशिया—आजाद, जैसे बहन को अपने भाई की मुहब्बत होती है, वैसे ही मुझको तुम्हारी मुहब्बत है।

आजाद—मैं जहाँ रहूँगा, आप लोगों से जरूर मिलूँगा।

खोजी—यार, हमारी अफीम की डिबिया जहाज ही मे रह गयी। देखें, किस खुश नसीब के हाथ लगती है।

सब लोग यह जुमला सुन कर खिलखिला कर हँस पड़े।

५२

माल्टा में आर्मीनिया, अरब, यूनान, स्पेन, फ्रांस सभी देशों के लोग हैं। मगर दो दिन से इस जजीरे में एक बड़े गरांडील जवान का गुज़र हुआ है। क़द कोई आध राज का हाथ-पाँव दो-दो माशे के; हवा जरा तेज चले, तो उड़ जायँ। मगर बात बात पर तीखे हुए जाते हैं। किसी ने ज़रा तिर्छी नज़र से देखा, और आपने करौली सीधी की। न दीन की फ़िक्र थी, न दुनिया की, बस, अफ़ीम हो, और चाहे कुछ हो या न हो।

आजाद ने कहा—भई, तुम्हारा यह फ़िकरा उम्र भर न भूलेगा कि देखें हमारी अफीम की डिबिया किस ख़ुशनसीब के हाथ लगती है।

खोजी—फिर, उसमें हँसी की क्या बात है? हमारी तो जान पर बन आयी और आपको दिल्लगी सूझती है। जहाज के डूबने का किस मर्दक को रंज हो। मगर अफ़ीम के डूबने का अलबत्ता रंज है। दो दिन से जम्हाइयों पर जम्हाइयाँ आती हैं। पैसे लाओ, तो देखूँ, शायद कहीं मिल जाय।

मियाँ आजाद ने दो पैसे दिये और आप एक दूकान पर पहुँच कर बोले—अफ़ीम लाना जी?

दूकानदार ने हाथ से कहा कि हमने समझा नहीं।

खोजी—अजब जाँगलू है! अबे, हम अफीम माँगते हैं।

दूकानदार हँसने लगा।

खोजी—क्या फटी जूती की तरह दाँत निकालता है! लाता है अफीम कि निकालूँ करौली!

इतने में मियाँ आजाद पहुँचे और पूछा—यहाँ क्या खरीदारी होती है?

खोजी—अजी, यहाँ तो सभी जाँगलू ही जाँगलू रहते हैं। घंटे भर से अफीम माँग रहा हूँ, सुनता ही नहीं।

आजाद—फिर कहने से तो आप बुरा मानते हैं। भला यह बारूद बेचता है या अफ़ीम? बिलकुल गौखे ही रहे!

खोजी—अगर अफीम का यही हाल रहा, तो टर्की तक पहुँचना मुहाल है।

आजाद—भई, हमारा कहा मानो। हमें टर्की जाने दो और तुम घर जाओ।

खोजी—वाहवा, अब मैं साथ छोड़नेवाला नहीं। और मैं चला जाऊँ, तो तुम लड़ोगे किसके बिरते पर?

आज़ाद—बेशक, आप ही के बिरते पर तो मैं लड़ने जाता हूँ न?

खोजी—कौन? कसम खाके कहता हूँ, जब सुनिएगा; यही सुनिएगा कि ख्वाजा साहब ने तोप में कील लगा दी।

आजाद—जी, इसमें क्या शक है।

खोजी—वक-वक के भरोसे न रहिएगा! अकेली लकड़ी चूल्हे में भी नहीं जलती। जिस वक़्त ख्वाजा साहब अरबी घोड़े पर सवार होंगे और अकड़ कर बैठेंगे, उस वक्त अच्छे-अच्छे कंडैल-कंडैल झुक-झुक कर सलाम करेंगे।

इतने में एक हब्शी सामने से आ निकला। करारा जवान, मछलियाँ भरी हुई, सीना चौड़ा। खोजी ने जो देखा कि एक आदमी अकड़ता हुआ सामने से आ रहा है, तो आप भी ऐंठने लगे। हब्शी ने करीब आ कर कंधे से ज़रा धक्का दिया, तो मियाँ खोजी ने बीस लुढ़कनियाँ खायीं। मगर बेहया तो थे ही, झाड़-पोंछ कर उठ खड़े हुए, और हब्शी को ललकार कर कहा—अबे ओ गीदी, न हुई करौली इस वक़्त। ज़रा मेरा पैर फिसल गया, नहीं तो वह पटकनी देता कि अंजर-पंजर ढीले हो जाते।

आज़ाद—तुम क्या, तुम्हारा गाँव भर तो इसका मुकाबला कर ले!

खोजी—अच्छा, लड़ा कर देख लो न! छाती पर न चढ़ बैठूँ, तो ख्वाजा नाम नहीं। कहो, ललकारूँ जा कर।

आज़ाद—बस, जाने दीजिए। क्यों हाथ-पाँव के दुश्मन हुए हो!

दूसरे दिन जहाज वहाँ से रवाना हुआ। आज़ाद को बार-बार हुस्नआरा की याद आती थी। सोचते थे, कहीं लड़ाई में मारा गया, तो उससे मुलाक़ात भी न होगी। खोजी से बोले—क्यों जी, हम अगर मर गये, तो तुम हुस्नआरा को हमारे मरने की खबर दोगे, या नहीं?

खोजी—मरना क्या हँसी-ठट्ठा है? मरते हैं हम जैसे दुबले-पतले बूढ़े अफीमची कि तुम ऐसे हट्टे-कट्टे जवान?

आज़ाद—शायद हमीं तुमसे पहले मर जायँ?

खोजी—हम तुमको अपने पहले मरने ही न देंगे। उधर तुम बीमार हुए, और हमने इधर ज़हर खाया।

आज़ाद—अच्छा, जो हम डूब गये?

खोजी—सुनो मियाँ, डूबनेवाले दूसरे ही होते हैं। वह समुंदर में डूबने नहीं आया करते, उनके लिए एक चुल्लू काफी होता है।

आज़ाद—ज़रा देर के लिए मान लो कि हम मर गये तो इत्तिला दोगे न?

खोजी—पहले तो हम तुमसे पहले ही डूब जायँगे, और अगर बदनसीबी से बच गये, तो जा कर कहेंगे—आज़ाद ने शादी कर ली, और गुलछर्रे उड़ा रहे हैं।

आज़ाद—तब तो आप दोस्ती का हक खूब अदा करेंगे!

खोजी—इसमें हिक्मत है।

आज़ाद—क्या है, हम भी सुनें?

खोजी—इतना भी नहीं समझते! अरे मियाँ, तुम्हारे मरने की खबर पा कर हुस्नआरा की जान पर बन आयेगी, वह सिर पटक-पटक कर दम तोड़ देगी; और जो यह सुनेगी कि आज़ाद ने दूसरी शादी कर ली, तो उसे तुम्हारे नाम से नफ़रत हो जायगी, और रंज तो पास फटकने भी न पायेगा। क्यों, है न अच्छी तरकीब?

आजाद—हाँ, है तो अच्छी।

खोजी—देखा, बूढ़े आदमी डिबिया में बंद कर रखने के क़ाबिल होते हैं। तुम लाख पढ़ जाओ, फिर लौंडे ही हो हमारे सामने। मगर तुम्हारी आजकल यह क्या हालत है? कोई किताब पढ़ कर दिल क्यों नहीं बहलाते?

आजाद—जी उचाट हो रहा है। किसी काम में जी नहीं लगता।

खोजी—तो खूब सैर करो। यार, पहले तो हमें उम्मेद ही नहीं कि हिंदोस्तान पहुँचें. लेकिन जिंदा बचे, और हिंदोस्तान की सूरत देखी, तो जमीन पर क़दम न रखेंगे। लोगों से कहेंगे, तुम लोग क्या जानो, माल्टा कहाँ है? खूब गप्पें उड़ायेंगे।

यों बातें करते हुए दोनों आदमी एक कोठे में गये। वहाँ कहवे की दूकान थी। आजाद ने एक आदमी के हाथ अफीम मँगायी। खोजी ने अफ़ीम देखी तो खिल गये। वहीं घोली और चुस्की लगायी। वाह आजाद, क्यों न हो, यह एहसान उम्र-भर न भूलूँगा। इस वक़्त हम भी अपने वक्त के बादशाह हैं—

फ़िक्र दुनिया की नहीं रहती है मैख्वारों में,
ग़म ग़लत हो गया जब बैठ गये यारों में।

उस दूकान में बहुत से अख़बार मेज पर पड़े थे। आजाद एक किताब देखने लगे। मालिक-दूकान ने देखा, तो पूछा—कहाँ का सफ़र है?

आजाद—टर्की जाने का इरादा है।

मालिक—वहाँ हमारी भी एक कोठी है। आप वहीं ठहरिएगा।

आजाद—आप एक खत लिख दें, तो अच्छा हो।

मालिक—खुशी से। मगर आजकल तो वहाँ जंग छिड़ी है!

आजाद—अच्छा, छिड़ गयी?

मालिक—हाँ, छिड़ गयी। लड़ाई सख्त होगी। लोहे से लोहा लड़ेगा।

जब आजाद यहाँ से चलने लगे, तो मालिक ने अपने लड़के के नाम खत लिख कर आजाद को दिया। दोनों आदमी वहाँ से आ कर जहाज़ पर बैठे।

५३

रात के ग्यारह बजे थे, चारों बहनें चाँदनी का लुत्फ़ उठा रही थीं। एकाएक मामा ने कहा—ऐ हुजूर, जरी चुप तो रहिए। यह गुल कैसा हो रहा है? आग लगी है कहीं।

हुस्नआरा—अरे, वह शोले निकल रहे हैं। यह तो बिलकुल करीब है।

नवाब साहब—कहाँ हो सब की सब! जरूरी सामान बाँध कर अलग करो। पड़ोस में शाहजादे के यहाँ आग लग गयी। ज़ेवर और जवाहिरात अलग कर लो। असबाब और कपड़े को जहन्नुम में डालो।

बहारबेगम—हाय, अब क्या होगा!

हुस्नआरा—हाय-हाय, शोले असमान की खबर लाने लगे!

नीचे उतर कर सबों ने बड़ी फुरती से सब चीजें बाहर निकालीं और फिर कोठे पर गयीं, तो क्या देखती हैं कि हुमायूँ फ़र की कोठी में आग लगी है और हर तरफ़ से शोले उठ रहे हैं। ये सब इतनी दूर पर खड़ी थीं, मगर ऐसा मालूम होता था कि चारों तरफ़ भट्ठी ही भट्ठी है। बल्लियाँ जो चटकीं, तो बस, यही मालूम हुआ कि बादल गरज रहा है।

बहारबेगम—हाय, लाखों पर पानी पड़ गया!

सिपहआरा—बहन, इधर तो आओ। देखो, हजारों आदमी जमा हैं। जरा देखो, वह कौन है? है-है! वह कौन है?

बहारबेगम—कहाँ कौन है?

सिपहआरा—यह महताबी पर कौन है?

हुस्नआरा—अरे, यह तो हुमायूँ फर हैं। गजब हो गया। अब यह क्योंकर बचेंगे?

सिपहआरा फूट-फूट कर रोने लगी। फिर बोली—आ जी, अब होगा क्या? चारों तरफ़ आग है। बचेगा क्योंकर बेचारा!

बहारबेगम—इसकी जवानी पर तरस आता है।

हुस्नआरा मुँह ढाँप कर खूब रोयीं। सिपहआरा का यह हाल था कि आँसुओं का तार न टूटता था। हुमायूँ फर महताबी पर इस ताक में सोये थे कि शायद इन हसीनों में से किसी का जलवा नज़र आये। लेकिन ठंढी हवा चली, तो आँख लग गयी। जब आग लगी और चारों तरफ़ गुल मचा, तो जागे; लेकिन कब? जब महताबी के नीचे के हिस्से में चारों तरफ आग लग चुकी थी। ख़िदमतगारों के हाथ-पाँव फूल गये। यही सोचते थे, किसी तरह से इस बेचारे की जान बचायें। असबाब बटोरने की फ़िक्र किसे! कोई शाहजादे की जवानी को याद करके रोता

था, कोई सिर धुन कर कहता था—ग़रीब बूढ़ी माँ के दिल पर क्या गुज़रेगी ! शहर से गोल के गोल आदमी आ कर जमा हो गये। सिपाही और चौकीदार, शहर के रईस और अफ़सर उमडे चले आते थे। दरिया से–हजारों घड़े पानी लाया जाता था। भिश्ती और मजदूर आग बुझाने में मसरूफ़ थे। मगर हवा इस. तेज़ी पर थी कि पानी तेल का काम देता था। शाहज़ादे इस नाउम्मेदी की हालत में सोच रहे थे कि जिन लोगों के दीदार के लिए मैंने अपनी जान गँवायी, उन्हें मालूम हो जाय, तो मैं समझूँ कि जी उठा। इतने में इधर नज़र पड़ी, तो देखा कि सब की सब औरतें कोठे पर खड़ी हाय-हाय कर रही हैं। सोचे, ख़ैर शुक्र है ! जिसके लिए जान दी, उसको अपना मातम करते तो देख लिया। एकाएक उन्हें अपना छोटा भाई याद आया। उसकी तरफ़ मुख़ातिब हो कर कहा—भाई, घर-बार तुम्हारे सुपुर्द है। माँ को तसल्ली देना कि हुमायूँ फ़र न रहा, तो मैं तो हूँ। यह फ़िक़रा सुन कर सब लोग रोने लगे। इतने में आग के शोले और करीब आये और हवा ने और ज़ोर बाँधा, तो शाहज़ादा ने सिपहआरा की तरफ़ नजर करके तीन बार सलाम किया। चारों बहनें दीवारों से सिर टकराने लगीं कि हाय, यह क्या सितम हुआ ! शाहज़ादे ने यह कैफ़ियत देखी, तो इशारे से मना किया। लेकिन दोनों बहनों की आँखों में इतने आँसू भरे हुए थे कि उन्हें कुछ दिखायी न दिया।

सिपहआरा खिड़की के पास जा कर फिर सिर पीटने लगी। हुमायूँ फ़र उसे देख कर अपना सदमा भूल गये और हाथ बाँध कर दूर ही से कहा—अगर यह करोगी, तो हम अपनी जान दे देंगे ! गोया जान बचने की उम्मेद ही तो थी ! चारों तरफ़ आग के शोले उठ रहे थे, धुआँ बादल की तरह छाया हुआ था, भागने की कोई तदबीर नहीं। हवा कहती है कि मैं आज ही तेजी दिखलाऊँगी, और आप कहते हैं कि मैं अपनी जान दे दूँगा।

इतने में जब आग बहुत ही करीब आ गयी, तो हुमायूँ फर की हिम्मत छूट गयी। बेचैनी की हालत में सारी छत पर घूमने लगे। आखिर यहाँ तक नौबत आयी कि जो लोग क़रीब खड़े थे, वह लपटों के मारे और दूर भागने लगे। आग हुमायूँ फ़र· से सिर्फ़ एक ग़ज के फ़ासले पर थी। आँच से फुँके जाते थे। जब ज़िंदगी की कोई उम्मेद न रही, तो आखिरी बार सिपहआरा की तरफ टोपी उतार कर सलाम किया और बदन को तौल कर धम से कूद पड़े।

उधर सिपहआरा ने भी एक चीख मारी और खिड़की से नीचे कूदी।

शाहजादा साहब नीचे घास पर गिरे। यहाँ ज़मीन बिलकुल नर्म और गीली थी। गिरते ही बेहोश हो गये। लोग चारों तरफ़ से दौड़ पडे और हाथों-हाथ जमीन से उठा लिया। लुत्फ की बात यह कि सिपहआरा को भी जरा चोट नहीं लगी थी। उसने उठते ही कहा कि लोगो, हुमायूँ शाहजादा बचा हो, तो हमें दिखा दो। नहीं तो उसी की क़ब्र में हमको भी ज़िंदा दफ़न कर देना।

इतने में नवाब साहब ने सिपहआरा को अलग ले जा कर कहा—तुम घबराओ नहीं। शाहजादा साहब खैरियत से हैं।

सिपहआरा—हाय! दूल्हा भाई, मैं क्योंकर मानूँ!

नवाब साहब—नहीं बहन, आओ, हम उन्हें अभी दिखाये देते हैं।

सिपहआरा—फिर दिखाओ मेरे दूल्हा भाई!

नवाब साहब—जरा भीड़ छँट जाय, तो दिखाऊँ। तब तक घर चली चलो।

सिपहआरा—फिर दिखाओगे? हमारे सिर पर हाथ रख कर कहो।

नवाब साहब—इस सिर की कसम जरूर दिखायेंगे।

सिपहआरा को अंदर पहुँचा कर नवाब साहब हुमायूँ फर के यहाँ पहुँचे, तो देखा कि टाँग में कुछ चोट आयी है। डॉक्टर पट्टी बाँध रहा है और बहुत से आदमी उन्हें घेरे खड़े हैं। लोग इस बात पर बहस कर रहे हैं कि आग लगी क्योंकर? रात भर शाहजादे की हालत बहुत खराब रही। दर्द के मारे तड़प-तड़प उठते। सुबह को चारपाई से उठ कर बैठे ही थे कि चिट्ठीरसाँ ने आ कर एक खत दिया। शाहजादे साहब ने इस खत को नवाब साहब की तरफ बढ़ा दिया। उन्होंने यह मजमून पढ़ सुनाया—

अजी हजरत, तसलीम।

सच कहना, कैसा बदला लिया! लाख-लाख समझाया, मगर तुमने न माना। आखिर, तुम खुद ही मुसीबत में पड़े। तुमने हमारा दिल जलाया है, तो हम तुम्हारा घर भी न जलायें? जिस वक्त यह खत तुम्हारे पास पहुँचेगा, मकान जल-भुन के खाक हो गया होगा।

शहसवार।

शाहजादे साहब ने यह मजमून सुना, तो त्योरियों पर बल पड़ गये और चेहरा मारे गुस्से के सुर्ख पड़ गया।

रात का वक्त था, एक सवार हथियार साजे, रातों-रात घोड़े को कड़कड़ाता हुआ बगटुट भागा जाता था। दिल में चोर था कि कहीं पकड़ न जाऊँ! जेलखाना झेलूँ। सोच रहा था, शाहजादे के घर में आग लगायी है, खैरियत नहीं। पुलीस की दौड़ आती ही होगी। रात भर भागता ही गया। आखिर सुबह को एक छोटा सा गाँव नजर आया। बदन थक कर चूर हो गया था। अभी घोड़े से उतरा ही था कि बस्ती की तरफ से गुल की आवाज आयी। वहाँ पहुँचा, तो क्या देखता है कि गाँव भर के वाशिंदे जमा हैं, और दो गँवार आपस में लड़ रहे हैं। अभी यह वहाँ पहुँचा ही था कि एक ने दूसरे के सिर पर ऐसा लट्ठ मारा कि वह जमीन पर आ रहा। लोगों ने लट्ठ मारनेवाले को गिरफ़्तार कर लिया और थाने पर लाये। शहसवार ने दरियाफ्त किया, तो मालूम हुआ कि दोनों की एक जोगिन से आशनाई थी।

सवार—यह जोगिन कौन है भई?

एक गँवार—इतनी उमिर आयी, अस जोगिन कतहूँ न दीख।

इतने में थानेदार आ गये। जखमी को चारपाई पर डाल कर अस्पताल भिजवाया और खूनी को गवाहों के साथ थाने ले गये। मियाँ सवार भी उनके साथ हो लिये, थाने में तहकीकात होने लगी।

थानेदार—यह किस बात पर झगड़ा हुआ जी?

चौकीदार—हुजूर, वह सास जौन जोगिन बनी है।

थानेदार—हम तुमसे इतना पूछता है किस बात पर लड़ाई हुआ?

चौकीदार—जैसे इहौ वहाँ जात रहै और वहौ वहाँ जात रहै। तौन आपस में लाग-डाँट है गयी। ए बस एक दिन मार-धार है गयी बस, लाठी चलै लाग। मूर से रकत बहुत बहा।

मौलवी—सूबेदार साहब, आज दोनों ने खूब कुज्जियाँ चढ़ायी थीं।

थानेदार—आप कौन हैं?

मौलवी—हुजूर, गाँव का काजी हूँ।

थानेदार—यहीं मकान है आपका?

मौलवी—जी हाँ, पुराना रईस हूँ।

शहसवार—बेशक!

थानेदार—देहातवाले भी अजीब जाँगलू होते हैं। एक बार एक देहाती मुशायरे में जाने का इत्तफाक हुआ। बड़े-बड़े गँवार के लट्ठ जमा थे। एक साहब ने शेर पढ़ा, तो आखिर में फ़रमाते हैं—बीमार हौं। लोग हैरत में थे कि इस हौं के क्या माने? फिर हजरत ने फरमाया—सरशार हौं। मारे हँसी के लोट गया। हाँ, मौलवी साहब, फिर क्या हुआ?

मौलवी—बस, जनाब, फिर दोनों में कुश्ती हुई। कभी यह ऊपर, वह नीचे, कभी वह नीचे, यह ऊपर। तब तो मैं भागा कि चौकीदार से कहूँ। दौड़ता गया।

थानेदार—जनाब, इस महावरे को याद रखिएगा।

मौलवी—बस, मैं दौड़के पूरन चौकीदार के मकान पर गया। उसकी जोड़, बोली—

सवार—कौन बोली?

थानेदार—(हँस कर) सुना नहीं आपने? जोड़।

मौलवी—हुजूर, हुक्काम हैं, आपको हँसना न चाहिए।

थानेदार—जी हाँ, मैं हुक्काम हूँ; मगर आप भी तो उमरों हैं। हाँ, फ़रमाओ जी

मौलवी—देखिए, फ़रमाता हूँ।

सवार—अब हँसी जब्त नहीं हो सकती।

मौलवी—बस जनाब, वहाँ से मैं इस चौकीदार को लाया। वहाँ आ कर देखा, तो खून के दरिया बह रहे थे।

इतने में खबर आयी कि ज़खमी दुनिया से रवाना हो गया। थानेदार साहब मारे खुशी के फूल गये। मामूली मार-पीट 'खून' हो गयी। खूनी का चालान किया और जज ने उसे फाँसी की सज़ा दे दी।

जिस वक्त खूनी को फाँसी हो रही थी, मियाँ सवार भी तमाशा देखने आ पहुँचे। मगर उस वक़्त की हालत देख कर उनके दिल पर ऐसा असर हुआ कि आँखें खुल गयीं। सोचने लगे—दुनिया से नाता तोड़ लें। किसी से हसद और कीना न रखें। अगर कहीं पकड़ गया होता, तो मुझे भी यों ही फाँसी मिलती। खुदा ने बहुत बचाया। मगर ज़रा इस जोगिन को देखना चाहिए। यह दिल में ठान कर जोगिन के मकान की तरफ़ चले।

जब लोगों से पूछते हुए उसके मकान पर पहुँचे, तो देखा कि एक खूबसूरत बाग़ है और एक छोटा सा खुशनुमा बँगला, बहुत साफ़ सुथरा। मकान क्या, परीखाना था। जोगिन के करीब जा कर उसको सलाम किया। जोगिन के पोर-पोर पर जोबन था। जवानी फटी पड़ती थी। सिर से पैर तक संदली कपड़े पहने हुए थी। शहसवार हज़ार जान से लोट पोट हो गये। जोगिन इनकी चितवनों से ताड़ गयी कि हजरत का दिल आया है।

सवार—बड़ी दूर से आपका नाम सुन कर आया हूँ।

जोगिन—अक्सर लोग आया करते हैं। कोई आये, तो खुशी नहीं, न आये, तो रंज नहीं।

सवार—मैं चाहता हूँ कि उम्र भर आपके क़दमों के तले पड़ा रहूँ।

जोगिन—आपका मकान कहाँ है?

सवार—

घर बार से क्या फकीर को काम ?
क्या लीजिए छोडे गाँव का नाम।

जोगिन—यहाँ कैसे आये ?

सवार—रमते जोगी तो हैं ही, इधर भी आ निकले।

जोगिन—आखिर इतना तो बतलाओ कि हो कौन ?

सवार—एक बदनसीब आदमी।

जोगिन—क्यों ?

सवार—अपने कर्मों का फल।

जोगिन—सच है!

सवार—मुझे इश्क ही ने तो गारद कर दिया। एक बेगम की दो लड़कियाँ हैं। उनसे आँखें लड़ गयीं। जीते जी मर मिटा।

जोगिन—शादी नहीं हुई ?

सवार—एक दुश्मन पैदा हो गया। आज़ाद नाम था। बहुत ही खूबसूरत सजीला जवान।

मियाँ आजाद का नाम सुनते ही जोगिन के चेहरे का रंग उड़ गया। आँखों से आँसू गिरने लगे। शहसवार दंग थे कि बैठे-बिठाये इसे क्या हो गया।

सवार—जरा दिल को ढारस दो, आखिर तुम्हें किस बात का रंज है ?

जोगिन—

ख़ौफ़ से लेते नहीं नाम कि सुन ले न कोई;
दिल ही दिल में तुम्हें हम याद किया करते हैं।

हमारी दास्तान ग़म से भरी हुई है! सुन कर क्या करोगे। हाँ, तुम्हे एक सलाह देती हूँ। अगर चाहते हो कि दिल की मुराद पूरी हो, तो दिल साफ़ रखो।

सवार—तुम्हारे सिवा अगर किसी और पर नजर पड़े, तो आँखें फूट जायँ!

जोगिन—यही दिल की सफाई है ?

सवार—शीशी से गुलाब निकाल लो। मगर गुलाब की बू बाकी रहेगी। दुनिया को छोड़ तो बैठें, पर इश्क दिल से न जायगा। अब हम चाहते हैं कि तुम्हारे ही साथ जिंदगी बसर करें। आजाद उसके साथ रहें, हम तुम्हारे साथ।

जोगिन—भला तुम आजाद को पाओ, तो क्या करो ?

सवार—कच्चा ही चबा जाऊँ ?

जोगिन—तो फिर हमसे न बनेगी ? अगर तुम्हारा दिल साफ नहीं, तो अपनी राह लगो।

सवार—अच्छा, अब आज से आजाद का नाम ही न लेंगे।

५५

आज़ाद का जहाज़ जब इस्कंदरिया पहुँचा, तो वह खोजी के साथ एक होटल में ठहरे। अब खाना खाने का वक्त आया, तो खोजी बोले—लाहौल, यहाँ खानेवाले की ऐसी तैसी चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय, मगर हम जरा सी तकलीफ के लिए अपना मजहब न छोड़ेंगे। आप शौक से जायँ और मज़े से खायँ; हमें माफ ही रखिए।

आजाद—और अफीम खाना मजहब के खिलाफ नहीं?

खोजी—कभी नहीं! और, अगर हो भी तो क्या यह जरूरी है कि एक काम मजहब के खिलाफ किया, तो और सब काम मजहब के खिलाफ़ ही करें?

आजाद—अजी, तो किस गधे ने तुमसे कहा कि यहाँ खाना मज़हब के खिलाफ़ है? मेज-कुर्सी देखी और चीख उठे कि मजहब के खिलाफ है? इस खब्त की भी कोई दवा है!

खोजी—अजी, वह खब्त ही सही। आप रहने दीजिए।

आजाद—खाओ, या जहन्नुम में जाओ।

खोजी—जहन्नुम में वे जायँगे, जो यहाँ खायँगे। यहाँ तो सीधे जन्नत में पहुँचेंगे।

आजाद—वहाँ अफीम कहाँ से आयेगी?

इतने में दो तुर्की आये और अपनी कुर्सियों पर बैठ कर मजे से खाने लगे। आजाद की चढ़ी बनी। पूछा, ख्वाजा साहब, बोल गीदी, अब शरमाया या नहीं? खोजी ने पहले तो कहा, ये मुसलमान नहीं हैं। फिर कहा, शायद हों ऐसे-वैसे। मगर जब मालूम हुआ कि दोनों खास तुर्की के रहनेवाले हैं, तो बोले—आप लोग यहाँ होटल में खाना खाते हैं? क्या यह मजहब के खिलाफ नहीं?

तुर्की—मजहब के खिलाफ़ क्यों होने लगा?

आखिर, खोजी झेंपे। फिर होटल में खाना खाया। थोड़ी देर के बाद आज़ाद तो एक साहब से मिलने चले और खोजी ने पीनक लेना शुरू किया। जब नींद खुली, तो सोचे कि हम बैठे-बैठे कब तक यहीं मक्खियाँ मारेंगे। आओ देखें, अगर कोई हिंदुस्तानी भाई मिल जाय, तो गप्पें उड़े। इधर-उधर टहलने लगे। आखिरकार एक हिंदुस्तानी से मुलाकात हुई। सलाम-बंदगी के बाद बातें होने लगीं। ख्वाजा साहब ने पूछा—क्यों साहब, यहाँ कोई अफीम की दूकान है? उस आदमी ने इसका कुछ जवाब ही नहीं दिया। खोजी तीखे आदमी। उनका भला यह ताब कहाँ कि किसी से सवाल करें और वह जवाब न दे? बिगड़ खड़े हुए—न हुई करौली, खुदा की कसम! वरना तमाशा दिखा देता।

हिंदुस्तानी ने समझा, यह पागल है। अगर बोलूँगा, तो खुदा जाने, काट खाय, या चोट करे। इससे यही अच्छा कि चुप ही रहो। मियाँ खोजी समझे कि

दब गया, और भी अकड़ गये। उसने समझा, अब चोट किया ही चाहता है। ज़रा पीछे हट गया। उसका पीछे हटना था कि मियाँ खोजी और भी शेर हुए। मगर कुंदे तौल तौल कर जाते थे। फिर रोब से पूछा—क्यों बे, यहाँ ठंडा पानी मिल सकता है? वह गरीब झट-पट ठंडा पानी लाया। खोजी ने दो-चार घूँट पानी पिया और अकड़ कर बोले—माँग, क्या माँगता है? उस आदमी ने समझा, यह ज़रूर दीवाना है! आपकी हालत तो इतनी खराब है, पल्ले टका तो है नहीं और कहते हैं—माँग, क्या माँगता है? खोजी ने फिर तन कर कहा—माँग कुछ। उस आदमी ने डरते-डरते कहा—यह जो हाथ में है, दे दीजिए।

खोजी का रंग उड़ गया। जान तक माँगता, तो देने में दरेग़ न करते; मगर चीनिया बेगम तो नहीं दी जाती। उससे पूछा—तुम यहाँ कब से हो, क्या नाम है? उसने जवाब दिया—मुझे तहौवरखाँ कहते हैं।

खोजी—भला, इस होटल में मुसलमान लोग खाते हैं?

तहौवरखाँ—बराबर! क्यों न खायें?

होटलवालों ने मिसकोट की कि खोजी को छेड़ना चाहिए। इस होटल में क़ाहिरा का रहनेवाला बौना था। लोग सोचे, इस बौने और खोजी से पकड़ हो तो अच्छा। बौना बड़ा शरीर था। लोगों ने उससे कहा—चलो, तुम्हारी कुश्ती बदी गयी है। वह देखो, एक आदमी हिंदोस्तान से आया है। कितना अच्छा जोड़ है। यह सुन कर बौना मियाँ खोजी के क़रीब गया और झुक कर सलाम किया। खोजी ने जो देखा कि एक आदमी हमसे भी ऊँचा मिला, तो अकड़ कर आँखों से सलाम का जवाब दिया। बौने ने इधर-उधर देख कर एक दफ़ा मौक़ा जो पाया, तो मियाँ खोजी की टोपी उतार कर पड़ाक से एक धौल जमायी और टोपी फेंक कर भागा। मगर ज़रा-ज़रा से पाँव, भाग कर जाता कहाँ? खोजी भी झपटे। आगे-आगे बौना और पीछे-पीछे मियाँ खोजी। कहते जाते थे—ओ गीदी, न हुई करौली, नहीं तो इसी दम भोंक देता। आखिर बौना हाँप कर खड़ा हो गया। तब तो खोजी ने लपक-कर हाथ पकड़ा और पूछा—क्यों बे! इस पर बौने ने मुँह चिढ़ाया। खोजी ग़ुस्से में भरे तो थे ही, आपने भी एक धप जड़ी।

खोजी—और लेगा?

बौना—(अपनी ज़बान में) छोड़, नहीं मार ही डालूँगा।

खोजी—दे मारूँ उठा कर?

बौना—रात आने दो।

खोजी ने झल्ला कर बौने को उठा कर दे मारा, चारों खाने चित्त, और अकड़ कर बोले—लो मारा! और लेगा! खोजी से ये बातें?

इतने में आज़ाद आ गये। खोजी तने बैठे थे, उम्र भर में उन्होंने आज पहली ही मर्तबा एक आदमी को नीचा दिखाया था। आज़ाद को देखते ही बोले—इस वक्त एक कुश्ती और निकली।

आजाद—कुश्ती कैसी ?

खोजी—कैसी होती है कुश्ती ? कुश्ती और क्या ?

आजाद—मालूम होता है, पिटे हो।

खोजी—पिटनेवाले की ऐसी-तैसी ! और कहनेवाले को क्या कहूँ !

आजाद—कुश्ती निकाली !

तहौवरखाँ—हाँ हुजूर यह सच कहते हैं।

खोजी—लीजिए, अब तो आया यकीन !

आजाद—क्या हुआ, क्या ?

तहौवरखाँ—जी, यहाँ एक बौना है। उसने इनके एक धौल लगायी।

आजाद—देखा न ! मैं तो समझा ही था कि पिटे होगे।

खोजी—पूरी बात तो सुन लो।

तहौवरखाँ—बस, धौल खा कर लपके। उसके कई चपतें लगायीं और उठा कर दे पटका।

खोजी—वह पटखनी बतायी कि याद ही तो करता होगा। दो महीने तक खटिया से न उठ सकेगा।

तहौवरखाँ—वह देखिए, सामने खड़ा कौन अकड़ रहा है ? तुम तो कहते थे कि दो महीने तक उठ ही न सकेगा।

रात को कोई नौ बजे खोजी ने पानी माँगा। अभी पानी पी ही रहे थे कि कमरे का लैंप गुल हो गया और कमरे में चटाख-चटाख की आवाज गूँजने लगी।

खोजी—अरे, यह तो वही बौना मालूम होता है। पानी इसी ने पिलाया था और चपत भी इसी ने जड़ी। दिल में कहा—क्या तड़का न होगा ? जिंदा खोद कर गाड़ दूँ तो सही।

खोजी पानी पी कर लेटे कि दस्त की हाजत हुई। बौने ने पानी में जमालगोटा मिला दिया था। तिल-तिल पर दस्त आने लगे। मशहूर हो गया कि खोजी को हैजा हुआ। डॉक्टर बुलाया गया। उसने दवा दी और खोजी दस्तों के मारे निढाल हो कर चारपाई पर गिर पड़े। आजाद एक रईस से मिलने गये थे। होटल के एक आदमी ने उनको जा कर इत्तला दी। घबराये हुए आये। खोजी ने आजाद को देख कर सलाम किया, और आहिस्ता से बोले—रुखसत ! खुदा करे, तुम जल्द यहाँ से लौटो। यह कह कर तीन बार कलमा पढ़ा।

आजाद—कैसी तबीयत है ?

खोजी—मर रहा हूँ, एक हाफ़िज बुलवाओ और उससे कहो, कुरान शरीफ़ पढ़े।

आजाद—अजी, तुम दो दिन में अच्छे हो जाओगे।

खोजी—जिंदगी और मौत खुदा के हाथ है। मगर भाई, खुदा के वास्ते जरा अपनी जान का ख्याल रखना। हम तो अब चलते हैं। अब तक हँसी-खुशी तुम्हारा

साथ दिया; मगर अब मजबूरी है। आब-दाने की बात है, हमको यहाँ की मिट्टी घसीट लायी।

आज़ाद—अजी नहीं आज के चौथे रोज दनदनाओगे। देख लेना। डंड पेलते होगे।

खोजी—खुदा के हाथ है।

आजाद—देखिए, कब मुलाकात होती है।

खोजी—इस बूढ़े को कभी-कभी याद करते रहना। एक बात याद रखना, परदेस का वास्ता है, सबसे मिल-जुल कर रहना। जूती-पैजार, लड़ाई-झगड़ा किसी से न करना। समझदार हो तो क्या, आखिर बच्चे ही हो। यार, जुदाई ऐसी अखर रही है कि बस, क्या बयान करूँ।

आजाद—अच्छे हो जाओ, तो हिंदोस्तान चले जाना।

खोजी—अरे मियाँ, यहाँ दम भर का भरोसा नहीं है।

दूसरे दिन आजाद खोजी से रुखसत हो कर जहाज पर सवार हुए। इतने दिनों के बाद खोजी की जुदाई से उन्हें बहुत रंज हो रहा था। थोड़ी देर के बाद नींद आ गयी, तो ख्वाब देखा कि वह हुस्नआरा बेगम के दरवाजे पर पहुँचे हैं और वह उन्हें फूलों का एक गुलदस्ता दे रही हैं। एकाएक तोप दगी और आजाद की आँख खुल गयी। जहाज कुस्तुनतुनिया पहुँच गया था।

५६

आजाद तो उधर काहिरे की हवा खा रहे थे, इधर हुस्नआरा बीमार पड़ीं। कुछ दिन तक तो हकीमों और डॉक्टरों की दवा हुई, फिर गंडे-ताबीज़ की बारी आयी। आखिर आबोहवा तब्दील करने की ठहरी। बहारबेगम के पास गोमती के किनारे एक बहुत अच्छी कोठी थी। चारों बहनें बड़ी बेगम और घर के नौकर-चाकर सब इस नयी कोठी में आ पहुँचे।

बेगम—मकान तो बड़ा कुशादा है! देखूँ, चंद्रवेधी है या सूर्यवेधी।

हुस्नआरा—हाँ अम्मॉजान, यह जरूर देखना चाहिए।

रूहअफ़ज़ा—ले लो, जरूर! हज़ार काम छोड़ कर।

दोनों बहनें हँसती-बोलती मकान के दालान और कमरे देखने लगीं। छत पर एक कमरे के दरवाजे जो खोले, तो देखा, दरिया लहरें मार रहा है। हुस्नआरा ने कहा—बाजी, इस वक्त जी खुश हो गया। हमारी पलँगड़ी यहीं बिछे। बरसों की बीमार यहाँ रहे, तो दो दिन में अच्छा-भला चंगा हो जाय।

सिपहआरा—बहार बहन, भला कभी अँधेरे-उजाले दूल्हा भाई नहाने देते हैं दरिया में!

बहारबेगम—ऐ है, इसका नाम भी न लेना। इनको बहुत चिढ़ है इस बात की।

सुबह का वक्त था, चारों बहनें ऊँची छत पर हवा खाने लगीं कि इतने में एक तरफ से धुआँ उठा। हुस्नआरा ने पूछा—यह धुआँ कैसा है?

रूहअफ़ज़ा—इस घाट पर मुर्दे जलाये जाते हैं।

हुस्नआरा—मुर्दे यहीं जलते हैं?

बहारबेगम—हाँ, मगर यहाँ से दूर है।

सिपहआरा—हाय, क्या जाने कौन बेचारा जल रहा होगा!

रूहअफ़ज़ा—जिंदगी का भरोसा नहीं।

बड़ी बेगम ने सुना कि यहाँ मुर्दे जलाये जाते हैं, तो होश उड़ गये। बोली—ऐ बहार, तुम यहाँ कैसे रहती हो? खुरशेद दूल्हा आये, तो उनसे कहूँ।

हुस्नआरा—फ़ायदा? बरसों से तो वह यहाँ रहते हैं; भला तुम्हारे कहने से मकान छोड़ देंगे!

सिपहआरा—यह हमेशा यहाँ रहते हैं, कुछ भी नहीं होता। हम जो दो दिन रहेंगे, तो मुर्दे आ कर चिपट जायँगे भला!

बड़ी बेगम का बस चलता, तो खड़े-खड़े चली जातीं; मगर अब मजबूर थीं। यहाँ से चारों बहनें दूसरी छत पर गयीं तो बहारबेगम ने कहा—यह जो उस तरफ दूर तक ऊँचे-ऊँचे टीले नजर आते हैं, यहाँ आबादी थी। जहाँ तुम बैठी हो, यहाँ

वज़ीर का मकान था। मजाल क्या था कि कोई इस तरफ आ जाता! मगर अब वहाँ खाक उड़ती है, कुत्ते लोट रहे हैं।

इतने मे एक किश्ती इसी घाट पर आ कर रुकी। उस पर से दो आदमी उतरे, एक बूढ़े थे, दूसरा नौजवान। दोनों एक कालीन पर बैठे और बातें करने लगे। बूढ़े मियाँ ने कहा—मियाँ आज़ाद सा दिलेर जवान भी कम देखने में आयेगा। यह उन्हीं का शेर है—

सीने को चमन बनायेंगे हम,
गुल खायेंगे गुल खिलायेंगे हम।

जवान (गुलबाज़)—मियाँ आज़ाद कौन थे जनाब?

इस पर बूढ़े मियाँ ने आज़ाद की सारी दास्तान बयान कर दी। दोनों बहनें कान लगा कर दोनों आदमियों की बातें सुनती थीं और रोती थीं। हैरत हो रही थी कि ये दोनों कौन हैं और आज़ाद को कैसे जानते हैं? महरी से कहा—जाके पता लगा कि वह दोनों आदमी, जो दरख़्त के साये में बैठे हुक्क़ा पी रहे हैं, कौन हैं? महरी ने एक भिश्ती के लड़के को इस काम पर तैनात किया। लड़के ने ज़रा देर में आ कर कहा—दोनों आदमी सराय में ठहरेंगे और दो दिन यहाँ रहेंगे। मगर हैं कौन, यह पता न चला। महरी ने जा कर यही बात हुस्नआरा से कह दी। हुस्नआरा ने कहा—उस लड़के को यह चवन्नी दो और कहो, जहाँ ये टिकें, इनके साथ जाये और देख आये। महरी ने ज़ोर से पुकारा—अबे ओ शुबराती! सुन, इन दोनों आदमियों के साथ जा। देख, कहाँ टिकते हैं।

शुबराती—अजी, अभी पहुँचा।

शुबराती चले। रास्ते में आपको शौक चर्राया कि छक्लामीरी खेलें। एक घंटे में शुबराती ने कोई डेढ़ पैसे की कौड़ियाँ जीतीं। मगर लालच का बुरा हो, जमे, तो दम के दम में डेढ़ पैसा वह हारे, और बारह कौड़ियाँ गिरह से गयीं, वहाँ से उदास हो कर चले। राह में बंदर का तमाशा हो रहा था। अब मियाँ शुबराती जा चुके। कभी बँदरिया को छेड़ा, कभी बकरे पर ढेला फेंका। मदारी ने देखा कि लौंडा तेज़ है, तो बोला—इधर आओ जवान, आ'मी हो कि जानवर?

शुबराती—आदमी।

मदारी—सुअर कि शेर?

शुबराती—हम शेर, तुम सुअर।

मदारी—गधा कि गधी?

शुबराती—गधा।

मदारी—उल्लू कि बैल।

शुबराती—तुम उल्लू, तुम्हारे बाप बैल, और तुम्हारे दादा बछिया के ताऊ।

थोड़ी देर के बाद मियाँ शुबराती यहाँ से रवाना हुए, तो एक रईस के यहाँ एक

सपेरा साँप का तमाशा दिखा रहा था। मियाँ शुबराती भी डट गये। सँपेरा तोंबी में भैरवी का रंग दिखाता था।

रईस ने कहा—तब जानें, जब किसी के सिर से साँप निकालो।

सपेरे ने कहा—हुजूर, मंतर में सब कुदरत है। मुल कोई आध सेर आटा तो पेट भर खाने को दो। जिसके बदन से कहिए, साँप निकालूँ।

लौंडे यह सुन कर हुर्र हो गये कि घरे न जायँ। मियाँ शुबराती डटे खड़े रहे।

सपेरा—वाह जवान, तुम्हीं एक बहादुर हो।

शुबराती—और हमारे बाप हमसे बढ़ कर।

सपेरा—यहाँ बैठ तो जाओ।

मियाँ शुबराती बेधड़क जा बैठे। सपेरे ने झूठमूठ कोई मंत्र पढ़ा और जोर से मियाँ शुबराती की खोपड़ी पर धप जमा कर कहा यह लीजिए साँप। वाह-वाह का दौंगड़ा बंध गया। रईस ने सँपेरे को पाँच रुपये इनाम दिये और कहा—इस लौंडे को भी चार आने पैसे दे दो। मियाँ शुबराती ने चवन्नी पायी, तो फूले न समाये। जाते ही गोल-गप्पेवाले से पैसे के कचालू, धेले के दही-बड़े, धेले की सोंठ की टिकिया ली और चखते हुए चले। फिर तकिये पर जा कर कौड़ियाँ खेलने लगे। दो पैसे की कौड़ियाँ हारे। वहाँ से उठे, तो हलवाई की दूकान पर एक आने की पूरियाँ खायीं और कुएँ पर पानी पिया। वहाँ से आ कर महरी को पुकारा।

महरी—कहो, वह हैं?

शुबराती—वह तो चले गये।

महरी—कुछ मालूम है, कहाँ गये?

शुबराती—रेल पर सवार हो कर कहीं चल दिये।

महरी ने जा कर हुस्नआरा से यह खबर कही, तो उन्होंने कहा—लौंडे से पूछो, शहर ही में हैं या बाहर चले गये? महरी ने जा कर फिर शुबराती से पूछा—शहर में हैं या बाहर चले गये? शुबराती को इसकी याद न रही कि मैंने पहले क्या कहा था, बोला—किसी और सराय में उठ गये।

महरी—क्यों रे झूठे, तू तो कहता था, रेल पर चले गये?

शुबराती—मैंने?

महरी—चल झूठे, तू गया कि नहीं।

शुबराती—अब्बा की कसम, गया था।

महरी—चल दूर हो, मुआ झूठा।

इतने में बड़ी बेगम का पुराना नौकर हुसैनबख्श आ गया। हुस्नआरा ने उसे बुला कर कहा—बड़े मियाँ, एक साहब आजाद के जाननेवालों में यहाँ आये हैं और किसी सराय में ठहरे हैं। तुम जरा इस लौंडे शुबराती के साथ उस सराय तक जाओ और पता लगाओ कि वह कौन साहब हैं। अब मियाँ शुबराती चकराये कि खुदा ही खैर करे। दिल में चोर था, कहीं ऐसा न हो कि वह अभी सराय में टिके ही हों,

लगा। दिल को लाख लाख समझातीं कि आजाद बात के धनी हैं, लेकिन यह खयाल दूर न होता। इधर एक नयी मुसीबत यह आ गयी कि उनके एक आशिक और पैदा हो गये। यह हज़रत बहारबेगम के रिश्ते में भाई होते थे। नाम था मिर्ज़ा अस्करी। अस्करी ने हुस्नआरा को लड़कपन में देखा था। एक दिन बहारबेगम से मिलने आये, और सुना कि हुस्नआरा बेगम आजकल यहीं हैं, तो उन पर डोरे डालने लगे। बहारबेगम से बोले—अब तो हुस्नआरा सयानी हुई होंगी?

बहारबेगम—हाँ, खुदा के फ़जल से अब सयानी हैं।

अस्करी—दोनों बहनों में हुस्नआरा गोरी हैं न?

बहारबेगम—ऐ, दोनों खासी गोरी-चिट्टी हैं; मगर हुस्नआरा जैसी हसीन हमने तो नहीं देखी। गुलाब के फूल जैसा मुखड़ा है।

अस्करी—तुम हमारी बहन कैसी हो?

बहारबेगम—इसके क्या मानें?

अस्करी—अब साफ़-साफ़ क्या कहूँ, समझ जाओ। बहन हो, बड़ी हो, इतने ही काम आओ। फिर और नहीं तो क्या आक़बत में बख्शाओगी?

बहारबेगम—अस्करी, खुदा जानता है, हमें दिल से तुम्हारी मुहब्बत है।

अस्करी—बरसों साथ-साथ खेले हैं।

बहारबेगम—अरे, यों क्यों नहीं कहते कि मैंने गोदियों मे खिलाया है।

अस्करी—यह हम न मानेंगे। ऐसी आप कितनी बड़ी हैं मुझसे। बरस नहीं हद दो बरस।

बहारबेगम—ऐ लो, इस झूठ को देखो, छतें पुरानी हैं।

अस्करी—अच्छा, फिर कोई पंद्रह-बीस बरस की छुटाई बड़ाई है?

बहारबेगम—हुई है?

अस्करी—अच्छा, अब फिर किस दिन काम आओगी?

बहारबेगम—भई, अगर हुस्नआरा मंजूर कर लें, तो है। मै आज अम्माँजान से जिक्र करूँगी।

इतने में हुस्नआरा बेगम ने ऊपर से आवाज दी—ऐ बाजी, जरी हमको हरे-हरे मुलायम सिंघाड़े नहीं मँगा देतीं? मुहम्मद अस्करी ने रसूखियत जताने के लिए मामा से कहा—मेरे आदमी से जा कर कहो कि चार सेर ताजे सिंघाड़े तुड़वा कर ले आये। हुस्नआरा ने जो उनकी आवाज़ सुनी, तो सिपहआरा से पूछा—यह कौन आया है? सिपहआरा ने कहा—ऐ, वही तो हैं अस्करी! थोड़ी देर में मिर्जा अस्करी तो चले गये, और चलते वक्त बहारबेगम से कह गये कि हमने जो कहा है, उसका खयाल रहे। बहारबेगम ने कहा—देखो, अल्लाह चाहे तो आज के दूसरे ही महीने हुस्नआरा बेगम के साथ मँगनी हो। हुस्नआरा उसी वक्त नीचे आ रही थीं। यह बात उनके कान में पड़ गयी। पाँव-तले से मिट्टी निकल गयी। उल्टे-पाँव लौट गयीं और सिपहआरा से यह क़िस्सा कहा। उसके भी होश उड़ गये। कुछ देर तक दोनों

बहनें सन्नाटे में पड़ी रहीं। फिर सिपहआरा ने दीवाने-हाफिज़ उठा लिया और फ़ाल देखी, तो सिरे पर ही यह शेर निकला—

बेरौ ईं दाम मुर्गे दिगर नेह;
कि उनका रा बुलंद अस्त आशियाना।

(यह जाल दूसरी चिड़िया पर डाल। उनका का घोंसला बहुत ऊँचा है।)

सिपहआरा यह शेर पढ़ते ही उछल पड़ी। बोली—लो फतह है। बेड़ा पार हो गया।

इतने में बहारबेगम आ पहुँचीं और हुस्नआरा से बोलीं—तुम लोगों ने मिर्जा अस्करी को तो देखा होगा? कितना खूबसूरत जवान है!

सिपहआरा—देखा क्यों नहीं; बड़ी शौकीन से आदमी हैं न?

बहारबेगम—अबकी आयेगा तो ओट में से दिखा दूँगी। बड़ा हँसमुख, मिलनसार आदमी है। जिस वक्त आता है, मकान भर महकने लगता है। मेरी बीमारी में बेचारा दिन भर में तीन-तीन फेरे करता था।

हुस्नआरा ये बातें सुन कर दिल ही दिल में सोचने लगी कि यह कह क्या रही हैं। कैसे अस्करी? यहाँ तो आज़ाद को दिल दे चुके। वह टर्की सिधारे, हम कौल हारे। इनको अस्करी की पड़ी है। बहार बेगम ने बड़ी देर तक अस्करी की तारीफ की; मगर हुस्नआरा कब पसीजनेवाली थीं। आखिर, बहारबेगम खफा हो कर चली गयीं।

दूसरे दिन जब अस्करी फिर आये, तो बहारबेगम ने उनसे कहा—मैंने हुस्न-आरा से तुम्हारा जिक्र तो किया, मगर वह बोली तक नहीं। उस मुए आज़ाद पर लट्टू हो रही हैं।

अस्करी—मैं एक तरकीब बताऊँ, एक काम करो। जब हुस्नआरा बेगम और तुम पास बैठी हो, तो आजाद का ज़िक्र जरूर छेड़ो। कहना, अस्करी अभी-अभी अखबार पढ़ता था, उसका एक दोस्त है आजाद, वह नानबाई का लड़का है। उसकी बड़ी तारीफ छपी है। कहता था, इस नानबाई के लौंडे की खुशकिस्मती को तो देखो, कहाँ जा कर थिप्पा लड़ाया है! जब वह कहें कि आजाद शरीफ आदमी हैं, तो कहना, अस्करी के पास आजाद के न जाने कितने खत पड़े हैं। वह कसम खाता है कि आजाद नानबाई का लड़का है, बहुत दिनों तक मेरे यहाँ हुक्के भरता रहा।

यह कह कर मिर्जा अस्करी तो विदा हुए, और बहारबेगम हुस्नआरा के पास पहुँचीं।

हुस्नआरा—कहाँ थीं बहन? आओ, दरिया की सैर करें।

बहारबेगम—जरा अस्करी से बातें करने लगी थी। किसी अखबार में उनके एक दोस्त की बड़ी तारीफ छपी है। क्या जाने, क्या नाम बताया था? भला ही

सा नाम है। हाँ, खूब याद आया, आजाद। मगर कहता था कि नानबाई का लड़का है।

हुस्नआरा—किसका?

बहारबेगम—नानबाई का लड़का बताता था। तुम्हारे आशिक साहब का भी तो यही नाम है। कहीं वही अस्करी के दोस्त न हों।

सिपहआरा—वाह, अच्छे आपके अस्करी हैं जो नानबाइयों के छोकरों से दोस्ती करते फिरते हैं।

बहार तो यह-आग लगाकर चलती हुई, इधर हुस्नआरा के दिल में खलबली मची। सोचीं, आजाद के हाल से किसी को इत्तला तो है नहीं, शायद नानबाई ही हों। मगर यह शक्ल-सूरत, यह इल्म और कमाल, यह लियाकत और हिम्मत नान-बाई में क्योंकर आ सकती है? नानबाई फिर नानबाई हैं। आजाद तो शाहजादे मालूम होते हैं। सिपहआरा ने कहा—बाजी, बहार बहन तो उधार खाये बैठी हैं कि अस्करी के साथ तुम्हारा निकाह हो। सारी कारस्तानी उसी की है। अस्करी के हथकंडों से अब बचे रहना। वह बड़ा नटखट मालूम होता है।

शाम को मामा ने एक खत ला कर हुस्नआरा को दिया। उन्होंने पूछा—किसका खत है?

मामा—पढ़ लीजिए।

सिपहआरा—क्या डाक पर आया है?

मामा—जी नहीं, कोई बाहर से दे गया है।

हुस्नआरा ने खत खोल कर पढा। खत का मजमून यह था—

कदम रख देख कर उल्फ़त के दरिया में जरा ऐ दिल;
खतरा है डूब जाने का भी दरिया के नहाने में।

हुस्नआरा बेगम की खिदमत में आदाब। मै बताये देता हूँ कि आजाद के फेर मे न पड़िए। वह नीच कौम आपके काबिल नहीं। नानबाई का लड़का, तंदूर जलाने मे ताक, आटा गूँधने में मश्शाक। वह और आपके लायक हो! अव्वल तो पाजी, दूसरे दिल का हरजाई, और फिर तुर्रा यह कि अनपढ! बहार बहन मुझे खूब जानती हैं। मैं अच्छा हूँ या बुरा, इसका फ़ैसला वही कर सकती हैं। आजाद मेरे दुश्मन नहीं, मैं उन्हें खूब जानता हूँ। इसी सबब से आपको सलाह देता हूँ कि आप उसका खयाल दिल से दूर कर दे। खुदा वह दिन न दिखाये कि आजाद से तुम्हारा निकाह हो।

तुम्हारा
अस्करी

हुस्नआरा ने इस खत के जवाब मे यह शेर लिखा—

न छेड़ ऐ निकहते बादे-बहारी, राह लग अपनी;
मुझे अठखेलियाँ सूझी हैं, हम बेज़ार बैठे हैं।

सिपहआरा ने कहा—क्यों बाजी, हम क्या कहते थे? देखा, वही बात हुई न? और झूठा तो इसी से साबित है कि मियाँ आजाद को अनपढ़ बताते हैं। खुदा की शान, यह और आजाद को अनपढ़ कहें! हम तो कहते ही थे कि यह बड़ा नटखट मालूम होता है।

हुस्नआरा ने यह पुर्जा मामा को दिया कि जा, बाहर दे आ। अस्करी ने यह खत पाया, तो जल उठे। दिल में कहा—अगर आजाद को नीचा न दिखाया, तो कुछ न किया। जा कर बड़ी बेगम से मिले और उनसे खूब नमक-मिर्च मिला-मिला-कर बातें कीं। बहारबेगम ने भी हाँ-में-हाँ मिलायी और अस्करी की खूब तारीफ़ें कीं। आजाद को जहाँ तक बदनाम करते बना, किया। यहाँ तक कि आखिर बड़ी बेगम भी अस्करी पर लट्टू हो गयीं मगर हुस्नआरा और सिपहआरा अस्करी का नाम सुनते ही जल उठती थीं। दोनों आज़ाद को याद कर-करके रोया करतीं, और बहारबेगम बार-बार अस्करी का जिक्र करके उन्हें दिक किया करतीं। यहाँ तक कि एक दिन बड़ी बेगम के सामने सिपहआरा और बहारबेगम में एक झौड़ हो गयी। बहार कहती थीं कि हुस्नआरा की शादी मिर्जा अस्करी से होगी, और ज़रूर होगी। सिपहआरा कहती थीं—यह मुमकिन नहीं।

एक दिन बड़ी बेगम ने हुस्नआरा को बुला भेजा, लेकिन जब हुस्नआरा गयीं, तो मुँह फेर लिया। बहारबेगम भी वहीं बैठी थीं। बोलीं—अम्मीँजान तुमसे बहुत नाराज हैं हुस्नआरा!

बेगम—मेरा नाम न लो।

बहारबेगम—जी नहीं, आप खफा न हों। मजाल है, आपका हुक्म न मानें।

बेगम—सुना हुआ है सब।

बहारबेगम—हुस्नआरा, अम्मीँजान के पास आओ।

हुस्नआरा परेशान कि अब क्या करूँ। डरते-डरते बड़ी बेगम के पास जा बैठीं। बड़ी बेगम ने उनकी तरफ़ देखा तक नहीं।

बहारबेगम—अम्मीँजान, यह आपके पास आयी हुई हैं, इनका कसूर माफ़ कीजिए।

बेगम—जब यह मेरे कहने मे नहीं हैं, तो मुझसे क्या वास्ता? अस्करी सा लड़का मशाल ले कर भी ढूँढें, तो न पाये। मगर इन्हें अपनी ही ज़िद है।

बहारबेगम—हुस्नआरा, खूब सोच कर इसका जवाब दो।

बेगम—मैं जवाब-सवाब कुछ नहीं माँगती।

बहारबेगम—आप देख लीजिएगा, हुस्नआरा आपका कहना मान लेंगी।

बेगम—बस, देख लिया!

बहारबेगम—अम्मीँजान, ऐसी बातें न कहिए।

बेगम—दिल जलता है बहार, दिल जलता है! अपने दिल में क्या-क्या सोचते थे, मगर अब उठ ही जायँ यहाँ से, तो अच्छा।

यह कह कर बड़ी बेगम उठ कर चली गयीं। हुस्नआरा भी ऊपर चली गयी और

लेट कर रोने लगीं। थोड़ी देर में बहार ने आ कर कहा—हुस्नआरा, जरी पर्दे ही में रहना, अस्करी आते हैं। हुस्नआरा ने अस्करी का नाम सुना, तो काँप उठीं। इतने में अस्करी आ कर, बरामदे में खड़े हो गये।

बहारबेगम—बैठो अस्करी!

अस्करी—जी हाँ, बैठा हूँ। खूब हवादार मकान है। इस कमरे में तुम रहती हो न?

बहारबेगम—नहीं, इसमें हमारी बहनें रहती हैं।

अस्करी—अब हुस्नआरा की तबीयत कैसी है?

बहारबेगम—पूछ लो, बैठी तो हैं।

अस्करी—नहीं, बताओ तो आखिर?

बहारबेगम—तुम भी तो हकीम हो? भला पर्दे के पास से नब्ज़ तो देखो?

हुस्नआरा मुसकिरायीं। सिपहआरा ने कहा—ऐ, हटो भी! बड़े आये वहाँ से हकीम!

बहारबेगम—तुम तो हवा से लड़ती हो।

सिपहआरा—लड़ती ही हैं!

अस्करी—इस वक्त खाना खा चुकी होंगी। शाम को नब्ज देख लूँगा।

बहारबेगम—ऐ, अभी खाना कहाँ खाया?

सिपहआरा—हाँ-हाँ खा चुकी हैं।

मिर्जा अस्करी तो रुखसत हुए, मगर बहारबेगम को सब्र कहाँ? पूछा—हुस्न-आरा, अब बोलो, क्या कहती हो? सिपहआरा तिनक कर बोली—अब कोई और बात भी है, या रात-दिन यही जिक्र है? कह दिया एक दफा कि जिस बात से यह चिढ़ती हैं, वह क्यों करो।

बहारबेगम—होना वही है, जो हम चाहती हैं।

हुस्नआरा—खैर, बहन, जो होना है, हो रहेगा। उसका जिक्र ही क्या?

सिपहआरा—बहार बहन, नाहक बैठे-बिठाये रंज बढ़ाती हो।

बहारबेगम—याद रखना, अम्मॉजान अभी-अभी कसम खा चुकी हैं कि वह तुम दोनों की सूरत न देखेंगी। बस, तुम्हें अब अख्तियार है, चाहे मानो, चाहे न मानो।

कई दिन इसी तरह गुजर गये। हुस्नआरा जब बड़ी बेगम के सामने जातीं, तो वह मुँह फेर लेतीं। दोनों बहनें रात-दिन रोया करतीं। सोचीं कि यह तो सब के सब हमारे खिलाफ़ हैं, आओ, रूहअफ़ज़ा को बुलायें, शायद वह हमारा साथ दे। मामा ने कहा—मै अभी-अभी जाती हूँ। जहाँ तक बन पड़ेगा, बहुत कहूँगी। और, कहना क्या है, ले ही आऊँगी।

इतने में बहारबेगम ने आ कर कहा—ऐ हुस्नआरा, जरी पर्दा करके अस्करी को नब्ज दिखा दो। ज़ीने पर खड़े हैं। हुस्नआरा मजबूर हो गयी। सिपहआरा को इशारे से बुलाया और कहा—बहार बहन तो बाहर ही बैठेंगी। मेरे बदले तुम नब्ज़ दिखा दो। सिपहआरा ने मुसकिरा कर कहा—अच्छा, और पर्दे के पास बैठ कर नब्ज़ दिखायी।

अस्करी—दूसरा हाथ लाइए।

बहारबेगम—बुखार तो नहीं है?

अस्करी—थोड़ा सा बुखार तो जरूर है। कमजोरी बहुत है।

जब अस्करी चले गये, तो हुस्नआरा ने बहारबेगम से कहा—आपके अस्करी तो बड़े होशियार हैं!

बहारबेगम—क्या शक भी है?

हुस्नआरा—उफ, मारे हँसी के बुरा हाल है। वाह रे हकीम!

सिपहआरा—'नीम हकीम, खतरे जान।'

बहारबेगम—यह काहे से?

हुस्नआरा—नब्ज किसकी देखी थी?

बहारबेगम—तुम्हारी।

हुस्नआरा—अरे वाह, कहीं देखी हो न? बस, देख ली हिकमत।

बहारबेगम—फिर किसकी नब्ज देखी? क्या सिपहआरा बैठ गयी थीं?

सिपहआरा—और नहीं तो क्या? कमजोरी बताते थे। कमजोरी हमारे दुश्मनों को हो!

बहारबेगम—भला इलाज में क्या हँसी करनी थी?

बाहर जा कर बहार ने अस्करी को खूब आड़े-हाथों लिया—ऐ बस, जाओ भी, मुफ्त में हमको बद बनाया! हुस्नआरा ने हँसी-हँसी में सिपहआरा को अपनी जगह बिठा दिया, और तुम जरा न पहचान सके। खुदा जानता है, मुझे बहुत शरम आयी।

शाम को रूहअफ़ज़ा बेगम आ पहुँचीं और बड़ी बेगम के पास जा कर सलाम किया।

बड़ी बेगम—तुम कब आयीं?

रूहअफजा—अभी-अभी चली आती हूँ। हुस्नआरा कहाँ हैं?

बहारबेगम—हमें उनका हाल मालूम नहीं। कोठे पर हैं।

रूहअफजा—जरी, बुलवाइए!

बहारबेगम—दोनों बहनें हमसे खफा हैं।

रूहअफजा कोठे पर गयी, तो दोनों बहनें उनसे गले मिल कर खूब रोयीं।

रूहअफजा—यह तुमको क्या हो गया हुस्नआरा? वह सूरत ही नहीं। माजरा क्या है?

सिपहआरा—अब तो आप आयी हैं; सब कुछ मालूम हो जायगा। सारा घर हमसे फिरंट हो रहा है। हमें तो खाना-पीना उठना-बैठना सब हराम है!

बहारबेगम को यह सब कैसे होता कि रूहअफजा आयें और दोनों बहनें इनसे अपना दुखड़ा रोयें। आ कर धीरे से बैठ गयीं।

रूहअफजा—बहन, यह क्या बात है! आखिर किस बात पर यह रंजारंजी हो रही है?

बहारबेगम—मैं तुमसे पूछती हूँ, अस्करी मे क्या बुराई है? शरीफ़ नहीं है वह, या पढा-लिखा नहीं है, या अच्छे खानदान का नहीं है? आखिर इनके इनकार का सबब क्या है?

सिपहआरा—हमने एक दफे कह दिया कि हम अस्करी का नाम नहीं सुनना चाहते।

रूहअफ़ज़ा—तो यह कहो, बात बहुत बढ़ गयी है। मुझे जरा भी कुछ हाल मालूम होता, तो फ़ौरन ही आ जाती।

बहारबेगम - अब आयी हो, तो क्या बना लोगी? यह एक न मानेंगी।

रूहअफ़ज़ा—वह तो शायद मान भी जायँ, मगर आपका मान जाना अलबत्ता मुश्किल है।

बहारबेगम—यह कहिए, आप इनकी तरफ़ से लड़ने आयी हैं?

रूहअफ़ज़ा—हाँ, हमसे तो यह नहीं देखा जाता कि ख़ाहमख़्वाह झगड़ा हो।

ये बातें हो रही थीं कि बड़ी बेगम साहब भी लठिया टेकती हुई आयीं।

रूहअफ़ज़ा—आइए अम्माँजान, बैठिए।

बेगम—मैं बैठने नहीं आयी, यह कहने आयी हूँ कि अस्करी के साथ हुस्नआरा का निकाह जरूर होगा। इसमे सारी दुनिया एक तरफ हो, मै किसी की न सुनूँगी। मैं जान दे दूँगी। यह न मानेगी, तो जहर खा लूँगी; मगर करूँगी यही, जो कह रही हूँ।

बड़ी बेगम यह कह कर चली गयीं। हुस्नआरा इतना रोयीं कि आँखें लाल हो गयीं। रूहअफ़ज़ा ने समझाया, तो बोलीं बहन, अम्माँजान मानेंगी नहीं, और हम सिवा आजाद के और किसी के साथ शादी न करेंगे? नतीजा यह होना है कि हमी न होंगे।

५७

हुस्नआरा बेगम की जान अजाब में थी। बड़ी बेगम से बोल-चाल बंद, बहार-बेगम से मिलना-जुलना तर्क। अस्करी रोज एक नया गुल खिलाता। वह एक ही काइयाँ था, रूहअफ़ज़ा को भी बातों में लगा कर अपना तरफ़दार बना लिया। मामा को पाँच रुपये दिये। वह उसका दम भरने लगी। महरी को जोड़ा बनवा दिया, वह भी उसका कलमा पढ़ने लगी। नवाब साहब उसके दोस्त थे ही। हुसैनबख्श को भी गाँठ लिया। बस, अब सिपहआरा के सिवा हुस्नआरा का कोई हमदर्द न था। एक दिन रूहअफ़ज़ा चुपके-चुपके उधर आयीं, तो देखा, कमरे के सब दरवाजे बंद हैं। शीशे से झाँक कर देखा, हुस्नआरा रो रही हैं और सिपहआरा उदास बैठी हैं। रूहअफ़ज़ा का दिल भर आया। धीरे से दरवाजा खोला और दोनों बहनों को गले लगा कर कहा—आओ, हवा में बैठें। जरीं, मुँह धो डालो। यह क्या बात है! जब देखो, दोनों बहनें रोती रहती हो?

सिपहआरा—बहन, जान-बूझ कर क्यों अनजान बनती हो? भला आपसे भी कोई बात छिपी है? मगर आप भी हमारे खिलाफ़ हो गयीं! खैर अल्लाह मालिक है।

रूहअफ़ज़ा—तुम्हारी तो नयी बातें हैं! जहाँ तुम्हारा पसीना गिरे, वहाँ हम लहू गिरायें, और तुम समझती हो कि हम तुम्हें जलाते हैं। हम तो मुहब्बत से पूछते हैं, और तुम हमीं पर बिगड़ती हो।

हुस्नआरा—सुनो बाजी, तुम कौन सी बातें नहीं जानती हो, जो पूछती हो। हम साफ़ साफ़ कह चुके कि या तो उम्र भर कुँआरी ही रहेंगे या आजाद के साथ निकाह होगा।

सिपहआरा—ऐसे-ऐसे ३६० अस्करी हों, तो क्या? हलवा खाने को मुँह चाहिए।

रूहअफ़ज़ा—अब इस वक्त बात बढ़ जायगी। और कोई बात करो।

हुस्नआरा—हम इतना चाहते हैं कि आप जरा इन्साफ़ करें।

रूहअफ़ज़ा—मगर यह गुत्थी क्यों कर सुलझेगी?

इतने में मामा ने अखबार ला कर रख दिया। हुस्नआरा ने पढ़ना शुरू किया। एकाएक एक मजमून देख कर चौंक उठी। मजमून यह था कि मियाँ आजाद ने टर्की में एक साईस की बीबी से शादी कर ली। साईस को जहर दिलवा दिया और अब साईसिन के साथ गुलछर्रे उड़ा रहे हैं। हुस्नआरा ने अखबार फेंक दिया और उठ कर कमरे में चली गयीं। सिपहआरा ने भाँप लिया कि जरूर आजाद की कुछ खबर है। अखबार उठा कर देखने लगीं, तो यह मजमून नजर पड़ा। सन्नाटे में आ गयीं। जिस आजाद के लिए वहाँ सारी दुनिया से लड़ाई हो रही थी, जिसका दोनों

५८

रूम पहुँचकर आजाद एक पारसी होटल में ठहरे। उसी होटल में जार्जिया की एक लड़की भी ठहरी हुई थी। उसका नाम था मीडा। आजाद खाना खा कर अख़-बार पढ़ रहे थे कि मीडा को बाग़ में टहलते देखा। दोनों की आँखें चार हुईं। आजाद के कलेजे में तीर सा लगा। मीडा भी कनखियों से देख रही थी कि यह कौन आदमी है। आदमी तो निहायत हसीन है, मगर तुर्की नहीं मालूम होता है।

आजाद को भी बाग़ की सैर करने की धुन सवार हुई, तो एक फूल तोड़ कर मीडा के सामने पेश किया, मीडा ने फूल तो ले लिया, मगर बिना कुछ कहे-सुने घोड़े पर सवार हो कर चली गयी। आजाद सोच रहे थे कि यहाँ किसी से जान न पहचान, अब इस हसीना को क्योंकर देखेंगे? इसी फ़िक्र में बैठे थे कि होटल का मालिक आ पहुँचा। आजाद ने उससे बातों बातों में पता लगा लिया कि यह एक कुँआरी लेडी है। इसकी ख़ूबसूरती की दूर-दूर चर्चा है। जिसे देखिए, इसका आशिक़ है। पियानो बजाने का दिली शौक़ है। घोड़े पर ऐसा सवार होती है कि अच्छे-अच्छे शहसवार दंग रह जाते हैं।

शाम के वक़्त आजाद एक किताब देख रहे थे कि एक औरत ने आ कर कहा—एक साहब बाहर आपकी तलाश में खड़े हैं। आज़ाद को हैरत कि यह कौन है? बाहर आये, तो देखा, एक औरत मुँह पर नक़ाब डाले खड़ी है। इन्हें देखते ही उसने नक़ाब उलट दी। यह मीडा थी।

मीडा—मैं वही हूँ, जिसे आपने फूल दिया था।

आजाद—और मैंने आपकी सूरत को अपने दिल पर खींच लिया था।

मीडा—यहाँ कब तक ठहरिएगा?

आजाद—लड़ाई में शरीक होना चाहता हूँ।

मीडा—इस लड़ाई का बुरा हो, जिसने हज़ारों घरों को बरबाद कर दिया! भला, अगर आप न जायँ, तो कोई हर्ज है?

आजाद—मजबूरी है!

मीडा ने आजाद का हाथ पकड़ लिया और बाग़ में टहलते-टहलते बोली—जब तक आप यहाँ रहेंगे, मैं रोज आऊँगी।

आजाद—मेरे लिए यह बड़ी ख़ुशनसीबी की बात है। मैं अच्छी सायत देख कर घर से चला था।

मीडा—आपने वजीर जंग से अपने लिए क्या तय किया?

आजाद—अभी तो उनसे मिलने की नौबत ही नहीं आयी।

मीडा—मुझे उम्मेद है कि मैं आपको कोई अच्छा ओहदा दिला सकूँगी।

आजाद—आपका वतन कहाँ है?

मीडा—जार्जिया।

आज़ाद—तो यह कहिए, आप कोहकाफ़ की परी हैं।

इस तरह की बातें करके मीडा चली गयी। आज़ाद कुछ देर तक सन्नाटे में खड़े रहे। इतने में एक फ़ांसीसी अफ़सर आ कर बोला—तुम अभी किससे बातें कर रहे थे?

आज़ाद—मिस मीडा से।

अफ़सर—तुम्हें मालूम है, उससे मेरी शादी होनेवाली है?

आज़ाद—बिलकुल नहीं।

यह सुनते ही उस अफ़सर ने, जिसका नाम जदाब था, तलवार खींच कर आज़ाद पर हमला किया। आज़ाद ने खाली दी। एकाएक किसी ने पीछे से आज़ाद पर तलवार चलायी। तलवार छिछलती हुई बायें कंधे पर लगी। पलट कर आज़ाद ने जो एक तुला हुआ हाथ लगाया, तो वह जख़मी हो कर गिर पड़ा। आज़ाद सँभलने ही को थे कि जदाब फिर उन पर झपटा। आज़ाद ने फिर खाली दी और कहा—मैं चाहूँ तो तुम्हें मार सकता हूँ। मगर मुझे तुम्हारी जवानी पर रहम आता है। यह कह कर आज़ाद ने पैतरा बदला और तलवार उसके हाथ से छीन ली। इतने में होटल से कई आदमी निकल आये और आज़ाद की तारीफ़ करने लगे। जदाब ने शरमिंदा हो कर कहा—मुझे इसका अफ़सोस है कि मेरे एक दोस्त ने मुझसे बग़ैर पूछे आप पर पीछे से हमला किया। इसके लिए मैं आपसे माफ़ी माँगता हूँ। दोनों आदमी गले तो मिले, मगर फ़ांसीसी के दिल से कुदूरत न गयी।

दूसरे दिन मियाँ आज़ाद हमीदपाशा के पास गये, जो जंग के वज़ीर थे। हमीद ने आज़ाद का डील-डौल देखा और उनकी बातचीत सुनी, तो फ़ौजी ओहदा देने का वादा कर लिया। आज़ाद खुश-खुश लौटे आते थे कि मीडा घोड़े पर सवार आ पहुँची।

मीडा—आप कहाँ गये थे?

आज़ाद—वज़ीर-जँग के पास। कल तो आपकी बदौलत मेरी जान ही गयी थी।

मीडा—सुन चुकी हूँ।

आज़ाद—अब आपसे बोलते डर मालूम होता है।

मीडा—जीत तो तुम्हारी ही हुई। तुम मुझे दिल में बुरा समझ रहे होगे; मगर मेरा दिल काबू से बाहर है। मेरा दिल तुम पर आया है। मैं चाहती हूँ, मेरी तुम्हारे साथ शादी हो।

आज़ाद—मुझे अफ़सोस है कि मेरी शादी तय हो चुकी है। खुदा को गवाह करके कहता हूँ, आपकी एक-एक अदा मेरे दिल में चुभ गयी है। मगर मैं मजबूर हूँ।

मीडा ने उदास हो कर कहा—पछताओगे, और घोड़ा बढ़ा दिया। उसी रात को मीडा ने हमीदपाशा से जा कर कहा कि आज़ाद नाम का जो हिन्दुस्तानी आज आपके पास आया था, वह रूस का मुखबिर है। उससे होशियार रहिएगा।

हमीद—तुम्हें इसका पूरा यकीन है?

मीडा—मुझे आज़ाद के एक दोस्त ही से यह बात मालूम हुई।

हमीद—तुम्हारा जिम्मा ।

मीडा—बेशक ।

यह आग लगा कर मीडा घर आयी; मगर बार-बार यह सोचती थी कि मैंने बहुत बुरा किया। एक बेगुनाह को मुफ्त में फँसाया। खयाल आया कि जा कर वजीर-जंग से कह दे कि आजाद बेगुनाह है; मगर बदनामी के खौफ़ से जाने की हिम्मत न पड़ती थी। मियाँ आजाद होटल में बैठें हुक्का पी रहे थे कि एक तुर्की अफसर ने आ कर कहा—आपको टर्की की सरकार ने क़ैद कर लिया।

आजाद—मुझको ?

अफसर—जी हाँ ।

आजाद—आप ग़लती कर रहे हैं ।

अफ़सर—नहीं, मुझे आप ही का पता दिया गया है ।

आजाद—आखिर मेरा क़सूर ?

अफसर—मुझे बताने का हुक्म नहीं ।

तीन दिन तक आज़ाद कैदखाने में रहे, चौथे दिन हमीदपाशा के सामने लाये गये ।

हमीद—मुझे मालूम हुआ कि तुम रूसी जासूस हो ।

आजाद—बिलकुल ग़लत । मैं काश्मीर का रहनेवाला हूँ । आप बतला सकते हैं हैं किसने मुझ पर इल्जाम लगाया ?

हमीद—एक शरीफ लेडी ने, जिसका नाम मीडा है ।

आजाद मीडा का नाम सुनते ही सन्नाटे में आ गये । दिल के टुकड़े-टुकड़े हो गये । मुँह से एक बात भी न निकली । अब आज़ाद फ़िर कैदखाने में आये, तो मुँह से बेअख्तियार निकल गया—मीडा ! मीडा !! तूने मुझ पर बड़ा जुल्म किया !

आजाद को इसका इतना रंज हुआ कि उसी दिन से बुखार आने लगा । दो-तीन दिन में उनकी हालत इतनी खराब हो गयी कि जेल के दारोग़ा ने सुबह-शाम सैर करने का हुक्म दे दिया । एक दिन वह शाम को बाहर सैर कर रहे थे कि एक खूबसूरत नौजवान घोड़ा दौड़ाता हुआ उनके करीब आ कर खड़ा हो गया ।

जवान—माफ़ कीजिएगा, आपकी सूरत मेरे एक दोस्त से मिलती है । मैंने समझा शायद वही हों । आप कुछ बीमार मालूम पड़ते हैं ।

आजाद—जी हाँ, कुछ बीमार हूँ । मुझे खयाल आता है कि मैंने कहीं आपको देखा है ।

जवान—शायद देखा हो ।

यह कह कर वह मुसकिराया । आजाद ने फ़ौरन् पहचान लिया । यह मुसकिराहट मीडा की थी । आजाद ने कहा—मीडा, तुमने मुझ पर बड़ा जुल्म किया । मुझे तुमसे ऐसी उम्मेद न थी ।

मीडा—मैं अपने किये पर खुद शरमिंदा हूँ । मुझे माफ़ करो ।

मियाँ खोजी पंद्रह रोज में खासे टाँठे हो गये, तो कासल से जा कर कहा—मुझे आजाद के पास भेज दिया जाय। कासल ने उनकी दरख्वास्त मंजूर कर ली। दूसरे दिन खोजी जहाज पर बैठ कर कुस्तुनतुनियाँ चले। उधर मियाँ आजाद अभी तक कैद-खाने में ही थे। हमीदपाशा ने उनके बारे में खूब तहकीकात की थी, और गो उन्हें इतमिनान हो गया था कि आजाद रूसी जासूस नहीं हैं, फिर भी अब तक आजाद रिहा न हुए थे।

एक दिन मियाँ आजाद कैदखाने में बैठे हुए थे कि एक फ्रांसीसी कैदी आया। उस पर भी जासूसी का इल्जाम था। आजाद ने पूछा—आपने अपनी सफ़ाई नहीं पेश की?

फ्रांसीसी—अंधेर है, अंधेर! मैं तो इन तुर्कों का जानी दुश्मन हूँ।

आज़ाद—मुझे यह सुन कर अफसोस हुआ। मैं तो तुर्कों का आशिक हूँ। ऐसी दिलेर कौम दुनिया मे नहीं है।

फ्रांसीसी—अभी आप इन लोगों को अच्छी तरह नहीं जानते। आप ही को बेव-जह कैद कर लिया।

आजाद—लड़ाई के दिनों में सभी जगह ऐसी ग़लतियाँ हो जाती हैं।

फ्रांसीसी—आप रूसी जबान नहीं जानते?

आजाद—बिलकुल नहीं।

फ्रांसीसी—रूस की सरकार ने बहुत मजबूर हो कर लड़ाई की है।

आजाद—मैं तो समझता हूँ, रूसवालों की ज़्यादती है, सारा यूरोप टर्की का दुश्मन है।

इस तरह की बातें करके फ्रांसीसी चला गया और दूसरे ही दिन मियाँ आज़ाद आजाद कर दिये गये। यह कैदी फ्रांसीसी न था, हमीदपाशा ने एक तुर्की अफसर को आजाद के दिल का भेद लेने के लिए भेजा था।

शाम का वक्त था, आजाद बैठे हुए मीडा से बातें कर रहे थे कि एक आदमी ने आ कर कहा—हुजूर, एक नाटा सा आदमी बाहर खडा है, और कहता है कि हमें कोठी के अंदर जाने दो। आजाद ने कहा—आने दो। एक मिनट में मियाँ खोजी आ कर खडे हो गये। आजाद ने दौड कर उन्हें गले लगा लिया और खैर-आफियत पूछने के बाद अपनी राम कहानी सुनायी। मियाँ खोजी ने जब आजाद के कैद होने का हाल सुना, तो बिगड़ कर बोले—खुदा ने चाहा, तो हम तुम्हारा बदला लेंगे। खडे-खडे बदला न ले लें, तो नाम नहीं!

आजाद—खैर, अब इसका अफसोस न कीजिए। मिस मीडा अभी आती होंगी, जरा उनके सामने बेहूदगी न कीजिएगा।

खोजी—भई, अभी उन्हें मत आने दो। जरा हम बन-ठन ले। अफसोस यही है कि हमारे पास करौली नही। बेकरौली के हमसे कुछ न हो सकेगा।

आजाद—क्या उनसे लड़िएगा?

खोजी—नहीं साहब, लड़ना कैसा! बेकरौली के जोबन नहीं आता। आप ये बातें क्या जाने।

इतने मे मिस मीडा दूसरे कमरे से निकल आयीं। खोजी ने अपना ठाट बनाने के लिए मेज पर का कपड़ा ओढ लिया, तौलिया सिर मे बाँधा और एक छुरी हाथ में ले कर मीडा की तरफ घूरने लगे। मीडा ने जो उनकी सूरत देखी, तो मुसकिरा दी। खोजी खिल गये। आजाद से बोले—क्यों आजाद, सच कहना, मुझे देखते ही कैसा खिल गयीं! मीडा ने आजाद से पूछा—यह कौन आदमी है?

आजाद—एक पागल है। इसको यह खब्त है कि जो औरत इसे देखती है, रीझ जाती है। तुम जरा इसको बनाओ।

मीडा ने खोजी को इशारे से करीब बुलाया। आप जा कर एक कुर्सी पर डट गये।

मीडा—(हाथ में हाथ दे कर) आपका नाम क्या है?

खोजी—(आजाद से) मुझे समझाते जाओ जी!

आज़ाद ने दुभाषिये का काम करना शुरू किया। मीडा जो कहती थी, उनको समझाते थे, और वह जो कुछ कहते थे, इसे समझाते थे।

मीडा—कल आपकी दावत है। आप शराब पीते हैं?

खोजी—हाँ—नहीं। मगर अच्छा; नहीं-नहीं। कह दो अफ़ीम पीता हूँ।

मीडा—यह आपका गुलाब सा चेहरा कुम्हला जायगा।

खोजी ने अकड़ कर आज़ाद की तरफ देखा।

मीडा—आप कुछ गाना भी जानते हैं।

खोजी—हाँ, और नाचना भी जानता हूँ।

मीडा—अहो-हो, तो फिर नाचो।

खोजी ने नाचना शुरू किया। अब मीडा हँसने लगी, तो आप और भी फूल गये। थोडी देर में मीडा होटल से चली गयी। तब आज़ाद ने कहा—भई खोजी, यह बात अच्छी नहीं। मैं तुमको ऐसा नहीं जानता था।

खोज़ी—तो मैं क्या करूँ? जब वह खुद ही मेरे पीछे पडी हुई है, तो रुखाई करना भी तो अच्छा नहीं मालूम होता।

थोडी देर में मीडा का खत आया। आज़ाद ने कहा—जनाब ख्वाजा साहब, हमको तो जरा खत दिखाना।

खोजी—बस, बस, चलिए, अलग हटिए।

आजाद—लाओ, हम पढ दें। तुमसे भला क्या पढा जायगा?

खोजी—अजब आदमी हैं आप! आप कहाँ के ऐसे बडे आलिम हैं!

खोजी ने खत को तीन बार चूमा और आजाद को अलग बुला कर पढ़ने को दिया। लिखा था—

'मेरे प्यारे जवान, तुम्हारी एक-एक अदा ने मेरे दिल में जगह कर ली है। तुम्हारी सारस की सी गर्दन और बंदर की सी हरकतें जब याद आती हैं, तो मैं उछल-उछल पड़ती हूँ। अब यह बताओ कि आज किस वक्त आओगे? यह खत अपने दोस्त आजाद को न दिखाना और वादे पर जरूर आना।'

खोजी—यार, तुम्हें तो सब हाल मालूम हो गया, मगर उससे कह न देना।

आजाद—मैं तो जा कर शिकायत करूँगा कि हमसे छिपाया क्यों? अभी-अभी खत भेजता हूँ।

खोजी—खैर, जाइए, कह दीजिए। वह हम पर आशिक हैं। तुम ऐसे हजार लगी-लिपटी बातें करें, होता क्या है। आपकी हकीकत ही क्या है!

आजाद—यार, अब तुम्हारे साथ न रहेंगे।

खोजी—आखिर, सबब बताइए।

आजाद—गजब खुदा का! मीडा सी माहरू और हमारे सामने तुम्हें यह खत लिखे।

खोजी खिलखिला कर हँस पड़े। बोले—यह बात है? हम जवान ही ऐसे हैं, इसको कोई क्या करे। लेकिन अगर तुम खिलाफ हो गये, तो वल्लाह, मैं मीडा से बात तक न करूँगा। मुझे जान से भी ज्यादा प्यारे हो। कसम खुदा की, अब दुनिया में तुम्हारे सिवा मेरा और कोई नहीं। बस फकत तुम! और हम तो बूढ़े हुए। यह भी मिस मीडा की मेहरबानी है। अजी, मिसर में तो तुम न थे। वहाँ पर भी एक औरत मुझ पर आशिक हो गयी थी! मगर खराबी यह थी कि न हम उसकी बात समझें, न वह हमारी! हाँ इशारों में खूब बातें हुईं। अच्छा, फिर एक हज्जाम तो बुलाओ। आज जाना है न।

आजाद ने एक हज्जाम बुलवाया। हजामत बनने लगी।

खोजी—घोटो, घोटो। घोटे जा। अभी खूँटी बाकी हैं। खूब घोटो।

हज्जाम ने फिर छुरा फेरा। खोजी ने फिर टटोल कर कहा—अभी खूँटी बाकी है, घोटो।

हज्जाम—तो हुजूर, कब तक घोटा करूँ!

खोजी—दूने पैसे देंगे हम।

हज्जाम—माना, मगर कोई हद भी है?

खोजी—तुमको इससे क्या मतलब!

हज्जाम—खून निकलने लगेगा।

आजाद—और अच्छा है; लोग कहेंगे, नौशा के चेहरे से खून बरसता है।

खोजी—हाँ, खूब सोची।

हज्जाम—(किसबत सँभाल कर) अब किसी और नाई से घुटवाइए।

आजाद—अच्छा, पट्टे तो कतरते जाओ।

हज्जाम ने झल्ला कर आधे बाल कतर डाले। एक तरफ़ की आधी मूँछ उड़ा दी। खोजी एक तो यों ही बड़े हसीन थे, अब हज्जाम ने बाल कतर कर और भी टीक बना दिया। खोजी ने जो आईने में अपनी सूरत देखी, तो मूँछे नदारद। झल्ला कर कहा—ओ गीदी, यह क्या किया? हज्जाम डरा कि कहीं यह साहब मार न बैठें।

आज़ाद—क्यों, क्यों खफा हो गये भई!

खोजी—इसने पट्टे ऊल-जलूल कतरे, और आप बोले तक नहीं?

आजाद—मैं सच कहता हूँ, आप इतने हसीन कभी न थे।

खोजी—और चेहरे की तो फ़िक्र करो!

आजाद—हाँ, हाँ, घबराते क्यों हो?

खोजी—हमको याद आता है कि नौशा के सामने छोटे-छोटे लड़के ग़जलें पढ़ते हैं। दो-एक लौंडे बुलवा लीजिए, तो उनको ग़जलें रटा दें।

आजाद ने दो लड़के बुलवाये, और मियाँ खोजी उनको ग़जले याद कराने लगे। एक ग़जल मियाँ आजाद ने यह बतलायी—

भला यह तो बताओ कि यह कौन बशर है;
सब सूरते लंगूर, फ़क़त दुम की कसर है।

खोजी—चलिए, बस अब दिल्लगी रहने दीजिए। वाह, अच्छे मिले!

आजाद—अच्छा, और गजल लिखवाये देता हूँ—

फ़ुग़ाँ है, आह है, नाला है, बेकरारी है;
फिराके-यार में हालत अजब हमारी है।

खोजी—वाह, शादी को इस शेर से क्या वास्ता!

आजाद—अच्छा साहब, ग़जल याद करवा दीजिए—

कहा था बुलबुल से हाल मैंने
तेरे सितम का बहुत छिपा कर;
यह किसने उनको खबर सुनायी
कि हँस पडे फूल खिलखिला कर।
मेरे जनाजे को उनके कूचे में
नाहक अहबाब लेके आये;
निगाहे-हसरत से देखते हैं
वह रुख से परदा उठा-उठा कर।

खोजी—वाह, जनाजे को शादी से क्या मतलब है भला!

आजाद—ऊपरवाला शेर पसंद है?

खोजी—हाँ, हँसना और खिलखिलाना, ऐसे लफ़्ज हों, तो क्या पूछना!

आजाद—अच्छा, और सुनिए।

खोजी—नहीं, इतना ही काफ़ी है। जरा बाजेवालों की तो फ़िक्र कीजिए। हाथी, घोड़े, पालकी, सभी चाहिए। मगर हमारे लिए जो घोड़ा मँगवाइएगा, वह जरा सीधा हो।

आजाद—भला, घोड़ा न मिले, तो खच्चर हो तो कैसा?

खोजी—वाह, आपने मुझे कोई गधा समझा है?

इतने में होटल का मैनेजर आ गया और यह तैयारियाँ देख कर हँसने लगा।

खोजी—क्यों साहब, यह आप हँसे क्यों?

मैनेजर—जनाब, यहाँ शरीफ लोग शादियों में बाजे-गाजे नहीं ले जाते, और पैदल ही जाते हैं। हाँ एक बात हो सकती है, दस-पाँच आदमियों को थालियाँ दे दीजिए, बाँस की खपाचों से उन्हें बजाते जायँ। आवाज की आवाज और बाजे का बाजा।

खोजी—भई आजाद, सोच लो।

आजाद—वह जब यहाँ दस्तूर ही नहीं, तो फिर क्या किया जायगा? हाँ, नौशे का पैदल जाना जरा बदनामी की बात है।

मैनेजर—तो पैदल न जाइए। जिस तरह यहाँ के रईस लोग जाते हैं, उस तरह जाइए—आदमी की गोद में।

खोजी—मंजूर। मगर हमको उठा सकेगा कोई?

मैनेजर—हम इसका बंदोबस्त कर देंगे। आप घबरायें नहीं।

दो घड़ी दिन रहे खोजी की बरात चली। तीन मजदूर आगे-आगे थालियाँ बजाते जाते हैं, दो लौंडे आगे पीछे साथ। खोजी एक मजदूर की गोद में, गेरुए कपड़े पहने, अकड़े बैठे हैं। एकाएक आप बोले—अरे रे रे! रोक लो बरात। रोक लो। पंखाखेवाले कहाँ हैं? कोई बोलता ही नहीं। परदेश में भी इंसान पर क्या मुसीबत पड़ती है? अब मैं दूल्हा बन कर रहूँ, या इंतजाम करूँ! ये दोनों गीदी तो निरे जाँगलू ही निकले। फिर याद आया कि निशान का हाथी तो है ही नहीं। अरे! करौली भी नहीं। हुक्म दिया कि लौटा दो बरात। चलो होटल में।

आजाद—यह क्यों भई? क्या बात है? लौटे क्यों जाते हो?

खोजी—निशान का हाथी तो है ही नहीं।

आजाद—अजब आदमी हो भई, आप लड़ने जाते हैं, या शादी करने? और फिर यहाँ हाथी कहाँ? कहिए तो खच्चर पर एक झंडी रखवा दें।

इतने में मिस मीडा आती हुई दिखायी दीं। खोजी उन्हें देखते ही और भी अकड़ गये। क्या कहूँ, मेरे साथ के आदमी सब गोली मार देने लायक हैं। कोई इंतजाम ही न किया।

मीडा—खैर, कल आ जाइएगा। मगर आप से एक बात कहनी है। यहाँ एक रूसी बहुत दिनों से मेरा आशिक है। पहले उससे लड़ो, फिर हमारे साथ शादी हो।

खोजी—मजाल है उसकी कि मेरे सामने खड़ा हो जाय? हम पचास आदमियों

से अकेले लड़ सकते हैं। जब बरात होटल पहुँची, तो मीडा ने कहा—तो उनसे कब लड़िएगा ?

खोजी—जब कहिए। खून पी जाऊँगा।

मीडा—अच्छा, कल तैयार रहिएगा।

दूसरे दिन मीडा ने एक तुर्की पहलवान को ला कर होटल में बिठा दिया और खोजी से बोली—लीजिए, आपका दुश्मन आ गया। खोजी ने जब उसे देखा, तो होश उड़ गये। दुनिया भर के आदमियों से दो मुट्ठी ऊँचा। दिल में सोचने लगे, यह तो कच्चा ही खा जायगा। एक चपत दे, तो हम जमीन में धँस जायँ। इससे लड़ेगा कौन भला ? मारे डर के जरा पीछे हट गये। मीडा ने कहा—आप तो अभी से डरने लगे। खोजी एकाएक धड़ाम से गिर पड़े और चिल्लाने लगे—इस तरह का दर्द हो रहा है कि कुछ न पूछो। अफ़सोस, दिल की दिल ही में रह गयी ! वल्लाह, वह पटकनी देता कि कमर टूट जाती। मगर खुदा को मंजूर न था। तुर्की पहलवान ने इनका हाथ पकड़ कर एक झटका दिया, तो दस कदम पर जा गिरे। बोले—ओ गीदी, जरा बीमार हो गया हूँ, नहीं तो कच्चा ही खा जाता, नमक भी न माँगता।

आखिर इस बात पर फैसला हुआ कि जब खोजी अच्छे हो जायँ, तो फिर किसी दिन कुश्ती हो।

मियाँ शहसवार का दिल दुनिया से तो गिर गया था, मगर जोगिन की उठती जवानी देख कर धुन समायी कि इसको निकाह में लावें। उधर जोगिन ने ठान ली थी कि उम्र भर शादी न करूँगी। जिसके लिए जोगिन हुई, उसी की मुहब्बत का दम भरूँगी। एक दिन शहसवार ने जो सुना कि सिपहआरा कोठे पर से कूद पड़ी, तो दिल बेअख्तियार हो गया। चल खड़े हुए कि देखें, माजरा क्या है? रास्ते में एक मुंशी से मुलाकात हो गयी। दोनों आदमी साथ-साथ बैठे, और साथ ही साथ उतरे। इत्तफाक से रेल से उतरते ही मुंशी जी को हैजा हो गया। देखते-देखते चल बसे। शहसवार ने जो देखा कि मुंशी के पास दौलत काफी है, तो फौरन उनके बेटे बन गये और सारा माल असबाब ले कर चम्पत हो गये। सात हजार की अशर्फियाँ, दस हजार के नोट और कई सौ रुपये हाथ आये। रईस बन बैठे। फौरन जोगिन के पास लौट गये।

जोगिन—क्या गये नहीं?

शहसवार—आधी ही राह से लौट आये। मगर हम अमीर हो कर आये हैं।

जोगिन—अमीर कैसे! बोलो? हमको बनाते हो?

शहसवार—कसम खुदा की, हजारों ले कर आया हूँ। आँखें खुल जायँगी।

दुनिया के भी अजब कारखाने हैं। शहसवार को बाईस हजार तो नकद मिले और जब कपड़ों की गठरी खोली, तो एक टोपी निकल आयी, जिसमें हीरे और मोती टँके हुए थे। जोगिन के आशिकों में एक जौहरी भी था। उसने यह टोपी बीस हजार में खरीद ली। जब जौहरी चला गया, तो शहसवार ने जोगिन से कहा—लो, अब तो अल्लाह मियाँ ने छप्पर फाड़ के दौलत दी। कहो, अब निकाह की ठहरती है? क्यों मुफ्त में जवानी खोती हो?

जोगिन—अब रंग लायी गिलहरी। ओछे के घर तीतर, बाहर रखूँ कि भीतर। रुपये क्या मिल गये, अपने आपको भूल गये।

शहसवार सचमुच ओछा था। अब तक तो आप जोगिन की खुशामद करते थे, ढई दिये बैठे थे कि कभी न कभी तो दिल पसीजेगा; मगर अब जमीन पर पाँव ही नहीं रखते। बात-बात पर तिनकते हैं। जोगिन तो दुनिया से मुँह मोड़े बैठी थी, इनके चोंचले क्यों बर्दाश्त करती? शहसवार से नफरत करने लगी।

एक दिन शहसवार हवा के घोड़े पर सवार डींग मारने लगे—इस वक्त हम भी लाख के पेटे में हैं। और लाख रुपये जिसके पास होते हैं, उनको लोग तीन-चार लाख का आदमी आँकते हैं। अब दो घोड़े और लेंगे। मगर हम यह महाजनी कारखाना न रखेंगे कि चारजामा और जीनपोश। बस, अँगरेजी काठी और एक जोड़ी फिटन के लिए। जो देखे, कहे, रईस जाता है। और रईस के क्या दो सींग

होते हैं सिर पर ! एक कोठी भी बनवायेंगे। कोई ताल्लुकेदार अपना इलाका बेचे, तो खड़े-खड़े खरीद लें।

जोगिन—अच्छा, खाना तो खा लो।

शहसवार—आज खाना क्या पका है ?

जोगिन—बेसन की रोटी।

शहसवार—यह तो रईसों का खाना नहीं।

जोगिन—रईस कौन है ?

शहसवार—हम-तुम, दोनों। क्या अब भी रईस होने में शक है ? हाँ, खूब याद आया, एक हाथी भी खरीदेंगे।

जोगिन—हाँ, बस इसी की कसर थी। दो तीन गधे भी खरीदना।

शहसवार—गधे तो रईसों के यहाँ नहीं देखे।

जोगिन—नयी बात सूझी।

शहसवार—हाँ, खूब सूझी।

जोगिन—फिर, यह सब कब खरीदोगे ?

शहसवार—जब चाहें। रुपये का तो सारा खेल है। तीस-चालीस हजार रुपये बहुत होते हैं। इन्सान गिने, तो बरसों में गिनती खतम हो।

जोगिन—अजी, दो-तीन आदमी तो इतने अर्से में मर जायँ, दस-पाँच की आँखें फूट जायँ।

उस दिन से शहसवार की हालत ही कुछ और हो गयी। कभी रोते, कभी बहकी-बहकी बातें करते। आखिर जोगिन ने वहाँ से कहीं भाग जाने का इरादा किया। पड़ोस में एक आदमी रहता था, जो मोम के खिलौने खूब बनाता था। मोम के आदमी ऐसे बनाता कि असल का धोखा होता था। उसे बुला कर जोगिन ने उसके कान में कुछ कहा और कारीगर दस दिन की मुहलत ले कर रुखसत हुआ।

नौ दिन तक तो जोगिन ने किसी तरह काटे, दसवें दिन एकाएक शहसवार ने उसे देखा, तो चुपचाप पड़ी है। बुलाया; जवाब नदारत। करीब जा कर देखा तो पछाड़ खा कर गिर पड़े। लगे दीवार से सिर टकराने। जी में आया कि जहर खा लें और इसी के साथ चले चलें। क्या लुत्फ़ से दिन कटते थे, अब ये रुपये किस काम आवेंगे। जान जाने का रंज नहीं, मगर यह रुपया कहाँ जायगा ? आखिर वसीयत लिखी कि मेरे बाद मेरी सारी जायदाद सिपहआरा को दी जाय। यह वसीयत लिख कर शहसवार ने सिर पीटना शुरू किया। खिलौना बनानेवाला कारीगर उसे समझाने लगा—सब्र कीजिए। हाय, क्या मिजाज था ! यह कह कर वह अपने भाई को बुला लाया। दोनों ने लाश को खूब लपेट कर कंधे पर उठाया। मियाँ शहसवार पीछे-पीछे चले।

कारीगर—तुम क्यों आते हो ? कब्रिस्तान बहुत दूर है।

शहसवार—कब्र तक तो चलने दो।

कारीगर—क्या ग़ज़ब करते हो। थानेवालों को ख़बर हो गयी तो मुफ्त में धरे जाओगे।

शहसवार—मिट्टी तो दे दूँ।

कारीगर—बस, अब साथ न आइए।

६१

कैदखाने से छूटने के बाद मियाँ आजाद को रिसाले में एक ओहदा मिल गया। मगर अब मुश्किल यह पड़ी कि आजाद के पास रुपये न थे। दस हजार रुपये के बग़ैर तैयारी मुश्किल। अजनबी आदमी, पराया मुल्क, इतने रुपये का इंतजाम करना आसान न था। इस फ़िक्र में मियाँ आजाद कई दिन तक रोते खाते रहे। आख़िर यही सोचा कि यहाँ कोई नौकरी कर लें और रुपये जमा हो जाने के बाद फौज में जायँ। मन मारे बैठे हुए थे कि मीडा आ कर कुर्सी पर बैठ गयी। जिस तपाक के साथ आजाद रोज पेश आया करते थे, उसका आज पता न था। चकरा कर बोली—उदास क्यों हो! मैं तो तुम्हें मुबारकबाद देने आयी थी। यह उलटी बात कैसी?

आजाद—कुछ नहीं। उदास तो नहीं हूँ।

मीडा—जरा आईने में सूरत तो देखिए.

आजाद—हाँ मीडा, शायद कुछ उदास हूँ। मैने तुमसे अपने दिल की कोई बात कभी नही छिपायी। मुझे ओहदा तो मिल गया, मगर यहाँ टका पास नहीं। कुछ समझ मे नहीं आता क्या करूँ?

मीडा—बस, इसी लिए आप इतने उदास हैं। यह तो कोई बड़ी बात नही। तुम इसकी कोई फ़िक्र न करो।

यह कह कर मीडा चली गयी और थोड़ी देर बाद उसके आदमी ने आ कर एक लिफाफा आजाद के हाथ में रख दिया। आजाद ने लिफ़ाफ़ा खोला, तो उछल पड़े। इस्तंबोल-बैंक के नाम बीस हजार का चेक था। आजाद रुपये पा कर खुश तो हुए, मगर यह अफ़सोस जरूर हुआ कि मीडा ने अपने दिल मे न जाने क्या समझा होगा। उसी वक्त बैंक गये, रुपये लिये और सब सामान ठीक करके दूसरे दिन फ़ौज में दाखिल हो गये।

दोपहर के वक्त घड़घड़ाहट की आवाज आयी। खोजी ने सुना, तो बोले—यह आवाज कैसी है भई? हम समझ गये। भूचाल आने वाला है। इतने में किसी ने कहा—फ़ौज आ रही है। खोजी कोठे पर चढ़ गये। देखा, फ़ौज सामने आ रही है। यह घड़घड़ाहट तोपखाने की थी। जरा देर में आजाद पर नजर पड़ी। घोड़े की बाग उठाये, रान जमाये चले जाते थे। खोजी ने पुकारा—मियाँ आजाद! अरे मियाँ, इधर, इधर! वाह, सुनते ही नहीं। फ़ौज मे क्या हो गये, मिजाज ही नहीं मिलते। हम भी पलटन में रह चुके हैं, रिसालदार थे, पर यह न था कि किसी की बात न सुनें।

सारे शहर में एक मेला सा लगा हुआ था, कोठे फटे पड़ते थे। औरतें अपने

शौहरों को लड़ाई पर जाते देखती थीं और उन पर फूलों की बौछार करती थीं। माँएँ अपने बेटों के लिए खुदा से दुआ कर रही थीं।

फ़ौज तो मैदान को गयी और मियाँ खोजी मिस मीडा से मिलने चले। मीडा की एक सहेली का नाम था मिस रोज। मीडा खोजी को देखते ही बोली—लीजिए, मैंने आपकी शादी मिस रोज से ठीक कर दी। अब कल बरात ले कर आइए।

खोजी—खुदा आपको इस नेकी का बदला दे। मैं तो वजीर-जंग को भी नवेद दूँगा।

मीडा—अजी, सुलतान को भी बुलाइए।

खोजी—तो फिर बंदोबस्त कीजिए। शादी के लिए नाच सबसे ज़्यादा जरूरी है। अगर तबले पर थाप न पड़ी, महफिल न जमी, तो शादी ही क्या!

मीडा—मगर यहाँ तो आदमी का नाच मना है। कहीं कोई औरत नाचे, तो गजब ही हो जाय।

खोजी—अच्छा, फिर किसी सबील से नाच का नाम तो हो जाय।

मीडा—इसकी तदबीर यों कीजिए कि किसी बंदर नचानेवाले को बुला लीजिए। खर्च भी कम और लुत्फ भी ज़्यादा। तीन बंदरवाले काफी होंगे।

खोजी—तीन तो मनहूस हैं। पाँच हो जायें, तो अच्छा।

खैर, दूसरे दिन खोजी बरात सजा कर मीडा के मकान की ओर चले। आगे निशान का खच्चर था, पीछे रीछ और बंदर। दस पाँच लड़के मशालें लिये खोजी के चारों तरफ चले जाते थे; और खोजी टट्टू पर सवार, गेरुए रंग की पोशाक पहने सियाह पगड़ी बाँधे, अकड़े बैठे थे। टट्टू इतना मरियल था कि खोजी बार-बार उछलते थे, एड़-पर-एड़ लगाते थे, मगर वह दो कदम आगे जाता था तो चार कदम पीछे। एकाएक टट्टू बैठ गया। इस पर लड़कों ने उसे डंडे मारना शुरू किया। खोजी बिगड़ कर बोले—ओ मसखरो, तुम सब हँसते क्या हो! जल्द कोई तदबीर बताओ, वर्ना मारे करौलियों के भौला दूँगा।

साईस—हुजूर, मैं इस घोड़े की आदत खूब जानता हूँ। यहि बगैर चाबुक खाये उठनेवाला नहीं।

खोजी—तू मसलहत करता है कि किसी तदबीर से टट्टू को मनाता है?

साईस—आप उतर पड़िए।

खोजी उतर पड़े और साईस ने टट्टू को मार-मार कर उठाया। खोजी फिर सवार होने चले। एक पैर रकाब पर रख कर दूसरा उठाया ही था कि टट्टू चलने लगा। खोजी अरा-रा करके धम से जमीन पर आ रहे। पगड़ी यह गिरी, करौली वह गिरी। डिबिया एक तरफ, टट्टू एक तरफ। साईस ने कहा—उठिए, उठिए। घोड़े से गिरना शहसवारों ही का काम है। जिसे घोड़ा नसीब नहीं, वह क्या गिरेगा?

खोजी—खैरियत यह हुई कि मैं घोड़े पर न गिरा, वर्ना मेरे बोझ से उसका काम ही तमाम हो जाता।

सलारबख्श—फ़िक्र क्या खाक होगी ? मुकदमेवाले तो आते ही नहीं।

वकील—अजी, एक मुकदमे में उम्र भर की कसर निकल जायगी।

सलारबख्श—तो क्या मिलेगा एक मुकदमे में ?

वकील—अजी, मिलने की न कहो ! मिलें, तो दो लाख मिल जायँ।

सलारबख्श—ऐ, इतना झूठ ! मियाँ, मैं नौकरी नहीं करने का। देखिए, छत न गिर पड़े कहीं ! लोग कहते हैं, काल पड़ता है, हैजा आता है, मेंह नहीं बरसता। बरसे क्या खाक, इस झूठ को तो देखिए, कुछ ठिकाना है, दो लाख एक मुकदमे में आप पायेंगे ! कभी बाबा दादा ने भी दो लाख की सूरत देखी थी ? हमने तो आपके बाबा को भी जूतियाँ चटकाते ही देखा। वह तो कहिए, फ़क़ीर की दुआ से रोटियाँ चली जाती हैं। यही गनीमत समझो ?

वकील—तुम बड़े गुस्ताख़ हो !

सलारबख्श—मैं तो खरी-खरी कहता हूँ।

वकील—खैर, कल एक काम तो करना ! जरा दो-एक आदमियों को लगा लाना।

सलारबख्श—क्या करना ?

वकील—दो आदमियों को मुवक्किल बना कर ले आना, जिसमें यह समझे कि इनके पास मुकदमे बहुत आते हैं। हम तो रंग जमाते हैं न अपना। यह बात समझे !

सलारबख्श—अगर दो-एक को फाँस-फूँस कर लाये भी, तो फायदा क्या ? टका तो वसूल न होगा।

वकील—वह समझेगी तो कि यह बहुत बड़े वकील हैं।

सलारबख्श—अच्छा, इस वक़्त तो सोइए। सुबह देखी जायगी।

दोनों आदमी सोये। सबसे पहले जोगिन की आँख खुली। सलारबख्श से बोली—क्यों जी, इनका नाम क्या है ?

सलारबख्श—इनका नाम है हींगन।

जोगिन—क्या ? हींगन ? तब तो शरीफ जरूर होंगे। और इनके बाप का नाम क्या है ? बैंगन !

सलारबख्श—बाप का नाम मदारी।

जोगिन—वाह, बस, मालूम हो गया। और पेशा क्या है ?

सलारबख्श—दलाली करते हैं।

जोगिन—ऐं, यह दल्लाल हैं ?

सलारबख्श—जी, और क्या। बाप-दादे के वक़्त से दलाली होती आती है।

वकील साहब लेटे-लेटे सुन रहे थे और दिल ही दिल में सलारबख्श को गालियाँ दे रहे थे कि पाजी ने जमा-जमाया रंग फीका कर दिया। इतने में बारह की तोप दगी और वकील साहब उठ बैठे।

वकील—पानी लाओ। आज वह दूसरा खिदमतगार कहाँ है ?

सलारबख्श — हुजूर, चिट्ठी ले गया है।

वकील—और मामा नहीं आयी?

सलारबख्श—रात उसके लड़का हुआ है।

वकील—और कालेखाँ कहाँ मर गया आज।

सलारबख्श—लालखाँ के पास गया है हुजूर।

वकील—और हमारा मुहर्रिर?

सलारबख्श—उन्हें नवाब साहब ने बुलवा भेजा है।

वकील—सब मुवक्किल कहाँ हैं?

सलारबख्श—हुजूर सब वापस चले गये।

वकील—कुछ परवा नहीं। हमको मुकदमों की क्या परवा!

सलारबख्श—हुजूर के घर की रियासत क्या कम है।

वकील—(जोगिन से) आज तो आप खूब सोयीं।

जोगिन—मारे सर्दी के रात भर काँपती रही। कसम ले लो, जो आँख भी झपकी हो। यह तो बताइए, आपका नाम क्या है?

वकील—हमारा नाम मौलवी मिर्जा मुहम्मद सादिकअली बेग, वकील अदालत।

जोगिन—'घर की पुटकी बासी साग'।

वकील—ऐं, और सुनिए।

जोगिन—तुम्हारा नाम हींगन है? और बैंगन के लड़के हो? दलाली करते हो?

वकील - हींगन किस पाजी का नाम है?

सलारबख्श—इनसे किसी ने हींगन कह दिया होगा।

वकील—तेरे सिवा और कौन कहने बैठा होगा?

सलारबख्श—तो क्या मैं ही अकेला आपका नौकर हूँ कुछ? पंद्रह-बीस आदमी हैं। किसी ने कह दिया होगा। इसको हम क्या करे ले भला?

वकील—ऊपर से और हँसता है बेग़ैरत। (जोगिन से) हमसे एक फकीर ने कहा है कि तुम बल्द बादशाह होनेवाले हो।

जोगिन—हाँ, फिर उल्लू तुम्हारे सिर पर बैठा ही चाहता है। दो ही तरह से ग़रीब आदमी बादशाह हो सकता है—या तो टाँग टूट जाय, या उल्लू सिर पर बैठे। अच्छा, आपकी आमदनी क्या होगी?

वकील—यह न पूछो। कुछ रुपया गाँव से आता है, कुछ वसीका है, कुछ वकालत से पैदा करते हैं।

जोगिन—और सवारी क्या है आपके पास?

वकील—आजकल तो बस, एक पालकी है और दो घोड़े।

जोगिन—बँधते कहाँ हैं?

सलारबख्श—इधर एक अस्तबल है, और उसके पास ही फीलखाना।

जोगिन—ऐं, क्या आपके पास हाथी भी है?

वकील—नहीं जी कहने दो इसे। यह यों ही कहा करता है।

जोगिन—अच्छा, वकालत में क्या मिलता होगा?

वकील—अब तो आजकल मुकदमे ही कम हैं।

जोगिन—तो भी भला?

सलारबख्श—इसकी न पूछिए, किसी महीने में दो-चार हाथी आ गये, किसी महीने दस-पाँच ऊँट मिल गये।

वकील—तू उठ जा यहाँ से। हज़ार बार कह दिया कि मसखरेपन से हमको नफ़रत है; मगर मानता ही नहीं शैतान! तुझसे कुछ कहा था हमने!

सलारबख्श—हाँ, हाँ, याद आ गया। लीजिए अभी जाता हूँ।

वकील साहब सलारबख्श के साथ बरामदे में आये कि कुछ और समझा दें, तो सलारबख्श ने कहा—अभी सबों को फाँसे लाता हूँ। आप इतमिनान से बैठें। मगर यह भी बैठी रहें, जिसमें लोग समझें कि वकील की बड़ी आमदनी है। मैं कह दूँगा कि गाना सुनने के लिए नौकर रखा है। सौ रुपये महीना देते हैं।

वकील—सौ नहीं दो सौ कहना।

सलारबख्श—वही बात कहिएगा, जो बेतुकी हो। भला किसी को भी दुनिया में यकीन आवेगा कि यह वकील दो सौ रुपये खर्च कर सकता है!

वकील—क्यों, क्यों?

सलारबख्श—अब आप तो हिंदी की चिंदी निकालते हैं। धेले-धेले पर तो आप मुक़दमे लेते हैं; दो सौ की रकम भला आप क्या खर्च करेंगे?

वकील—अच्छा, बक न बहुत। जा, फाँस ला दो-चार को।

सलारबख्श बाहर जा कर दो-चार अड़ोसियों-पड़ोसियों को सिखा कर-पढ़ा कर मूँछों पर ताव देते हुए आया और हुक्का भर कर जोगिन के सामने पेश किया।

जोगिन—क्या कक्कड़वाले की दूकान से लाये हो? हटा ले जाओ इसे! तुम्हें मदरिया भी नहीं जुरता?

वकील—अरे, तू यह हुक्का कहाँ से उठा लाया? वह हुक्का कहाँ है, जो नसीरुद्दीन हैदर के पीने का था? वह गंगा-जमनी गुड़गुड़ी कहाँ है, जो हमारे साले ने भेजी थी।

सलारबख्श—वह हुजूर के बहनोई ले गये।

वकील—तो आखिर, पेचवान और चाँदी का हुक्का क्यों नहीं निकालते? यह भदेसल हुक्का उठा लाये वहाँ से।

सलारबख्श—खुदावंद, वह सब तो बंद हैं।

जोगिन—आखिर यह सब समान बंद कहाँ है? ज़री सा तो मकान आपका, मुर्गी के टापे के बराबर। वह किन कोठों में बंद है सबका सब?

इतने में एक मुकदमेवाला आया। एक हाथ में झाड़ू, दूसरे में पंजा। आते ही झाड़ू कोने में खड़ी कर दी और पंजा टेक कर बैठा गया। वकील साहब सिर से पैर

तक फुँक गये। पूछा—तुम कौन? उसने कहा—हम भंगी हैं साहब! जोगिन मुस-किरायी। वकील ने सलारबख्श की तरफ देखा। सलारबख्श सिर खुजलाने लगा।

वकील—क्या चाहता है?

भंगी—हुजूर, मेरी टट्टी का एक बाँस कोई निकाल ले गया। हुजूर को वकील करने आया हूँ। गुलाम हूँ खुदावंद।

वकील—कोई है, निकाल दो इस पाजी को।

सलारबख्श—खुदावंद, अमीरों का मुकदमा तो आप ले, और गरीबों का कौन ले? वकील तो दर्जी की सुई है, कभी रेशम में, कभी लट्ठे में!

वकील—गरीबों का मुकदमा गरीब वकील ले।

सलारबख्श—अब तो हुजूर, इसकी फरियाद सुन ही ले। अच्छा मेहतर, बताओ क्या दोगे?

मेहतर—हमारे पास तो दो मट्टू-साही हैं।

वकील—(झल्ला कर) निकालो, निकालो इस कम्बख्त को!

वकील साहब ने गुस्से मे मेहतर की झाड़ू उठा ली और उस पर खूब हाथ साफ किया। वह झाड़ू-पंजा छोड़ कर भागा।

जोगिन—अच्छा, अ प अब अलग ही रहिएगा। जा कर गुस्ल कीजिए।

वकील—आज तो बड़ी सर्दी है।

जोगिन—अल्लाह जानता है, गुस्ल करो, नहीं तो छुएँगे नहीं।

सलारबख्श—हाँ, सच तो कहती हैं।

वकील—तू चुप रह।

जोगिन ने सलारबख्श को हुक्म दिया कि तुम पानी भरो। सलारबख्श पानी भर लाये। वकील साहब ने रोते-रोते कपड़े उतारे, लुंगी बाँधी और बैठे। जैसे बदन पर पानी पड़ा, आप गुल मचा कर भागे। सलारबख्श चमड़े का डोल लिये हुए पीछे दौड़ा। फिर पानी पड़ा, फिर रोये। जोगिन मारे हँसी के लोट-लोट गयी। बारे किसी तरह आपका गुस्ल पूरा हुआ। थर-थर काँप रहे थे। मुँह से बात न निकलती थी। उस पर सलारबख्श ने पंखा झलना शुरू किया, तब तो और भी झल्लाये और कस कर उसे दो-तीन लातें लगायीं। सलारू भाग खड़े हुए।

जोगिन—अब यह दरी तो उठवाओ।

वकील—क्यों, दरी ने क्या कसूर किया?

सलारबख्श—हुजूर, भंगी तो इसी पर बैठा था।

वकील—अरे, तू फिर बोला! कसम खुदा की, मारते-मारते उधेड़ कर रख दूँगा।

जोगिन—सलारबख्श, यह चाँदनी उठा ले जाओ।

दरी उठी, तो कलई खुल गयी। नीचे एक फटा-पुराना टाट पड़ा था, बाबा आदम के वक्त का। वकील कट गये। जोगिन ने कहा—ले, अब इस पर कोई फर्श बिछवाओ।

वकील—वह बड़ी दरी लाओ, जो छकड़े पर लद कर आयी थी।

सलारबख्श—वह! उसको तो एक लौंडा चुरा ले गया।

जोगिन—खुदा की पनाह, छकड़े पर लद कर तो मुई दरी आयी, और ज़रा सा लौंडा चुरा ले गया!

वकील—अच्छा, वह न सही, जाओ, और जो कुछ मिले उठा लाओ।

यह कह कर वकील साहब तो बरामदे में चले गये और सलारबख्श जा कर अपना कम्बल और एक दस्तरख्वान उठा लाया। वकील कमरे में आये, तो देखा कि दस्तरख्वान बिछा हुआ है और जोगिन खिलखिला कर हँस रही है। सलारबख्श एक कोठरी में छिप रहा था। वकील ने झल्ला कर डंडा निकाला और कोठरी में घुस कर उसे दो-तीन डंडे लगाये। फिर डाँट कर कहा—आखिर जो तू मेरा नमक खाता है, तो मेरा रंग क्यों फीका करता है? मैं एक कहूँ तो दो कहा कर। खैर-ख्वाही के माने यह हैं। सिखला दिया, समझा दिया; मगर तू हिंदी की चिंदी निकालता है।

सलारबख्श—अच्छा, हुजूर जैसा कहते हैं, वही करूँगा। और भी जो कुछ समझाना हो, समझा दीजिए। फिर मैं नहीं जानता।

वकील—अच्छा, हम जाते हैं, तू आ कर कहना कि कसूर माफ कीजिए। और रोना खूब।

वकील साहब यह हिदायत करके चले गये और जोगिन से बातें करने लगे। इतने में सलारबख्श रोता हुआ आया। जोगिन धक से रह गयी। सलारू थोड़ी देर तक खूब रोये, फिर वकील के कदमों पर गिर कर कहा—हुजूर, मेरा कसूर माफ़ करें।

वकील—अबे, तो कोई इस तरह रोता है?

जोगिन—मैं तो समझी कि आपके अज़ीज़ों में से कोई चल बसा।

इतने में वकील साहब के नाम एक खत आया। जोगिन ने पूछा—किसका खत है?

वकील—साहब के पास से आया है।

जोगिन—कौन साहब? कोई अँगरेज हैं?

वकील—हाँ, जिले के हाकिम हैं। हमसे याराना है।

सलारबख्श—आपसे न! और उनसे भी तो याराना है, जिन्होंने जुर्माना ठोंक दिया था?

वकील—साहब ने हमें बुलाया है।

जोगिन—तो शायद आज तुम्हारी दावत वहीं है? तभी आज खाना-वाना नहीं पक रहा है। दोपहर होने को आयी, और अभी तक चूल्हा नहीं जला।

वकील—अरे सलारू, खाना क्यों नहीं पकाता?

सलारबख्श—बाजार बंद है।

जोगिन—आग लगे तेरे मसखरेपन को! यहाँ आँतें कुँ-कुँ कर रही हैं, और तुझे दिल्लगी सूझती है।

वकील ने बाहर जा कर सलारू से कहा—बनिये से आटा क्यों नहीं लाता ?

सलारबख्श—हुजूर, कोई दे भी ! कोई दस बरस से तो हिसाब नहीं हुआ। बाजार में निकलता हूँ, तो चारों तरफ़ से तकाजे होने लगते हैं।

वकील—अबे, इस वक्त तो किसी बहाने से माँग ला। आखिर कभी-न-कभी मुकदमे आवेंगे ही। हमेशा यों ही सन्नाटा थोड़े ही रहेगा ?

खैर, सलारबख्श ने खाना पकाया, और कोई चार बजे आठ मोटी-मोटी रोटियाँ; एक प्याली में माष की दाल और दूसरी में आध पाव गोश्त रख कर लाया।

वकील—अबे, आज पुलाव नहीं पका ?

सलारबख्श—हुजूर, बिल्ली खा गयी।

वकील—और गोश्त भी एक ही तरह का पकाया ?

सलारबख्श—हुजूर मैं पानी भरने चला गया, तो कुत्ता चख गया।

जोगिन—यहाँ की बिल्ली और कुत्ते बड़े लागू हैं।

सलारबख्श—कुछ न पूछिए।

इतने में किसी ने दरवाजे पर हाथ मारा।

सलारबख्स—कौन साहब हैं ?

वकील—देखो, मामू साहब न हों। कह देना, घर में नहीं हैं।

सलारबख्श—हुजूर, वह है मम्मन तेली।

वकील—कह दो, हम तेल-वेल न लेंगे। रात को हमारे यहाँ मोमबत्तियाँ जलती हैं, और खाने में तेल आता नहीं। फिर तेली का यहाँ क्या काम ?

सलारबख्श—मुकदमा लाया है हुजूर !

तेली मैले-कुचैले कपड़े पहने हाथ में कुप्पी लिये आ कर बैठ गया।

वकील—क्या माँगता है ?

तेली—एक आदमी ने हम पर नालिश कर दी है हुजूर ! अब आप ही बचावें तो बच सकता हूँ।

वकील—मेहनताना क्या दोगे ?

सलारबख्श—हाय, हाय, पहले इसकी फरियाद तो सुनो कि वह कहता क्या है ! बस, मुर्दा दोज़ख में जाय चाहे बिहिश्त में, आपको अपने हलवे-माँडे से काम। बताओ भई, क्या दोगे ?

तेली—एक पली तेल।

वकील—निकाल दो इसे, निकाल दो !

तेली—अच्छा साहब, तीन पली ले लो।

सलारबख्श—अच्छा, आधी कुप्पी तेल दे दो। बस, इतना कहना मानो।

वकील—हैं-हैं, क्यों शरह बिगाड़ते हो ? तुम जाओ जी।

सलारबख्श—पहले देखिए तो ! राज़ी भी होता है ?

तेली आधी कुप्पी तेल देने पर राजी न हुआ और चला गया। थोड़ी देर के बाद सलारबख्श ने दबी जबान कहा—हुजूर शाम को क्या पकेगा?

वकील—अबे, शाम तो हो गयी। अब क्या पकेगा?

सलारबख्श—खुदावंद, इस तरह तो मैं टें हो जाऊँगा। आप न खायँ, हमारे वास्ते तो बतला दीजिए।

वकील—अपने वास्ते छिछड़े ले आ जा कर।

सलारबख्श—(आहिस्ता से) वे भी बचने जो पावें आपसे।

जोगिन को हँसी आ गयी। वकील ने कहा—मेरी बात पर हँसती होगी? मैं ऐसी ही कहता हूँ। इस पर जोगिन को और भी हँसी आयी।

वकील—अल्लाह री शोखी—

खूब रू जितने हैं दिल लेती है सबकी शोखी;
है मगर आपकी शोखी तो ग़ज़ब की शोखी!

रात को जोगिन ने अपने पास से पैसे दे कर बाजार से खाना मँगवाया, और खा कर सोयी। सुबह को वकील साहब की नींद खुली, तो देखा, जोगिन का कहीं पता नहीं। घर भर में छान मारा। हाथ-पाँव फूल गये। बोले—सलारू ग़ज़ब हो गया! हमारी किस्मत फूट गयी।

सलारबख्श—फूट गयी खुदावंद, आपकी किस्मत फूट गयी।

वकील—फिर अब?

सलारबख्श—क्या अर्ज़ करूँ हुजूर!

वकील—घर भर में तो देख चुके न तुम?

सलारबख्श—हाँ और तो सब देख चुका, अब एक परनाला बाकी है, वहाँ आप झाँक लें।

६२

जमाना भी गिरगिट की तरह रंग बदलता है। वही अलारक्खी जो इधर-उधर ठोकरें खाती-फिरती थी, जो जोगिन बनी हुई एक गाँव में पड़ी थीं, आज सुरैया बेगम बनी हुई सरकस के तमाशे में बड़े ठाट से बैठी हुई है। यह सब रुपये का खेल है।

सुरैया बेगम—क्यों महरी, रोशनी काहे की है? न लैंप, न झाड़, न कँवल और सारा खेमा जगमगा रहा है।

महरी—हुजूर, अक्ल काम नहीं करती, जादू का खेल है। बस, दो अंगारे जला दिये और दुनिया भर जगमगाने लगी।

सुरैयाबेगम—दारोगा कहाँ हैं? किसी से पूछें तो कि रोशनी काहे की है?

महरी—हुजूर, वह तो चले गये।

सुरैया बेगम—क्या बाजा है, वाह-वाह!

महरी—हुजूर, गोरे बजा रहे हैं।

सुरैया बेगम—जरा घोड़ों को तो देखो, एक से एक बढ़-चढ़ कर हैं। घोड़े क्या, देव हैं। कितना चौड़ा माथा है और जरा सी थुँथनी! कितनी थोड़ी सी जमीन मे चक्कर देते हैं! वल्लाह, अक़्ल दंग है!

महरी—बेगमसाहब, कमाल है।

सुरैया बेगम—इन मेमों का जिगर तो देखो, अच्छे-अच्छे शहसवारों को मात करती हैं।

महरी—सच है हुजूर, यह सब जादू के खेल हैं।

सुरैया बेगम—मगर जादूगर भी पक्के हैं।

महरी—ऐसे जादूगरों से खुदा समझे।

इस पर एक औरत जो तमाशा देखने आयी थी, चिढ़ कर बोली—ऐ वाह, यह बेचारे तो हम सबका दिल खुश करें, और आप कोसें! आखिर उनका क़सूर क्या है; यही न कि तमाशा दिखाते हैं?

महरी—यह तमाशेवाले तुम्हारे कौन हैं?

औरत—तुम्हारे कोई होंगे।

महरी—फिर तुम चिटकीं तो क्यों चिटकीं?

औरत—बहन, किसी को पीठ-पीछे बुरा न कहना चाहिए।

महरी—ऐ, तो तुम बीच में बोलनेवाली कौन हो?

औरत—तुम सब तो जैसे लड़ने आयी हो। बात की, और मुँह नोच लिया।

सुरैया बेगम के साथ महरी के सिवा और भी कई लौंडियाँ थीं, उनमें एक का नाम अब्बासी था। वह निहायत हसीना और बला की शोख थी। उन सबों ने मिल कर इस औरत को बनाना शुरू किया—

महरी—गाँव की मालूम होती हैं।

अब्बासी—गँवारिन तो हैं ही, यह भी कहीं छिपा रहता है ?

सुरैया बेगम—अच्छा, अब बस, अपनी ज़बान बंद करो। इतनी मेमें बैठी हैं, किसी की जबान तक न हिली। और हम आपस में कटी मरती हैं।

इतने में सामने एक जीब्रा लाया गया। सुरैया बेगम ने कहा—यह कौन जान-वर है ? किसी मुल्क का गधा तो नहीं है ? चूँ तक नहीं करता। कान दबा दौड़ा जाता है।

अब्बासी—हुजूर, बिलकुल बस में कर लिया।

महरी—ईन फिरंगियों की जो बात है, अनोखी, जरा इस मेम को तो देखिए, अच्छे-अच्छे शहसवारों के कान काटे।

सवार लेडी ने घोड़े पर ऐसे-ऐसे करतब दिखाये कि चारों तरफ़ तालियाँ पड़ने लगीं। सुरैया बेगम ने भी खूब तालियाँ बजायी। जनाने दरजे के पास ही दूसरे दरजे में कुछ और लोग बैठे थे। बेगम साहब को तालियाँ बजाते सुना तो एक रँगीले शेख जी बोले—

कोई माशूक है इस परदए जंगारी में।

मिरजा साहब—रगों मे शोख़ी कूट-कूट कर भरी है।

पंडित जी—शौकीन मालूम होती हैं।

शेख जी—वल्लाह, अब तमाशा देखने को जी नहीं चाहता।

मिरज़ा साहब—एक सूरत नजर आयी।

पंडित जी—तुम बड़े खुशनसीब हो।

ये लोग तो यों चहक रहे थे। इधर सरकस में एक बड़ा कठघरा लाया गया, जिसमें तीन शेर बंद थे। शेरों के आते ही चारों तरफ़ सन्नाटा छा गया। अब्बासी बोली—देखिए हुजूर, वह शेर जो बीचवाले कठघरों मे बंद है, वही सबसे बड़ा है।

महरी—और ग़ुस्सेवर भी सबसे ज़्यादा। मालूम होता है कि आदमी का सिर निगल जायेगा।

सुरैया बेगम—कहीं कठघरा तोड़ कर निकल भागें तो सबको खा जायँ।

महरी—नहीं हुजूर, सधे हुए हैं। देखिए, वह आदमी एक शेर का कान पकड़ कर किस तौर पर उसे उठाता-बैठाता है। देखिए-देखिए हुजूर, उस आदमी ने एक शेर को लिटा दिया और किस तरह पाँव से उसे रौंद रहा है।

अब्बासी—शेर क्या है, बिलकुल बिल्ली है। देखिए, अब शेर से उस आदमी की कुश्ती हो रही है। कभी शेर आदमी को पछाड़ता है, कभी आदमी शेर के सीने पर सवार होता है।

यह तमाशा कोई आध घंटे तक होता रहा। इसके बाद बीच में एक बड़ी मेज बिछायी गयी और उस पर बड़े-बड़े गोश्त के टुकड़े रखे गये। एक आदमी ने सींख का एक टुकड़े में छेद दिया और गोश्त को कठघरे में डाला। गोश्त का पहुँचना

था कि शेर उसके ऊपर ऐसा लपका जैसे किसी जिंदा जानवर पर शिकार करने के लिए लपकता है। गोश्त को मुँह में दबा कर बार-बार डकारता था और जमीन पर पटक देता था। जब डकारता, मकान गूँज जाता और सुननेवालों के रोंगटे खड़े हो जाते। बेगम ने घबरा कर कहा—मालूम होता है, शेर कठघरे से निकल भागा है। कहाँ हैं दारोगा जी, जरा उनको बुलाना तो।

बेगम साहब तो यहाँ मारे डर के चीख रही थीं और उनसे थोड़ी ही दूर पर वकील साहब और मियाँ सलारबख्श में तकरार हो रही थी—

वकील—रुक क्यों गया बे? बाहर क्यों नहीं चलता?

सलारबख्श—तो आप ही आगे बढ़ जाइए न!

वकील—तो अकेले हम कैसे जा सकते हैं?

सलारबख्श—यह क्यों? क्या भेड़िया खा जायगा? या पीठ पर लाद कर उठा ले जायगा, ऐसे दुबले पतले भी तो आप नहीं हैं। बैठिए तो कोख दे।

वकील—बगैर नौकर के जाना हमारी शान के खिलाफ़ है।

सलारबख्श—तो आपका नौकर कौन है? हम तो इस वक्त मालिक मालूम होते हैं?

वकील—अच्छा, बाहर निकल कर इसका जवाब दूँगा; देख तो सही!

सलारबख्श—अजी, जाओ भी; जब यहाँ ही जवाब न दिया तो बाहर क्या बनाओगे? अब चुपके ही रहिए। नाहक-बिन-नाहक को बात बढ़ेगी।

वकील—बस, हम इन्हीं बातों से तो खुश होते हैं।

सलारबख्श—खुदा सलामत रखे हुजूर को। आपकी बदौलत हम भी दो गाल हँस-बोल लेते हैं।

वकील—यार, किसी तरह इस सुरैया बेगम का पता तो लगाओ कि यह कौन हैं। छिब्बोजान तो चकमा देकर चली गयीं, शायद यही निकाह पर राजी हो जायँ!

सलारबख्श—जरूर! और खूबसूरत भी आप ऐसे ही हैं।

सुरैया बेगम चुपके-चुपके ये बातें सुनती और दिल ही दिल में हँसती जाती थी। इतने में एक खूबसूरत जवान नजर पड़ा। हाँथ-पाँव साँचे के ढले हुए, मसें भीगती हुईं, मियाँ आजाद से सूरत बिलकुल मिलती थी। सुरैया बेगम की आँखों में आँसू भर आये। अब्बासी से कहा—जरी, दारोगा साहब को बुलाओ। अब्बासी ने बाहर आ कर देखा तो दारोगा साहब हुक्का पी रहे हैं। कहा—चलिए, नादिरी हुक्म है कि अभी-अभी बुला लाओ।

दारोगा—अच्छा-अच्छा। चलते हैं। ऐसी भी क्या जल्दी है! जरा हुक्का तो पी लेने दो।

अब्बासी—अच्छा, न चलिए, फिर हमको उलाहना न दीजिएगा। हम जताये जाते हैं।

दारोगा—(हुक्का पटक कर) चलो साहब, चलो। अच्छी नौकरी है, दिन-रात

गुलामी करो तब भी चैन नहीं। यह महीना खत्म हो ले तो हम अपने घर की राह लें।

दारोग़ा साहब जब सुरैया बेगम के पास पहुँचे तो उन्होंने आहिस्ता से कहा—वह जो कुर्सी पर एक जवान काले कपड़े पहन कर बैठा हुआ है, उसका नाम जा कर दर्याफ़्त करो। मगर आदमियत से पूछना।

दारोग़ा—या खुदा, हुज़ूर बड़ी कड़ी नौकरी बोलीं। गुलाम को ये सब बातें याद क्योंकर रहेंगी। जैसा हुक्म हो।

अब्बासी—ऐ, तो बातें कौन ऐसी लम्बी-चौड़ी हैं जो याद न रहेंगी?

दारोग़ा—अरे भाई, हममें-तुममें फ़र्क़ भी तो है! तुम अभी सत्रह-अठारह वर्ष की हो और यहाँ बिलकुल सफ़ेद हो गये हैं। खैर, हुज़ूर, जाता हूँ।

दारोग़ा साहब ने जवान के पास जा कर पूछा तो मालूम हुआ कि उनका नाम मियाँ आज़ाद है। बेगम साहब ने आज़ाद का नाम सुना तो मारे खुशी के आँखों में आँसू भर आये। दारोग़ा को हुक्म दिया, जा कर पूछ आओ, अलारक्खी को भी आप जानते हैं? आज नमक का हक़ अदा करो। किसी तरकीब से इनको मकान तक लाओ।

दारोग़ा साहब समझ गये कि इस जवान पर बीबी का दिल आ गया। अब खुदा ही खैर करे। अगर अलारक्खी का जिक्र छेड़ा और ये बिगड़ गये तो बड़ी किरकिरी होगी। और अगर न जाऊँ तो यह निकाल बाहर करेंगी। चले, पर हर कदम पर सोचते जाते थे कि न जाने क्या आफ़त आये। जा कर जवान के पास एक कुर्सी पर बैठ गये और बोले—एक अर्ज है हुज़ूर, मगर शर्त यह है कि आप खफा न हों। सवाल के जवाब में सिर्फ़ 'हाँ' या 'नहीं' कह दें।

जवान—बहुत खूब! 'हाँ' कहूँगा या 'नहीं'।

दारोग़ा—हुज़ूर का गुलाम हूँ।

जवान—अजी, आप इतना इसरार क्यों करते हैं, आपको जो कुछ कहना हो कहिए। मैं बुरा न मानूँगा।

दारोग़ा—एक बेगम साहब पूछती हैं कि हुज़ूर अलारक्खी के नाम से वाकिफ़ हैं?

जवान—बस, इतनी ही बात! अलारक्खी को मैं खूब जानता हूँ। मगर यह किसने पूछा है?

दारोग़ा—कल सुबह को आप जहाँ कहें, वहाँ आ जाऊँ। सब बातें तय हो जायँगी।

जवान—हज़रत, कल तक की खबर न लीजिए, वरना आज रात को मुझे नींद न आयेगी।

दारोग़ा ने जा कर बेगम साहब से कहा—हुज़ूर वह तो इसी वक़्त आने को कहते हैं। क्या कह दूँ? बेगम बोलीं—कह दो, ज़रूर साथ चलें।

उसी जगह एक नवाब अपने मुसाहबों के साथ बैठे तमाशा देख रहे थे

नवाब ने फ़रमाया—क्यों मियाँ नत्थू, यह क्या बात निकाली है कि जिस जानवर को देखो, बस में आ गया। अक़्ल काम नहीं करती।

नत्थू—खुदावंद, बस बात सारी यह है कि ये लोग अक़्ल के पुतले हैं। दुनिया के परदे पर कोई ऐसी चीज़ नहीं जिसका इल्म इनके यहाँ न हो। चिड़िया का इल्म इनके यहाँ, हल चलाने का इल्म इनके यहाँ, गाने-बजाने का इल्म इनके यहाँ। कल जो बारहदरी की तरफ़ से हो कर गुजरा तो देखा, बहुत से आदमी जमा हैं। इतने में अँगरेजी बाजा बजने लगा तो हुजूर, जो गोरे बाजा बजाते थे, उनके सामने एक एक किताब खुली हुई थी। मगर बस, पोंतू, पोंतू, ! इसके सिवा कोई बोल ही सुनने में नहीं आया।

मिरज़ा—हुजूर के सवाल का जवाब तो दो! हुजूर पूछते हैं कि जानवरों को बस में क्योंकर लाये!

नत्थू—कहा न कि इनके यहाँ हर बात का इल्म है। इल्म के जोर से देखा होगा कि कौन जानवर किस पर आशिक है। बस, वही चीज मुहैया कर ली।

नवाब—तसल्ली नहीं हुई। कोई खास वजह जरूर है।

नत्थू—हुजूर, हिंदोस्तान का नट भी वह काम करता है जो किसी और से न हो सके। बाँस गाड़ दिया, ऊपर चढ़ गया और अँगूठे के जोर से खड़ा हो गया।

मिरजा—हुजूर गुलाम ने पता लगा लिया। जो कभी झूठ निकले तो नाक कटवा डालूँ। बस, हम समझ गये। हुजूर आज तक कोई बड़े से बड़ा पहलवान भी शेर से नहीं लड़ सका। मगर इस जवान की हिम्मत को देखिए कि अकेला तीन-तीन शेरों से लड़ता रहा। यह आदमी का काम नहीं है, और अगर है तो कोई आदमी कर दिखाये! हुजूर के सिर की कसम, यह जादू का खेल है। वल्लाह, जो इसमें फ़र्क हो तो नाक कटवा डालूँ।

नवाब—सुभान-अल्लाह, बस यही बात है।

नत्थू—हाँ, यह माना। यहाँ पर हम भी कायल हो गये। इंसाफ़ शर्त है।

नवाब—और नहीं तो क्या, जरा सा आदमी, और आधे दर्जन शेरों से कुश्ती लड़े! ऐसा हो सकता है भला! शेर लाख कमजोर हो जाय, फिर शेर है। ये सब जादू के जोर से शेर, रीछ और सब जानवर दिखा देते हैं। असल में शेर-वेर कुछ भी नहीं हैं। सब जादू ही जादू है।

नत्थू—हुजूर हर तरह से रुपया खींचते हैं। हुजूर के सिर की कसम। हिंदोस्तानी इससे अच्छे शेर बना कर दिखा दें। क्या यहाँ जादूगरी है या नहीं? मगर क़दर तो कोई करता ही नहीं। हुजूर जरा गौर करते तो मालूम हो जाता कि शेर लड़ते तो थे, मगर पुतलियाँ नहीं फिरती थीं। बस, यहीं मालूम हो गया कि जादू का खेल है।

जब्बरखाँ—वल्लाह, मैं भी यही कहनेवाला था। मियाँ नत्थू मेरे मुँह से बात छीन ले गये।

नत्थू—भला शेरों को देख कर किसी को डर लगता था ? ईमान से कहिएगा।

जबरखाँ—मगर जब जादू का खेल है तो शेर से लड़ने में कमाल ही क्या है ?

नवाब—और सुनिए, इनके नजदीक कुछ कमाल ही नहीं ! आप तो वैसे शेर बना दीजिए ! क्या दिल्लगीबाजी है ? कहने लगे, इसमें कमाल ही क्या है ।

मिरजा—हुजूर यह ऐसे ही बेपर की उड़ाया करते हैं ।

नत्थू—जादू के शेरों से न लड़े तो क्या सचमुच के शेरों से लडे ? वाह री आपकी अक़्ल !

नवाब—कहिए तो उससे, जो समझदार हो । बेसमझ से कहना फ़ज़ूल है ।

नत्थू—हुजूर, कमाल यह है कि हजारों आदमी यहाँ बैठे हैं, मगर एक की समझ में न आया कि क्या बात है ।

नवाब—समझे तो हमीं समझे !

मिरजा—हुजूर की क्या बात है । वल्लाह, खूब समझे !

इतने में एक खिलाड़ी ने एक रीछ को अपने ऊपर लादा और दूसरे की पीठ पर एक पाँव से सवार हो कर उसे दौड़ाने लगा । लोग दंग हो गये । सुरैया बेगम ने उस आदमी को पचास रुपये इनाम दिये ।

वकील साहब ने यह कैफियत देखी तो सुरैया बेगम का पता लगाने के लिए बेक-रार हो गये । सलारबख्श से कहा—भैया सलारू; इस बेगम का पता लगाओ । कोई बड़ी अमीर-कबीर मालूम होती है ।

सलारबख्श—हमें तो यह अफसोस है कि तुम भालू क्यों न हुए । बस, तुम इसी लायक हो कि रस्सों से जकड़ कर दौड़ाये ।

वकील—अच्छा बचा, क्या घर न चलोगे ?

सलारबख्श—चलेंगे क्यों नहीं, क्या तुम्हारा कुछ डर पड़ा है ?

वकील—मालिक से ऐसी बातें करता है ? मगर यार, सुरैया बेगम का पता लगाओ ।

मियाँ आजाद नवाब और वकील दोनों की बातें सुन-सुन कर दिल ही दिल में हँस रहे थे । इतने में नवाब साहब ने आजाद से पूछा—क्यों जनाब, यह सब नजर-बंदी है या कुछ और ?

आजाद—हज़रत, यह सब तिलस्मात का खेल है । अक्ल काम नहीं करती ।

नवाब—सुना है, पाँच कोस के उधर का आदमी अगर आये तो उस पर जादू का खाक असर न हो ।

आज़ाद—मगर इनका जादू बड़ा कड़ा जादू है । दस मंजिल का आदमी भी आये तो चकमा खा जाये ।

नवाब—आपके नज़दीक वह कौन अँगरेज बैठा था ?

आज़ाद—जनाब, अँगरेज और हिंदोस्तानी कहीं नहीं हैं । सब जादू का खेल है ।

नवाब—इनसे जादू सीखना चाहिए।

आजाद—जरूर सीखिए। हज़ार काम छोड कर।

जब तमाशा खत्म हो गया तो सुरैया बेगम ने आजाद को बहुत तलाश कराया, मगर कहीं उनका पता न चला। वह पहले ही एक अँगरेज के साथ चल दिये थे। बेगम ने दारोग़ा जी को खूब डाँटा और कहा—अगर तुम उन्हें न लाओगे तो तुम्हारी खाल खिंचवा कर उसमें भुस भरूँगी।

सुरैया बेगम मियाँ आजाद की जुदाई मे बहुत देर तक रोया कीं, कभी दारोगा पर झल्लायी, कभी अब्बासी पर बिगड़ीं, फिर सोचतीं कि अलारक्खी के नाम से नाहक बुलवाया, बड़ी भूल हो गयी; कभी खयाल करतीं की वादे के सच्चे हैं, कल शाम को जरूर आयेंगे, हजार काम छोड़के आयेंगे। रात भीग गयी थी, महरियाँ सो रही थीं, महलदार ऊँघता था, शहर-भर में सन्नाटा था; मगर सुरैया बेगम की नींद मियाँ आजाद ने हराम कर दी थी—

भरे आते हैं आँसू आँख मे ऐ यार क्या बाइस,
निकलते हैं सदफ से गौहरे शहवार क्या बाइस !

सारी रात परेशानी मे गुजरी, दिल बेकरार था, किसी पहलू चैन नहीं आता था, सोचतीं कि अगर मियाँ आजाद वादे पर न आये तो कहाँ ढूँढ़ूँगी, बूढ़े दारोगा पर दिल ही दिल में झल्लाती थीं कि पता तक नहीं पूछा। मगर आजाद तो पक्का वादा कर गये थे, लौट कर जरूर मिलेंगे, फिर ऐसे बेदर्द कैसे हो गये कि हमारा नाम भी सुना और परवा न की। यह सोचते-सोचते उन्होंने यह गजल गानी शुरू की—

न दिल को चैन मर कर भी हवाए यार में आये;
तड़प कर खुल्द से फिर कूचए दिलदार में आये।
अजब राहत मिली, कुछ दोन-दुनिया की नहीं परवा;
जुनूँ के साया में पहुँचे बड़ी सरकार में आये।
एवज जब एक दिल के लाख दिल हों मेरे पहलू में:
तड़पने का मजा तब फ़ुरकते दिलदार मे आये।
नहीं परवा, हमारा सिर जो कट जाये तो कट जाये,
थके बाजू न कातिल का न बल तलवार मे आये।
दमे आखिर वह पोछे अश्क 'सफदर' अपने दामन से;
इलाही रहम इतना तो मिजाजे यार में आये।

सुरैया बेगम को सारी रात जागते गुजरी। सबेरे दारोगा ने आ कर सलाम किया

बेगम—आज का इक़रार है न ?

दारोगा—हाँ हुजूर, खुदा मुझे सुर्खरू करे। अलारक्खी का नाम सुन कर तो व बेखुद हो गये। क्या अर्ज करूँ हुजूर !

बेगम—अभी जाइए और चारों तरफ़ तलाश कीजिए।

दारोगा—हुजूर, जरा सवेरा तो हो ले, दो-चार आदमियों से मिलूँ, पूछूँ-बूझूँ, तब तो मतलब निकले। यों उटक्करलैस किस मुहल्ले में जाऊँ और किससे पूछूँ !

अब्बासी—हुजूर, मुझे हुक्म हो तो मैं भी तलाश करूँ। मगर भारी सा जोड़ा लूँगी।

बेगम—ओहो ! अल्लाह जानता है, सिर से पाँव तक जेवर से लदी होगी।

बी अब्बासी बन-ठन कर चलीं और उधर दारोगा जी मियाने पर लद कर रवाना हुए। अब्बासी तो खुश-खुश जाती थी और यह मुँह बनाये सोच रहे थे कि जाऊँ तो कहाँ जाऊँ ? अब्बासी लहँगा फड़काती हुई चली जाती थी कि राह में एक नवाब साहब की एक महरी मिली। दोनों मे घुल-घुल कर बातें होने लगीं।

अब्बासी—कहो बहन, खुश तो हो ?

बन्नू—हाँ बहन, अल्लाह का फ़ज़ल है। कहाँ चलीं ?

अब्बासी—कुछ न पूछो बहन, एक साहब का पता पूछती फिरती हूँ।

बन्नू—कौन हैं, मैं भी सुनूँ।

अब्बासी—यह तो नहीं जानती, पर नाम है मियाँ आजाद। खासे घबरू जवान हैं।

बन्नू—अरे, उन्हें मैं खूब जानती हूँ। इसी शहर के रहनेवाले हैं। मगर हैं बड़े नटखट, सामने ही तो रहते हैं। कहीं रीझी तो नहीं हो ? है तो जवान ऐसा ही।

अब्बासी—ऐ, हटो भी ! यह दिल्लगी हमें नहीं भाती।

बन्नू—लो, यह मकान आ गया। बस, इसी में रहते हैं ! जोड़ न जाँता, अल्लाह मियाँ से नाता।

बन्नू तो अपनी राह गयी, अब्बासी एक गली मे हो कर एक बुढ़िया के मकान पर पहुँची। बुढ़िया ने पूछा—अब किस सरकार में हो बी !

अब्बासी—सुरैया बेगम के यहाँ।

बुढ़िया—और उनके मियाँ का क्या नाम है ?

अब्बासी—जो तजवीज करो।

बुढ़िया—तो क्वाँरी हैं या बेवा। कोई जान-पहचान मुलाकाती है या कोई नहीं है ?

अब्बासी—एक बूढी सी औरत कभी-कभी आया करती हैं। और तो हमने किसी को आते-जाते नहीं देखा।

बुढ़िया—कोई देवजाद भी आता-जाता है ?

अब्बासी—क्या मजाल ! चिड़िया तक तो पर नहीं मार सकती ? इतने दिनों मे सिर्फ कल तमाशा देखने गयी थीं।

बुढिया—ऐ लो, और सुनो ! तमाशा देखने जाती है और फिर कहती हो कि ऐसी-वैसी नहीं हैं ! अच्छा, हम टोह लगा लेंगी।

अब्बासी—उन्होंने तो कसम खायी है कि शादी ही न करूँगी, और अगर करूँगी भी तो एक खूबसूरत जवान के साथ जो आपका पड़ोसी है। मियाँ आजाद नाम है।

बुढ़िया—अरे, यह कितनी बडी बात है ! गो मै वहाँ बहुत कम आती-जाती हूँ, पर वह मुझे खूब जानते हैं। बिल्कुल घर का सा वास्ता है। तुम बैठो, मैं अभी आदमी भेजती हूँ।

यह कह कर बुढ़िया ने एक औरत को बुला कर कहा—छोटे मिरजा के पास जाओ और कहो कि आपको बुलाती हैं। या तो हमको बुलाइए या खुद आइए।

इस औरत का नाम मुबारक कदम था। उसने जा कर मिरजा आजाद को बुढ़िया का पैग़ाम सुनाया—हुजूर, वह खबर सुनाऊँ कि आप भी फड़क जायँ। मगर इनाम देने का वादा कीजिए।

आजाद—आजाद नहीं, अगर मालामाल न कर दें।

मुबारक—उछल पड़िएगा।

आजाद—क्या कोई रकम मिलनेवाली है?

मुबारक—अजी, वह रकम मिले कि नवाब हो जाओ। एक बेगम साहबा ने पैग़ाम भेजा है। बस, आप मेरी बुढ़िया के मकान तक चले चलिए।

आज़ाद—उनको यहीं न बुला लाओ।

मुबारक—मै बैठी हूँ, आप बुलवा लीजिए।

थोड़ी देर में बुढिया एक डोली पर सवार आ पहुँची और बोली—क्या इरादे हैं? कब चलिएगा?

आजाद—पहले कुछ बातें तो बताओ। हसीन है न?

बुढिया—अजी, हुस्न तो वह है कि चाँद भी मात हो जाय, और दौलत का तो कोई ठिकाना नहीं; तो कब चलने का इरादा है?

आजाद—पहले खूब पक्का-पोढ़ा कर लो, तो मुझे ले चलो। ऐसा न हो कि वहाँ चल कर झेंपना पड़े।

६५

हमारे मियाँ आजाद और इस मिरजा आजाद में नाम के सिवा और कोई बात नहीं मिलती थी। वह जितने ही दिलेर, ईमानदार, सच्चे आदमी थे, उतने ही यह फरेबी, जालिये और बदनियत थे। बहुत मालदार तो थे नहीं; मगर सवा सौ रुपये वसीके के मिलते थे। अकेला दम, न कोई अजीज, न रिश्तेदार; पल्ले सिरे के बदमाश, चोरों के पीर, उठाईगीरों के लँगोटिये यार, डाकुओं के दोस्त, गिरहकटों के साथी। किसी की जान लेना इनके बायें हाथ का करतब था। जिससे दोस्ती की, उसी की गरदन काटी। अमीर से मिल-जुल कर रहना और उसकी घुड़की-झिड़की सहना, इनका खास पेशा था। लेकिन जिसके यहाँ दखल पाया, उसको या तो लँगोटी बँधवा दी या कुछ ले-दे के अलग हुए। शहर के महाजन और साहूकार इनसे थरथर काँपते रहते। जिस महाजन से जो माँगा, उसने हाजिर किया और जो इनकार किया तो दूसरे रोज चोरी हो गयी। इनके मिजाज की अजब कैफियत थी। बच्चों में बच्चे, बूढ़ों में बूढ़े, जवानों में जवान। कोई बात ऐसी नहीं जिसका उन्हें तजर्बा न हो। एक साल तक फौज में भी नौकरी की थी। वहाँ आपने एक दिन यह दिल्लगी की कि रिसाले के बीस घोड़ों की अगाड़ी-पिछाड़ी खोल डाली। घोड़े हिनहिना कर लड़ने लगे। सब लोग पड़े सो रहे थे। घोड़े जो खुले, तो सब के सब चौंक पड़े। एक बोला—लेना-लेना! चोर-चोर! पकड़ लेना, जाने न पाये। बड़ी मुश्किल से चंद घोड़े पकड़े गये। कुछ जखमी हुए, कुछ भाग गये। अब तहकीकात शुरू हुई। मिरजा आजाद भी सबके साथ हमदर्दी करते थे और उस बदमाश पर बिगड़ रहे थे जिसने घोड़े छोड़े थे। अफसर से बोले—यह शैतान का काम है, खुदा की कसम।

अफसर—उसकी गोशमाली की जायगी।

आजाद—वह इसी लायक है। मिल जाय तो चचा ही बना कर छोड़ूँ।

खैर, एक बार एक दफ्तर में आप क्लर्क हो गये। एक दिन आपको दिल्लगी सूझी, सब अमलों के जूते उठा कर दरिया में फेंक दिये। सरिश्तेदार उठे, इधर-उधर जूता ढूँढ़ते हैं, कहीं पता ही नहीं। नाजिर उठे, जूता नदारद। पेशकार को साहब ने बुलाया, देखते हैं तो जूता गायब।

पेशकार—अरे भाई, कोई साहब जूता ही उड़ा ले गये।

चपरासी—हुजूर, मेरा जूता पहन लें।

पेशकार—वाह, अच्छा लाला विशुनदयाल, जरा अपना बूट तो उतार दो।

लाला विशुनदयाल पटवारी थे। इनका लक्कड़तोड़ जूता पहन कर पेशकार साहब बड़े साहब के इजलास पर गये।

साहब—वेल-वेल पेशकार, आज बड़ा अमीर हो गया। बहुत-बड़ा कीमती बूट पहना है।

पेशकार—हुजूर, कोई साहब जूता उड़ा ले गये। दफ़्तर में किसी का जूता नहीं बचा।

बड़े साहब तो मुस्करा कर चुप हो गये; मगर छोटे साहब बड़े दिल्लगीबाज़ आदमी थे। इजलास से उठ कर दफ्तर मे गये तो देखते हैं कि कहकहे पर कहकहा पड़ रहा है। सब लोग अपने-अपने जूते तलाश रहे हैं। छोटे साहब ने कहा—हम उस आदमी को इनाम देना चाहते हैं जिसने यह काम किया। जिस दिन हमारा जूता गायब कर दे, हम उसको इनाम दें।

आजाद—और अगर हमारा जूता ग़ायब कर दे तो हम पूरे महीने की तनख्वाह दे दें।

एक बार मिरजा आज़ाद एक हिंदू के यहाँ गये। वह इस वक़्त रोटी पका रहे थे। आपने चुपके से जूता उतारा और रसोई में जा बैठे, ठाकुर ने डाँट कर कहा—ऐं, यह क्या शरारत!

आज़ाद—कुछ नहीं, हमने कहा, देखें, किस तदबीर से रोटी पकाते हो।

ठाकुर—रसोई जूठी कर दी!

आजाद—भई, बड़ा अफसोस हुआ। हम यह क्या जानते थे। अब यह खाना बेकार जायगा?

ठाकुर—नहीं जी, कोई मुसल्मान खा लेगा।

आज़ाद—तो हमसे बढ़ कर और कौन है?

आजाद बिस्मिल्लाह कह कर थाली में हाथ डालने को थे कि ठाकुर ने ललकारा—हैं-हैं, रसोई तो जूठी कर चुके, अब क्या बरतनों पर भी दाँत है?

खैर, आजाद ने पचों में खाना खाया और दुआ दी कि ख़ुदा करे, ऐसा एक उल्लू रोज़ फँस जाये।

डोम-धारी, तबल्यि, गवैये, कलावंत, कथक, कोई ऐसा न था जिससे मिरजा आजाद से मुलाकात न हो। एक बार एक बीनकार को दो सौ रुपये इनाम दिये। तब से उस गिरोह मे इनकी धाक बैठ गयी थी। एक बार आप पुलीस के इंस्पेक्टर के साथ जाते थे। दोनों घोड़ों पर सवार थे। आजाद का घोड़ा टर्रा था और इनसे बिना मजाक के रहा न जाये। चुपके से उतर पडे। घोड़ा हिनहिनाता हुआ इस्पेक्टर साहब के घोडे की तरफ चला? उन्होंने लाख सँभाला, लेकिन गिर ही पडे। पीठ मे बड़ी चोट आयी।

अब सुनिए, बुढ़िया और अब्बासी जब बेगम साहब के यहाँ पहुँचीं तो बेगम का कलेजा धड़कने लगा। फौरन कमरे के अंदर चली गयीं। बुढिया ने आ कर पूछा—हुजूर, कहाँ तशरीफ रखती हैं?

बेगम—अब्बासी, कहो क्या खबरें हैं?

अब्बासी—हुज़ूर के अकबाल से सब मामला चौकस है।

बेगम—आते हैं या नहीं? बस, इतना बता दो।

अब्बासी—हुज़ूर, आज तो उनके यहाँ एक मेहमान आ गये। मगर कल ज़रूर आयेंगे।

इतने में एक महरी ने आ कर कहा—दारोग़ा साहब आये हैं।

बेगम—आ गये! जीते आये, बड़ी बात!

दारोग़ा—हाँ हुज़ूर, आपकी दुआ से जीता आया। नहीं तो बचने की तो कोई सूरत ही न थी।

बेगम—ख़ैर, यह बतलाओ, कहीं पता लगा?

दारोग़ा—हुज़ूर के नमक की कसम कि शहर का कोई मुकाम न छोड़ा।

बेगम—और कहीं पता न चला? है न!

दारोग़ा—कोई कूचा, कोई गली ऐसी नहीं जहाँ तलाश न की हो।

बेगम—अच्छा, नतीजा क्या हुआ? मिले या न मिले?

दारोग़ा—हुज़ूर, सुना कि रेल पर सवार हो कर कहीं बाहर जाते हैं। फौरन गाड़ी किराये की और स्टेशन पर जा पहुँचा, मियाँ आज़ाद से चार आँखें हुई कि इतने में सीटी कूकी और रेल खड़खड़ाती हुई चली। मैं लपका कि दो-दो बातें कर लूँ, मगर अँगरेज ने हाथ पकड़ लिया।

बेगम—यह सब सच कहते हो न?

दारोग़ा—झूठ कोई और बोला करते होंगे।

बेगम—सुबह से तो कुछ खाया न होगा!

दारोग़ा—अगर एक घूँट पानी के सिवा कुछ और खाया हो तो कसम ले लीजिए।

अब्बासी—हुज़ूर, हम एक बात बतायें तो इनकी शेख़ी अभी-अभी निकल जाये। कहारों को यहीं बुला कर पूछना शुरू कीजिए!

बेगम साहब को यह सलाह पसंद आयी। एक कहार को बुला कर तहकीकात करने लगीं।

अब्बासी—क्या, झूठ बोले तो निकाल दिये जाओगे।

कहार—हुज़ूर, हमें जो सिखाया है, वह कह देते हैं।

अब्बासी—क्या कुछ सिखाया भी है?

कहार—सुबह से अब तक सिखाया ही किये या कुछ और किया? यहाँ से अपनी ससुराल गये। वहाँ किसी ने खाने को भी न पूछा तो वहाँ से एक मजलिस मे गये। हिस्से लिये और चख कर बोले—कहीं ऐसी जगह चलो जहाँ किसी की निगाह न पड़े। हम लोगों ने नाके से बाहर एक तकिये में मियाना उतारा। दारोग़ा जी ने वहाँ नानबाई की दूकान से सालन और रोटी मँगा कर खायी। हम लोगों को चबैने के लिए पैसे दिये। दिन भर सोया किये। शाम को हुक्म दिया, चलो।

अब्बासी—दारोग़ा साहब, सलाम ! अजी, इधर देखिए दारोग़ा साहब !

बेगम—क्यों साहब, यह झूठ ! रेल पर गये थे ? बोलिए !

दारोग़ा—हुजूर, यह नमकहराम है, क्या अर्ज़ करूँ !

दारोग़ा का बस चलता तो कहार को जीता चुनवा देते, मगर बेबस थे। बेगम ने कहा—बस, जाओ। तुम किसी मसरफ़ के नहीं हो !

रात को अब्बासी बेगम साहब से मीठी-मीठी बातें कर रही थीं कि गाने की आवाज आयी। बेगम ने पूछा—कौन गाता है ?

अब्बासी—हुजूर, मुझे मालूम है। यह एक वकील हैं। सामने मकान है। वकील को तो नहीं जानती, मगर उनके यहाँ एक आदमी नौकर है, उसको खूब जानती हूँ। सलारबख्श नाम है। एक दिन वकील साहब इधर से जाते थे। मैं दरवाजे पर खड़ी थी। कहने लगे—महरी साहब, सलाम ! कहो, तुम्हारी बेगम साहब का नाम क्या है ? मैंने कहा, आप अपना मतलब कहिए, तो कहने लगे—कुछ नहीं, यों ही पूछता था।

बेगम—ऐसे आदमियों को मुँह न लगाया करो।

अब्बासी—मुख़तार हैं हुजूर, महताबी से मकान दिखायी देता है।

बेगम—चलो देखें तो, मगर वह तो न देख लेंगे ! जाने भी दो।

अब्बासी—नहीं हुजूर, उनको क्या मालूम होगा। चुपके से चल कर देख लीजिए। बेगम साहब महताबी पर गयीं तो देखा कि वकील साहब पलँग पर फैले हुए हैं और सलारू हुक्का भर रहा है। नीचे आयीं तो अब्बासी बोली—हुजूर, वह सलार-बख्श कहता था कि किसी पर मरते हैं।

बेगम—वह कौन थी ? जरा नाम तो पूछना।

अब्बासी—नाम तो बताया था, मगर मुझे याद नहीं है। देखिए, शायद जेहन में आ जाय। आप दस-पाँच नाम तो लें।

बेगम—नजीरबेगम, जाफ़रीबेगम, हुसेनीखानम, शिब्बोखानम !

अब्बासी—(उछल कर) जी हाँ, यही, यही; मगर शिब्बोखानम नहीं, शिब्बो-जान बताया था।

सुरैया बेगम ने सोचा इस पगले का पड़ोस अच्छा नहीं, जुल देके चली आयी हूँ, ऐसा न हो, ताक-झाँक करे। दरवाजे तक आ ही चुका, अब्बासी और सलारू मे बातचीत भी हुई; अब फ़कत इतना मालूम होना बाकी है कि यही शिब्बोजान हैं। कहीं हमारे आदमियों पर यह भेद खुल जाय तो ग़जब ही हो जाय। किसी तरह मकान बदल देना चाहिए। रात को तो इसी खयाल में सो रहीं। सुबह को फिर वही धुन समायी कि आजाद आयें और अपनी प्यारी-प्यारी सूरत दिखायें। वह अपना हाल कहें, हम अपनी बीती सुनायें। मगर आजाद अब की मेरा यह ठाट देखेंगे तो क्या ख़याल करेंगे। कहीं यह न समझें कि दौलत पा कर मुझे भूल गयी। अब्बासी को बुला कर पूछा—तो आज कब जाओगी ?

अब्बासी—हुजूर, बस कोई दो घड़ी दिन रहे जाऊँगी और बात की बात में साथ ले कर आ जाऊँगी।

उधर मिरजा आजाद बन-ठन कर जाने ही को थे कि एक शाह साहब खट-पट करते हुए कोठे पर आ पहुँचे। आजाद ने झुक कर सलाम किया और बोले—आप खूब आये। बतलाइए, हम जिस काम को जाना चाहते हैं वह पूरा होगा या नहीं?

शाह—लगन चाहिए। धुन हो तो ऐसा कोई काम नहीं जो पूरा न हो।

आजाद—गुस्ताखी माफ कीजिए तो एक बात पूछूँ, मगर बुरा न मानिएगा।

शाह—गुस्ताखी कैसी, जो कुछ कहना हो शौक से कहो।

आजाद—उस पगली औरत से आपको क्यों मुहब्बत है?

शाह—उसे पगली न कहो, मैं उसकी सूरत पर नहीं, उसकी सीरत पर मरता हूँ। मैंने बहुत से औलिया देखे, पर ऐसी औरत मेरी नजर से आज तक नहीं गुजरी। अलारक्खी सचमुच जन्नत की परी है। उसकी याद कभी न भूलेगी। उसका एक आशिक आप ही के नाम का था।

इन्हीं बातों में शाम हो गयी, आसमान पर काली घटाएँ छा गयीं और जोर से मेंह बरसने लगा। आज़ाद ने जाना मुलतवी कर दिया। सुबह को आप एक दोस्त की मुलाकात को गये। वहाँ देखा कि कई आदमी मिल कर एक आदमी को बना रहे हैं और तालियाँ बजा रहे हैं। वह दुबला पतला, मरा-पिटा आदमी था। इनको क़रीने से मालूम हो गया कि वह चंडूबाज है। बोले—क्यों भाई चंडूबाज, कभी नौकरी भी की है?

चंडूबाज—अजी हजरत, उम्र भर डंड पेले और जोड़ियाँ हिलायीं। शाही में अब्बाजान की बदौलत हाथी-नशीन थे। अभी पारसाल तक हम भी घोड़े पर सवार हो कर निकलते थे। मगर जुए की लत थी, टके-टके को मुहताज हो गये। आखिर, सराय में एक भठियारी अलारक्खी के यहाँ नौकरी कर ली।

आजाद—किसके यहाँ?

चंडूबाज—अलारक्खी नाम था। ऐसी खूबसूरत कि मैं क्या अर्ज करूँ।

आजाद—हाँ, रात को भी एक आदमी ने तारीफ की थी।

चंडूबाज—तारीफ कैसी! तसवीर ही न दिखा दूँ!

यह कह कर चंडूबाज ने अलारक्खी की तसवीर निकाली।

आजाद—ओ हो-हो!

> अजब है खींची मुसव्विर ने किस तरह तसवीर;
> कि शोखियों से वह एक रंग पर रहे क्योंकर!

चंडूबाज—क्यों, है परी या नहीं?

आजाद—परी, परी, असली परी!

चंडूबाज—इसी सराय में मियाँ आजाद नाम के एक शरीफ टिके थे। उन पर आशिक हो गयीं। बस, कुछ आप ही की सी सूरत थी।

आज़ाद—अब यह बताओ कि वह आजकल कहाँ है ?

चंडूबाज—यह तो नहीं जानते, मगर यहीं कहीं हैं। सराय से तो भाग गयी थीं।

आज़ाद ने ताड़ लिया कि अलारक्खी और सुरैया बेगम में कुछ न कुछ भेद जरूर है। चंडूबाज़ को अपने घर लाये और खूब चंडू पिलाया। जब दो-तीन छींटें पी चुके तो आजाद ने कहा—अब अलारक्खी का मुफस्सल हाल बताओ।

चंडूबाज—अलारक्खी की सूरत तो आप देख ही चुके, अब उनकी सीरत का हाल सुनिए। शोख, चुलबुली, चंचल, आगभभूका, तीखी चितवन, मगर हँसमुख। मियाँ आजाद पर रीझ गयीं। अब आजाद ने वादा किया कि निकाह पढ़वायेंगे, मगर कौल हार कर निकल गये। इन्होंने नालिश कर दी, पकड़ आये, मगर फिर भाग गये। इसके बाद एक बेगम हुस्नआरा थीं, उस पर रीझे। उन्होंने कहा—रूम की लड़ाई में नाम पैदा करके आओ तो हम निकाह पर राजी हों। बस, रूम की राह ली। चलते वक्त उनकी अलारक्खी से मुलाकात हुई तो उनसे कहा—हुस्नआरा तुम्हें मुबारक हो, मगर हमको न भूल जाना। आजाद ने कहा—हरगिज़ नहीं।

आजाद—हुस्नआरा कहाँ रहती हैं ?

चंडूबाज़—यह हमें नहीं मालूम।

आजाद—अलारक्खी को देखो तो पहचान लो या न पहचानो ?

चंडूबाज़—फौरन पहचान लें। न पहचानना कैसा ?

मियाँ चंडूबाज तो पीनक लेने लगे। इधर अब्बासी मिरजा आजाद के पास आयी और कहा—अगर चलना है तो चले चलिए, वरना फिर आने जाने का जिक्र न कीजिएगा। आपके टालमटोल से वह बहुत चिढ़ गयी हैं। कहती हैं, आना हो तो आयें और न आना हो तो न आयें। यह टालमटोल क्यों करते हैं ?

आजाद ने कहा—मैं तैयार बैठा हूँ। चलिए।

यह कह कर आज़ाद ने गाड़ी मँगवायी और अब्बासी के साथ अंदर बैठे। चंडूबाज कोचबक्स पर बैठे। गाड़ी रवाना हुई। सुरैया बेगम के महल पर गाड़ी पहुँची तो अब्बासी ने अंदर जा कर कहा—मुबारक, हुजूर आ गये।

बेगम—शुक्र है।

अब्बासी—अब हुजूर चिक की आड़ बैठ जायँ।

बेगम—अच्छा, बुलाओ।

आजाद बरामदे में चिक के पास बैठे। अब्बासी ने कमरे के बाहर आ कर कहा—बेगम साहब फ़रमाती हैं कि हमारे सिर में दर्द है, आप तशरीफ़ ले जाइए।

आजाद—बेगम साहब से कह दीजिए कि मेरे पास सिर के दर्द का एक नायाब नुसखा है।

अब्बासी—वह फ़रमाती हैं कि ऐसे-ऐसे मदारी हमने बहुत चंगे किये हैं।

आजाद—और अपने सिर के दर्द का इलाज नहीं कर सकता ?

बेगम—आपकी बातों से सिर का दर्द और बढ़ता है। खुदा के लिए आप मुझे इस वक्त आराम करने दीजिए।

आजाद—हम ऐसे हो गये अल्लाह अकबर ऐ तेरी कुदरत ;

हमारा नाम सुन कर हाथ वह कानों प' धरते हैं।

या तो वह मजे-मजे की बातें थीं; और अब यह बेवफ़ाई !

बेगम—तो यह कहिए कि आप हमारे पुराने जाननेवालों में हैं। कहिए, मिजाज तो अच्छे हैं ?

आजाद—दूर से मिजाजपुर्सी भली मालूम नहीं होती।

बेगम—आप तो पहेलियाँ बुझवाते है। ऐ अब्बासी, यह किस अजनबी को सामने ला कर बिठा दिया ? वाह-वाह !

अब्बासी—(मुस्करा कर) हुजूर जबरदस्ती घुँस पड़े।

बेगम—मुहल्लेवालों को इत्तिला दो।

आजाद—थाने पर रपट लिखवा दो और मुश्कें बँधवा दो।

यह कह कर आजाद ने अलारक्खी की तसवीर अब्बासी को दी और कहा—इसे हमारी तरफ़ से पेश कर दो। अब्बासी ने जा कर बेगम साहब को वह तसवीर दी। बेगम साहब तसवीर देखते ही दंग हो गयीं। ऐं, इन्हें यह तसवीर कहाँ मिली ? शायद यह तसवीर छिपा कर ले गये थे। पूछा—इस तसवीर की क्या कीमत है ?

आज़ाद—यह बिकाऊ नहीं है।

बेगम—तो फिर दिखाथी क्यों ?

आजाद—इसकी कीमत देनेवाला कोई नजर नहीं आता।

बेगम—कुछ कहिए तो, किस दाम की तसवीर है !

आजाद—हुजूर मिला लें। एक शाहजादे इस तसवीर के दो लाख रुपये देते थे।

बेगम—यह तसवीर आपको मिली कहाँ ?

आजाद—जिसकी यह तसवीर है उससे दिल मिल गया है।

बेगम—जरी मुँह धो आइए।

इस फ़िकरे पर अब्बासी कुछ चौंकी, बेगम साहब से कहा—जरा हुजूर मुझे तो दें। मगर बेगम ने संदूकचा खोल कर तसवीर रख दी।

आज़ाद—इस शहर की अच्छी रस्म है। देखने को चीज ली और हजम ! बी अब्बासी, हमारी तसवीर ला दो।

बेगम—लाखों कुदूरतें हैं, हजारों शिकायतें।

आज़ाद—किससे ?

कुदूरत उनको है मुझसे नहीं है सामना जब तक ;
इधर आँखें मिलीं उनसे उधर दिल मिल गया दिल से।

बेगम—अजी, होश की दवा करो।

आजाद—हम तो इस अक्ल के कायल हैं।

बेगम—(हँस कर) बजा।

आजाद—अब तो खिलखिला कर हँस दीं। खुदा के लिए, अब इस चिक के बाहर आओ या मुझी को अंदर बुलाओ। नकाब और घूँघट का तिलस्म तोड़ो। दिल बेक़ाबू है।

बेगम—अब्बासी, इनसे कहो कि अब हमें सोने दें। कल किसी की राह देखते-देखते रात आँखों में कट गयी।

आजाद—दिन का मौका न था, रात को मेंह बरसने लगा।

बेगम—बस, बैठे रहो।

यह अबस कहते हो, मौका न था और घात न थी;
मेंहदी पाँवों में न थी आपके, बरसात न थी।
कजअदाई के सिवा और कोई बात न थी;
दिन को आ सकते न थे आप तो क्या रात न थी?
बस, यही कहिए कि मंजूर मुलाकात न थी।

आजाद—माशूकपन नहीं अगर इतनी कजी न हो।

अब्बासी दंग थी कि या खुदा, यह क्या माजरा है। बेगम साहब तो जामे से बाहर ही हुई जातीं हैं। महरियाँ दाँतों अँगुलियाँ दबा रही थीं। इनको हुआ क्या है। दारोगा साहब कटे जाते थे, मगर चुप।

बेगम—कोई भी दुनिया में किसी का हुआ है? सबको देख लिया। तड़पा तड़पा कर मार डाला। खैर, हमारा भी खुदा है।

आजाद—पिछली बातों को अब भूल जाइए।

बेगम—बेमुरौवतों को किसी के दर्द का हाल क्या मालूम? नहीं तो क्या वादा करके मुकर जाते!

आज़ाद—नालिश भी तो दाग़ दी आपने!

बेगम—इन्तज़ार करते-करते नाक मे दम आ गया।

राह उनकी तकते-तकते यह मुद्दत गुजर गयी;
आँखों को हौसला न रहा इन्तजार का।

आजाद, बस दिल ही जानता है। ठान ली थी कि जिस तरह मुझे जलाया है, उसी तरह तरसाऊँगी। इस वक्त कलेजा बाँसों उछल रहा है। मगर बेचैनी और भी बढ़ती जाती है! अब उधर का हाल तो कहो, गये थे!

आजाद—वहाँ का हाल न पूछो। दिल पाश-पाश हुआ जाता है।

सुरैया बेगम ने समझा कि अब पाला हमारे हाथ रहा। कहा—आखिर, कुछ तो कहो। माजरा क्या है?

आजाद—अजी, औरत की बात का एतबार क्या!

बेगम—वाह, सबको शामिल न करो। पाँचों अँगुलियाँ बराबर नहीं होतीं। अब यह बतलाइए कि हमसे जो वादे किये थे, वे याद हैं या भूल गये?

इकरार जो किये थे कभी हमसे आपने ;
कहिए, वे याद हैं कि फ़रामोश हो गये ?

आजाद—याद हैं। न याद होना क्या माने ?

बेगम—आपके वास्ते हुक्का भर लाओ।

आजाद—हुक्म हो तो अपने खिदमतगार से हुक्का मँगवा लूँ। अब्बासी, जरा उनसे कहो, हुक्का भर लायें।

अब्बासी ने आ कर चंडूबाज़ से हुक्का भरने को कहा। चंडूबाज हुक्का ले कर ऊपर गये तो अलारक्खी को देखते ही बोले—कहिए अलारक्खी साहब, मिजाज तो अच्छे हैं ?

सुरैया बेगम धक से रह गयीं। वह तो कहिए, खैर गुजरी कि अब्बासी वहाँ पर न थी। वरना बड़ी किरकिरी होती। चुपके से चंडूबाज को बुला कर कहा—यहाँ हमारा नाम सुरैया बेगम है। खुदा के वास्ते हमें अलारक्खी न कहना। यह तो बताओ, तुम इनके साथ कैसे हो लिये। तुमसे इनसे तो दुश्मनी थी ? चलते वक्त कोड़ा मारा था।

चंडूबाज—इसके बारे में फिर अर्ज़ करूँगा।

आजाद—क्या खुदा की शान है कि खिदमतगार को अंदर बुलाया जाय और मालिक तरसे!

बेगम—क्यों घबराते हो ? ज़रा बातें तो कर लेने दो ? उस मुए मसखरे को कहाँ छोड़ा ?

आजाद—वह लड़ाई पर मारा गया।

बेगम—ऐ है, मार डाला गया! बड़ा हँसोड़ था बेचारा!

सुरैया बेगम ने अपने हाथों से गिलौरियाँ बनायीं और अपने ही हाथ से मिरज़ा आज़ाद को खिलायीं। आजाद दिल में सोच रहे थे कि या खुदा, हमने कौन सा ऐसा सवाब का काम किया, जिसके बदले में तू हम पर इतना मिहरबान हो गया है! हालाँ कि न कभी की जान, न पहचान। यकीन हो गया कि ज़रूर हमने कोई नेक काम किया होगा। चंडूबाज़ को भी हैरत हो रही थी कि अलारक्खी ने इतनी दौलत कहाँ पायी। इधर-उधर भौचक्के हो-हो कर देखते थे, मगर सबके सामने कुछ पूछना अदब के खिलाफ समझते थे। इतने में आजाद बोले—ज़माना भी कितने रंग बदलता है।

सुरैया बेगम—हाँ, यह तो पुराना दस्तूर है। लोग इकरार कुछ करते हैं और करते कुछ हैं।

आजाद—यों नहीं कहतीं कि लोग चाहते कुछ हैं और होता कुछ और है।

सुरैया बेगम—दो-चार दिन और सब्र करो। जहाँ इतने दिनों खामोश रहे, अब चंद रोज तक और चुपके रहो।

चंडूबाज—खुदावंद, ये बातें तो हुआ ही करेंगी, अब चलिए, कल फिर आइएगा। मगर पहले बी अला...।

सुरैया बेगम—ज़रा समझ-बूझ कर !

चंडूबाज—क़ुसूर हुआ।

आज़ाद—हम समझे ही नहीं, क्या कुसूर हुआ ?

सुरैया बेगम—एक बात है। यह ख़ूब जानते हैं।

आजाद—फिर अब चलूँ ! मगर ऐसा न हो कि यह सारा जोश दो-चार दिन में ठंडा पड़ जाय। अगर ऐसा हुआ तो मैं जान दे दूँगा।

सुरैया बेगम—मैं तो यह खुद ही कहने को थी। तुम मेरी ज़बान से बात छीन ले गये।

आज़ाद—हमारी मुहब्बत का हाल खुदा ही जानता है।

सुरैया बेगम—खुदा तो सब जानता है, मगर आपकी मुहब्बत का हाल हमसे ज़्यादा और कोई नहीं जानता। या (चंडूबाज की तरफ इशारा करके) यह जानते हैं। याद है न ? अगर अब की भी वैसा ही इकरार है तो खुदा ही मालिक है।

आज़ाद—अब उन बातों का जिक्र ही न करो।

सुरैया बेगम—हमें इस हालत में देख कर तुम्हें ताज्जुब तो जरूर हुआ होगा कि इस दरजे पर यह कैसे पहुँच गयी। वह बूढा याद है जिसकी तरफ से आपने खत लिखा था ?

आज़ाद मिरजा कुछ जानते होते तो समझते, हाँ-हाँ कहते जाते थे।

आखिर इतना कहा—तुम भी तो वकील के पास गयी थीं ? और हमको पकड़वा बुलाया था ? मगर सच कहना, हम भी किस चालाकी से निकल भागे थे ?

सुरैया बेगम—और उसका आप को फ़ख्र है। शरमाओ न शरमाने दो।

आज़ाद—अजी, वह मौका ही और था।

सुरैया बेगम ने अपना सारा हाल कह सुनाया। अपना जोगिन बनना, शहसवार का आना, थानेदार के घर से भागना, फिर वकील साहब के यहाँ फँसना, ग़रज सारी बातें कह सुनायीं।

आजाद—ओफ्-ओह, बहुत मुसीबतें उठायीं !

सुरैया बेगम—अब तो यही जी चाहता है कि शुभ घड़ी निकाह हो तो सारा ग़म भूल जाय।

चंडूबाज—हम बेगम साहब की तरफ़ होंगे। आप ही ने तो कोड़ा जमाया था !

आजाद—कोड़ा अभी तक नहीं भूले ! हम तो बहुत सी बातें भूल गये।

सुरैया बेगम—अब तो रात बहुत ज़्यादा गयी, क्यों न नीचे जा कर दारोग़ा साहब के कमरे में सो रहो।

आजाद उठने ही को थे कि अज़ान की आवाज कान में आयी। बातों में तड़का हो गया। आजाद यहाँ से चले तो रास्ते में सुरैया बेगम का हाल पूछने लगे—क्यों जी, बेगम साहब हमको वही आज़ाद समझती हैं ? क्या हमारी-उनकी सूरत बिलकुल मिलती है ?

चंडूबाज—जनाब, आप उनसे बीस हैं, उन्नीस नहीं।

आजाद—तुमने कहीं कह तो नहीं दिया कि और आदमी है?

चंडूबाज—वाह-वाह, मैं कह देता तो आप वहाँ घुसने भी पाते? अब कहिए तो जा कर जड़ दूँ। बस, ऐसी ही बातों से तो आग लग जाती है?

ये बातें करते हुए आजाद घर पहुँचे और गाड़ी से उतरने ही को थे कि कई कान्स्टेबलों ने उनको घेर लिया, आजाद ने पैंतरा बदल कर कहा—ऐं, तुम लोग कौन हो?

जमादार ने आगे बढ़ कर वारंट दिखाया और कहा—आप मेरे हिरासत में हैं।

चंडूबाज दबके-दबके गाड़ी में बैठे थे। एक सिपाही ने उनको भी निकाला। आजाद ने गुस्से में आ कर दो कान्स्टेबलों को थप्पड़ मारे, तो उन सबों ने मिल कर उनकी मुश्कें कस लीं और थाने की तरफ़ ले चले। थानेदार ने आजाद को देखा तो बोले—आइए मिरजा साहब, बहुत दिनों के बाद आप नजर आये। आज आप कहाँ भूल पड़े?

आजाद—क्या मरे हुए से दिल्लगी करते हो! हवालात से बाहर निकाल दो तो मज़ा दिखाऊँ। इस वक्त जो चाहो, कह लो, मगर इजलास पर सारी कलई खोल दूँगा। जिस जिस आदमी से तुमने रिश्वत ली है, उनको पेश करूँगा, भाग कर जाओगे कहाँ?

थानेदार—रस्सी जल गयी, मगर रस्सी का बल न गया।

आजाद तो डींगें मार रहे थे और चंडूबाज को चंडू की धुन सवार थी। बोले—अरे यारो, जरी चंडू पिलवा दो भई! आखिर इतने आदमियों में कोई चंडूबाज भी है, या सब के सब रूखे ही हैं?

थानेदार—अगर आज चंडू न मिले तो क्या हो?

चंडूबाज—मर जायँ और क्या हो?

थानेदार—अच्छा देखें, कैसे मरते हो? कोई शर्त बदता है? हम कहते हैं कि अगर इसको चंडू न मिले तो यह मर जाय।

इन्स्पेक्टर—और हम कहते हैं कि यह कभी न मरेगा।

चंडूबाज—वाह री तकदीर, समझे थे, अलारक्खी के यहाँ अब चैन करेंगे, चैन तो रहा दूर, किस्मत यहाँ ले आयी।

थानेदार—अलारक्खी कौन? यह बता दो, तो चंडू मँगा दूँ।

चंडूबाज—साहब, एक औरत है जो सराय में रहती थी।

अब सुनिए, शाम के वक्त सुरैया बेगम बन-ठन कर बैठी आजाद का इंतजार कर रही थी। मगर आजाद तो हवालात में थे। वहाँ आता कौन? अब्बासी को आजाद के गिरफ्तार होने की खबर तो मिल गयी, मगर उसने सुरैया बेगम से कहा नहीं।

शाहजादा हुमायूँ फ़िर कई महीने तक नेपाल की तराई में शिकार खेल कर लौटे, तो हुस्नआरा की महरी अब्बासी को बुलवा भेजा। अब्बासी ने शाहजादा के आने की खबर सुनी तो चमकती हुई आयी। शाहजादे ने देखा तो फड़क गये। बोले—आइए, बी महरी साहबा हुस्नआरा बेगम का मिजाज तो अच्छा है?

अब्बासी—हाँ, हुजूर!

शाहजादा—और दूसरी बहन? उनका नाम तो हम भूल गये।

अब्बासी बेशक, उनका नाम तो आप जरूर ही भूल गये होंगे। कोठे पर से धूप में आईना दिखाये, घूरा-घूरी किये और लोगों से पूछे—बड़ी बहन ज़्यादा हसीन हैं या छोटी? है ताज्जुब की बात कि नहीं?

शाहजादा—हमें तो तुम हसीन मालूम होती हो।

अब्बासी—ऐ हुजूर, हम ग़रीब आदमी, भला हमें कौन पूछता है?

शाहजादा—हमारे घर पड़ जाओ।

अब्बासी—हुजूर तो मुझे शर्मिंदा करते हैं। अल्लाह जानता है, क्या मिज़ाज पाया है। यही हँसना-बोलना रह जाता है हुजूर!

शाहजादा—अब किसी तरकीब से ले चलो।

अब्बासी—हुजूर, भला मैं कैसे ले चलूँ! रईसों का घर, शरीफ़ों की बहू-बेटियों में पराये मर्द का क्या काम।

शाहजादा—कोई तरकीब सोचो, आखिर किस दिन काम आओगी?

अब्बासी—आज तो किसी तरह मुमकिन नहीं। आज एक मिस आनेवाली हैं।

शाहजादा—फिर किसी तरकीब से मुझे वहाँ पहुँचा दो। आज तो आँखें सेकने का खूब मौका है।

अब्बासी—अच्छा, एक तदबीर है। आज बाग़ ही में बैठक होगी। आप चल कर किसी दरख्त पर बैठ रहें।

शाहजादा—नहीं भाई, यह हमें पसंद नहीं। कोई देख ले तो नाहक उल्लू बनूँ। बस, तुम बाग़बान को गाँठ लो। यही एक तदबीर है।

अब्बासी ने आ कर माली को लालच दिया। कहा—अगर शाहजादा को अंदर पहुँचा दो तो दो अशर्फ़ियाँ इनाम दिलवाऊँ। माली राजी हो गया। तब अब्बासी ने आ कर शाहजादे से कहा—लीजिए हजरत, फतह है! मगर देखिए, धोती और मीरजाई पहननी पड़ेगी और मोटे कपड़े की भद्दी सी टोपी दीजिए, तब वहाँ पहुँच पाइएगा।

शाम को हुमायूँ फ़र ने माली का वेष बनाया और माली के साथ बाग़ में पहुँचे तो देखा कि बाग़ के बीचोबीच एक पक्का और ऊँचा चबूतरा है और चारों बहनें

कुर्सियों पर बैठी मिस फैरिंगटन से बातें कर रही हैं। माली ने फूलों का एक गुल-दस्ता बना कर दिया और कहा—जा कर मेज पर रख दो। हुमायूँ फ़र ने मिस साहब को झुक कर सलाम किया और एक कोने में चुपचाप खड़े हो गये।

सिपहआरा—हीरा-हीरा, यह कौन है ?

हीरा—हुजूर, गुलाम है आपका। मेरा भांजा है।

सिपहआरा—क्या नाम है ?

हीरा—लोग हुमायूँ कहते हैं हुजूर !

सिपहआरा—आदमी तो सलीकेदार मालूम होता है। अरे हुमायूँ, थोड़े फूल तोड़ ले और महरी को दे दे कि मेरे सिरहाने रख दे।

शाहजादा ने फूल तोड कर महरी को दिये और फूलों के साथ रूमाल में एक रुक्का बाँध दिया। खत का मजमून यह था—

'मेरी जान,

अब सब्र की ताकत नहीं। अगर जिलाना हो तो जिला लो, वरना कोई हिकमत काम न आयेगी !

हुमायूँ फ़र'

जब शाहजादा हुमायूँ फ़र चले गये तो सिपहआरा ने माली से कहा—अपने भांजे को नौकर रख लो।

माली—हुजूर, सरकार ही का नमक तो खाता है ! यों भी नौकर है, वों भी नौकर है।

सिपहआरा - मगर हुमायूँ तो मुसलमानों का नाम होता है।

माली—हाँ हुजूर, वह मुसलमान हो गया है।

दूसरे दिन शाम को सिपहआरा और हुस्नआरा बाग में आयीं तो देखा, चबूतरे पर शतरंज के दो नकशे खिंचे हुए हैं।

सिपहआरा—कल तक तो ये नकशे नहीं थे। अहाहा, हम समझ गये। हुमायूँ माली ने बनाये होंगे।

माली—हाँ हुजूर, उसी ने बनाया है।

सिपहआरा—बहन, जब जानें कि नकशा हल कर दो।

हुस्नआरा—बहुत टेढ़ा नक़शा है ! इसका हल करना मुश्किल है (माली से) क्यों जी, तुम्हारे भाजे को शतरंज खेलना किसने सिखाया ?

माली—हुजूर, उसको शौक है, लड़कपन से खेलता है।

हुस्नआरा—उससे पूछो, इस नकशे को हल कर देगा ?

माली—कल बुलवा दूँगा हुजूर !

सिपहआरा—इसका भांजा बड़ा मनचला मालूम होता है।

हुस्नआरा—हाँ, होगा। इस जिक्र को जाने दो।

सिपहआरा—क्यों-क्यों, बाजीजान! तुम्हारे चेहरे का रंग क्यों बदल गया?

हुस्नआरा—कल इसका जवाब दूँगी।

सिपहआरा—नहीं, आखिर बताओ तो? तुम इस वक्त खफ़ा क्यों हो?

हुस्नआरा—यह मिरजा हुमायूँ फर की शरारत है।

सिपहआरा—ओफ़ ओह! यह हथकंडे!

हुस्नआरा—(माली से) सच-सच बता; यह हुमायूँ कौन है? खबरदार जो झूठ बोला!

सिपहआरा—भाजा है तेरा?

माली—हुजूर! हुजूर!

हुस्नआरा—हुजूर हुजूर लगायी है, बताता नही। तेरा भाजा और यह नक्शे बनाये?

माली—हुजूर, मैं माली नहीं हूँ, जाति का कायस्थ हूँ, मगर घर-बार छोड़ कर बाग़बानी करने लगा। हमारा भाजा पढ़ा-लिखा हो तो कौन ताज्जुब की बात है!

हुस्नआरा—चल झूठे, सच-सच बता। नहीं अल्लाह जानता है, खड़े खड़े निकलवा दूँगी।

सिपहआरा अपने दिल मे सोचने लगी कि हुमायूँ फर ने बेतौर पीछा किया। और फिर अब तो उनको खबर पहुँच ही गयी है तो फिर मा॰ी बनने की क्या जरूरत है!

हुस्नआरा—खुदा गवाह है! सजा देने के काबिल आदमी हैं। भलमनसी के यह मानी नहीं हैं कि किसी के घर में माली या चमार बन कर घुसे। यह हीरा निकाल देने लायक है। इसको कुछ चटाया होगा, जभी फिसल पड़ा।

माली के होश उड़ गये। बोला—हुजूर मालिक हैं। बीस बरस से इस सरकार का नमक खाता हूँ; मगर कोई कुसूर गुलाम से नहीं हुआ। अब बुढ़ापे में हुजूर यह दाग़ न लगायें।

हुस्नआरा—कल अपने भाजे को जरूर लाना।

सिपहआरा—अगर कुसूर हुआ है तो सच-सच कह दे।

माली—हुजूर, झूठ बोलने की तो मेरी आदत नहीं।

दूसरे दिन शाहजादा ने माली को फिर बुलवाया और कहा—आज एक बार और दिखा दो।

माली—हुजूर, ले चलने में तो गुलाम को उज्र नहीं, मगर डरता हूँ कि कहीं बुढ़ापे मे दाग़ न लग जाय।

शाहजादा—अजी वह मौकूफ़ कर देंगी तो हम नौकर रख लेंगे।

माली—सरकार, मैं नौकरी को नहीं, इज्जत को डरता हूँ।

शाहजादा—क्या महीना पाते हो?

माली—६ रुपये मिलते हैं हुजूर!

शाहजादा—आज से ६ रुपये यहाँ से तुम्हारी जिंदगी भर मिला करेंगे। क्यों, हमारे आने के बाद औरतें कुछ कहती नहीं थीं?

माली—आपस में कुछ बातें करती थीं; मगर मैं सुन नहीं सका। तो मैं शाम को आऊँगा।

शाहज़ादा—तुम डरो नहीं, तुम्हारा नुकसान नहीं होने पायेगा।

माली तो सलाम करके रवाना हुआ और हुमायूँ फ़र दुआ माँगने लगे कि किसी तरह शाम हो। बार-बार कमरे के बाहर जाते, बार-बार घड़ी की तरफ़ देखते। सोचे, आओ जरा सो रहें। सोने में वक्त भी कट जायगा और बेकरारी भी कम हो जायेगी। लेटे, मगर बड़ी देर तक नींद न आयी। खाना खाने के बाद लेटे तो ऐसी नींद आयी कि शाम हो गयी। उधर सिपहआरा ने हीरा माली को अकेले में बुला कर डाँटना शुरू किया। हीरा ने रो कर कहा—नाहक अपने भाजे को लाया। नहीं तो यह लथाड़ क्यों सुननी पड़ती।

सिपहआरा—कुछ दीवाना हुआ है बुड्ढे! तेरा भाजा और इतना सलीकेदार? इतना हसीन?

हीरा—हुजूर, अगर भाजा न हो तो नाक कटवा डालूँ।

सिपहआरा—(महरी से) ज़रा तू इसे समझा दे कि अगर सच-सच बतला दे तो कुछ इनाम दूँ।

महरी ने माली को अलग ले जा कर समझाना शुरू किया—अरे भले आदमी बता दे। जो तेरा रत्ती भर नुक़सान हो तो मेरा जिम्मा।

हीरा—इस बुढ़ौती में कलंक का टीका लगवाना चाहती हो?

महरी—अब मुझसे तो बहुत उड़ो नहीं, शाहजादा हुमायूँ फर के सिवा और किसी की इतनी हिम्मत नहीं हो सकती। बता, थे वही कि नहीं?

हीरा—हाँ आये तो वही थे।

महरी—(सिपहआरा से) लीजिए हुजूर, अब इसे इनाम दीजिए।

सिपहआरा—अच्छा हीरा, आज जब वह आयें तो यह कागज दे देना।

इत्तिफाक से हुस्नआरा बेगम भी टहलती हुई आ गयीं। वह भी दफ्ती पर एक शेर लिख लायी थीं। सिपहआरा को दे कर बोलीं—हीरा से कह दो, जिस वक्त हुमायूँ फर आयें, यह दफ्ती दिखा दे।

सिपहआरा—ऐ तो बाजी, जब हुमायूँ फर हों भी?

हुस्नआरा—कितनी सादी हो? जब हों भी?

सिपहआरा—अच्छा, हुमायूँ फर ही सही! यह शेर तो सुनाओ।

हुस्नआरा—हमने यह लिखा है—

> असीरे हिर्स वशहवत हर कि शुद नाकाम मीबाशद;
> दरीं आतश कसे गर पुख्ता बाशद खाम मीबाशद।

(जो आदमी हिर्स और शहवत में कैद हो गया, वह नाकाम रहता है। इस आग में अगर कोई पका भी हो तो भी कच्चा रहता है।)

हीरा ने झुक कर सलाम किया और शाम को हुमायूँ फर के मकान पहुँचा।

हुमायूँ—आ गये ? अच्छा, ठहरो। आज बहुत सोये।

हीरा—खुदावंद, बहुत खफा हुईं और कहा कि हम तुमको मौकूफ कर देंगे।

हुमायूँ—तुम इसकी फ़िक्र न करो।

हीरा—हुजूर, मुझे आध सेर आटे से मतलब है।

झुटपुटे वक्त हुमायूँ हीरा के साथ बाग़ में पहुँचे। यहाँ हीरा ने दोनों बहनों के लिखे हुए शेर हुमायूँ फर को दिखाये। अभी वह पढ ही रहे थे कि हुस्नआरा बाग़ में आ गयी और हीरा को बुला कर कहा—तुम्हारा भाजा आया ?

हीरा—हाजिर है हुजूर !

हुस्नआरा—बुलाओ।

हुमायूँ ने आ कर सलाम किया और गरदन झुका ली।

हुस्नआरा—तुम्हारा क्या नाम है जी ?

हुमायूँ—हुमायूँ।

हुस्नआरा—क्यों साहब, मकान कहाँ है ?

हुमायूँ—

घर बार से क्या फ़क़ीर को काम ;
क्या लीजिए छोडे गाँव का नाम ?

हुस्नआरा - अल्लाह, आप शायर भी हैं।

हुमायूँ—हुजूर, कुछ बक लेता हूँ।

हुस्नआरा—कुछ सुनाओ।

हुमायूँ—हुक्म हो तो जमीन पर बैठ जाऊँ।

सिपहआरा—बडे गुस्ताख हो तुम। कहीं नौकर हो ?

हुमायूँ—जी हाँ हुजूर, आजकल शाहजादा हुमायूँ फ़र की बहन के यहाँ नौकर हूँ।

इतने में बड़ी बेगम आ गयीं। हुमायूँ फ़र मारे खौफ के भाग गये।

६७

सुरैया बेगम ने आज़ाद मिरज़ा के कैद होने की खबर सुनी तो दिल पर बिजली सी गिर पड़ी। पहले तो यकीन न आया, मगर जब खबर सच्ची निकली तो हाय-हाय करने लगी।

अब्बासी—हुज़ूर, कुछ समझ में नहीं आया। मगर उनके एक अज़ीज़ हैं। वह पैरवी करनेवाले हैं। रुपये भी खर्च करेंगे।

सुरैया बेगम—रुपया निगोड़ा क्या चीज़ है। तुम जा कर कहो कि जितने रुपयों की जरूरत हो, हमसे लें।

अब्बासी आज़ाद मिरज़ा के चाचा के पास जा कर बोली—बेगम साहब ने मुझे आपके पास भेजा है और कहा है कि रुपये की जरूरत हो तो हम हाज़िर हैं। जितने रुपये कहिए, भेज दें।

यह बड़े मिरज़ा आज़ाद से भी बढ़ कर झगड़ेबाज़ थे। सुरैया बेगम के पास आ कर बोले—क्या कहूँ बेगम साहब, मेरी तो इज्जत खाक में मिल गयी।

सुरैया बेगम—या मेरे अल्लाह, क्या यह ग़ज़ब हो गया?

बड़े मिरज़ा—क्या करूँ, सारा ज़माना तो उनका दुश्मन है। पुलिस से अदावत, अमलों से तकरार। मेरे पास इतने रुपये कहाँ कि पैरवी करूँ। वकील और लिये-दिये मानते नहीं। जान अज़ाब में है।

सुरैया बेगम—इसकी तो आप फ़िक्र ही न करें। सब बंदोबस्त हो जायगा। सौ दो सौ, जो कहिए, हाज़िर है।

बड़े मिरज़ा—फौजदारी के मुकदमे में ऊँचे वकील ज़रा लेते बहुत हैं। मैं कल एक बारिस्टर के पास गया था। उन्होंने कहा कि एक पेशी के दो सौ लूँगा। अगर आप चार सौ रुपये दे दें तो उम्मेद है कि शाम तक आज़ाद तुम्हारे पास आ जायें।

बेगम साहब ने चार सौ रुपये दिलवा दिये। बड़े मिरज़ा रुपये ले कर बाहर गये और थोड़ी देर के बाद आ कर चारपाई पर धम से गिर पड़े और बोले—आज तो इज्जत ही गयी थी, मगर खुदा ने बचा लिया। मैं जो यहाँ से गया तो एक साहब ने आ कर कहा—आज़ाद मिरज़ा को थानेदार हथकड़ी पहना कर चौक से ले जायगा। बस, मैंने अपना सिर पीट लिया। इत्तिफ़ाक से एक रिसालदार मिल गये। उन्होंने मेरी यह हालत देखी तो कहा—दो सौ रुपये दो तो पुलिसवालों को गाँठ लूँ। मैंने फौरन दो सौ रुपये निकाल कर उनके हाथ पर रखे। अब दो सौ और दिलवाइए तो वकीलों के पास जाऊँ। बेगम ने दो सौ रुपये और दिलवा दिये। बड़े मिरज़ा दिल में खुश हुए, अच्छा शिकार फँसा। रुपये ले कर चलते हुए।

इधर सुरैया बेगम रो रो कर आँखें फोड़े डालती थीं महरियाँ समझातीं, दिन-रात रोने से क्या फ़ायदा, अल्लाह पर भरोसा रखिए; उसकी मर्जी हुई तो आज़ाद मिरज़ा

दो-चार दिन में घर आयेंगे। मगर ये नसीहतें बेगम साहब पर कुछ असर न करती थीं। एक दिन एक महरी ने आ कर कहा—हुजूर, एक औरत ड्योढ़ी पर खड़ी है। कहिए तो बुलाऊँ। बेगम ने कहा—बुला लो। वह औरत परदा उठा कर आँगन में दाखिल हुई और झुक कर बेगम को सलाम किया। उसकी सजधज सारी दुनिया की औरतों से निराली थी। गुलबदन का चुस्त पाजामा, बाँका अमामा, मखमल का दगला, उस पर हलका कारचोबी का काम, हाथ में आबनूस का पिंजड़ा, उसमें एक चिड़िया बैठी हुई। सारा घर उसी की ओर देखने लगा। सब की सब दंग थीं कि या खुदा, यह उठती जवानी, गुलाब सा रंग, और यों गली-कूचों की सैर करती फिरे। अब्बासी बोली—क्यों बीबी, तुम्हारा मकान कहाँ है? और यह पहनावा किस मुल्क का है? तुम्हारा नाम क्या है बीबी?

औरत—हमारा घर मन-चले जवानों का दिल है और नाम माशूक।

यह कह कर उसने पिंजड़ा सामने रख दिया और यों चहकने लगी—हुजूर, आपको यकीन न आयेगा। कल मैं परिस्तान में बैठी वहाँ की सैर देख रही थी कि पहाड़ पर बड़े जोरों की आँधी आयी और इतनी गर्द उड़ी कि आसमान के नीचे एक और असमान नजर आने लगा। इसके साथ ही घड़घड़ाहट की आवाज आयी और एक उड़नखटोला आसमान से उतर पड़ा।

अब्बासी—अरे, उड़नखटोला! इसका जिक्र तो कहानियों में सुना करते थे।

औरत—बस हुजूर, उस उड़नखटोले में से एक सचमुच की परी उतरी और दम के दम में खटोला गायब हो गया। वह परी असल मे परी न थी, वह एक इनसान था। मैं उसे देखते ही हजार जान से आशिक हो गयी। अब सुना है कि वह बेचारा कहीं कैद हो गया है।

सुरैया बेगम—क्या, कैद है! भला, उस जवान का नाम भी तुम्हें मालूम है?

औरत—जी हाँ हुजूर, मैंने पूछ लिया है। उसे आजाद कहते हैं।

सुरैया बेगम—अरे! यह तो कुछ और ही गुल खिला। किसी ने तुम्हें बहका तो नहीं दिया?

औरत—हुजूर, वह आपके यहाँ भी आये थे। आप भी उन पर रीझी हुई हैं।

सुरैया बेगम—मुझे तो तुम्हारी सब बातें दीवानों की बकझक मालूम होती हैं। कहाँ परी, कहाँ आज़ाद, कहाँ उड़नखटोला! समझ में कोई बात नहीं आती।

औरत—इन बातों को समझने के लिए जरा अक़्ल चाहिए।

यह कह कर उसने पिंजड़ा उठाया और चली गयी।

थोड़ी देर में दारोगा साहब ने अंदर आ कर कहा—दरवाजे पर थानेदार और सिपाही खड़े हैं। मिरजा आज़ाद जेल से भाग निकले हैं। और वही आज औरत के वेष में आये थे। बेगम साहब के होश-हवास गायब हो गये! अरे, यह आजाद थे!

आजाद अपनी फौज के साथ एक मैदान में पड़े हुए थे कि एक सवार ने फ़ौज में कर कहा—अभी बिगुल दो। दुश्मन सिर पर आ पहुँचा। बिगुल की आवाज़ सुनते ही अफ़सर, प्यादे, सवार सब चौंक पड़े। सवार ऐंठते हुए चले, प्यादे अकड़ते हुए बढ़े। एक बोला—मार लिया है। दूसरे ने कहा—भगा दिया है। मगर अभी तक किसी को मालूम नहीं कि दुश्मन कहाँ है। मुखबिर दौड़ाये गये तो पता चला कि रूस की फ़ौज दरिया के उस पार पैर जमाये खड़ी है। दरिया पर पुल बनाया जा रहा है और अनोखी बात यह थी कि रूसी फ़ौज के साथ एक लेडी, शहसवारों की तरह रान-पटरी जमाये, कमर से तलवार लटकाये, चेहरे को नकाब से छिपाये, अजब शोखी और बाँकपन के साथ लड़ाई में शरीक होने के लिए आयी है। उसके साथ दस जवान औरतें घोड़ों पर सवार चली आ रही हैं। मुखबिर ने इन औरतों की कुछ ऐसी तारीफ की कि लोग सुन कर दंग रह गये। बोला—इस रईसजादी ने कसम खायी है कि उम्र भर क्वाँरी रहूँगी। इसका बाप एक मशहूर जनरल था, उसने अपनी प्यारी बेटी को शहसवारी का फ़न खूब सिखाया था। रूस में बस यही एक औरत है जो तुर्कों से मुकाबला करने के लिए मैदान में आयी है। उसने कसम खायी है कि आजाद का सिर ले कर जार के कदमों पर रख दूँगी।

आजाद—भला, यह तो बतलाओ कि अगर वह रईस की लड़की है तो उसे मैदान से क्या सरोकार? फिर मेरा नाम उसको क्योंकर मालूम हुआ?

मुखबिर—अब यह तो हुजूर, वही जानें, उनका नाम मिस क्लारिसा है। वह आपसे तलवार का मुकाबिला करना चाहती हैं। मैदान में अकेले आप से लड़ेंगी, जिस तरह पुराने जमाने में पहलवानों में लड़ाई का रिवाज था।

आजाद पाशा के चेहरे का रंग उड़ गया। अफसरों ने उनको बनाना शुरू किया। आज़ाद ने सोचा, अगर कबूल किये लेता हूँ तो नतीजा क्या! जीता, तो कोई बड़ी बात नहीं। लोग कहेंगे, लड़ना-भिड़ना औरतों का काम नहीं। अगर चोट खायी तो जग की हँसाई होगी। मिस मीडा ताने देंगी। अलारक्खी आड़े हाथों लेंगी कि एक छोकरी से चरका खा गये। सारी डींग खाक में मिल गयी। और अगर इनकार करते हैं तो भी तालियाँ बजेंगी कि एक नाजुकबदन औरत के मुकाबिले से भागे। जब खुद कुछ फ़ैसला न कर सके तो पूछा—दिल्लगी तो हो चुकी, अब बतलाइए कि मुझे क्या करना चाहिए?

जनरल—सलाह यही है कि अगर आपको बहादुरी का दावा है तो कबूल कर लीजिए, वरना चुपके ही रहिए।

आज़ाद—जनाब, खुदा ने चाहा, तो एक चोट न खाऊँ और बेदाग लौट आऊँ। औरत लाख दिलेर हो, फिर भी औरत है।

जनरल—यहाँ मूछों पर ताव दे लीजिए, मगर वहाँ कलई खुल जायगी।

अनवर पाशा—जिस वक्त वह हसीना हथियार कस कर सामने आयेगी, होश उड़ जायँगे। गश पर गश आयँगे। ऐसी हसीन औरत से लड़ना क्या कुछ हँसी है? हाथ न उठेगा। मुँह की खाओगे। उसकी एक निगाह तुम्हारा काम तमाम कर देगी।

आजाद—इसकी कुछ परवा नहीं। यहाँ तो दिली आरजू है कि किसी नाज़नीन की निगाहों के शिकार हों।

यही बातें हो रही थीं कि एक आदमी ने कहा—कोई साहब हजरत आजाद को ढूँढ़ते हुए आये हैं। अगर हुक्म हो, तो बुला लाऊँ। बड़े तीखे आदमी हैं। मुझसे लड़ पड़े थे। आजाद ने कहा, उसे अंदर आने दो। सिपाही के जाते ही मियाँ खोजी अकड़ते हुए आ पहुँचे।

आजाद—मुद्दत के बाद मुलाकात हुई, कोई ताजा खबर कहिए।

खोजी—कमर तो खोलने दो, अफीम घोलूँ, चुस्की लगाऊँ तो होश आये। इस वक़्त थका-मोंदा, मरा-मिटा आ रहा हूँ। साँस तक नहीं समाती है।

आजाद—मिस मीडा का हाल तो कहो!

खोजी—रोज कुम्मैत घोड़े पर सवार दरिया किनारे जाती हैं। रोज अखबार पढ़ती हैं। जहाँ तुम्हारा नाम आया, बस, रोने लगी।

आजाद—अरे, यह अँगुली में क्या हुआ है जी! जल गयी थी क्या?

खोजी—जल नहीं गयी थी जी, यह अपनी सूरत गले का हार हुई।

आजाद—ऐं, यह माजरा क्या है? एक कान कौन कतर ले गया है?

खोजी—न हम इतने हसीन होते, न परियाँ जान देतीं!

आजाद—नाक भी कुछ चिपटी मालूम होती है।

खोजी—सूरत, सूरत! यही सूरत बला-ए-जान हो गयी। इसी के हाथों यह दिन देखना पड़ा।

आजाद—सूरत-मूरत नहीं, आप कहीं से पिट कर आये हैं। कमजोर, मार खाने की निशानी; किसी से भिड़ पड़े होंगे। उसने टोंक डाला होगा! यही बात हुई है न?

खोजी—अजी, एक परी ने फूलों की छड़ियों से सजा दी थी।

आजाद—अच्छा, कोई खत-वत लाये हो? या चले आये यों ही हाथ झुलाते?

खोजी—दो-दो खत हैं। एक मिस मीडा का, दूसरा हुरमुज जी का।

आजाद और खोजी नहर के किनारे बैठे बातें कर रहे थे। अब जो आता है, खोजी को देख कर हँसता है। आखिर खोजी बिगड़ कर बोले—क्या भीड़ लगायी है! चलो, अपना काम करो।

आजाद—तुमको किसी से क्या वास्ता, खड़े रहने दो।

खोजी—अजी नहीं, आप समझते नहीं हैं। ये लोग नजर लगा देंगे

आजाद—हाँ, आपका कल्ला-ठल्ला देख कर नजर लग जाय तो ताज्जुब भी नहीं।

खोजी—अजी, वह एक सूरत ही क्या कम है! और क़सम ले लो कि किसी मर्दक को अब तक मालूम हुआ हो कि हम इतने हसीन हैं! और हमें इसका कुछ ग़रूर भी नहीं—

मुतलक नहीं ग़रूर जमालोकमाल पर।

आज़ाद—जी हाँ, बाकमाल लोग कभी ग़रूर नहीं करते, सीधे-सादे होते ही हैं। अच्छा, आप अफीम घोलिए, साथ है या नहीं?

खोजी—जी नहीं, और क्या! आपके भरोसे आते हैं? अच्छा, लाओ, निकलवाओ। मगर जरा उम्दा हो। कमसरियट के साथ तो होती होगी?

आज़ाद—अब तुम मरे। भला यहाँ अफ़ीम कहाँ? और कमसरियट में? क्या खूब!

खोजी—तब तो बे-मौत मरे। भई, किसी से माँग लो।

आज़ाद—यहाँ अफीम का किसी को शौक ही नहीं।

खोजी—इतने शरीफज़ादे हैं और अफ़ीमची एक भी नहीं? वाह!

आज़ाद—जी हाँ, सब गँवार हैं। मगर आज दिल्लगी होगी, जब अफ़ीम न मिलेगी और तुम तड़पोगे, बिलबिलाओगे।

खोजी—यह तो अभी से जम्हाइयाँ आने लगीं। कुछ तो फ़िक्र करो यार!

आज़ाद—अब यहाँ अफ़ीम न मिलेगी। हाँ, करौलियाँ जितनी चाहो, मँगा दूँ।

खोजी—(अफीम की डिबिया दिखा कर) यह भरी है अफीम! क्या उल्लू समझे थे! आने के पहले ही मैंने हुरमुज जी से कहा कि हुजूर, अफ़ीम मँगवा दें। अच्छा, यह लीजिए हुरमुज जी का खत।

आज़ाद ने खत खोला तो यह लिखा था—

'माई डियर आज़ाद,

ज़रा खोजी से खैर व आफ़ियत तो पूछिए, इतना पिटे कि दो दाँत टूट गये, कान कट गये और घूँसे और मुक्के खाये। आप इनसे इतना पूछिए कि लालारुख कौन है?

तुम्हारा

हुरमुज।'

आज़ाद—क्यों साहब, यह लालारुख कौन है?

खोजी—ओफ़ओह, हम पर चकमा चल गया। वाहरे हुरमुज जी, वल्लाह! अगर नमक न खाये होता तो आ कर करौली भोंक देता।

आज़ाद—नहीं, तुम्हें वल्लाह, बताओ तो, यह लालारुख कौन है?

खोजी—अच्छा हुरमज जी समझेंगे!

सौदा करेंगे दिल का किसी दिलरुबा के साथ
इस बावफ़ा को बेचेंगे एक बेवफ़ा के हाथ।

हाय लालारुख, जान जाती है, मगर मौत भी नहीं आती।

आज़ाद—पिटे हुए हो, कुछ हाल तो बतलाओ। हसीन है?

खोजी—(झल्ला कर) जी नहीं, हसीन नहीं है। काली-कलूटी हैं। आप भी वल्लाह, निरे चोंच ही रहे! भला, किसी ऐसी-वैसी की जुर्रत कैसे होती कि हमारे साथ बात करती! याद रखो, हसीन पर जब नजर पड़ेगी, हसीन ही की पड़ेगी। दूसरे की मजाल नहीं।

'गालिब' इन सीमी तनों के वास्ते,
चाहनेवाला भी अच्छा चाहिए।

आजाद—अच्छा, अब लालारुख का तो हाल बताओ।

खोजी—अजी, अपना काम करो, इस वक़्त दिल काबू में नहीं है। वह हुस्न है कि आपके आबाजान ने भी न देखा होगा। मगर हाथों में चुल है। घंटे भर में पाँच सात बार जरूर चपतियाती थीं। खोपड़ी पिलपिली कर दी। बस, हमको इसी बात से नफरत थी। वरना, नखशिख से दुरुस्त! और चेहरा चमकता हुआ, जैसे आबनूस! एक दिन दिल्लगी-दिल्लगी में उठ कर एक पचास जूते लगा दिये, तड़-तड़-तड़! हैं, हैं, यह क्या हिमाकत है, हमें यह दिल्लगी पसद नहीं, मगर वह सुनती किसकी हैं! अब फ़रमाइए, जिस पर पचास जूते पड़ें, उसकी क्या गति होगी। एक रोज हँसी-हँसी में कान काट लिया। एक दिन दूकान पर खड़ा हुआ सौदा खरीद रहा था। पीछे से आ कर दस जूते लगा दिये। एक मरतबे एक हौज़ में हमको ढकेल दिया। नाक टूट गयी। मगर हैं लाखों मे लाजवाब!

तर्जे-निगाह ने छीन लिये जाहिदों के दिल,
आखें जो उनकी उठ गयीं दस्ते दुआ के साथ।

आजाद—तो यह कहिए, हँसी-हँसी में खूब जूतियाँ खायीं आपने!

खोजी—फिर यह तो है ही, और इश्क कहते किसे हैं? एक दफा मैं सो रहा था, आने के साथ ही इस जोर से चाबुक जमायी कि मैं तड़प कर चीख उठा। बस, आग हो गयीं कि हम पीटें, तो तुम रोओ क्यों? जाओ, बस, अब हम न बोलेंगी। लाख मनाया, मगर बात तक न की। आखिर यह सलाह ठहरी कि सरे बाजार वह हमें चपतियाएँ और हम सिर झुकाये खड़े रहें।

लब ने जो जिलाया तो तेरी आँख ने मारा;
कातिल भी रहा साथ मसीहा के हमेशा।
परदा न उठाया कभी चेहरा न दिखाया;
मुश्ताक रहे हम रुखे जेबा के हमेशा।

आजाद—किसी दिन हँसी-हँसी में आपको जहर न खिला दें?

खोजी—क्यों साहब खिला दें क्यों नहीं कहते? कोई फंदेवाली मुकर्रर की है। वह भी रईसजादी हैं! आपकी मिस मीडा पर गिर पड़ें तो यह कुचल जायँ। अच्छा हमारी दास्तान तो सुन चुके, अपनी बीती कहो।

आजाद—एक नाजनीन हमसे तलवार लड़ना चाहती है। क्या राय है? पैग़ाम भेजा है कि किसी दिन आजाद पाशा से और हमसे अकेले तलवार चले।

खोजी—मगर तुमने पूछा तो होता कि सिन क्या है? शक्ल-सूरत कैसी है?

आज़ाद—सब पूछ चुके हैं। रूस में उसका सानी नहीं है। मिस मीडा यहाँ होतीं तो खूब दिल्लगी रहती। हाँ, तुमने तो उनका खत दिया ही नहीं। तुम्हारी बातों में ऐसा उलझा कि उसकी याद ही न रही।

खोजी ने मीडा का खत निकाल कर दिया। यह मज़मून था—

'प्यारे आज़ाद,

आजकल अख़बारों ही में मेरी जान बसती है। मगर कभी-कभी खत भी तो भेजा करो। यहाँ जान पर बन आयी है, और तुमने वह चुप्पी साधी है कि खुदा की पनाह। तुमसे इस बेवफ़ाई की उम्मेद न थी।

यों तो मुँह-देखे की होती है मुहब्बत सबको,
जब मैं जानूँ कि मेरे बाद मेरा ध्यान रहे।

तुम्हारी
मीडा।'

६९

दूसरे दिन आज़ाद का उस रूसी नाज़नीन से मुक़ाबिला था। आज़ाद को रात-भर नींद नहीं आयी। सबेरे उठ कर बाहर आये तो देखा कि दोनों तरफ़ की फौजें आमने-सामने खड़ी हैं और दोनों तरफ़ से तोपें चल रही हैं।

खोजी दूर से एक ऊँचे दरख्त की शाख पर बैठे लड़ाई का रंग देख रहे थे और चिल्ला रहे थे, होशियार, होशियार! यारो, कुछ खबर भी है! हाय! इस वक़्त अगर तोड़ेदार बंदूक होती तो परे के परे साफ़ कर देता। इतने में आज़ाद पाशा ने देखा कि रूसी फ़ौज के सामने एक हसीना कमर में तलवार लटकाये, हाथ मे नेज़ा लिये, घोड़े पर शान से बैठी सिपाहियों को आगे बढ़ने के लिए ललकार रही है। आज़ाद की उस पर निगाह पड़ी तो दिल में सोचे, खुदा इसे बुरी नज़र से बचाये। यह तो इस काबिल है कि इसकी पूजा करे। यह, और मैदान-जंग! हाय-हाय, ऐसा न हो कि उस पर किसी का हाथ पड़ जाय। ग़ज़ब की चीज़ है यह हुस्न, इंसान लाख चाहता है, मगर दिल खिंच ही जाता है, तबीयत आ ही जाती है।

उस हसीना ने जो आजाद को देखा तो यह शेर पढ़ा—

> सँभल के रखियो क़दम राहे-इश्क़ में मजनूँ,
> कि इस दयार में सौदा बरहनः पाई है।

यह कह कर घोड़ा बढ़ाया। आजाद के घोड़े की तरफ़ झुकी और झुकते ही उन पर तलवार का वार किया। आजाद ने वार खाली दिया और तलवार को चूम लिया। तुर्कों ने इस जोर से नारा मारा कि कोसों तक मैदान गूँजने लगा। मिस क्लारिसा ने झल्ला कर घोड़े को फेरा और चाहा कि आजाद को दो टुकडे कर दे, मगर जैसे ही हाथ उठाया, आजाद ने अपने घोड़े को आगे बढ़ाया और तलवार को अपनी तलवार से रोक कर हाथ से उस परी का हाथ पकड़ लिया। तुर्कों ने फिर नारा मारा और रूसी झेंप गये। मिस क्लारिसा भी लजायी और मारे ग़ुस्से के झल्ला कर वार करने लगीं। बार-बार चोट आती थी, मगर आजाद की यह कैफ़ियत थी कि कुछ चोटें तलवार पर रोकीं और कुछ खाली दीं। आजाद उससे लड़ तो रहे थे, मगर वार करते दिल काँपता था। एक दफा उस शेरदिल औरत ने ऐसा हाथ जमाया कि कोई दूसरा होता, तो उसकी लाश जमीन पर फड़कती नजर आती, मगर आज़ाद ने इस तरह बचाया कि हाथ बिलकुल खाली गया। जब उस खातून ने देखा कि आजाद ने एक चोट भी नहीं खायी तो फिर झुँझला कर इतने वार किये कि दम लेना भी मुश्किल हो गया। मगर आजाद ने हँस-हँस कर चोटें बचायीं। आखिर उसने ऐसा तुला हुआ हाथ घोड़े की गरदन पर जमाया कि गरदन कट कर दूर जा गिरी। आजाद फ़ौरन कूद पडे और चाहते थे कि उछल कर मिस क्लारिसा के हाथ से तलवार छीन लें कि उसने घोडे को चाबुक जमायी और अपनी फ़ौज की तरफ

चली। आज़ाद सँभलने भी न पाये थे कि घोड़ा हवा हो गया। आज़ाद घोड़े पर लटके रह गये।

जब घोड़ा रूस की फ़ौज में दाखिल हुआ तो रूसियों ने तीन बार खुशी के आवाज़े लगाये और कोई चालीस-पचास आदमियों ने आज़ाद को घेर लिया। दस आदमियों ने एक हाथ पकड़ा, पाँच ने दूसरा हाथ। दो-चार ने टाँग ली। आज़ाद बोले—भाई, अगर मेरा ऐसा ही खौफ़ है तो मेरे हथियार खोल लो और कैद कर दो। दस आदमियों का पहरा रहे। हम भाग कर जायँगे कहा? अगर तुम्हारे यही हथकंडे हैं तो दस पाँच दिन में तुर्क जवान आप ही आप बँधे चले आयेंगे। मिस क्लारिसा की तरह पंद्रह-बीस परियाँ मोरचे पर आयें तो शायद तुर्कों की तरफ़ से गोलंदाज़ी ही बंद हो जाय।

एक सिपाही—टँगे हुए चले आये, सारी दिलेरी धरी रह गयी!

दूसरा सिपाही—वाह री क्लारिसा! क्या फुर्ती है!

आज़ाद—इसमें तो शक नहीं कि इस वक़्त शिकार हो गये। मिस क्लारिसा की अदा ने मार डाला।

एक अफ़सर—आज हम तुम्हारी गिरफ़्तारी का जश्न मनायेंगे।

आज़ाद—हम भी शरीक होंगे। भला, क्लारिसा भी नाचेंगी?

अफ़सर—अजी, वह आपको अँगुलियों पर नचायेंगी। आप हैं किस भरोसे?

आज़ाद—अब तो खुदा ही बचाये तो बचें। बुरे फँसे।

> तेरी गली में हम इस तरह से हैं आये हुए;
> शिकार हो कोई जिस तरह चोट खाये हुए।

अफ़सर—आज तो हम फूले नहीं समाते। बड़े मूड को फाँसा।

आज़ाद—अभी खुश हो लो; मगर हम भाग जायँगे। मिस क्लारिसा को देख कर तबीयत लहरायी, साथ चले आये।

अफ़सर—वाह, अच्छे जवाँमर्द हो! आये लड़ने और औरत को देख फिस पड़े। सूरमा कहीं औरत पर फिसला करते हैं?

आज़ाद—बूढ़े हो गये हो न! ऐसा तो कहा ही चाहो।

अफ़सर—हम तो आपकी शहसवारी की बड़ी धूम सुनते थे। मगर बात कुछ और ही निकली। अगर आप मेरे मेहमान न होते तो हम आपके मुँह पर कह देते कि आप शोहदे हैं। भले आदमी, कुछ तो गैरत चाहिए।

इतने में एक रूसी सिपाही ने आ कर अफ़सर के हाथ में एक खत रख दिया। उसने पढ़ा तो यह मज़मून था—

(१) हुक्म दिया जाता है कि मियाँ आज़ाद को साइबेरिया के उन मैदानों में भेजा जाय, जो सबसे ज़्यादा सर्द हैं।

(२) जब तक यह आदमी जिंदा रहे, किसी से बोलने न पाये। अगर किसी से बात करे तो दोनों पर सौ-सौ बेंत पड़ें।

(३) खाना सिर्फ एक वक़्त दिया जाय। एक दिन आध सेर उबाला हुआ साग और दूसरे दिन गुड़ और रोटी। पानी के तीन कटोरे रख दिये जायँ, चाहे एक ही बार पी जाय चाहे दस बार पिये।

(४) दस सेर आटा रोज़ पीसे और दो घंटे रोज दलेल बोली जाय। चक्की का पाट सिर पर रख कर चक्कर लगाये। जरा दम न लेने पाये।

(५) हफ्ते में एक बार बरफ़ में खड़ा कर दिया जाय और बारीक कपड़ा पहनने को दिया जाय।

आजाद—बात तो अच्छी है, गरमी निकल जायगी।

अफ़सर—इस भरोसे भी न रहना। आधी रात को सिर पर पानी का तड़ेड़ा रोज दिया जायगा।

आजाद मुँह से तो हँस रहे थे, मगर दिल काँप रहा था कि खुदा ही खैर करे। ऊपर से हुक्म आ गया तो फ़रियाद किससे करें और फरियाद करें भी तो सुनता कौन है? बोले, खत्म हो गया या और कुछ है।

अफ़सर—तुम्हारे साथ इतनी रियायत की गयी है कि अगर मिस क्लारिसा रहम करें तो कोई हलकी सजा दी जाय।

आजाद—तब तो वह जरूर ही माफ कर देंगी।

यह कह कर आजाद ने यह शेर पढ़ा—

खोल दी है जुल्फ़ किसने फूल से रुखसार पर?
छा गयी काली घटा है आन कर गुलजार पर।

अफ़सर—अब तुम्हारे दीवानापन में हमें कोई शक न रहा।

आजाद—दीवाना कहो, चाहे पागल बनाओ। हम तो मरमिटे।

सख्तियाँ ऐसी उठायीं इन बुतों के हिज्र में।
रंज सहते-सहते पत्थर सा कलेजा हो गया।

७०

शाम के वक़्त हलकी-फुलकी और साफ़-सुथरी छोलदारी में मिस क्लारिसा बनाव-चुनाव करके एक नाजुक आराम-कुर्सी पर बैठी थी। चाँदनी निखरी हुई थी, पेड़ और पत्ते दूध में नहाये हुए और हवा आहिस्ता-आहिस्ता चल रही थी! उधर मियाँ आजाद क़ैद में पड़े हुए हुस्नआरा को याद करके सिर धुनते थे कि एक आदमी ने आ कर कहा—चलिए, आपको मिस साहब बुलाती हैं। आजाद छोलदारी के करीब पहुँचे तो सोचने लगे, देखें यह किस तरह पेश आती है। मगर कहीं साइबेरिया भेज दिया तो बेमौत ही मर जायँगे। अंदर जा कर सलाम किया और हाथ बाँध कर खड़े हो गये। क्लारिसा ने तीखी चितवन कर कहा—कहिए मिजाज ठंडा हुआ या नहीं?

आजाद—इस वक्त तो हुजूर के पंजे में हूँ, चाहे कत्ल कीजिए, चाहे सूली दीजिए।

क्लारिसा—जी तो नहीं चाहता कि तुम्हें साइबेरिया भेजूँ, मगर वजीर के हुक्म से मजबूर हूँ। वजीर ने मुझे अख्तियार तो दे दिया है कि चाहूँ तो तुम्हें छोड़ दूँ, लेकिन बदनामी से डरती हूँ। जाओ रुखसत।

फौज के अफ़सर ने हुक्म दिया कि सौ सवार आजाद को ले कर सरहद पर पहुँचा आयें। उनके साथ कुछ दूर चलने के बाद आजाद ने पूछा—क्यों यारो, अब जान बचने की भी कोई सूरत है या नहीं?

एक सिपाही—बस, एक सूरत है कि जो सवार तुम्हारे साथ जायँ वह तुम्हें छोड़ दें।

आजाद—भला, वे लोग क्यों छोड़ने लगें?

सिपाही—तुम्हारी जवानी पर तरस आता है। अगर हम साथ चले तो जरूर छोड़ देंगे।

तीसरे दिन आजाद पाशा साइबेरिया जाने को तैयार हुए। सौ सिपाही परे जमाये हुए, हथियारों से लैस, उनके साथ चलने को तैयार थे। जब आजाद घोड़े पर सवार हुए तो हजारहा आदमी उनकी हालत पर अफसोस कर रहे थे। कितनी ही औरतें रूमाल से आँसू पोंछ रही थीं। एक औरत इतनी बेकरार हुई कि जा कर अफसर से बोली—हुजूर, यह आप बड़ा गजब करते हैं। ऐसे बहादुर आदमी को आप साइबेरिया भेज रहे हैं

अफसर—मैं मजबूर हूँ। सरकारी हुक्म की तामील करना मेरा फर्ज है।

दूसरी स्त्री—इस बेचारे की जान का खुदा हाफिज है। बेकुसूर जान जाती है।

तीसरी स्त्री—आओ, सब की सब मिल कर चलें और मिस साहब से सिफारिश करें। शायद दिल पसीज जाय।

ये बातें करके वह कई औरतों के साथ मिस क्लारिसा के पास जा कर बोलीं—हुजूर, यह क्या ग़ज़ब करती हैं! अगर आजाद मर गये तो आपकी कितनी बड़ी बदनामी होगी?

क्लारिसा—उनको छोड़ना मेरे इमकान से बाहर है।

वह स्त्री—कितनी जालिम! कितनी बेरहम हो! ज़रा आज़ाद की सूरत तो चल कर देख लो।

क्लारिसा—हम कुछ नहीं जानते!

अब तक तो आज़ाद को उम्मेद थी कि शायद मिस क्लारिसा मुझ पर रहम करें लेकिन जब इधर से कोई उम्मेद न रही और मालूम हो गया कि बिना साइबेरिया गये जान न बचेगी तो रोने लगे। इतने ज़ोर से चीखे कि मिस क्लारिसा के बदन के रोयें खड़े हो गये और थोड़ी ही दूर चले थे कि घोड़े से गिर पड़े।

एक सिपाही—अरे यारो, अब यह मर जायगा।

दूसरा सिपाही—मरे या जिये, साइबेरिया तक पहुँचाना जरूरी है।

तीसरा सिपाही—भई, छोड़ दो। कह देना, रास्ते में मर गया।

चौथा सिपाही—हमारी फ़ौज में ऐसा खूबसूरत और कड़ियल जवान दूसरा नहीं है। हमारी सरकार को ऐसे बहादुर अफ़सर की कद्र करनी चाहिए थी।

पाँचवाँ सिपाही—अगर आप सब लोग एक-राय हों तो हम इसकी जान बचाने के लिए अपनी जान खतरे में डालें। मगर तुम लोग साथ न दोगे।

छठा सिपाही—पहले इसे होश में लाने की फ़िक्र तो करो।

जब पानी के खूब छींटे दिये गये तो आजाद ने करवट बदली। सवारों की जान में जान आयी। सब उनको ले कर आगे बढ़े।

७१

आजाद तो साइबेरिया की तरफ़ रवाना हुए, इधर खोजी ने दरख्त पर बैठे-बैठे अफ़ीम की डिबिया निकाली। वहाँ पानी कहाँ? एक आदमी दरख्त के नीचे बैठा था। आपने उससे कहा—भाईजान, जरा पानी पिला दो। उसने ऊपर देखा, तो एक बौना बैठा हुआ है। बोला—तुम कौन हो? दिल्लगी यह हुई कि वह फ्रांसीसी था। खोजी उर्दू में बात करते थे, वह फ्रांसीसी मे जवाब देता था।

खोजी—अफीम घोलेंगे मियाँ! जरा सा पानी दे डालो भाई!

फ्रांसीसी—वाह, क्या सूरत है! पहाड़ पर न जा कर बैठो?

खोजी—भई वाह रे हिंदोस्तान! वल्लाह, इस फसल में सबीलों पर पानी मिलता है, केवड़े का बसा हुआ। हिंदू पौसरे बैठाते हैं और तुम ज़रा पानी भी नहीं देते।

फ्रांसीसी—कहीं ऊपर से गिर न पड़ना।

खोजी—(इशारे से) अरे मियाँ पानी-पानी!

फ्रांसीसी—हम तुम्हारी बात नहीं समझते।

खोजी—उतरना पड़ा हमें! अबे, ओ गीदी, ज़रा सा पानी क्यों नहीं दे जाता? क्या पाँवों की मेंहदी गिर जायगी?

फ्रांसीसी ने जब अब भी पानी न दिया तो खोजी ऊपर से पत्ते तोड़-तोड़ फेंकने लगे। फ्रांसीसी झल्ला कर बोला—बचा, क्यों शामतें आयी हैं। ऊपर आ कर इतने घूँसे लगाऊँगा कि सारी शरारत निकल जायगी। खोजी ने ऊपर से एक शाख तोड़ कर फेंकी। फ्रांसीसी ने इतने ढेले मारे कि खोजी की खोपड़ी जानती होगी। इतने में एक तुर्क आ निकला। उसने समझा-बुझा कर खोजी को नीचे उतारा। खोजी ने अफीम घोली, चुस्की लगायी और फिर दरख्त पर जा कर एक मोटी शाख से टिक कर पीनक लेने लगे। अब सुनिए कि तुर्कों और रूसियों में इस वक्त खूब गोले चल रहे थे। तुर्कों ने जान तोड़ कर मुक़ाबिला किया, मगर फ्रांसीसी तोपखाने ने उनके छक्के छुड़ा दिये और उनका सरदार आसफ पाशा गोली खा कर गिर पड़ा। तुर्क तो हार कर भाग निकले। रूसियों की एक पल्टन ने इस मैदान में पड़ाव डाला। खोजी पीनक से चौंक कर यह तमाशा देख रहे थे कि एक रूसी जवान की नजर उन पर पड़ी। बोला—कौन? तुम कौन हो? अभी उतर आओ।

खोजी ने सोचा, ऐसा न हो कि फिर ढेले पड़ने लगें। नीचे उतर आये। अभी जमीन पर पाँव भी न रखा था कि एक रूसी ने इनको गोद में उठा कर फेंका तो धम से जमीन पर गिर गये।

खोजी—ओ गीदी, खुदा तुमसे और तुम्हारे बाप से समझे!

एक रूसी—भई, यह पागल है कोई।

दूसरा—इसको फ़ौज के साथ रखो। खूब दिल्लगी रहेगी।

रूसियों ने कई तुर्क सिपाहियों को कैद कर लिया था। खोजी भी उन्हीं के साथ रख दिये गये। तुर्कों को देख कर उन्हें जरा तसकीन हुई। एक तुर्क बोला—तुम तो आजाद के साथ आये थे न? तुम उनके कौन हो?

खोजी—मेरा लड़का है जी, तुम नौकर बनाते हो।

तुर्क—एँ, आप आजाद पाशा के बाप हैं!

खोजी—हाँ-हाँ, तो इसमें ताज्जुब की कौन बात है। मैंने ही तो आज़ाद को मार-मार कर लड़ना सिखाया।

तुर्कों ने खोजी को आजाद का बाप समझ कर फौजी कायदे से सलाम किया। तब खोजी रोने लगे—अरे यारो, कहीं से तो हमें लड़के की सूरत दिखा दो। क्या तुमको इसी दिन के लिए पाल-पोस कर इतना बड़ा किया था? अब तुम्हारी माँ को क्या सूरत दिखाऊँगा?

तुर्क—आप ज्यादा बेचैन न हों। आजाद जरूर छूटेंगे।

खोजी—भई, मेरी इतनी इज्ज़त न करो। नहीं तो रूसियों को शक हो जायगा कि यह आज़ाद पाशा के बाप हैं। तब बहुत तंग करेंगे।

तुर्क—खुदा ने चाहा तो अफ़सर लोग आपको जरूर छोड़ देंगे।

खोजी—जैसी मौला की मरज़ी!

बड़ी बेगम का बाग़ परीखाना बना हुआ है। चारों बहनें रविशों में अठखेलियाँ करती हैं। नाज़ो-अदा से तौल-तौल कर क़दम धरती हैं। अब्बासी फूल तोड़-तोड़ कर झोलियाँ भर रही है। इतने में सिपहआरा ने शोख़ी के साथ गुलाब का फूल तोड़ कर गेतीआरा की तरफ़ फेंका। गेतीआरा ने उछाला तो सिपहआरा की ज़ुल्फ़ को छूता हुआ नीचे गिरा। हुस्नआरा ने कई फूल तोड़े और जहानारा बेगम से गेंद खेलने लगीं। जिस वक़्त गेंद फेंकने के लिए हाथ उठाती थीं, सितम ढाती थीं। वह कमर का लचकाना और गेसू का बिखरना, प्यारे-प्यारे हाथों की लोच और मुसकिरा-मुसकिरा कर निशानेबाज़ी करना अजब लुत्फ़ दिखाता था।

अब्बासी—माशा-अल्लाह, हुज़ूर किस सफ़ाई के साथ फेंकती हैं!

सिपहआरा—बस अब्बासी, अब बहुत ख़ुशामद की न लो। क्या जहानारा बहन सफ़ाई से नहीं फेंकतीं? बाज़ी ज़री झपटती ज़्यादा हैं। मगर हमसे न जीत पायेंगी। देख लेना।

अब्बासी—जिस सफ़ाई से हुस्नआरा बेगम गेंद खेलती हैं, उस सफ़ाई से जहानारा बेगम का हाथ नहीं जाता।

सिपहआरा—मेरे हाथ से भला फूल गिर सकता है! क्या मजाल!

इतने में जहानारा बेगम ने फूल को नोच डाला और उफ़ कह कर बोलीं—अल्लाह जानता है, हम तो थक गये।

सिपहआरा—ऐ वाह, बस इतने में ही थक गयीं? हमसे कहिए, शाम तक खेला करें।

अब सुनिए कि एक दोस्त ने मिरज़ा हुमायूँ फ़र को जा कर इत्तिला दी कि इस वक़्त बाग़ में परियाँ इधर से उधर दौड़ रही हैं। इस वक़्त की कैफ़ियत देखने क़ाबिल है। शाहज़ादे ने यह खबर सुनी तो बोले—भई, ख़ुशखबरी तो सुनायी, मगर कोई तदबीर तो बताओ। ज़रा आँखें ही सेंक लें। हाँ, हीरा माली को बुलाओ। ज़रा देखें।

हीरा ने आ कर सलाम किया।

शाहज़ादा—भई, इस वक़्त किसी हिकमत से अपने बाग़ की सैर कराओ।

हीरा—ख़ुदावंद, इस वक़्त तो माफ़ करें, सब वहीं हैं।

शाहज़ादा—उल्लू ही रहे, अरे मियाँ, वहाँ सन्नाटा होता तो जा कर क्या करते! सुना है, चारों परियाँ वहीं हैं! बाग़ परिस्तान हो गया होगा! हीरा, ले चल, तुझे अपने नारायन की क़सम! जो माँगे, फ़ौरन दूँ।

हीरा—हुज़ूर ही का नमक खाता हूँ या किसी और का? मगर इस वक़्त मौक़ा नहीं है।

शाहजादा—अच्छा, एक शेर लिख दूँ, वहाँ पहुँचा दो।

यह कह कर शाहजादा ने यह शेर लिखा—

छकाया तूने आलम को साकी जामे-गुलगूँ से,
हमें भी कोई एक सागर, हम भी हैं उम्मेदवारों में।

हीरा यह रुक्का ले कर चला। शाहजादे ने समझा दिया कि सिपहआरा को चुपके से दे देना। हीरा गया तो देखा कि अब्बासी और बूढ़ी महरी में तकरार हो रही है। सुबह के वक्त अब्बासी हुस्नआरा के लिए कुम्हारिन के यहाँ से दो झँझरियाँ लायी थी। दाम एक आना बताया। बड़ी बेगम ने जो यह झँझरियाँ देखीं तो महरी को हुक्म दिया कि हमारे वास्ते भी लाओ। महरी वैसी ही झँझरियाँ दो आने को लायी। इस वक्त अब्बासी डींग मारने लगी कि मैं जितनी सस्ती चीज़ लाती हूँ, कोई दूसरा भला ला तो दे। महरी और अब्बासी में पुरानी चश्मक थी। बोली—हाँ मुई, तुम क्यों न सस्ती चीज लाओ! अभी कमसिन हो न!

अब्बासी—तुम भी तो किसी जमाने में जवान थीं। बाजार भर को लूट लायी होगी। मेरे मुँह न लगना।

महरी—होश की दवा कर छोकरी! बहुत बढ़-बढ़ कर बातें न बना मुई! जमाने भर की अवारा! और सुनो!

अब्बासी—देखिए हुजूर, यह लाम काफ़ ज़बान से निकालती हैं। और मैं हुजूर का लिहाज़ करती हूँ। जब देखो, ताने के सिवा बात ही नहीं करतीं।

महरी—मुँह पकड़ कर झुल्स देती मुरदार का!

अब्बासी—मुँह झुलस अपने होतों-सोतों का।

महरी—हुजूर, अब हम नौकरी छोड़ देंगे। हमसे ये बातें न सुनी जायँगी।

अब्बासी—ऐं, तुम तो बेचारी नन्हीं हो। हमीं गरदन मारने के काबिल हैं। सच है, और क्या!

सिपहआरा—सारा कुसूर महरी का है। यही रोज लड़ा करती है अब्बासी से।

महरी—ऐ हुजूर, पाँच पी हजार नेमत पायी! जो मैं ही झगड़ालू हूँ तो बिस्मिल्लाह, हुजूर लौंडी को आजाद कर दें। कोई बात न चीत, आप ही गाली-गुफ़्ते पर आमादा हो गयी।

जहानारा—'लड़ेंगे जोगी-जोगी और जायगी खप्पड़ों के माथे।' अम्माँजान सुन लेंगी तो हम सबकी खबर लेंगी।

अब्बासी—हुजूर इनसाफ़ से कहें। पहल किसकी तरफ़ से हुई।

जहानारा—पहल तो महरी ने की। इसके क्या मानी कि तुम जवान हो इससे सस्ती चीज़ मिल जाती है। जिसको गाली दोगी, वह बुरा मानेगी ही।

हुस्नआरा—महरी, तुम्हें यह सूझी क्या! जवानी का क्या जिक्र था भला!

अब्बासी—हुजूर, मेरा कसूर हो तो जो चोर की सजा वह मेरी सज़ा।

महरी—मेरे अल्लाह, औरत क्या, बिस की गाँठ है।

अब्बासी—जो चाहो सो कह लो, मैं एक बात का भी जवाब न दूँगी।

महरी—इधर की उधर और उधर की इधर लगाया करती है। मैं तो इसकी नस-नस से वाकिफ़ हूँ।

अब्बासी—और मैं तो तेरी कब्र तक से वाकिफ़ हूँ।

महरी—एक को छोड़ा, दूसरे के बैठी, उसको खाया, अब किसी और को चट करेगी। और बातें करती है!

सत्तर...के बाद कुछ कहने ही को थी कि अब्बासी ने सैकड़ों गालियाँ सुनायीं। ऐसी जामे से बाहर हुई कि दुपट्टा एक तरफ़ और खुद दूसरी तरफ। हीरा माली ने बढ़ कर दुपट्टा दिया तो कहा—चल हट, और सुनो! इस मुए बूढ़े की बातें! इस पर कहका पड़ा। शोर सुनते ही बड़ी बेगम साहब लाठी टेकती हुई आ पहुँची, मगर यह सब चुहल में मस्त थीं। किसी को खबर भी न हुई।

बड़ी बेगम—यह क्या शोहदापन मचा था? बड़े शर्म की बात है। आखिर कुछ कहो तो? यह क्या धमाचौकड़ी मची थी? क्यों महरी, यह क्या शोर मचा था?

महरी—ऐ हुजूर, बात मुँह से निकली और अब्बासी ने टेंटुआ लिया। और क्या बताऊँ।

बड़ी बेगम—क्यों अब्बासी, सच-सच बताओ! खबरदार!

अब्बासी – (रो कर) हुजूर!

बड़ी बेगम – अब टेसुए पीछे बहाना, पहले हमारी बात का जवाब दो।

अब्बासी—हुजूर, जहानारा बेगम से पूछ लें, हमें आवारा कहा, बेसवा कहा, कोसा, गालियाँ दीं, जो ज़बान पर आया, कह डाला। और हुजूर, इन आँखों की ही कसम खाती हूँ, जो मैंने एक बात का भी जवाब दिया हो। चुप सुना की।

बड़ी बेगम—जहानारा, क्या बात हुई थी? बताओ साफ़-साफ़।

जहानारा—अम्मीजान, अब्बासी ने कहा कि हम दो झँझरियाँ एक आने को लाये और महरी ने दो आने दिये, इसी बात पर तकरार हो गयी।

बड़ी बेगम—क्यों महरी, इसके क्या माने? क्या जवानों को बाजारवाले मुफ़्त उठा देते हैं? बाल सफेद हो गये, मगर अभी तक अवारापन की बू नहीं गयी। हमने तुमको मौकूफ किया, महरी! आज ही निकल जाओ।

इतने में मौका पा कर हीरा ने सिपहआरा को शाहज़ादे का खत दिया। सिपहआरा ने पढ़ कर यह जवाब लिखा—भई, तुम तो ग़जब के जल्दबाज़ हो। शादी-ब्याह भी निगोड़ा मुँह का नेवाला है! तुम्हारी तरफ से पैग़ाम तो आया ही नहीं।

हीरा खत ले कर चल दिया।

७३

कोठे पर चौका बिछा है और एक नाजुक पलँग पर सुरैया बेगम सादी और हलकी पोशाक पहने आराम से लेटी हैं। अभी हम्माम से आयी हैं। कपड़े इत्र में बसे हुए हैं। इधर-उधर फूलों के हार और गजरे रखे हैं, ठंडी-ठंडी हवा चल रही है। मगर तब भी महरी पंखा लिये खड़ी है। इतने में एक महरी ने आ कर कहा—दारोगा जी हुजूर से कुछ अर्ज करना चाहते हैं। बेगम साहब ने कहा—अब इस वक़्त कौन उठे। कहो, सुबह को आयें। महरी बोली—हुजूर कहते हैं, बड़ा जरूरी काम है। हुक्म हुआ कि दो औरतें चादर ताने रहें और दारोगा साहब चादर के उस पार बैठें। दारोगा साहब ने आ कर कहा—हुजूर, अल्लाह ने बड़ी खैर की। खुदा को कुछ अच्छा ही करना मंजूर था। ऐसे बुरे फँसे थे कि क्या कहें!

बेगम—ऐं, तो कुछ कहोगे भी?

दारोगा—हुजूर, बदन के रोयें खड़े होते हैं।

इस पर अब्बासी ने कहा—दारोगा जी, घास तो नहीं खा गये हो! दूसरी महरी बोली—हुजूर, सठिया गये हैं। तीसरी ने कहा—बौखलाये हुए आये हैं। दारोगा साहब बहुत झल्लाये। बोले—क्या क़दर होती है, वाह! हमारी सरकार तो कुछ बोलती ही नहीं और महरियाँ सिर चढ़ी जाती हैं। हुजूर इतना भी नहीं कहतीं कि बूढ़ा आदमी है। उससे न बोलो।

बेगम—तुम तो सचमुच दीवाने हो गये हो। जो कहना है, वह कहते क्यों नहीं?

दारोगा—हुजूर, दीवाना समझें या गधा बनायें, गुलाम आज काँप रहा है। वह जो आजाद है, जो यहाँ कई बार आये भी थे, वह बड़े मक्कार, शाही चोर, नामी डकैत, परले सिरे के बगडेबाज, काले जुआरी, बावत शराबी, जमाने भर के बदमाश, छटे हुए गुर्गे, एक ही शरीर और बदजात आदमी हैं। तूती का पिंजड़ा ले कर वही औरत के भेष में आया था। आज सुना, किसी नवाब के यहाँ भी गये थे। वह आज़ाद जिनके धोखे में आप हैं, वह तो रूम गये हैं। इनका-उनका मुकाबिला क्या! वह आलिम-फाजिल, यह बेईमान-बदमाश। यह भी उसने गलत कहा कि हुस्नआरा बेगम का ब्याह हो गया।

बेगम—दारोगा, बात तो तुम पते की कहते हो, मगर ये बातें तुमसे बतायीं किसने?

दारोगा—हुजूर, वह चंडूबाज जो आजाद मिरजा के साथ आया था। उसी ने मुझसे बयान किया।

बेगम—ऐ है, अल्लाह ने बहुत बचाया।

महरी—और बातें कैसी चिकनी-चुपड़ी करता था!

दारोगा साहब चले गये तो बेगम ने चंडूबाज को बुलाया। महरियों ने परदा

करना चाहा तो बेगम ने कहा—जाने भी दो। बूढ़े खूसट से परदा क्या ?

चंडूबाज—हुज़ूर, कुछ ऊपर सौ बरस का सिन है।

बेगम—हाँ, आज़ाद मिरज़ा का तो हाल कहो।

चंडूबाज—उसके काटे का मंतर ही नहीं।

बेगम—तुमसे कहाँ मुलाकात हुई ?

चंडूबाज—एक दिन रास्ते में मिल गये।

बेगम—वह तो कैद न थे ! भागे क्योंकर ?

चंडूबाज—हुज़ूर, यह न पूछिए, तीन-तीन पहरे थे। मगर खुदा जाने, किस जादू-मंतर से तीनों को ढेर कर दिया और भाग निकला।

बेगम—अल्लाह बचाये ऐसे मूज़ी से।

चंडूबाज—हुज़ूर, मुझे भी खूब सब्ज़बाग़ दिखाया।

महरी—अल्लाह जानता है, मैं उसकी आँखों से ताड़ गयी थी कि बड़ा नटखट है।

चंडूबाज—हुज़ूर, यह कहना तो भूल ही गया था कि कैद से भाग कर थानेदार के मकान पर गया और उसे भी कत्ल कर दिया।

बेगम—सब आदमियों में से निकल भागा !

महरी—आदमी है कि जिन्नात !

अब्बासी—हुज़ूर, हमें आज डर मालूम होता है। ऐसा न हो, हमारे यहाँ भी चोरी करे।

चंडूबाज रुख़सत हो कर गये तो सुरैया बेगम सो गयीं। महरियाँ भी लेटीं, मगर अब्बासी की आँखों में नींद न थी। मारे खौफ़ के इतनी हिम्मत भी न बाकी रही कि उठ कर पानी तो पीती। प्यास से तालू में काँटे पड़े थे। मगर दबकी पड़ी थी। उसी वक्त हवा के झोंकों से एक कागज उड़ कर उसकी चारपाई के करीब खड़खड़ाया तो दम निकल गया।

सिपाही ने आवाज़ दी—'सोनेवाले जागते रहो।' और यह काँप उठी। डर था, कोई चिमट न जाये। लाशें आँखों-तले फिरती थीं। इतने में बारह का गजर ठना-ठन बजा। तब अब्बासी ने अपने दिल में कहा, अरे, अभी बारह ही बजे। हम समझे थे, सवेरा हो गया। एकाएक कोई बिहाग की धुन में गाने लगा—

सिपहिया जागत रहियो,
इस नगरी के दस दरवाजे निकस गया कोई और।
सिपहिया जागत रहियो।

अब्बासी सुनते-सुनते सो गयी; मगर थोड़ी देर में ठनाके की आवाज आयी तो जाग उठी। आदमी की आहट मालूम हुई। हाथ-पाँव काँपने लगे। इतने में बेगम साहब ने पुकारा—अब्बासी, पानी पिला। अब्बासी ने पानी पिलाया और बोली—हुज़ूर, अब कभी लाशों-वाशों का ज़िक्र न कीजिएगा। मेरा तो अजब हाल था। सारी रात आँखों में ही कट गयी।

बेगम—ऐसा भी डर किस काम का, दिन को शेर, रात को भेड़ ।

बेगम साहब सोने को ही थीं कि एक आदमी ने फिर गाना शुरू किया ।

बेगम—अच्छी आवाज़ है !

अब्बासी—पहले भी गा रहा था ।

महरी—ऐं, यह वकील हैं !

कुछ देर तक तीनों बातें करते-करते सो गयीं ! सबेरे मुँह-अँधेरे महरी उठी तो देखा कि बड़े कमरे का ताला टूटा पड़ा है । दो संदूक टूटे-फूटे एक तरफ़ रखे हुए हैं और असबाब सब तितर-बितर । गुल मचा कर कहा—अरे ! लुट गयी, हाय लोगों, लुट गयी ! घर में कुहराम मच गया । दारोग़ा साहब दौड़ पड़े । अरे, यह क्या ग़ज़ब हो गया । बेगम की भी नींद खुली । यह हालत देखी तो हाथ मल कर कहा—लुट गयी ! यह शोरगुल सुन कर पड़ोसिनें गुल मचाती हुईं कोठे पर आयीं और बोलीं—बहन, यह धमचख कैसा है ! क्या हुआ ? खैरियत तो है !

बेगम—बहन, मैं तो मर मिटी ।

पड़ोसिन—क्या चोरी हो गयी ? दो बजे तक तो मैं आप लोगों की बातें सुनती रही । यह चोरी किस वक़्त हुई ?

अब्बासी—बहन, क्या कहूँ, हाय !

पड़ोसिन—देखिए तो अच्छी तरह । क्या-क्या ले गया, क्या-क्या छोड़ गया ?

बेगम—बहन, किसके होश ठिकाने हैं ।

अब्बासी—मुझ जलम जली को पहले ही खटका हुआ था । कान खड़े हो गये; मगर फिर कुछ सुनायी न दिया । मैंने कुछ खयाल न किया ।

दारोग़ा—हुज़ूर, यह किसी शैतान का काम है । पाऊँ तो खा ही डालूँ ।

महरी—जिस हाथ से संदूक तोड़े, वह कट कर गिर पड़े । जिस पाँव से आया उसमें कीड़े पड़ें । मरेगा बिलख-बिलख कर ।

अब्बासी—अल्लाह करे, अठवारे ही में खटिया मचमचाती निकले ।

महरी—मगर अब्बासी, तुम भी एक ही कलजिभी हो । वही हुआ ।

सुरैया बेगम ने असबाब की जाँच की तो आधे से ज़्यादा ग़ायब पाया । रो कर बोलीं—लोगों, मैं कहीं की न रही । हाय मेरे अब्बा, दौड़ो । तुम्हारी लाड़िली बेटी आज लुट गयी । हाय मेरी अम्माँजान ! सुरैया बेगम अब फकीरिन हो गयी ।

पड़ोसिन—बहन, ज़रा दिल को ढारस दो । रोने से और हलाकान होगी ।

बेगम—किस्मत ही पलट गयी । हाय !

पड़ोसिन—ऐ ! कोई हाथ पकड़ लो । सिर फोड़े डालती हैं । बहन, बहन ! खुदा के वास्ते सुनो तो ! देखो, सब माल मिला जाता है । घबराओ नहीं ।

इतने में एक महरी ने गुल मचा कर कहा—हुज़ूर, यह जोड़ी कड़े की पड़ी है ।

अब्बासी—भागते भूत की लँगोटी ही सही ।

लोगों ने सलाह दी कि थानेदार को बुलाया जाय, मगर सुरैया बेगम तो थाने-

दार से डरी हुई थी; नाम सुनते ही काँप उठीं और बोलीं—बहन, माल चाहे यह भी जाता रहे, मगर थानेवालों को मैं अपनी ड्योढ़ी न नाँघने दूँगी। दारोग़ा जी ने आँख ऊपर उठायी तो देखा, छत कटी हुई है। समझ गये कि चोर छत काट कर आया था। एकाएक कई कान्स्टेबिल बाहर आ पहुँचे। कब वारदात हुई? नौ दफ़े तो हम पुकार गये। भीतर-बाहर से बराबर आवाज़ आयी। फिर यह चोरी कब हुई? दारोग़ा जी ने कहा—हमको इस टाँय-टाँय से कुछ वास्ता नहीं है जी? आये वहाँ से रोब जमाने! टके का आदमी और हमसे ज़बान मिलाता है। पड़े-पड़े सोते रहे और इस वक़्त तहक़ीक़ात करने चले हैं? साठ हज़ार का माल गया। कुछ ख़बर भी है!

कान्स्टेबिलों ने जब सुना कि साठ हज़ार की चोरी हुई तो होश उड़ गये। आपस में यों बातें करने लगे—

एक—साठ हज़ार! पचास और दुइ साठ? काहे?

दूसरा—पचास दुइ साठ नहीं; पचास और दस साठ!

तीसरा—अजी ख़ुदा-ख़ुदा करो। साठ हज़ार। क्या निरे जवाहिरात ही थे? ऐसे कहाँ के सेठ हैं!

दारोग़ा—समझा जायगा, देखो तो सही? तुम सबकी साज़िश है।

एक—दारोग़ा, तरकीब तो अच्छी की! शाबाश!

दूसरा—बेगम साहब के यहाँ चोरी हुई तो बला से। तुम्हारी तो हाँड़ियाँ चढ़ गयीं। कुछ हमारा भी हिस्सा है?

इतने में थानेदार साहब आ पहुँचे और कहा, हम मौक़ा देखेंगे। परदा कराया गया। थानेदार साहब अंदर गये तो बोले—अल्लाह, इतना बड़ा मकान है! तो क्यों न चोरी हो?

दारोग़ा—क्या? मकान इतना बड़ा देखा और आदमी रहते हैं सो नहीं देखते!

थानेदार—रात को यहाँ कौन सोया था?

दारोग़ा—अब्बासी, सबके नाम लिखवा दो।

थानेदार—बोलो अब्बासी महरी, रात को किस वक़्त सोयी थीं तुम?

अब्बासी—हुज़ूर, कोई ग्यारह बजे आँखें लगीं।

थानेदार—एक-एक बोटी फड़कती है। साहब के सामने इतना न चमकना।

अब्बासी—यह बातें मैं नहीं समझती। चमकना मटकना बाज़ारी औरतें जानें! हम हमेशा बेगमों में रहा किये हैं। यह इशारे किसी और से कीजिए। बहुत थानेदारी के बल पर न रहिएगा। देखा कि औरतें ही औरतें घर में हैं तो पेट से पाँव निकाले।

थानेदार—तुम तो जामे से बाहर हुई जाती हो।

बेगम साहब कमरे में खड़ी काँप रही थीं। ऐसा न हो, कहीं मुझे देख ले। थानेदार ने अब्बासी से फिर कहा—अपना बयान लिखवाओ।

अब्बासी—हम चारपाई पर सो रहे थे कि एक बार आँख खुली। हमने सुराही से पानी उँड़ेला और बेगम साहब को पिलाया।

थानेदार—जो चाहो, लिखवा दो। तुम पर दरोग़हल्फ़ी का जुर्म नहीं लग सकता।

अब्बासी—क्या ईमान छोड़ना है? जो ठीक-ठीक है वह क्यों छिपाये?

अब्बासी ने अँगुलियाँ मटका-मटका कर थानेदार को इतनी खरी-खोटी सुनायीं कि थानेदार साहब की शेखी किरकिरी हो गयी। दारोग़ा साहब से बोले—आपको किसी पर शक हो तो बयान कीजिए। बे-भेदिये के चोरी नहीं हो सकती। दारोग़ा ने कहा—हमें किसी पर शक नहीं। थानेदार ने देखा कि यहाँ रंग न जमेगा तो चुपके से रुखसत हुए।

७४

खोजी आजाद के बाप बन गये तो उनकी इज्जत होने लगी। तुर्की क़ैदी हरदम उनकी खिदमत करने को मुस्तैद रहते थे। एक दिन एक रूसी फ़ौजी अफ़सर ने उनकी अनोखी सूरत और माशे-माशे भर के हाँथ पाँव देखे तो जी चाहा कि इनसे बातें करें। एक फ़ारसीदाँ तुर्क को मुतरज्जिम बना कर ख्वाजा साहब से बातें करने लगा।

अफ़सर—आप आजाद पाशा के बाप हैं?

खोजी—बाप तो क्या हूँ, मगर खैर, बाप ही समझिए। अब तो तुम्हारे पंजे में पड़ कर छक्के छूट गये।

अफ़सर—आप भी किसी लड़ाई में शरीक हुए थे?

खोजी—वाह, और जिंदगी-भर करता क्या रहा? तुम जैसा गौखा अफ़सर आज ही देखा। हमारा कैंडा ही गवाही देता है कि हम फ़ौज के जवान हैं। कैंडे से नहीं पहचानते? इसमें पूछने की क्या जरूरत है! दगलेवाली पल्टन के रिसालदार थे। आप हमसे पूछते हैं, कोई लड़ाई देखी है! जनाब, यहाँ बड़-बड़ लड़ाइयाँ देखी हैं कि आदमी की भूख-प्यास बंद हो जाय।

अफसर—आप गोली चला सकते हैं?

खोजी—अजी हजरत, अब फ़रद खुलवाइए। पूछते हैं गोली चलायी है! जरा सामने आ जाइए तो बताऊँ। एक बार एक कुत्ते से और हमसे लाग-डाट हो गयी। खुदा की कसम, हमसे कुत्ता ग्यारह-बारह कदम पर पड़ा था। धरके दाग़ता हूँ तो पों-पों करता हुआ भाग खड़ा हुआ।

अफ़सर—ओ हो! आप खूब गोली चलाता है।

खोजी—अजी, तुम हमको जवानी में देखते!

अफ़सर ने इनकी बेतुकी बातें सुन कर हुक्म दिया कि दोनाली बंदूक लाओ। तब तो मियाँ खोजी चकराये। सोचे कि हमारी सात पीढ़ियों तक तो किसी ने बंदूक चलायी नहीं और न हमको याद आता है कि बंदूक कभी उम्र भर छुई भी हो; मगर, इस वक्त तो आबरू रखनी चाहिए। बोले इस बंदूक में गज़ तो नहीं होता?

अफसर—उड़ती चिड़िया पर निशाना लगा सकते हो?

खोजी—उड़ती चिड़िया कैसी! आसमान तक के जानवरों को भून डालूँ।

अफसर—अच्छा तो बंदूक लो।

खोजी—ताक कर निशाना लगाऊँ तो दरख्त की पत्तियाँ गिरा दूँ?

यह कह कर आप टहलने लगे।

अफसर—आप निशाना क्यों नहीं लगाता? उठाइए बंदूक।

खोजी ने ज़मीन में खूब जोर से ठोकर मारी और एक ग़ज़ल गाने लगे। अफसर

दिल में खूब समझ रहा था कि यह आदमी महज़ डींगें मारना जानता है। बोला—अब बंदूक लेते हो या इसी बंदूक से तुमको निशाना बनाऊँ?

ख़ैर, बड़ी देर तक दिल्लगी रही। अफ़सर खोजी से इतना खुश हुआ कि पहरेवालों को हुक्म दे दिया कि इन पर बहुत सख़्ती न रखना। रात को खोजी ने सोचा कि अब भागने की तदबीर सोचनी चाहिए वरना लड़ाई ख़त्म हो जायगी और हम न इधर के रहेंगे, न उधर के। आधी रात को उठे और ख़ुदा से दुआ माँगने लगे कि ऐ ख़ुदा! आज रात को तू मुझे इस क़ैद से नजात दे। तुर्कों का लश्कर नज़र आये और मैं गुल मचा कर कहूँ कि हम आ पहुँचे; आ पहुँचे। आज़ाद से भी मुलाक़ात हो और ख़ुश-ख़ुश वतन चलें।

यह दुआ माँग कर खोजी रोने लगे। हाय, अब वह दिन कहाँ नसीब होंगे कि नवाबों के दरबार में गप उड़ा रहे हों। वह दिल्लगी, वह चुहल अब नसीब हो चुकी। किस मज़े से कटी जाती थी और किस लुत्फ़ से गड़ेरिया चूसते थे! कोई खुटियाँ ख़रीदता है, कोई कतारे चुकाता है। शोर गुल की यह कैफ़ियत है कि कान पड़ी आवाज़ नहीं सुनायी देती, मक्खियों की भिन-भिन एक तरफ़, छिलकों का ढेर दूसरी तरफ़, कोई औरत चंडूख़ाने में आ गयी तो और भी चुहल होने लगी।

दो बजे खोजी बाहर निकले तो उनकी नज़र एक छोटे से टट्टू पर पड़ी। पहरेवाले सो रहे थे। खोजी टट्टू के पास गये और उसकी गरदन पर हाथ फेर कर कहा—बेटा, कहीं दग़ा न देना। माना कि तुम छोटे-मोटे टट्टू हो और ख़्वाजा साहब का बोझ तुमसे न उठ सकेगा, मगर कुछ परवा नहीं, हिम्मते मरदाँ मददे ख़ुदा। टट्टू को खोला और उस पर सवार हो कर आहिस्ता-आहिस्ता कैम्प से बाहर की तरफ़ चले। बदन काँप रहा था, मगर जब कोई सौ क़दम के फ़ासिले पर निकल गये तो एक सवार ने पुकारा—कौन जाता है? खड़ा रह!

खोजी—हम हैं जी ग्रासकट, सरकारी घोड़ों की घास छीलते हैं।

सवार—अच्छा तो चला जा।

खोजी जब ज़रा दूर निकल आये तो दो-चार बार ख़ूब गुल मचाया—मार लिया, मार लिया! ख़्वाजा साहब दो करोड़ रूसियों मे से बेदाग़ निकले आते हैं। लो भई तुर्को, ख़्वाजा साहब आ पहुँचे।

अपनी फ़तह का डंका बजा कर खोजी घोड़े से उतरे और चादर बिछा कर सोये तो ऐसी मीठी नींद आयी कि उम्र भर न आयी थी। घड़ी भर रात बाक़ी थी कि उनकी नींद खुली। फिर घोड़े पर सवार हुए और आगे चले। दिन निकलते-निकलते उन्हें एक पहाड़ के नज़दीक एक फ़ौज मिली। आपने समझा कि तुर्कों की फ़ौज है। चिल्लाकर बोले—आ पहुँचे; आ पहुँचे! अरे यारो दौड़ो। ख़्वाजा साहब के क़दम धो-धो कर पीओ, आज ख़्वाजा साहब ने वह काम किया कि रुस्तम के दादा से भी न हो सकता। दो करोड़ रूसी पहरा दे रहे थे और मैं पैंतरे बदलता हुआ दन से ग़ायब, लकड़ी टेकी और उड़ा। दो करोड़ रूसी दौड़े, मगर मुझे पकड़ पाना दिल्लगी

नहीं। कह दिया, लो हम लम्बे होते हैं, चोरी से नहीं चले, डंके की चोट कह कर चले।

अभी वह यह हाँक लगा ही रहे थे कि पीछे से किसी ने दोनों हाथ पकड़ लिये और घोड़े से उतार लिया।

खोजी—ऐं, कौन है भई? मैं समझ गया मियाँ आज़ाद हैं।

मगर आज़ाद वहाँ कहाँ, यह रूसियों की फ़ौज थी। उसे देखते ही खोजी का नशा हिरन हो गया। रूसियों ने उन्हें देख कर खूब तालियाँ बजायीं। खोजी दिल ही दिल में कटे जाते थे, मगर बचने की कोई तदबीर न सूझती थी। सिपाहियों ने खोजी को चपतें जमानी शुरू कीं। उधर देखा, इधर पड़ी। खोजी बिगड़ कर बोले—अच्छा गीदी, इस वक्त तो बेबस हूँ, अबकी फँसाओ तो कहूँ। कसम है अपने कदमों की, आज तक कभी किसी को नहीं सताया। और सब कुछ किया, पतंग उड़ाये, चंडू पिया, अफीम खायी, चरस के दम लगाये, मदक के छींटे उड़ाये, मगर किस मरदूद ने किसी ग़रीब को सताया हो!

यह सोच कर खोजी की आँखों से आँसू निकल आये।

एक सिपाही ने कहा—बस, अब उसको दिक़ न करो। पहले पूछ लो कि यह है कौन आदमी। एक बोला—यह तुर्की है, कपड़े कुछ बदल डाले हैं। दूसरे ने कहा—यह गोइंदा है, हमारी टोह में आया है।

औरों को भी यही शुबहा हुआ। कई आदमियों ने खोजी की तलाशी ली। अब खोजी और सब असबाब तो दिखाते हैं, मगर अफीम की डिबिया नहीं खोलते।

एक रूसी—इसमें कौन चीज है? क्यों तुम इसको खोलने नहीं देते? हम जरूर देखेंगे।

खोजी—ओ गीदी, मारूँगा बंदूक, धुआँ उस पार हो जायगा। खबरदार जो डिबिया हाथ से छुई! अगर तुम्हारा दुश्मन हूँ तो मैं हूँ। मुझे चाहे मारो, चाहे क़ैद करो, पर मेरी डिबिया में हाथ न लगाना।

रूसियों को यकीन हो गया कि डिबिया में जरूर कोई क़ीमती चीज है। खोजी से डिबिया छीन ली। मगर अब उनमें आपस में लड़ाई होने लगी। एक कहता था, डिबिया हमारी है, दूसरा कहता था, हमारी है। आखिर यह सलाह हुई कि डिबिया में जो कुछ निकले वह सब आदमियों में बराबर-बराबर बाँट दी जाय। ग़रज़ डिबिया खोली गयी तो अफ़ीम निकली। सब के सब शर्मिंदा हुए। एक सिपाही ने कहा—इस डिबिया को दरिया में फेंक दो। इसी के लिए हममें तलवार चलते-चलते बची।

दूसरा बोला—इसे आग में जला दो।

खोजी—हम कहे देते हैं, डिबिया हमें वापस कर दो, नहीं हम बिगड़ जायँगे तो क़यामत आ जायगी। अभी तुम हमें नहीं जानते।

सिपाहियों ने समझ लिया कि यह कोई दीवाना है, पागलखाने से भाग आया है। उन्होंने खोजी को एक बड़े पिंजरे में बंद कर दिया। अब मियाँ खोजी की

सिट्टी-पिट्टी भूल गयी। चिल्ला कर बोले—हाय आजाद! अब तुम्हारी सूरत न देखेंगे। खैर, खोजी ने नमक का हक अदा कर दिया। अब वह भी कैद की मुसीबतें झेल रहा है और सिर्फ़ तुम्हारे लिए। एक बार जालिमों के पंजे से किसी तरह मार-कूट कर निकल भागे थे, मगर तकदीर ने फिर कैद में ला फँसाया। जवाँमरदों पर हमेशा मुसीबत आती है, इसका तो ग़म नहीं; ग़म इसी का है कि शायद अब तुमसे मुलाक़ात न होगी। खुदा तुम्हें खुश रखे, मेरी याद करते रहना—

शायद वह आयें मेरे जनाजे प' दोस्तो,
आँखें खुली रहें मेरी दीदार के लिए।

७५

मियाँ आजाद कासको के साथ साइबेरिया चले जा रहे थे। कई दिन के बाद वह डैन्यूब नदी के किनारे जा पहुँचे। वहाँ उनकी तबियत इतनी खुश हुई कि हरी-हरी दूब पर लेट गये और बडी हसरत से यह गजल पढने लगे—

रख दिया सिर को तेगे कातिल पर,
हम गिरे भी तो जाके मजिल पर।
आँख जब बिसमिलो में ऊँची हो,
सिर गिरे कटके पाय कातिल पर।
एक दम भी तडप से चैन नही,
देख लो हाथ रखके तुम दिल पर।

यह गजल पढते-पढते उन्हे हुस्नआरा की याद आ गयी और आँखों से आँसू गिरने लगे। कासक लोगो ने समझाया कि भई, अब वे बाते भूल जाओ, अब यह समझो कि तुम वह आजाद ही नही हो। आजाद खिल-खिला कर हँसे और ऐसा मालूम हुआ कि वह आपे में नही है। कासकों ने घबरा कर उनको सँभाला और समझाने लगे कि यह वक्त सब्र से काम लेने का है। अगर होश-हवाश ठीक रहे तो शायद किसी तदबीर से वापस जा सको वरना खुदा ही हाफिज है। साइबेरिया से कितने ही कैदी भाग आते हैं, मगर तुम तो अभी से हिम्मत हारे देते हो।

इतने मे वह जहाज जिस पर सवार होकर आजाद को डैन्यूब के पार जाना था, तैयार हो गया। तब तो आजाद की आँखों से आँसुओं का ऐसा तार बँधा कि कासको के भी रूमाल तर हो गये। जिस वक्त जहाज पर सवार हुए दिल काबू मे न रहा। रो-रो कर कहने लगे—हुस्नआरा, अब आजाद का पता न मिलेगा। आजाद अब दूसरी दुनिया मे है, अब ख्वाब मे इस आजाद की सूरत न देखोगी जिसे तुमने रूम भेजा।

यह कहते-कहते आजाद बेहोश हो गये। कासको ने उनको इत्र सुँघाया और खूब पानी के छींटे दिये तब जा कर कही उनकी आँखे खुली। इतने मे जहाज उस पार पहुँच गया तो आजाद ने रूम की तरफ मुँह करके कहा—आज सब झगडा खत्म हो गया। अब आजाद की कब्र साइबेरिया मे बनेगी और कोई उस [illegible]र रोनेवाला न होगा।

कासकों ने शाम को एक बाग मे पडाव डाला और रात भर वही आराम किया। लेकिन जब सुबह को कूच की तैयारियाँ होने लगी तो आजाद का पता [illegible] था। चारो तरफ हुल्लड मच गया, इधर-उधर सवार छूटे, पर आजाद का पता [illegible] पाया। वह बेचारे एक नयी मुसीबत में फँस गये थे।

सबेरे मियाँ आजाद की आँख जो खुली तो अपने को अजब हालत मे पाया।

जोर की प्यास लगी हुई थी, तालू सूखा जाता था, आँख भारी, तबीयत सुस्त, जिस चीज पर नजर डालते थे, धुँधली दिखायी देती थी। हाँ, इतना अलबत्ता मालूम हो रहा था कि उनका सिर किसी के जानू पर है। मारे प्यास के ओठ सूख गये थे, गो आँखे खोलते थे, मगर बात करने की ताकत न थी। इशारे से पानी माँगा और जब पेट भर पानी पी चुके तो होश आया। क्या देखते है कि एक हसीन औरत सामने बैठी हुई है। औरत क्या, हूर थी। आजाद ने कहा, खुदा के वास्ते बताओ कि तुम कौन हो? हमे कैसे यहाँ फाँस लायी, मेरी तो कुछ समझ ही मे नही आता, कासक कहाँ हैं? डैन्यूब कहाँ है? मैं यहाँ क्यो छोड दिया गया? क्या साइबेरिया इसी मुकाम का नाम है? हसीना ने आँखो के इशारे से कहा—सब्र करो, सब कुछ मालूम हो जायगा। आप तुर्की है या फ्रासीसी?

आजाद—मैं हिंदी हूँ। क्या यह आप ही का मकान है?

हसीना—नही, मेरा मकान पोलेंड मे है, मगर मुझे यह जगह बहुत पसद है। आइए, आपको मकान की सैर कराऊँ।

आजाद ने देखा कि पहाड की एक ऊँची चोटी पर कीमती पत्थरों की एक कोठी बनी है। पहाड ढालू था और उस पर हरी-हरी घास लहरा रही थी। एक मील के फासिले पर एक पुराना गिरजा का सुनहला मीनार चमक रहा था। उत्तर की तरफ डैन्यूब नदी अजब शान से लहरे मारती थी। किश्तियाँ दरिया मे आती है। रूस की फौजे दरिया के पार जाती है। मेढा हवा से उछल रहा है। कोठी के अदर गये तो देखा कि पहाड को काट कर दीवारे बनी है। उसकी सजावट देख कर उनकी आँखें खुल गयी। छत पर गये तो ऐसा मालूम हुआ कि आसमान पर जा पहुँचे। चारो तरफ पहाडो की ऊँची-ऊँची चोटियाँ हरी हरी दूब से लहरा रही थी। कुदरत का यह तमाशा देख कर आजाद मस्त हो गये और यह शेर उनकी जबान से निकला—

लगी है मेह की झडी, बाग मे चलो झूल,
कि झूलने का मजा भी इसी बहार मे है।

यह कौन फूटके रोया कि दर्द की आवाज,
रची हुई जो पहाडो के आबशार मे है।

हसीना—मुझे यह जगह बहुत पसन्द है। मैंने जिंदगी भर यही रहने का इरादा किया है, अगर आप भी यही रहते तो बडे मजे से जिंदगी कटती!

आजाद—यह आपकी मिहरबानी है! मैं तो लडाई खत्म हो जाने के बाद अगर छूट सका तो वतन चला जाऊँगा।

हसीना—इस खयाल में न रहिएगा, अब इसी को अपना वतन समझिए।

आजाद—मेरा यहाँ रहना कई जानों का गाहक हो जायगा। जिस खातून ने मुझे लडाई में शरीक होने के लिए यहाँ भेजा है, वह मेरे इन्तजार मे रो-रो कर जान दे देगी।

हसीना—आपकी रिहाई अब किसी तरह मुमकिन नहीं। अगर आपको अपनी जान की मुहब्बत है तो वतन का खयाल छोड़ दीजिए, वरना सारी जिंदगी साइबेरिया में काटनी पड़ेगी।

आज़ाद—इसका कोई ग़म नहीं, मगर कौल जान के साथ है।

हसीना—मैं फिर समझाये देती हूँ। आप पछतायेंगे।

आज़ाद—आपको अख्तियार है।

यह सुनते ही उस औरत ने आजाद को फिर कैदखाने में भेजवा दिया।

अब मियाँ खोजी का हाल सुनिए। रूसियों ने उन्हें दीवाना समझ कर जब छोड़ दिया तो आप तुर्कों की फ़ौज में पहुँच कर दून की लेने लगे। हमने यों रूसियों से मुकाबिला किया और यों नीचा दिखाया। एक रूसी पहलवान से मेरी कुश्ती भी हो गयी, बहुत बफर रहा था। मुझसे न रहा गया। लँगोट कसा और खुदा का नाम ले कर ताल ठोंकके अखाड़े मे उतर पड़ा, वह भी दाँव-पेंच में बर्क़ था और हाथ-पाँव ऐसे कि क्या कहूँ। मेरे हाथ-पाँव से भी बड़े।

एक सिपाही—ऐं, अजी हम न मानेंगे। आपके हाथ-पाँव से ही हाथ-पाँव तो देव के भी न होंगे!

खोजी—बस, ज्यों ही उसने हाथ बढ़ाया, मैंने हाथ बाँध लिया। फिर जो जोर करता हूँ तो हाथ खट से अलग!

सिपाही—अरे, हाथ ही तोड़ डाले। बेचारे को कहीं का न रखा!

खोजी—बस, फिर दूसरा आया, मैंने गरदन पकड़ी और अटी दी, धम से गिरा। तीसरा आया, चपत जमायी और घर दबाया। चौथा आया, अड़ंगा मारा और धम से गिरा दिया। पाँचवाँ आया और मैंने मारे क़रौलियों के कचूमर निकाल लिया।

सिपाही—आपने बुरा किया। ताकतवर लोग कमजोरों पर रहम किया करते हैं।

खोजी—तब कई सवार तोपें लिये हुए आये; मगर मैंने सबको पटका। आखिर कोई सत्तर आदमी मिल कर मुझ पर टूट पड़े तब जाके कहीं मैं गिरफ़्तार हुआ।

सिपाही—बस, सत्तर ही! सत्तर आदमियों को तो आप पीस कर धर देते। कम से कम कोई दो सौ तो जरूर होंगे!

खोजी—झूठ न बोलूँगा, मुझे सबों ने रखा बड़ी इज्जत के साथ। रात भर तो मैं वहीं रहा, सबेरा होते ही क़रौली ले कर ललकारा कि आ जाओ जिसको आना हो, बदा चलता है। बस कोई दो करोड़ रूसी निकल पड़े—लेना-लेना! अरे मैंने कहा कि किसका लेना और किसका देना, आ जा जिसे आना हो। खुदा की कसम जो किसी ने चूँ भी की हो। सब के सब डर गये।

तुर्क समझ गये कि निरा जाँगलू है। खोजी ने यही समझा कि मैंने इन सबों को उल्लू बनाया। दिन भर तो पीनक लेते रहे, शाम के वक्त हवा खाने निकले। इत्तिफ़ाक़ से राह में एक गधा मिल गया। आप फ़ौरन गधे पर सवार हुए और टिक-टिक

करते चले। थोड़ी ही दूर गये थे कि एक आदमी ने ललकारा—रोक ले गधा, कहाँ लिये जाता है ?

खोजी—हट जा सामने से।

जवान—उतर गधे से। उतरता है या मैं दूँ खाने भर को ?

खोजी—तू नहीं छोड़ेगा, निकालूँ करौली फिर ?

आखिर, उस जवान ने खोजी को गधे से ढकेल दिया, तब आप चोर-चोर का गुल मचाने लगे। यह गुल सुन कर दो-चार आदमी आ गये और खोजी को चपतें जमाने लगे।

खोजी—तुम लोगों की कजा आयी है, मैं धुनके रख दूँगा।

जवान—चुपके से घर की राह लो, ऐसा न हो, मुझे तुम्हारी खोपड़ी सुहलानी पड़े।

इत्तिफाक से एक तुर्की सवार का उस तरफ से गुजर हुआ। खोजी ने चिल्ला कर कहा—दोहाई है सरकार की ! यह डाकू मारे डालते हैं।

सवार ने खोजी को देख कर पूछा—तुम यहाँ कहाँ ?

खोजी—ये लोग मुझे तुर्की का दोस्त समझ कर मारे डालते हैं।

सवार ने उन आदमियों को डाँटा और अपने साथ चलने का हुक्म दिया। खोजी शेर हो गये। एक के कान पकड़े और कहा, आगे चल। दूसरे पर चपत जमायी और कहा, पीछे चल।

इस तरह खोजी ने इन बेचारों की बुरी गत बनायी, मगर पड़ाव पर पहुँच कर उन्हें छोड़वा दिया।

जब सब लोग खा कर लेटे तो खोजी ने फिर डींग मारनी शुरू की। एक बार मैं दरिया नहाने गया तो बीचोबीच में जा कर ऐसा ग़ोता लगाया कि तीन दिन पानी से बाहर न हुआ।

एक सिपाही—तब तो आप यों कहिए कि आप ग़ोताखोरों के उस्ताद हैं। कल ज़रा हमें भी ग़ोता ले कर दिखाइए।

खोजी—हाँ-हाँ, जब कहो।

सिपाही—अच्छा तो कल की रही।

खोजी ने समझा, यह सब रोब मे आ जायँगे। मगर वे एक छटे गुर्गे। दूसरे दिन उन सबों ने खोजी को साथ लिया और दरिया नहाने को चले। पड़ाव से दरिया साफ़ नजर आता था। खोजी के बदन के रोंगटे खड़े हो गये। भागने ही को थे कि एक आदमी ने रोक लिया और दो तुर्कों ने उनके कपड़े उतार लिये। खोजी की यह कैफियत थी कि कलेजा थरथर काँप रहा था, मगर जबान से बात न निकलती थी। जब उन्होंने देखा कि अब गला न छूटेगा तो मिन्नतें करने लगे—भाइयो, मेरी जान के क्यों दुश्मन हुए हो ? अरे यारो, मैं तुम्हारा दोस्त हूँ, तुम्हारे सबब से इतनी ज़हमत उठायी, कैद हुआ और अब तुम लोग हँसी-हँसी में मुझे डुबा देना चाहते हो।

ग़रज़ खोजी बहुत गिड़गिड़ाये, मगर तुर्कों ने एक न मानी। खोजी मिन्नतें करते-करते थक गये तो कोसने लगे—ख़ुदा तुमसे समझे! यहाँ कोई अफ़सर भी नहीं है। न हुई करौली, नहीं इस वक़्त जीता चुनवा देता। ख़ुदा करे, तुम्हारे ऊपर बिजली गिरे! सब के सब कपड़े उतार लिये, गोया उनके बाप का माल था। अच्छा गीदी, अगर जीता बचा तो समझ लूँगा। मगर दिल्लगीबाज़ों ने इतने ग़ोते दिये कि वे बेदम हो गये और एक ग़ोता खा कर डूब गये।

७६

आजाद को साइबेरिया भेज कर मिस क्लारिसा अपने वतन को रवाना हुई और रास्ते में एक नदी के किनारे पड़ाव किया। वहाँ की आब-हवा उसको ऐसी पसंद आयी कि कई दिन तक उसी पड़ाव पर शिकार खेलती रही। एक दिन मिस क्लारिसा ने सुबह को देखा कि उसके खेमे के सामने एक दूसरा बहुत बड़ा खेमा खड़ा हुआ है। हैरत हुई कि या खुदा, यह किसका सामान है। आधी रात तक सन्नाटा था, एकाएक खेमे कहाँ से आ गये! एक औरत को भेजा कि जा कर पता लगाये कि ये लोग कौन हैं। वह औरत जो खेमे में गयी तो क्या देखती है कि एक जवाहिरनिगार तख्त पर एक हूरों को शरमानेवाली शाहजादी बैठी हुई है। देखते ही दंग हो गयी। जा कर मिस क्लारिसा से बोली—हुजूर, कुछ न पूछिए, जो कुछ देखा, अगर ख्वाब नहीं तो जादू जरूर है। ऐसी औरत देखी कि परी भी उसकी बलायें ले।

क्लारिसा—तुमने कुछ पूछा भी कि हैं कौन?

लौंडी—हुजूर, मुझ पर तो ऐसा रोब छाया कि मुँह से बात ही न निकली। हाँ, इतना मालूम हुआ कि एक रईसजादी है और सैर करने के लिए आयी हैं।

इतने में वह औरत खेमे से बाहर निकल आयी। क्लारिसा ने झुक कर उसको सलाम किया और चाहा कि बढ़ कर हाथ मिलाये, मगर उसने क्लारिसा की तरफ तेज निगाहों से देख कर मुँह फेर लिया। वह कोहकाफ़ की परी मीडा थी। जब से उसे मालूम हुआ था कि क्लारिसा ने आजाद को साइबेरिया भेजवा दिया है, वह उसके खून की प्यासी हो रही थी। इस वक्त क्लारिसा को देख कर उसके दिल ने कहा कि ऐसा मौका फिर हाथ न आयेगा, मगर फिर सोचा कि पहले नरमी से पेश आऊँ। बातों-बातों में सारा माजरा कह सुनाऊँ, शायद कुछ पसीजे।

क्लारिसा—तुम यहाँ क्या करने आयी हो?

मीडा—मुसीबत खींच लायी है, और क्या कहूँ। लेकिन आप यहाँ कैसे आयीं?

क्लारिसा—मेरा भी वही हाल है। वह देखिए, सामने जो क़ब्र है उसी में वह दफन है जिसकी मौत ने मेरी जिंदगी को मौत से बदतर बना दिया है। हाय! उसकी प्यारी सूरत मेरी निगाह के सामने है, मगर मेरे सिवा किसी को नजर नहीं आती।

मीडा—मैं भी उसी मुसीबत मे गिरफ़्तार हूँ। जिस जवान को दिल दिया, जान दी, ईमान दिया, वह अब नजर नहीं आता, उसको एक जालिम बाग़वान ने बाग़ से जुदा कर दिया। खुदा जाने, वह ग़रीब किन जंगलों में ठोकरें खाता होगा।

क्लारिसा—मगर तुम्हें यह तसकीन तो है कि तुम्हारा यार जिंदा है और कभी न कभी उससे मुलाकात होगी। मैं तो उसके नाम कोरो चुकी। मेरे और उसके

माँ-बाप शादी करने पर राजी थे, हम खुश थे कि दिल की मुरादें पूरी होंगी, मगर शादी के एक ही दिन पहले आसमान टूट पड़ा, मेरे प्यारे को फ़ौज में शरीक होने का हुक्म मिला। मैंने सुना तो जान सी निकल गयी। लाख समझाया, मगर उसने एक न सुनी। जिस रोज़ यहाँ से रवाना हुआ, मैंने खूब मातम किया और रुखसत हुई। यहाँ रात-दिन उसकी जुदाई में तड़पा करती थी, मगर अखबारों में लड़ाई के हाल पढ़ कर दिल को तसल्ली देती थी। एकाएक अखबार में पढ़ा कि उसकी एक तुर्की पाशा से तलवार चली, दोनों जख्मी हुए, पाशा तो बच गया, मगर वह बेचारा जान से मारा गया। उस पाशा का नाम आज़ाद है। यह खबर सुनते ही मेरी आँखों में खून उतर आया, दिल में ठान लिया कि अपने प्यारे के खून का बदला आज़ाद से लूँगी। यह तय करके यहाँ से चली और जब आज़ाद मेरे हाथों से बच गया तो मैंने उसे साइबेरिया भेजवा दिया।

मीडा यह सुन कर बेहोश हो गयी।

७७

जिस वक्त खोजी ने पहला ग़ोता खाया तो ऐसे उलझे कि उमरना मुश्किल हो गया। मगर थोड़ी ही देर में तुर्कों ने ग़ोते लगा कर इन्हें ढूँढ़ निकाला। आप किसी क़दर पानी पी गये थे। बहुत देर तक तो होश ही ठिकाने न थे। जब ज़रा होश आया तो सबको एक सिरे से गालियाँ देना शुरू कीं। सोचे कि दो-एक रोज में जरा टाँठा हो लूँ तो इनसे खूब समझूँ। डेरे पर आ कर आजाद के नाम खत लिखने लगे। उनसे एक आदमी ने कह दिया था कि अगर किसी आदमी के नाम खत भेजना हो और पता न मिलता हो तो खत को पत्तों में लपेट दरिया के किनारे खड़ा हो और तीन बार 'भेजो-भेजो' कह कर खत को दरिया में डाल दे, खत आप ही आप पहुँच जायगा। खोजी के दिल में यह बात बैठ गयी। आजाद के नाम एक खत लिख कर दरिया में डाल आये। उस खत में आपने बहादुरी के कामों की खूब डींगें मारी थीं।

रात का वक़्त था, ऐसा अँधेरा छाया हुआ था, गोया तारीकी का दिल सोया हो। ठंडी हवा के झोंके इतने जोर से चलते थे कि रूह तक काँप जाती थी। एका-एक रूस की फ़ौज से नक्कारे की आवाज़ आयी। मालूम हुआ कि दोनों तरफ के लोग लड़ने को तैयार हैं। खोजी घबरा कर उठ बैठे और सोचने लगे कि यह आवाजें कहाँ से आ रही हैं? इतने में तुर्की फ़ौज भी तैयार हो गयी और दोनों फ़ौजें दरिया के किनारे जमा हो गयीं। खोजी ने दरिया की सूरत देखी तो काँप उठे। कहा—अगर खुश्की की लड़ाई होती तो हम भी आज जौहर दिखाते। यों तो सब अफसर और सिपाही ललकार रहे थे, मगर खोजी की उमंगें सबसे बढ़ी हुई थीं। चिल्ला चिल्ला कर दरिया से कह रहे थे कि अगर तू खुश्क हो जाय तो मैं फिर मजा दिख-लाऊँ। एक हाथ में परे के परे काट कर रख दूँ।

गोला चलने लगा। तुर्कों की तरफ़ से एक इंजीनियर ने कहा कि यहाँ से आध मील के फ़ासिले पर किश्तियों का पुल बाँधना चाहिए। कई आदमी दौड़ाये गये कि जा कर देखें, रूसियों की फ़ौजें किस-किस मुकाम पर हैं। उन्होंने आ कर बयान किया कि एक कोस तक रूसियों का नाम-निशान नहीं है। फौरन पुल बनाने का इंतजाम होने लगा। यहाँ से डेढ़ कोस पर पैंतीस किश्तियाँ मौजूद थीं। अफसर ने हुक्म दिया कि उन किश्तियों को यहाँ लाया जाय। उसी दम दो सवार घोड़े कड़कड़ाते हुए आये। उनमें से एक खोजी थे।

खोजी—पैंतीस किश्तियाँ यहाँ से आधा कोस पर मुस्तैद हैं। मैंने सोचा, जब तक सवार तुम्हारे पास पहुँचेंगे और तुम हुक्म दोगे कि किश्तियाँ आयें तब तक यहाँ खुदा जाने क्या हो जाय, इसलिए एक सवार को ले कर फौरन किश्तियों को इधर ले आया।

फ़ौज के अफ़सर ने यह सुना तो खोजी की पीठ ठोंक दी और कहा—शाबाश! इस वक़्त तो तुमने हमारी जान बचा दी।

खोजी अकड़ गये। बोले—जनाब, हम कुछ ऐसे-वैसे नहीं हैं। आज हम दिखा देंगे कि हम कौन हैं। एक-एक को चुन-चुन कर मारूँ!

इतने में इंजीनियरों ने फ़ुर्ती के साथ किश्ती का पुल बाँधने का इंतज़ाम किया। जब पुल तैयार हो गया तो अफ़सर ने कुछ सवारों को उस पार भेजा। खोजी भी उनके साथ हो लिये। जब पुल के बीच में पहुँचे तो एक दफ़ा गुल मचाया—ओ मीदी, हम आ पहुँचे।

तुर्कों ने उनका मुँह दबाया और कहा—चुप!

इतने में तुर्कों का दस्ता उस पार पहुँच गया। रूसियों को क्या खबर थी कि तुर्क लोग क्या कर रहे हैं। इधर खोजी जोश में आ कर तीन-चार तुर्कों को साथ ले दरिया के किनारे-किनारे घुटनों के बल चले। जब उनको मालूम हो गया कि रूसी फ़ौज थक गयी तो तुर्कों ने एक दम से धावा बोल दिया। रूसी घबरा उठे। आपस में सलाह की कि अब भाग चलें। खोजी भी घोड़े पर सवार थे, रूसियों को भागते देखा तो घोड़े को एक एड़ दी और भागते सिपाहियों में से सात आदमियों के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। तुर्की फौज में वाह-वाह का शोर मच गया। ख्वाजा साहब अपनी तारीफ़ सुन कर ऐसे खुश हुए कि परे में घुस गये और घोड़े को बढ़ा-बढ़ा कर तलवार फेंकने लगे। दम के दम में रूसी सवारों से मैदान खाली कर दिया। तुर्की फ़ौज में खुशी के शादियाने बजने लगे। ख्वाजा साहब के नाम फ़तह लिखी गयी। इस वक्त उनके दिमाग़ सातवें आसमान पर थे। अकड़े खड़े थे। बात-बात पर बिगड़ते। हुक्म दिया—फ़ौज के जनरल से कहो, आज हम उनके साथ खाना खायेंगे। खाना खाने बैठे तो मुँह बनाया, वाह! इतने बड़े अफ़सर और यह खाना। न मीठे चावल, न फिरनी, न पोलाव। खाना खाते वक़्त अपनी बहादुरी की कथा कहने लगे—वल्लाह, सबों के हौसले पस्त कर दिये। ख्वाजा साहब हैं कि बातें! मेरा नाम सुनते ही दुश्मनों के कलेजे काँप गये। हमारा वार कोई रोक ले तो जानें। बरसों मुसीबतें झेली हैं तब जाके इस काबिल हुए कि रूसियों के लश्कर में अकेले घुस पड़े। और हमें डर किसका है? बहिश्त के दरवाज़े खुले हुए हैं।

अफसर—हमने वजीर-जंग से दरख्वास्त की है कि तुमको इस बहादुरी का इनाम मिले।

खोजी—इतना जरूर लिखना कि यह आदमी दगलेवाली पलटन का रिसाल-दार था।

अफ़सर—दगलेवाली पलटन कैसी? मैं नहीं समझा।

खोजी—तुम्हारे मारे नाक में दम है और तुम हिंदी की चिंदी निकालते हो। अवध का हाल मालूम है या नहीं? अवध से बढ़ कर दुनिया में और कौन बादशाहत होगी?

अफ़सर—हमने अवध का नाम नहीं सुना। आपको कोई खिताब मिले तो आप पसंद करेंगे?

खोजी—वाह, नेकी और पूछ-पूछ!

उस दिन से सारी फ़ौज में खोजी की धूम मच गयी। एक दिन रूसियों ने एक पहाड़ी पर से तुर्कों पर गोले उतारने शुरू किये। तुर्क लोग आराम से लेटे हुए थे। एकाएक तोप की आवाज सुनी तो घबरा गये। जब तक मुक़ाबला करने के लिए तैयार हों तब तक उनके कई आदमी काम आये। उस वक़्त खोजी ने अपने सिपाहियों को ललकारा, तलवार खींच पहाड़ी पर चढ़ गये और कई आदमियों को ज़ख्मी किया, इससे उनकी और भी धाक बैठ गयी। जिसे देखो, उन्हीं की तारीफ़ कर रहा था

एक सिपाही—आपने आज वह काम किया है कि रुस्तम से भी न होता। अब आपके वास्ते कोई खिताब तजवीज़ा जायगा।

खोजी—मेरा आजाद आ जाय तो मेरी मिहनत ठिकाने लगे, वरना सब हेच है।

अफ़सर—जिस वक्त तुम घोड़े से गिरे, मेरे होश उड़ गये।

खोजी—गिरते ही सँभल भी गये थे।

अफसर—चित गिरे थे?

खोजी—जी नहीं। पहलवान जब गिरेगा, पट गिरेगा

अफसर—जरा सा तो आप का कद है और इतनी हिम्मत!

खोजी—क्या कहा, जरा सा कद, किसी पहलवान से पूछिए। कितनी ही कुश्तियाँ जीत चुका हूँ।

अफसर—हमसे लड़िएगा?

खोजी—आप ऐसे दस हों तो क्या परवा?

फौज के अफसर ने उसी दिन वजीर-जंग के पास खोजी की सिफ़ारिश लिख भेजी।

खोजी थे तो मसखरे, मगर वफ़ादार थे। उन्हें हमेशा आज़ाद की धुन सवार रहती थी। बराबर याद किया करते थे। जब उन्हें मालूम हुआ कि आज़ाद को पोलैंड की शाहज़ादी ने क़ैद कर दिया है तो वह आज़ाद को खोजने निकले। पूछते-पूछते किसी तरह आज़ाद के क़ैदखाने तक पहुँच ही तो गये। आज़ाद ने उन्हें देखते ही गोद में उठा लिया।

खोजी—आज़ाद, आज़ाद, अरे मियाँ, तुम कौन हो?

आज़ाद—ओ-हो-हो!

खोजी—भाईजान, तुम भूत हो या प्रेत, हमें छोड़ दो। मैं अपने आज़ाद को ढूँढने जाता हूँ।

आज़ाद—पहले यह बताओ कि यहाँ कैसे पहुँचे?

खोजी—सब बतलायेंगे मगर पहले यह तो बताओ कि तुम्हारी यह गति कैसे हो गयी?

आज़ाद ने सारी बातें खोजी को समझायीं, तो आपने कहा—वल्लाह, निरे गाउदी हो। अरे भाईजान, तुम्हारी जान के लाले पड़े हैं, तुमको चाहिए कि जिस तरह मुमकिन हो, शाहज़ादी को खुश करो, तुमको तो यह दिखाना चाहिए कि शाहज़ादी को छोड़ कर कहीं जाओगे ही नहीं। खूब इश्क जताओ, तब कहीं तुम्हारा ऐतबार होगा।

आज़ाद—हो सिड़ी तो क्या हुआ, मगर बात ठिकाने की करते हो, मगर यह तकरीर कौन करे?

खोजी—और हम आये क्या करने हैं?

यह कह कर आप शाहज़ादी के सामने आ कर खड़े हो गये। उसने इनकी सूरत देखी तो हँस पड़ी। मियाँ खोजी समझे कि हम पर रीझ गयी। बोले—क्या लड़वाओगी क्या? आज़ाद सुनेगा तो बिगड़ उठेगा। मगर वाह रे मैं! जिसने देखा, वही रीझा और यहाँ यह हाल है कि किसी से बोलते तक नहीं। एक हो तो बोलूँ, दो हो तो बोलूँ, चार निकाह तक तो जायज़ हैं, मगर जब इंद्र का अखाड़ा पीछे पड़ जाय तो क्या करूँ!

शाहज़ादी—ज़रा बैठ तो जाइए। यह तो अच्छा नहीं मालूम होता कि मैं बैठी रहूँ और आप खड़े रहें।

खोजी—पहले यह बताओ कि दहेज़ क्या दोगी?

अरबिन—और अकड़ते किस बिरते पर हो। सूखी हड्डियों पर यह ग़रूर?

खोजी—तुम पहलवानों की बातें क्या जानो। यह चोर-बदन कहलाता है अखाड़े में उतर पड़ूँ तो फिर कैफ़ियत देखो।

अरबिन—टेनी मुर्ग़ी के बराबर तो आपका कद है और दावा इतना लम्बा-चौड़ा !

खोजी—तुम गँवारिन हो, ये बातें क्या जानो। तुम कद को देखा चाहो और यहाँ लम्बे आदमी को लोग बेवकूफ कहते हैं। शेर को देखो और ऊँट को देखो। मिस्र में एक बड़े ग्राडील जवान को पटकनी बतायी। मारा, चारों खाने चित। उठ कर पानी भी न माँगा।

खैर; बहुत कहने-सुनने से आप कुरसी पर बैठे तो दोनों टाँगे कुरसी पर रख लीं और बोले—अब दहेज का हाल बताओ। लेकिन मैं एक शर्त से शादी करूँगा, इन सब लौंडियों को महल बनाऊँगा और इनके अच्छे-अच्छे नाम रखूँगा। ताऊस-महल, गुलाम-महल...।

शाहजादी—तो आप अपनी शादी के फेर में हैं, यह कहिए।

खोजी—हँसती आप क्या हैं, अगर हमारा करतब देखना हो किसी पहलवान को बुलाओ। अगर हम कुश्ती निकाले तो शादी मंजूर ?

शाहजादी ने एक मोटी-ताजी हबशिन को बुलाया। खोजी ने आँख ऊपर उठायी तो देखते हैं कि एक काली-कलूटी देवनी हाथ में एक मोटा सोटा लिये चली आती है। देखते ही उनके होश उड़ गये। हबशिन ने आते ही इनके कंधे पर हाथ रखा तो इनकी जान निकल गयी। बोले—हाथ हटाओ।

हबशिन—दम हो तो हाथ हटा दो।

खोजी—मेरे मुँह न लगना, खबरदार !

हबशिन ने उनका हाथ पकड़ लिया और मरोड़ने लगी। खोजी झल्ला झल्ला कर कहते थे, हाथ छोड़ दे। हाथ टूटा तो बुरी तरह पेश आऊँगा, मुझसे बुरा कोई नहीं।

हबशिन ने हाथ छोड़ कर उनके दोनों कान पकड़े और उठाया तो जमीन से छः गुल ऊँचे !

हबशिन—कहो, शादी पर राजी हो या नहीं ?

खोजी—औरत समझ कर छोड़ दिया। इसके मुँह कौन लगे !

इस पर हबशिन ने ख्वाजा साहब को गोद में उठाया और ले चली। उन्होंने सैकड़ों गालियाँ दीं—खुदा तेरा घर खराब करे, तुम पर आसमान टूट पड़े, देखो, मैं कहे देता हूँ कि पीस डालूँगा। मैं सिर्फ इस सबब से नहीं बोलता कि मर्द हो कर औरत जात से क्या बोलूँ। कोई पहलवान होता तो मैं अभी समझ लेता, और समझता क्या ? मारता चारों खाने चित।

अरबिन—खैर, दिल्लगी तो हो चुकी, अब यह बताओ कि आजाद से तुमने क्या कहा ? वह तो आपके दोस्त हैं।

खोजी—ऊँह, तुमको किसी ने बहका दिया, वह दोस्त नहीं, लड़के हैं। मैंने उसके नाम एक खत लिखा है, ले जाओ और उसका जवाब लाओ।

अरबिन आपका खत ले कर आज़ाद के पास पहुँची और बोली—हुजूर, आपके वालिद ने इस खत का जवाब माँगा है।

आजाद—किसने माँगा है? तुमने यह कौन लफ्ज कहा?

अरबिन—हुजूर के वालिद ने...। वह जो ठेगने से आदमी हैं।

आजाद—वह सुअर मेरे घर का गुलाम है। वह मसखरा है। हम उसके खत का जवाब नहीं देते।

अरबिन ने आ कर खोजी से कहा—आपका खत पढ़ कर आपके लड़के बहुत ही खफा हुए।

खोजी—नालायक है कपूत, जी चाहता है, अपना सिर पीट लूँ।

शाहजादी ने कहा—जा कर आज़ाद पाशा को बुला लाओ, इस झगड़े का फैसला हो जाय।

जरा देर में आजाद आ पहुँचे। खोजी उन्हें देख कर सिटपिटा गये।

इधर तो शाहज़ादी खोजी के साथ यों मज़ाक कर रही थी। उधर एक लौंडी ने आ कर कहा—हुजूर, दो सवार आये हैं और कहते हैं कि शाहज़ादी को बुलाओ। हमने बहुत कहा कि शाहजादी साहब को आज फ़ुरसत नहीं है, मगर वह नहीं सुनते।

शाहज़ादी ने खोजी से कहा कि बाहर जा कर इन सवारों से पूछो कि वह क्या चाहते हैं? खोजी ने जा कर उन दोनों को खूब ग़ौर से देखा और आ कर बोले—हुजूर, मुझे तो रईसजादे मालूम होते हैं। शाहजादी ने जा कर शाहजादों को देखा तो आजाद भूल गये। उन्हें एक दूसरे महल में ठहराया और नौकरों को ताकीद कर दी कि इन मेहमानों को कोई तकलीफ न होने पाये। आजाद तो इस खयाल में बैठे थे कि शाहजादी आती होगी और शाहजादी नये मेहमानों की खातिरदारी का इंतजाम कर रही थी। लौंडियाँ भी चल दीं, खोजी और आजाद अकेले रह गये।

आजाद—मालूम होता है, उन दोनों लौंडों को देख कर लट्टू हो गयी।

खोजी—तुमसे तो पहले ही कहते थे, मगर तुमने न माना। अगर शादी हो गयी होती तो मजाल थी कि ग़ैरों को अपने घर में ठहराती।

आजाद—जी चाहता है, इसी वक्त चल कर दोनों के सिर उड़ा दूँ।

खोजी—यही तो तुममें बुरी आदत है। जरा सब्र से काम लो, देखो क्या होता है।

इन दोनों शाहजादों में एक का नाम मिस्टर क्लार्क था और दूसरे का हेनरी। दोनों की उठती जवानी थी। निहायत खूबसूरत। शाहजादी दिन के दिन उन्हीं के पास बैठी रहती, उनकी बातें सुनने से उसका जी न भरता था। मियाँ आजाद तो मारे जलन के अपने महल से निकलते ही न थे। मगर खोजी टोह लेने के लिए दिन में कई बार यहाँ आ बैठते थे। उन दोनों को भी खोजी की बातों में बड़ा मजा आता।

एक दिन खोजी दोनों शाहजादों के पास गये, तो इत्तिफ़ाक से शाहजादी वहाँ न थी। दोनों शाहजादों ने खोजी की बड़ी खातिर की। हेनरी ने कहा—ख्वाजा साहब, हमको पहचाना?

यह कह कर उसने टोप उतार दिया। खोजी चौंक पड़े। यह मीडा थी। बोले—मिस मीडा, खूब मिलीं।

मीडा—चुप-चुप! शाहजादी न जानने पाये। हम दोनों इसी लिए आये हैं कि आजाद को यहाँ से छुड़ा ले जायँ।

खोजी—अच्छा, क्या यह भी औरत हैं?

मीडा—यह वही औरत हैं जो आज़ाद को पकड़ ले गयी थीं।

खोजी—अक्खाह, मिस क्लारिसा! आप तो इस काबिल हैं कि आपका बायाँ क़दम ले।

मीडा—अब यह बताओ कि यहाँ से छुटकारा पाने की भी कोई तदबीर है?

खोजी—हाँ, वह तदबीर बताऊँ कि कभी पट ही न पडे। यह शाहजादी बड़ी पीनेवाली है, इसे खूब पिलाओ और जब बेहोश हो जाय तो ले उड़ो।

खोजी ने जा कर आजाद से यह किस्सा कहा। आजाद बहुत खुश हुए। बोले—मैं दोनों की सूरत देखते ही ताड़ गया था।

खोजी—मिस क्लारिसा कहीं तुम्हें दगा न दे।

आजाद—अजी नहीं, यह मुहब्बत की बातें हैं।

खोजी—अभी जरा देर में महफिल जमेगी। न कहोगे, कैसी तदबीर बतायी!

खोजी ने ठीक कहा था। थोड़ी ही देर में शाहजादी ने इन दोनों आदमियों को बुला भेजा। ये लोग वहाँ पहुँचे तो शराब के दौर चल रहे थे।

शाहजादी—आज हम शर्त लगा कर पियेंगे।

हेनरी—मंजूर। जब तक हमारे हाथ से जाम न छूटे तब तक तुम भी न छोड़ो। जो पहले छोड दे वह हारा।

क्लार्क—(आजाद से) तुम कौन हो मियाँ, साफ बोलो।

आजाद—मैं आदमी नहीं हूँ, देवजाद हूँ। परियाँ मुझे खूब जानती हैं।

क्लारिसा —

उड़ता है मुझसे ओ सितमईजाद किस लिए,
बनता है आदमी से परीजाद किस लिए?

क्लारिसा ने शाहजादी को इतनी शराब पिलायी कि वह मस्त हो कर झूमने लगी। तब आज़ाद ने कहा—ख्वाजा साहब, आप सच कहना, हमारा इश्क़ सच्चा है या नहीं। मीडा, खुदा जानता है, आज का दिन मेरी जिंदगी का सबसे मुबारक दिन है। किसे उम्मेद थी कि इस क़ैद में तुम्हारा दीदार होगा?

खोजी—बहुत बहको न भाई, कहीं शाहज़ादी सुन रही हो तो आफ़त आ जाय।

आज़ाद—वह इस वक्त दूसरी दुनिया में है।

खोजी—शाहज़ादी साहब, यह सब भागे जा रहे हैं, जरा होश में तो आइए।

आज़ाद—अबे चुप रह नालायक़। मीडा, बताओ, किस तदबीर से भागोगी? मगर तुमने तो यह रूप बदला कि खुदा की पनाह! मैं यही दिल में सोचता था कि ऐसे हसीन शाहजादे कहाँ से आ गये, जिन्होंने हमारा रंग फीका कर दिया। वल्लाह, जो ज़रा भी पहचाना हो। मिस क्लारिसा, तुमने तो ग़ज़ब ही कर दिया। कौन जानता था कि साइबेरिया भेज कर तुम मुझे छुड़ाने आओगी!

मीडा—अब तो मौक़ा अच्छा है; रात ज़्यादा आ गयी है। पहरेवाले भी सोते होंगे, देर क्यों करें।

आज़ाद अस्तबल में गये और चार तेज घोड़े छाँट कर बाहर लाये। दोनों औरतें तो घोड़ों पर सवार हो गयीं, मगर खोजी की हिम्मत छूट गयी, डरे कि कहीं गिर पड़ें तो हड्डी-पसली चूर हो जाय। बोले—भई, तुम लोग जाओ; मुझे यहीं रहने दो। शाहजादी को तसल्ली देनेवाला भी तो कोई चाहिए। मैं उसे बातों में लगाये रखूँगा जिसमें उसे कोई शक न हो। खुदा ने चाहा तो एक हफ़्ते के अंदर कुस्तुनतुनिया में तुमसे मिलेंगे।

यह कह कर खोजी तो इधर चले और वे तीनों आदमी आगे बढ़े। क़दम-क़दम पर पीछे फिर-फिर कर देखते थे कि कोई पकड़ने आ न रहा हो। सुबह होते-होते ये लोग डैन्यूब के किनारे आ पहुँचे और घोड़ों से उतर हरी-हरी घास पर टहलने लगे। एकाएक पीछे से कई सवार घोड़े दौड़ाते आते दिखायी पड़े। इन लोगों ने अपने घोड़े चरने को छोड़ दिये थे। अब भागें कैसे? दम के दम में सब के सब सवार सिर पर आ पहुँचे और इन तीनों आदमियों को गिरफ़्तार कर लिया। अकेले आज़ाद भला तीस आदमियों का क्या मुक़ाबला करते।

दोपहर होते-होते ये लोग शाहज़ादी के यहाँ जा पहुँचे। शाहजादी तो गुस्से से भरी बैठी थी। अंदर ही से कहला भेजा कि आज़ाद को कैद कर दो। यह हुक्म दे कर शाहज़ादों को देखने के लिए बाहर निकली तो शाहजादों की जगह दो शाहज़ादियाँ खड़ी नजर आयीं? धक से रह गयी। या खुदा, यह मैं क्या देख रही हूँ!

क्लारिसा—बहन, मर्द के भेस में तो तुम्हें प्यार कर चुके। अब आओ, बहनें-बहनें मिल कर प्यार करें। हम वही हैं जिनके साथ तुम शादी करनेवाली हो।

शाहजादी—अरे क्लारिसा, तुम यहाँ कहाँ?

क्लारिसा—आओ गले मिलें। मुझे खौफ है कि कहीं तुम्हारे ऊपर कोई आफ़त न आ जाय। ऐसे नामी सरकारी क़ैदी को उड़ा लाना तुम्हें मुनासिब न था। वजीर-जंग को यह खबर मिल गयी है। अब तुम्हारी खैरियत इसी में है कि उस तुर्की जवान को हमारे हवाले कर दो।

शाहज़ादी समझ गयी कि अब आजाद को रुखसत करना पड़ेगा। आजाद से जा कर बोली—प्यारे आजाद, मैंने तुम्हारे साथ जो बुराइयाँ की हैं, उन्हें माफ करना। मैंने जो कुछ किया, दिल की जलन से मजबूर हो कर किया। तुम्हारी जुदाई मुझसे बरदाश्त न होगी। जाओ, रुखसत।

यह कह कर उसने क्लारिसा से कहा—शाहजादी, खुदा के लिए उन्हें साइबेरिया न भेजना। वजीरजंग से तुम्हारी जान-पहचान है। वह तुम्हारी बात मानते हैं, अगर तुम माफ कर दोगी, तो वह जरूर माफ़ कर देंगे।

उधर आजाद जब फौज से गायब हुए तो चारों तरफ़ उनकी तलाश होने लगी। दो सिपाही घूमते-घामते शाहज़ादी के महल की तरफ़ आ निकले। इत्तिफ़ाक से खोजी भी अफीम की तलाश में घूम रहे थे। उन दोनों सिपाहियों ने खोजी को आजाद के साथ पहले देखा था। खोजी को देखते ही पकड़ लिया और आजाद का पता पूछने लगे।

खोजी—मैं क्या जानूँ कि आजाद पाशा कौन है। हाँ, नाम अलबत्ता सुना है।

एक सिपाही—तुम आजाद के साथ हिंदुस्तान से आये हो और तुमको खूब मालूम है कि आजाद पाशा कहाँ हैं।

खोजी—कौन आजाद के साथ आया है? मैं पठान हूँ, पेशावर से आया हूँ, मुझसे आजाद से वास्ता?

मगर वह दोनों सिपाही भी छँटे हुए थे, खोजी के झाँसे में न आये। खोजी ने जब देखा कि इन जालिमों से बचना मुश्किल है तो सोचे कि सिड़ी बन जाओ। कुछ का कुछ जवाब दो। मरना है तो दूसरे को ले कर मरो। मरना न होता तो अपना वतन छोड़ कर इतनी दूर आते ही क्यों। खास मज़े में नवाब के यहाँ दनदनाते थे। उल्लू बना-बना कर मजे उडाते थे। चीनी की प्यालियों में मालवे की अफ़ीम घुलती थी, चंडू के छींटे उडते थे, चरस के दम लगते थे। वह सब मजे छोड़-छाड कर उल्लू बने, मगर फँसे सो फँसे!

सिपाही—तुम्हारा नाम क्या है? सच-सच बता दो।

खोजी—कल तक दरिया चढ़ा था, आज चिड़िया दाना चुगेगी।

सिपाही—तुम्हारे बाप का क्या नाम था?

खोजी—हमको अपना नाम तो याद ही नहीं। बाप के नाम को कौन कहे?

सिपाही—तुम यहाँ किसके साथ आये?

खोजी—शैतान के साथ?

सिपाहियों ने जब देखा कि यह ऊल-जलूल बक रहा है तो उन्हें एक मोटे से दरख्त में बाँधा और बोले—ठीक-ठीक बतलाते हो तो बतला दो वरना हम तुम्हें फाँसी दे देंगे।

खोजी की आँखों से आँसू निकल पडे। खुदा से दुआ माँगने लगे कि ऐ खुदा, मैं तो अब दुनिया से जा रहा हूँ, मगर मरते वक्त दुआ माँगता हूँ कि आजाद का बाल भी बाँका न हो।

आखिर सिपाहियों को खोजी के सिडी होने का यक़ीन आ ही गया। छोड दिया। खोजी के सिर से यह बला टली तो चहकने लगे—तुम लोग जिंदगी के मजे क्या जानो, हमने वह-वह मजे उठाये हैं कि सुनो तो फड़क जाओ। नवाब साहब की

बदौलत बादशाह बने फिरते थे, सुबह से दस बजे तक चंडू के छींटे उड़े, फिर खाना खाया, सोये तो चार बजे की खबर लाये, चार बजे से अफ़ीम घूमने लगी, पौंडे छोले और गँडेरियाँ चूसीं, इतने में नवाब साहब निकल आये। वैसे रईस यहाँ कहाँ? वहाँ के एक अदना कहार ने बीस लाख की शराब अपनी बिरादरीवालों को एक रात में पिला दी। एक कहार ने सोने-चाँदी की कुल्हियों में शराब पिलायी। इस पर एक बूढ़े खुर्राट ने कहा—न भाई पंचो, आपन मरजाद न छोड़ब। हमरे बाप यही कुल्ही माँ पिहिन। हमरे दादा पिहिन, अब हम कहाँ के बड़े रईस होइ गयन! महरा ने सोने-चाँदी की प्यालियाँ मँगवायीं और फ़क़ीरों को बाँट दीं। दस हज़ार प्यालियाँ चाँदी की थीं और दस हजार सोने की। जब बादशाह को यह खबर मिली तो हुक्म दिया कि जितने कहार आये हों, सबको एक-एक लहँगा दिलवा दिया जाय। अब इस गयी-गुजरी हालत पर भी जो बात वहाँ है वह कहीं नहीं है।

सिपाही—आपके मुल्क में सिपाही तो अच्छे-अच्छे होंगे?

खोजी—हमारे मुल्क में एक से एक सिपाही मौजूद हैं। जो है अपने वक़्त का रुस्तम।

सिपाही—आप भी तो वहाँ के पहलवान ही मालूम होते हैं।

खोजी—इस वक्त तो सर्दी ने मार डाला है, अब बुढ़ापा आया। जवानी में अलबत्ता मैं भी हाथी की दुम पकड़ लेता था तो हुमस नहीं सकता था। अब न वह शौक, न वह दिल, अब तो फ़क़ीरी अख्तियार की।

सिपाही—आपकी शादी भी हुई है?

खोजी—आपने भी वही बात पूछी! फ़क़ीर आदमी, शादी हुई न हुई, बराबर के लड़के हैं।

सिपाही—आप कुछ पढ़े-लिखे भी हैं?

खोजी—ऊंह, पूछते हैं, पढ़े-लिखे हैं। यहाँ बिला पढ़े ही आलिमफ़ाज़िल हैं, पढ़ने का मरज नहीं पालते, यह आरज़ा तो यहीं देखा, अपने यहाँ तो चंडू, चरस, मदक के चरचे रहते हैं। हाँ, अगले जमाने में पढ़ने-लिखने का भी रिवाज था।

सिपाही—तो आपका मुल्क जाहिलों ही से भरा हुआ है?

खोजी—तुम खुद गँवार हो। हमारे यहाँ एक-एक पहलवान ऐसे पड़े हैं जो तीन-तीन हजार हाथ जोड़ी के हिलाते हैं। दंडों पर झुक गये तो चार पाँच हजार दंड पेल डाले। गुलचले ऐसे कि अँधेरी रात में सिर्फ़ आवाज पर तीर लगाया और निशाना खाली न गया।

ये बातें करके, खोजी ने अफ़ीम घोली और रूसियों से पीने के लिए कहा। और सबों ने तो इनकार किया, मगर एक मुसाफ़िर की शामत जो आयी तो उसने एक चुस्की लगायी। जरा देर में नशे ने रंग जमाया तो झूमने लगा। साथियों ने कह-कहा लगाया।

खोजी—एक दिन का ज़िक्र है कि नवाब साहब के यहाँ हम बैठे गप्पें उड़ा रहे

थे। एक मौलवी साहब आये। यहाँ उस वक्त सरूर डटा हुआ था, हमने अर्ज की, मौलवी साहब, अगर हुक्म हो तो एक प्याली हाज़िर करूँ। मौलवी ने आँखें नीली-पीली कीं और कहा—कोई मसखरा है बे तू! मैंने कहा—यार, ईमान से कह दो कि तुमने कभी अफीम पी है या नहीं? मौलवी साहब इतने जामे से बाहर हुए कि मुझे हज़ारों गालियाँ सुनायीं। आज बड़ी सर्दी है, हम ठिठुरे जाते हैं।

सिपाही—यह वक़्त हवा खाने का है।

खोजी—खुदा की मार इस अक्ल पर। यह वक्त हवा खाने का है? यह वक्त आग तापने का है। हमारे मुल्क के रईस इस वक़्त खिड़कियाँ बंद करके बैठे होंगे। हवा खाने की अच्छी कही, यहाँ तो रूह तक काँप रही है और आपको हवा खाने की सूझती है।

सिपाही—एक मुसाफ़िर ने हमसे कहा था कि हिंदोस्तान में लोग पुरानी रस्मों के बहुत पाबंद हैं। अब तक पुरानी लकीरें पीटते जाते हैं।

खोजी—तो क्या हमारे बाप-दादे बेवकूफ़ थे? उनकी रस्मों को जो न माने वह कपूत, जो रस्म जिस तरह पर चली आती है उसी तरह रहेगी।

सिपाही—अगर कोई रस्म खराब हो तो क्या उसमें तरमीम की जरूरत नहीं?

खोजी—लाख जरूरत हो तो क्या, पुरानी रस्मों में कभी तरमीम न करनी चाहिए। क्या वे लोग अहमक़ थे? एक आप ही बड़े अक्लमंद पैदा हुए!

रूसियों को खोजी की बातों में बड़ा मज़ा आया। उन्हें यक़ीन हो गया कि यह कोई दूसरा आदमी है। आज़ाद का दोस्त नहीं। खोजी को छोड़ दिया और कई दिन के बाद यह क़ुस्तुनतुनिया पहुँच गये।

८१

एक दिन दो घड़ी दिन रहे चारों परियाँ बनाव-चुनाव करके हँस-खेल रही थीं। सिपहआरा का दुपट्टा हवा के झोंकों से उड़ा जाता था। जहानारा मोतिये के इत्र में बसी थीं। गेतीआरा का स्याह रेशमी दुपट्टा खूब खिल रहा था।

हुस्नआरा—बहन, यह गरमी के दिन और काला रेशमी दुपट्टा! अब कहने से तो बुरा मानिएगा, जहानारा बहन निखरें तो आज दूल्हा भाई आनेवाले हैं, यह आपने रेशमी दुपट्टा क्या समझ के फड़काया!

अब्बासी - आज चबूतरे पर अच्छी तरह छिड़काव नहीं हुआ।

हीरा—जरा बैठ कर देखिए तो, कोई दस मश्कें तो चबूतरे ही पर डाली होंगी।

एकाएक महरी की छोकरी प्यारी दौड़ती हुई आयी और बोली—हुजूर, हमने यह आज बिल्ली पाली है। बड़ी सरकार ने खरीद दी और दो आने महीना बाँध दिया। सुबह को हम हलुआ खिलायेंगे। शाम को पेड़ा। उधर सिपहआरा और गेतीआरा गेंद खेलने लगीं तो हुस्नआरा ने कहा, अब रोज गेंद ही खेला करोगी? ऐसा न हो, आज भी अम्माँजान आ जायँ।

अब्बासी—हुजूर, गेंद खेलने में कौन सा ऐब है? दो घड़ी दिल बहलता है। बड़ी सरकार की न कहिए; वह बूढ़ी हुईं, बिगड़ी ही चाहें।

यही बातें हो रही थीं कि शाहजादा हुमायूँ फर हाथी पर सवार बग़ीचे की दीवार से झाँकते हुए निकले। सिपहआरा बेगम को गेंद खेलते देखा तो मुसकिरा दिये। हाथी तो आगे बढ़ गया, मगर हुस्नआरा को शाहजादे का यों झाँकना बुरा लगा। दारोग़ा को बुला कर कहा, कल इस दीवार पर दो रद्दे और चढ़ा दो, कोई हाथी पर इधर से निकल जाता है तो बेपरदगी होती है। सौ काम छोड़ कर यह काम करो।

जब दारोग़ा चले गये तो जहानारा ने कहा—सिपहआरा बहन ने इनको इतना ढीठ कर दिया, नहीं शाहजादे हों चाहे खुद बादशाह हों, ऐसी अंधेर-नगरी नहीं है कि जिसका जी चाहे, चला आये।

फिर वही चहल-पहल होने लगी। सिपहआरा और अब्बासी पचीसी खेलने लगीं।

अब्बासी—हुजूर, अबकी हाथ में यह गोट न पीटूँ तो अब्बासी नाम न रखूँ।

सिपहआरा—वाह! कहीं पीटी न हो।

अब्बासी—या अल्लाह, पचीस पड़ें। अरे! दिये भी तो तीन काने? बाजी खाक में मिल गयी।

हुस्नआरा—लेके हरवा न दी हमारी बाजी! बस अब दूर हो।

अब्बासी—ऐ बीबी, मैं क्या करूँ ले भला। पाँसा वही है लेकिन वक़्त ही तो है।

[illegible]—अच्छा बाजी हो ले तो हम फिर आयें।

सिपहआरा—अब मैं दाँव बोलती हूँ।

हुस्नआरा—हमसे क्या मतलब, वह जानें, तुम जानो। बोलो अब्बासी।

अब्बासी—हुजूर, जब बाजी सत्यानास हो गयी तब तो हमको मिली और अब हुजूर निकली जाती हैं।

हुस्नआरा—हम नहीं जानते। फिर खेलने क्यों बैठी थीं?

अब्बासी—अच्छा मंजूर है, फेंकिए पाँसा।

सिपहआरा—दो महीने की तनख्वाह है, इतना सोच लो।

अब्बासी—ऐ हुजूर, आपकी जूतियों का सदका, कौन बड़ी बात है। फेंकिए तीन काने।

सिपहआरा ने जो पाँसा फेंका तो पचीस। दूसरा पचीस, तीस, फिर पचीस, गरज सात पेचें हुई। बोलीं—ले अब रुपये बायें हाथ से ढीले कीजिए। महरी, बाजी की सदूकची तो ले आओ, आलमारी के पास रखी है।

हुस्नआरा ने महरी को आँख के इशारे से मना किया। महरी कमरे से बाहर आ कर बोली—ऐ हुजूर, कहाँ है? वहाँ तो नहीं मिलती।

सिपहआरा—बस जाओ भी, हाथ झुलाती आयीं, चलो हम बतावें कहाँ है।

महरी—जो हुजूर बता दें तो और तो लौंडी की हैसियत नहीं है, मगर सेर भर मिठाई हुजूर की नजर करूँ।

सिपहआरा महरी को साथ ले कर कमरे की तरफ चली। देखा तो संदूकची नदारद। हैं, यह संदूकची कौन ले गया? महरी ने लाख हँसी ज़ब्त की, मगर जब्त न हो सकी। तब तो सिपहआरा झल्लायीं, यह बात है। मैं भी कहूँ, संदूकची कहाँ गायब हो गयी। तुम्हें कसम है, दे दो।

सिपहआरा फिर नाक सिकोड़ती हुई बाहर आयी तो सबने मिल कर कहकहा लगाया। एक ने पूछा—क्यों, संदूकची मिली? दूसरी बोली—हमारा हिस्सा न भूल जाना। हुस्नआरा ने कहा—बहन, दस ही रुपया निकालना। अब्बासी ने कहा—हुजूर, देखिए, हमी ने जितवा दिया, अब कुछ रिश्वत दीजिए।

महरी—और बीबी, मैं भला काहे को छिपा देती, कुछ मेरी गिरह से जाता था।

सिपहआरा—बस-बस बैठो, चलीं वहाँ से बड़ी वह बनके।

महरी—अपनी हँसी को क्या करूँ, मुझी पर धोखा होता है।

इतने में दरबान ने आवाज दी, सवारियाँ आयी हैं, और जरा देर में दो औरतें डोलियों से उतर कर अंदर आयीं। एक का नाम था नजीर बेगम, दूसरी का जानी बेगम।

हुस्नआरा—बहुत दिन बाद देखा। मिजाज अच्छा रहा बहन? दुबली क्यों हो इतनी?

नजीर—माँदी थी, बारे खुदा-खुदा करके, अब सँभली हूँ।

हुस्नआरा—हमने तो सुना भी नहीं। जानी बेगम हमसे कुछ खफ़ा सी मालूम होती हैं, खुदा खैर करे!

जानी—बस, बस, जरी मेरी जबान न खुलवाना, उलटे चोर कोतवाल को डाँटे। यहाँ तक आते मेंहदी घिस जाती।

जानी बेगम की बोटी बोटी फड़कती थी। नजीर बेगम भोली-भाली थीं। जानी बेगम ने आते ही आते कहा, हुस्नआरा आओ, आँख-मूँदी घप खेलें।

जहानारा—क्या यह कोई खेल है?

जानी—ऐ है, क्या नन्हीं बनी जाती हैं!

नजीर—बस हम तुम्हारी इन्हीं बातों से घबराते हैं। अच्छी बातें न करोगी।

जानी—ऐ, वह निगोड़ी अच्छी बातें कौन सी होती हैं, सुनें तो सही।

नजीर—अब तुम्हें कौन समझाये।

जानी बेगम सिपहआरा के गले में हाथ डाल कर बाग़ीचे की तरफ ले गयीं तो हुस्नआरा ने कहा—इनके तो मिजाज ही नहीं मिलते।

बड़ी बेगम—बड़ी कल्ला दराज छोकरी है। इसके मियाँ की जान अजाब में है, हम तो ऐसे को अपने पास भी न आने दें।

हुस्नआरा—नहीं अम्माँजान, यह न फ़रमाइए, ऐसी नहीं है, मगर हाँ, जबान नहीं रुकती।

एकाएक जानी बेगम ने आ कर कहा—अच्छा बहन, अब रुखसत करो। घर से निकले बड़ी देर हुई।

हुस्नआरा—आज तुम दोनों न जाने पाओगी। अभी आये कितनी देर हुई?

जानी—नजीर बेगम को चाहे न जाने दो, मैं तो जाऊँगी ही। मियाँ के आने का यही वक्त है। मुझे मियाँ का जितना डर है, उतना और किसी का नहीं। नजीर की आँखों का तो पानी मर गया है।

नजीर—इसमें क्या शक, तुम बेचारी बड़ी ग़रीब हो।

इसी तरह आपस में बहुत देर तक हँसी-दिल्लगी होती रही। मगर जानी बेगम ने किसी का कहना न माना। थोड़ी ही देर में वह उठ कर चली गयीं।

सुरैया बेगम चोरी के बाद बहुत ग़मगीन रहने लगीं। एक दिन अब्बासी से बोलीं—अब्बासी, दिल को ज़रा तसकीन नहीं होती। अब हम समझ गये कि जो बात हमारे दिल में है वह हासिल न होगी।

शीशा हाथ आया न हमने कोई सागर पाया;
साक़िया ले तेरी महफ़िल से चले भर पाया।

सारी खुदाई में हमारा कोई नहीं।

अब्बासी ने कहा—बीबी, आज तक मेरी समझ में न आया कि वह, जिसके लिए आप रोया करती हैं, कौन हैं? और यह जो आज़ाद आये थे, यह कौन हैं। एक दिन बाँकी औरत के भेष में आये, एक दिन गोसाईं बनके आये।

सुरैया बेगम ने कुछ जवाब न दिया। दिल ही दिल में सोची कि जैसा किया वैसा पाया। आखिर हुस्नआरा में कौन सी बात है जो हममें नहीं। फ़र्क़ यही है कि वह नेकचलन हैं और मैं बदनाम।

यह सोच कर उनकी आँखें भर आयीं, जी भारी हो गया। गाड़ी तैयार करायी और हवा खाने चलीं। रास्ते में सलारू और उसके वकील साहब नज़र पड़े। सलारू कह रहा था—जनाब, हम वह नौकर हैं जो बाप बनके मालिक के यहाँ रहते हैं। आपको हमारी इज्जत करनी चाहिए। इत्तिफ़ाक़ से वकील साहब की नजर इस गाड़ी पर पड़ी। बोले—खैर, बाप पीछे बन लेना, ज़री जा कर देखो तो, इस गाड़ी में कौन सवार है? सलारू ने कहा, हुजूर, मैं फटेहालों हूँ, क्या जाऊँ। आप भारी-भरकम आदमी हैं, कपड़े भी अच्छे-अच्छे पहने हैं। आप ही जायँ। वकील साहब ने नजदीक आ कर कोचवान से पूछा—किसकी गाड़ी है? कोचवान पंजाब का रहने-वाला पठान था। झल्ला कर बोला—तुमसे क्या वास्ता, किसी की गाड़ी है।

सलारू बोले—हाँ जी, तुमको इससे क्या वास्ता कि किसकी गाड़ी है? हट जाओ रास्ते से। देखते हैं कि सवारियाँ हैं, मगर डटे खड़े हैं। अभी जो कोई उनका अज़ीज़ साथ होता तो उतर के इतना ठोकता कि सिट्टी-पिट्टी भूल जाती। तुम वहाँ खड़े होनेवाले कौन हो?

वकील साहब को एक तो यही गुस्सा था कि कोचवान ने डपटा, उस पर सलारू ने पाजी बनाया। लाल-लाल आँखों से घूर कर रह गये, पाते तो खा ही जाते।

सलारू—यह तो न हुआ कि कोचवान को एक डंडा रसीद करते। उलटे मुझ पर बिगड़ रहे हो।

कोचवान चाहता था कि उतर कर वकील साहब की गरदन नापे, मगर सुरैया बेगम ने कोचवान को रोक लिया और कहा—घर लौट चलो।

बेगम साहब जब घर पहुँचीं तो दारोग़ा जी ने आ कर कहा कि हुजूर, घरसे आदमी

आया है। मेरा पोता बहुत बीमार है। मुझे हुजूर रुखसत दें। यह लाला खुशवक्त राय मेरे पुराने दोस्त हैं, मेरी एवज काम करेंगे।

सुरैया बेगम ने कहा—जाइए, मगर जल्द आइएगा।

दूसरे दिन सुरैया बेगम ने लाला खुशवक्तराय से हिसाब माँगा। लाला साहब पुराने फ़ैशन की दस्तार बाँधे, चपकन पहने, हाथ में कलमदान लिये आ पहुँचे।

सुरैया बेगम—लाला, क्या सरदी मालूम होती है, या जूड़ी आती है, लेहाफ दूँ!

लाला साहब—हुजूर, बारहों महीने इसी पोशाक मे रहता हूँ। नवाब साहब के वक्त में उनके दरबारियों की यही पोशाक थी। अब वह जमाना कहाँ, वह बात कहाँ, वह लोग कहाँ। मेरे वालिद ६ रुपया माहवारी तलब पाते थे। मगर बरकत ऐसी थी कि उनके घर के सब लोग बड़े आराम से रहते थे। दरवाज़े पर दो दस्ते मुक़र्रर थे। बीस जवान। अस्तबल में दो घोड़े। फ़ीलख़ाने मे एक मादा हाथी। एक जमाना वह था कि दरवाजे पर हाथी झूमता था। अब वह कोने मे जान बचाये बैठे हैं।

यह कहते-कहते लाला साहब नवाब साहब की याद करके रोने लगे।

एकाएक महरी ने आ कर कहा—हुजूर, आज फिर लुट गये। लाला साहब भी पगड़ी सँभालते हुए चले। सुरैया बेगम झपटी कि चल कर देखें तो, मगर मारे रंज के चलना मुश्किल हो गया। जिस कोठरी में लाला साहब सोये थे उसमें सेंध लगी है। सेंध देखते ही रोएँ खड़े हो गये। रो कर बोलीं—बस अब कमर टूट गयी। मुहल्ले में हलचल मच गयी। फिर थानेदार साहब आ पहुँचे, तहक़ीकात होने लगी।

थानेदार रात को इस कोठरी में कौन सोया था?

लाला साहब—मैं! ग्यारह बजे से सुबह तक।

थानेदार—तुम्हें किस वक्त मालूम हुआ कि सेंध लगी?

लाला साहब—दिन चढ़े।

थानेदार—बड़े ताज्जुब की बात है कि रात को कोठरी में आदमी सोये, उसके कल्ले पर सेंध दी जाय और उसको ज़रा भी खबर न हो। आप कितने दिनों से यहाँ नौकर हैं? आपको पहले कभी न देखा।

लाला साहब—मैं अभी दो ही दिन का नौकर हूँ। पहले कैसे देखते।

सुरैया बेगम की रूह काँप रही थी कि खुदा ही खैर करे। माल का माल गया और यह कम्बख्त इज्जत का अलग गाहक है। खैर, थानेदार साहब तो तहकीकात करके लम्बे हुए। इधर सुरैया बेगम मारे ग़म के बीमार पड़ गयीं। कई दिन तक इलाज होता रहा, मगर कुछ फ़ायदा न हुआ। आख़िर एक दिन घबरा कर हुस्न-आरा को एक खत लिखवाया जिसमें अपनी बेकरारी का रोना रोने के बाद आजाद का पता पूछा था और हुस्नआरा को अपने यहाँ मुलाकात करने के लिए बुलाया था। हुस्नआरा बेगम के पास यह खत पहुँचा तो दंग हो गयीं। बहुत सोच-समझ कर खत का जवाब लिखा।

'बेगम साहब की खिदमत में आदाब !

आपका खत आया, अफ़सोस ! तुम भी उसी मरज में गिरफ़्तार हो। आपसे मिलने का शौक़ तो है, मगर आ नहीं सकती, अगर तुम आ जाओ तो दो घड़ी ग़म ग़लत हो। आज़ाद का हाल इतना मालूम है कि रूम की फ़ौज में अफसर हैं। सुरैया बेगम, सच कहती हूँ कि अगर बस चलता तो इसी दम तुम्हारे पास जा पहुँचती। मगर खौफ है कि कहीं मुझे लोग ढीठ न समझने लगें।

तुम्हारी

हुस्नआरा'

यह खत लिख कर अब्बासी को दिया। अब्बासी खत ले कर सुरैया बेगम के मकान पर पहुँची, तो देखा कि वह बैठी रो रही हैं।

अब सुनिए कि वकील साहब ने सुरैया बेगम की टोह लगा ली। दंग हो गये कि या खुदा, यह यहाँ कहाँ। घर जा कर सलारू से कहा। सलारू ने सोचा, मियाँ पागल तो हैं ही, किसी औरत पर नजर पड़ी होगी, कह दिया शिब्बोजान हैं। बोला —हुजूर, फिर कुछ फिक्र कीजिए। वकील साहब ने फ़ौरन खत लिखा—

'शिब्बोजान, तुम्हारे चले जाने से दिल पर जो कुछ गुजरी, दिल ही जानता है। अफसोस, तुम बड़ी बेमुरव्वत निकलीं। अगर जाना ही था तो मुझसे पूछ कर गयी होतीं। यह क्या कि बिला कहे सुने चल दीं, अब खैर इसी में है कि चुपके से चली आओ। जिस तरह किसी को कानोकान खबर न हुई और तुम चल दीं, उसी तरह अब भी किसी से कहो न सुनो, चुपचाप चली आओ। तुम खूब जानती हो कि मैं नामीगिरामी वकील हूँ।

तुम्हारा

वकील'

सलारू ने कहा—मियाँ, खूब गौर करके लिखना और नहीं हम एक बात बतावें। हमको भेज दीजिए, मैं कहूँगा, बीबी, वह तो मालिक हैं, पहले उनके गुलाम से तो बहस कर लो। गो पढ़ा-लिखा नहीं हूँ; मगर उम्र भर लखनऊ में रहा हूँ!

वकील साहब ने सलारू को डाँटा और खत में इतना और बढ़ा दिया, अगर चाहूँ तो तुमको फँसा दूँ। लेकिन मुझसे यह न होगा। हाँ, अगर तुमने बात न मानी तो हम भी दिक करेंगे।

यह खत लिख कर एक औरत के हाथ सुरैया बेगम के पास भेज दिया। बेगम ने लाला साहब से कहा—जरा यह खत पढ़िए तो। लाला साहब ने खत पढ़ कर कहा, यह तो किसी पागल का लिखा मालूम होता है। वह तो खत पढ़ कर बाहर चले गये और सुरैया बेगम सोचने लगीं कि अब क्या किया जाय? यह मूली बेतरह पीछे पड़ा। सवेरे लाला खुशवक्त राय सुरैया बेगम की ड्योढ़ी पर आये तो देखा कि यहाँ कुह-राम मचा हुआ है। सुरैया बेगम और अब्बासी का कहीं पता नहीं। सारा महल छान डाला गया, मगर बेगम साहब का पता न चला। लाला साहब ने घबरा कर कहा—

जरा अच्छी तरह देखो, शायद दिल्लगी में कहीं छिप रही हों। ग़रज़ सारे घर में तलाशी की, मगर बेफ़ायदा।

लाला साहब—यह तो अजीब बात है, आखिर दोनों चली कहाँ गयीं? जरा असबाब-वसबाब तो देख लो, है या सब ले-देके चल दीं।

लोगों ने देखा कि जेवर का नाम भी न था। जवाहिरात और कीमती कपड़े सब नदारद।

शाहजादा हुमायूँ फ़र भी शादी की तैयारियाँ करने लगे। सौदागरों की कोठियों में आ-आ कर सामान खरीदना शुरू किया। एक दिन एक नवाब साहब से मुलाकात हो गयी। बोले—क्यों हजरत, यह तैयारियाँ!

शाहजादा—आपके मारे कोई सौदा न खरीदे?

नवाब—जनाब,

चितवनों से ताड़ जाना कोई हमसे सीख जाय।

शाहजादा—आपको यकीन ही न आये तो क्या इलाज?

नवाब—खैर, अब यह फरमाइए, हैदर को पटने से बुलवाइएगा या नहीं? भला दो हफ्ते तक धमा-चौकड़ी रहे। मगर उस्ताद, तायफे नोक के हों। रद्दी कलावंत होंगे तो हम न आयेंगे। बस यह इंतजाम किया जाय कि दो महफिलें हों। एक रईसों के लिए और एक कद्रदानों के लिए।

इधर तो यह तैयारियाँ हो रही थीं, उधर बड़ी बेगम के यहाँ यह खत पहुँचा कि शाहजादा हुमायूँ फर को गुर्दे के दर्द की बीमारी है और दमा भी आता है। कई बार वह जुए की इल्लत में सजा पा चुका है। उसको किसी नशे से परहेज नहीं।

बड़ी बेगम ने यह खत पढ़वा कर सुना तो बहुत घबरायीं। मगर हुस्नआरा ने कहा, यह किसी दुश्मन का काम है। आज तक कभी तो सुनते कि हुमायूँ फ़र जुए की इल्लत में पकड़े गये। बड़ी बेगम ने कहा—अच्छा, अभी जल्दी न करो। आज डोमिनियाँ न आयें। कल-परसों देखा जायगा।

दूसरे दिन अब्बासी यह खत ले कर शाहजादा हुमायूँ फ़र के पास गयी। शाहजादा ने खत पढ़ा तो चेहरा सुर्ख हो गया। कुछ देर तक सोचते रहे। तब अपने संदूक से एक खत निकाल कर दोनों की लिखावट मिलायी।

अब्बासी—हुजूर ने दस्तखत पहचान लिया न?

शाहजादा—हाँ, खूब पहचाना, पर यह बदमाश अपनी शरारत से बाज नहीं आता। अगर हाथ लगा तो ऐसा ठीक बनाऊँगा कि उम्र भर याद करेगा। लो, तुम यह खत भी बेगम साहब को दिखा देना और दोनों खत वापस ले आना।

यह वही खत था जो शाहजादे की कोठी में आग लगाने के बाद आया था।

रात भर शाहजादा को नींद नहीं आयी, तरह-तरह के खयाल दिल में आते थे। अभी चारपाई से उठने भी न पाये थे कि भाँडों का गोल आ पहुँचा। लाला कालीचरन ने जो ड्योढ़ी का हिसाब लिखते थे, खिड़की से गरदन निकाल कर कहा—अरे भाई, आज क्या...

इतना कहना था कि भाँडों ने उन्हें आड़े हाथों लिया। एक बोला—हमें तो सूम मालूम होता है। दूसरे ने कहा—लखनऊ के कुम्हारों के हाथ चूम लेने के काबिल

हैं। सचमुच का बनमानुस बना कर खड़ा कर दिया। तीसरे ने कहा—उस्ताद, दुम की कसर रह गयी। चौथा बोला—फिर खुदा और इन्सान के काम में इतना फ़र्क़ भी न रहे! लाला साहब झल्लाये तो इन लोगों ने और भी बनाना शुरू किया। चोट करता है, ज़रा सँभले हुए। अब उठा ही चाहता है। एक बोला—भला बताओ तो, यह बनमानुस यहाँ क्योंकर आया? किसी ने कहा—चिड़ीमार लाया है। किसी ने कहा—रास्ता भूल कर बस्ती की तरफ़ निकल आया है। आखिर एक अशर्फ़ी दे कर भाँड़ों से नजात मिली।

दूसरे दिन शाहज़ादा सुबह के वक़्त उठे तो देखा कि एक खत सिरहाने रखा है। खत पढ़ा तो दंग हो गये।

'सुनो जी, तुम बादशाह के लड़के हो और हम भी रईस के बेटे हैं। हमारे रास्ते में न पड़ो, नहीं तो बुरा होगा! एक दिन आग लगा चुका हूँ, अगर सिपहआरा के साथ तुम्हारी शादी हुई तो जान ले लूँगा। जिस रोज़ से मैंने यह खबर सुनी है, यही जी चाह रहा है कि छुरी ले कर पहुँचूँ और दम के दम में काम तमाम कर दूँ। याद रखो कि मैं बेचोट किये न रहूँगा।'

शाहज़ादा हुमायूँ फ़र उसी वक़्त साहब-ज़िला की कोठी पर गये और सारा किस्सा कहा। साहब ने खुफ़िया पुलीस के एक अफ़सर को इस मामले की तहकीकात करने का हुक्म दिया।

साहब से रुखसत हो कर वह घर आये तो देखा कि उनके पुराने दोस्त हाजी साहब बैठे हुए हैं। यह हज़रत एक ही घाघ थे, आलिमों से भी मुलाकात थी, बाँकों से भी मिलते-जुलते रहते थे। शाहजादा ने उनसे भी इस खत का जिक्र किया। हाजी साहब ने वादा किया कि हम इस बदमाश का जरूर पता लगायेंगे।

शहसवार ने इधर तो हुमायूँ फ़र को कत्ल करने की धमकी दी, उधर एक तहसीलदार साहब के नाम सरकारी परवाना भेजा। आदमी ने जा कर दस बजे रात को तहसीलदार को जगाया और यह परवाना दिया—

'आपको क़लमी होता है कि मुबलिग पाँच हज़ार रुपया अपनी तहसील के खजाने से ले कर, आज रात को कालीडीह के मुकाम पर हाजिर हों। अगर आपको फ़ुरसत न हो तो पेशकार को भेजिए, ताकीद जानिए।'

तहसीलदार ने खजानची को बुलाया, रुपया लिया, गाड़ी पर रुपया लदवाया और चार चपरासियों को साथ ले कर कालीडीह चले। वह गाँव यहाँ से दो कोस पर था। रास्ते में एक घना जंगल पड़ता था। बस्ती का कहीं नाम नहीं। जब उस मुकाम पर पहुँचे तो एक छोलदारी मिली। वहाँ जा कर पूछा—क्या साहब सोते हैं?

सिपाही—साहब ने अभी चाय पी है। आज रात भर लिखेंगे। किसी से मिल नहीं सकते!

तहसीलदार—तुम इतना कह दो कि तहसीलदार रुपया ले कर हाज़िर है।

चपरासी ने छोलदारी में जा कर इत्तला की। साहब ने कहा, बुलाओ। तहसील-

दार साहब अंदर गये तो एक आदमी ने उनका मुँह ज़ोर से दबा दिया और कई आदमी उन पर टूट पड़े। सामने एक आदमी अँगरेज़ी कपड़े पहने बैठा था। तहसील-दार खूब जकड़ दिये गये तो वह मुसकिरा कर बोला—वेल तहसीलदार! तुम रुपया लाया, अब मत बोलना। तुम बोला और मैंने गोली मारी। तुम हमको अपना साहब समझो।

तहसीलदार—हुज़ूर को अपने साहब से बढ़ कर समझता हूँ, वह अगर नाराज़ होंगे तो दरजा घटा देंगे। आप तो छुरी से बात करेंगे।

शहसवार ने तहसीलदार को चकमा दे कर रुखसत किया और अपने साथियों में डींग मारने लगा—देखा, इस तरह यार लोग चकमा देते हैं। साथी लोग हाँ में हाँ मिला रहे थे कि इतने में एक गंधी तेल की कुप्पियाँ और बोतलें लटकाये छोलदारी के पास आया और बोला—हुज़ूर, सलाम करता हूँ। आज सौदा बेचने ज़रा दूर निकल गया था, लौटने में देर हो गयी। आगे घना जंगल है, अगर हुक्म हो तो यहीं रह जाऊँ?

शहसवार—किस-किस चीज़ का इत्र है? ज़रा मोतिये का तो दिखाओ।

गंधी—हुज़ूर, अव्वल नम्बर का मोतिया है, ऐसा शहर में मिलेगा नहीं।

शहसवार ने ज्यों ही इत्र लेने के लिए हाथ बढ़ाया, गंधी ने सीटी बजायी और सीटी की आवाज़ सुनते ही पचास-साठ कांस्टेबिल इधर-उधर से निकल पड़े और शहसवार को गिरफ़्तार कर लिया। यह गंधी न था, इंस्पेक्टर था, जिसे हाकिम-ज़िला ने शहसवार का पता लगाने के लिए तैनात किया था।

मियाँ शहसवार जब इंस्पेक्टर के साथ चले तो रास्ते में उन्हें ललकारने लगे। अच्छा बचा, देखो तो सही, जाते कहाँ हो।

इंस्पेक्टर—हिस्स! चोर के पाँव कितने, चौदह बरस को जाओगे।

शहसवार—सुनो मियाँ, हमारे काटे का मंत्र नहीं, ज़रा ज़बान को लगाम दो, वरना आज के दसवें दिन तुम्हारा पता न होगा।

इंस्पेक्टर—पहले अपनी फ़िक्र तो करो।

शहसवार—हम कह देंगे कि इस इंस्पेक्टर की हमसे अदावत है।

इंस्पेक्टर—अजी, कुढ़-कुढ़ कर जेलखाने में मरोगे।

इधर बड़ी बेगम के यहाँ शादी की तैयारियाँ हो रही थीं। डोमिनियों का गाना हो रहा था। उधर शाहज़ादा हुमायूँ फ़र एक दिन दरिया की सैर करने गये। घटा छायी हुई थी। हवा ज़ोरों के साथ चल रही थी। शाम होते-होते आँधी आ गयी और किश्ती दरिया में चक्कर खा कर डूब गयी। मल्लाह ने किश्ती के बचाने की बहुत कोशिश की, मगर मौत से किसी का क्या बस चलता है। घर पर यह खबर आयी तो कुहराम मच गया। अभी कल की बात है कि दरवाज़े पर भाँड़ मुबारकबाद गा रहे थे, आज बैन हो रहा है, कल हुमायूँ फ़र जामे में फूले नहीं समाते थे कि दूल्हा बनेंगे, आज दरिया में गोते खाते हैं। किसी तरफ़ से आवाज़ आती है—हाय मेरे बच्चे! कोई कहता है—हैं, मेरे लाल को क्या हुआ! रोनेवाला घर भर और समझानेवाला कोई नहीं। हुमायूँ फ़र की माँ रो-रो कर कहती थीं, हाय! मैं दुखिया इसी दिन के लिए अब तक जीती रही कि अपने बच्चे की मय्यत देखूँ! अभी तो मसें भी नहीं भीगने पायी थीं कि तमाम बदन दरिया में भीग गया। बहन रोती थी, मेरे भैया, ज़री आँख तो खोलो। हाय, जिन हाथों से मैंने मेंहदी रची थी उनसे अब सिर और छाती पीटती हूँ। कल समझते थे कि परसों बरात सजेगी, खुशियाँ मनायेंगे और आज मातम कर रहे हैं। उठो, अम्माँजान तुम्हारे सिरहाने खड़ी रो रही हैं।

यहाँ तो रोना-पीटना मचा हुआ था, वहाँ बड़ी बेगम ने ज्यों ही खबर पायी आँखों से आँसू जारी हो गये। अब्बासी से कहा—जा कर लड़कियों से कह दे कि नीचे बाग़ में टहलें। कोठे पर न जायँ। अब्बासी ने जा कर यह बात कुछ इस तरह कही कि चारों बहनों में कोई न समझ सकीं। मगर जहानारा ताड़ गयी। उठ कर अंदर गयी तो बड़ी बेगम को रोते देखा। बोली—अम्माँजान, साफ़-साफ बताओ।

बड़ी बेगम—क्या बताऊँ बेटी, हुमायूँ फ़र चल बसे।

जहानारा—अरे!

बड़ी बेगम—चुप-चुप, सिपहआरा न सुनने पाये। मैंने गाड़ी तैयार होने का हुक्म दिया है, चलो बाग़ को चलें, तुम ज़रा भी ज़िक्र न करना।

जहानारा—हाय अम्मीजान, यह क्या हुआ?

बड़ी बेगम—खुदा के वास्ते बेटी, चुप रहो, बड़ा बुरा वक्त आता है।

जहानारा—उफ़, जी घबराता है, हमको न ले चलिए, नहीं सिपहआरा समझ जायँगी। हमसे रोना ज़ब्त न हो सकेगा, कहा मानिए, हमको न ले चलिए।

बड़ी बेगम—यहाँ इतने बड़े मकान में अकेली कैसे रहोगी?

जहानारा—यह मंजूर है, मगर ज़ब्त मुमकिन नहीं।

सब की सब दिल में खुश थीं कि बाग़ की सैर करेंगी; मगर यह खबर ही न थी

कि बड़ी बेगम किस सबब से बाग़ लिये जाती हैं। चारों बहनें पालकी गाड़ी पर सवार हुईं और आपस में मज़े-मज़े की बातें करती हुई चलीं। मगर अब्बासी और जहानारा के दिल पर बिजलियाँ गिरती थीं। बाग़ में पहुँच कर जहानारा ने सिर-दर्द का बहाना किया और लेट रहीं, चारों बहनें चमन की सैर करने लगीं। सिपहआरा ने मौका पा कर कहा—अब्बासी, एक दिन हम और शाहज़ादे इस बाग़ में टहल रहे होंगे। निकाह हुआ और हम उनको बाग़ में ले आये। हम पाँच रोज़ यहाँ ही रहेंगे। अब्बासी की आँखों से बेअख़्तियार आँसू निकल पड़े। दिल में कहने लगी, किधर ख़याल है, कैसा निकाह और कैसी शादी? वहाँ जनाज़े और कफ़न की तैयारियाँ हो रही होंगी।

एकाएक सिपहआरा ने कहा—बहन, हिचकियाँ आने लगीं।

हुस्नआरा—कोई याद कर रहा होगा।

अब सुनिए कि उसी बाग़ के पास एक शाह साहब का तकिया था जिसमें कई शाहज़ादों और रईसों की कब्रें थीं। हुमायूँ फ़र का जनाज़ा भी उसी तकिये में गया, हज़ारों आदमी साथ थे। बाग़ के एक बुर्ज से बहनों ने इस जनाज़े को देखा तो सिपहआरा बोली—बाजीजान, किससे पूछें कि यह किस बेचारे का जनाज़ा है। ख़ुदा उसको बख़्शे।

हुस्नआरा—ओफ़ ओह! सारा शहर साथ है। अल्लाह, यह कौन मर गया, किससे पूछें?

अब्बासी—हुज़ूर, जाने भी दें, रात के वक्त लाश न देखें।

हुस्नआरा—नहीं, गुलाब माली से कहो, अभी-अभी पूछे।

अब्बासी थरथर काँपने लगी। गुलाब माली के कान में कुछ कहा। वह बाग़ का फाटक खोल कर बाहर गया, लोगों से पूछा। फिर दोनों में कानाफूसी हुई। इसके बाद अब्बासी ने ऊपर जा कर कहा। हुज़ूर, कोई रईस थे। बहुत दिनों से बीमार थे। यहाँ कज़ा आ पहुँची।

गेतीआरा—कुछ ठिकाना है! आदमियों का कहाँ से कहाँ तक ताँता लगा हुआ है।

सिपहआरा—ख़ुदा जाने, जवान था या बूढ़ा?

अब्बासी ने बड़ी बेगम से जा कर जनाज़े का हाल कहा तो उन्होंने सिर पीट कर कहा—तुम्हें हमारी कसम है जो उलटे पाँव न चली जाओ।

हुस्नआरा—अम्माँजान, आप नाहक घबराती हैं, आख़िर यहाँ खड़े रहने में क्या डर है?

बड़ी बेगम—अच्छा, तुमको इससे क्या मतलब।

सिपहआरा—किसी का जनाज़ा जाता है। लाखों आदमी साथ हैं।

हुस्नआरा—ख़ुदा जाने, कौन था बेचारा।

बड़ी बेगम—अल्लाह के वास्ते चली जाओ!

जहानारा—इतनी क़समें देती जाती हैं और कोई सुनता ही नहीं।

सिपहआरा—बाजी, सुनिए, कैसी दर्दनाक ग़ज़ल है! खुदा जाने कौन गा रहा है।

ग़मे फ़िराक़ है और आँधियाँ हैं आहों की;
चिराग़ को मेरे ज़ुल्मत कदे में बार नहीं।
ज़मीन प्यार से मुझको गले लगाती है;
अज़ाब है यह दिला गोर में फ़िशार नहीं।
पस अब फ़िना भी किसी तौर से क़रार नहीं;
मिला बहिश्त तो कहता हूँ कूय यार नहीं।

अब्बासी—कोई बूढ़ा आदमी था।

सिपहआरा—तो फिर क्या ग़म!

बड़ी बेगम—तो फिर जितने बूढ़े मर्द और बूढ़ी औरतें हों, सबको मर जाना चाहिए?

सिपहआरा—ऐसी बातें न कहिए, अम्माँजान!

हुस्नआरा—बूढ़े और जवान सबको मरना है एक दिन।

बड़ी बेगम और सिपहआरा नीचे चली गयीं। हुस्नआरा भी जा रही थीं कि क़बरिस्तान से आवाज आयी—हाय हुमायूँ फ़र, तुमसे इस दग़ा की उम्मेद न थी।

हुस्नआरा—ऐं अब्बासी, यह किसका नाम लिया?

अब्बासी—हुजूर, बहादुर मिरज़ा कहा, कोई बहादुर मिरज़ा होंगे।

हुस्नआरा—हाँ, हमीं को धोखा हुआ। पाँव-तले से ज़मीन निकल गयी।

जब तीनों बहनें नीचे पहुँच गयीं, तो बड़ी बेगम ने कहा—आखिर तुम्हारे मिजाज में इतनी जिद क्यों है?

हुस्नआरा—अम्माँजान, वहाँ बड़ी ठंडी हवा थी।

बड़ी बेगम—मुरदा वहाँ आया हुआ है और इस वक्त, भला सोचो तो।

सिपहआरा—फिर इससे क्या होता है?

बड़ी बेगम—चलो बैठो, होता क्या है!

तीनों बहनें लेटीं तो सिपहआरा को नींद आ गयी, मगर हुस्नआरा और गेती आरा की आँख न लगी। बातें करने लगीं।

हुस्नआरा—क्या जाने, कौन बेचारा था?

गेतीआरा—कोई उसके घरवालों के दिल से पूछे।

हुस्नआरा—कोई बड़ा शाहजादा था!

गेतीआरा—हमें तो इस वक्त चारों तरफ़ मौत की शक्ल नजर आती है।

हुस्नआरा—क्या जाने, अकेले थे या लड़के-वाले भी थे।

गेतीआरा—खुदा जाने, मगर था अभी जवान।

हुस्नआरा—देखो बहन, सैकड़ों आदमी जमा हैं, मगर कैसा सन्नाटा है! जो है, ठंडी साँसें भरता है!

इतने में सिपहआरा भी जाग पड़ीं। बोलीं—कुछ मालूम हुआ बाजीजान, इस बेचारे की शादी हुई थी कि नहीं? जो शादी हुई होगी तो सितम है।

हुस्नआरा—खुदा न करे कि किसी पर ऐसी मुसीबत आये।

सिपहआरा—बेचारी बेवा अपने दिल में न जाने क्या सोचती होगी?

हुस्नआरा—इसके सिवा और क्या सोचती होगी कि मर मिटे।

रात को सिपहआरा ने ख्वाब में देखा कि हुमायूँ फ़र बैठे उनसे बातें कर रहे रहे हैं।

हुमायूँ—खुदा का हजार शुक्र है कि आज यह दिन दिखाया, याद है, हम तुमसे गले मिले थे?

सिपहआरा—बहुरूपिये के भी कान काटे।

हुमायूँ—याद है, जब हमने महताबी पर कनकौआ ढाया था?

सिपहआरा—एक ही बात शरीफ़ हैं आप।

हुमायूँ—अच्छा, तुम यह बताओ कि दुनिया में सबसे ज़्यादा खुशनसीब कौन है?

सिपहआरा—हम।

हुमायूँ—और जो मैं मर जाऊँ तो तुम क्या करो?

इतना कहते-कहते हुमायूँ फ़र के चेहरे पर ज़र्दी छा गयी और आँखें उलट गयीं। सिपहआर एक चीख मार कर रोने लगीं। बड़ी बेगम और हुस्नआरा चीख सुनते ही घबरायी हुई सिपहआरा के पास आयीं। बड़ी बेगम ने पूछा—क्या है बेटी, तुम चिल्लायीं क्यों?

अब्बासी—ऐ हुजूर, जरी आँख खोलिए।

बड़ी बेगम—बेटा, आँख खोल दो।

बड़ी मुश्किल से सिपहआरा की आँखें खुलीं। मगर अभी कुछ कहने भी न पायी थीं कि किसी ने बाग़ीचे की दीवार के पास रो कर कहा—हाय शाहज़ादा हुमायूँ फ़र!

सिपहआरा ने रो कर कहा—अम्मीजान, यह क्या हो गया। मेरा तो कलेजा उलटा आता है।

दीवार के पास से फिर आवाज़ आयी—हाय हुमायूँ फ़र! क्या मौत को तुम पर ज़रा भी रहम न आया?

सिपहआरा—अरे, क्या यह मेरे हुमायूँ फ़र हैं!! या खुदा, यह क्या हुआ अम्मीजान!

बड़ी बेगम—बेटी सब्र करो, खुदा के वास्ते सब्र करो।

सिपहआरा—हाय, कोई हमें प्यारे शाहजादे की लाश दिखा दो।

बड़ी बेगम—बेटा मैं तुम्हें समझाऊँ कि इस सिन में तुम पर यह मुसीबत पड़ी और तुम मुझे समझाओ कि इस बुढ़ापे में यह दिन देखना पड़ा।

सिपहआरा—हाय, हमें शाहजादे की लाश दिखा दो। अम्मीजान, अब सब्र

की ताक़त नहीं रही, मुझे जाने दो, ख़ुदा के लिए मत रोको, अब शर्म कैसी और हिजाब किसके लिए ?

बड़ी बेगम—बेटी, ज़रा दिल को मजबूत रखो, ख़ुदा की मर्ज़ी में इनसान को क्या दख़ल !

सिपहआरा—क्या कहती हैं आप अम्मीजान, दिल कहाँ है, दिल का तो कहीं पता ही नहीं। यहाँ तो रूह तक पिघल गयी।

बड़ी बेगम—बेटी, खूब खुल कर रो लो। मैं नसीबों-जली यही दिन देखने के लिए बैठी थी !

सिपहआरा—आँसू नहीं है अम्मीजान, रोऊँ कैसे ? बदन में जान ही नहीं रही, बाजीजान को बुला दो। इस वक्त वह भी मुझे छोड़ कर चल दीं ?

हुस्नआरा अलग जा कर रो रही थीं। आयीं, मगर खामोश। न रोयीं, न सिर पीटा, आ कर बहन के पलंग के पास बैठ गयीं।

सिपहआरा—बाजी, चुप क्यों हो ! हमे तसकीन तक नहीं देतीं; वाह !

हुस्नआरा खामोश बैठी रहीं, हाँ, सिर उठा कर सिपहआरा पर नजर डाली।

सिपहआरा—बाजी, बोलिए, आखिर चुप कब तक रहिएगा ?

इतने में रूहअफ़ज़ा भी आ गयीं, उन्होंने मारे ग़म के दीवार पर सिर पटक दिया था। सिपहआरा ने पूछा—बहन, यह पट्टी कैसी बँधी है ?

रूहअफ़ज़ा—कुछ नहीं, यों ही।

सिपहआरा—कहीं सिर-विर तो नहीं फोड़ा ? अम्माँजान, अब दिल नहीं मानता, ख़ुदा के लिए हमें लाश दिखा दो। क्यों अम्माँजान; शाहज़ादे की माँ की क्या हालत होगी ?

बड़ी बेगम—क्या बताऊँ बेटी—

औलाद किसी की न जुदा होवे किसी से-
बेटी, कोई इस दाग़ को पूछे मेरे जी से।

इतने में एक आदमी ने आ कर कहा कि हुमायूँ फ़र की माँ रो रही हैं और कहती हैं कि दुलहिन को लाश के करीब लाओ। हुमायूँ फ़र की रूह खुश होगी। बड़ी बेगम ने कहा—सोच लो, ऐसा कभी हुआ नहीं है; ऐसा न हो कि मेरी बेटी डर जाय, उसका तो और दिल बहलाना चाहिए, न कि लाश दिखाना। और लोगों से पूछो, उनकी क्या राय है। मेरे तो हाथ पाँव फूल गये हैं।

आखिर यह राय तय पायी कि दुलहिन लाश पर ज़रूर जायँ।

सिपहआरा चलने को तैयार हो गयीं।

बड़ी बेगम—बेटा, अब मैं क्या कहूँ, तुम्हारी जो मर्जी हो वह करो।

सिपहआरा—बस, हमें लाश दिखा दो, फिर हम कोई तकलीफ न देंगे।

बड़ी बेगम—अच्छा जाओ, मगर इतना याद रखना कि जो मरा वह ज़िन्दा नहीं हो सकता।

सिपहआरा ने अब्बासी को हुक्म दिया कि जा कर संदूक लाओ। संदूक आया तो सिपहआरा ने अपना कीमती जोड़ा निकाला, सुहाग का इत्र मला, कीमती दुपट्टा ओढ़ा जिसमें मोतियों की बेल लगी हुई थी। सिर पर जड़ाऊ छपका, जड़ाऊ टीका, चोटी में सीसफूल, नाक में नथ, जिसके मोतियों की कीमत अच्छे-अच्छे जौहरी न लगा सके, कानों में पत्ते, बालियाँ, बिजलियाँ, करनफूल, गले में मोतियों की माला, तौक़, चंदनहार, चम्पाकली, हाथों में कंगन, चूड़ियाँ, पोर-पोर छल्ले, पाँव मे पायजेब, छागल। इस तरह सोलहों सिंगार करके वह बड़ी बेगम और अब्बासी के साथ पालकी गाडी में सवार हुईं। शहर में धूम मच गयी कि दुलहिन दूल्हा की लाश पर जाती हैं। शाहजादे की माँ को इत्तला दी गयी कि दुलहिन आती हैं। जरा देर में गाड़ी पहुँच गयी। हजारों आदमियों ने छाती पीटना शुरू किया। सिपहआरा ने गाड़ी से उतरते ही लाश को छाती से लगाया और उसके सिरहाने बैठ कर ऊँची आवाज से कहा—प्यारे शाहजादे, जरी आँख खोल कर मुस्करा दो। बस, दो दिन हँसा कर उम्र भर रुलाओगे? जरी अपनी दुलहिन को तो आँख-भरके देख लो। क्यों जी, यही मुहब्बत थी, इसी दिन के लिए दिल मिलाया था?

शाहजादे की माँ ने सिपहआरा को छाती से लगा कर कहा—बेटी, हुमायूँ फर तुम्हारे बडे दुश्मन निकले। हाय, यह अंधेर भी कहीं होता है कि दुलहिन लाश पर आये। निकाह के वक्त वकील और गवाह तो दूर रहे, दूसरा मुकदमा छिड़ गया।

सिपहआरा ने अपनी माँ की तरफ़ देख कर कहा—अम्मोंजान, आपने हमारे साथ बडी दुश्मनी की। पहले ही शादी कर देतीं तो यों नामुराद तो न जाती।

इधर तो यह कुहराम मचा हुआ था, उधर शहर के बेफ़िक्रे अपनी खिचड़ी अलग ही पकाते थे।

एक औरत—आज जब घर से निकली थी तो काने आदमी का मुँह देखा था। इधर डोली में पाँव गया और उधर पट से छींक पड़ी।

दूसरा आदमी—अजी बीबी, न कुछ छींक से होता है, न किसी से, 'करम-लेख नहिं मिटै करै कोई लाखन चतुराई।' किस्मत के लिखे को कोई भी आज तक मिटा सका है? देखिए, करोड़ों रुपये घर में भरे हैं, मगर किस काम के।

मौलवी—मियाँ, दुनिया के यही कारखाने हैं, इनसान को चाहिए कि किसी से न झगड़े, न किसी से फ़साद करे, बस, खुदा की याद करता रहे।

एक बुढ़िया—सुनते हैं कि दो-तीन दिन से रात को बुरे-बुरे ख्वाब देखते थे।

मौलवी—हम इसके कायल नहीं, ख्वाब क्या चीज है।

सिपहआरा को इस वक़्त वह दिन याद आया, जब शाहज़ादा हुमायूँ फ़र अपनी बहन बन कर उनसे गले मिलने गये। एक वह दिन था और एक आज का दिन है। हमने उस हुमायूँ फ़र को बुरा-भला क्यों कहा था?

बड़ी बेगम ने कहा—बेटी, अब जरी बैठ जाओ, दम ले लो।

अब्बासी—हुजूर, इस मर्ज़ का तो इलाज ही नहीं है।

सिपहआरा—दवा दर्द की है। इस मर्ज़ की दवा भी सब्र ही है। सब्र ही ने हमें इस काबिल किया कि हुमायूँ फ़र की लाश अपनी आँखों देख रहे हैं।

जब लोगों ने देखा कि सिपहआरा की हालत खराब होती जाती है तो उन्हें लाश के पास से हटा ले गये। गाड़ी पर सवार किया और घर ले गये।

गाड़ी में बैठ कर सिपहआरा रोने लगीं और बड़ी बेगम से बोलीं—अम्माँजान, अब हमें कहाँ लिये चलती हो?

बड़ी बेगम—बेटी, मैं क्या करूँ, हाय!

सिपहआरा—अम्माँजान, करोगी क्या, मैंने क्या कर लिया!

अब्बासी—हमारी किस्मत फूट गयी, शादी का दिन देखना नसीब में लिखा ही न था। आज के दिन और हम मातम करें!

सिपहआरा—अम्माँजान, इस वक़्त बेचारा कहाँ होगा!

बड़ी बेगम—बेटी, खुदा के कारखाने में किसी को दखल है!

८५

एक पुरानी, मगर उजाड़ बस्ती में कुछ दिनों से दो औरतों ने रहना शुरू किया है। एक का नाम फ़ीरोज़ा है, दूसरी का फ़ारखुंदा। इस गाँव में कोई डेढ़ हजार घर आबाद होंगे, मगर उन सब में दो ठाकुरों के मकान आलीशान थे। फ़ीरोज़ा का मकान छोटा था, मगर बहुत खुशनुमा। वह जवान औरत थी, कपडे-लत्ते भी साफ़-सुथरे पहनती थी, लेकिन उसकी बातचीत से उदासी पायी जाती थी। फ़रखुंदा इतनी हसीन तो न थी, मगर खुशमिजाज थी। गाँववालों को हैरत थी कि यह दोनों औरतें इस गाँव में कैसे आ गयीं और कोई मर्द भी साथ नहीं! उनके बारे में लोग तरह-तरह की बातें किया करते थे। गाँव की सिर्फ़ दो औरतें उनके पास जाती थीं, एक तम्बोलिन, दूसरी बेलदारिन। यार लोग टोह में थे कि यहाँ का कुछ भेद खुले, मगर कुछ पता न चलता था। तम्बोलिन और बेलदारिन से पूछते थे तो वह भी आँय-बाँय-साँय उड़ा देती थीं।

एक दिन उस गाँव में एक कांस्टेबिल आ निकला। आते ही एक बनिये से शक्कर माँगी। उसने कहा—शक्कर नहीं, गुड़ है। कांस्टेबिल ने आव देखा न ताव, गाली दे बैठा। बनिये ने कहा—जबान पर लगाम दो। गाली न जबान से निकालो। इतना सुनना था कि कांस्टेबिल ने बढ़ कर दो घूसे लगाये और दूकान की चीजें फेंक-फाँक दीं। सामनेवाला दूकानदार मारे डर के शक्कर ले आया, तब हज़रत ने कहा—काली मिर्च लाओ। वह बेचारा काली मिर्च भी लाया। तब आपने दो लोटे शरबत के पीये और कुएँ की जगत पर लेट कर एक लाला जी को पुकारा—ओ लाला, सराफ़ी पीछे करना; पहले एक चादर तो दे जाओ। लाला बोले—हमारे पास और कोई बिछौना नहीं है, बस एक बिस्तरा है। कांस्टेबिल उठ कर दूकान पर गया। चादर उठा ली और कुएँ की जगत पर बिछा कर लेटा। लाला बेचारे मुँह ताकने लगे। अभी हज़रत सो रहे थे कि एक औरत पानी भरने आयी। आपने पाँव की आहट जो पायी तो चौंक उठे और गुल मचा कर बोले—अलग हट, चली वहाँ से घड़ा सिर पर लिये पानी भरने! सूझता नहीं, कौन लेटा है, कौन बैठा है? इस पर एक आदमी ने कहा, वाह! तुम तो कुएँ के मालिक बन बैठे! अब तुम्हारे मारे कोई पानी न भरे? दूसरा बोला—सराफ़ की दूकान से चादर लाये, मुफ़्त में शक्कर ली और डपट रहे हैं।

एक ठाकुर साहब टट्टू पर सवार चले जाते थे। इन लोगों की बातें सुन कर बोले—साहब को एक अर्ज़ी दे दो, बस सारी शेखी किरकिरी हो जाय।

कांस्टेबिल ने ललकारा—रोक ले टट्टू! हम चालान करेंगे।

ठाकुर—क्यों रोक लें, हम अपनी राह जा रहे हैं, तुमसे मतलब?

ठाकुर—तो जल्मी कहाँ है? हम ऐसे-वैसे ठाकुर नहीं हैं, हमसे बहुत रोब न जमाना।

इतने में दो-एक आदमियों ने आ कर दोनों को समझाया, भाई, जवान, छोड़ दो, इज्जतदार आदमी हैं। इस गाँव के ठाकुर हैं, उनको बेइज्जत न करो।

इधर ठाकुर को समझाया कि रुपया-अधेली ले-दे कर अलग करो, कहाँ की झझट लगायी है। मुफ्त में चालान कर देगा तो गाँव भर में हँसी होगी। कुछ यह समझे, कुछ वह समझे। अठन्नी निकाल कर कास्टेबिल की नजर की, तब जा कर पीछा छूटा।

अब तो गाँव में और भी धाक वँध गयी। पनभरनियाँ मारे डर के पानी भरने न आयीं, यह इधर-उधर ललकारने लगे। गल्ले की चंद गाड़ियाँ सामने से गुजरीं। आपने ललकारा, रोक ले गाड़ी। क्यों बे पटरी से नहीं जाता, सड़क तो साहब लोगों के लिए है। एक गाड़ीवान ने कहा—अच्छा साहब, पटरी पर किये देते हैं। आपने उठ कर एक तमाचा लगा दिया और बोले, और सुनो, एक तो जुर्म करे, दूसरे टर्रायँ। सब के सब दंग हो गये कि टर्राया कौन, उस बेचारे ने तो इनके हुक्म की तामील की थी। हलवाई से कहा—हमको सेर भर पूरी तौल दो। वह भी काँप रहा था कि देखें, कब शामत आती है, कहा, अभी लाया। तब आप बोले कि आलू की तरकारी है? वह बोला—आलू तो हमारे पास नहीं है, मगर उस खेत से खुदवा लाओ तो सब मामला ठीक हो जाय। कहने भर की देर थी। आप जा कर किसान से बोले—अरे, एक आध सेर आलू खोद दे। उसकी शामत जो आयी तो बोला—साहब, चार आने सेर होई, चाहे लेव चाहे न लेव। समझ लो। आपने कहा, अच्छा भाई लाओ, मगर बड़े-बड़े हों।

किसान आलू लाया। तरकारी बनी, जब आप चलने लगे तो किसान ने पैसे माँगे। इसके जवाब में आपने उस गरीब को पीटना शुरू किया।

किसान—सेर भर आलू लिहिस पैसा न दिहिस, और ऊपर से मारत है।

मुराइन—और अलई कै पलवा बकत है, राम करै, देवी-भवानी खा जायें।

लोगों ने किसान को समझाया कि सरकारी आदमी के मुँह क्यों लगते हो। जो कुछ हुआ सो हुआ, अब इन्हें दो सेर आलू ला दो। किसान आलू खोद लाया। आपने उसे रूमाल में बाँधा और ८ पैसे निकाल कर हलवाई को देने लगे।

हलवाई—यह भी रहने दो, पान खा लेना।

कास्टेबिल—खुशी तुम्हारी। आलू तो हमारे ही थे।

हलवाई—बस, अब सब आप ही का है।

कास्टेबिल ने खा-पी कर लम्बी तानी तो दो घंटे तक सोया किये। जब उठे तो पसीने में तर थे। एक गवार को बुला कर कहा—पंखा झल। वह बेचारा पंखा झलने लगा। जब आप गाफिल हुए तो उसने इनकी लुटिया और लकड़ी उठायी और चलता धंधा किया। यह उनके भी उस्ताद निकले।

जमादर की आँख खुली तो पंखा झलनेवाले का कहीं पता ही नहीं। इधर-उधर

देखा तो छुटिया ग़ायब। लाठी नदारद। लोगों से पूछा, धमकाया, डराया, मगर किसी ने न सुना। और बताये कौन? सब के सब तो जले बैठे थे। तब आपने चौकीदारों को बुलाया और धमकाने लगे। फिर सबों को ले कर गाँव के ठाकुर के पास गये और कहा—इसी दम दौड़ आयेगी। गाँव भर फूँक दिया जायगा, नहीं तो अपने आदमियों से पता लगवाओ।

ठाकुर—ले अब हम कस-कस उपाय करी। चोर का कहाँ ढूँढ़ी?

जमादार—हम नहीं जानता। ठाकुर हो कर के एक चोर का पता नहीं लगा सकता।

ठाकुर—तुमहू तो पुलीस के नौकर हो। ढूँढ निकालो।

ठाकुर साहब से लोगों ने कहा—यह सिपाही बड़ा शैतान है। आप साहब को लिख भेजिए कि हमारी रिआया को सताता है। बस, यह मौक़ूफ़ हो जाय। ठाकुर बोले—हम सरकारी आदमियों से बतबढ़ाव नहीं करते। कास्टेबिल को तीन रुपये दे कर दरवाज़े से टाला।

जमादार साहब यहाँ से खुश-खुश चले तो एक घोसी की लड़की से छेड़छाड़ करने लगे। उसने जा कर अपने बाप से कह दिया। वह पहलवान था, लँगोट बाँध कर आया और जमादार साहब को पटक कर खूब पीटा।

बहुत से आदमी खड़े तमाशा देख रहे थे। जमादार ने चूँ तक न की, चुपके से झाड़-पोंछ कर उठ खड़े हुए और गाँव की दूसरी तरफ़ चले। इत्तिफ़ाक़ से फ़ीरोज़ा अपनी छत पर खड़ी बाल सुलझा रही थी। जमादार की नजर पड़ी तो हैरत हुई। बोले—अरे, यह किसका मकान है? कोई है इसमें?

पड़ोसी—इस मकान में एक बेगम रहती हैं। इस वक़्त कोई मर्द नहीं है।

जमादार—तू कौन है? बता इसमें कौन रहता है? और मकान किसका है?

पड़ोसी—मकान तो एक अहीर का है, मुल इसमें एक बेगम टिकी हैं।

जमादार—कहो, दरवाजे पर आवें। बुला लाओ।

पड़ोसी—वाह, वह परदेवाली हैं। दरवाजे पर न आयेंगी।

जमादार—क्या! परदा कैसा? बुलाता है कि घुस जाऊँ घर में? परदा लिये फिरता है!

फ़ीरोज़ा के होश उड़ गये। फ़रखुंदा से बोली—अब ग़ज़ब हो गया। भाग के यहाँ आयी थी, मगर यहाँ भी वही बला सिर पर आयी।

फ़रखुंदा—इसको कहाँ से खबर हुई?

फ़ीरोजा—क्या बताऊँ? इस वक्त कौन इससे सवाल-जवाब करेगा?

फ़रखुंदा देखिए, पड़ोसिन को बुलाती हूँ। शायद वह काम आये।

दरवाजा खुलने में देर हुई तो कास्टेबिल ने दरवाजे पर लात मारी और कहा—खोल दो दरवाजा, हम दौड़ लाये हैं। मुहल्लेवालों ने कहा—भई, तुम्हारे पास न सम्मन, न सफ़ीना। फिर किसके हुक्म से दरवाजा खुलवाते हो? ऐसा भी कहीं हुआ है। इन बेचारियों का जुर्म तो बताओ।

जमादार—तुम चलके साहब से पूछो जिनके भेजे हम आये हैं। सम्मन-सफीना दीवानी-के मजकूरी लाते हैं। हम पुलीस के आदमी हैं।

दूसरे आदमी ने आगे बढ़ कर कहा—सुनो भई जवान, तुम इस वक़्त बड़ा भारी जुल्म कर रहे हो। भला इस तरह कोई काहे को रहने पायेगा।

जमादार ने अकड़ कर कहा—तुम कौन हो? अपना नाम बताओ। तुम सरकारी आदमी को अपना काम करने से रोकते हो। हम रपट बोलेंगे।

यह सुन कर वह हजरत चकराये और चुपके लम्बे हुए। तब जमादार ने गुल मचा कर कहा, मुखबिरों ने हमें खबर दी है कि तुम्हारे लड़का होनेवाला है। हमको हुक्म है कि दरवाजे पर पहरा दें।

पड़ोसिन ने जो यह बात सुनी तो दाँतों-तले अँगुली दबायी—ऐ है, यह ग़ज़ब खुदा का, हमें आज तक मालूम ही न हुआ, हम भी सोचते थे कि यह जवान-जहान औरत शहर से भाग कर गाँव में क्यों आयी। यह मालूम ही न था कि यहाँ कुछ और गुल खिलनेवाला है।

इतने में फरखुंदा ने कोठे पर जा कर पड़ोसिन से कहा—जरी अपने मियाँ से कहो कि इस सिपाही से कुल हाल पूछे—माजरा क्या है?

पड़ोसिन कुछ सोच कर बोली—भई, हम इस मामले में दखल न देंगे। ओह, तुम्हारी बेगम ने तो अच्छा जाल फैलाया था, हमारे मियाँ को मालूम हो जाय कि यह ऐसी हैं तो मुहल्ले से खड़े-खड़े निकलवा दें।

इतने में पड़ोसिन के मियाँ भी आये। फ़रखुदा उनसे बोली, खाँ साहब, जरी इस सिपाही को समझाइए, यह हमारे बड़ी मुसीबत का वक्त है।

खाँ साहब—कुछ न कुछ तो उसे देना ही पड़ेगा।

फ़रखुदा—अच्छा, आप फैसला करा दें। जो माँगे वह हमसे इसी दम ले।

खाँ साहब—इन पाजियों ने नाक मे दम कर दिया है और इस तरफ़ की रिआया ऐसी बोदी है कि कुछ न पूछो। सरकार ने इन पियादों को इंतज़ाम के लिए रखा है और यह लोग ज़मीन पर पाँव नहीं रखते। सरकार को मालूम हो जाय तो खड़े-खड़े निकाल दिये जायँ।

पड़ोसिन—पहले बेगम से यह तो पूछो कि शहर से यहाँ आ कर क्यों रही हैं? कोई न कोई वजह तो होगी।

फ़रखुंदा ने दो रुपये दिये और कहा, जा कर यह दे दीजिए। शायद मान जाय। खाँ साहब ने रुपये दिये तो सिपाही बिगड़ कर बोला—यह रुपया कैसा? हम रिश्वत नहीं लेते।

खाँ साहब—सुनो मियाँ, जो हमसे र्राओगे, तो हम ठीक कर देंगे। टके का पियादा, मिज़ाज ही नहीं मिलता।

सिपाही—मियाँ, क्यों शामतें आयी हैं, हम पुलीस के लोग हैं, जिस वक़्त चाहें, तुम जैसों को ज़लील कर दें। बतलाओ तुम्हारी गुज़र-बसर कैसे होती है? बचा,

किसी भले घर की औरत भगा लाये हो और ऊपर से डराते हो !

खाँ साहब—यह धमकियाँ दूसरों को देना। यहाँ तुम जैसे को अँगुलियों पर नचाते हैं।

सिपाही ने देखा कि यह आदमी कड़ा है तो आगे बढ़ा। एक नानबाई की दूकान पर बैठ कर मज़े का पुलाव उड़ाया और सड़क पर आ कर एक गाड़ी पकड़ी। गाड़ीवान की लड़की बीमार थी। बेचारा गिड़गिड़ाने लगा, मगर सिपाही ने एक न मानी। इस पर एक बाबू जी बोल उठे—बड़े बेरहम आदमी हो जी! छोड़ क्यों नहीं देते?

सिपाही—कप्तान साहब ने मँगवाया है, छोड़ कैसे दूँ? यह इसी तरह के बहाने किया करते हैं, ज़माने भर के झूठे!

आख़िर गाड़ीवान ने सात पैसे और एक कद्दू दे कर गला छुड़ाया। तब आपने एक चबूतरे पर बिस्तर जमाया और चौकीदार से हुक्का भरवा कर पीने लगे। जब ज़रा अँधेरा हुआ, तो चौकीदार ने आ कर कहा—हवलदार साहब, बड़ा अच्छा शिकार चला जात है। एक महाजन की मेहरिया बैलगाड़ी पर बैठी चली जात है। गहनन से लदी है।

सिपाही—यहाँ से कितनी दूर?

चौकीदार—कुछ दूर नाहिन, घड़ी भर में पहुँच जैहो। बस एक गाड़ीवान है और एक छोकरा। तीसर कोऊ नहीं।

सिपाही—तब तो मार लिया है। आज किसी भले आदमी का मुँह देखा है। हमारे साथ कौन-कौन चलेगा?

चौकीदार—आदमी सब ठीक हैं, कहै भर की देर है। हुक्म होय तो हम जाके सब ठीक करी।

सिपाही—हाँ-हाँ और क्या?

अब सुनिए कि महाजन की गाड़ी बारह बजे रात को एक बाग़ की तरफ़ से गुज़री आ रही थी कि एकाएक छः सात आदमी उस पर टूट पड़े। गाड़ीवान को एक डंडा मारा। कहार को भी मार के गिरा दिया। औरत के ज़ेवर उतार लिये और चोर-चोर का शोर मचाने लगे। गाँव में शोर मच गया कि डाका पड़ गया। कांस्टेबिल ने जा कर थाने में इत्तला की। थानेदार ने चौकीदार से पूछा, तुम्हारा किस पर शक है? चौकीदार ने कई आदमियों का नाम लिखाया और फ़िरोज़ा के पड़ोसी खाँ साहब भी उन्हीं में थे। दूसरे दिन उसी सिपाही ने खाँ साहब के दरवाज़े पर पहुँच कर पुकारा। खाँ साहब ने बाहर आ कर सिपाही को देखा तो मूँछों पर ताव दे कर बोले, क्या है साहब, क्या हुक्म है?

सिपाही—चलिए, वहाँ बरगद के तले तहक़ीक़ात हो रही है। दारोग़ा जी बुलाते हैं।

खाँ—कैसी तहक़ीक़ात? कुछ सुनें तो!

सिपाही—मालूम हो जायगी। चलिए तो सही।

खाँ—सुनो जी, हम पठान हैं। जब तक चुप हैं तब तक चुप हैं। जिस दम ग़ुस्सा आया, फिर या तुम न होगे या हम न होंगे। कहाँ चलें, कहाँ?

सिपाही—मुझे आपसे कोई दुश्मनी तो है नहीं, मगर दारोग़ा जी के हुक्म से मजबूर हूँ।

चौकीदार—लोधे को बुलाया है, घोसी को और तुमको।

खाँ—ऐं, वह तो सब डाकू हैं।

सिपाही—और आप बड़े साहु हैं! बड़ी शेखी!

खाँ—क्यों अपनी जान के दुश्मन हुए हो?

सिपाही—अब चलिएगा या वारंट आये।

खाँ साहब घर में कपड़े पहनने गये तो बीबी ने कहा, कैसे पठान हो? मुए प्यादे की क्या हक़ीक़त है कि दरवाजे पर खोटी-खरी कहे। भला देखूँ तो निगोड़ा तुम्हें वह क्योंकर ले जाता है। यह कह कर वह दरवाजे पर आ कर बोली, क्यों रे, तू इन्हें कहाँ लिये जाता है? बता, किस बात की तहक़ीक़ात होगी? क्या तेरा बाप क़त्ल किया गया है?

सिपाही—आप खाँ साहब को भेज दें। अजी खाँ साहब, आइएगा या वारंट आये?

बीबी—वारंट ले जा अपने होतों-सोतों के यहाँ।

सिपाही—यह औरत तो बड़ी कल्ला-दराज़ है।

बीबी—मेरे मुँह लगेगा तो मुँह पकड़के झुलस दूँगी। वारंट अपने बाप-दादा के नाम ले जा!

इतने में खाँ साहब ढाटा बाँध कर बाहर निकले और बोले—ले तुझे दायें हाथ खाना हराम है जो न ले चले।

सिपाही—बस, बहुत बढ़-बढ कर बातें न कीजिए, चुपके से मेरे साथ चलिए।

खाँ साहब अकड़ते हुए चले तो सिपाही ने फ़ीरोज़ा के दरवाजे पर खड़े हो कर कहा, इन्हें तो लिये जाते हैं, अब तुम्हारी बारी भी आयेगी।

खाँ साहब बरगद के नीचे पहुँचे तो देखा, गाँव भर के बदमाश जमा हैं और दारोग़ा जी चारपाई पर बैठे हुक्का पी रहे हैं। बोले, क्यों जनाब, हमें क्यों बुलाया?

दारोग़ा—आज गाँव भर के बदमाशों की दावत है।

खाँ साहब ने डंडे को तौल कर कहा, तो फिर दो एक बदमाशों की हम भी खबर लेंगे।

दारोग़ा—बहुत गरमाइए नहीं, चौकीदारों ने हमसे जो कहा वह हमने किया।

खाँ—और जो चौकीदार आपको कुएँ में कूद पड़ने की सलाह दे?

दारोग़ा—तो हम कूद पड़ें।

खाँ—तो हमारी निस्बत आख़िर क्या जुर्म लगाया गया है?

दारोग़ा—कल रात को तुम कहाँ थे?

खाँ—अपने घर पर, और कहाँ।

चौकीदार—हुजूर, बखरी में नाहीं रहे और एक मनई इनका वही बारा के भीतर देखिस रहा।

खाँ साहब ने चौकीदार को एक चाँटा दिया, सुअर, अबे हम चोर हैं? रात को हम घर पर न थे?

दारोग़ा ने कहा, क्यों जी, हमारे सामने यह मार-पीट! तुम भी पठान हो और हम भी पठान हैं। अगर अबकी हाथ उठाया तो तुम्हारी खैरियत नहीं।

इतने में एक अँगरेज घोड़े पर सवार उधर से आ निकला। यह जमघट देख कर दारोग़ा से बोला, क्या बात है? दारोग़ा ने कहा, ग़रीबपरवर, एक मुकदमे की तहकीकात करने आये हैं। इस पठान की निस्बत एक चोरी का शक है, मगर यह तहकीकात नहीं करने देता। चौकीदार को कई मरतबा पीट चुका है। चौकीदार ने कहा, दोहाई है साहब की! दोहाई है, मारे डारत है।

साहब ने कहा—वेल, चालान करो। हमारी गवाही लिखवा दो, हमारा नाम मेजर क्राप्त है।

लीजिए, चोरी और डाका तो दूर रहा, एक नया जुर्म साबित हो गया।

अब दारोग़ा जी ने गवाहों के बयान लिखने शुरू किये। पहले एक तम्बोलिन आयी। भड़कीला लहँगा पहने हुए, माँग-चोटी से लैस, मुँह में गिलौरी दबी हुई, हाथ में पान के बीड़े, आ कर दरोग़ा जी को बीड़े दे कर खड़ी हो गयी।

दारोगा—तुमने खाँ साहब को रात के वक्त कहाँ देखा था?

तम्बोलिन—उस पूरे के पास। इनके साथ तीन-चार आदमी और थे। सब लठ्ठ-बंद। एक आदमी ने कहा, छीन लो सास से, मैं बोली कि बोटियाँ नोच लूँगी, मैं कोई गँवारिन नहीं हूँ। खाँ साहब ने मुझसे कहा तम्बोलिन, कहो फ़तह है।

खाँ—अरी तम्बोलिन!

तम्बोलिन—जरा अरी तरी न करना मुझसे, मैं कोई चमारिन नहीं हूँ।

खाँ—तुमने हमको चोरों के साथ देखा था?

तम्बोलिन—देखा ही था। क्या कुछ अंधे हैं, चोर तो तुम हो ही।

खाँ—खुदा इस झूठ की सजा देगा।

तम्बोलिन—इसका हाल तो जब मालूम होगा, जब बड़े घर में चक्की पीसोगे।

खाँ—और वहाँ गीत गाने के लिए तुमको बुला लेंगे।

दूसरे गवाह ने बयान किया, मैं रात को ग्यारह बजे इस पूरे की तरफ जाता था तो खाँ साहब मुझे मिले थे।

खाँ—कसम खुदा की, कोई आदमी मेरी ही शक्ल का रहा होगा।

दारोग़ा—आपने ठीक कहा।

काले खाँ—जब पठान होके ऐसी हरकतें करने लगे तो इस गाँव का खुदा ही मालिक है। कौन कह सकता है कि यह सफेद-पोश आदमी डाका डालेगा।

खाँ—खुदा की कसम, जी चाहता है सिर पीट लूँ, मगर खैर, हम भी इसका मज़ा चखा देंगे।

दारोगा—पहले अपने घर की तलाशी तो करवाइए, मज़ा पीछे चखवाइएगा।

यह कह कर दारोगा जी खाँ साहब के घर पहुँचे और कहा, जल्दी परदा करो, हम तलाशी लेंगे। खाँ साहब की बीबी ने सैकड़ों गालियाँ दीं, मगर मजबूर हो कर परदा किया। तलाशी होने लगी। दो बालियाँ निकलीं, एक जुगनू और एक छपका! खाँ साहब की बीबी हक्का-बक्का हो कर रह गयी, यह ज़ेवर यहाँ कहाँ से आये? या खुदा, अब हमारी आबरू तेरे ही हाथ है।

८६

फीरोजा बेगम और फरखुंदा रात के वक़्त सो रही थीं कि धमाके की आवाज़ हुई। फरखुंदा की आँख खुल गयी। यह धमाका कैसा? मुँह पर से चादर उठायी, मगर अँधेरा देख कर उठने की हिम्मत न पड़ी। इतने में पाँव की आहट मिली, रोयें खड़े हो गये। सोची, अगर बोली तो यह सब हलाल कर डालेंगे। दबकी पड़ी रही। चोर ने उसे गोद में उठाया और बाहर ले जा कर बोला—सुनो अब्बासी, हमको तुम खूब पहचानती हो? अगर न पहचान सकी हो, तो अब पहचान लो।

अब्बासी—पहचानती क्यों नहीं, मगर यह बताओ कि यहाँ किस ग़रज़ से आये हो? अगर हमारी आबरू लेनी चाहते हो तो क़सम खा कर कहती हूँ, जहर खा लूँगी।

चोर—हम तुम्हारी आबरू नहीं चाहते, सिर्फ़ तुम्हारा ज़ेवर चाहते हैं। तुम अपनी बेगम को जगाओ, ज़रा उनसे मिलूँगा। नाहक इधर-उधर मारी-मारी फिरती हैं, हमारे साथ निकाह क्यों नहीं कर लेतीं?

यकायक फ़ीरोज़ा की आँख भी खुल गयी। देखा तो मिर्ज़ा आजाद खड़े हैं। बोली, आजाद मिर्ज़ा, अगर हमें दिक करने से तुम्हें कुछ मिलता हो तो तुमको अख्तियार है। नाहक क्यों हमारी जान के दुश्मन हुए हो? इस मुसीबत के वक्त तुमसे मदद की उम्मीद थी और तुम उल्टे गला रेतने को मौजूद?

अब्बासी—बेगम आपको हमेशा याद किया करती हैं।

आजाद—मेरे लायक जो काम हो, उसके लिए हाजिर हूँ, तुम्हारे लिए जान तक हाजिर है।

सुरैया—आपकी जान आपको मुबारक रहे, हम सिर्फ़ एक काम को कहते हैं। यहाँ एक कानिस्टिबिल ने हमें बहुत दिक किया है, तुम किसी तदबीर से हमे उसके पंजे से छुड़ाओ. (आजाद के कान में कुछ कह कर) मुझे इस बात का बड़ा रंज है। मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े।

आजाद—वही कानिस्टिबिल तो नहीं है जो खाँ साहब को पकड़ ले गया है?

फ़ीरोजा—हाँ-हाँ, वही।

आजाद—अच्छा, समझा जायगा। एड़े-जड़े उससे समझ लूँ तो सही। उसने अच्छे घर बयाना दिया!

सुरैया—कमबख्त ने मेरी आबरू ले ली, कहीं मुँह दिखाने लायक न रखा। यहाँ भी बला की तरह सिर पर सवार हो गया। तुमने भी इतने दिनों के बाद आज खबर ली। दूसरों का दर्द तुम क्या समझोगे? जो बेइज्जती कभी न हुई थी वह आज हो गयी। एक दिन वह था कि अच्छे-अच्छे आदमी सलाम करने आते थे और आज एक कानिस्टिबिल मेरी आबरू मिटाने पर तुला हुआ है और तुम्हारे होते।

आजाद—सुरैया बेगम, खुदा की कसम, मुझे बिल्कुल खबर न थी, मैं इसी शहर

जा कर दारोग़ा और कानिस्टिबिल दोनो को देखता हूँ। देख लेना, सुबह तक उनकी लाश फड़कती होगी, ऐसे-ऐसे कितनों को जहन्नुम के घाट उतार चुका हूँ। इस वक्त रुख़सत करो, कल फिर मिलूँगा।

यह कह कर आजाद मिर्जा बाहर निकले। यहाँ उनके कई साथी खड़े थे, उनसे बोले, भाई जवानों! आज कोतवाल के घर हमारी दावत है, समझ गये, तैयार हो जाओ। उसी वक़्त आजाद मिर्जा और लक्ष्मी डाकू, गुलबाज़, रामू यह सब के सब दारोगा के मकान पर जा पहुँचे। रामू को ती बैठक में रखा और महल्ले भर के मकानों की कुंडियाँ बंद करके दारोगा जी के घर में सेंध लगाने की फ़िक्र करने लगे।

दरबान—कौन! तुम लोग कौन हो, बोलते क्यों नहीं?

आजाद—क्या बतायें, मुसीबत के मारे हैं, इधर से कोई लाश तो नहीं निकली?

दरबान—हाँ, निकली तो है, बहुत से आदमी साथ थे।

आजाद—हमारे बड़े दोस्त थे, अफ़सोस!

लक्ष्मी—हुजूर, सब्र कीजिए, अब क्या हो सकता है!

दरबान—हाँ भाई, परमेश्वर की माया कौन जानता है, आप कौन ठाकुर हैं?

लक्ष्मी—कनवजिया ब्राह्मण हैं। बेचारे के दो छोटे-छोटे बच्चे हैं, कौन उनकी परवरिश करेगा!

दरबान को बातों में लगा कर इन लोगों ने उसकी मुश्कें कस लीं और कहा, बोले और हमने कत्ल किया। बस, मुँह बंद किये पड़े रहो।

दीवार में सेंध पड़ने लगी। रामू कहीं से सिरका लाया। सिरका छिड़क-छिड़क-कर दीवार में सेंध दी। इतने में एक कानिस्टिबिल ने हाँक लगायी—जागते रहियो, अँधेरी रात है।

आज़ाद—हमारे लिए अँधेरी रात नहीं, तुम्हारे लिए होगी।

चौकीदार—तुम लोग कौन हो?

आजाद—तेरे बाप। पहचानता है या नहीं?

यह कह कर आजाद ने करौली से चौकीदार का काम तमाम कर दिया।

लक्ष्मी—भाई, यह तुमने बुरा किया। कितनी बेरहमी से इस बेचारे की जान ली!

आज़ाद—बस, मालूम हो गया कि तुम नाम के चोर हो, बिलकुल कच्चे!

अब यह तजवीज पायी कि मिर्जा आजाद सेंध के अंदर जायें। आजाद ने पहले सेंध में पाँव डाले, डालते ही किसी आदमी ने अंदर से तलवार जमायी दोनों पाँव खट से अलग।

आज़ाद—हाय मरा! अरे दौड़ो!

लक्ष्मी—बड़ा धोखा हुआ, कहीं के न रहे!

चोरों ने मिल कर आजाद मिर्जा का धड़ उठाया और रोते-पीटते ले चले, मगर रास्ते ही में पकड़ लिये गये।

मुहल्ले भर में जाग हो गयी। अब जो दरवाजा खोलता है, बंद पाता है। यह

कौन बंद कर गया ? दरवाज़ा खोलो ! कोई सुनता ही नहीं। चारों तरफ़ यही आवाजें आ रही थीं। सिर्फ एक दरवाजे में बाहर से कुंडी न थी। एक बूढा सिपाही एक हाथ में मशाल, दूसरे में सिरोही लिये बाहर निकला। देखा तो दारोग़ा जी के घर में सेंध पडी हुई है ! चोर-चोर !

एक कानि०—खून भी हुआ है। जल्द आओ।

सिपाही—मार लिया है, जाने न पावे।

यह कह कर उसने दरवाजे खोलने शुरू किये। लोग फ़ौरन लट्ठ ले-ले कर बाहर निकले। देखा तो चोरों और कानिस्टिबिलों में लड़ाई हो रही है। इन आदमियो को देखते ही चोर तो भाग निकले ! आज़ाद मिर्जा और लक्ष्मी रह गये। आजाद की टाँगें कटी हुई। लक्ष्मी जख्मी। थाने पर खबर हुई। दारोग़ा जी भागे हुए अपने घर आये। मालूम हुआ कि उनके घर की बारिन ने चोरों को सेंध देते देख लिया था। फ़ौरन जा कर कोठरी में बैठ रही। ज्यों ही आजाद मिर्जा ने सेंध में पाँव डाला, तलवार से उनके दो टुकडे कर दिये।

आजाद पर मुकदमा चलाया गया। जुर्म सबित हो गया। कालेपानी भेज दिये गये।

जब जहाज पर सवार हुए तो एक आदमी से मुलाकात हुई। आजाद ने पूछा, कहो भाई, क्या किया था ? उसने आँखों में आँसू भरके कहा, भाई, क्या बताऊँ ! बे कसूर हूँ। फ़ौज में नौकर था, इश्क के फेर में नौकरी छोड़ी, मगर माशूक तो न मिला, हम खराब हो गये।

यह शहसवार था।

खाँ साहब पर मुकदमा तो दायर हो ही गया था; उस पर दारोगा जी दुश्मन थे। दो साल की सजा हो गयी। तब दारोगा जी ने एक औरत को सुरैया बेगम के मकान पर भेजा। औरत ने आ कर सलाम किया और बैठ गयी।

सुरैया—कौन हो? कुछ काम है यहाँ?

औरत—ऐ हुजूर, भला बगैर काम के कोई भी किसी के यहाँ जाता है? हुजूर से कुछ कहना है, आपके हुस्न का दूर-दूर तक शोहरा है। इसका क्या सबब है कि हुजूर इस उम्र मे, इस हालत में जिंदगी बसर करती हैं?

सुरैया—बहन, मैं एक मुसीबत की मारी औरत हूँ।

औरत—ऐ हुजूर, मुझे बहिन न कहें, मैं लौंडी, हुजूर शाहजादी हैं। हुजूर पर ऐसी क्या मुसीबत है? हुजूर तो इस काबिल हैं कि बादशाहों के महल में हों।

सुरैया—खुदा दुश्मन पर भी ऐसी मुसीबत न डाले। मैं तो जिंदगी से तंग आ गयी।

औरत—अल्लाह मालिक है। कोशिश यह करनी चाहिए कि दुनिया में इज्जत के साथ रहे और किसी का होके रहे।

सुरैया—मगर जब खुदा को भी मंजूर हो। हमने तो बहुत चाहा कि शादी कर लें, मगर खुदा को मंजूर ही न था। क़िस्मत का लिखा कौन मिटा सकता है?

औरत—हुजूर का हुक्म हो तो कहीं फ़िक्र करूँ?

सुरैया—हमको माफ़ कीजिए। हम अब शादी न करेंगे।

औरत—हुजूर से मैं अभी जवाब नहीं चाहती। खूब सोच लीजिए। दो-तीन दिन में जवाब दीजिएगा। यहाँ एक रईसजादे रहते हैं, बहुत ही खूबसूरत, खुश-मिजाज और शौकीन। दिल बहलाने के लिए नौकरी कर ली है। हुकूमत की नौकरी है।

सुरैया—हुकूमत की नौकरी कैसी होती है?

औरत—ऐसी नौकरी, जिसमें सब पर हुकूमत करे। कोतवाल हैं।

अब्बासी—अच्छा, उन्हीं थानेदार का पैगाम लायी होगी।

औरत—ऐ, थानेदार काहे को हैं, बराय नाम नौकरी कर ली, वरना उनको नौकरी की क्या जरूरत है, वह ऐसे-ऐसे दस थानेदारों को नौकर रख सकते हैं।

अब्बासी—हुजूर को तो शादी करना मंजूर ही नहीं है।

औरत—वाह! कैसी बातें करती हो।

सुरैया—तुम उनकी सिखायी-पढ़ायी आयी हो, हम समझ गये। उनसे कह देना कि हम बेकस औरत हैं, हम पर रहम करो, क्यों हमारी जान के दुश्मन हुए हो, हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो पंजे झाड के हमारे पीछे पडे हो?

औरत—हुजूर के कदमों की क़सम, उन्होंने नहीं भेजा है।

सुरैया—अच्छा तो इसमें जबरदस्ती काहे की है।

औरत—आपके और उनके दोनों के हक में यही इच्छा है कि हुजूर इन्कार न करें। वह अफ़सर पुलिस हैं, जरा सी देर में बे-आबरू कर सकते हैं!

सुरैया—हमारा भी खुदा है।

औरत—खैर न मानो।

औरत दो-चार बातें सुना कर चली गयी तो अब्बासी और सुरैया बेगम सलाह करने लगीं—

सुरैया—अब यहाँ से भी भागना पड़ा, और आज ही कल में।

अब्बासी—इस मुए को ऐसी जिद पड़ गयी कि क्या कहें! मगर अब भाग के जायँगे कहाँ?

सुरैया—जिधर खुदा ले जाय। कहीं से लाला खुशवक्तराय को लाओ, बड़ा नमकहलाल बुड्ढा है। कोई ऐसी तदबीर करो कि वह कल सुबह तक यहाँ आ जाय।

अब्बासी—कहिए तो कल्लू को भेजूँ, बुला लाये।

कल्लू कौम का लोहार था। ऊपर से तो मिला हुआ था, मगर दिल में इनका दुश्मन था। अब्बासी ने उसको बुला के कहा, तुम जाके लाला खुशवक्त राय को लिवा लाओ। कल्लू ने कहा, तुम साथ चलो तो क्या मुजायका है, मगर अकेला तो मैं न जाऊँगा। आखिर यही तै हुआ कि अब्बासी भी साथ जाय। शाम के वक़्त दोनों यहाँ से चले। अब्बासी मर्दाना भेष मे थी। कुछ दूर चल कर कल्लू बोला, अब्बासी बुरा न मानो तो एक बात कहूँ! तुम इस बेगम के साथ क्यों अपनी जिंदगी खराब करती हो? उनकी जमा-जथा ले कर चली आओ और मेरे घर पड़ रहो।

अब्बासी—तुम मर्दों का ऐतबार क्या!

कल्लू—हम उन लोगों में नहीं हैं।

अब्बासी—भला अब लाला साहब का मकान कितनी दूर होगा?

कल्लू—यही कोई दो कोस, कहो तो सवारी केराया कर लूँ या गोद में ले चलूँ!

अब्बासी—ऐं, या तो घर बिठाते थे, या गोद बिठाने लगे।

कल्लू—मई, बहुत कही, ऐसी कही कि हमारी जबान बंद हो गयी।

अब्बासी—ऐ, तुम ऐसे गँवारों को बंद करना कौन बात है।

थोड़ी देर में दोनों एक मकान में पहुँचे। यह कल्लू के दोस्त शिवदीन का मकान था। शिवदीन ने कहा, आओ यार, मिजाज अच्छे?

कल्लू—सब चैन ही चैन है। इनको ले आया हूँ, जो कुछ सलाह करनी हो, कर लो। सुनो अब्बासी, शिवदीन की और हमारी यह राय है कि तुमको अब यहाँ से न जाने दें। बस हमें अपनी बेगम के माल-टाल का पता बतला दो।

अब्बासी—बड़ी दगा दी कल्लू, बड़ी दगा दी तुमने।

कल्लू—अब तुम रात भर यहीं रहो, हम लोग ज़रा सुरैया बेगम से मुलाकात करने जायँगे।

अब्बासी—बड़ा धोखा दिया, कहीं के न रहे।

अब्बासी तो यहाँ रोती रही, उधर वह दोनों चोर कई आदमियों के साथ सुरैया बेगम के मकान पर जा पहुँचे और दरवाज़ा तोड़ कर अंदर दाखिल हुए। सुरैया बेगम की आँख खुल गयी, बिचारी अकेली मकान में मारे डर के दबकी पड़ी थी। बोली—कौन है? अब्बासी?

कल्लू—अब्बासी नहीं है, हम है, अब्बासी के मियाँ।

सुरैया—हाय मेरे अल्लाह, ग़ज़ब हो गया!

शिव०—चुप्पे-चुप्पे बोल, बताओ, रुपया कहाँ हैं? सच बता दो, नहीं मारी जाओगी।

कल्लू—बतायें तो अच्छा न न बतायें तो अच्छा, हम घर भर ढूँढ़ ही मरेंगे। सुना है कि तुम्हारे पास जवाहिर के ढेर हैं।

सुरैया—अमीर जब थी तब थी, अब तो मुसीबत की मारी हूँ।

कल्लू—तुम यों न बताओगी, हम कुछ और ही उपाय करेंगे, अब भी बताती है कि नहीं।

सुरैया बेगम ने मारे खौफ के एक-एक चीज का पता बतला दिया। जब सारी जमा-जथा ले कर वे सब चलने लगे, तो कल्लू सुरैया बेगम से बोला, चल हमारे साथ, उठ।

सुरैया—खुदा के लिए मुझे छोड दो। रहम करो।

शिव०—चल, चल उठ, रात जाती है।

सुरैया बेगम ने हाथ जोडे, पाँव पड़ी, रो-रो कर कहा, खुदा के वास्ते मेरी इज्जत न लो। मगर कल्लू ने एक न सुनी। कहने लगा, तुझे किसी रईस अमीर के हाथ बेचेंगे; तुम भी चैन करोगी, हम भी चैन करेंगे।

सुरैया—मेरा माल लिया, अब तो छोड़ो।

कल्लू—चलो, सीधे से चलो, नहीं तो धकियायी जाओगी। देखो मुँह से आवाज़ न निकले वरना हम छुरी भोंक देंगे।

सुरैया (रो कर)—या खुदा, मैंने कौन सा गुनाह किया था, जिसके एवज यह मुसीबत पडी।

कल्लू—चलती है कि बैठी रोती है?

आखिर सुरैया बेगम को अँधेरी रात में घर छोड़ कर उनके साथ जाना पड़ा।

आध कोस चलने के बाद इन चोरों ने सुरैया बेगम को दो और चोरों के हवाले किया। इनमे एक का नाम बुद्धसिंह था, दूसरे का हुलास। यह दोनों डाकू दूर-दूर तक मशहूर थे, अच्छे-अच्छे डकैत उनके नाम सुन कर अपने कान पकड़ते थे। किसी आदमी की जान लेना उनके लिए दिल्लगी थी। सुरैया बेगम कॉप रही थी कि देखें आबरू बचती है या नहीं। हुलास बोला, कहो बुद्धसिंह, अब क्या करना चाहिए ?

बुद्धसिंह—अपनी तो यह मरजी है कि कोई मनचला मिल जाये तो उसी दम पटील डालो।

हुलास—मैं तो समझता हूँ, यह हमारे साथ रहे तो अच्छे-अच्छे शिकार फँसें। सुनो बेगम, हम डकैत हैं, बदमाश नहीं। हम तुम्हें किसी ऐसे जवान के हाथ बेचेंगे, जो तुम्हें अमीरज़ादी बना कर रखे। चुपचाप हमारे साथ चली आओ।

चलते चलते तीनों आमों के एक बाग़ में पहुँचे। दोनों डाकू तो चरस पीने लगे, सुरैया बेगम सोचने लगी—खुदा जाने, किसके हाथ बेचें, इससे तो यही अच्छा है कि कत्ल कर दें। इतने ही में दो आदमी बातें करते हुए निकले—

एक—मिर्जा जी, दो बदमाशों से यह शहर पाक हो गया। आज़ाद और शह-सवार। दोनों ही कालेपानी गये। अब दो मुझा और बाकी हैं।

मिर्जा—वह दो कौन हैं ?

पहला—वही हुलास और बुद्धसिंह। अरे, वह दोनों तो यहीं बैठे हुए हैं! क्यों यारो, चरस के दम उड़ रहे हैं ? तुम लोगों के नाम वारंट जारी है।

हुलास—मीर साहब, आप भी बस वही रहे। पड़ोस में रहते हो, फिर भी वारंट से डराते हो ? ऐसे-ऐसे कितने वारंट रोज़ ही जारी हुआ करते हैं। हममे और पुलिस से तो जानी दुश्मनी है, मगर कसम खा के कहता हूँ कि अगर पचास आदमी भी गिरफ़्तार करने आये तो हमारी गर्द तक न पायें। हम दोनों एक पलटन के लिए काफी हैं। कहिए, आप लोग कहाँ जा रहे हैं ?

मिर्जा—अजी, हम भी किसी शिकार ही के तलाश में निकले हैं।

जब मीर और मिर्जा चले गये तो दोनों चोर भी सुरैया बेगम को ले कर चले। इत्तिफाक से उसी वक्त एक सवार आ निकला। बुद्धसिंह ने साईस को तो मार गिराया और मुसाफ़िर से कहा, अगर आबरू के साथ घोड़ा नजर करो तो बेहतर है, नहीं तो तुम भी जमीन पर लोट रहे होगे। सवार बेचारा उतर पड़ा। हुलास ने तब सुरैया बेगम को घोड़े पर सवार किया और लगाम ले कर चलने लगा।

सुरैया बेगम दिल में सोचती थी कि इतनी ही उम्र में हमने क्या-क्या देखा। यह नौबत पहुँची है कि जान भी बचती दिखायी नहीं देती।

हुलास—बीबी, क्या सोचती जाती हो ? कुछ गाना जानती हो तो गाओ। इस जंगल में मंगल हो।

बुद्धसिंह—इससे कहो कि कोई भजन गाये।

हुलास—इनको ग़ज़लें याद होंगी या ठुमरी-टप्पा। यह भजन क्या जानें!

सुरैया—नहीं मियाँ, हमें कुछ नहीं आता, हम बहू-बेटियाँ गाना क्या जानें।

इतने में किसी की आवाज आयी। हुलास ने बुद्धसिंह से पूछा, यह किसकी आवाज आयी ?

बुद्धसिंह—अरे, कौन सा आदमी बोला था ?

आवाज—जरा इधर तक आ जाओ। मैं मिर्ज़ा हूँ, ज़रा सुन लो।

हुलास और बुद्धसिंह दोनों आवाज की तरफ चले, इधर-उधर देखा, कोई न मिला। सुरैया बेगम का कलेजा धड़कने लगा। मारे डर के आँखें बंद कर लीं और आहिस्ता-आहिस्ता दोनों को पुकारने लगीं। हाय! खुदा किसी को मुसीबत में न डाले। यह दोनों डाकू उसको बेचने की फ़िक्र में थे, और इसने मुसीबत के वक़्त उन्हीं दोनों को पुकारा। वह आवाज़ की तरफ कान लगाये हुए चले तो देखा कि एक बूढ़ा आदमी घास पर पड़ा सिसक रहा है। इनको देख कर बोला, बाबा, मुझ फ़क़ीर को जरा सा पानी पिलाओ। बस, मैं पानी पी कर इस दुनिया से कूच कर जाऊँगा। फिर किसी को अपना मुँह न दिखाऊँगा।

हुलास ने उसे पानी पिलाया, पानी पी कर वह बोला, बाबा, खुदा तुम्हें इसका बदला दे। इसके एवज तुम्हें क्या दूँ। खैर, अगर दो घंटे भी जिंदा रहा तो अपना कुछ हाल तुमसे बयान करूँगा और तुम्हें कुछ दूँगा भी।

हुलास—आपके पास जो कुछ जमा-जथा हो वह हमको बता दीजिए।

बूढ़ा—कहा न कि दो घंटे भी ज़िंदा रहा तो सब बातें बता दूँगा। मैं सिपाही हूँ, लड़कपन से यही मेरा पेशा है।

हुलास—आपने तो एक किस्सा छेड़ दिया, मुझे खौफ़ है कि ऐसा न हो कि आपकी जान निकल जाय तो फिर वह रुपया वहीं का वहीं पड़ा रहे।

बूढ़ा (गा कर)—पहुँची न राहत हमसे किसी को...

हुलास—जनाब, आपको गाने को सूझती है और हम डर रहे हैं कि कहीं आप का दम न निकल जाय। रुपये बता दो, हम बड़ी धूमधाम से तुम्हारा तीजा करेंगे।

बुद्धसिंह—पानी और पिलवा दो तो फिर खूब ठंडा हो कर बतायेगा।

बूढ़ा—मेरा एक लड़का है, दुनिया में और कोई नहीं। बस यही एक लड़का, जवान, खूबसूरत, घोड़े पर खूब सवार होता था।

सुरैया—फिर अब कहाँ है वह ?

बूढ़ा—फ़ौज में नौकर था। किसी बेगम पर आशिक हुआ, तब से पता नहीं। अगर इतना मालूम हो जाय कि उसकी जान निकल गयी तो कब्र बनवा दूँ!

सुरैया—लम्बे हैं या ठिंगने ?

बूढ़ा—लम्बा है। चौड़ा सीना, ऊँची पेशानी, गोरा रंग।

सुरैया—हाय-हाय! क्या बताऊँ बड़े मियाँ, मेरा उनका बरसों साथ रहा है। मेरे साथ निकाह होने को था।

बूढ़ा—बेटा, जरी हमारे पास आ जाओ। कुछ उसका हाल बताओ। जिंदा तो है?

सुरैया—हाँ, इतना तो मैं कह सकती हूँ कि जिंदा हैं।

बूढ़ा—अब वह है कहाँ? ज़रा देख लेता तो आरज़ू पूरी हो जाती।

हुलास—आपका सर दबा दूँ, तलुवे मलूँ, जो खिदमत कहिए करूँ।

बूढ़ा—नहीं, मौत का इलाज नहीं है। मैंने अपने लड़के को लड़ाई के फ़न खूब सिखाये थे। हरएक के साथ मुरौवत से पेश आता था। बस, इतना बता दो कि ज़िंदा है या मर गया?

सुरैया—ज़िंदा हैं और खुश हैं।

बूढ़ा—अब मैं अपनी सारी तकलीफें भूल गया। ख्याल भी नहीं कि कभी तकलीफ हुई थी।

ये बातें हो रही थीं कि पचास आदमियों ने आ कर इन लोगों को चारों तरफ़ से घेर लिया। दोनों डाकुओं की मुश्कें कस ली गयीं। बुद्धसिंह मजबूत आदमी था। रस्सी तोड़ कर, तीन सिपाहियों को जख्मी किया और भाग कर झील मे कूद पड़ा, किसी की हिम्मत न पड़ी कि झील में कूद कर उसे पकड़े। हुलास बँधा रह गया।

यह पुलिस का इंसपेक्टर था।

सुरैया बेगम हैरान थीं कि यह क्या माजरा है। इन लोगों को डाकुओं की खबर कैसे मिल गयी। चुपचाप खड़ी थी कि सिपाहियों ने उससे हँसी-दिल्लगी करनी शुरू की। एक बोला, वाह-वाह, यह तो कोई परी है भाई। दूसरा बोला, अगर ऐसी सूरत कोई दिखा दे तो महीने की तनख्वाह हार जाऊँ।

हुलास—सुनते हो जी, उस औरत से न बोलो, तुमको हमसे मतलब है या उससे।

इंसपेक्टर—इसका जवाब तो यह है कि तेरे एक बीस लगाये और भूल जाय तो फिर से गिने। आँखें नीची कर, नहीं खोद के गाड़ दूँगा।

सुबह के वक्त शहर में दाखिल हुए तो सुरैया बेगम ने चादर से मुँह छिपा लिया। इस पर एक चौकीदार बोला, सत्तर चूहे खाके बिल्ली हज को चली। ओढ़नी मुँह पर ढाँपती है, हटाओ ओढ़नी।

सुरैया बेगम की आँखों से आँसू जारी हो गये। उसके दिल पर जो कुछ गुजरती थी, उसे कौन जान सकता है। रास्ते में तमाशाइयों में बातें होने लगीं!

रँगरेज—भई, यह दुपट्टा कितना अच्छा रँगा हुआ है!

नानबाई—कहाँ से आते हो जवानो? क्या कहीं डाका पड़ा था?

शेख जी—अरे यारो, यह नाज़नीन कौन है? क्या मुखड़ा है, कसम खुदा की, ऐसी सूरत कभी न देखी थी। बस, यही जी चाहता है कि इससे निकाह पढ़वा लें। यह तो शब्बोजान से भी बढ़ कर है।

यह शेख जी वही वकील साहब थे जिनके यहाँ अलारक्खी शब्बोजान बन कर रही थी। सलारू भी साथ था। बोला, मियाँ, आँखोंवाले तो बहुत देखे, मगर आपकी आँख निराली है।

वकील—क्यों बे बदमाश, फिर तूनेगुस्ताखी की।

सलारू—सब कहेंगे, खरी कहेंगे। आप थाली के बैंगन हैं।

वकील साहब इस पर झल्ला कर दौड़े। सलारू भागा, आप मुँह के बल गिरे। इस पर लोगों ने कहकहा मारा। सुरैया बेगम सोच रही थीं कि मैंने इस आदमी को कहीं देखा है, पर याद न आता था।

यह लोग और आगे चले तो तरह-तरह की अफ़वाहें उड़ने लगीं। एक महल्ले में यह खबर उड़ी कि दरिया से एक घोड़मुहा आदमी निकाला गया है। उसी के साथ एक परी भी निकली है। दो-तीन महल्लों में यह अफ़वाह उड़ी कि एक औरत अपने घर से ज़ेवर ले कर भाग गयी थी, अब पकड़ी गयी है। नौ बजते-बजते यह लोग थाने में जा पहुँचे। हुलास और सुरैया बेगम हवालात में बंद कर दिये गये। रात को तरह-तरह के ख्वाब दिखायी दिये। पहले देखा कि उसका बूढ़ा शौहर क़ब्र से गर्दन निकाल कर कहता है, सुरैया, वह कैसी बुरी घड़ी थी, जब तेरे साथ निकाह किया और अपने खानदान की इज्ज़त खाक में मिलायी। फिर दूसरा ख्वाब देखा कि आज़ाद एक दरख्त के साये में लेटे और सो गये। एक साँप उनके सिरहाने आ बैठा और काटना ही चाहता था कि सुरैया बेगम की आँख खुल गयी।

सवेरे उठ कर बैठी कि एक सिपाही ने आ कर कहा, तुम्हारे भाई तुमसे मिलने आये हैं। सुरैया बेगम ने सोचा, मेरा भाई तो कोई पैदा ही नहीं हुआ था, यह कौन भाई बन बैठा? सोची; शायद कोई दूर के रिश्तेदार होंगे, बुला लिया। जब वह आया तो उसे देख कर सुरैया बेगम के होश उड़ गये। यह वही वकील साहब थे। आपने आते ही आते कहा, बहन, खैर तो है, यह क्या, हुआ क्या? हमसे बयान तो करो! कुछ दौड़-धूप करें? हुक्काम से मिल कर कोई सबील निकालें।

सुरैया—मियाँ, मेरी तकदीर में यही लिखा था, तो तुम क्या करोगे और कोई क्या करेगा?

वकील—खैर, अब उन बातों का ज़िक्र ही क्या। सच कहता हूँ शब्बोजान, तुम्हारी याद दिल से कभी नहीं उतरी, मगर अफ़सोस कि तुमने मेरी मुहब्बत की कदर न की। जिस दिन तुम मेरे घर से निकल भागीं, मुझे ऐसा मालूम हुआ कि बदन से जान निकल गयी। अब तुम घबराओ नहीं। हम तुम्हारी तरफ़ से पैरवी करेंगे। तुम जानती ही हो कि हम कैसे मशहूर वकील हैं और कैसे-कैसे मुक़दमे बात की बात में जीत लेते हैं।

सुरैया—इस वक्त आप आ गये, इससे दिल को बड़ी तसकीन हुई। तुम्हारे घर से निकली तो पहिले एक मुसीबत में फँस गयी, बारे खुदा-खुदा करके उससे नजात पायी और कुछ दौलत भी हाथ आयी तो तुम्हारे ही महल्ले में मकान लिया और बेगमों की तरह रहने लगी।

वकील—अरे, वह सुरैया बेगम आप ही थीं?

सुरैया—हाँ, मैं ही थी।

वकील—अफसोस, इतने करीब रह कर भी कभी मुझे न बुलाया! मगर वह आपकी दौलत क्या हुई और यहाँ हवालात में क्योंकर आयीं?

सुरैया—हुआ क्या, दो बार चोरी हो गयी, ऊपर से थानेदार भी दुश्मन हो गया। आखिर हम अपनी महरी को ले कर चल दिये। एक गाँव में रहने लगी, मगर वहाँ भी चोरी हुई और डाकुओं के फंदे में फँसी।

इतने ही में एक थानेदार ने आ कर वकील साहब से कहा, अब आप तशरीफ़ ले जाइए। वक़्त खतम हो गया। सुरैया बेगम ने इस थानेदार को देखा, तो पहचान गयी। यह वही आदमी था जिसके पास एक बार वह आजाद पर रपट करने गयी थी। बोली—क्यों साहब, पहचाना? अब क्यों पहचानिएगा?

थानेदार—अलारक्खी, खुदा को गवाह रख कर कहता हूँ कि इस वक्त मारे खुशी के रोना आता है। मैं तो बिलकुल मायूस हो गया था। मुझे अब भी तुम्हारी वैसी ही मुहब्बत है जो पहिले थी।

रात के वक्त थानेदार ने हवालात में आ कर उसे जगाया और आहिस्ता से कान में कहा, बहुत अच्छा मौका है, चलो, भाग चलें। मैंने चौकीदारों को मिला लिया है।

सुरैया बेगम ने थानेदार को समझाया कि कहीं पकड़ न लिये जायँ। मगर जब वह न माना, तो वह उसके साथ चलने पर तैयार हो गयी। बाहर आ कर थानेदार ने सुरैया बेगम को मर्दाना कपडे पहिनाये और गाड़ी पर सवार कराके चला। जब दो कोस निकल गये तो सवेरा हुआ। थानेदार ने गाड़ी से दरी निकाली और आराम से लेट कर हुक्का पीने लगे कि एक मुसाफ़िर सवार ने आ कर पूछा—क्यों भाई मुसाफिर हिंदू हो या मुसलमान? मुसलमान हो तो हुक्का पिलाओ।

थानेदार ने खातिर से बैठाया। लेकिन जब मुसाफिर के चेहरे पर ग़ौर से नज़र डाली तो कुछ शक हुआ। कहा—जनाब, मेरे दिल में आपकी तरफ से एक शक पैदा हुआ है। कहिए अर्ज करूँ, कहिए खामोश रहूँ? आप ही तो जबलपुर में एक सौदागर के यहाँ मुंशी थे। वहाँ आपने दो हजार रुपये का ग़बन किया और साल भर की सज़ा पायी। कहिए, ग़लत कहता हूँ?

मुसाफिर—जनाब, आपको धोखा हुआ है, यहाँ खानदानी रईस हैं। ग़बन पर लानत भेजते हैं।

थानेदार—यह चकमे किसी और को दीजिएगा। दाई से पेट नहीं छिपता।

मुसाफ़िर—अच्छा मान लीजिए, आप ही का कहना दुरुस्त है। भला हम फँस जायँ तो आपको क्या मिले?

थानेदार—पाँच सौ रुपये नक़द, तरक्की और नेकनामी अलग!

मुसाफिर—बस! हमसे एक हजार ले लीजिए, अभी-अभी गिना लीजिए। लेकिन गिरफ़्तार करने का इरादा हो तो मेरे हाथ मे भी तलवार है।

थानेदार—हजरत, यह रकम बहुत थोड़ी है, हमें जँचती नहीं।

मुसाफिर—आखिर दो ही हजार तो मेरे हाथ लगे थे। उसका आधा आपको नजर करता हूँ! मगर गुस्ताखी माफ़ हो, तो मैं भी कुछ कहूँ! मुझे आपके इन दोस्त पर कुछ शक होता है। कहिए, कैसा भाँपा?

थानेदार ने देखा कि पर्दा खुल गया, तो झगड़ा बढ़ाना मुनासिब न समझा। डरे, कहीं जा कर अफ़सरो से जड़ दे, तो रास्ते ही में धर लिये जाये। बोले, हजरत, अब आपको अख्तियार है, हमारी लाज अब आपके हाथ है।

मुसाफ़िर—मेरी तरफ़ से आप इतमीनान रखिए।

दोनों आदमियों में दोस्ती हो गयी। थोड़ी देर के बाद तीनों यहाँ से रवाना हुए, शाम होते-होते एक नदी के किनारे एक गाँव में पहुँचे। वहाँ एक साफ़-सुथरा मकान अपने लिए ठीक किया और जमींदार से कहा कि अगर कोई आदमी हमे पूछे तो कहना, हमे नहीं मालूम। तीनों दिन भर के थके थे, खाने-पीने की भी सुध न रही। सोये तो सवेरा हो गया। सुबह के वक़्त थानेदार साहब बाहर आये तो देखा कि जमींदार उनके इंतजार में खड़ा है। इनको देखते ही बोला, जनाब, आपने तो उठते-उठते नौ बजा दिये! एक अजनबी आदमी यहाँ आपकी तलाश में आया है। वरदी तो नही पहिने है, हाँ, सिर पर पगड़ी बाँधे है। पंजाबी मालूम होता है। मुझे तो बहुत डर लग रहा है कि न जाने क्या आफ़त आये।

थानेदार—किसी बहाने से हमको अपने मकान पर ले चलो और ऐसी जगह बैठाओ, जहाँ से हम सुन सकें कि क्या बातें करता है।

जमींदार—चलिए, मगर आपका चलना अच्छा नहीं। अंदर ही बैठिए, अगर कोई खटके की बात होगी तो आपको इत्तला दूँगा।

थानेदार—जनाब, मैंने पुलिस में नौकरी की है; चलने का डर आपको होगा। मैं अभी दाढ़ी हज्जाम की नजर करता हूँ और मूछें कतरवा डालता हूँ। चलिए, छुट्टी हुई।

सुरैया बेगम को समझाया कि कहीं फँस गये तो कहीं के न रहोगे। आप भी जाओगे और मुझे भी ले डूबोगे। मगर थानेदार साहब ने एक न सुनी। फौरन नाई को बुलाया, दाढी मुड़वायी, स्याह किनारे की धोती पहनी, अँगरखा डाटा, काली मँदील सर पर रखी और आधे हिंदू और आधे मुसलमान बने हुए जमींदार के पास जा पहुँचे। सलाम-बंदगी के बाद बातें होने लगीं। थानेदार ने अपना नाम शेख बुद्धू बतलाया और घर बंगाल में। जमींदार के पास एक पंजाबी भी बैठा हुआ था।

समझ गये कि यही हजरत हमें गिरफ़्तार करने आये हैं। नाम पूछा तो उसने बतलाया शेरसिंह।

थानेदार—आप तो पंजाब के रहनेवाले होंगे?

शेरसिंह—जी हाँ, हम खास अम्बरसर में रहते हैं।

थानेदार—आप कहाँ नौकर हैं?

शेरसिंह—हम ज़मींदार हैं। अम्बरसर के पास हमारा इलाका है, उसको हमारा भाई देखता है, हम घूमते रहते हैं। आप यहाँ किस ग़रज़ से आये हैं? और टिके आप कहाँ हैं?

थानेदार—इसी गाँव में मैं भी ठहरा हूँ। अगर तकलीफ़ न हो तो हमारे साथ घर तक चलिए।

थानेदार उनको ले कर डेरे पर आये। सुरैया बेगम दौड़ कर छिपने को थीं, मगर थानेदार ने मना किया और कहा कि यह मेरे भाई हैं। इनसे पर्दा करना फ़ुजूल है।

शेरसिंह—यह आपकी कौन हैं?

थानेदार—जी, मेरे घर पड़ गयी हैं।

सुरैया बेगम—ऐ हटो भी, क्या वाहियात बातें करते हो। हजरत, यह मेरे भाई हैं। इस पर शेरसिंह ने कहकहा लगाया और थानेदार झेंपे।

शेरसिंह—अपने सुना नहीं, एक मुसलमान थानेदार किसी बेगिन को हवालात से ले कर भागे। बड़ी तहकीकात हो रही है, मगर पता नहीं चलता।

थानेदार—कह तो नहीं सकता कि वह थानेदार ही था या कोई और, मगर परसों रात को जब हम और यह आ रहे थे तो देखा कि एक गाड़ी पर कोई फ़ौजी आदमी सवार है और किसी औरत से बातें करता जाता है। औरत का नाम सुरैया बेगम था। जो मुझे मालूम हो कि वही हजरत हैं तो कुछ ले मरूँ।

शेरसिंह—ज़रूर वही था, उस औरत का नाम सुरैया बेगम ही था। क्या कहूँ, मैं उस वक्त न हुआ।

तीनों में बड़ी देर तक हँसी-दिल्लगी होती रही। शेरसिंह जब चलने लगे तो कहा, कल से हम भी यहीं ठहरेंगे। दूसरे दिन तड़के शेरसिंह अपना बोरिया-बधना ले कर आ पहुँचे। थानेदार ने कहा, हजरत, आप हिंदू और हम मुसलमान। आपकी गंगा और हमारा कुरान। आप गंगा की कसम और हम कुरान की कसम खायँ कि मरते दम तक कभी साथ न छोड़ेंगे, हमेशा दोस्ती का दम भरते रहेंगे। ऐसा न हो कि पीछे से निकल जाओ।

शेरसिंह—हम अपने ईमान की कसम खाते हैं कि मरते दम तक तुम्हारी दोस्ती का दम भरेंगे।

थानेदार—मेरी कुछ शर्तें हैं, उनको कबूल कीजिए—

(१) एक दूसरे की बात किसी से न कहें। अगर हम किसी को मार भी डालें तो आप न कहिए। चाहे नौकरी जाय, चाहे आबरू जाय।

(२) हमारे आपस में कोई पर्दा न रहे।

(३) हम अपना हाल आपसे कहें और आप अपना हाल हमसे बयान करें।

शेरसिंह—आपकी सब बातें मंजूर हैं। हाथ पर हाथ मारिए और टोपी बदलिए। बस, हम और आप भाई-भाई हुए। भाभी साहब, हम गरीबों पर भी मिहरबानी की नजर रहे।

सुरैया बेगम—ऐ, थोड़ी देर में हम आपको झुक के सलाम करेंगे।

शेरसिंह—क्यों, थोड़ी देर में क्या होगा साहब, बताइए!

सुरैया बेगम - (हँस कर) घडी दो में मुरलिया बाजेगी।

थानेदार—अच्छा तो अब सुनिए भाई साहब, हम खूनी हैं। अब आप चाहे इन्सपेक्टर की हैसियत में कैद कीजिए चाहे दोस्त की हैसियत में माफ कीजिए।

शेरसिंह—(दंग हो कर) क्या खूनी?

थानेदार—जी हाँ, मैं बंगाली नहीं हूँ। लखनवी हूँ। चंद ही रोज हुए, शाहजादा हुमायूँ फर को कत्ल किया और भाग आया। अब फ़र्माइए?

शेरसिंह—खुदा तुझे गारद करे, कमबख्त? तू तो इस काबिल है कि तुझको खोदके दफन कर दे।

थानेदार—अच्छा, अब हमारी क्या सजा तजबीज हुई? साफ बता दो।

शेरसिंह—मुए पर सौ दुर्रे और गधे की सवारी। बस, अब मैं यहाँ से भाग जाऊँगा और उम्र भर तुम्हारी सूरत न देखूँगा। खुदा तुझसे समझे।

थानेदार—सुनो भाईजान, यह फकत चकमा था। हम आज़माते थे कि देखें, तुम कौल के कहाँ तक सच्चे हो। अब हम साफ कहते हैं कि हम कातिल नहीं हैं, लेकिन मुजरिम हैं। अब कहिए।

शेरसिंह—अजी, जब इतने बड़े जुर्म की सज़ा न दी तो अब क्या खौफ है। क्या कहीं से माल मार लाये हो?

थानेदार—भाई, माफ़ करो तो बता दें। सुनिए, हम वही थानेदार हैं जिसकी तलाश में तुम निकले हो। और यह वही बेदिन हैं। अब चाहे बाँध ले चलो, चाहे दोस्ती का हक अदा करो।

शेरसिंह—ओफ! बड़ा झाँसा दिया। मुझे तो हैरत है कि तुमसे मेरे पास आया क्योंकर गया। मैं पंजाब से खास इसी काम के लिए बुलवाया गया था। यहाँ दो दिन से तुम्हें भी देख रहा हूँ और बेदिन से नोंक-झोंक भी हो रही है। मगर टाँय-टाँय-फिस।

सुरैया—हुजूर, ले जरा मुँह सम्हाल कर बात कीजिए। बेदिन कोई और होगी। बेदिन की सूरत नहीं देखी!

थानेदार—यह बेगम हैं। खुदा की कसम। सुरैया बेगम नाम है।

शेरसिंह—वह तो बातचीत से जाहिर है। अच्छा बेगम साहब, बुरा न मानो

तो एक बात कहूँ। अगर अपनी और इनकी रिहाई चाहती हो, तो इनको इस्तीफ़ा दो और हमसे वादा करो।

थानेदार—इनको राज़ी कीजिए। हमसे क्या वास्ता। हमको तो अपनी जान प्यारी है।

सुरैया—ऐ वाह! अच्छे मिले। तुम थानेदारी क्या करते थे! अच्छा, दिल्लगी तो हो चुकी। अब मतलब की बात कहो। हम दोनों भागें, तो भागके जायँ कहाँ? और भागें तो रहें कहाँ?

शेरसिंह—एक काम करो। हमको वापस जानेदो। हम वहाँ जा कर आयँ-बायँ-सायँ उड़ा देंगे। इसके बाद आ कर तुमको पंजाब ले जायँगे।

थानेदार—अच्छा तो है। हम सब मिल कर पंजाब चलेंगे।

सुरैया—तुम जाओ, हम तो न जायँगे। और सुनिए, वाह!

थानेदार—हमारी बात मानिए। आप घर-घर तहक़ीक़ात कीजिए और दो दिन तक यहाँ टिके रहिए और वहाँ जा कर कहिए कि मुलजिम तराई की तरफ़ निकल गया।

शेरसिंह—हाँ, सलाह तो अच्छी है। तो आप यहाँ रहें, मैं जाता हूँ।

शेरसिंह ने दिन भर सारे क़स्बे में तहक़ीक़ात की। ज़मींदारों को बुला कर खूब डाँट-फटकार सुनायी। शाम को आ कर थानेदार के साथ खाना खाया और सदर को रवाना हुए। जब शेरसिंह चले गये तो थानेदार साहब बोले—दुनिया में रह कर अगर चालाकी न करें तो दम भर गुज़ारा न हो। 'दुनिया में आठों गाँठ कुम्मैत हो तब काम चले।

सुरैया—वाह! आदमी को नेक होना चाहिए, न कि चालाक।

थानेदार—नेकी से कुछ नहीं होता, चालाकी बड़ी चीज है। अगर हम शेर-सिंह से चालाकी न करते तो उनसे गला कैसे छूटता।

दूसरे दिन थानेदार साहब भी रवाना हुए। दिन भर चलने के बाद गाड़ीवान से कहा—भाई, यहाँ से मीरडीह कितनी दूर है?

गाड़ीवान ने कहा—हुजूर यही मीरडीह है।

थानेदार—यहाँ हम किसके मकान में टिकेंगे?

गाड़ीवान—हुजूर, आदमी भेज दिया गया है।

यह कह कर उसने नंदा-नंदा पुकारा। बड़ी देर के बाद नंदा आया और गाड़ी को एक टीले की तरफ ले चला। वहीं एक मकान में उसने दोनों आदमियों को उतारा और तहखाने में ले गया।

थानेदार—क्या कुछ नीयत खोटी है भई?

सुरैया—हम तो इसमें न जाने के। अल्लाह रे अँधेरा!

नंदा—आप चलें तो सही।

थानेदार ने तलवार म्यान से खींच ली सुरैया बेगम के साथ चले।

थानेदार—अरे नंदा, रोशनदान तो जरा खोल दे जाके।

नंदा—अजी, क्या जाने, किस वक्त के बंद पड़े हैं।

सुरैया—है-है! खुदा जाने, कितने बरसों से यहाँ चिराग नहीं जला। यह जीने तो खत्म ही होने नहीं आते।

नंदा—कोई एक सौ दस जीने हैं।

सुरैया—उफ्! बस अब मैं मर गयी।

नंदा—अब नगिचाय आये। कोई पच्चीस ठो और हैं।

बड़ी मुश्किलों से जीने तय हुए। मगर तहखाने में पहुँचे तो ऐसी ठंडक मिली कि गुलाबी जाड़े का मजा आया। दो पलंग बिछे हुए थे। दोनों आराम से बैठे। खाना भी पहले से एक बावर्ची ने पका रखा था। दोनों ने खाना खाया और आराम करने लगे। यह मकान चारों तरफ पहाड़ों से ढका था। बाहर निकलने पर पहाड़ों की काली-काली चोटियाँ नजर आती थीं। उन पर हिरन कुलेलें भरते थे। थानेदार ने कहा—बहुत मुकामों की सैर की है, मगर ऐसी जगह कभी देखने में नहीं आयी थी। बस, इसी जगह हमारा और तुम्हारा निकाह होना चाहिए।

सुरैया—भई, सुनो, बुरा मानने की बात नहीं। मैंने दिल में ठान ली है कि किसी से निकाह न करूँगी। दिल का सौदा सिर्फ एक बार होता है। अब तो उसी के नाम पर बैठी हूँ। किसी और के साथ निकाह करने की तरफ़ तबियत मायल नहीं होती।

थानेदार—आखिर वह कौन साहब हैं जिन पर आपका दिल आया है? मैं भी तो सुनूँ।

सुरैया—तुम नाहक बिगड़ते हो। तुमने मेरे साथ जो सलूक किये हैं, उनका एहसान मेरे सिर पर है, लेकिन यह दिल दूसरे का हो चुका।

थानेदार—अगर यह बात थी तो मेरी नौकरी क्यों ली? मुझे क्यों मुसीबत में गिरफ़्तार किया? पहले ही सोची होती। अब से बेहतर है, तुम अपनी राह लो, मैं अपनी राह लूँ।

सुरैया—यह तुमने लाख रुपये की बात कही। चलिए, सस्ते छूटे।

थानेदार—तुम न होगी तो क्या जिंदगी न होगी?

सुरैया—और तुम न होगे तो क्या सबेरा न होगा?

थानेदार—नौकरी की नौकरी गयी और मतलब का मतलब न निकला—

गैर आँखें सेंके उस बुत से दिले मुज़्तर जले,
बाये बेदर्दी कोई तापे किसी का घर जले।

सुरैया—आँखें सेंकवानेवालियाँ और होती हैं।

थानेदार—इतने दिनों से दुनिया में आवारा फिरती हो और कहती हो, हम नेक। वाह री नेकी!

सुरैया—तुमसे नेकी की सनद तो नहीं माँगती?

थानेदार—अब इस वक्त तुम्हारी सूरत देखने को जी नहीं चाहता।
सुरैया—अच्छा, आप अलग रहें। हमारी सूरत न देखिए, बस छुट्टी हुई।
थानेदार—हमको मलाल यह है कि नौकरी मुफ्त गयी।
सुरैया—मजबूरी !!

सुरैया बेगम ने अब थानेदार के साथ रहना मुनासिब न समझा। रात को जब थानेदार खा पी कर लेटा तो सुरैया बेगम वहाँ से भागी। अभी सोच ही रही थी कि एक चौकीदार मिला। सुरैया बेगम को देख कर बोला—आप कहाँ? मैंने आपको पहचान लिया है। आप ही तो थानेदार साहब के साथ उस मकान में ठहरी थीं। मालूम होता है, रूठ कर चली आयी हो। मैं खूब जानता हूँ।

सुरैया—हाँ, है तो यही बात, मगर किसी से जिक्र न करना।

चौकीदार—क्या मजाल, मैं नवाबों और रईसों की सरकार में रहा हूँ।

बेगम—अच्छा, मैं इस वक्त कहाँ जाऊँ?

चौकीदार—मेरे घर।

बेगम—मगर किसी पर ज़ाहिर न होने पाये, वरना हमारी इज्ज़त जायगी।

बेगम साहब चौकीदार के साथ चलीं और थोड़ी देर में उसके घर जा पहुँचीं। चौकीदार की बीबी ने बेगम की बड़ी खातिर की और कहा—कल यहाँ मेला है, आज टिक जाओ। दो-एक दिन में चली जाना।

सुरैया बेगम ने रात वहीं काटी। दूसरे दिन पहर दिन चढ़े मेला जमा हुआ। चौकीदार के मकान के पास एक पादरी साहब खड़े वाज़ कह रहे थे। सैकड़ों आदमी जमा थे। सुरैया बेगम भी खड़ी हो कर वाज़ सुनने लगीं। पादरी साहब उसको देख कर भाँप गये कि यह कोई परदेशी औरत है। कहीं से भूल-भटक कर यहाँ आ गयी है। जब वाज़ खत्म करके चलने लगे तो सुरैया बेगम से बोले—बेटी, तुम्हारा घर यहाँ तो नहीं है?

सुरैया—जी नहीं, बदनसीब औरत हूँ। आपका वाज सुन कर खड़ी हो गयी।

पादरी—तुम यहाँ कहाँ ठहरी हो?

सुरैया—सोच रही हूँ कि कहाँ ठहरूँ।

पादरी—मेरा मकान हाजिर है, उसे अपना घर समझो। मेरी उम्र अस्सी वर्ष से ज्यादा है। अकेले पड़ा रहता हूँ। तुम मेरी लड़की बन कर रहना।

दूसरे दिन जब पादरी साहब गिरजाघर में आये, तो उनके साथ एक नाज़ुक बदन मिस कीमती अँगरेजी कपड़े पहने आयी और शान से बैठ गयी। लोगों को हैरत थी कि या खुदा, इस बुड्ढे के साथ यह परी कौन है। पादरी साहब ने उसे भी पास की कुर्सी पर बैठाया। इस औरत की चाल-ढाल से पाया जाता था कि कभी सोहबत में नहीं बैठी है। हर चीज को अजनबियों की तरह देखती थी।

रँगीले जवानों में चुपके-चुपके बातें होने लगीं—

टाम—कपड़े अँगरेजी हैं, रंग गोरा, मगर ज़ुल्फ़ सियाह है और आँखें भी काली। मालूम होता है, किसी हिंदोस्तानी औरत को अँगरेजी कपड़े पहना दिये हैं।

डेविस—इस काबिल है कि जोरू बनायें।

टाम—फिर आओ, हम-तुम डोरे डालें, देखें, कौन खुशनसीब है।

डेविस—न भई, हम यों डोरे डालनेवाले आदमी नहीं। पहले मालूम तो हो कि है कौन? चाल-चलन का भी तो कुछ हाल मालूम हो। पादरी साहब की लड़की तो नहीं है। शायद किसी औरत को बपतिस्मा दिया है।

तीन हिंदोस्तानी आदमी भी गिरजा गये थे। उनमें यों बातें होने लगीं—

मिरज़ा—उस्ताद, क्या माल है, सच कहना?

लाला—इस पादरी के तो कोई लड़का-वाला नहीं था।

मुंशी—वह था या नहीं था, मगर सच कहना, कैसी खूबसूरत है।

नमाज़ के बाद जब पादरी साहब घर पहुँचे तो सुरैया से बोले—बेटी, हमने तुम्हारा नाम मिस पालेन रखा है। अब तुम अँगरेजी पढ़ना शुरू करो।

सुरैया—हमें किसी चीज़ के सीखने की आरज़ू नहीं है। बस, यही जी चाहता है कि जान निकल जाय। किसका पढ़ना और कैसा लिखना। आज से हम गिरजा-घर न जायँगे।

पादरी—यह न कहो बेटी! खुदा के घर में जाना अपनी आक़बत बनाना है। यह खुदा का हुक्म है।

सुरैया—अगर आप मुझे अपनी बेटी समझते हैं तो मैं भी आपको अपना बाप समझती हूँ, मगर मैं साफ़-साफ़ कहे देती हूँ कि मैं ईसाई मज़हब न कबूल करूँगी।

रात को जब सुरैया बेगम सोयी, तो आजाद की याद आयी और यहाँ तक रोयी कि हिचकियाँ बँध गयीं।

पादरी साहब चाहते थे कि यह लड़की किसी तरह ईसाई मज़हब अख्तियार कर ले, मगर सुरैया बेगम ने एक न सुनी। एक दिन वह बैठी कोई किताब पढ़ रही थी कि जानसन नाम का एक अँगरेज आया और पूछने लगा—पादरी साहब कहाँ हैं?

सुरैया—मैं अँगरेजी नहीं समझती।

जानसन—(उर्दू में) पादरी साहब कहाँ हैं?

सुरैया—कहीं गये हैं।

जानसन—मैंने कभी तुमको यहाँ नहीं देखा था।

सुरैया—जी हाँ, मैं यहाँ नहीं थी।

जानसन—यह कौन-सी किताब है?

सुरैया—सेनेका की नसीहतें हैं। पादरी साहब मुझे यह किताब पढ़ाते हैं।

जानसन—मालूम होता है, पादरी साहब तुम्हें भी 'नन' बनाना चाहते हैं।

सुरैया—नन किसे कहते हैं?

जानसन—नन उन औरतों को कहते हैं जो जिंदगी भर क्वाँरी रह कर मसीह की खिदमत करती हैं। उनका सिर मुँड़ा दिया जाता है और आदमियों से अलग एक मकान में रख दी जाती हैं।

सुरैया—यह तो बड़ी अच्छी बात है। मैं भी चाहती हूँ कि उन्हीं में शामिल हो जाऊँ और तमाम उम्र शादी न करूँ।

बानसन ने यह बातें सुनीं तो और ज़्यादा बैठना फ़ुज़ूल समझा। हाथ मिला कर चला गया।

सुरैया बेगम यहाँ आ तो फँसी थीं, मगर भाग निकलने का मौका ढूँढ़ती थीं। इस तरह तीन महीने गुज़र गये।

नेपाल की तराई में रियासत खैरीगढ़ के पास एक लक व दक़ जंगल है। वहाँ कई शिकारी शेर का शिकार करने के लिए आये हुए हैं। एक हाथी पर दो नौजवान बैठे हुए हैं। एक का सिन बीस-बाईस बरस का है, दूसरे का मुश्किल से अट्ठारह का। एक का नाम है वजाहत अली, दूसरे का माशूक हुसैन। वजाहत अली दोहरे बदन का मजबूत आदमी है। माशूक हुसैन दुबला-पतला छरहरा आदमी है। उसकी शक्ल-सूरत और चाल-ढाल से ऐसा मालूम होता है कि अगर इसे जनाने कपड़े पहना दिये जायँ, तो बिलकुल औरत मालूम हो। पीछे-पीछे छह हाथी और आते थे। जंगल में पहुँच कर लोगों ने हाथी रोक लिये ताकि शेर का हाल दरियाफ़्त कर लिया जाय कि कहाँ है। माशूक हुसैन ने काँप कर कहा—क्या शेर का शिकार होगा? हमारे तो होश उड़ गये। अल्लाह के लिए हमें बचाओ। मेरी तो शेर के नाम ही से जान निकल जाती है। तुमने तो कहा था हिरनी और पाढ़े का शिकार खेलने चलते हैं।

वजाहत अली—वाह इसी पर कहती थीं कि हम बन-बन फिरे हैं। भूत-प्रेत से नहीं डरते। अब क्या हो गया कि ज़रा सा शेर का नाम सुना और काँप उठीं!

माशूक हुसैन—शेर जरा सा होता है! ऐं, वह इस हाथी का कान पकड़ ले तो चिंघाड़ कर बैठ जाय। निगोड़ा हाथी बस देखने ही भर को होता है। इसके बदन में खून कहाँ। बस, पानी ही पानी है।

वजाहत अली—अव्वल तो शेर का शिकार नहीं है, और अगर शेर आया भी तो हम उसका मुकाबिला कर सकेंगे। अट्ठारह-अट्ठारह निशानेबाज साथ हैं। इनमें दो तीन आदमी तो ऐसे बढ़े हुए हैं कि रात के वक़्त आवाज पर तीर लगाते हैं। क्या मजाल कि निशाना खाली जाय। तुम घबराओ नहीं, ऐसा लुत्फ़ आयेगा कि सारी उम्र याद करोगी।

माशूक हुसैन—तुम्हें कसम है, हमें यहाँ से कहीं भेज दो। अल्लाह! कब यहाँ से छुटकारा होगा। ऐसी बुरी फँसी कि कुछ कहा नहीं जाता।

नवाब साहब ने मुसकिरा कर पूछा—किससे?

माशूक हुसैन—ऐं, हटो भी! तुम्हें दिल्लगी सूझी है और हम क्या सोच रहे हैं। शेर ऐसा जानवर, एक थप्पड़ में देव को सुला दे। आदमी जरी सा भुनगा, चले हैं शेर के शिकार को! हाथी रोक लो, नहीं अल्लाह जानता है, हम हाथी पर से कूद पड़ेंगे। बला से जान जाय या रहे।

नवाब—हैं-हैं! जान तुम्हारे दुश्मनों की जाय। आखिर इतने आदमियों को अपनी जान प्यारी है या नहीं? कोई और भी चूँ करता है?

माशूक—इतने आदमी जायँ चूल्हे में। इन मुओं को जान भारी हुई है। यह

घर से लड़ कर आये हैं। जोरू ने जूतियों मार-मार कर निकाल दिया है। इनकी और मेरी कौन सी बराबरी। हमे उतार दो, हम अब जायँगे।

नवाब—जरा ठहरो तो, मैं बंदोबस्त किये देता हूँ। किसी बडे दरख्त पर एक मचान बाँध देंगे। बस, वहीं से बैठके देखना?

माशूक—वाह, जरी सा मचान और जंगल का वास्ता। अकेली डर न जाऊँगी? हाँ, तुम भी बैठो तो अलबत्ता!

नवाब—यह तो बड़े शर्म की बात है कि हम मर्द हो कर मचान पर बैठें और और लोग शिकार खेलें।

माशूक—इन लोगों से कह दो कि हमारे दोस्त की यही राय है। डर किस बात का है? साफ़-साफ कह दो कि यह औरत हैं और हमारा इनके साथ निकाह होनेवाला है।

नवाब—यह नहीं हो सकता। यह मशहूर करना कि एक कमसिन औरत को मर्दाना कपडे पहना कर यहाँ लाये हैं, मुनासिब नहीं।

इतने में आदमियों ने आ कर कहा—हुजूर, सामने एक कछार है। उसमें एक शेरनी बच्चों के पास बैठी है। इसी दम हाथी को पेल दीजिए।

इतना सुनना था कि नवाब साहब ने खिदमतगार को हुक्म दिया—इनको एक शाली रूमाल और पचास अशर्फ़ियाँ आज ही देना। हाथी के लिए पेल का लफ़्ज़ खूब लाये! सुभान-अल्लाह!

इस पर मुसाहबों ने नवाब साहब की तारीफों के पुल बाँध दिये।

एक—सुभान-अल्लाह, वाह मेरे शाहजादे! क्यों न हो!

दूसरा—खुदा आपको एक हजार बरस की उम्र दे। हातिम का नाम मिटा दिया। रियासत इसे कहते हैं।

नवाब—अच्छा, अब सब तैयार हो और कछार की तरफ़ हाथी ले चलें।

माशूक—अरे लोगों, यह क्या अंधेर है। आखिर इतनों में किसी के जोरू-जाँता भी है या सब निहंग-लाडले, बेफिकरे, उठाऊ-चूल्हे ही जमा हैं। खुदा के लिए इनको समझाओ। इतनी सी जान, गोली लगी और आदमी टें से रह गया। आदमी में है क्या! अल्लाह करे, शेर न मिले। मुई बिल्ली से तो डर लगता है। शेर की सूरत क्योंकर देखूँगी। भला इतना बताओ कि बँधा होगा या खुला? तमाशे में हमने शेर देखे थे, मगर सब कठघरों में बंद थे।

एकाएक दो पासियों ने आ कर कहा कि शेरनी कछार से चली गयी! नवाब साहब ने वहीं डेरा डाल दिया और माशूक हुसैन के साथ अंदर आ बैठे।

नवाब—यह बात भी याद रहेगी कि एक बेगम साहब बहादुरी के साथ शेर का शिकार खेलने को गयीं!

माशूक—ऐ वाह! जो शरीफ़ज़ादी सुनेगी, अपने दिल में यही कहेगी कि शरीफ की लड़की और इतनी ढीठ। भलेमानस की बहू-बेटी वह है कि जंगल के कुत्ते का

नाम सुनते ही बदन के रोयें खड़े हो जायँ। अकेले कमरे में बिल्ली आये तो थरथर काँपने लगे। ख्वाब में भी रस्सी देखे तो चौक पड़े। अच्छी पट्टी पढ़ाते हो!

दूसरे दिन नवाब साहब ने शिकारी लिबास पहना। खेमे से निकले। माशूक हुसैन भी पीछे से निकले, मगर इस वक़्त बेगमों की पोशाक में थे और बेगम भी कौन? वही सुरैया, जो मिस पालेन बनी हुई पादरी साहब के साथ रही थी। ऐसा मालूम हुआ, कोई परी पर खोले चली आती है। नवाब साहब ने कहा—

आग़ाज़े इश्क़ ही में हमें मौत आ गयी,
आगाह भी न हाल से वह बेख़बर हुआ।

सुरैया बेगम ने तिनक के कहा—बस, यह मनहूस बातें हमें एक आँख नहीं भातीं। मरने-जीने का कौन ज़िक्र है?

नवाब—सुनिए हुजूर! जो आप आँखें दिखलायेंगी तो हम भी बिगड़ जायँगे। इतना याद रखिए।

सुरैया—खुदा के लिए ज़रा हया से काम लो। इन सबके सामने हमें रुसवा न करो। वह शरीफ़ज़ादी क्या, जो शर्म से मुँह मोड़े। इतने आदमी खड़े हैं और तुमको कुछ ख्याल ही नहीं।

खुदा का कह्र, बुतों का एताब रहता है,
इस एक जान प' क्या-क्या अज़ाब रहता है।

सुरैया—बस, हम न जायँगे। चाहे इधर की दुनियाँ उधर हो जाय।

नवाब साहब ने कदमों पर टोपी रख दी, और कहा—मार डालो, मगर साथ चलो; वरना घुट-घुट के जान जायगी।

बारे खुदा-खुदा करके बेगम साहब उठीं। इतने में चौकीदार ने आ कर कहा—खुदावंद, दो शेर जंगल में दिखाई दिये हैं। अब भी मौका है, वरना शेरनी की तरह वह भी भाग जायेंगे और फिर शिकार न मिलेगा।

बेगम—आदमी कैसे मुए जान के दुश्मन हैं!

नवाब साहब ने हुक्म दिया कि हाथी को बैठाओ। पीलवान ने 'बरी-बरी' कह कर हाथी को बैठाया। तब ज़ीना लगाया गया। बेगम साहब ने जीने पर कदम रखा, मगर झिझक कर उतर गयीं।

नवाब—पहली बार तो बेझिझक बैठ गयी थीं, अबकी डरती हो।

बेगम—ऐ लो, उस बार कहा था कि मुर्ग़ाबी का शिकार होगा।

नवाब—शेर का शिकार आसान है, मुर्ग़ाबी का शिकार मुश्किल है।

बेगम—चलिए, रहने दीजिए। हमने कच्ची गोलियाँ नहीं खेली हैं। यहाँ रूह काँप रही है कि या खुदा, क्या होगा?

नवाब—होगा क्या! कुछ भी नहीं।

आखिर बेगम साहब भी बैठीं। नवाब साहब भी बैठे। हवाली-मवाली भी दूसरे हाथियों पर बैठे और हाथी झूमते हुए चले। थोड़ी देर के बाद लोग एक झील के

पास पहुँचे। शिकारी ने कहा—झील में पानी कम है, हाथी निकल जायँगे।

बेगम—क्या कहा! क्या इस समुंदर में से जाना होगा?

नवाब—अभी दम के दम में निकले जाते हैं।

बेगम—कहीं निकले न! हमे यहाँ डुबोने लाये हो! जरी हाथी का पाँव फिसला और चलिए, पानी के अंदर गोते खाने लगे।

नवाब साहब ने बहुत समझाया, तब बेगम साहब अपने हाथी को झील के अंदर डालने पर राजी हुईं, मगर आँखें बंद कर लीं और गुल मचाया कि जल्दी निकल चलो। पाँच हाथी तो साथ साथ चले, दो पीछे थे। नवाब साहब ने कहा—अब आँखे खोल दो, आधी दूर चले आये हैं, आधी दूर और बाकी है। बेगम ने आँखें खोलीं तो झील की कैफियत देख कर खिल उठीं। किनारों पर ऊँचे-ऊँचे दरख्त झूम रहे थे। कोई झील के पानी को चूमता था, किसी की शाखें झील की तरफ झुकी थीं। बेगम ने कहा—अब हमे डर नहीं मालूम होता। मगर अल्लाह करे, कोई शेर आज न मिले।

नवाब—खुदा न करे।

बेगम—वाह! आ जाय क्या मजाल है। हम मंतर पढ़ देंगे।

नवाब—भला आप इतनी हुईं तो!

बेगम—अजी, मैं तुम सबको बनाती हूँ, डर कैसा! मगर कहीं शेर सचमुच निकल आये, तो गजब ही हो जाय। सुनते ही रोयें खड़े होते हैं।

इस झील के उस पार कछार था और कछार में एक शेरनी अपने बच्चों को लिये बैठी थी। खेदे के आदमियों ने कहा—हुजूर, अब हाथी रोक लिये जाँय। सुरैया बेगम काँप उठीं। हाय! क्या हुआ। यह शेरनी कहाँ से निकल आयी। या तो उसको कजा लायी है या हमको।

नवाब साहब ने हुक्म दिया, खेदा किया जाय। तीस आदमी बड़े-बड़े कुत्ते ले कर कछार की तरफ दौड़े। सुरैया बेगम बहुत सहमी हुई थीं। फिर भी शिकार में एक किस्म का लुत्फ़ भी आता था। एकाएक दूर से रोशनी दिखाई दी। बेगम ने पूछा—वह रोशनी कैसी है? नवाब बोले—शेरनी निकली होगी और शायद हमला किया हो। इसी लिए रोशनी की गयी कि डर से भाग जाय।

शेरनी ने जब आदमियों की आवाज सुनी, तो घबरायी। बच्चों को एक ऐसी जगह ले गयी जहाँ आदमी का गुजर मुहाल था। खेदे के लोग समझे कि शेरनी भाग गयी। सुरैया बेगम यह खबर सुन कर खिलखिला कर हँस पड़ीं। लो, अब खेलो शिकार, बड़े वह बन कर चले थे! हमारी दुआ और कबूल न हो?

नवाब—आज बे-शिकार किये न जायँगे। लो, कसम खायी।

नवाब साहब रईस तो थे ही, कसम खा बैठे। एक मुसाहब ने कहा—हुजूर, मुमकिन है कि शेर आज न मिले। क़सम खाना ठीक नहीं।

नवाब—हम हरगिज खाना न खायेंगे जब तक शेर का शिकार न करेंगे। इसमें

चाहे रात हो जाय, शेर का जंगल में न मिलना कैसा ?

बेगम—खुदा तुम्हारी बात रख ले।

मुसाहब—जैसी हुजूर की मर्जी।

बेगम—खुदा के लिए अब भी चले चलो। क्या तुम पर कोई जिन सवार है या किसी ने जादू कर दिया है। अब दिन कितना बाकी है ?

नवाब—दिन कितना ही हो, हम शिकार जरूर करेंगे।

बेगम—तुम्हें बायें हाथ का खाना हराम है जो शेर का शिकार खेलें बग़ैर जाओ।

नवाब—मंजूर ! जब तक शेर का शिकार न करेंगे, खाना न खायँगे।

बेगम—बात तो यही है, खुदा तुम्हारी बात रख ले। ओ लोगो, कोई इनको समझाओ, यह किसी का कहना नहीं मानते, कोई सलाह देनेवाला भी है या नहीं ?

एक मुसाहब—हुजूर ने तो कसम खा ली, लेकिन साथ के सब आदमी भूखे-प्यासे हैं, उनके हाल पर रहम कीजिए, वरना सब हलकान हो जायँगे।

नवाब—हमको किसी का ग़म नहीं है, कुछ परवा नहीं है। अगर आप लोग हमारे साथी हैं तो हमारा हुक्म मानिए।

बेगम—शाम होने आयी, और शिकार का पता नहीं, फिर अब यहाँ ठहरना बेवकूफ़ी है या और कुछ ?

बरकत—हुजूर ही के सब काँटे बोये हैं।

इतने में खेदेवालों ने कहा—खुदावंद, अब होशियार रहिए। शेरनी आती है। अब देर नहीं है। कछार छोड़ कर पूरब की तरफ भागी थी। हम लोगों को देख कर इस ज़ोर से गरजी कि होश उड़ गये, अट्ठाईस आदमी साथ थे, अट्ठाईसों भाग गये। उस वक़्त कदम जमाना मुहाल था। शेर का क़ायदा है कि जब गोली लगती है तो आग हो जाता है। फिर गोली के बाप को नहीं मानता। अगर बम का गोला भी हो तो वह इस तरह आयेगा जैसे तोप का गोला आता है। और शेरनी का कायदा है कि अगर अपने बच्चों के पास हो और सारी दुनिया के गोले कोई ले कर आये तो भी मुमकिन नहीं कि उसके बच्चों पर आँच आ सके।

बेगम—बँधी है या खुली हुई है ? तमाशेवाले शेरों की तरह कठघरे में बंद है न ?

मुसाहब—हाँ हाँ साहब, बँधी हुई है।

बेगम भला उसको बाँधा किसने होगा ?

अब एक दिल्लगी सुनिए। एक हाथी पर दो बंगाली थे। उन्होंने इतना ही सुना था कि नवाब साहब शिकार के लिए जाते हैं। अगर यह मालूम होता कि शेर के शिकार को जाते हैं तो करोड़ बरस न आते। समझे थे कि झीलों में चिड़ियों का शिकार होगा। जब यहाँ आये और सुना कि शेर का शिकार है तो जान निकल गयी। एक का नाम कालीचरण घोष, दूसरे का शिवदेव बोस था। इन दोनों में यों बातें होने लगीं।

बोस—नवाब हमको बड़ा धोखा दिया, हम नहीं जानता था कि यह लोग हमारा दुश्मन है।

घोष—हम इनसे समझेगा। ओ शाला फील का बान, हमारे को कीधर ले जायगा?

फ़ीलबान ने हाथी को और भी तेज़ किया तो यह दोनों साहब चिल्लाये।

बोस—ओ शाला!

घोष—ओ शाला फील का बान, अच्छा हम साहब के यहाँ तुम्हारा नालिश करेगा। अरे बाबा, हम लोग जाने नहीं माँगता। शेर शाला का मुकाबिला कौन करने सकता?

फ़ीलबान—बाबू जी, डरो नहीं। अभी तो शेर दूर है। जब हौदा पकड़ लेगा तब दिल्लगी होगी, अभी शाला-शाला कहते जाओ।

बोस—अरे भाई, तुम हमारे का बाप, हमारे का बाप का बाप, हम हाथी को फेरने माँगता। ओ शाला, तुम आरामजादा।

फ़ीलबान—अच्छा बाबू, देते जाओ गालियाँ। खुदा की क़सम, शेर के मुँह में हाथी न ले जाऊँ तो पाजी।

बोस—बाप रे बाप, हमारे को बचाओ, हम रिशवत देगा। हमारा बाप है, माँ है, सब तुम है।

जितने आदमी साथ थे, सब हँस रहे थे। इन दोनों की घबराहट देखने क़ाबिल थी। कभी फ़ीलबान के हाथ जोड़ते, कभी टोपी उतार कर खुदा से दुआ माँगते थे, कभी जंगल की तरफ देख कर कहते थे—बाबा, हमारा जान लेने को हम यहाँ आया। हमारा मौत हमको यहाँ लाया। अरे बाबा, हम लोग लिखने-पढ़ने में अच्छा होता है। हम लोग बिलायत जा कर अँगरेजी सीखता है। हम कभी शेर का शिकार नहीं करता, हमारा अपना जान से बैर नहीं है। ओ फील का बान, हम खबर के कागज में तुम्हारा तारिफ छापेगा।

फ़ीलबान—आप अपनी तारीफ़ रहने दें।

घोष—नहीं, तुम्हारा नाम हो जायगा। बड़ा-बड़ा लोग तुम्हारा नाम पढ़ेगा तो बोलेगा, यह फील का बान बड़ा होशियार है, तुम पचास-साठ का नौकर हो जायगा। हम तुमको नौकर रखा देगा।

फ़ीलबान—पचास-साठ! इतने रुपये मैं रखूँगा कहाँ? अच्छा दूसरी शादी कर लूँगा, मगर तारीफ़ किस बात की लिखिएगा। ज़रा हाथी दौड़ाऊँ?

बोस—तुम बड़ा नटखट है। ओ शाला, तुम फिर दौड़ाया?

जब झील के क़रीब पहुँचे, तो दोनों बंगाली और भी डरे। घोष ने पूछा—ओ फील का बान, इस झील में कित्ता गहरा?

फ़ीलबान ने कहा—हाथी-डुबाव है।

घोष—और इस झील के अंदर से हम लोग को जाने होगा भी।

फ़ीलबान—जी हाँ, इसी में से जाने होगा भी।

घोष—और जो हाथी का पाँव फिसल गयी तो हम लोग का क्या...।

फ़ीलबान—अगर हाथी का पाँव फिसल गयी तो तुम लोग का टाँग और नाक टूट जायगा, बस और कुछ न होगा, और मुँह बिगड़ जायगी तुम लोग की।

घोष—और तुम शाला कहाँ से बचने सकेगा?

फ़ीलबान—हम उम्र भर हाथी पर चढ़ा किये हैं। हाथी फिसले तो डर नहीं और बह जाय तो खौफ नहीं।

घोष—बाबा, तुम्हारी हाथी पानी से डरती है या नहीं? हमसे शाच-शाच कह दो।

फ़ीलबान—तुम इतना डरता था तो आया क्यों?

घोष—अरे बाबा, गोली लगने से तो सब कोई डरता है? जान फेरके आने सकेगा नहीं।

फ़ीलबान ने हाथी को झील में डाला, तो इन दोनों ने वह चिल्ल-पों मचायी कि कुछ न पूछो। एक बोला—हम डूब गया, तो हमारा जागीर किसके पास जायगा?

फ़ीलबान मुसकिरा कर बोला—वहीं से सब लिख के भेज दीजिएगा।

घोष—ओ शाला, तू हमारा जान लेगा? तुम जान लेगा शाला?

फ़ीलबान—बाबू, गोल-माल न करो, खुदा को याद करो।

घोष—गोल-माल तुम करता है कि हम करता है?

बोस—हाथी हिलेगी तो हम तुमको ढकेल देगा, तुम मर जायगा।

घोष—अरे बाबा, घूस ले-ले, हम बहुत से रुपये देने सकता।

फ़ीलबान—अच्छा, एक हजार रुपया दीजिए तो हम हाथी को फेर दें। भले आदमी, इतना नहीं सोचते कि पाँच हाथी तो उस पार निकल गये और एक हाथी पीछे आ रहा है। किसी का बाल बाँका नहीं हुआ तो क्या आप ही डूब जायँगे? क्या जान आप ही को प्यारी है?

घोष—अरे बाबा, तुम बात न करे। तुम हाथी का ध्यान करे, जो पाँव फिसलेगी तो बड़ी ग़जब हो जायगा।

फ़ीलबान—अजी, न पाँव फिसलेगी, न बड़ी गजब होगा। बस चुपचाप बैठे रहिए। बोलिए-चालिए नहीं।

घोष—किस माफिक नहीं बोलेगा, जरूर करके बोलेगा, ओ शाला! तुम्हारा बाप आज ही मर जाय।

फीलबान—हमारा बाप तो कब का मर चुका, अब तुम्हारी नानी मरने की बारी है।

फ़ीलबान ने मारे शरारत के हाथी को दो-तीन बार आँकुश लगाया, तो दोनों आदमी समझे कि बस, अब जान गयी। आपस में बातें करने लगे—

घोष—आमी दुई जानी डूबी जाबो।

बोस—हैं, हाथीवाला बड़ो चोरू।

घोष—जोनी आये बची आज, तेखे दली कोरा आम आर शिकार खेलने जावेना।

ब्रोस—तुमी अमाए जाब्रदस्ती नीए एछो।

घोष—आमारा प्रान भवाए आचे।

घोष—हाथी रोक ले ओ शाला !

फ़ीलबान—बाबू जी, अब हाथी हमारे मान का नहीं। अब इसका पाँव फिसला चाहता है, जरा सँभले रहिएगा।

नवाब साहब ने दोनों आदमियों का रोना-चीखना सुना तो महावत से बोले—खबरदार जो इनको डरायेगा तो तू जानेगा।

घोष—नवाब शाब, हमारा मदद करो, अब हम जाता है बैकुंठ !

महावत ने आहिस्ता से कहा—बैकुंठ जा चुके, नरक में जाओगे।

इस पर घोष बाबू बहुत बिगड़े और गालियाँ देने लगे। तुम शाला को पानी के बाहर जाके हम मार डालेगा।

महावत ने कहा—जब पानी के बाहर जा सको न।

घोष—नवाब शाब, यह शाला हमारे को गाली देता।

नवाब—गाली कैसी बाबू, आप इतना घबराते क्यों हैं ?

घोष—हमारे को यह शाला गाली देते हैं।

नवाब—क्यों बे, खबरदार जो गाली-गलौज की।

फ़ीलबान—हुजूर, मै ऐसी सवारी से दरगुज़रा, इनको चारों तरफ़ मौत ही मौत नज़र आती है। इन्हें आप शिकार में क्यों लाये ?

ब्रोस—अरे शाले का शाला, तुम बात करेगा, या हाथी को देखेगा ? अरे बाबा, अब हम ऐसी सवारी पर न आयेगा।

बारे हाथी उस पार पहुँचा, तो इन दोनों की जान में जान आयी। बोस बाबू बोले—नवाब शाब, हम इसी का साथ बड़ा तकलीफ़ पाया। यह महावत हमारा उस जन्म का बैरी है बाबा, हम ऐसा शिकार नहीं खेलना चाहता, अब हम हाथी पर से उतर जायगा।

नवाब साहब ने फ़ीलबान को हुक्म दिया कि हाथी को बैठाओ और बाबू लोगों से कहा—अगर आप लोगों को तकलीफ़ होती है तो उतर जाइए। इस पर घोष और बोस दोनों सिर पीटने लगे—अरे बाबा, इस जंगल के बीच में तुम हमको छोड़के भागना माँगता। हम जायगा कहाँ ? इधर जंगल, उधर जंगल। हमारे को घर पहुँचा दो।

नवाब साहब ने कहा—अगर एक हाथी को अकेला भेज दूँ तो शायद शेर या सुअर या कोई अन्य जानवर हमला कर बैठे, हाथी ज़ख्मी हो जाय और महावत की जान पर आ बने। आप लोग गोली चलाने से रहे, फिर क्या हो ?

घोष—आपको अपना हाथी प्यारा, फील का बान प्यारा, हमारा जान प्यारा नहीं। फील का बान सात-आठ रुपये का नौकर, हम लोग हेडक्लर्की करता और क्या बात करेगा। हम जान नहीं रखता, वह जान रखता है !

नवाब—अच्छा, फिर बैठे रहो, मगर डरो नहीं।

घोष—अच्छा अब हम न बोलेगा।

बोस—कैसे न बोलेगा, तुम न बोलेगा? तुम न बोलेगा तो हम बोलेगा।

घोष—तुम शाला सुअर है। तुम क्या बोलेगा? बोलेगा तो हम तुमको कतल कर डालेगा। शाला हमारे को फाँसके लाया और अब जान लेना माँगता है।

बोस—(धोती सँभाल कर) तुम दुष्ट चुप रहे। तुम नीच कोम है।

घोष—बोलेगा तो हम हलाल करेगा।

बोस—(दाँत दिखा कर) हम तुमको दाँत काट लेगा।

घोष—अरे तुम बोके जाय शाला, बोदजात, दुष्ट।

बोस—तुम नीच कोम, छोटा कोम, भीख माँगनेवाला सुअर।

दोनों मे खूब तकरार हुई। कभी घोष ने घूँसा ताना, कभी बोस ने पैंतरा बदला, मगर दोनों मे कोई वार न करता था। दोनों कुंदे तोल-तोल कर रह जाते थे। नवाब साहब ने यह हाल देखा तो चाहा कि दोनों को अलग-अलग हाथियों पर बिठाये, मगर घोष ने मंजूर न किया, बोले—यह हमारा देश का, हम इसका देश का, और कोई हमारा देश का नहीं।

इतने में आदमियों ने ललकार कर कहा—खबरदार, शेरनी निकली जाती है। हुक्म हुआ है कि हाथी इस तरफ बढ़ाओ। सब हाथी बढ़ाये गये। एक दरख्त की आड़ में शेरनी दो बच्चे लिये हुए दबकी खड़ी थी। नवाब साहब ने फ़ौरन गोली सर की, वह खाली गयी। नवाब साहब ने फिर बंदूक सर की, अब की गोली शेरनी के कल्ले पर जा पड़ी। गोली खाना था कि वह झल्ला कर पलट पड़ी और तोप के गोले की तरह झपटी। आते ही उसने एक हाथी को थप्पड़ लगाया तो वह चिंघाड़ कर भागा। नवाब साहब ने फिर बंदूक चलायी, मगर निशाना खाली गया। शेरनी ने उसी हाथी को जिसे थप्पड़ मारा था, कान पकड़ कर बैठा दिया। बारे चौथा निशाना ऐसा पड़ा कि शेरनी तड़प कर गिर पड़ी।

इधर तो यह कैफ़ियत हो रही थी, उधर बंगाली बाबू दोनों हौदे के अंदर औंधे पड़े थे। आँखें दोनों हाथों से बंद कर ली थी। बेगम साहब ने उन्हें हौदे में बैठे न देखा तो पूछा—क्या वह दोनों बाबू भाग गये?

फ़ीलबान—नहीं खुदावंद, मै हाथी बढ़ाये लाता हूँ।

हाथी करीब आया तो नवाब साहब दोनों बंगालियों को देख कर इतना हँसे कि पेट में बल पड़-पड़ गये।

नवाब—अब उठोगे भी या सोते ही रहोगे? बाबू जी तो बोलते ही नहीं।

बेगम—क्या अच्छे आदमी थे बेचारे!

नवाब—मगर चल बसे। अभी बातें कर रहे थे।

बेगम—अब कुछ कफ़न-दफ़न की फ़िक्र करोगे या नहीं।

फ़ीलबान ने कंधा पकड़ कर हिलाया तो बोस बाबू उठे। उठते ही शेरनी की

लाश देखी, तो काँप कर बोले—नवाब शाब, शाच-शाच बोलो कि यह मिट्टी का शेर है या ठीक-ठीक शेर है ? हम समझ गया कि मिट्टी का है।

नवाब—आप तो हैं पागल।

घोष—आप लोग जान को कुछ नहीं समझता ?

बोस—ये लोग गँवार हैं। हम लोग एम० ए०, बी ए० पास करता है। हम लोग बहुत सा बात ऐसा करता है कि आप लोग नहीं करने सकता।

नवाब—अच्छा, अब हाथी से तो उतरो।

फीलवान—बाबू साहब, शेरनी तो मर गयी; अब क्या डर है।

दोनों बाबुओं ने हाथी से उतर कर शेरनी की तरफ देखना शुरू किया, मगर आगे कोई नहीं बढता।

बोस—आगे बढ़ो महाशाई।

घोष—तुम्हीं बढो, तुम बड़ा मर्द है तो तुम बढ़े।

नवाब—बढ़ना नहीं। खबरदार, बढ़े और शेर खा गया।

घोष—बाबा, अब चाहे जान जाता रहे, पर हम उसके पास ज़रूर करके जायगा।

यह कह कर आप आगे बढ़े, मगर फिर उलटे पाँव भागे और पीछे फिर कर भी न देखा।

६१

जब रात को सब लोग खा-पी कर लेटे, तो नवाब साहब ने दोनों बंगालियों को बुलाया और बोले—खुदा ने आप दोनों साहबों को बहुत बचाया, वरना शेरनी खा जाती।

बोस—हम डरता नहीं था, हम शाला ईश फील का बान को मारना चाहता था कि हम ईश देश का आदमी नहीं है। इस माफिक हमारे को डराने सकता और हाथी को बोदजाती से हिलाने माँगे। जब तो हम लोग बड़ा गुस्सा हुआ कि अरे सब लोग का हाथी हिलने नहीं माँगता, तुम क्यों हिलने माँगता है और हमसे बोला कि बाबू शाब, अब तो मरेगा। हाथी का पाँव फिसलेगी और तुम मर जायँगे। हम बोला—अरे, जो हाथी की पाँव फिसल जायगी तो तुम शाले का शाला कहाँ बच जायगा? तुम भी तो हमारा एक साथ मरेगा।

नवाब—अच्छा, जो कुछ हुआ सो हुआ। अब यह बतलाइए कि कल शिकार खेलने जाइएगा या नहीं?

बोस—जायगा जो जरूर करके, मगर फील का बान बोदजाती करेगा, तो हम आपका बुराई छपवा देगा। हमारे हाथी पर बेगम शाब बैठे तो हम चला जायगा।

सुरैया—बेगम साहब तो तुझ ऐसों को अपना साया तक न छूने दें। पहले मुँह तो बनवा!

बोस—अब हमारे को डर पास नहीं आते, हम खूब समझ गया कि जान जानेवाला नहीं है।

नवाब—अच्छा जाइए, कल आइएगा।

जब नवाब और सुरैया बेगम अकेले रह गये तो नवाब ने कहा—देखो सुरैया बेगम, इस जिंदगी का कोई भरोसा नहीं। अभी कल की बात है कि शाहजादा हुमायूँ फर के निकाह की तैयारियाँ हो रही थीं और आज उनकी कब्र बन रही है। इसलिए इनसान को चाहिए कि जिंदगी के दिन हँसी-खुशी से काट दे। यहाँ तो सिर्फ यही ख्वाहिश है कि हम हों और तुम हो। मुझे किसी से मतलब न सरोकार। अगर तुम साथ रहो तो खुदा गवाह है, बादशाही की हकीकत न समझूँ। अगर यकीन न आये तो आजमा लो।

बेगम—आप साफ-साफ अपना मंशा बतलाइए। मैं आपकी बात कुछ नहीं समझी।

नवाब—साफ साफ कहते हुए डर मालूम होता है।

बेगम—नहीं, यह क्या बात है, आप कहें तो।

नवाब—(दबी जबान से) निकाह!

बेगम—सुनिए, मुझे निकाह में कोई उज्र नहीं। आप अव्वल तो कमसिन, दूसरे

रईसज़ादे, तीसरे खूबसूरत, फिर मुझे निकाह में क्या उज्र हो सकता है। लेकिन रफ़्ता-रफ़्ता अर्ज करूँगी कि किस सबब से मुझे मंजूर नहीं।

नवाब—हाय-हाय! तुमने यह क्या सितम ढाया?

बेगम—मैं मजबूर हूँ, इसकी वजह फिर बयान करूँगी।

नवाब—अगर मंजूर नहीं तो हमें क़त्ल कर डालो। बस छुट्टी हुई। अब ज़िंदगी और मौत तुम्हारे हाथ है।

दूसरे दिन नवाब साहब सो ही रहे थे कि खिदमतगार ने आ कर कहा—हुजूर, और सब लोग बड़ी देर से तैयार हैं, देर हो रही है।

नवाब साहब ने शिकारी लिबास पहना और सुरैया बेगम के साथ हाथी पर सवार हो कर चले।

बेगम—वह बाबू आज कहाँ हैं? मारे डर के न आते होंगे!

बोस—हम तो आज शुरू से ही साथ-साथ हैगा। अब हमारे को कुछ खोफ लगती नहीं।

बेगम—बाबू, तुम्हारे को हाथी तो नहीं हिलती?

घोष—ना, आज हाथी नहीं हिलती। कल का बात कल के साथ गया।

हाथी चले। थोड़ी दूर जाने पर लोगों ने इत्तला दी कि शेर यहाँ से आध मील पर है और बहुत बड़ा शेर है। नवाब साहब ने खुश हो कर कहा—हाथियों को दौड़ा दो। बाबुओं के फ़ीलबान ने जो हाथी तेज किया, तो बोस बाबू मुँह के बल जमीन पर आ रहे।

घोष—अरे शाला, जमीन पर गिरा दिया!

फ़ीलबान—चुप-चुप, गुल न मचाइए, मैं हाथी रोके लेता हूँ।

घोष—गुल न मचायें तो फिर क्या मचायें?

फ़ीलबान—वह देखिए, बाबू साहब उठ बैठे, चोट नहीं आयी।

घोष—महाशाई, लागे ने तो?

बोस—बड़ी बोद लोग।

घोष—अपना समाचार बोलो।

बोस—अपना समाचार की बोलबो बाबा!

मिस्टर बोस झाड़-पोंछ कर उठे और महावत को हजारों गालियाँ दीं।

बोस—महाशाई, तुम ईश को मारो, मारो ईश दुष्ट को।

घोष—ओ शाला, तुम्हारा शिर पर बाल नहीं, हम पट्टे पकड़ कर तुमको मार डालने माँगता।

फ़ीलबान हँस दिया। इस पर बोस आग हो गये, और कई ढेले चलाये, मगर कोई ढेला फ़ीलबान तक न पहुँच सका। फ़ीलबान ने कहा—हुजूर, अब हाथी पर बैठ लें तो हम नवाब साहब के हाथियों से मिला दें। बोस बोले—हम डरपोक आदमी नहीं है। हम महाराजा बड़ौदा के यहाँ किसिम-किसिम का जानवर देख चुका है।

घोष—अब बातें कब तक करेगा। आके बैठ जा।

फ़ीलवान—हुज़ूर, कुरान की कसम खा कर कहता हूँ, मेरा क़सूर नहीं। आप कभी हाथी पर सवार तो हुए नहीं। हौदे पर लटक कर बैठे हुए थे। हाथी जो हिला तो आप भद से गिर पड़े।

बोस—हमारा दिल में आयी कि तुम्हारा कान नोच डाले। हम कभी हाथी पर नहीं चढ़ा? तुम बोलता है। तुम्हारा बाप के सामने हम हाथी पर चढ़ा था। तुम क्या जानेगा।

अब शेर थोड़ी दूर पर रह गया और नवाब साहब ने देखा कि बाबूवाला हाथी नहीं है तो डरे कि न जाने उन बेचारों की क्या हालत होगी। हुक्म दिया कि सब हाथी रोक लिये जायँ और धरतीधमक को दौड़ा कर ले जाओ। देखो, उन बेचारों पर क्या तबाही आयी।

धरतीधमक रवाना हुआ और कोई दस-बारह मिनट में बाबू साहबों का हाथी दूर से नज़र आया। जब हाथी करीब आया तो नवाब ने पूछा—बाबू साहब, खैरियत तो है? हाथी कहाँ रह गया था? बाबू साहबों ने कुछ जवाब न दिया; मगर फ़ीलवान बोला—हुज़ूर, यह दोनों बाबू लोग आपस में लड़ते थे, इसी से देर हो गयी।

अब बोस बाबू से न रहा गया। बिगड़ कर बोले—ओ शाला, तुम हमारे मुँह पर झूठ बोलता है। तुम शाला बिला कहे हाथी को दौड़ा दिये, हम तो ग़ाफ़िल पड़ा था।

इतने में आ॰मियों ने इत्तला दी कि शेर सामने की झील के किनारे लेटा हुआ है। लोग बंदूकें सँभाल-सँभाल कर आगे बढ़े तो देखा, एक बनैला सुअर ऊँची-ऊँची घास में छिपा बैठा है। सबकी सलाह हुई कि चारों तरफ़ से ख़ाली निशाने लगाये जायँ ताकि घबरा कर निकले, मगर नवाब साहब के दिल में ठन गयी कि हम इस पतावर में हाथी ज़रूर ले जायँगे। सुरैया बेगम अब तक तो सैर देखती थीं मगर पतावर में जाना बहुत अखरा। बोलीं—नवाब, तुम्हारे सिर की कसम, अब हम न जायँगे। पतावर तलवार की धार से भी ज़्यादा तेज होती है। हमें किसी और हाथी पर बिठा दो।

नवाब ने दो शिकारियों को अपने हाथी पर बिठा लिया और सुरैया बेगम को दूसरे हाथी पर बिठा दिया। एक और हाथी उनके साथ-साथ उनकी हिफ़ाज़त के लिए छोड़ दिया गया। तब नवाब साहब पतावर में पहुँचे। जब सुअर ने देखा कि दुश्मन चला आ रहा है तो उठा और भाग खड़ा हुआ। नवाब साहब ने गोली चलायी। फिर और शिकारियों ने भी बंदूकें सर कीं। सुअर तड़प कर झील की तरफ़ झपटा। इतने में तीसरी गोली आयी। लोगों ने समझा कि अब काम तमाम हो गया। नवाब साहब को शौक़ चर्राया कि उसे अपने हाथ से क़त्ल करें। हाथी से उतर कर तलवार म्यान से निकाली और साथियों को झील के किनारे इधर-उधर

हटा दिया कि सुअर समझे, सब चल दिये हैं। जब सुअर ने देखा कि मैदान खाली है तो आहिस्ता-आहिस्ता झील से निकला। नवाब साहब घात में थे ही, ताक कर ऐसा हाथ दिया कि बनैला बोल गया। लोगों ने चारों तरफ से वाह-वाह का शोर मचाना शुरू किया।

एक—हुजूर, यह करामात है।

दूसरा—सुभान अल्लाह, क्या तुला हुआ हाथ लगाया कि बोला तक नहीं।

तीसरा—तलवार के धनी ऐसे ही होते हैं। एक ही हाथ में चौरंग कर दिया। क्या हाथ पडा है, वाह!

चौथा—धूम पड़ गयी, धूम पड़ गयी। क्या कमाल है, एक ही वार में ठंढा हो गया!

नवाब—अरे भाई देखते हो! बरसों शिकार की नौबत नहीं आती, मगर लड़कपन से शिकार खेला है। वह बात कहाँ जा सकती है। ज़रा किसी सूरत से बेगम साहब को यहाँ लाते और उनको दिखाते कि हमने कैसा शिकार किया है!

बेगम साहब का हाथी आया तो बनैले को देख कर डर गयीं। अल्लाह जानता है, तुम लोगों को जान की ज़रा भी परवा नहीं। और जो फिर पड़ता तो कैसी ठहरती!

नवाब—तारीफ न की, कितनी जवाँमर्दी से अकेले आदमी ने शिकार किया। लाश तो देखो, कहाँ से कहाँ तक है!

एक मुसाहब—हुजूर ने वह काम किया जो सारी दुनियाँ में किसी से नहीं हो सकता। दस-पाँच आदमी मिल कर तो जिसे चाहें मार लें; मगर एक आदमी का तलवार ले कर बनैले से भिड़ना ज़रा मुश्किल है।

बेगम—ऐ है, तुम अकेले शिकार करने गये थे! कसम खुदा की, बड़े ढीठ हो। मेरे तो रोयें खड़े हुए जाते हैं।

नवाब—अब तो हमारी बहादुरी का यकीन आया कि अब भी नहीं!

यहाँ से फिर शिकार के लिए रवाना हुए। बनैले का शिकार तो घाते में था। झील के करीब पहुँचे, तो हाथी ज़ोर-ज़ोर से जमीन पर पाँव पटकने लगा।

फ़ीलबान—शेर यहाँ से बीस कदम पर है। बस यही समझिए कि अब निकला, अब निकला। काशीसिंह, हाथी पर आ जाओ। दिलाराम से भी कहो, बहुत आगे न बढ़े।

काशीसिंह—हुँह, सहर के मनई, नेवला देखे डर जायँ, हमका राह देखावत हैं। वह सेर तो हम सवा सेर!

नवाब—यह उजड्डपन अच्छा नहीं। काशीसिंह, आ जाओ। दिलाराम, तुम भी किसी और हाथी पर चले जाओ। मानो कहना।

दिलाराम—हुजूर, चार बरस की उमिर से बाघ मारत चला आवत हौं, खा जाई, ससुर खा जाय।

बेगम—ऐ है, बड़े ढीठ हैं। नवाब, तुम अपना हाथी सब हाथियों के बीच में रखो। हमारे कलेजे की धड़कन को तो देखो।

अब सुनिए कि इत्तफाक से एक शिकारी ने शेर देख लिया। एक दरख्त के नीचे चित सो रहा था। उन्होंने किसी से न कुछ कहा, न सुना, बंदूक दाग ही तो दी। गोली पीठ पर पड़ी। शेर आग हो गया और गरजता हुआ लपका, तो खल-बली मच गयी। आते ही काशीसिंह को एक थप्पड़ दिया, दूसरा थप्पड़ देने ही को था कि काशीसिंह सँभला और तलवार लगायी। तलवार हाथ पर पड़ी। तलवार खाते ही हाथी की तरफ झपटा, और नवाब साहब के हाथी के दोनों कान पकड़ लिये। हाथी ने ठोकर दी तो शेर ५-६ कदम पर गिरा। इधर हाथी, उधर शेर, दोनों गरजे। बाबू साहबों ने दोहाई देनी शुरू की।

बोस—अरे, हमारा नानी मर गया। अरे, बाबा, हम तो काल ही से रोता था कि हम नहीं जायगा।

घोष—ओ भाई, तुम शेर को रोक लेगा जल्दी से।

बोस—हम नीचे होता तो जरूर करके रोक लेता।

दो हाथी तो शेर की गरज सुन कर भागे; मगर बाबू का हाथी डटा खड़ा था। इस पर बोस ने रो कर कहा—ओ शाला हमारा हाथी, अरे तुम किस माफिक भागता नहीं। तुम्हारा भाई भागे जाता है, तुम क्यों खड़ा है?

शेर ने झपट कर नवाब साहब के हाथी के मस्तक पर एक हाथ दिया तो गोश्त खिंच आया। नवाब साहब के हाथ-पाँव फूल गये। एक शिकारी जो उनके पीछे बैठा था, नीचे गिर पड़ा। शेर ने फिर थप्पड़ दिया। इतने में एक चौकीदार ने गोली चलायी। गोली सिर तोड़ कर बाहर निकल गयी और शेर गिर पड़ा, मगर नवाब साहब ऐसे बदहवास थे कि अब तक गोली न चलायी। लोग समझे, शेर मर गया। दो आदमी नजदीक गये और देख कर बोले, हुजूर, अब इसमें जान नहीं है, मर गया। नवाब साहब हाथी से उतरने ही को थे कि शेर गरज कर उठा और एक चौकी-दार को छाप बैठा। चारों तरफ हुल्लड़ मच गया। कोई बंदूक छतियाता है, कोई ललकारता है। कोई कहता है—तलवार ले कर दस-बारह आदमी पहुँच जाओ, अब शेर नहीं उठ सकता।

नवाब—क्या कोई गोली नहीं लगा सकता?

एक—हुजूर, शेर के साथ आदमी की भी जान जायगी।

नवाब—तुम तो अपनी बड़ी तारीफ़ करते थे। अब वह निशानेबाजी कहाँ गयी? लगाओ गोली।

गोली पीठ को छूती हुई निकल गयी। शिकारी ने एक और गोली लगायी तो शेर का काम तमाम हो गया। मगर यह गोली इस उस्तादी से चलायी थी कि चौकी-दार पर आँच न आने पायी। सब लोगों ने तारीफ की। शेर ऊपर था और चौकी-दार नीचे। सात आदमी तलवार ले कर झपटे और शेर पर वार करने लगे। अब

खूब यक़ीन हो गया कि शेर मर गया तो लाश को हटाया। देखा कि चौकीदार मर रहा है।

नवाब—ग़ज़ब हो गया यारो, हा! अफ़सोस।

बेगम—हाथी यहाँ से हटा ले चलो। कहते थे कि शिकार को न चलो। तुमने मेरा कहा न माना।

नवाब—फ़ीलवान, हाथी बिठा दे, हम उतरेंगे।

बेगम—उतरने का नाम भी न लेना। हम न जाने देंगे।

नवाब—बेगम, तुम तो हमको बिलकुल डरपोक ही बनाया चाहती हो। हमारा आदमी मर रहा है, मुझे दूर से तमाशा देखना मुनासिब नहीं।

बेगम ने नवाब के गले मे हाथ डाल कर कहा—अच्छी बात है, जाइए, अब ग्रा तो हम-तुम दोनों गिरेंगे या यहीं रहेंगे।

नवाब दिल में बहुत खुश हुए कि बेगम को मुझसे इतनी मुहब्बत है। आदमियों से कहा—ज़रा देखो, उसमें कुछ जान बाकी है? आदमियों ने कहा—हुज़ूर, इतना बड़ा शेर, इतनी देर तक छापे बैठा रहा। बेचारा घुट-घुटके कभी मर गया होगा!

बेगम—अब फिर तो कभी शिकार को न आओगे? एक आदमी की जान मुफ़्त ली?

नवाब—हमने क्यों जान ली, जो हमीं को शेर मार डालता!

बेगम—क्या मनहूस बातें ज़बान से निकालते हो, जब देखो, अपने को कोसा करते हो।

खेमे में पहुँच कर नवाब साहब ने वापसी की तैयारियाँ कीं और रातों-रात घर पहुँच गये।

पड़ोसी—आज तो आपके मिजाज ही नहीं मिलते। मगर आप चाहे आधी बात न करें, मैं तो छेड़के बोलूँगा।

गो नहीं पूछते हरगिज वह मिजाज,
हम तो कहते हैं दुआ करते हैं।

सैयद—हज़रत, बड़े फ़िक्र में हूँ। आप जानते हैं, लड़की की शादी झंझट से खाली नहीं। खुदा करे, खैरियत से काम पूरा हो जाय।

पड़ोसी—जनाब, खुदा बड़ा कारसाज है। शादी कहाँ हो रही है?

सैयद—नवाब वजाहत अली के यहाँ, यही सामने महल है, बड़ी कोशिश की, जब मैंने मंजूर किया। मेरा तो मंशा यही था कि किसी शरीफ़ और ग़रीब के यहाँ व्याहूँ।

पड़ोसी—क्यों? ग़रीब के यहाँ क्यों व्याहते? आपका खानदान मशहूर है। बाक़ी रहा रुपया। यह हाथ का मैल है। मगर अब यह फ़र्माइए कि सब बंदोबस्त कर लिया है न, मैं आपका पड़ोसी हूँ, मेरे लायक जो खिदमत हो उसके लिए हाज़िर हूँ।

सैयद—ऐ हज़रत आपकी मिहरबानी काफी है। आपकी दुआ और खुदा की इनायत से मैंने हैसियत के मुआफ़िक बंदोबस्त कर लिया है।

इधर तो ये बातें होती थीं, उधर नवाब के दोस्त बैठे आपस में चुहल कर रहे थे।

एक दोस्त—हज़रत, इस बारे में तो आप किस्मत के धनी हैं।

नवाब—भई, खुदा की कसम, आपने बहुत ठीक कहा, और सैयद साहब को तो बिल्कुल फकीर ही समझिए। उनकी दुआ में तो ऐसा असर है कि जिसके वास्ते जो दुआ माँगी, फ़ौरन कबूल हो गयी।

दोस्त—जभी तो आप जैसे आली खानदान शरीफज़ादे के साथ लड़की का निकाह हो रहा है। इस वक्त शहर में आपका सा रईस और कौन है!

मीर साहब—अजी, शाहज़ादों के यहाँ से जो न निकले वह आपके यहाँ है।

लाला—इसमें क्या शक, लेकिन यहाँ एक-एक शाहज़ादा ऐसा पड़ा है जिसके घर में दौलत लौंडी बनी फिरती है।

मीर साहब—कुछ बेधा होके तो नहीं आया है! बढ़ कर दूसरा कौन रईस है शहर में, जिसके यहाँ है यह साज-सामान?

लाला—तुम खुशामद करते हो और बंदा साफ़-साफ़ कहता है।

मीर साहब—जा पहले मुँह बनवा, चला वहाँ से बड़ा साफ़गो बनके।

दोस्त—ऐसे आदमी को तो खड़े-खड़े निकलवा दे, तमीज तो छू ही नहीं गयी। गौखेपन के सिवा और कोई बात नहीं।

नवाब—बदतमीज आदमी है, शरीफ़ों की सोहबत में नहीं बैठा।

मीर साहब—बड़ा खरा बना है, खरा का बच्चा!

नवाब—अजी, सख्त बदतमीज है।

घर में सुरैया बेगम की हमजोलियाँ छेड़-छाड कर रही थीं। फ़ीरोज़ा बेगम ने छेड़ना शुरू किया—आज तो हुज़ूर का दिल उमंगों पर है।

सुरैया बेगम—बहन, चुप भी रहो, कोई बड़ी बूढी आ जायें तो अपने दिल में क्या कहें, आज के दिन माफ़ करो, फिर दिल खोल के हँस लेना। मगर तुम मानोगी काहे को !

फीरोजा—अल्लाह जानता है, ऐसा दूल्हा पाया है कि जिसे देख कर भूख-प्यास बंद हो जाय।

इतने में डोमिनियों ने यह ग़ज़ल गानी शुरू की—

दिल किसी तरह चैन पा जाये,
ग़ैर की आयी हमको आ जाये;
दीदा व दिल हैं काम के दोनों,
वक़्त पर जो मज़ा दिखा जाये।
शेख साहब बुराइयाँ मय की,
और जो कोई चपत जमा जाये;
जान तो कुछ गुजर गयी उस पर,
मुँह छिपाके जो कोसता जाये।
लाश उठेगी जमी कि नाज के साथ,
फेर कर मुँह वह मुसकिरा जाये;
फिर निशाने लेहद रहे न रहे,
आके दुश्मन भी खाक उड़ा जाये।
वह मिलेंगे गले से खिलवत में,
मुझको डर है हया न आ जाये।

फ़ीरोज़ा बेगम ने यह ग़ज़ल सुन कर कहा—कितना प्यारा गला है; लेकिन लै अच्छा नहीं।

सुरैया बेगम ने डोमिनियों को इशारा कर दिया कि यह बहुत बढ़-बढ़ कर बातें कर रही हैं, ज़रा इनकी खबर लेना। इस पर एक डोमिनी बोली—अब हुज़ूर हम लोगों को लै सिखा दें।

दूसरी—यह तो मुजरे को आया करें तो कुछ पैदा कर लायें।

तीसरी—बहन, ऐसी कड़ी न कहो।

इतने में एक औरत ने आ कर कहा—हुज़ूर, कल बरात न आयेगी। कल का दिन अच्छा नहीं। अब परसों बरात निकलेगी।

सुरैया बेगम के यहाँ वही धमाचौकड़ी मची थी। परियों का झुरमुट, हसीनों का जमघट, आपस की चुहल और हँसी से मकान गुलजार बना हुआ था। मज़े-मजे की बातें हो रही थीं कि महरी ने आ कर कहा—हुजूर, रामनगर से असग़र मियाँ की बीबी आयी हैं। अभी-अभी बहली से उतरी हैं। जानी बेगम ने पूछा—असग़र मियाँ कौन हैं? कोई देहाती भाई हैं? इस पर हशमत बहू ने कहा, बहन वह कोई हों। अब तो हमारे मेहमान हैं। फ़ीरोजा बेगम बोलीं—हाँ-हाँ तमीज से बात करो, मगर वह जो आयी हैं, उनका नाम क्या है? महरी ने आहिस्ता से कहा—फ़ैजन। इस पर दो-तीन बेगमों ने एक दूसरे की तरफ देखा।

हशमत बहू—वाह, क्या प्यारा नाम है। फैजन, कोई मीरासीनि हैं क्या?

सुरैया बेगम—तुम आज लड़वाओगी। जानी बेगम कौन सा अच्छा नाम है।

फ़ीरोजा—देहात के तो यही नाम हैं, कोई जैनब है, कोई जीनत, कोई फ़ैजन।

सुरैया बेगम—फैजन बड़ी अच्छी औरत हैं। न किसी के लेने में, न देने मे।

इतने मे बी फैजन तशरीफ लायी और मुसकिरा कर बोलीं—मुबारक हो!

यहाँ जितनी बेगमें बैठी थीं सब मुँह फेर-फेर कर मुसकिरायीं। बी फ़ैजन के पहनावे से ही देहातीपन बरसता था।

फ़ैजन—बहन, आज ही बारात आयेगी न, कौन-कौन रस्म हुई? हम तो पहले ही आते, मगर हमारे देवर की तबियत अच्छी न थी।

फ़ीरोजा—बहन, तुम्हारा नाम क्या है?

फ़ैजन—फ़ैजन।

फ़ीरोजा—और तुम्हारे मियाँ का नाम?

फ़ैजन—हमारे यहाँ मियाँ का नाम नहीं लेते। तुम अपने मियाँ का नाम बताओ!

फ़ीरोजा बेगम ने तड़ से कहा—असग़र मियाँ। इस पर वह क़र्मायशी कहकहा पड़ा कि दूर तक आवाज गयी फैजन दंग हो गयीं और दिल ही दिल में सोचने लगीं कि इस शहर की औरतें बड़ी ढीठ हैं। मैं इनसे पेश न पाऊँगी।

हशमत बहू—तो असग़र मियाँ बी फ़ैज़न के मियाँ हैं। या तुम्हारे मियाँ, पहले इसका फ़ैसला हो जाय।

फ़ीरोज़ा—ऐ है, इतना भी न समझीं, पहले इनसे निकाह हुआ था, फिर हमसे हुआ और अब असग़र मियाँ के दो महल हैं, एक तो ये बेगम, दूसरे हम।

इस पर फिर क़हक़हा पड़ा, फैजन के रहे-सहे हवास भी ग़ायब हो गये। अब इतनी हिम्मत भी न थी कि ज़बान खोल सकें। जानी बेगम ने कहा—क्यों फ़ैज़न बहन, तुम्हारे यहाँ कौन-कौन रस्में होती हैं? हमारे यहाँ तो दूल्हा लड़की के घर आ कर देख आता है, बस फिर बात तै हो जाती है।

फ़ैज़न—क्या यहाँ मियाँ पहले ही देख लेते हैं? हमारे यहाँ तो नव बरस भी ऐसा न हो।

फ़ीरोज़ा—यह नव बरस क्या, क्या यह भी कोई टोटका है? नव बरस की कैद मुई कैसी!

फ़ैज़न—बहन, हम मुई-दुई क्या जानें।

यह सुन कर हमजोलियाँ और भी हँसीं।

फ़ीरोज़ा—यह महरी मुई-दुई कहाँ चली गयी? एक भी मुई-दुई दिखायी नहीं देती।

हशमत बहू—हमका मालूम है, मगर हम न बताउब।

फ़ीरोज़ा—अरे मुई-दुई पंखिया कहाँ गायब हो गयी?

हशमत बहू—जिस मुई-दुई को गर्मी मालूम हो वह ढूँढ ले।

इतने में जुलूस सजा और दुलहिन के हाथ दूल्हा के लिए सेहरा गया। चाँदी की ख़शनुमा किश्तियों में फूलों के हार, बद्धियाँ और जड़ाऊ सेहरा। इसके बाद डोमिनियों का गाना होने लगा। फ़ैज़न ने कहा—हमने तो यहाँ की बड़ी तारीफ़ सुनी है। इस पर एक बूढ़ी औरत ने पोपले मुँह से कहा—ऐ हुज़ूर, अब तो नाम ही नाम है, नहीं तो हमारे लड़कपन में डोमिनियों का महल्ला बड़ी रौनक पर था। यह महबूबन जो सामने बैठी हैं, इनकी दादी का वह दौरदौरा था कि अच्छे-अच्छे शाहज़ादे सिर टेक कर आते थे। एक बार बादशाह तक उनके यहाँ आये थे। हाथी वहाँ तक नहीं जा सकता था। हुक्म दिया कि मकान गिरा दिये जायँ और चौगुना रुपया मालिकों को दिया जाय। एक बूढ़ी औरत जिसकी भवें तक सफ़ेद थीं, हाथी की सूँड पकड़ कर खड़ी हो गयी और कहा—मैं हाथी को आगे न बढ़ने दूँगी। मेरे बुज़ुर्गों की हड्डियाँ खोदके फेंक दी गयीं। यह मकान मेरे बुज़ुर्गों की हड्डी है। बादशाह ने उसके बुज़ुर्गों के नाम से खैरातखाना जारी कर दिया। जब बादशाह का घोड़ा महबूबन की दादी के मकान पर पहुँचा, तो दस-बारह हज़ार आदमी गली में खड़े थे। मगर वाह री ज़हूरन! इतना सब कुछ होते भी ग़रूर छू न गया था। बरसात के दिन थे, बादशाह ने कहा—ज़हूरन, जब जानें कि मेंह बरसा दो। मुसकिरा कर कहा—हुज़ूर, लौंडी एक अदना सी डोमिनी है, मगर ख़ुदा के नज़दीक कुछ मुश्किल नहीं है। यह कह कर तान ली—

'आयो बदरा कारे-कारे रही बिजली चमक मोरे आँगन में'

बस, पच्छिम तरफ़ से झूमती हुई घटा उठी। स्याही छलकने लगी। ज़हूरन को ख़ुदा बख्शे, फिर तान लगायी और मूसलाधार मेंह बरसने लगा, ऐसा बरसा कि दरिया बढ़ गया और तालाब से दरिया तक पानी ही पानी नज़र आता था'। जब तो यहाँ की डोमिनियाँ मशहूर हैं। और अब तो ख़ुदा का नाम है। इतनी डोमिनियाँ बैठी हैं कोई गाये तो?

ख़ुदारा जल्द के आ कर ख़बर तू ऐ मेरे ईसा;
तेरे बीमार का अब कोई दम में दम निकलता है।

नसीहत दोस्तो करते हो पर इतना तो बतलाओ,
कहीं आया हुआ दिल भी सँभाले से सँभलता है।

महबूबन—बड़ी गलेबाज़ हैं आप, और क्यों न हो, किनकी-किनकी आँखें देखी हैं। हम क्या जानें।

हैदरी—हम लोगों के गले इसी सिन में काम नहीं करते, जब इनकी उम्र को पहुँचेंगे तो ख़ुदा जाने क्या हाल होगा।

बुढ़िया क़ब्र में एक पाँव लटकाये बैठी थी। सिर हिलता था, लठिया टेक के चलती थी, मगर तबीयत ऐसी रंगीन कि जवानों को मात करती थी। सबेरे उबटना न मले तो चैन न आये। पाट्टयाँ ज़रूर जमाती थी, यों तो बहुत ही ख़ुशमिज़ाज और हँस-मुख थी, मगर जहाँ किसी ने इसको बूढ़ी कहा, बस, फिर अपने आपे में नहीं रहती थी। फ़ीरोजा ने छेड़ने के लिए कहा—तुमने जो जमाना देखा है वह हम लोगों को कहाँ नसीब होगा। कोई सौ बरस का सिन होगा, क्यों?

बुढ़िया ने पोपले मुँह से कहा—अब इसका मैं क्या जवाब दूँ, बूढ़ी मैं काहे से हो गयी, बालों पर नजला गिरा, सफ़ेद हो गये, इससे कोई बूढ़ा हो जाता है!

शाम से आधी रात तक यही कैफ़ियत, यही मज़ाक, यही चहल-पहल रही। नयी दुलहिन गोरी-गोरी गरदन झुकाये, प्यारा-प्यारा मुखड़ा छिपाये, अदब और हया के साथ चुप-चाप बैठी थी, हमजोलियाँ चुपके-चुपके छेड़ती जाती थीं। आधी रात के वक़्त दुलहिन को बेसन मल-मल कर नहलाया गया। हिना का इत्र, सुहाग, केवड़ा और गुलाब बदन में मला गया। इसके बाद जोड़ा पहनाया गया। हरे बाफते का पैजामा, सूहे की कुरती, सूहे की ओढ़नी, बसंती रंग का काश्मीरी दुशाला ओढ़ाया गया। भावजों ने मेंढियाँ गूँथी थीं, अब जेवर पहनाने बैठीं। सोने के पाजेब, छागल और कड़े दसों पोरों में छल्ले, हाथों में चूहेदंत्तियाँ, जड़ाऊ कंगन, सोने के कड़े, गले में मोतियों का हार, कानों में करनफूल और बाले, सिर पर छपका और सीसफूल माँग में मोतियों की लड़ी देख कर नजर का पाँव फिसला जाता था। जवाहिरात की चमक-दमक से गुमान होता था कि जमीन पर चाँद निकल आया।

जानी बेगम—चौथी के दिन और ठाट होंगे, आज क्या है।

फैजन—आज कुछ हई नहीं। ऐसा महकौवा इत्र कभी नहीं सूँघा।

इस पर सब खिलखिला कर हँस पड़ीं।

हशमत बहू—बी फैज़न की बातों से दिल की कली खिल जाती है।

फीरोजा—कैसी कुछ, और चंचल कैसी हैं, रग-रग में शोखी है।

जानी बेगम—बहन फैजन, हम तुम्हारे मियाँ के साथ निकाह पढ़वा लें, बुरा तो न मानोगी?

फ़ीरोजा—दो दिल राजी तो क्या करेगा काजी।

हशमत बहू—बहन, तुम्हारी आँखों का पानी बिलकुल ढल गया। हया भून खायी।

महरी—हुजूर, यही तो दिन हँसी-मजाक के हैं। जब हम इन सिनों थे तो हमारी भी यही कैफ़ियत थी।

इतने में एक हमजोली ने आ कर कहा—फीरोजा बेगम, वह आयी हैं मुबारक महल। उनके सामने जरी ऐसी बातें न करना, वह बडी नाजुक मिजाज हैं। इतनी बेलिहाजी अच्छी नहीं होती।

फीरोजा—तो तुम जाके अदब से बैठो। तुम्हारा वजीफा आज से बँध जायगा।

मुबारक महल आयीं और सबसे गले मिल कर सुरैया बेगम के पास जा बैठीं।

मुबारक महल—हमने सुरैया बेगम को आज ही देखा, खुदा मुबारक करे।

फ़ीरोजा—ऐ सुरैया बेगम, जरा गरदन ऊँची करो, वाह यह तो और झुकी जाती हैं। हम तो सीना तानके बैठे थे, क्या किसी का डर पडा है।

हशमत—तुम तो अंधेर करती हो, नई दुलहिन कहीं अकड कर बैठती है?

महरी—ऐं हीं हुजूर, दुलहिन कहीं तन कर बैठती है। क्या कुछ नयी रीति है।

फ़ीरोजा—अच्छा साहब, यों ही सही, जरी और झुक जाओ।

एकाएक बाजे की आवाज आयी। दूल्हा के यहाँ से दुलहिन का सेहरा बडे ठाट से आ रहा था। जब सेहरा अंदर आया तो सुरैया बेगम की माँ ने कहा, अब इस वक़्त कोई छींके-मींके नहीं। सेहरा अंदर आता है।

सेहरा अंदर आया। दूल्हा के बहनोई ने साली के सिर पर सेहरा बाँधा और सास से नेग माँगा।

सास—हाँ-हाँ, बाँध लो, इस वक़्त तुम्हारा हक़ है।

बहनोई—इन चकमों में न आऊँगा। लाइए, नेग लाइए।

हशमत—हाँ, बेझगडे न मानना दूल्हा भाई।

बहनोई—मान चुका, तोडों के मुँह खोलिए। अब देर न कीजिए।

सुरैया बेगम की माँ ने पाँच अशर्फ़ियाँ दीं। वह तो ले कर बाहर गये। इधर दूल्हा के यहाँ की ओढनी दुलहिन को ओढायी गयी। पायजामे में नाडे की इक्कीस गिरहें दी गयी। परदा डाला गया। दुलहिन एक पलँग पर बैठी। फूलों के तौक और बद्धियाँ पहनायी गयीं। फूलों का तुर्रा बाँधा गया। अब बरात के आने का इंतज़ार था।

फीरोजा—क्यों बहन फ़ैजन, सच कहना, इस वक़्त दुलहिन पर कैसा जोबन है?

फ़ैजन—वह तो यों ही खूबसूरत हैं।

फ़ीरोजा—बरात बडे धूम से आयगी, हमने चाहा था कि मुन्ने मियाँ के यहाँ से बरात का ठाट देखें।

हशमत बहू—ऐ तो बरात यहीं से क्यों न देखो। महरी, जाके देखो, चिकें सब दुरुस्त हैं ना।

महरी—हुजूर, सब सामान लैस है।

फ़ीरोज़ा बेगम उस कमरे की तरफ़ चलीं जहाँ से बरात देखने का बंदोबस्त था।

लेकिन जब कमरे में गयीं और नीचे झाँकके देखा तो सहम कर बोलीं, ओफ़्फ़ोह, इतना ऊँचा कमरा, मैं तो मारे डर के गिर पड़ी होती। जानी बेगम ने जब सुना कि वह डर गयीं तो आड़े हाथों लिया—हमने सुना, आप इस वक़्त सहम गयीं, वाह!

फ़ीरोज़ा—खुदा गवाह है, दिल्लगी न करो, मेरे होश ठिकाने नहीं।

जानी बेगम—चलो, बस ज्यादा मुँह न खुलवाओ।

फ़ीरोज़ा—अच्छा, जाके झाँको तो मालूम हो।

हशमत बहू—हम भी चलते हैं। हम भी झाँकेंगे।

महरी—न बीवी, मैं झाँकने को न कहूँगी। एक बार का ज़िक्र सुनो कि मैं ताजबीबी का रोज़ा देखने गयी। अल्लाह री तैयारी, रोज़ा क्या सचमुच बिहिश्त है। फिरंगी तक जब आते हैं तो मारे रोब के टोपी उतार लेते हैं। मेरे साथ एक बेगम भी थीं, जब रोजे के फाटक पर पहुँचे तो मुजाविर बाहर चले गये। मालियों को हुक्म हुआ कि पीठ फेर कर काम करें, गँवारों से परदा क्या।

फ़ीरोज़ा—उहूँ, परदा दिल का।

हशमत—फिर मुज़ाविरों को क्यों हटाया?

महरी—वह आदमी हैं और माली जानवर, भला इन मज़दूरों से कौन परदा करता है। अच्छा, यह तो बताओ कि दुलहिन को कहाँ से बरात दिखाओगी?

हशमत—हमारे यहाँ की दुलहिनें बरात नहीं देखा करतीं।

फीरोज़ा—वाह, क्या अनोखी दुलहिन हैं!

जानी बेगम—जिस दिन तुम दुलहिन बनी थीं, उस दिन बरात देखी होगी।

फ़ीरोज़ा—हाँ-हाँ, न देखना क्या माने। हमने अम्माँजान से कहा कि हमको दूल्हा दिखा दो, नहीं हम शादी न करेंगे। उन्होंने कहा, अच्छा झरोखे से बरात देखो, हमने देखी। हमारे मियाँ घोड़े पर अकड़े बैठे थे। एक फूल उनके सिर पर मारा।

हशमत—क्यों नहीं, शाबाश, क्या कहना!

जानी बेगम—फूल नाहक मारा, एक जूता खींच मारा होता।

फ़ीरोज़ा—खूब याद दिलाया, अब सही।

जानी बेगम—अच्छा महरी, तुमने उन बेगम साहब का ज़िक्र छेड़ा था जिनके साथ ताजबीबी का रोज़ा देखने गयी थी। फिर क्या हुआ?

महरी—हाँ, खूब याद आया। हम लोग एक बुर्ज पर चढ़ गये, मैं क्या कहूँ हुज़ूर, कम से कम होंगे तो कोई सात-आठ सौ ज़ीने होंगे।

फ़ीरोज़ा—ओफ़्फ़ोह, इतना झूठ, अच्छा फिर क्या हुआ, कहती जाओ।

महरी—खैर, दम ले-ले के फिर चढ़े, जब धुर पर पहुँचे तो दम नहीं बाकी रहा कि ज़रा हिल भी सकें। बेगम साहब ने ऊपर से नीचे को झाँका तो ग़श आ गया, धम से गिरीं।

हुस्नआरा की एक बहन—हाय-हाय ! मरीं कि बचीं ?

महरी—बच जाने की एक ही कही । हड्डी-पसली चूर हो गयी ।

फ़ीरोज—मैंने कहा तो किसी को यकीन नहीं आया । अल्लाह जानता है, इतने ऊँचे पर से जो सड़क देखी होश उड़ गये ।

जानी बेगम—जाने दो भई, अब उसका जिक्र न करो, चलो दुलहिन के पास बैठो ।

खबरें आने लगीं कि आज तक इस शहर में ऐसी बरात किसी ने नहीं देखी थी । एक नयी बात यह है कि गोरों का बाजा है । हजारो आदमी गोरों का बाजा सुनने आये हैं । छतें फटी पड़ती हैं, एक-एक कमरा चौक में आज दो-दो अशर्फियों किराये पर नहीं मिलता । सुना कि बरात के साथ नयी रोशनी है जिसको गैस लाइट बालते हैं ।

फ़ीरोजा—उस रोशनी और इस रोशनी में क्या फ़र्क है ?

महरी—ऐ हुजूर, जमीन और आसमान का फ़र्क है । यह मालूम होता है कि दिन है ।

१४

आज़ाद पोलैंड की शाहज़ादी से रुख़सत हो कर रातोरात भागे। रास्ते में रूसियों की कई फौजें मिलीं। आज़ाद को गिरफ्तार करने की ज़ोरों से कोशिश हो रही थी, मगर आज़ाद के साथ शाहज़ादी का जो आदमी था वह उन्हें सिपाहियों की नज़रें बचा कर ऐसे अनजान रास्तों से ले गया कि किसी को खबर तक न हुई। दोनों आदमी रात को चलते थे और दिन को कहीं छिप कर पड़ रहते थे। एक हफ़्ते तक भागा-भाग चलने के बाद आज़ाद पिलौना पहुँचे गये। इस मुक़ाम को रूसी फ़ौजों ने चारों तरफ से घेर लिया था। आज़ाद के आने की खबर सुनते ही पिलौनेवालों ने कई हज़ार सवार रवाना किये कि आज़ाद को रूसी फौजों से बचा कर निकाल लायें। शाम होते-होते आज़ाद पिलौनावालों से जा मिले।

पिलौना की हालत यह थी कि क़िले के चारों तरफ रूस की फौज थी और इस फ़ौज के पीछे तुर्कों की फौज थी। रात को किले से तोपें चलने लगीं। इधर रूसियों की फ़ौज भी दोनों तरफ गोले उतार रही थी। किलेवाले चाहते थे कि रूसी फौज दो तरफ से घिर जाय, मगर यह कोशिश कारगर न हुई। रूसियों की फ़ौज बहुत ज़्यादा थी। गोलों से काम न चलते देख कर आज़ाद ने तुर्की जनरल से कहा—अब तो तलवार से लड़ने का वक्त आ पहुँचा, अगर आप इजाज़त दें तो मैं रूसियों पर हमला करूँ।

अफ़सर—ज़रा देर ठहरिए, अब मार लिया है। दुश्मन के छक्के छूट गये हैं।

आज़ाद—मुझे खौफ है कि रूसी तोपों से किले की दीवारें न टूट जायँ।

अफ़सर—हाँ, यह ख़ौफ तो है। बेहतर है, अब हम लोग तलवार ले कर बढ़ें।

हुक्म की देर थी। आज़ाद ने फौरन तलवार निकाल ली। उनकी तलवार की चमक देखते ही हजारों तलवारें म्यान से निकल पड़ीं। तुर्की जवानों ने दाढ़ियाँ मुँह में दबायीं और अल्लाह-अकबर कहके रूसी फौज पर टूट पड़े। रूसी भी नंगी तलवारें ले कर मुक़ाबिले के लिए निकल आये। पहले दो तुर्की कम्पनियाँ बढ़ीं, फिर कुछ फासले पर छह कम्पनियाँ और थीं। सबसे पीछे खास फ़ौज की चौदह कम्पनियाँ थीं। तुर्कों ने यह चालाकी की थी कि सिर्फ़ फ़ौज के एक हिस्से को आगे बढ़ाया था, बाक़ी कालमों को इस तरह आड़ में रखा कि रूसियों को खबर न हुई। क़रीब था कि रूसी भाग जायँ, मगर उनके तोपखाने ने उनकी आबरू रख ली। इसके सिवा तुर्की फौज मंज़िलें मारे चली जाती थी और रूसी फौज ताज़ा थी। इत्तिफाक से रूसी फ़ौज का सरदार एक गोली खा कर गिरा, उसके गिरते ही रूसी फौज में खलबली मच गयी, आखिर रूसियों को भागने के सिवा कुछ न बन पड़ी। तुर्कों ने छह हज़ार रूसी गिरफ़्तार कर लिये।

जिस वक्त तुर्की फ़ौज पिलौना में दाखिल हुई, उस वक़्त की खुशी बयान नहीं की जा सकती। बूढ़े और जवान सभी फूले न समाते थे। लेकिन यह खुशी देर तक क़ायम न रही। तुर्कों के पास न रसद का सामान काफ़ी था, न गोला-बारूद। रूसी फ़ौज ने फिर क़िले को घेर लिया। तुर्क हमलों का जवाब देते थे, मगर भूखे सिपाही कहाँ तक लड़ते। रूसी ग़ालिब आते जाते थे और ऐसा मालूम होता था कि तुर्कों को पिलौना छोड़ना पड़ेगा। पचीस हजार रूसी तीन घंटे क़िले की दीवारों पर गोले बरसाते रहे। आखिर दीवार फट गयी और तुर्कों के हाथ-पाँव फूल गये। आपस में सलाह होने लगी।

फौज का अफसर—अब हमारा क़दम नहीं ठहर सकता, अब भाग चलना ही मुनासिब है।

आज़ाद—अभी नहीं, जरा और सब्र कीजिए, जल्दी क्या है।

अफ़सर—कोई नतीजा नहीं।

क़िले की दीवार फटते ही रूसियों ने तुर्की फ़ौज के पास पैग़ाम भेजा, अब हथियार रख दो, वरना मुफ्त में मारे जाओगे।

लेकिन अब भी तुर्कों ने हथियार रखना मंजूर न किया। सारी फ़ौज क़िले से निकल कर रूसी फ़ौज पर टूट पड़ी। रूसियों के दिल बढ़े हुए थे कि अब मैदान हमारे हाथ रहेगा, और तुर्क तो जान पर खेल गये थे। मगर मजबूर हो कर तुर्कों को पीछे हटना पड़ा। इसी तरह तुर्कों ने तीन धावे किये और तीनों मरतबा पीछे हटने पर मजबूर हुए। तुर्की जेनरल फिर धावा करने की तैयारियाँ कर रहा था कि बादशाही हुक्म मिला—फौजें हटा लो, सुलह की बात चीत हो रही है। दूसरे दिन तुर्की फौजें हट गयीं और लड़ाई खतम हो गयी।

९५

जिस दिन आजाद कुस्तुनतुनिया पहुँचे, उनकी बड़ी इज़्ज़त हुई। बादशाह ने उनकी दावत की और उन्हें पाशा का खिताब दिया। शाम को आज़ाद होटल में पहुँचे और घोड़े से उतरे ही थे कि यह आवाज़ कान में आयी, भला मीदी, जाता कहाँ है। आजाद ने कहा—अरे भई, आने दो। आजाद की आवाज सुन कर खोजी बेकरार हो गये। कमरे से बाहर आये और उनके क़दमों पर टोपी रख कर कहा—आजाद, खुदा गवाह है, इस वक्त तुम्हें देख कर कलेजा ठंडा हो गया, मुँह-माँगी मुराद पायी।

आजाद—खैर, यह तो बताओ, मिस मीडा कहाँ हैं?

खोजी—आ गयीं, अपने घर पर हैं।

आजाद—और भी कोई उनके साथ है?

खोजी—हाँ, मगर उस पर नज़र न डालिएगा।

आजाद—अच्छा, यह कहिए।

खोजी—हम तो पहले ही समझ गये थे कि आजाद मावज भी ठीक कर लाये, मगर अब यहाँ से चलना चाहिए।

आजाद—उस परी के साथ शादी तो कर लो।

खोजी—अजी, शादी जहाज पर होगी।

मिस मीडा और क्लारिसा को आज़ाद के आने की ज्यों ही खबर मिली, दोनों उनके पास आ पहुँचीं।

मीडा—खुदा का हज़ार शुक्र है। यह किसको उम्मेद थी कि तुम जीते-जागते लौटोगे। अब इस खुशी में हम तुम्हारे साथ नाचेंगे।

आजाद—मैं नाचना क्या जानूँ।

क्लारिसा—हम तुमको सिखा देंगे।

खोजी—तुम एक ही उस्ताद हो।

आजाद—मुझे भी वह गुर याद हैं कि चाहूँ तो परी को उतार लूँ।

खोजी—भई, कहीं शरमिंदा न करना।

तीन दिन तक आजाद कुस्तुनतुनिया में रहे। चौथे दिन दोनों लेडियों के साथ जहाज पर सवार हो कर हिंदोस्तान चले।

९६

आज़ाद, मीडा, क्लारिसा और खोजी जहाज़ पर सवार हैं। आज़ाद लेडियों का दिल बहलाने के लिए लतीफ़े और चुटकुले कह रहे हैं। खोजी भी बीच-बीच में अपना जिक्र छेड़ देते हैं।

खोजी—एक दिन का ज़िक्र है, मैं होली के दिन बाजार निकला। लोगों ने मना किया कि आज बाहर न निकलिए, वरना रंग पड़ जायगा। मैं उन दिनों बिलकुल गैंडा बना हुआ था। हाथी की दुम पकड़ ली तो हुमस न सका। चें से बोल कर चाहा कि भागे, मगर क्या मजाल! जिसने देखा, दांतों उँगली दबायी कि वाह पट्ठे!

आजाद—ऐं, तब तक आप पट्ठे ही थे?

खोजी—मैं आपसे नहीं बोलता। सुनो मिस मीडा, हम बाज़ार में आये तो देखा, हरबोंग मचा हुआ है। कोई सौ आदमी के करीब जमा थे और रंग उछल रहा था। मेरे पास पेशकब्ज और तमंचा, बस क्या कहूँ।

आजाद—मगर करौली न थी?

खोजी—भई, मैंने कह दिया, मेरी बात न काटो। ललकार कर बोला, यारो, देख-भाल के, मरदों पर रंग डालना दिल्लगी नहीं है। एक पठान ने आगे बढ़के कहा—खाँ साहब, आप सिपाही आदमी हैं, इतना गुस्सा न कीजिए, होली के दिन रंग खेलना माफ है। मैंने कहा, सुनो भाई, तुम मुसल्मान होके ऐसी बात कहते हो? पठान बोला, हज़रत, हमारा इन लोगों से चोली-दामन का साथ है।

इतने में दो लौंडों ने पिचकारी तानी और रंग डाल दिया, ऊपर से उसी पठान ने पीछे से तान के एक जूता दिया तो खोपड़ी पिलपिली हो गयी। फिरके जो देखता हूँ, तो डबल जूता, समशावन-कुशावन। मुसकिरा कर आगे बढा।

आजाद—ऐं, जूता खाके आगे बढ़े!

मीडा—और उस जमाने में सिपाही भी थे, तिस पर जूता खाके चुप रहे?

आजाद—चुप रहते तो खैरियत थी, मुसकिराये भी। और बात भी दिल्लगी की थी, मुसकिराते न तो क्या रोते?

खोजी—मैं तो सिपाही हूँ, तलवार से बात करता हूँ, जूते से काम नहीं लेता। कहाँ तलवार, कहाँ जूती पैजार!

क्लारिसा—एक हाकिम ने गवाह से पूछा कि मुद्दई की माँ तुम्हारे सामने रोती थी या नहीं? गवाह ने कहा, जी हाँ, बायीं आँख से रोती थी।

खोजी—यह तो कोई लतीफ़ा नहीं, मुझे रह-रहके खयाल आता है जिस आदमी ने होली में बेअदबी की थी, उसे पा जाऊँ तो खूब मरम्मत करूँ।

आजाद—अच्छा, अब घर पहुँच कर सबसे पहले उसकी मरम्मत कीजिएगा। यह लीजिए, स्वेज की नहर!

मिस मीडा ने कहा—हम ज़रा यहाँ की सैर करेंगे। आज़ाद को भी यह बात पसंद आयी। इस्कंदरिया के उसी होटल में ठहरे जहाँ पहले टिके थे। खोजी अकड़ते हुए उनके पास आये और कहा, अब यहाँ ज़रा हमारे ठाट देखिएगा। पहले तो लोगों से दरियाफ़्त कर लो कि हमने कुश्ती निकाली थी या नहीं? मारा चारों शाने चित, और किसको? उस पहलवान को जो सारे मिस्र में एक था। जिसका नाम ले कर मिस्र के पहलवानों के उस्ताद कान पकड़ते थे। उसको देखो तो आँखें खुल जायँ। किसी का बदन चोर होता है। उसका कद चोर है। पहले तो मुझे रेलता हुआ अखाड़े के बाहर ले गया और मैं भी चुपचाप चला गया, बस भाई, फिर तो मैंने कदम जमाके जो रेला दिया तो बोल गया। अब पेंचें होने लगीं, मगर वह उस्ताद, तो मैं जगत-उस्ताद! उसने पेंच किया, मैंने तोड़ किया। उसने दस्ती खींची, मैं बगली हुआ। उसने डंडा लगाया, मैंने उचकके काट खाया।

आज़ाद—सुभान-अल्लाह, यह पेंच सबसे बढ़ कर है। आपने इतनी तकलीफ क्यों की, बैठके कोसना क्यों न शुरू कर दिया?

दोनों लेडियाँ हँसने लगीं तो खोजी भी मुसकिराये, समझे कि मेरी बहादुरी पर दोनों खुश हो रही हैं। बोले—बस जनाब, दो घंटे तक बराबर की लड़ाई रही, वह कड़ियल जवान, मोटा-ताजा, पँचहत्था। उसका कद क्या बताऊँ, बस जैसे हुसैनाबाद का सतखंडा। उसमें कूवत और यहाँ उस्तादी करतब, मैंने उसे हँफा-हँफाके मारा, जब उसका दम टूट गया तो चुर्र-मुर्र कर डाला। बस जनाब, किला जंग के पेंच पर मारा तो चारों शाने चित। कोई पचास हजार आदमी देख रहे थे। तमाम शहर में मशहूर था कि हिंद का पहलवान आया।

आज़ाद—भाई जान, सुनो, अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने की सनद नहीं। जब जानें कि हमारे सामने पटकनी दो और पहले उस पहलवान को भी देख लें कि कैसा है, तुम्हारी-उसकी जोड़ है या नहीं।

खोजी—कुछ अजीब आदमी हैं आप, कहता जाता हूँ कि शाडील पँचहत्था जवान है, आपको यकीन नहीं आता, हम इसको क्या करें।

इतने में होटल के दो एक आदमी खोजी को देख कर जमा हो गये, खोजी ने पूछा—क्यों भाई, हमने यहाँ एक कुश्ती निकाली थी या नहीं?

एक आदमी—वाह, हमारे होटल के बौने ने तो उठा के दे पटका था, चले वहाँ से कुश्ती निकालने!

खोजी—ओ गीदी, झूठ बोलना और सुअर खाना बराबर है।

दूसरा आदमी—हाथ-पाँव तोड़के धर देगा। आप और कुश्ती!

खोजी—जी हाँ, हम और कुश्ती! कोई आये तब न! (ताल ठोक कर) बुलवाओ उस पहलवान को।

इतने में बौना सामने आ खड़ा हुआ और आते ही खोजी को चिढ़ाने लगा। खाना साहब ने कहा—यही पहलवान है जिसको हमने पटका था। आज़ाद बहुत

हँसे, बस ! टाँय-टाँय फिस । बौने से कुश्ती निकाली तो क्या । किसी बराबरवाले से कुश्ती निकालते तो जानते । इसी पर घमंड था ।

खोजी—साहब, कहने और करने में बड़ा फर्क है, अगर उससे हाथ मिलायें तो ज़ाहिर हो जाय ।

बौना ताल ठोंक के सामने आ खड़ा हुआ और खोजी भी पैंतरे बदल कर पहुँचे । आज़ाद, मीडा और होटल के बहुत से आदमी उन दोनों के गिर्द टट लगाके खड़े हो गये।

खोजी—आओ, आओ बच्चा । आज भी गुद्दा दूँगा ।

बौना—आज तुम्हारी खोपड़ी है और मेरा जूता ।

खोजी—ऐसा गुद्दा दूँ कि उम्र भर याद रहे ।

बौना—इनाम तो मिलेगा ही, फिर हमारा क्या हर्ज है !

अब सुनिए कि दोनों पहलवान गुथ गये । खोजी ने घूँसा ताना, बौने ने मुँह चिढ़ाया । खोजी ने चपत जमायी, बौने ने धौल लगायी । दोनों की चाँद घुटी-घुटायी, चिकनी थी । इस ज़ोर की आवाज़ आती थी कि सुननेवालों और देखनेवालों का जी खुश हो जाता था ।

मीडा—खूब आवाज़ आयी, तड़ाक । एक और ।

क्लारिसा—ओफ़, मारे हँसी के पेट में बल पड़ गये ।

खोजी—हँसी क्यों न आयेगी! जिसकी खोपड़ी पर पड़ती है उसी का दिल जानता है ।

आजाद—अरे यार, ज़रा ज़ोर से चपतबाज़ी हो ।

खोजी—देखिए तो, दम के दम में बेदम किये देता हूँ कि नहीं ।

आजाद—मगर यार, यह तो बिलकुल बौना है ।

खोजी—हाय अफ़सोस, तुम अभी बिलकुल लौंडे हो । अरे कमबख्त, इसका कद चोर है, यों देखने में कुछ नहीं मालूम होता, मगर अखाड़े में चिट और लँगोट बाँध कर खड़ा हुआ, बस फिर देखिए, बदन की क्या कैफियत होती है । बिलकुल गैंडा मालूम होता है । कोई कहता है, दुम-कटा भैंसा है, कोई कहता है, हाथी का पाठा है, कोई नागौरी बैल बताता है, कोई कहता है, जमुनापारी बकरा है, मगर मुझे इसका गम नहीं । जानता हूँ कि कोई बोला और मैंने उठाके दे मारा ।

खोजी ने कई बार झल्ला-झल्ला कर चपतें लगायीं । एक बार इत्तिफ़ाक से उसके हाथ में इनकी गरदन आ गयी, ख्वाजा साहब ने बहुत हाथ-पैर मारे, बहुत कुछ ज़ोर लगाये, मगर उसने दोनों हाथों से गरदन पकड़ लीं और लटक गया । खोजी कुछ झुके, उनका झुकना था कि उसने ज़ोर से मुक्का दिया और दो-तीन लप्पड़ लगाके भागा । खोजी उसके पीछे दौड़े, उसने कमरे में जा कर अंदर से दरवाजा बंद कर लिया । खोजी ने चपतें खायीं तो लोग हँसे और मिस क्लारिसा ने तालियाँ बजायीं । अब तो आप बहुत ही झल्लाये, आसमान सिर पर उठा लिया, ओ गीदी, अगर

शरीफ़ का बच्चा है तो बाहर आ जा। गिरा तो भाग खड़ा हुआ!

आज़ाद—अरे मियाँ, यह हुआ क्या? कौन गिरा, कौन जीता? हम तो उस तरफ़ देख रहे थे। मालूम नहीं हुआ, किसने दे मारा।

खोजी—ऐसी बात काहे को देखने लगे थे? अंजर-पंजर ढीले कर दिये गीदी के। वल्लाह, कुश्ती देखने के काबिल थी। मैंने एक नया पेंच किया था। उसके गिरने के वक़्त ऐसी आवाज आयी कि यह मालूम होता था, जैसे पहाड़ फट पड़ा, आपने सुना ही होगा।

आज़ाद—वह है कहाँ? क्या खोदके ज़मीन में गाड़ दिया आपने?

खोजी—नहीं भाई, हारे हुए पर हाथ नहीं उठाता, और कसम है, पूरा ज़ोर नहीं किया, वरना मेरे मुकाबिले में क्या ठहरता। हाथ पाँव तोड़के चुर्र-मुर्र कर डालता। नानी ही तो मर गयी कमबख्त की, बस रोता हुआ भागा।

आज़ाद—मगर ख्वाजा साहब, गिरा तो वह और यह आपकी पीठ पर इतनी गर्द क्यों लगी है?

खोजी—भई, यहाँ पर हम भी क़ायल हो गये।

क्लारिसा—इसी तरह उस दफ़ा भी तुमने कुश्ती निकाली थी?

मीडा—बड़े शरम की बात है कि ज़रा सा बौना तुमसे न गिराया गया।

खोजी—जी चाहता है, दोनों हाथों से अपना सिर पीटूँ। कहता जाता हूँ कि गीदी का कद चोर है। आखिर मेरा बदन चोर है या नहीं, इस वक़्त मेरे बदन अँगरखा नहीं है। खासा देव बना हुआ हूँ, अभी कपड़े पहन लूँ तो पिद्दी मालूम लगूँ। बस यही फ़र्क़ समझो। अव्वल तो मैं गिरा नहीं, अपनी ही ज़ोर में आप गया। दूसरे उसका क़द चोर है, फिर आप कैसे कहते हैं कि ज़रा सा बौना था?

दूसरे दिन आज़ाद दोनों लेडियों को ले कर बाज़ार की एक कोठी से बाहर आते थे, तो क्या देखते हैं कि खोजी अफ़ीम की पीनक में ऊँघते हुए चले आ रहे हैं। सामने से साठ-सत्तर दुम्बे जाते थे। दुम्बेवाले ने पुकारा—हटो-हटो, बचो-बचो, वह आपे में हों तो बचें। नतीजा यह हुआ कि एक दुम्बे से धक्का लगा तो धम से सड़क पर आ रहे और गिरते ही चौंक के गुल मचाया—कोई है? लाना क़रौली। आज अपनी जान और इसकी जान एक करूँगा। खुदा जाने, इसको मेरे साथ क्या अदावत पड़ गयी। अरे वाह वे बहुरूपिये, आज हमारे मुकाबिले के लिए साँडिनियाँ लाया है। अबे, यहाँ हर वक़्त चौकन्ने रहते हैं। उस दफ़ा बज़ाज़ की दूकान पर आये तो मिठाई खाने में आयी, आज यह हाथ-पाँव तोड़ डालने से क्या मिला। घुटने लहू-लुहान हो गये। अच्छा बचा, अब तो मैं होशियार हो गया हूँ, अबकी समझूँगा।

१७

सुरैया बेगम का मकान परीखाना बना हुआ था। एक कमरे में वज़ीर डोमिनी नाच रही थी। दूसरे में शहज़ादी का मुजरा होता था।

फ़ीरोज़ा—क्यों फ़ैज़न बहन, तुमको इस उजड़े हुए शहर की डोमिनियों का गाना काहे को अच्छा लगता होगा?

जानी बेगम—इनके लिए देहात की मीरासिनें बुलवा दो।

फ़ैज़न—हाँ, फिर देहाती तो हम हैं ही, इसका कहना क्या?

इस फ़िक़रे पर वह क़हक़हा पड़ा कि घर भर गूँज उठा और फ़ैज़न बहुत शरमायीं। जानी बेगम ने कहा—बस यही बात तो हमें अच्छी नहीं लगती। एक तो बेचारी इतनी देर के बाद बोलीं, उस पर भी सबने मिल कर उनको बना डाला।

फ़हीमन डोमिनी मुजरा करने लगी। उसके साथ दो औरतें सारंगी लिये थीं, एक तबला बजा रही थी और एक मजीरे की जोड़ी। उसके गाने की शहर में धूम थी।

बंदनवार बाँधो सब मिलके मालिनियाँ।

इसको उसने इस तरह अदा किया कि जिसने सुना, लट्टू हो गया।

जानी बेगम—चौथी के दिन तीस-चालीस तवायफ़ों का नाच होगा।

नज़ीर बेगम—कश्मीरी नहीं आते, हमें उनकी बातों में बड़ा मज़ा आता है।

हशमत बहू—नवाब साहब को बनाने में नाच कराने की चिढ़ है।

फ़ीरोज़ा—सुनो बहन! जो औरत बदी पर आये तो उसकी बात ही और है, नहीं तो शरीफ़ज़ादी के लिए सबसे बड़ा परदा दिल का है।

फ़ैज़न—फ़हीमन, यह गीत गाओ—

'डाल गयो कोऊ टोना रे।'

फ़ीरोज़ा—क्या गाओ गीत! गीत कंडेवालियाँ गाती हैं!

जानी—और इनको ठुमरी, टप्पे, ग़ज़ल से क्या मतलब। नकटा गाओ।

फ़ीरोज़ा और जानी बेगम की बातें सुन कर मुबारक महल बिगड़ गयीं।

फ़ीरोज़ा—बहन, हमारी बातों से बुरा न मानना।

मुबारक—बुरा मान कर ही क्या लूँगी!

जानी—ऐसी बातों से आपस में फ़साद हो जाता है।

फ़ीरोज़ा—यह लड़वाती हैं बहन, सच कहती हूँ!

मुबारक—तुम दोनों एक-सी हो, जैसे तुम वैसे वह, न तुम कम, न वह कम, शरीफ़ों में बैठने लायक नहीं हो। पढ़-लिख कर भी यह बातें सीखीं!

जानी—देखिए तो सही, अब दिल में कट गयी होंगी।

मुबारक—मैं ऐसों से बात तक नहीं करती।

फ़ीरोज़ा—(तिनक कर) जितना दबो, उतना और दबाती हैं, तुम बात नहीं करतीं, यहाँ कौन तुमसे बात करने के लिए बेक़रार है।

मुबारक—महरी, हमारी पालकी मँगवाओ, हम जायँगे।

बेगम साहब को खबर हुई तो उन्होंने दोनों को समझा-बुझा कर राज़ी कर दिया।

शाम हुई, रोशनी का इंतज़ाम होने लगा। बेगम ने कहा—फ़राशों को हुक्म दो कि बारहदरी को झाड़-कँवल से सजायें, कमरे और दालानों में साफ़ चाँदनियाँ बिछें, उन पर ऊनी और चीनी ग़लीचे हों। महरी ने बाहर जा कर आग़ा साहब से ये बातें कहीं—बोले, हाँ-हाँ साहब, सुना। बेगम साहब से कहो कि या तो हमको इंतज़ाम करने दें, या खुद ही बाहर चली आयें। आख़िर हमको कोई गँवार समझी हैं? कल से इंतज़ाम करते-करते हम शल हो गये और अब बरात आने का वक़्त आया तो हुक्म देने लगीं कि यह करो, वह करो। जा कर कह दो कि बाहर का इंतज़ाम हमारे ताल्लुक है। आप क्यों दख़ल देती हैं। हम अपने बंदोबस्त कर लेंगे।

महरी ने अंदर जा कर बेगम साहब से कहा—हुज़ूर, बाहर का सब इंतज़ाम ठीक है। बारहदरी के फाटक पर नौबतख़ाना है, उस पर कारचोबी झूल पड़ी है, कहीं कँवल और गिलास हैं, कहीं हरी और लाल हाँड़ियाँ। रंग बिरंग के क़ुमक़ुमे बड़ी बहार दिखाते हैं।

हशमत बहू—दरवाज़े पर यह शोर कैसा हो रहा है?

महरी—हुज़ूर, शोर की न पूछें, आदमियों की इतनी भीड़ लगी हुई है कि कंधे से कंधा छिलता है। दूकानें भी बहुत सी आयी हैं। तम्बोली लाल कपड़े पहने दूकानों पर बैठे हैं। हाथों में चाँदी के कड़े, थालियों में सुफ़ेद पान, एक थाली में छोटी इलायचियाँ, एक में डलियाँ, कत्था इन में बसा हुआ, सफ़ाई के साथ गिलौरियाँ बना रहा है। एक तरफ़ साकिनों की दूकानें हैं। बिगड़े-दिल दमों पर दम लगाते हैं, बे-फ़िकरे टूटे पड़ते हैं।

फ़ीरोज़ा—सुनती हो फ़ैजन बहन, चलो ज़रा बाहर देख आयें, यह नाक-भौं क्यों चढ़ाये बैठी हो। क्या घर से लड़ कर आयी हो।

फ़ैजन—हमारे पीछे क्यों पड़ी हो, हम न किसी से बोलें, न चालें।

हशमत—हाँ फ़ीरोज़ा, यह तुममें बड़ी बुरी आदत है।

फ़ीरोज़ा—लड़वाओ, वह तो सीधी-सादी हैं, शायद तुम्हारे भरों में आ जायँ।

जानी—फ़ीरोज़ा बेगम जिस महफ़िल में न हों वह बिलकुल सूनी मालूम हो।

फ़ीरोज़ा—हमें अफ़सोस यही है कि हमसे मुबारक महल बहन ख़फ़ा हो गयीं। अब कोई मेल करवा दे।

मुबारक—बहन, तुम बड़ी मुँहफट हो।

फ़ीरोज़ा—अब साफ़-साफ़ कहूँ तो बुरा मानो, ज़री-ज़री सी बात में चिटकती हो। आपस में हँसी-दिल्लगी हुआ करती है। इसमें बिगड़ना क्या? फ़ैजन बुरा

मानें तो एक बात भी है, यह बेचारी देहात में रहती हैं, यहाँ के राह-रस्म क्या जानें, मगर तुम शहर की हो कर बात-बात में रोये देती हो। रही मैं, मैं तो हाज़िर-जवाब हूँ ही। हाँ, जानी बेगम की तरह जबाँदराज नहीं।

जानी—अब मेरी तरफ झुकीं।

हुमायत—चौमुखा लड़ती हैं, उफ री शोखी!

अब दूल्हा के यहाँ का ज़िक्र सुनिए। वहाँ इससे भी ज्यादा धूम-धाम थी। नौजवान शाहज़ादे और नवाबजादे जमा थे। दिल्लगी हो रही थी।

एक—यार, आज तो वे सरूर जमाये जाना मुनासिब नहीं।

दूसरा—मालूम होता है, आज पीके आये हो।

पहला—अरे मियाँ, खुदा से डरो, पीनेवाले की ऐसी-तैसी।

दूल्हा—जरूर पीके आये हो। आप हमारी बारात के साथ न चलिए।

दीवानखाने में बुजुर्ग लोग बैठे पुराने जमाने की बातें कर रहे थे। एक मौलवी साहब बोले—न अब वह लोग हैं, न ज़माना। अब किसके पास जायँ, कोई मिलने के काबिल ही नहीं। इल्म की तो अब कदर ही नहीं। अब तो वह ज़माना है कि गाली खाये, मगर जवाब न दे।

ख्वाजा साहब—अब आप देखें कि उस ज़माने में दस, बीस, तीस की नौकरियाँ थीं, मगर वाह रे बरकत। एक भाई घर में नौकर है और दस भाई चैन कर रहे हैं।

रात के दस बजे नवाब साहब महल में नहाने गये। चारो तरफ़ बंदनवार बँधी हुई थीं। आम, अमरूद और नारंगियाँ लटक रही थीं। नीचे एक सौ एक कोरे घड़े थे, एक मटके पर इक्कीस टोंटी का बधना रखा था और बधने में जौ लगे हुए थे। दूल्हा की माँ ने कहा—कोई छींके-वींके नहीं, खबरदार कोई छींकने न पाये। घर-भर में बच्चों को मना कर दो कि जिसको छींक आये, जब्त करे। अब दिल्लगी देखिए कि इस टोकने से सबको छींक आने लगी। किसी ने नाक को उँगली से दबाया, कोई लपक के बाहर चला गया। दूल्हा ने लुंगी बाँधी, बदन में उबटन मला गया। बहनें सिर पर पानी डालने लगीं।

दूल्हा—कितना सर्द पानी है। ठिठरा जाता हूँ।

महरी—फिर हुजूर, शादी करना कुछ दिल्लगी है!

बहन—दिल में तो खुश होंगे। आज तुम्हें भला सर्दी लगेगी।

नहा कर दूल्हा ने खड़ाऊँ पहनी, कमरे में आये, कपड़े पहने। मशरू का पायजामा, जामदानी का अँगरखा, सिर पर पगड़ी के इर्द-गिर्द मोती टँके हुए, बीच में पुखराज का रंगीन नगीना, कमर में शाली पटका, पगड़ी पर फूलों का सेहरा, हाथ में लाल रेशमी रूमाल और कंधे पर हरा दुशाला, पैरों में फुँदनेदार बूट।

जब दूल्हा बाहर गया तो बेगम साहब ने लड़कियों से कहा—अब चलने की तैयारी करो। हमको बारात से पहले पहुँच जाना चाहिए। दूल्हा की बहनें अपने-अपने जोड़े पहनने लगीं। महरियों-लौंडियों को भी हुक्म हुआ कि कपड़े बदलो।

ज़रा देर में सुखपाल और झप्पान दरवाज़े पर ला कर लगा दिये गये। दोनों बहन चलीं। दायें-बायें महरियाँ, मशालचियों के हाथ में मशालें, सिपाही और ख़िदमत-गार लाल फुँदनेदार पगड़ियाँ बाँधे साथ चले। जिस तरफ़ से सवारी निकल गयी, गलियाँ इत्र की महक से बस गयीं। यही मालूम होता था कि परियों का उड़न-खटोला है।

जब दोनों बहनें समधियाने पहुँच गयीं, तो नवाब साहब की माँ भी चलीं। वहाँ दुलहिन की माँ ने इनकी पेशवाई की। इत्र-पान से ख़ातिर हुई और डोमिनियों का नाच होने लगा।

थोड़ी देर के बाद दूल्हा के यहाँ से बरात चली, सबके आगे हाथी पर निशान था। हाथी के सामने अनार और हज़ारे छूट रहे थे। हाथियों के पीछे अँगरेजी बाजे-वालों की धूम थी। फिर सजे हुए घोड़े सिर से पाँव तक जेवर से लदे चले आते थे। साईस उनकी बाग पकड़े हुए थे और दो सिपाही इधर-उधर क़दम बढ़ाते चले जाते थे। दूल्हा के सामने शहनाई बज रही थी। तमाशा देखनेवाले यह ठाट-बाट देख कर दंग हो रहे थे।

एक—भई, अच्छी बरात सजायी; और ख़ूब आतशबाज़ी बनायी है। आतश-बाज़ी क्या बनवायी है, यों कहिए कि चाँदी गलवायी है।

दूसरा—अनार तो आसमान की ख़बर लाता है, मगर धुआँ आसमान के भी पार हो जाता है।

तख़्त ऐसे थे कि जो देखता, दाँतों अँगुली दबाता। एक हाथी ऐसा नादिर बना था कि नक़ल को असल कर दिखाया था। बाज़-बाज़ तख़्त आदमियों को मुग़ालता देते थे, ख़ास कर चंडूबाज़ों का तख़्त तो ऐसा बनाया था कि चंडूवालों को शर्माया। एक चंडूबाज़ ने झल्ला कर कहा—इन कुम्हारों को हमसे अदावत है। ख़ुदा इनसे समझे। एक महफ़िल की तसवीर बहुत ही ख़ूबसूरत थी। फ़र्श पर बैठे लोग नाच देख रहे हैं, बीच में मसनद बिछी है, दूल्हा तकिया लगाये बैठा है और सामने नाच हो रहा है। सबके पीछे एक आदमी हाथी पर बैठा रुपये लुटाता आता था और शोहदे गुल मचाते थे। एक-एक रुपये पर दस-दस गिरे पड़ते थे। जान पर खेल-कर पिले पड़ते थे।

यह वही सुरैया बेगम हैं जो अभी कल तक मारी-मारी फिरती थीं। जिनको सारी दुनिया में कहीं ठिकाना न था, वही सुरैया बेगम आज शान से दुलहिन बनी बैठी हैं और इस धूमधाम से उनकी बारात आती है। माँ, बाप, भाई, बहन, सभी मुफ़्त में मिल गये। इस वक़्त उनके दिल में तरह-तरह के ख़याल आते थे—यहाँ किसी को मालूम न हो जाय कि यही सराय में रहती थी, इसी का नाम अलारक्खी भठियारी था, फिर तो कहीं की न रहूँ। इस ख़याल से उन्हें इतनी घबराहट हुई कि इधर दर-वाज़े पर बारात आयी और उधर वह बेहोश हो गयीं। सबने दुलहिन को घेर लिया।

अरे, खैर तो है! यह हुआ क्या, किसी ने मिट्टी पर पानी डाल कर सुँघाया। दुल-हिन की माँ इधर-उधर दौड़ने लगी।

हशमत—ऐ, यह हुआ क्या अम्मॉजान ?

फ़ीरोज़ा—अभी अच्छी खासी बैठी हुई थीं। बैठे बैठे ग़श आ गया।

बाहर दूल्हा ने यह खबर सुनी तो अपनी महरी को बुलवाया और समझाया कि जाके पूछो, अगर ज़रूरत हो तो डॉक्टर को बुलवा लूँ। महरी ने आ कर कहा—हुजूर, अब तबियत बहाल है, मगर पसीना आ रहा है और पानी-पानी करती हैं। नवाब साहब की जान में जान आयी। बार-बार तबियत का हाल पूछते थे। जब दुलहिन की हालत दुरुस्त हो गयी तो हमजोलियों ने दिक करना शुरू किया।

जानी—आखिर इस ग़श का सबब क्या था ? हाँ, अब समझी। अभी सूरत देखी नहीं और ग़श आने लगे।

फ़ीरोज़ा—ऐ नहीं, क्या जाने अगली-पिछली कौन बात याद आ गयी।

जानी—सूरत से तो खुशी बरसती है, वह हँसी आयी। ऐ, लो वह फिर गरदन झुका ली।

हशमत—यहाँ तो पाँव-तले से मिट्टी निकल गयी।

फ़ीरोज़ा—मजा तो जब आता कि निकाह के वक़्त ग़श आता, मियाँ को बनाते तो, कि अच्छे सब्जकदम हो।

अब सुनिए कि महल से बराबर खबरें आ रही हैं कि तबियत अच्छी है, मगर नवाब साहब को चैन नहीं आता। आखिर डॉक्टर साहब को बुलवा ही लिया। उनका महल में दाखिल होना था कि हमजोलियों ने उन पर आवाजे कसने शुरू किये।

एक—मुआ सूँस है कि आदमी, अच्छे मदमद को बुलाया।

दूसरी—तोंद क्या, चार आनेवाला फ़र्रुखाबादी तरबूज है।

तीसरा—तम्बाकू का पिंडा है या आदमी है ?

चौथी—कह दो, कोई अच्छा हकीम बुलावें, इस जंगली हूश की समझ में क्या खाक आयेगा।

पाँचवीं—खुदा की मार ऐसे मुए पर।

डॉक्टर साहब कुर्सी पर बैठे, नये आदमी थे, उर्दू वाजिबी ही वाजिबी समझते थे। बोले—दारोद होते कौन जागो ?

महरी—नहीं डॉक्टर साहब, दारोद तो नहीं बतातीं, मगर देखते-देखते ग़श आ गया।

डॉक्टर—गास कीस को बोलते ?

महरी—हुजूर मैं समझती नहीं। घास क्या।

डॉक्टर—गास किसको बोलते ? तुम लोग क्या गोल-माल करने माँगता। हम ज़ुबान देखे।

फ़ीरोज़ा—नौज ऐसा हकीम हो। डॉक्टर की दुम बना है।

जानी—कहो, नब्ज देखें।

डॉक्टर—नाबुज कैसा बात। हम लोग नाबुज देखना नहीं माँगता, ज़ुबान दिखाये, ज़ुबान, इस माफ़िक़।

डॉक्टर साहब ने मुँह खोल कर ज़बान बाहर निकाली।

फ़ीरोज़ा—मुँह काहे को घटावेग की गड़हिया है।

जानी—अरे महरी, देखती क्या है, मुँह में धूल झोंक दे।

हशमत—एक दफ़ा फिर मुँह खोले तो मैं पंखे की डंडी हलक़ में डाल दूँ।

डॉक्टर—जिस माफ़िक हम ज़ुबान दिखाया, उस माफ़िक हम देखना माँगता। सब माई लोग हँसी करता। ज़ुबान दिखाने में क्या बात है।

फ़ीरोज़ा—नवाब साहब से कहो, पहले इसके दिमाग़ का इलाज करें।

सुरैया बेगम जब किसी तरह ज़बान दिखाने पर राज़ी न हुईं तो डॉक्टर साहब ने नब्ज़ देख कर नुस्खा लिखा और चलते हुए। सुरैया का जी कुछ हलका हुआ। मगर इसी वक़्त मेहमानों के साथ उन्होंने एक ऐसी औरत को देखा जो उनसे खूब वाक़िफ़ थी, वह मैके में इनके साथ बरसों रह चुकी थी। होश उड़ गये कि कहीं यह पूरा हाल सबसे कह दे तो कहीं की न रहूँ। इस औरत का नाम ममोला था। वह एक शरीर, आवाजें कसने लगी। एक लड़के को गोद में ले कर उसके साथ खेलने लगी और बातों बातों में सुरैया बेगम को सताने लगी। हम खूब पहचानते हैं। सराय में भी देखा था, महल में भी देखा था। अलारक्खी नाम था। इन फ़िक़रों ने सुरैया बेगम को और भी बेचैन कर दिया, चेहरे पर ज़र्दी छा गयी। कमरे में जा कर लेट रहीं, उधर ममोला ने भी समझा कि अगर ज़्यादा छेड़ती हूँ तो दुलहिन दुश्मन हो जायगी। चुप हो रही।

बाहर महफ़िल जमी हुई थी। दूल्हा ज्यों ही मसनद पर बैठा, एक हसीना नज़ाकत के साथ क़दम उठाती महफ़िल में आयी। यारों ने मुँह-माँगी मुराद पायी। एक बूढ़े मियाँ ने पोपले मुँह से कहा—खुदा खैर करे। इस पर महफ़िल भर ने कह-कहा लगाया और वह परी भी मुसकिरा कर बोली—बूढ़े मुँह मुँहासे, इस बुढ़ौती में भी छेड़छाड़ की सूझी। आपने हँस कर जवाब दिया—बीबी, हम भी कभी जवान थे, बूढ़े हुए तो क्या, दिल तो वही है।

वह परी नाचने खड़ी हुई तो ऐसा सितम ढाया कि सारी महफ़िल लोट-पोट हो गयी। नौजवानों में आहिस्ता आहिस्ता बातें होने लगीं।

एक—बे अख़्तियार जी चाहता है कि इसके क़दमों पर सिर रख दूँ।

दूसरा—कल ही परसों हमारे घर न पड़ जायँ तो अपना नाम बदल डालूँ, देख लेना।

तीसरा—क़सम ख़ुदा की, मैं तो इसकी गुलामी करने को हाज़िर हूँ, पूछो तो कहाँ से आयी है।

चौथा—शीन-क़ाफ़ से दुरुस्त है।

पाँचवाँ—हमसे पूछो, मुरादाबाद से आयी है।

हसीना ने सुरीली आवाज़ मे एक ग़ज़ल गायी। इस ग़ज़ल ने महफ़िल को मस्त कर दिया। एक साहब की आँखों से आँसू बह चले, यह वही साहब थे जिन्होंने कहा था कि हम इसे घर डाल लेंगे। लोगों ने समझाया—भई, इस रोने-धोने से क्या मतलब निकलेगा। यह कोई शरीफ़ की बहू-बेटी तो है नहीं, हम कल ही थिप्पा लड़ा देंगे। मगर इस वक्त तो खुदा के वास्ते आँसू न बहाओ, वरना लोग हँसेंगे। उन्होंने कहा—भाई, दिल को क्या करूँ, मैं तो खुद चाहता हूँ कि दिल का हाल ज़ाहिर न हो, मगर वह मानता ही नहीं तो मेरा क्या क़ुसूर है।

यह हज़रत तो रो रहे थे। और लोग उसकी तारीफें कर रहे थे। एक ने कहा—यह हमारे शहर की नाक हैं। दूसरा बोला—इसमें क्या शक। आप बहुत ही मिलनसार, नेक, खुश-मिज़ाज हैं। तीसरे साहब बोले—ऐ हज़रत, दूर-दूर तक शोहरत है इनकी! अब इस शहर में जो कुछ हैं, यही हैं।

इस जलसे में दो-चार देहाती भी बैठे थे। उनको यह बातें नागवार लगीं। मुन्ने मियाँ बोले—वाह, अच्छा दस्तूर है शहर का, पतुरिया को सामने बिठा लिया।

छुट्टन—हमारे देश में अगर पतुरिया को कोई बीच मे बिठाये तो हुक्का पानी बंद हो जाय।

गजराज—पतुरिया बैठे काहे को, पनही न खाय?

नवाब—जी हाँ, शहरवाले बड़े ही बेशरम होते हैं।

आग़ा—देहातियों की लियाक़त हम बेचारे कहाँ से लायें?

गजराज—हई है, हम लोग इज्जतदार हैं। कोई नगे-लुच्चे नहीं हैं।

आग़ा—तो जनाब, आप शहर की मजलिस में क्यों आये?

गजराज—काहे को बुलाया, क्या हमलोग बिन बुलाये आये?

आग़ा—अच्छा, अब गुस्से को थूक दीजिए।

जब ये लोग ज़रा ठंडे हुए, तो उस हसीना ने एक फ़ारसी ग़ज़ल गायी, इस पर एक कमसिन नवाबज़ादे ने जो पंद्रह-सोलह साल से ज़्यादा न था, ऊँची आवाज़ में कहा—वाह जानमन, क्यों न हो! इस लड़के के बाप भी महफ़िल में बैठे थे, मगर इस लड़के को ज़रा भी शरम न आयी।

इसके बाद तायफ़ा बदली गयी। यह आ कर महफ़िल में बैठ गयी और इसके पीछे साज़िंदे भी बैठ गये।

नवाब—ऐं, खैरियत तो है? ऐ साहब, नाचिए-गाइए।

हसीना—कल से तबियत खराब है। दो-एक चीजें आपकी खातिर से कहिए तो गा दूँ।

नवाब—मज़ा किरकिरा कर दिया, तुम्हारे नाच की बड़ी तारीफ सुनी है।

हसीना—क्या अर्ज़ करूँ। आज तो नाचने के क़ाबिल नहीं हूँ।

यह कह कर, उसने एक ठुमरी शुरू कर दी। इधर बड़े नवाब साहब महल में गये और जहाँ दुलहिन का पलंग था, वहाँ बैठे। खवास ने चिकनी डली, इलायची, गिलौरियाँ पेश कीं। इत्र की शीशियाँ सामने रखीं। बड़े नवाब साहब हुक्का पीने लगे।

सुरैया बेगम की माँ परदे की आड़ से बोलीं—आदाब अर्ज है।

बड़े नवाब—बंदगी, खुदा करे, इसकी औलाद देखो।

बेगम—खुदा आपकी दुआ कबूल करे। शुक्र है कि इस शादी की बदौलत आपकी जियारत हुई।

बड़े नवाब—दुलहिन से पूछूँ। क्यों बेटी, मेरे लड़के से तुम्हारा निकाह होगा। तुम इसे मंजूर करती हो?

सुरैया बेगम ने इसका कुछ जवाब न दिया। बड़े नवाब साहब ने कई मरतबा वही सवाल पूछा, मगर दुलहिन ने सिर ऊपर न उठाया। आखिर जब हशमत बहू ने आ कर कहा—क्या सबको दिक करती हो, जी तो चाहता होगा कि बेनिकाह ही चल दो, मगर नखरों से बाज नहीं आती हो। तब सुरैया बेगम ने आहिस्ता से कहा—हूँ।

बड़ी बेगम—आपने सुना?

बड़े नवाब—जी नहीं, जरा भी नहीं सुना।

बड़ी बेगम ने कहा—आपलोग जरा खामोश हो जायँ तो नवाब साहब लड़की की आवाज सुन लें। जब सब खामोश हो गयीं तो दुलहिन ने फिर आहिस्ता से कहा—हूँ।

उधर नौशा के दोस्त उससे मजाक कर रहे थे।

एक—आपसे जो पूछा जाय कि निकाह मंजूर है या नहीं, तो आप घंटे भर तक जवाब न दीजिएगा।

दूसरा—और नहीं तो क्या, हाँ कह देंगे?

तीसरा—जब लोग हाथ-पैर जोड़ने लगें, तब आहिस्ते से कहना, मंजूर है।

चौथा—ऐसा न हो, तुम फ़ौरन मंजूर कर लो और उधरवाले हमारी हँसी उड़ायें।

दूल्हा—दूल्हा तो नहीं बने मगर बरातें तो बहुत देखी हैं। अगर आप लोगों की यही मरजी है तो मैं दो घंटे में मंजूर करूँगा।

अब मेहर पर तक़रार होने लगी। दुलहिन के भाई ने कहा—मेहर चार लाख से कम न होगा। बड़े नवाब साहब बोले—भाई, और भी बढ़ा दो, चार लाख मेरी तरफ़ से, पूरे आठ लाख का मेहर बँधे।

निकाह के बाद किश्तियाँ आयीं, किसी मे दुशाला, किसी में भारी भारी हार, तश्तरियों में चिकनी डली, इलायची, पान, शीशियों में इत्र। किसी किश्ती मे मिठाइयाँ और मिश्री के कूजे। जब काजी साहब रुखसत हो गये तो दूल्हा ने पाँच अशर्फियाँ नजर दिखायीं। नवाब साहब बाहर आये। थोड़ी देर के बाद महल से शरबत आया। नवाब साहब ने इक्कीस अशर्फियाँ दीं। दुलहिन के खिदमतगार ने पाँच अशर्फियाँ पायीं। पहले तो दुशाला माँगता रहा, मगर लोगों के समझाने से इनाम ले लिया।

दुलहिन के लिए जूठा शरबत भेजा गया। महफिलवालों ने शरबत पिया, हार गले में डाला, इत्र लगाया और पान खा कर गाना सुनने लगे। इतने में अंदर से आदमी दूल्हा को बुलाने आया। दूल्हा यहाँ से खुश-खुश चला। जब ड्योढ़ी में पहुँचा तो उसकी बहनों ने आँचल डाला और ले जा कर दुलहिन के मसनद पर बिठा दिया। डोमिनियों ने रीत-रस्म शुरू की। पहले आरसी की रस्म अदा की।

फ़ीरोज़ा—कहिए, 'बीबी, मुँह खोलो। मैं तुम्हारा गुलाम हूँ।'

नवाब—बीबी मुँह खोलो, मैं तुम्हारे गुलाम का गुलाम हूँ।

हशमत—जब तक हाथ न जोड़ोगे, मुँह न खोलेंगी।

मुबारक महल—ऊपर के दिल से गुलाम बनते हो, दिल से कहो तो आँखें खोल दें।

नवाब—या खुदा, अब और क्योंकर कहूँ, बीबी तुम्हारा गुलाम हूँ। खुदा के लिए ज़रा सूरत दिखा दो।

दूल्हा ने एक दफ़ा झूठ-मूठ गुल मचा दिया, वह आँखें खोलीं, सखियों ने कहा—झूठ कहते हो, कौन कहता है, आँख खोली।

डोमिनी—बेगम साहब, अब आँखें खोलिए, बेचारे गुलाम बनते-बनते थक गये। आप फकत आँख खोल दें। वह आपको देखें, आप चाहे उन्हें न देखें।

फ़ीरोज़ा—वाह, दूल्हा तो चाहे पीछे देखे, यह पहले ही घूर लेंगी।

आखिर सुरैया बेगम ने ज़रा सिर उठाया और नवाब साहब से चार आँखें होते ही शरमा कर गर्दन नीचे कर ली।

नवाब—कहिए, अब आँखें खोलीं या अब भी नहीं खोलीं ?

फ़ीरोज़ा—अभी नाहक आँखें खोलीं, जब कदमों पर टोपी रखते तब आँखें खोलतीं।

दूल्हा ने इक्कीस पान का बीड़ा खाया, पायजामे में एक हाथ से इज़ारबंद डाला और तब सास को सलाम किया। सास ने दुआ दी और गले में मोतियों का हार डाल दिया। अब मिश्री चुनवाने की रस्म अदा हुई। दुलहिन के कंधे, घुटने, हाथ वगैरह पर मिश्री के छोटे-छोटे टुकड़े रखे गये और दूल्हा ने झुक-झुकके खाये। सुरैया बेगम को गुदगुदी मालूम हो रही थी। सालियाँ दूल्हा को छेड़ रही थीं। किसी ने चुटकी ली, किसी ने गुद्दी पर हाथ फेरा, यह बेचारे इधर-उधर देख कर रह जाते थे।

जानी—फ़ीरोज़ा बेगम जैसी चरबाँक साली भी न देखी होगी।

नवाब—एक चरबाँक हो तो कहूँ, यहाँ तो जो है, आफ़त का परकाला है और फ़ीरोज़ा बेगम का तो कहना ही क्या, सवार को घोड़े पर से उतार लें।

फ़ीरोज़ा—क्या तारीफ़ की है, वाह-वाह !

जानी—क्या कुछ झूठ है ? तुम्हारी ज़बान क्या, कतरनी है !

फ़ीरोजा—और तुम अपनी कहो, दूल्हा को उसी वक़्त से घूर रही हो। उनकी नज़र भी पड़ती है तुम्हीं पर।

जानी—फिर पड़ा ही चाहे, पहले अपनी सूरत तो देखो।

फ़ीरोजा—सुरैया बेगम गाती खूब हैं और बताने में तो उस्ताद हैं, कोई कथक इनके सामने क्या नाचेगा, कहो एक घुँघरू बोले, कहो दोनों बोलें और तलवार पर तो ऐसा नाचती हैं कि बस, कुछ न पूछो।

जानी—सुना, किसी कथक ने दिल लगाके नाचना सिखाया है। नवाब साहब की चाँदी है, रोज मुफ्त का नाच देखेंगे।

हशमत—भई, इतनी बेहयाई अच्छी नहीं, हँसी-दिल्लगी का भी एक मौका होता है।

फ़ीरोजा—हमारी समझ ही में नहीं आता कि वह कौन सा मौक़ा होता है, बरात के दिन न हँसें-बोलें तो फिर किस दिन हँसें-बोलें?

इस तरह हँसी दिल्लगी में रात कट गयी। सबेरे चलने की तैयारियाँ होने लगीं। दुलहिन की माँ-बहनें सब की सब रोने लगीं। माँ ने समधिन से कहा—बहन, लौंडी देती हूँ, इस पर मिहरबानी की निगाह रहे। वह बोलीं—क्या कहती हो? औलाद से ज्यादा है। जिस तरह अपने लड़कों को समझती हूँ उसी तरह इसको भी समझूँगी। इसके बाद दूल्हा ने दुलहिन को गोद में उठा कर सुखपाल पर सवार किया। समधिनें गले मिल कर रुखसत हुईं।

जब बरात दूल्हा के घर पर आयी, तो एक बकरा चढ़ाया गया, इसके बाद कहारियाँ पालकी को उठा कर जनानी ड्योढ़ी पर ले गयीं। तब दूल्हा की बहन ने आ कर दुलहिन के पाँव दूध से धोये और तलवे में चाँदी के वरक़ लगाये। इसके बाद दूल्हा ने दुलहिन के दामन पर नमाज़ पढ़ी। फिर खीर आयी, पहले दुलहिन के हाथ पर रख कर दूल्हा को खिलायी गयी, फिर दूल्हा के हाथ पर खीर रखी गयी और दुलहिन से कहा गया कि खाओ, तो वह शरमाने लगी। आखिर दूल्हा की बहनों ने दूल्हा का हाथ दुलहिन के मुँह की तरफ़ बढ़ा दिया। इस तरह यह रस्म अदा हुई, फिर मुँह दिखावे की रस्म पूरी हुई और दूल्हा बाहर आया।

शाहजादा हुमायूँ फ़र की मौत जिसने सुनी, कलेजा हाथों से थाम लिया। लोगों का खयाल था कि सिपहआरा यह सदमा बरदाश्त न कर सकेगी और सिसक-सिसक कर शाहजादे की याद में जान दे देगी। घर में किसी की हिम्मत नहीं पड़ती थी कि सिपहआरा को समझाये या तसकीन दे, अगर किसी ने डरते-डरते समझाया भी तो वह और रोने लगती और कहती—क्या अब तुम्हारी यह मर्जी है कि मैं रोऊँ भी न, दिल ही में घुट-घुट कर मरूँ। दो-तीन दिन तक वह कब्र पर जा कर फूल चुनती रही, कभी कब्र को चूमती, कभी खुदा से दुआ माँगती कि ऐ खुदा, शाहजादे बहादुर की सूरत दिखा दे, कभी आप ही आप मुसकिराती, कभी कब्र की चट-चट बलाएँ लेती। एक आँख से हँसती, एक आँख से रोती। चौथे दिन वह अपनी बहनों के साथ वहाँ गयी। चमन में टहलते टहलते उसे आजाद की याद आ गयी। हुस्न-आरा से बोली—बहन, अगर दूल्हा भाई आ जायँ तो हमारे दिल को तसकीन हो। खुदा ने चाहा तो वह दो-चार दिन में आया ही चाहते हैं।

हुस्नआरा—अखबारों से तो मालूम होता है कि लड़ाई खत्म हो गयी।

सिपहआरा—कल मैं अम्माँजान को भी लाऊँगी।

एक उस्तानी जी भी उनके साथ थीं। उस्तानी जी से किसी फकीर ने कहा था कि जुमेरात के दिन शाहजादा जी उठेगा। और किसी को तो इस बात का यकीन न आता था, मगर उस्तानी जी को इसका पूरा यकीन था। बोलीं—कल नहीं, परसों बेगम साहब को लाना।

सिपहआरा—उस्तानी जी, अगर मैं यहीं दस-पाँच दिन रहूँ तो कैसा हो?

उस्तानी—बेटा, तुम हो किस फ़िक्र में! जुमेरात के दिन देखो तो, अल्लाह क्या करता है, परसों ही तो जुमेरात है, दो दिन तो बात करते कटते हैं।

सिपहआरा—खुशी का तो एक महीना भी कुछ नहीं मालूम होता, मगर रंज की एक रात पहाड़ हो जाती है। खैर, दो दिन और सही, शायद आप ही का कहना सच निकले।

हुस्नआरा—उस्तानी जी जो कहेंगी, समझ-बूझ कर कहेंगी। शायद अल्लाह को इस गम के बाद खुशी दिखानी मंजूर हो।

सिपहआरा ने कब्र पर चढ़ाने के लिए फूल तोड़ते हुए कहा—फूल तो दो-एक दिन हँस भी लेते हैं, मगर कलियाँ बिन खिले मुरझा जाती हैं, उन पर हमें बड़ा तरस आता है।

उस्तानी—जो खिले वे भी मुरझा गये, जो नहीं खिले वे भी मुरझा गये। इनसान का भी यही हाल है, आदमी समझता है कि मौत कभी आयेगी ही नहीं। मकान बनवाएगा तो सोचेगा कि हजार बरस तक इसकी बुनियाद ऐसी ही रहे, लेकिन

यह खबर ही नहीं कि 'सब ठाट पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बनजारा।' सबसे अच्छे वे लोग हैं जिनको न खुशी से खुशी होती है, न ग़म से ग़म।

हुस्नआरा—क्यों उस्तानी जी, आप को इस फ़कीर की बात का यकीन है?

उस्तानी—अब साफ़ साफ़ कह दूँ, आज के दूसरे दिन हुमायूँ फ़र यहाँ न बैठे हों तो सही।

हुस्नआरा—तुम्हारे मुँह में घी-शक्कर, कल भी कुछ दूर नहीं है, कल के बाद ही तो परसों आयेगा।

सिपहआरा—वाजीजान, मुझे तो ज़रा भी यक़ीन नहीं आता। भला आज तक किसी ने यह भी सुना है कि मुर्दा क़ब्र से निकल आया!

यह बात होती ही थी कि क़ब्र के पास से हँसी की आवाज़ आयी, सबको हैरत थी कि यह क़हक़हा किसने लगाया। किसी की समझ में यह बात न आयी।

दस बजते-बजते सब की सब घर लौट आयीं। यहाँ पहिले ही से एक शाह साहब बैठे हुए थे। चारों बहनों को देखते ही महरी ने आ कर कहा—हुज़ूर, यह बड़े पहुँचे हुए फ़क़ीर हैं, यह ऐसी बातें कहते हैं, जिनसे मालूम होता है कि शाहज़ादा साहब के बारे में लोगों को धोखा हुआ था। वह मरे नहीं हैं, बल्कि ज़िंदा हैं। उस्तानी जी ने शाह साहब को अंदर बुलाया और बोलीं—आपको इस वक्त बड़ी तकलीफ़ हुई, मगर हम ऐसी मुसीबत में गिरफ़्तार हैं कि खुदा सातवें दुश्मन को भी न दिखाये।

शाह साहब—खुदा की कारसाज़ी में दखल देना छोटा मुँह बड़ी बात है। मगर मेरा दिल गवाही देता है कि शाहज़ादा हुमायूँ फ़र ज़िंदा हैं। यों तो यह बात मुहाल मालूम होती है; लेकिन इनसान क्या, और उसकी समझ क्या, इतना तो किसी को मालूम ही नहीं कि हम कौन हैं, फिर कोई खुदा की बातों को क्या समझेगा!

उस्तानी—आप अभी तो यहीं रहेंगे?

शाह साहब—मैं उस वक़्त यहाँ से जाऊँगा, जब दूल्हा के हाथ में दुलहिन का हाथ होगा।

उस्तानी—मगर दुलहिन को तो इस बात का यकीन ही नहीं आता। आप कुछ कमाल दिखायें तो यकीन आये।

शाह साहब—अच्छा तो देखिए—

शाह साहब ने थोड़ी सी उरद मँगवायी और उस पर कुछ पढ़ कर ज़मीन पर फेंक दी। आध घंटा भी न गुज़रा था कि वहाँ की ज़मीन फट गयी।

बड़ी बेगम—अब इससे बढ़ कर क्या कमाल हो सकता है।

सिपहआरा—अम्मीजान, अब मेरा दिल गवाही देता है कि शायद शाह साहब ठीक कहते हों। (हुस्नआरा से) बाजी, अब तो आप फ़क़ीरों के कमाल की कायल हुईं।

उस्तानी—हाँ बेटा, इसमें शक क्या है। फ़क़ीरों का कोई आज तक मुक़ाबिला

कर सका है? वह लोग बादशाही की क्या हकीकत समझते हैं!

शाह साहब—फ़क़ीरों पर शक उन्हीं लोगों को होता है जो कामिल फ़क़ीरों की हालत से वाकिफ नहीं, वरना फ़क़ीरों ने मुर्दों को ज़िंदा कर दिया है, मंज़िलों से आपस में बातें की हैं और आगे का हाल बता दिया है।

बेगम साहब ने अपने रिश्तेदारों को बुलाया और यह खबर सुनायी। इस पर लोग तरह-तरह के शुबहे करने लगे। उन्हें यकीन ही न था कि मुर्दा कभी ज़िंदा हो सकता है।

दूसरे दिन बेगम साहब ने खूब तैयारियाँ कीं। घर भर में सिर्फ़ हुस्नआरा के चेहरे से रंज जाहिर होता था, बाक़ी सब खुश थे कि मुँह-माँगी मुराद पायी। हुस्नआरा को खौफ़ था, कहीं सिपहआरा की जान के लाले न पड़ जायँ।

तमाम शहर में यह खबर मशहूर हो गयी और जुमेरात को चार घड़ी दिन रहे से मेला जमा होने लगा। वह भीड़ हो गयी कि कंधे से कंधा छिलता था। लोगों में ये बातें हो रही थीं—

एक—मुझे तो यकीन है कि शाहज़ादे आज ज़िंदा हो जायँगे।

दूसरा—भला फ़क़ीरों की बात कहीं ग़लत होती है!

तीसरा—और ऐसे कामिल फ़क़ीर की!

चौथा—विंध्याचल पहाड़ की चोटी पर बरसों नीम की पत्तियाँ उबाल कर नमक के साथ खायी हैं। कसम खुदा की, इसमें ज़रा झूठ नहीं।

पाँचवाँ—सुल्तान अली की बहू तीन दिन तक खून थूका कीं, वैद्य भी आये, हकीम भी आये, पर किसी से कुछ न हुआ, तब मैं जाके इन्हीं शाह साहब को बुला लाया। जा कर एक नज़र उसको देखा और बोले, क्या ऐसा हो सकता है कि सब लोग वहाँ से हट जायँ, सिर्फ़ मैं और यह लड़की रहे। लड़की के बाप को शाह साहब पर पूरा भरोसा था। सब आदमियों को हटाने लगा। यह देख कर शाह साहब हँसे और कहा, इस लड़की को खून नहीं आता! यह तो बिलकुल अच्छी है। यह कह कर शाह साहब ने लड़की के सिर पर हाथ रखा, तब से आज तक उसे खून नहीं आया। फ़क़ीरों ही से दुनिया कायम है।

इतने में खबर हुई कि दुलहिन घर से रवाना हो गयी हैं। तमाशा देखनेवालों की भीड़ और भी ज्यादा हो गयी, उधर सिपहआरा बेगम ने घर से बाहर पाँव निकाला तो बड़ी बेगम ने कहा—खुदा ने चाहा तो आज फ़तह है, अब हमें जरा भी शक नहीं रहा।

सिपहआरा—अम्माँजान, बस अब इधर या उधर, या तो शाहज़ादे को लेके आऊँगी, या वहीं मेरी भी क़ब्र बनेगी।

बेगम—बेटी, इस वक़्त बदसगुनी की बातें न करो।

सिपहआरा—अम्माँजान, दूध तो बख्श दो; यह आखिरी दीदार है। बहन, कहा-सुना माफ़ करना, खुदा के लिए मेरा मातम न करना। मेरी तसवीर आबनूस

के संदूक में है, जब तुम हँसो-बोलो तो मेरी तसवीर भी सामने रख लिया करना। ऐ अम्मीजान, तुम रोती क्यों हो ?

बहार बेगम—कैसी बातें करती हो सिपहआरा, वाह !

रूहअफ़ज़ा—बहन, जो ऐसा ही है तो न जाओ।

बड़ी बेगम—हुस्नआरा, बहन को समझाओ।

हुस्नआरा की रोते-रोते हिचकी बँध गयी। मुश्किल से बोलीं—क्या समझाऊँ।

सिपहआरा—अम्मीजान, आपसे एक अर्ज़ है, मेरी क़ब्र भी शाहज़ादे की क़ब्र के पास ही बनवाना। जब तक तुम अपने मुँह से न कहोगी, मैं क़दम बाहर न रखूँगी।

बड़ी बेगम—भला बेटी, मेरे मुँह से यह बात निकलेगी ! लोगो, इसको समझाओ, इसे क्या हो गया है।

उस्तानी—आप अच्छा कह दें, बस।

सिपहआरा—मैं अच्छा-उच्छा नहीं जानती, जो मैं कहूँ वह कहिए।

उस्तानी—फिर दिल को मजबूत करके कह दो साहब।

बड़ी बेगम—ना, हमसे न कहा जायगा।

हुस्नआरा—बहन, जो तुम कहती हो वही होगा। अल्लाह वह घड़ी न दिखाये, बस अब हठ न करो।

सिपहआरा—मेरी क़ब्र पर कभी कभी आँसू बहा लिया करना बाजीजान। मैं सोचती हूँ कि तुम्हारा दिल कैसे बहलेगा।

यह कह कर सिपहआरा बहनों से गले मिली और सब की सब रवाना हुईं। जब सवारियाँ किले के फाटक पर पहुँचीं तो शाह साहब ने हुक्म दिया, कि दुलहिन घोड़े पर सवार हो कर अंदर दाखिल हो। बेगम साहब ने हुक्म दिया, घोड़ा लाया जाय। सिपहआरा घोड़े पर सवार हुई और घोड़े को उड़ाती हुई क़ब्र के पास पहुँच कर बोली—अब क्या हुक्म होता है ? खुद आओगे या हमको भी वहीं बुलाओगे। हम हर तरह राज़ी हैं।

सिपहआरा का इतना कहना था कि सामने रोशनी नज़र आयी। ऐसी तेज़ रोशनी थी कि सबकी नज़र झपक गयी और एक लहमे में शाहज़ादा हुमायूँ फर घोड़े पर सवार आते हुए दिखायी दिये। उन्हें देखते ही लोगों ने इतना गुल मचाया कि सारा किला गूँज उठा। सबको हैरत थी कि यह क्या माजरा है। वह मुर्दा जिसकी क़ब्र बन गयी हो और जिसको मरे हुए हफ्तों गुज़र गये हों, वह क्यों कर जी उठा।

हुस्नआरा और शाहज़ादे की बहन खुरशेद में बातें होने लगीं—

हुस्नआरा—क्या कहूँ, कुछ समझ में नहीं आता।

खुरशेद—हमारी अक्ल भी कुछ काम नहीं करती।

हुस्नआरा—तुम अच्छी तरह कह सकती हो कि हुमायूँ फर यही हैं ?

खुरशेद—हाँ साहब, यही हैं। यही मेरा भाई है।

और लोगों को भी यही हैरत हो रही थी। अकसर आदमियों को यक़ीन ही नहीं आता था कि यह शाहज़ादा है!

एक आदमी—भाई, खुदा की जात से कोई बात बईद नहीं। मगर यह सारी करामात शाह साहब की है।

तीसरा—जभी तो दुआ में इतनी ताकत है।

नवाब वजाहत हुसैन सुबह को जब दरबार में आये तो नींद से आँखें झुकी पड़ती थीं। दोस्तों में जो आता था, नवाब साहब को देख कर पहले मुसकिराता था। नवाब साहब भी मुसकिरा देते थे। इन दोस्तों में रौनकदौला और मुबारक हुसैन बहुत बेतकल्लुफ़ थे। उन्होंने नवाब साहब से कहा—भाई, आज चौथी के दिन नाच न दिखाओगे ? कुछ जरूरी है कि जब कोई तायफ़ा बुलवाया जाय तो वदी ही दिल में हो ! अरे साहब, गाना सुनिए, नाच देखिए, हँसिए, बोलिए, शादी को दो दिन भी नहीं हुए और हुजूर मुल्ला बन बैठे। मगर यह मौलवीपन हमारे सामने न चलने पायेगा। और दोस्तों ने भी उनकी हाँ में हाँ मिलायी। यहाँ तक कि मुबारक हुसैन जा कर कई तायफे बुला लाये, गाना होने लगा। रौनकदौला ने कहा—कोई फ़ारसी ग़ज़ल कहिए तो खूब रंग जमे।

हसीना—रंग जमाने की जिसको ज़रूरत हो वह यह फ़िक्र करे, यहाँ तो आके महफ़िल में बैठने भर की देर है। रंग आप ही आप जम जायगा। गा कर रंग जमाया तो क्या जमाया ?

रौनक़—हुस्न का भी बड़ा ग़रूर होता है, क्या कहना !

हसीना—होता ही है। और क्यों न हो, हुस्न से बढ़ कर कौन दौलत है !

बिगड़े दिल—अब आपस ही में दाना बदलौवल होगा या किसी की सुनोगी भी, अब कुछ गाओ।

रौनक़—यह ग़ज़ल शुरू करो—

> बहार आयी है भर दे बादये गुलगूँ से पैमाना,
> रहे साकी तेरा लाखों बरस आबाद मैखाना।

इतने में महलसरा से दूल्हा की तलबी हुई। नवाब साहब महल में गये तो दुलहिन और दूल्हा को आमने-सामने बैठाया गया। दस्तरख्वान बिछा, चाँदी की कमान रखी गयी, डोमिनियाँ आयीं और उन्होंने दुलहिन के दोनों हाथों में दूल्हा के हाथ से तरकारी दी, फिर दुलहिन के हाथों से दूल्हा को तरकारी दी, तब गाना शुरू किया।

अब तरकारियाँ उछलने लगीं। दूल्हा को साली ने नारंगी खींच मारी, हशमत बहू और जानी बेगम ने दूल्हा को बहुत दिक किया। आखिर दूल्हा ने भी झल्ला कर एक छोटी सी नारंगी फ़ीरोज़ा बेगम को ताक कर लगायी।

जानी बेगम—तो झेंप काहे की है। शरमाती क्या हो !

मुबारक महल—हाँ, शरमाने की क्या बात है, और है भी तो तुमको शर्म काहे की। शरमाये तो वह जिसको कुछ हया हो।

हशमत बहू—तुम भी फेंको फीरोज़ा बहन। तुम तो ऐसी शरमायीं कि अब हाथ ही नहीं उठता।

फ़ीरोज़ा—शरमाता कौन है, क्योंजी फिर मैं भी हाथ चलाऊँ ?

दूल्हा—शौक़ से हुजूर हाथ चलायें, अभी तक तो ज़बान ही चलती थी।

फ़ीरोजा—अब क्या जवाब दूँ, जाओ छोड़ दिया तुमको।

अब चारों तरफ़ से मेवे उछलने लगे। सब की सब दूल्हे पर ताक-ताक कर निशाना मारती थीं। मगर दूल्हा ने बस एक फ़ीरोजा को ताक लिया था, जो मेवा उठाया, उन्हीं पर फेंका। नारंगी पर नारंगी पड़ने लगी।

थोड़ी देर तक चहल-पहल रही।

फ़ीरोजा—ऐसे ढीठ दूल्हा भी नहीं देखे।

दूल्हा—और ऐसी चंचल बेगम भी नहीं देखी। अच्छा यहाँ इतनी हैं, कोई कह दे कि तुम जैसी शोख और चंचल औरत किसी ने आज तक देखी है ?

फ़ीरोजा—अरे, यह तुम हमारा नाम कहाँ से जान गये साहब ?

दूल्हा—आप मशहूर औरत हैं या ऐसी-वैसी। कोई ऐसा भी है जो आपको न जानता हो ?

फ़ीरोजा—तुम्हें कसम है, बताओ, हमारा नाम कहाँ से जान गये ?

मुबारक महल—बड़ी ढीठ हैं। इस तरह बातें करती हैं, जैसे बरसों की बेतकल्लुफ़ी हो।

फ़ीरोजा—ऐ तो तुमको इससे क्या, इसकी फिक्र होगी तो हमारे मियाँ को होगी, तुम काहे को काँपती जाती हो।

दूल्हा—आपके मियाँ से और हमसे बड़ा याराना है।

फ़ीरोजा—याराना नहीं वह है। वह बेचारे किसी से याराना नहीं रखते, अपने काम से काम है।

दूल्हा—भला बताओ तो, उनका नाम क्या है। नाम लो तो जानें कि बड़ी बेतकल्लुफ हो।

फ़ीरोजा—उनका नाम, उनका नाम है नवाब वजाहत हुसैन।

दूल्हा—बस, अब हम हार गये, खुदा की कसम, हार गये।

मुबारक महल—इनसे कोई जीत ही नहीं सकता। जब मर्दों से ऐसी बेतकल्लुफ़ हैं तो हम लोगों की बात ही क्या है, मगर इतनी शोखी नहीं चाहिए।

फ़ीरोजा—अपनी-अपनी तबीयत, इसमे भी किसी का इजारा है।

दूल्हा—हम तो आपसे बहुत खुश हुए, बड़ी हँस-मुख हो। खुदा करे, रोज दो-दो बातें हो जाया करें।

जब सब रस्में हो चुकीं तो और औरतें रुखसत हुईं। सिर्फ दूल्हा और दुलहिन रह गये।

नवाब—फ़ीरोज़ा बेगम तो बड़ी शोख मालूम होती हैं। बाज-बाज मौके पर मैं शरमा जाता था, पर वह न शरमाती थीं। जो मेरी बीबी ऐसी होती तो मुझसे दम भर न बनती। ग़ज़ब खुदा का ! गैर-मर्द से इस बेतकल्लुफी से बातें करना बुरा है।

तुमने तो पहले इन्हें काहे को देखा होगा।

सुरैया—जैसे मुफ़्त की माँ मिल गयी और मुफ्त की बहनें बन बैठीं, वैसे ही यह भी मुफ्त मिल गयीं।

नवाब—मुझे तो तुम्हारी माँ पर हँसी आती थी कि बिलकुल इस तरह पेश आती थीं जैसे कोई खास अपने दामाद के साथ पेश आता है।

सुरैया—आप भी तो फ़ीरोजा बेगम को खूब घूर रहे थे।

नवाब—क्यों मुफ़्त में इल्जाम लगाती हो, भला तुमने कैसे देख लिया?

सुरैया—क्यों? क्या मुझे कम सूझता है?

नवाब—गरदन झुकाये दुलहिन बनी तो बैठी थीं, कैसे देख लिया कि मैं घूर रहा था? और ऐसी खूबसूरत भी तो नहीं हैं।

सुरैया—मुझसे खुद उसने कसमें खा कर यह बात कही। अब सुनिए, अगर मैंने सुन पाया कि आपने किसी से दिल मिलाया, या इधर-उधर सैर सपाटे करने लगे तो मुझसे दम भर भी न बनेगी।

नवाब—क्या मजाल, ऐसी बात है भला!

सुरैया—हाँ, खूब याद आया, भूल ही गयी थी। क्यों साहब, यह नारंगियाँ खींच मारना क्या हरकत थी? उनकी शोखी का ज़िक्र करते हो और अपनी शरारत का हाल नहीं कहते।

नवाब—जब उसने दिक़ किया तो मैं भी मजबूर हो गया।

सुरैया—किसने दिक किया? वह भला बेचारी क्या दिक करती तुमको! तुम मर्द और वह औरतज़ात।

नवाब—अजी, वह सवा मर्द है। मर्द उसके सामने पानी भरे।

सुरैया—तुम भी छटे हुए हो!

उसी कमरे में कुछ अखबार पड़े थे, सुरैया बेगम की निगाह उन पर पड़ी तो बोलीं—इन अखबारों को पढ़ते-पढ़ाते भी हो या यों ही रख छोड़े हैं।

नवाब—कभी-कभी देख लेता हूँ। यह देखो, ताज़ा अखबार है। इसमें आज़ाद नाम के एक आदमी की खूब तारीफ छपी है।

सुरैया—ज़रा मुझे तो देना, अभी दे दूँगी।

नवाब—पढ़ रहा हूँ, ज़रा ठहर जाओ।

सुरैया—और हम छीन लें तो! अच्छा जोर-ज़ोर से पढ़ो, हम भी सुनें।

नवाब—उन्होंने तो लड़ाई में एक बड़ी फ़तह पायी है।

सुरैया—सुनाओ-सुनाओ। खुदा करें, वह सुर्खरू हो कर आयें।

नवाब—तुम इनको कहाँ से जानती हो, क्या कभी देखा है।

सुरैया—वाह, देखने की अच्छी कही। हाँ, इतना सुना है कि तुर्कों की मदद करने के लिए रूम गये थे।

शाहजादा हुमायूँ फ़र के जी उठने की खबर घर-घर मशहूर हो गयी। अखबारों में इसका जिक्र होने लगा। एक अखबार ने लिखा, जो लोग इस मामले में कुछ शक करते हैं उन्हें सोचना चाहिए कि खुदा के लिए किसी मुर्दे को जिला देना कोई मुश्किल बात नहीं। जब उनकी माँ और बहनों को पूराय कीन है तो फिर शक की गुंजाइश नहीं रहती।

दूसरे अखबार ने लिखा......हम देखते हैं कि सारा जमाना दीवाना हो गया है। अगर सरकार हमारा कहना माने तो हम उसको सलाह देंगे कि सबको एक सिरे से पागलखाने भेज दे। गजब खुदा का, अच्छे-अच्छे पढ़े आदमियों को पूरा यकीन है कि हुमायूँ फर जिंदा हो गये। हम इनसे पूछते हैं, यारो, कुछ अक्ल भी रखते हो। कहीं मुर्दे भी जिंदा होते हैं! भला कोई अक्ल रखनेवाला आदमी यह बात मानेगा कि एक फकीर की दुआ से मुर्दा जी उठा। कब्र बनी की बनी ही रही और हुमायूँ फ़र बाहर मौजूद हो गये। जो लोग इस पर यकीन करते हैं उनसे ज्यादा अहमक कोई नहीं। हम चाहते हैं कि सरकार इस मामले में पूरी तहकीकात करे। बहुत मुमकिन है कि कोई आदमी शाहजादी बेगम को बहका कर हुमायूँ फर बन बैठा हो। जिसके मानी यह हैं कि वह शाहजादी बेगम की जायदाद का मालिक हो गया।

जिले के हुक्काम को भी इस मामले में शक पैदा हुआ। कलक्टर ने पुलिस के कप्तान को बुला कर सलाह की कि हुमायूँ फर से मुलाकात की जाय। यह फैसला करके दोनों घोड़े पर सवार हुए और दम में शाहजादी बेगम के मकान पर जा पहुँचे। हुमायूँ फर के भाई ने सबसे हाथ मिलाया और इज्जत के साथ बैठाया। जनाने में खबर हुई तो शाहजादी बेगम ने कहा—हम शाह साहब के हुक्म के बगैर हुमायूँ फ़र को बाहर न जाने देंगे।

लेकिन जब शाह साहब से पूछा गया तो उन्होंने साफ कह दिया कि हुमायूँ फर महलसरा से बाहर नहीं निकल सकते। वह बाहर आये और मैंने अपना रास्ता लिया। हाँ, साहब को जो कुछ पूछना हो, लिख कर पूछ सकते हैं। आखिर हुमायूँ फ़र ने साहब के नाम पर एक रुक्का लिख कर भेजा। साहब ने अपनी जेब से हुमायूँ फर का एक पुराना खत निकाला और दोनों खतों को एक सा पा कर बोले—अब तो मुझे भी यकीन आ गया कि यह शाहजादा हुमायूँ फर ही हैं, मगर समझ में नहीं आता, वह फ़कीर क्यों उन्हें हमसे मिलने नहीं देता। आखिर उन्होंने हुमायूँ फर के भाई से पूछा, आपको खूब मालूम है कि हुमायूँ फ़र यही हैं? लड़का हँस कर बोला—आप को यकीन ही नहीं आता तो क्या किया जाय, आप खुद चल कर देख लीजिए।

शाहज़ादी बेगम ने जब देखा कि हुक्काम टाले न टलेंगे तो उन्होंने शाहज़ादा को एक कमरे में बैठा दिया। हुक्काम बरामदे में बैठाये गये। साहब ने पूछा—वेल शाहज़ादा हुमायूँ फ़र, यह सब क्या बात है?

शाहज़ादा—ख़ुदा के कारखाने में किसी को दखल नहीं।

साहब—आप शाहजादा हुमायूँ फ़र ही हैं या कोई और?

शाहज़ादा—क्या खूब, अब तक शक है?

साहब—हमने आपको कुछ दिया था, आपने पाया या नहीं?

शाहजादा—मुझे याद नहीं। आखिर वह कौन चीज़ थी?

साहब—याद कीजिए।

साहब ने हुमायूँ फ़र से और कई बातें पूछीं, मगर वह एक का भी जवाब न दे सके। तब तो साहब को यकीन हो गया कि यह हुमायूँ फ़र नहीं है।

१०१

आज़ाद पाशा को इस्कंदरिया में कई दिन रहना पड़ा। हैजे की वजह से जहाजों का आना-जाना बंद था। एक दिन उन्होंने खोजी से कहा—भाई, अब तो यहाँ से रिहाई पाना मुश्किल है।

खोजी—खुदा का शुक्र करो कि बचके चले आये, इतनी जल्दी क्या है?

आजाद—मगर यार, तुमने वहाँ नाम न किया, अफ़सोस की बात है।

खोजी—क्या खूब, हमने नाम नहीं किया तो क्या तुमने नाम किया? आखिर आपने क्या किया, कुछ मालूम तो हो, कौन गढ़ फ़तह किया, कौन लड़ाई लड़े! यहाँ तो दुश्मनों को खदेड़-खदेड़ के मारा। आप बस मिसों पर आशिक हुए, और तो कुछ नहीं किया।

आजाद—आप भी तो बुआ ज़ाफ़रान पर आशिक हुए थे!

मीडा—अजी, इन बातों को जाने दो, कुछ अपने मुल्क के रईसों का हाल बयान करो, वहाँ कैसे रईस हैं?

खोजी—बिल्कुल तबाह, फटे हाल, अनपढ़, उनके शौक़ दुनिया से निराले हैं। पतंगबाजी पर मिटे हुए, तरह तरह के पतंग बनते हैं, गोल, माहीजाल, माँगदार, मेढ़िया, तौकिया, खरबूजिया, लँगोटिया, तुक्कल, ललपत्ता, कलपत्ता। दस-दस अशर्फ़ियों के पेंच होते हैं। तमाशाइयों की वह भीड़ होती है कि खुदा की पनाह! पतंगबाज अपने फ़न के उस्ताद। कोई ढील लड़ाने का उस्ताद है, कोई घसीट लड़ाने का यकता। इधर पेंच पड़ा, उधर गोता देते ही कहा, वह काटा! लूटने-वालों की चाँदी है। एक-एक दिन में दस-दस सेर डोर लूटते हैं।

आजाद—क्यों साहब, यह कोई अच्छी आदत है?

खोजी—तुम क्या जानो, तुम तो किताब के कीड़े हो। सच कहना, पतंग लड़ाया है कभी?

आजाद—हमने पतंग की इतनी किस्में भी नहीं सुनी थीं।

खोजी—इसी से तो कहता हूँ, जाँगलू हो। भला पेटा जानते हो, किसे कहते हैं?

आज़ाद—हाँ हाँ, जानता क्यों नहीं, पेटा इसी को कहते हैं न कि किसी की डोर तोड़ ली जाय।

खोजी—भई, निरे गाउदी हो।

मीडा—अच्छा बोलो, करते क्या हैं, क्या सारा दिन पतंग ही उड़ाया करते हैं?

खोजी—नहीं साहब, अफ़ीम और चंडू कसरत से पीते हैं।

आजाद—और कबूतरबाजी का तो हाल बयान करो।

क्लारिसा—हमने सुना है कि हिंदोस्तान की औरतें बिलकुल जाहिल होती हैं।

आजाद—मगर हुस्नआरा को देखो तो खुश हो जाओ।

क्लारिसा—हम तो बेशक खुश होंगे, मगर खुदा जाने, वह हमको देख कर खुश होती हैं या नहीं।

मीडा—नहीं, उम्मेद नहीं कि हम दोनों को देख कर खुश हों। जब हमको और तुमको देखेंगी तो उनको बड़ा रंज होगा।

क्लारिसा—मुझे क्यों नाहक बदनाम करती हो, मुझे आज़ाद से मतलब? मैं तुम्हारी तरह किसी पर फिसल पड़नेवाली नहीं।

मीडा—जरा होश की बातें करो। जब उन्होंने करोड़ों बार नाक रगड़ी तब मैंने मंजूर किया। वरना इनमें है क्या? न हसीन, न जवान, न रँगीले।

खोजी— और हम? हमको क्या समझती हो आखिर?

मीडा—तुम बड़े तरहदार जवान हो। और तो और, डील डौल में तो कोई तुम्हारा सानी नहीं।

आजाद—हम भी किसी जमाने में ख्वाजा साहब की तरह शहज़ोर थे, मगर अब वह बात कहाँ, अब तो मरे-बूढ़े आदमी हैं।

खोजी—अजी अभी क्या है, जवानी में हमको देखिएगा।

आजाद—आपकी जवानी शायद कब्र में आयेगी।

खोजी—अजी, क्या बकते हो, अभी हमें शादी करनी है भाई।

मीडा—तुम मिस क्लारिसा के साथ शादी कर लो।

क्लारिसा—आप ही को मुबारक रहें।

आजाद—भई, यहाँ तुम्हारी शादी हो जाय तो अच्छी बात है, नहीं तो लोगों को शक होगा कि इन्हें किसी ने नहीं पूछा।

खोजी—वल्लाह, यह तो तुमने एक ही सुनायी। अब हमें शादी की जरूरत आ पड़ी।

आजाद—मगर तुम्हारे लिए तो कोई खूबसूरत चाहिए जिस पर सबकी निगाह पड़े।

खोजी—जी हाँ, जिसमें आपको भी घूरा-घारी करने का मौका मिले। यहाँ ऐसे अहमक़ नहीं हैं। जोरू के मामले में बंदा किसी से याराना नहीं रखता।

आजाद तो सैर करने चले गये। खोजी ने मिस क्लारिसा से कहा—हमारे लिए कोई ऐसी बीबी ढूँढ़ो जिस पर सारी दुनिया के शाहजादे जान देते हों। आजाद का खटका जरूर है, यह आदमी भाँजी मारने से बाज न आयेगा। यह तो इसकी आदत में दाखिल है कि जो औरत हमारे ऊपर रीझेगी उसको बहकायेगा। लेकिन यह भी जानता हूँ कि जो औरत एक बार हमें देख लेगी, उसे आजाद क्या, आज़ाद के बाप भी न बहका सकेंगे। मुझे देख-देख कर यह हज़रत जला करते हैं।

क्लारिसा—आजाद तुम्हारी सी जवानी कहाँ से लायें।

खोजी—बस-बस, खुदा तुमको सलामत रखे। खुदा करे, तुमको मेरा सा शौहर मिले। इससे ज्यादा और क्या दुआ दूँ।

क्लारिसा—कहीं तुम्हारी शामत तो नहीं आयी है?

खोजी—क्यों, क्या हुआ? आखिर हममें कौन बात नहीं है, कुछ मालूम हो, अंधा हूँ, काना हूँ, लूला हूँ, लँगड़ा हूँ। आखिर मुझमें कौन सी बात नहीं है?

क्लारिसा—पहले जा कर मुँह बनवाओ। चले हैं हमारे साथ शादी करने, कुछ पागल तो नहीं हो गये हो?

खोजी—पागल! ठीक, मेरे पागलपने का हाल मिस्र, अदन, रूम, हिंदोस्तान की औरतों से जा कर पूछ लो, आखिर कुछ देख कर ही तो वह सब मुझ पर आशिक हुई थीं।

इतने में मियाँ आजाद ने आ कर पूछा—क्या बातें हो रही हैं? क्लारिसा, तुम इनके फेर में न आना। यह बड़े चालाक आदमी हैं। यह बातों ही बातों में अपना रंग जमा लेते हैं।

खोजी—खैर, अब तो तुमने इनसे कह ही दिया, वरना आज ही शादी होती। खैर, आज नहीं, कल सही। बिना शादी किये तो अब मानता नहीं।

क्लारिसा—तो आप अपने को इस काबिल समझने लगे?

खोजी—काबिल के भरोसे न रहिएगा। मेरी जबान में जादू है।

आजाद—तुम्हारे लिए तो बुआ जाफरान की सी औरत चाहिए।

खोजी—अगर मिस क्लारिसा ने मंजूर न किया तो और कहीं शिप्पा लगायेंगे। मगर मुझे तो उम्मेद है कि मिस क्लारिसा आजकल में जरूर मंजूर कर लेंगी।

आज़ाद—अजी, मैंने तुम्हारे लिए वह औरत तलाश कर रखी है कि देख कर फड़क उठो, वह तुम पर जान देती है। बस, कल शादी हो जायगी।

खोजी बहुत खुश हुए। दूसरे दिन आजाद ने एक गाड़ी मँगवायी। आप दोनों मिसों के साथ गाड़ी में बैठे, खोजी को कोच-बक्स पर बैठाया और शादी करने चले। खोजी ऊपर से हटो-बचो की हाँक लगाते जाते थे। एक जगह एक बहरा गाड़ी के सामने आ गया। यह गुल मचाते ही रहे और गाड़ी उसके कल्ले पर पहुँच गयी। आप बहुत ही बिगड़े, भला बे गीदी, अब और कुछ बस न चला तो आज जान देने आ गया।

आजाद—क्या है भाई, खैरियत तो है?

खोजी—अजी, आज वह बहुरूपिया नया भेष बदल कर आया, हम गला फाड़-फाड़ कर चिल्ला रहे हैं और वह सुनता ही नहीं। तब मैं समझा कि हो न हो बहुरूपिया है। गाड़ी के सामने अड़ जाने से उसका मतलब था कि हमें पकड़ा दे। वह तो दो-चार दिन में लोट-पोट के चंगा हो जाता, मगर हमारी गाड़ी पकड़ जाती। अब पूछो कि तुमको क्या फिक्र है, हम लोग भी तो सवार हैं। इसका जवाब हमसे सुनिए। मिसें तो औरत बन कर छूट जातीं, रहे हम और तुम। तो जिसकी नजर पड़ती, हमी पर पड़ती। तुमको लोग खिदमतगार समझते, हम रईस के धोखे में घर लिये जाते। बस, हमारे माथे जाती।

इतने में दस-ग्यारह दुम्बे सामने से आये। खोजी ने चरवाहे को उस तीसी

चितवन से देखा कि खा ही जायँगे। उसे इनका कैंड़ा देख कर हँसी आ गयी। बस आप आग ही तो हो गये। कोचवान को डाँट बतायी—रोक ले, रोक ले।

आजाद—अब क्या मुसीबत पड़ी!

खोजी—इस बदमाश से कहो बाग रोक ले, मैं उस चरवाहे को सज़ा दे आऊँ-तो बात करूँ। बदमाश मुझे देख कर हँस दिया, कोई मसखरा समझा है।

आजाद—कौन था, कौन, ज़रा नाम तो सुनूँ।

खोजी—अब राह चलते का नाम मैं क्या जानूँ। कहिए, उटक्करलैस कोई नाम बता दूँ। मुझे देखा तो हँसे आप, मेरी आँखों में खून उतर आया।

आजाद—अरे यार, तुम्हें देख कर, मारे खुशी के हँस पड़ा होगा।

खोजी—भई, तुमने सच कहा, यही बात है।

आजाद—अब बताओ, हो गये कि नहीं, जो मैं न समझाता तो फिर!

खोजी—फिर क्या, एक बेगुनाह का खून मेरी गरदन पर होता।

एकाएक कोचवान ने गाड़ी रोक ली। खोजी घबरा कर कोच-बक्स से उतरे तो पायदान से दामन अटका और मुँह के बल गिरे, मगर जल्दी से झाड़-पोंछ कर उठ खड़े हुए। आज़ाद और दोनों औरतें हँसने लगीं।

आजाद—अजी, गर्द-वर्द पोंछो, ज़रा आदमी बनो। जो दुलहिनवाले देख लें तो कैसी हो!

खोजी—अरे यार, गर्द-वर्द तो झाड़ चुका, मगर यह तो बताओ कि यह किसकी शरारत है, मैं तो समझता हूँ, वही बहुरूपिया मेरी आँखों में धूल झोंक कर मुझे घसीट ले गया। खैर, शादी हो ले। फिर बीबी की सलाह से बदमाश को नीचा दिखाऊँगा।

आजाद तो दोनों मिसों के साथ गाड़ी से उतरे और खोजी की ससुराल के दरवाजे पर आये। खोजी गाड़ी के अंदर बैठे रहे। जब अंदर से आदमी उन्हें बुलाने आया तो उन्होंने कहा—उनसे कह दो, मेरी अगवानी करने के लिए किसी को भेज दें।

आज़ाद ने अंदर जा कर एक पँचहत्थी मोटी-ताजी औरत भेज दी। उसने आव देखा न ताव, खोजी को गाड़ी से उतारा और गोद में उठा कर अंदर ले चली। खोजी अभी सँभलने न पाये थे कि उसने उन्हें ले जा कर आँगन में दे मारा और ऊपर से दबाने लगी। खोजी चिल्ला चिल्ला कर कहने लगे—अम्मोंजान, माफ़ करो, ऐसी शादी पर खुदा की मार, मैं क्वाँरा ही रहूँगा।

आजाद—क्या है भई, यह रो क्यों रहे हो?

खोजी—कुछ नहीं भाईजान, जरा दिल्लगी हो रही थी।

आज़ाद—अम्मोंजान का लफ्ज़ किसी ने कहा था?

खोजी—तो यहाँ तुम्हारे सिवा हिंदोस्तानी और कौन है।

आज़ाद—और आप कहाँ के रहनेवाले हैं!

खोजी—मैं तुर्क हूँ।

आज़ाद—अच्छा, जा कर दुलहिन के पास बैठो। वह कब से गरदन झुकाये बैठी है बेचारी, और आप सुनते ही नहीं।

खोजी ऊपर गये तो देखा, एक कोने में दुशाला ओढ़े दुलहिन बैठी है। आप उसके करीब जा कर बैठ गये। क्लारिसा और मीडा भी जरा फ़ासले पर बैठी थीं। ख्वाजा साहब दून की लेने लगे। हमारे अब्बाजान सैयद थे और अम्मीजान काबुल के एक अमीर की लड़की थीं। उनके हाथ-पाँव अगर आप देखतीं तो डर जातीं। अच्छे-अच्छे पहलवान उनका नाम सुन कर कान पकड़ते थे। सीना शेर का सा था, कमर चीते की सी, रंग बिलकुल जैसे सलजम, आँखों में खून बरसता था। एक दफ़े रात को घर में चोर आया, मैं तो मारे डर के सन्नाटा खींचे पड़ रहा, मगर वाह री अम्मीजान, चोर की आहट पाते ही उस बदमाश को जा पकड़ा। मैंने पुकार कर कहा, अम्मीजान, जाने न पाये, मैं भी आ पहुँचा। इतने में अब्बाजान की आँख खुल गयी। पूछा—क्या है? मैंने कहा—अम्मीजान से और एक चोर से पकड़ हो रही है। अब्बाजान बोले—तो फिर दबके पड़े रहो, उसने चोर को कत्ल कर डाला होगा। मैं जो जाके देखता हूँ तो लाश फड़क रही है। जनाब, हम ऐसों के लड़के हैं।

आजाद—तभी तो ऐसे दिलेर हो, सुअरों के सुअर ही होते हैं।

खोजी—(हँस कर) मिस क्लारिसा हमारी बातों पर हँस रही हैं। अभी हम इनकी नजरों में नहीं जँचते।

आजाद—दुलहिन आज बहुत हँसती हैं। बड़ी हँसमुख बीवी पायी।

खोजी—उर्दू तो यह क्या समझती होंगी।

आज़ाद—आप भी बस चोंगा ही रहे। अरे बेवकूफ़, इन्हें हिंदी-उर्दू से क्या ताल्लुक।

खोजी—बड़ी खराबी यह है कि यहाँ जिस गली-कूचे में निकल जायँ, सबकी नजर पड़ा चाहे और लोग मुझसे जला ही चाहें, इसको मैं क्या करूँ। अगर इनको सैर कराने साथ न ले चलूँ तो नहीं बनती, ले चलूँ तो नहीं बनती। कहीं मुझ पर किसी परीछम की निगाह पड़े और वह घूर-घूर कर देखे, तो यह समझें कि कोई खास वजह है। अब कहिए, क्या किया जाय?

आज़ाद—दुलहिन मुँह बंद किये क्यों बैठी हैं, नाक की तो खैर है?

खोजी—क्या बकते हो मियाँ, मगर अब मुझे भी शक हो गया, तुम लोग जरा समझा दो भाई की नाक दिखा दें।

मिस क्लारिसा ने दुलहिन को समझाया, तो उसने चेहरे को छिपा कर जरा सी नाक दिखा दी। खोजी ने जा कर नाक को छूना चाहा तो उसने इस जोर के चपत दी कि खोजी बिलबिला उठे।

आज़ाद—खुदा की कसम, बड़े बेअदब हो।

खोजी—अरे मियाँ, जाओ भी। यहाँ होश बिगड़ गये, तुमको अदब की पड़ी है, मगर यार, यह बुरा सगुन हुआ।

आजाद—अरे गाउदी, यह नखरे हैं, समझा।

खोजी—(हँस कर) वाह रे नखरे!

आजाद—अच्छा भाई, तुम कभी लड़ाई पर भी गये हो?

खोजी—उँह, कभी की एक ही कही, क्या नन्हें बने जाते हैं? अरे मियाँ, शाही में गुलचले मशहूर थे, अब भी जो चाँदमारी हुई, उसमें हमी बीस रहे।

आजाद—मिस मीडा हँस रही हैं, गोया तुम झूठे हो।

खोजी—यह अभी छोकरी हैं, यह बातें क्या जानें। अब्बाजान को खुदा बख्शे। दो ऐसे गुर बता गये हैं जो हर जगह काम आते हैं। एक तो यह कि जब किसी से लड़ाई हो तो पहला वार खुद करना, बात करते ही चाँटा देना।

आजाद—आप तो कई जगह इस नसीहत को काम में ला चुके हैं। एक तो बुआ जाफ़रान पर हाथ उठाया था। दूसरे जैनब की नाक में दम कर दिया था।

खोजी—अब मैं अपना सिर पीट लूँ, क्या करूँ! जिस-जिस जगह अपनी भलमनसी से शरमिंदा हुआ था, उन्हीं का जिक्र करते हो। वह तो कहिए, खैरियत है कि दुलहिन उर्दू नहीं समझतीं, वरना नजरों से गिर जाता।

यह फ़िकरा सुन कर दुलहिन मुसकिरायीं तो ख्वाजा साहब अकड़ कर बोले—वल्लाह, वह हँसमुख बीबी पायी है कि जी खुश हो गया। बात नहीं समझती, मगर हँसने लगती है। भई, जरा आँखे भी देख लेना।

आजाद—जनाब, दोनों आँखें हैं और बिलकुल हाथी की सी!

खोजी—बस यही मैं चाहता हूँ, वह क्या जिसकी बड़ी-बड़ी आँखें हों! तारीफ यह है कि जरा-जरा सी आँखे हो और हँसने के वक़्त बिलकुल बंद हो जायँ, मगर यार, गला कैसा है?

आजाद—ऐं, क्या हिंदोस्तान मे गाने की तालीम दोगे?

खोजी—ऐ है, समझते तो हो ही नहीं, मतलब यह कि गरदन लम्बी है या छोटी? पहले समझ लो, फिर एतराज जड़ो।

आजाद—गरदन, सिर और धड़ सब सपाट है।

खोजी—यह क्या, तो क्या, छोटी गरदन की तारीफ़ है?

आजाद—और क्या, सुना नहीं, 'छोटी गरदन, तंग पेशानी, हसीन औरत की यही निशानी।' क्या महावरे भी भूल गये?

खोजी—महावरे कोई हमसे सीखे, आप क्या जानें, मगर खुदा के लिए जरा मुझसे अदब से बातें कीजिए, वरना यहाँ मेरी किरकिरी होगी। और यह आप उनके क़रीब क्यों बैठे हैं, हटके बैठिए जरा।

आजाद—क्यों साहब, आप अपनी ससुराल में हमारी बेइज्जती करते हैं? अच्छा! खैर, देखा जायगा।

खोजी—आप तो दिल्लगी में बुरा मान जाते हैं और मेरी आदत कमबख्त ऐसी खराब है कि बेचुहल किये रहा नहीं जाता।

आजाद—खैर चलो, होगा कुछ। मगर यार, यहाँ एक अजीब रस्म है, दुलहिन अपने दूल्हा के दोस्तों से हँस-हँस कर बात करती है।

खोजी—यह तो बुरी बात है, कसम ख़ुदा की, अगर तुमने इनसे एक बात भी की होगी तो करौली ले कर अभी-अभी काम तमाम कर दूँगा।

आज़ाद—सुन तो लो, जरा सुनो तो सही।

खोजी—अजी बस, सुन चुके। इस वक़्त आँखों में खून उतर आया, ऐसी दुलहिन की ऐसी-तैसी, और कैसी दबकी-दबकायी बैठी हैं, गोया कुछ जानती ही नहीं।

आज़ाद—हर मुल्क की रस्म अलग-अलग है। इसमे आप ख्वाहमख्वाह बिगड़ रहे हैं।

खोजी—तो आप आँखें क्या दिखाते हैं? कुछ आपका मुहताज या गुलाम हूँ? लूट का रुपया मेरे पास भी है, यहाँ से हिंदुस्तान तक अपनी बीबी के साथ जा सकता हूँ। अब आप तो जायें, मैं जरा इनसे दो-दो बातें कर लूँ, फिर शादी की राय पीछे दी जायगी।

आजाद उठने ही को थे कि दुलहिन ने पाँव से दामन दबा दिया।

आजाद—अब बताओ, उठने नहीं देतीं, मैं क्या करूँ।

खोजी—(डपट कर) छोड़ दो।

आजाद—छोड़ दो साहब, देखो तुम्हारे मियाँ खफा होते हैं।

खोजी—अभी मुझे मियाँ न कहिए, शादी-ब्याह नाज़ुक मामला है।

आजाद—पहले आपकी इनसे शादी हो जाय, फिर अगर बंदा आँख उठाके देखे तो गुनहगार।

खोजी—अच्छा मंजूर, मगर इतना समझा देना कि यह बड़े कड़े खाँ हैं, नाक पर मक्खी भी नहीं बैठने देते। मगर आप क्यों समझायेंगे। मैं खुद ही क्यों न कह दूँ। सुनो बी साहब, हमारे साथ चलती हो तो दो शर्तें माननी होंगी। एक यह कि किसी गैर आदमी को सूरत न दिखाओ। दूसरी यह कि मुझे जो कोई औरत देखती है, पहरों घूरा करती है, टकटकी बँध जाती है। ऐसा न हो कि तुम्हें सौतिया डाह होने लगे। भई आजाद, जरा इनको इनकी जबान में समझा दो।

आजाद—आप जरा एक मिनट के लिए बाहर चले जाइए, तो मैं सब बातें समझा दूँ।

खोजी—जी, दुरुस्त, यह भरें लौंडों को दीजिएगा, आप ऐसे छोकड़े मेरी जेब में पड़े हैं। और सुनिए, क्या उल्लू समझा है! अब तुम जाओ, हम इनसे दो-दो बात कर लें।

आजाद बाहर चले गये तो खोजी पलँग पर दुलहिन के पास बैठे और बोले—

भई, अब तो घूँघट उठा लो, जब हम तुम्हारे हो चुके तो हमसे क्या शर्म, क्यों तरसाती हो?

जब दुलहिन ने अब भी घूँघट न खोला तो खोजी ज़रा और आगे खिसक गये—जानमन, इस वक़्त शर्म को भून खाओ, क्यो तरसाती हो, अरे, अब कब लग तरसाये रखियो जी! कब लग तरसाये रखियो जी!

दो-तीन मिनट तक खोजी ने गा-गा कर रिझाया मगर जब यों भी दुलहिन ने न माना तो आपने उसके घूँघट की तरफ़ हाथ बढ़ाया। एकाएक दुलहिन ने उनका हाथ पकड़ लिया। अब आप लाख ज़ोर मारते हैं, मगर हाथ नहीं छूटता। तब आप ख़ुशामद की बातें करने लगे। छोड़ दो भाई, भला किसी ग़रीब का हाथ तोड़ने से तुम्हें क्या मिलेगा। और यह तो तुम जानती हो कि मैं तुमसे ज़ोर न करूँगा। फिर क्यों दिक़ करती हो, मेरा तो कुछ न बिगड़ेगा, मगर तुम्हारे मुलायम हाथ दुखने लगेंगे।

यह कह कर खोजी दुलहिन के पैरों पर गिर पड़े और टोपी उतार कर उसके क़दमों पर रख दी। उनकी हरकत पर दुलहिन को हँसी आ गयी।

खोजी—वह हँसी आयी, नाक पर आयी, बस अब मार लिया है, अब इसी बात पर गले लग जाओ।

दुलहिन ने हाथ फैला दिये। खोजी गले मिले तो दुलहिन ने इतने ज़ोर से दबाया कि आप चीख पड़े। छोड़ दो, छोड़ दो, चोट आ जायगी। मगर अब की दुलहिन ने उन्हें उठा कर दे मारा और छाती पर सवार हो गयी। मियाँ खोजी अपनी बदनसीबी पर रोने लगे। इनको रोते देख कर उसने छोड़ दिया, तब आप सोचे कि बिला अपनी जवाँमरदी दिखाये, इस पर रोब न जमेगा। बहुत होगा, मार डालेगी, और क्या। आपने कपड़े उतारे और पैंतरा बदल कर बोले—सुनो जी, हम शाहज़ादे हैं। तलवार के धनी, बात के शूर, नाक पर मक्खी बैठ जाय तो तलवार से नाक उड़ा दें, समझीं? अब तक मैं दिल्लगी करता था। तुम औरत, मैं मर्द, अगर अब की तुमने ज़रा भी गुस्ताख़ी की तो आग हो जाऊँगा। ले अब घूँघट उठा दो, वरना ख़ैरियत नहीं है। यह कहीं ऊँचा तो नहीं सुनती? (तालियाँ बजा कर) अजी सुनती हो, बुर्क़ा उठाओ।

ख़्वाजा साहब बका किये, मगर वहाँ कुछ असर न हुआ। तब आप बिगड़ गये और फिर पैंतरे बदलने लगे। अब की दुलहिन ने उन्हें काल में दबा लिया; अब आप तड़प रहे हैं; दाँत पीसते हैं, मगर गरदन नहीं छूटती। तब आपने झल्ला कर दाँत काट खाया। काटना था कि उसने ज़ोर से एक थप्पड़ दिया। ख़्वाजा साहब का मुँह फिर गया। तब आप कोसने लगे—ख़ुदा करे तेरे हाथ टूटें। हाय, अगर इस वक़्त ख़ुदा एक मिनट के लिए ज़ोर दे-दे तो भुर्ता बना डालूँ।

मिस क्लारिसा और मीडा एक झरोखे से यह कैफ़ियत देख रही थीं, जब खोजी पिट-पिटा कर बाहर निकले तो क्लारिसा ने कहा—मुबारक हो!

आज़ाद—कहिए, दुलहिन कैसी है ? यार, हो खुशनसीब !

खोजी—खुदा करे, आप भी ऐसे खुशनसीब हों।

आज़ाद—हमने तो बड़ी तारीफ़ सुनी थी, मगर तुम कुछ रंजीदा मालूम होते हो, इसका क्या सबब ?

खोजी—भाईजान, वहाँ तो फ़ौजदारी हो गयी। औरत क्या, देवनी है, वल्लाह, कचूमर निकल गया।

आज़ाद—आप तो हैं पागल, यह इस मुल्क का रिवाज है कि पहले दिन दो घंटे तक दुलहिन मियाँ को मारती है, काट खाती है, फिर मियाँ बाहर आता है, फिर जाता है।

खोजी—अजी, वहाँ तो मार-पीट तक हो गयी, जी में तो आया था कि उठा कर दे मारूँ; मगर औरत के मुँह कौन लगे। देखें, अब की कैसी गुज़रती है, या तो वही नहीं या हमी नहीं।

आज़ाद—क्या सच-मुच फ़ौजदारी ही पर आमादा हो ? भाई, क़रौली अपने साथ न ले जाना, और जो हो सो हो।

खोजी—अजी, यहाँ हाथ क्या कम हैं ! क़रौली मर्द के लिए है, औरत के लिए क़रौली की क्या ज़रूरत ?

आज़ाद—बस, अब की जाके मीठी-मीठी बातें करो। हाथ जोड़ो, पैर दबाओ, फिर देखिए, कैसी खुश होती हैं। अब देर होती है, जाइए।

ख्वाजा साहब कमरे में गये और दुलहिन के पाँव दबाने लगे।

दुलहिन—हमको छोड़ कर चले तो न जाओगे।

खोजी—अरे, यह तो उर्दू बोल लेती हैं, यह क्या माजरा है !

दुलहिन—मियाँ, कुछ न पूछो। हमको एक हब्शी बहका कर बेचने के लिए लिये जाता था। बारे खुदा-खुदा करके यह दिन नसीब हुआ।

खोजी—अब तक तुम हमसे साफ़ साफ न बोलीं ! ख्वाहमख्वाह किसी भले आदमी को दिक करने से फ़ायदा ?

दुलहिन—तुम्हारे साथी आजाद ने हमें जैसा सिखाया वैसा हमने किया।

खोजी—अच्छा आजाद। ठहर जाओ बचा, जाते कहाँ हो। देखो तो कैसा बदला लेता हूँ।

यह कह कर खोजी ने अपनी टोपी दुलहिन के क़दमों पर रख दी और बोले—बीबी, बस अब यह समझो कि मियाँ नहीं, खिदमतगार है। मगर कब तक ? जब तक हमारी हो कर रहो। उधर आपने तेवर बदले, इधर हम बिगड खडे हुए। मुझसे बढ़ कर मुरव्वतदार कोई नहीं, मगर मुझसे बढ कर शरीर भी कोई नहीं; अगर किसी ने मुझसे दोस्ती की तो उसका गुलाम हो गया, और अगर किसी ने हेकड़ी जतायी तो मुझसे ज़्यादा पाजी कोई नहीं। डंडे से बात करता हूँ। देखने में दुबला हूँ,

मगर आज तक किसी ने मुँह फेर नहीं किया। सैकड़ों पहलवानों से लड़ा, और हमेशा कुश्तियाँ निकालीं।

दुलहिन—तुम्हारे पहलवान होने में शक नहीं, यह तो डील-डौल ही से ज़ाहिर है।

खोजी—इसी बात पर अब घूँघट हटा दो।

दुलहिन—यह घूँघट नहीं है जी, कल से हमारी मूँछ में दर्द है।

खोजी—काहे में दर्द है, क्या कहा!

दुलहिन—ऐ, मूँछ तो कहा, कानों की ठेठियाँ निकाल।

खोजी—मूँछ क्या! बकती क्या हो? औरत हो या मर्द? ख़ुदा जाने, तुम मूँछ किसको कहती हो।

दुलहिन—(खोजी की मूँछ पकड़ कर) इसे कहते हैं, यह मूँछ नहीं है?

खोजी—अल्लाह जानता है, बड़ी दिल्लगीबाज़ हो, मैं भी सोचता था कि क्या कहती हैं।

दुलहिन—अल्लाह जानता है, मेरी मूँछों में दर्द है।

ख्वाजा साहब ने ग़ौर करके देखा तो ज़रा-ज़रा सी मूँछें। पूछा—आखिर बताओ तो जानमन, यह मूँछ क्या है?

दुलहिन—देखता नहीं, आँखें फूट गयी हैं क्या?

खोजी—ऐ तो बीबी, आखिर यह मूँछ कैसी? कहता तो कहता, सुनता सिड़ी हो जाता है। औरत हो या मर्द? ख़ुदा जाने, तुम मूँछ किसे कहती हो?

दुलहिन—तो तुम इतना घबराते क्यों हो? मैं मरदानी औरत हूँ।

खोजी—भला औरत और मूँछ से क्या वास्ता?

दुलहिन—ऐ है; तुम तो बिलकुल अनाड़ी हो, अभी तुमने औरतें देखी कहाँ?

खोजी—ऐसी औरतों से बाज़ आये।

एकाएक दुलहिन ने घूँघट उठा दिया तो खोजी की जान निकल गयी। देखा तो वही बहुरूपिया। बोले—जी चाहता है कि करौली भोंक दूँ, कसम ख़ुदा की, इस वक़्त यही जी चाहता है।

बहुरूपिया—पहले उस पारसल के रुपये लाइए जिसका लिफ़ाफ़ा आपने अपने नाम लिखवा लिया था। बस, अब दायें हाथ से रुपये लाइए।

खोजी—ओ गीदी, बस अलग ही रहना, तुम अभी मेरे गुस्से से वाकिफ़ नहीं हो?

बहुरूपिया—खूब वाकिफ़ हूँ। कमज़ोर, मार खाने की निशानी।

खोजी—हम कमज़ोर हैं? अभी चाहूँ तो गरदन तोड़के रख दूँ। जा कर होटल-वालों से तो पूछो कि किस जवाँमरदी के साथ मिस्र के पहलवानों को उठाके दे मारा।

बहुरूपिया—अच्छा, अब तुम्हारी कज़ा आयी है। ख्वाहमख्वाह हाथ-पाँव के दुश्मन हुए हो।

खोजी—सच कहता हूँ, अभी तुमने मेरा गुस्सा नहीं देखा, मगर हम-तुम परदेशी हैं, हमको-तुमको मिल-जुल कर रहना चाहिए। तुम न जाने कैसे हिंदोस्तानी हो कि हिंदोस्तानी का साथ नहीं देते।

बहुरूपिया—पारसल का रुपया दाहने हाथ से दिलवाइए तो खैर।

खोजी—अजी, तुम भी कैसी बातें करते हो; 'हिसाबे दोस्ताँ दर दिल अगर हम बेवफा समझे।' पारसल का जिक्र कैसा, बजाज की दूकान पर हम भी तो तुम्हारी तरफ से कुछ पूज आये थे? कुछ तुम समझे, कुछ हम समझे।

इतने में आजाद दोनों लेडियों के साथ अंदर आये।

आज़ाद—भाई, शादी मुबारक हो। यार, आज हमारी दावत करो।

खोजी—ज़हर खिलाओ और दावत माँगो। यह जो हमने आपको लाखों खतरों से बचाया उसका यह नतीजा निकला। अब हम या तो यहीं नौकरी कर लेंगे, या फिर रूम वापस जायँगे। वहाँ के लोग क़द्रदाँ हैं, दो-चार शेर भी कह लेंगे तो खाने भर को बहुत है। खैर, आदमी कुछ खो कर सीखता है। हम भी खो कर सीखे, अब दुनिया में किसी का भरोसा नहीं रहा।

क्लारिसा—यह मिठाइयाँ न देने की बातें हैं, यह चकमे किसी और को देना, हम बे-दावत लिये न रहेंगे।

खोजी—हाँ साहब, आपको क्या। खुदा करे, जैसी बीबी हमने पायी, वैसा ही शौहर तुम पाओ, अब इसके सिवा और क्या दुआ दूँ।

मीडा—हमने तो बहुत सोच-समझ कर तुम्हारी शादी तजवीज की थी।

खोजी—अजी, रहने भी दो। हमें आप लोगों से कोई शिकायत नहीं, मगर आजाद ने बड़ी दगा दी। हिंदोस्तान से इतनी दूर आये। जब मौका पड़ा, इनके लिए जान लड़ा दी। पोलैंड की शाहजादी के यहाँ हमीं काम आये, वरना पड़े-पड़े सड़ जाते। इन सब बातों का अंजाम यह हुआ कि हमीं पर चकमे चलने लगे। अब चाहे जो हो, हम आजाद की सूरत न देखेंगे।

चौथी के दिन रात को नवाब साहब ने सुरैया बेगम को छेड़ने के लिए कई बार फ़ीरोज़ा बेगम की तारीफ़ की। सुरैया बेगम बिगड़ने लगीं और बोलीं—अजब बेहूदा बातें हैं तुम्हारी, न जाने किन लोगों में रहे हो कि ऐसी बातें ज़बान से निकलती हैं।

नवाब—तुम नाहक़ बिगड़ती हो, मैं तो सिर्फ़ उनके हुस्न की तारीफ़ करता हूँ।

सुरैया—ऐ, तो कोई ढूँढ़के वैसी ही की होती।

नवाब—तुम्हारे यहाँ कभी-कभी आया-जाया करती हैं?

सुरैया—मुझे उस घर का हाल क्योंकर मालूम हो। मगर जो तुम्हारे यही लच्छन हैं तो खुदा ही मालिक है। आज ही से ये बातें शुरू हो गयीं। हाँ, सच है, घर की मुर्ग़ी साग बराबर। खैर, अब तो मैं आ कर फँस ही गयी, मगर मुझे वही मुहब्बत है जो पहले थी। हाँ, अब तुम्हारी मुहब्बत अलबत्ता जाती रही।

नवाब—तुम इतनी समझदार हो कर ज़रा-सी बात पर इतना रूठ गयीं। भला अगर मेरे दिल में यही होता तो मैं तुम्हारे सामने उनकी तारीफ़ करता, मुझे कोई पागल समझा है? मतलब यह था कि दो घड़ी की दिल्लगी हो, मगर तुम कुछ और ही समझीं। खूब याद रखना कि जब तक मेरी और तुम्हारी ज़िंदगी है, किसी और औरत को बुरी नज़र से न देखूँगा। आगे देखूँ तो शरीफ़ नहीं।

सुरैया—वह औरत क्या जो अपने शौहर के सिवा किसी मर्द को बुरी नज़रों से देखे और वह मर्द क्या जो अपनी बीबी के सिवा परायी बहू-बेटी पर नज़र डाले।

नवाब—बस, यही हमारी भी राय है और जो लोग दस-दस शादियाँ करते हैं उनको मैं अहमक़ समझता हूँ।

सुरैया—देखना इन बातों को भूल न जाना।

सुबह को दुलहिन के मैके से महरी आयी और अर्ज़ की कि आज साली ने दूल्हा और दुलहिन को बुलाया है, पहला चाला है।

बेगम—(नवाब साहब की माँ) तुम्हारे यहाँ वह लड़की तो बड़े ही ग़ज़ब की है, फ़ीरोज़ा, किसी से दबती ही नहीं!

महरी—हुज़ूर, अपना-अपना मिज़ाज है।

बेगम—अरे, कुछ तो शर्म-हया का खयाल हो। बेचारी फ़ैजन को बात बात पर बनाती थी। वह लाख गँवारों की सी बातें करे, फिर इससे क्या, जो अपने यहाँ आये उसकी खातिर करनी चाहिए, न कि ऐसा बनाये कि वह कभी फिर आने का नाम ही न ले।

खुरशेद—(नवाब की बहन) हमको तो उनकी बातों से ऐसा मालूम होता था कि (दबे दाँतों) नेक नहीं, आगे खुदा जाने।

बेगम—यह न कहो बेटा, अभी तुमने देखा क्या है।

नवाब—(इशारा करके) उनकी महरी बैठी है, उसके सामने कुछ न कहो।

बेगम साहब ने सुरैया बेगम को उसी वक़्त रुख़सत किया। शाम को दूल्हा भी चला। मुसाहबों ने उसकी रियासत और ठाट-बाट की तारीफ़ करनी शुरू की—

बबरअली—हुज़ूर, इस वक़्त ईरान के शाहज़ादे मालूम होते हैं।

नूरख़ाँ—इसमें क्या शक है, यह मालूम होता है कि कोई शाहज़ादा मसनद लगाये बैठा है।

बबरअली—हुज़ूर, आज ज़रा चौक की तरफ़ से चलिएगा। ज़रा इधर-उधर कमरों से तारीफ़ की अवाज तो निकले।

नवाब—क्या फ़ायदा, जिसके बीबी हो, उसको इन बातों में न पड़ना चाहिए।

नूरख़ाँ—ऐ हुज़ूर, यह तो रियासत का तमशा ही है।

इंदू—ऐ हुज़ूर, यह तो ग़रीब आदमियों के लिए है कि एक से ज़्यादा न हो, दूसरी बीबी को क्या खिलायेगा, ख़ाक! मगर अमीरों का तो यह जौहर है। बादशाहों के आठ-आठ नौ-नौ सौ से ज़्यादा महल होते थे, एक-दो की कौन कहे। जिसे ख़ुदा देता है वही इस काबिल समझा जाता है।

इन लोगों ने नवाब साहब को ऐसा चंग पर चढ़ाया कि चौक ही से ले गये, मगर नवाब साहब ने गरदन जो नीची की तो चौक भर में किसी कमरे की तरफ़ देखा ही नहीं। इस पर मुसाहबों ने हाशिये चढ़ाये—ऐ हुज़ूर, एक नजर तो देख लीजिए, कैसा कटाव हो रहा है। सारी ख़ुदाई का हाल तो कौन जाने, मगर इस शहर में तो कोई जवान हुज़ूर के चेहरे-मोहरे को नहीं पाता। बस, यही मालूम होता है कि शेर कछार से चला आता है।

नवाब साहब दिल में सोचते जाते थे कि इन ख़ुशामदियों से बचना मुश्किल है। इनके फंदे में फँसे और दाख़िल जहन्नुम हुए। हमने ठान ली है कि अब किसी औरत को बुरी निगाह से न देखेंगे। यों हँसी-दिल्लगी की और बात है।

नवाब साहब ससुराल में पहुँचे, तो बाहर दीवानख़ाने में बैठे। नाच शुरू हुआ और मुसाहबों ने तायफ़ों की तारीफ़ के पुल बाँध दिये—जनाब, ऐसी गानेवाली अब दूसरी शहर में नहीं है, अगर शाही जमाना होता तो लाखों रुपये पैदा कर लेती और अब भी हमारे हुज़ूर के से जौहर-शिनास बहुत हैं, मगर फिर भी कम हैं। क्यों हुज़ूर, होली गाने को कहूँ?

नवाब—जो जी चाहे, गायें।

मुसाहब—हुज़ूर फ़रमाते हैं, यह जो गायेंगी, अपना रंग जमा लेंगी, मगर होली हो तो और भी अच्छा।

नवाब—हमने यह नहीं कहा, तुम लोग हमें ज़लील करा दोगे।

मुसाहब—क्या मजाल हुज़ूर, हुज़ूर का नमक खाते हैं, हम ग़ुलामों से यह उम्मीद? चाहे सिर जाता रहे, मगर नमक का पास ज़रूर रहेगा, और यह तो हुज़ूर, दो घड़ी हँसने-बोलने का वक़्त ही है।

ग़नीमत जान इस मिल बैठने को,
जुदाई की घड़ी सिर पर खड़ी है।

इसके बाद नवाब साहब अंदर गये और खाना खाया। साली ने एक भारी खिल्अत बहनोई को और एक कीमती जोड़ा बहन को दिया। दूसरे दिन दूल्हा-दुलहिन रुखसत हो कर घर गये।

१०३

कुछ दिन तक तो मियाँ आजाद मिस्र में इस तरह रहे जैसे और मुसाफ़िर रहते हैं, मगर जब कांसल को इनके आने का हाल मालूम हुआ तो उसने उन्हें अपने यहाँ बुला कर ठहराया और बातें होने लगी।

कासल—मुझे आपसे सख्त शिकायत है कि आप यहाँ आये और हमसे न मिले। ऐसा कौन है जो आपके नाम से वाकिफ न हो, जो अखबार आता है उसमें आपका ज़िक्र जरूर होता है। वह आपके साथ मसखरा कौन है? वह बौना खोजी?

आजाद ने मुसकिरा कर खोजी की तरफ इशारा किया।

खोजी—जनाब, वह मसखरे कोई और होंगे और खोजी खुदा जाने, किस भकुए का नाम है। हम ख्वाजा साहब हैं और बौने की एक ही कही। हाय, मैं किससे कहूँ कि मेरा बदन चोर है!

आज़ाद—क्या अखबारों में ख्वाजा साहब का जिक्र छ्पता है?

कासल—जी हाँ, इनकी बड़ी धूम है, मगर एक मुकाम पर तो सचमुच इन्होंने बड़ा काम कर दिखाया था। आपका दौलतखाना किस शहर में है जनाब? मुझे हैरत तो यह है कि इतने नन्हे-नन्हे तो आपके हाथ-पाँव, लड़ाई में आप किस बिरते पर गये थे।

खोजी—(मुसकिरा कर) यही तो कहता हूँ हजरत कि मेरा बदन चोर है, देखिए ज़रा हाथ मिलाइए। हैं फ़ौलाद की अँगुलियाँ या नहीं? अगर अभी जोर करूँ तो आपकी एक-आध अँगुली तोड़ कर रख दूँ।

थोड़ी देर तक वहाँ बातचीत करके आजाद चले तो खोजी ने कहा—यह आपकी अजीब आदत है कि ग़ैरों के सामने मुझे ज़लील करने लगते हैं। अगर मुझे ग़ुस्सा आ जाता और मैं मियाँ कासल के हाथ-पाँव तोड़ देता तो बताओ कैसी ठहरती? मैं मारे मुरव्वत के तरह देता जाता हूँ, वरना मियाँ की सिट्टी-पिट्टी भूल जाती।

आजाद—अजी, ऐसी मुरव्वत भी क्या जिससे हमेशा जूतियाँ खानी पड़े। कई जगह आप पिटे, मगर मुरव्वत न छोड़ी। एक दिन इस मुरव्वत की बदौलत आप कहीं काँजी-हौस न भेजे जाइए। अच्छा, अब यह पूछता हूँ कि जब सारे जमाने ने मेरा हाल सुना तो क्या हुस्नआरा ने न सुना होगा?

खोजी—जरूर सुना होगा भाई, अब आज के आठवें दिन शादी लो। मगर उस्ताद, दो-एक दिन बम्बई में जरूर रहना। जरा बेगम साहब से बातें होंगी।

आजाद—भाई, अब तो बीच में ठहरने का जी नहीं चाहता।

खोजी—यह नहीं हो सकता, इतनी बेवफ़ाई करना मुनासिब नहीं, वह बेचारी हम लोगों की राह देख रही होंगी।

आज़ाद—अच्छा तो यह सोच लो कि अगर उन्होंने पूछा कि खोजी के साथ कोई औरत क्यों नहीं आयी तो क्या जवाब दोगे ? हमारी तो सलाह है कि किसी को यहीं से फाँस ले चलो ?

खोजी—नहीं जनाब, मुझे यहाँ की औरतें पसंद नहीं। हाँ, अपने वतन में हो तो मुज़ायका नहीं।

आज़ाद—अच्छा कैसी औरत चाहते हो ?

खोजी—बस यही कि उम्र ज्यादा न हो। और शक्ल-सूरत अच्छी हो।

आज़ाद—ऐसी एक औरत तो हुस्नआरा के मकान के पास है। उसी दर्ज़ी की बीबी है जो उनके मकान के सामने रहता है। रंगत तो साँवली है, मगर ऐसी नमकीन कि आपसे क्या कहूँ और अभी कमसिन। बहुत-बहुत तो कोई ४०-४२ की होगी।

खोजी—भला मीडा में और उसमें क्या फ़र्क है ?

आज़ाद—यह उससे दो-चार बरस कमसिन हैं, बस, और तो कोई फ़र्क नहीं। हाँ, यह गोरी हैं और उसका रंग साँवला है।

खोजी—भला नाम क्या है ?

आज़ाद—नाम है शिताबजान।

खोजी—तब तो भाई, हम हाज़िर हैं। मगर पक्की-पोढ़ी बात तो हो ले पहले।

आज़ाद—आपको इससे क्या वास्ता ? कुछ तो समझ के हमने कहा है। हमारे पास उसका खत आया था कि अगर ख्वाजा साहब मंजूर करें तो मैं हाज़िर हूँ।

खोजी—तब तो भाई, बनी-बनायी बात है, खुदा ने चाहा तो आज के आठवें दिन शिताबजान हमारी बग़ल में होंगी।

आज़ाद—शाम को कासल से मिल कर चले चलो आज ही।

खोजी—कासल ! हमको शिताबजान की पड़ी है, हमारे सामने खत लिखके भेज दो। मजमून हम बतायेंगे।

आज़ाद क़लम-दावात ले कर बैठे। खोजी ने खत लिखवाया और जा कर उसे डाकखाने में छोड़ आये। तब मिस मीडा से जा कर बोले—अब हमारी खुशामद कीजिए। आज के आठवें दिन हमारे यहाँ आपकी दावत होगी। अच्छे से अच्छे क़िस्म की ब्रांडी तय कर रखिए। शिताबजान के हाथ पिलवाऊँगा।

मीडा—शिताबजान कौन ? क्या तुम्हारी बहन का नाम है ?

खोजी—अरे तोबा ! शिताबजान से मेरी शादी होनेवाली है। उसने मुझे भेजा था कि रूम जा कर नाम करो तो फिर निकाह होगा। अब मैं वहाँ से नाम करके लौटा हूँ, पहुँचते-पहुँचते शादी होगी।

मीडा—क्या सिन होगा ? बेवा तो नहीं है ?

खोजी—खुदा न करे, दर्ज़ी अभी जिन्दा है ?

मीडा—क्या मियाँवाली है, और आप उसके साथ निकाह करेंगे ? सिन क्या है ?

खोजी—अभी क्या सिन है, कल की लड़की है, कोई पैंतालीस बरस की हो शायद ।

मीडा—बस, पैंतालीस ही बरस की ? तब तो उसे पालना पड़ेगा ।

खोजी—हम तो क़िस्मत के धनी हैं ।

मीडा—भला शक्ल-सूरत कैसी है ?

खोजी—यह आज़ाद से पूछो । चाँद में मैल है, उसमें मैल नहीं, मैं तो आजाद को दुआ ए देता हूँ जिनकी बदौलत खिताबजान मिलीं ।

यहाँ से खोजी होटलवालों के पास . पहुँचे और उनसे भी वही चर्चा की । अजी, बिलकुल साँचे की ढली है, कोई देखे तो बेहोश हो जाय । अब आज़ाद के सामने उसे थोड़ा ही आने दूँगा, हरगिज़ नहीं ।

खानसामा—तुमसे बातचीत भी हुई या दूर ही से देखा ?

खोजी—जी हाँ, कई बार देख चुका हूँ । बातें क्या करती है, मिश्री की डली घोलती है ।

होटलवालों ने खोजी को खूब बनाया । इतनी देर में आज़ाद ने जहाज़ का बंदोबस्त किया और एक रोज़ दोनों परियों और ख्वाजा साहब के साथ जहाज पर सवार हुए । सवार होते ही खोजी ने गाना शुरू किया—

अरे मल्लाह लगा किश्ती मेरा महबूब जाता है,
खिताबो की तमन्ना में मुझे दिल लेके आता है ।
मगर छोड़ा विदेशी होके ख्वाजा ने गये लड़ने,
खिताबो के लिए जी मेरा कल से तिलमिलाता है ।

आज़ाद ने यह दे-दे कर और चंग पर चढ़ाया । ज्यों-ज्यों उनकी तारीफ़ करते थे, वह और अकड़ते थे । जहाज़ थोड़ी ही दूर चला था कि एक मल्लाह ने कहा—लोगो, होशियार ! तूफान आ रहा है । यह खबर सुनते ही कितनों ही के तो होश उड़ गये और मियाँ खोजी तो दोहाई देने लगे—जहाज़ की दोहाई ! बेड़े की दोहाई ! समुद्र की दोहाई ! हाय खिताबजान, अरे मेरी प्यारी खिताब, दुआ माँग ।

यह कह कर आपने अकड़ कर आज़ाद की तरफ देखा । आजाद ताड़ गये कि इस फ़िकरे की दाद चाहते हैं । कहा—सुभान-अल्लाह, खिताब जान के लिए खिताब, क्या खूब ।

खोजी—इस फ़न में कोई मेरी बराबरी क्या करेगा भला । उस्ताद हूँ, उस्ताद ।

आज़ाद—और लुत्फ़ यह है कि ऐसे नाजुक वक़्त में भी नहीं चूकते ।

खोजी—या खुदा, मेरी सुन ले । यारो, रो-रो कर उसकी दरगाह से दुआ माँगो कि ख्वाजा बच जायँ और खिताबजान से ब्याह हो । खूब रोओ ।

आज़ाद—जनाब, यह क्या सबब है कि आप सिर्फ़ अपने लिए दुआ माँगते हैं, और बेचारों का भी तो खयाल रखिए ।

इतने में आँधी आ गयी । आजाद तो जहाज़ के कप्तान के साथ बातें कर रहे

थे। खोजी ने सोचा, अगर जहाज डूब गया तो शिताबजान क्या करेगी? फ़ौरन अफ़ीम की डिबिया ली और खूब कस कर कमर में बाँध कर बोले—लो यारो, हम तो तैयार हैं। अब चाहें आँधी आये या बगूला। तूफान नहीं, तूफान का बाप आये तो क्या ग़म है!

जहाजवाले तो घबराये हुए थे कि नहीं मालूम, तूफान क्या गुल खिलाये, मगर ख्वाजा साहब तान लगा रहे थे—

शिताबो की तमन्ना में मेरा दिल तिलमिलाता है।

आजाद—ख्वाजा साहब, आप तो बेवक़्त की शहनाई बजाते हैं। पहले तो रोये-चिल्लाये और अब तान लगाने लगे।

एक ठाकुर साहब भी जहाज पर सवार थे। खोजी को गाते देख कर समझे कि यह कोई बड़े वली हैं। क़दमों पर टोपी रख दी और बोले—साईं जी, हमारे हक़ में दुआ कीजिए।

खोजी—खुश रहो बाबा, बेड़ा पार है।

आजाद ने खोजी के कान में कहा—यार, यह तो अच्छा उल्लू फँसा! रास्ते में खूब दिल्लगी रहेगी।

ठाकुर साहब बार-बार खोजी से सवाल करते थे और मियाँ खोजी अनापशनाप जवाब देते थे।

ठाकुर—साईं जी, जुमे के दिन सफ़र करना कैसा है?

खोजी—बहुत अच्छा दिन है।

ठाकुर—और जुमेरात?

खोजी—उससे भी अच्छा।

आजाद—ठाकुर साहब, आप कब से सफ़र कर रहे हैं?

ठाकुर—जनाब, कोई चालीस बरस हुए।

आज़ाद—चालीस बरस सफ़र करते हो गये और अभी तक आप अच्छे और बुरे दिन पूछते जाते हैं?

ठाकुर—सनीचर के दिन आप सफर करके देख लें।

खोजी—हमने इस बारे में बहुत ग़ौर किया है। बुरी साइत का सफर कभी पूरा नहीं होता।

ठाकुर—साईं जी, कुछ और नसीहत कीजिए, जिससे मेरा भला हो।

खोजी—अच्छा सुनो, पहली बात तो यह है कि जिस दिन चाहो, सफ़र करो, मगर पहर रात रहे से, तुम्हारी मंजिल दूनी हो जायगी। दूसरी नसीहत यह है कि एक बीबी से ज़्यादा के साथ शादी न करना, अगर वह मर जाय तो दूसरी शादी का खयाल भी दिल में न लाना। तीसरी बात यह है कि रात को दो घंटे तक ठंडे पानी में रह कर खुदा की याद करना। गरमी, जाड़ा, बरसात तीनों मौसिमों में इसका

खयाल रखना। चौथी नसीहत यह है कि अच्छे खाने और अच्छे कपड़े से परहेज़ रखना। खाने को जौ की रोटी और पीने को औटाया हुआ पानी काफ़ी है।

खोजी ने यह नसीहतें कुछ इस तरह कीं, गोया वह पहुँचे हुए फ़कीर हैं। ठाकुर ने अपनी नोटबुक पर ये सब बातें लिख लीं और बोला—साईं जी, आपसे मुलाक़ात करना चाहूँ तो कैसे करूँ?

खोजी—बस, लखनऊ में खिताबजान का मक़ान पूछते हुए चले आना।

ठाकुर—खिताबजान कौन हैं?

खोजी—कोई हों, तुम्हें इससे मतलब?

यों ही ठाकुर साहब को बनाते हुए रास्ता कट गया और बम्बई सामने से नज़र आने लगा। खोजी की बाँछें खिल गयीं, चिल्ला कर कहा—यारो, जरा देखना, खिताबजान की सवारी तो नहीं आयी है। करीमबख्श नामी महरी साथ होगी। अतलस का लहँगा है, कहारों की पगडियाँ रँगी हुई हैं, मछलियाँ जरूर लटक रही होंगी। अरे महरी, महरी! क्या बहरी है?

लोगों ने समझाया कि साहब, अभी बंदरगाह तो आने दो। खिताबजान यहाँ से क्योंकर सुन लेंगी? बोले—अजी, हटो भी, तुम क्या जानो। कभी किसी पर दिल आया हो तो समझो? अरे नादान, इश्क के कान दो कोस तक की खबर लाते हैं, क्या खिताबजान ने आवाज न सुनी होगी? वाह, भला कोई बात है! मगर जवाब क्यों न दिया? इसमें एक लिम है, वह यह कि अगर आवाज के साथ ही आवाज का जवाब दें तो हमारी नज़रों से गिर जायँ। मज़ा जब है कि हम बौखलाये हुए इधर-उधर ढूँढ़ते और आवाज़ देते हों और वह हमें पीछे से एक धौल जमायें और तिनक कर कहें—मुड़ीकाटा, आँखों का अंधा नाम नैनसुख, गुल मचाता फिरता है, और हम धौल खा कर कहें कि देखिए सरकार, अब की धौल लगायी तो खैर, जो अब लगायी तो बिगड़ जायगी। इस पर वह झल्ला कर इस घुटी हुई खोपड़ी पर तड़ातड़ दो-चार और जमा दें, तब मैं हँस कर कहूँ, तो फिर दो-एक जूते भी लगा दो, इसके बग़ैर तबीयत बेचैन है।

आजाद—बिलफेल कहिए तो मैं ही लगा दूँ।

खोजी—अजी नहीं, आपको तकलीफ़ होगी।

आजाद—वल्लाह, किस भकुए को जरा भी तकलीफ हो।

खोजी—मियाँ, पहले मुँह धो आओ, इन खोपडियों के सुहलाने के लिए परियों के हाथ चाहिए, तुम जैसे देवों के नहीं।

इतने में समुद्र का किनारा नज़र आया, तो खोजी ने गुल मचा कर कहा—खिताबजान साहब, आपका यह गुलाम, फर्जिंदाना आदाब-अर्ज...।

इतना कह चुके थे कि लोगों ने कहकहा लगाया और खोजी की समझ में कुछ न आया कि लोग क्यों हँस रहे हैं।

आजाद से पूछा कि इस बेमौका हँसी का क्या सबब है? आज़ाद ने कहा—

इसका सबब है आपकी हिमाक़त। क्या आप शिताब के बेटे हैं जो उनको फ़र्शींदाना आदाब बजा लाते हैं, जोरू को कोई इस तरह सलाम करता है!

खोजी—(गालों पर थप्पड़ लगा कर) अररर, ग़ज़ब हो गया, बुरा हुआ। वल्लाह, इतना ज़लील हुआ कि क्या कहूँ। भाई, इश्क़ में होश-हवास कब ठीक रहते हैं, अनाप-शनाप बातें मुँह से निकल ही जाती हैं, मगर खैर! अब तो पालकी साफ़ साफ़ नज़र आती है। वह देखिए, महरी सामने डटी खड़ी है। अल्लाह, अब तो महरी भी बाढ़ पर है!

जहाज़ ने लंगर डाला और उतरने लगे। ख्वाजा साहब दूर ही से शिताबजान को ढूँढ़ने लगे। आज़ाद दोनों लेडियों को ले कर खुश्की पर आये तो बम्बई के मिरज़ा साहब ने दौड़ कर उन्हें गले लगाया। फिर दोनों परियों को देख कर ताज्जुब से बोले—इन दोनों को कहाँ से लाये, क्या परिस्तान की परियाँ हैं।

आज़ाद ने अभी कुछ जवाब न दिया था कि खोजी कफ़न फाड़ कर बोल उठे—इधर शिताबजान, इधर, ओ करमबख्श करमफोड़ कमबख्ती के निशान, यहाँ क्यों नहीं आती! दूर ही से बुत्ते बताती है!

मिरज़ा—किसको पुकारते हो ख्वाजा साहब, मैं बुला दूँ। क्या ब्याह लाये हो कोई परी? मगर उस्ताद, नाम तो हिंदुस्तान का है, ज़रा दिखा तो दो।

आज़ाद ने खैर-आफ़ियत पूछी और दोनों आदमियों में शाहज़ादा हुमायूँ फ़र की चरचा होने लगी। फिर लड़ाई का ज़िक्र छिड़ गया।

उधर ख्वाजा साहब ने अफ़ीम घोली और चुस्की लगा कर गुल मचाया—शिताबजान प्यारी, मैं तेरे वारी, जल्द से आ री, सूरत दिखा री, आँसू हैं जारी। जानमन, जिस बिस्तर पर तुम सोयी थीं उसको हर रोज़ सूँघ लिया करता हूँ और उसी की खुशबू पर ज़िंदगी का दार मदार है।

तेरी-सी न बू किसी में पायी;
सारे फूलों को सूँघता हूँ।

मिरज़ा साहब ने कहा—आखिर यह माजरा क्या है। जनाब ख्वाजा साहब, क्या सफ़र में अक्ल भी खो आये, यह आपको क्या हो गया है? अगर सच्चे आशिक़ हो तो फ़रियाद कैसी?

खोजी—जनाब, कहने और करने में जमीन-आसमान का फ़र्क़ है।

मिरज़ा—

कब अपने मुँह से आशिक़ शिकवए बेदाद करते हैं;
दहाने गौर से वह मिस्ल नै फ़रियाद करते हैं।

खोजी—मुझसे कहिए तो ऐसे दो करोड़ शेर पढ़ दूँ, आशिक़ी दूसरी चीज़ है, शायरी दूसरी चीज़।

मिरज़ा—दो करोड़ शेर तो दस करोड़ बरस तक भी आपसे न पढ़े जायँगे। आप दो ही चार शेर फ़रमायें।

खोजी—अच्छा तो सुनिए और गिनते जाइए, आप भी क्या कहेंगे—

यही कह-कहके हिजरे यार में फ़रियाद करते हैं;
वह भूले हमको बैठे हैं जिन्हें हम याद करते हैं।
असीराने कुहन पर ताजा वह बेदाद करते हैं,
रही ताकत न जब उड़ने की तब आजाद करते हैं।
रकम करता हूँ जिस दम काट तेरी तेग़ अब्रू की;
ग़रीबों चाक अपना जामए फ़ौलाद करते हैं।
सिफ़त होती है जानाँ जिस ग़ज़ल में तेरे अब्रू की;
तो हम हर बैत पर आँखों से अपनी साद करते हैं।

अब भी न कोई शरमाये तो अंधेर है, दो करोड़ शेर न पढ़ कर सुनाऊँ तो नाम बदल डालूँ। हाँ, और सुनिए—

नहीं हम याद से रहते हैं ग़ाफ़िल एकदम हमदम;
जो बुत को भूल जाते हैं खुदा को याद करते हैं।

आज़ाद—इस वक़्त तो मिरज़ा साहब को आपने खूब आड़े हाथों लिया।

खोजी—अजी, यहाँ कोई एक शेर पढ़े तो हम दस करोड़ शेर पढ़ते हैं। जानते हो कहाँ के रहनेवाले हैं हम। बम्बईवालों को हम समझते क्या हैं।

इतने में एक औरत ने खोजी को इशारे से बुलाया तो उनकी बाँछें खिल गयीं। बोले—क्या हुक्म है हुजूर?

औरत—ऐ दुर हुजूर के बच्चे! कुछ लाया भी वहाँ से, या खाली हाथ झुलाता चला आता है?

खोजी—पहले तुम अपना नाम तो बताओ?

औरत—ऐ लो, पहरों से नाम रट रहा है और अब पूछता है, नाम बता दो। (चप जमा कर) और नाम पूछेगा?

खोजी—ऐ, तुमने तो चप लगानी शुरू की, जो कहीं अब की हाथ उठाया तो बहुत ही बेढब होगी।

आज़ाद—अरे यार, यह क्या माजरा है? बेभाव की पड़ने लगी।

खोजी—अजी, मुहब्बत के यही मज़े हैं भाईजान। तुम यह बातें क्या जानो।

मिरज़ा—यह आपकी ब्याहता हैं या सिर्फ़ मुलाक़ात है?

खिताब—हमारे बुज़ुर्गों से यह रिश्ता चला आता है।

मिरजा—तो यह कहो कि तुम इनकी बहन हो।

खोजी—जनाब, जरा सँभल कर फ़रमाइएगा। मैं आपका बड़ा लिहाज़ करता हूँ।

खिताब—ऐ, तो कुछ झूठ भी है। आखिर आप मेरे हैं कौन?—मुफ्त में मियाँ बनने का शौक चर्राया है?

खोजी—अरे तो निकाह तो हो ले। कसम खुदा की, लड़ाई के मैदान में भी दिल तुम्हारी ही तरफ़ रहता था।

आज़ाद—हमेशा याद करते थे बेचारे।

जब आजाद लेडियों के साथ गाड़ी में बैठ गये तब मिरजा ने खोजी से कहा—चलिए, वह लोग जा रहे हैं।

खोजी—जा रहे हैं तो जाने दीजिए। अब मुद्दत के बाद माशूक से मुलाक़ात हुई है, ज़रा बातें कर लूँ। आप चलिए, मैं अभी हाज़िर होता हूँ।

वह लोग इधर रवाना हुए, उधर शिताबजान ने खोजी को दूसरी गाड़ी में सवार कराया और घर चलीं। ख्वाजा साहब खुश थे कि दिल्लगी में माशूक हाथ आया। घर पहुँच कर शिताबजान ने खोजी से कहा—अब कुछ खिलवाइए, बहुत भूख लगी है।

खोजी—भई वाह, मैं सिपाही आदमी, मेरे पास सिवा ढाल-तलवार, बरछी-कटार के और क्या है? या तमगे हैं, सो वह मैं किसी को दे नहीं सकता।

शिताब—कमाई करने गये थे वहाँ, या रास्ता नापने? तमगे ले कर चाटूँ, तलवार से अपनी गरदन मार लूँ, छूरी भोंक के मर जाऊँ? छुरी-तलवार से कहीं पेट भरता है?

खोजी—अभी कुछ खिलवाओ-पिलवाओ, जब हम रिसालदारी करेंगे तो तुमको मालामाल कर देंगे। अब परवाना आया चाहता है। लड़ाई में मैंने जो बड़े-बड़े काम किये वह तो तुम सुन ही चुकी होगी। दस हज़ार सिपाहियों की नाक काट डाली। उधर दुश्मन की फौज ने शिकस्त पायी, इधर मैंने करौली उठायी और मैदान में खट से दाखिल। जिसको देखा कि बिलकुल ठंडा हो गया है, उसकी नाक उड़ा दी। जब तक लड़ाई होती रहती थी, बंदा छिपा बैठा रहता था; कभी पेड़ पर चढ़ गया, कभी किसी झोपड़े में छुक गया। मुफ्त में जान देना कौन सी अक्लमंदी है। मगर लड़ाई खतम होते ही मैदान में जा पहुँचता था। जिस शहर में जाता था, शहर भर की औरतें मेरे पीछे पड़ जाती थीं, मगर मैं किसी की तरफ़ आँख उठा कर भी न देखता था। ग़रज कि लड़ाई मे मैंने बड़ा नाम किया, यह मेरी ही जूतियों का सदका है कि आजाद पाशा बन बैठे। वह तो जानते भी न थे कि लड़ाई किस चिड़िया का नाम है।

शिताब—मगर यह तो बताओ कि बंदूक से नाक क्योंकर काटी जाती है?

खोजी—तुम इन बातों को क्या जानो, यह सिपाहियों के समझने की बातें हैं।

इधर आज़ाद मिरजा साहब के घर पहुँचे तो बेगम साहब फूली न समायीं। खिदमतगार ने आजाद को झुक कर सलाम किया। दोनों दोस्त कमरे में जा कर बैठे। मिरज़ा साहब ने घर में जा कर देखा तो बेगम साहब पलँग पर पड़ी थीं। महरी से पूछा तो मालूम हुआ, आज तबियत कुछ खराब है। बाहर आ कर आजाद से कहा—घर में सोती हैं और तबियत भी अच्छी नहीं। मैंने जगाना मुनासिब न समझा। आज़ाद समझे कि बीमारी महज बहाना है, हमसे कुछ नाराज हैं।

इतने में एक चपरासी ने आ कर मिरजा साहब को एक लिफ़ाफ़ा दिया। युनिवर्सिटी

के रजिस्ट्रार ने कुछ सलाह करने के लिए उन्हें बुलाया था। मिरज़ा साहब बोले—भाई, इस वक़्त तो जाने को जी नहीं चाहता। मुद्दत के बाद एक दोस्त आये हैं, उनकी खातिर-तवाज़ा में लगा हुआ हूँ। मगर जब आज़ाद ने कहा कि आप जाइए, शायद कोई ज़रूरी काम हो, तो मिरज़ा साहब ने गाड़ी तैयार करायी और रजिस्ट्रार से मिलने गये।

इधर आज़ाद के पास ज़ैनब ने आ कर सलाम किया।

आज़ाद—कहो ज़ैनब, अच्छी रहीं?

ज़ैनब—हुज़ूर के जान-माल की दुआ देती हूँ। हुज़ूर तो अच्छे रहे?

आज़ाद—बेगम साहब क्या अभी आराम ही में हैं? अगर इजाज़त हो तो सलाम कर आऊँ।

ज़ैनब—हुज़ूर के लिए पूछने की ज़रूरत नहीं, चलिए।

आज़ाद ज़ैनब के साथ अंदर गये तो कमरे में क़दम रखते ही महरी ने कहा—वहीं बैठिए, कुर्सी आती है।

आज़ाद—सरकार कहाँ हैं? बेगम साहब की खिदमत में आदाब अर्ज़ है।

बेगम—बंदगी। आपको जो कुछ कहना हो कहिए, मुझे ज़्यादा बातें करने की फ़ुरसत नहीं।

आज़ाद—खुदा खैर करे, आखिर किस जुर्म में यह खफ़गी है? कौन सा गुनाह हुआ?

बेगम—बस ज़बान न खुलवाइए, ग़ज़ब खुदा का, एक खत तक भेजना क़सम था, कोई इस तरह अपने अज़ीज़ों को तड़पाता है?

आज़ाद—क़ुसूर मोआफ़ कीजिए, बेशक गुनाह तो हुआ, मगर मैंने सोचा कि खत भेज कर मुफ्त में मुहब्बत बढ़ाने से क्या फ़ायदा, न जाने ज़िंदा आऊँ या न आऊँ, इसलिए ऐसी फ़िक्र करूँ कि उनके दिल से भूल ही जाऊँ। अगर ज़िंदगी बाक़ी है तो चुटकियों में गुनाह माफ़ करा लूँगा।

इस फ़िकरे ने बेगम साहब के दिल पर बड़ा असर किया। सारा ग़ुस्सा हवा हो गया। ज़ैनब को नीचे भेजा कि हुक्का भर लाओ, खवास को हुक्म दिया कि पान बनाओ। तब मैदान खाली पा कर चिक उठा दी और बोलीं—वह कहाँ गये हैं?

आज़ाद—किसी साहब ने बुलाया है, उनसे मिलने गये हैं। खुदा ने मुझे यह खूब मौक़ा दिया।

बेगम—क्या कहा, क्या कहा! ज़रा फिर तो कहिएगा, ज़रा सुनूँ तो किस चीज़ का मौक़ा मिला?

आज़ाद—यही हुज़ूर को सलाम करने का।

बेगम—हाँ, यों बातें कीजिए, अदब के साथ। हुस्नआरा के नाम तुमने कोई खत भेजा था? मुझे लिखा है कि जिस दिन आयें, फ़ौरन तार से इत्तला दे।।

आज़ाद—अब तो यही धुन है कि किसी तरह वहाँ पहुँचूँ और ज़िंदगी के अरमान पूरे करूँ।

बेगम—जी नहीं, पहले आपका इम्तहान होगा। आप रंगीन आदमी ठहरे, आपका एतबार ही क्या?

आज़ाद—ओफ्फोह! यह बदगुमानी। खैर साहब, अख्तियार है, मगर हमारे साथ चलने का इरादा है या नहीं?

बेगम—नहीं साहब, यह हमारे यहाँ का दस्तूर नहीं। बहनोई के साथ जवान सालियाँ सफ़र नहीं करतीं। वक़्त पर उनके साथ आ जाऊँगी।

आज़ाद—खैर, इतनी इनायत क्या कम है। अब आप जा कर परदे में बैठिए, मैं दीवाना हो जाऊँगा।

बेगम—क्यों साहब, यही आपका इश्क है? इसी बूते पर इम्तहान दीजिएगा?

बेगम साहब ने वहाँ ज़्यादा देर तक बैठना मुनासिब न समझा। आज़ाद भी बाहर चले गये। खिदमतगार ने हुक्का भर दिया। पलंग पर लेटे-लेटे हुक्का पीने लगे तो खयाल आया कि आज मुझसे बड़ी ग़लती हुई, अगर मिरज़ा साहब मुझे घूरते देख लेते तो अपने दिल में क्या कहते। अब यहाँ ज़्यादा ठहरना ग़लती है। खुदा करे, आज के चौथे दिन वहाँ पहुँच जाऊँ। बेगम साहब ने मुझे हिक़ारत की निगाह से देखा होगा।

वह अभी यही सोच रहे थे कि जैनब ने बेगम साहब का एक खत ला कर उन्हें दिया। लिखा था—अभी-अभी मैंने सुना है कि आपके साथ दो लेडियाँ आयी हैं। दोनों कमसिन हैं और आप भी जवान। आग और फूस का साथ क्या? अगर वाकई तुमने इन दोनों के साथ शादी कर ली है तो बड़ा गज़ब किया, फिर उम्मेद न रखना कि हुस्नआरा तुमको मुँह लगायेंगी। तुमने सारी की-करायी मिहनत तक खाक में मिला दी। और अगर शादी नहीं की तो यहाँ लाये क्यों? तुम्हें शर्म नहीं आती? हुस्नआरा गरीब तो तुम्हारी मुहब्बत की आग में जले और तुम सौतों को साथ लाओ—क्या कहूँ है क्योंकर न उठे दर्द जिगर में,

मेरी तो बग़ल खाली है और आपके बर में।
एक आन भी मुझसे न मिलो आठ पहर में,
घर छोड़के अपना रहो यों और के घर में।

तुम और ग़ैरों को साथ लाओ, तुम्हारी तरह हुस्नआरा भी अब तक शादी कर लेतीं तो तुम क्या बना लेते? तुमको इतना भी ख्याल न रहा कि हुस्नआरा के दिल पर क्या असर होगा। तुम्हारे हज़ारों चाहनेवाले हैं तो उसके गाहक भी अच्छे-अच्छे शाहज़ादे हैं। मैंने ठान ली है कि हुस्नआरा को आपके हाल से इत्तला दूँ, और कह दूँ कि अब वह आज़ाद नहीं रहे, अब दो-दो बग़ल में रहती हैं, उस पर बहू-बेटियों पर बुरी निगाह रखते हैं। अगर तुमने मेरा इतमिनान न कर दिया तो पछताओगे।

यह खत पढ़ कर आज़ाद ने जैनब से कहा—क्यों, तुम इधर की उधर लगा-लगा कर आपस में लड़वाती हो? तुमने उनसे जाके क्या कह दिया, मुझसे भी पूछ लिया होता।

जैनब—ऐ हुजूर, तो मेरा इसमें क्या कुसूर। मुझसे जो सरकार ने पूछा, वह मैंने बयान कर दिया। इसमें बंदी ने क्या गुनाह किया!

आजाद—खैर, जो हुआ सो हुआ, लाओ कलम-दावात।

आज़ाद ने उसी वक़्त इस खत का जवाब लिखा—बेगम साहब की खिदमत में आदाब-अर्ज करता हूँ। आप मुझ पर बेवफ़ाई का इलजाम लगाती हैं। आपको शायद यकीन न आयेगा, मगर अक्सर मुकामों पर ऐसी-ऐसी परियाँ मुझ पर रीझी हैं कि अगर हुस्नआरा का सच्चा इश्क़ न होता तो मैं हिंदोस्तान में आने का नाम न लेता, मगर अफसोस है कि मेरी कुल मिहनत बेकार गयी। मेरा खुदा जानता है, जिन जिन जगलों, पहाड़ों पर मैं गया, कोई कम गया होगा। हफ्तों एक अँधेरी कोठरी में क़ैद रहा, जहाँ किसी जानदार की सूरत नजर न आती थी। और यह सब इसलिए कि एक परी मुझसे शादी करना चाहती थी और मैं इन्कार करता था कि हुस्नआरा को क्या मुँह दिखाऊँगा। यह दोनों लेडियाँ जो मेरे साथ हैं, उन्होंने मुझ पर बड़े-बड़े एहसान किये हैं। गाढ़े वक़्त में काम आयी हैं, वरना आज आजाद यहाँ न होता। मगर इतने पर भी आप नाराज़ हो रही हैं, इसे अपनी बदनसीबी के सिवा और क्या कहूँ। खुदा के लिए कहीं हुस्नआरा को न लिख भेजना। और अगर यही चाहती हो कि मैं जान दूँ तो साफ़-साफ़ कह दो। हुस्नआरा को लिखने से क्या फ़ायदा। और क्या लिखूँ। तबीयत बेचैन है।

बेगम साहब ने यह खत पढ़ा तो गुस्सा ठंडा हो गया, छमछम करती हुई परदे के पास आ कर खड़ी हुई तो देखा—आजाद सिर पर हाथ रख कर रो रहे हैं। आहिस्ता से पुकारा—आज़ाद!

जैनब—हुजूर, देखिए कौन सामने खड़ा है? जरा उधर निगाह तो कीजिए।

बेगम—आजाद, जो रोये तो हमीं को है-है करे। जैनब, जरा सुराही तो उठा ला, मुँह पर छींटे दे।

जैनब—हुजूर, क्या ग़ज़ब कर रहे हैं, वह सामने कौन खड़ा है?

आजाद—(बेगम साहब की तरफ रुख कर के) क्या हुक्म है?

बेगम—मेरा तो कलेजा धक-धक कर रहा है।

आजाद—कोई बात नहीं। खुदा जाने, इस वक्त क्या याद आया। आपको तकलीफ होती है, आप जायँ, मैं बिलकुल अच्छा हूँ।

बेगम—अब चोंचले रहने दो, मुँह धो डालो। 'वाह, मर्द हो कर आँसू बहाते हो? तुमसे तो छोकरियाँ अच्छी। यह तुम लड़ाई में क्या करते थे?

आज़ाद—जलाओ और उस पर ताने दो।

बेगल—क्या खूब, जलाने की एक ही कही। जलाते तुम हो या मैं? एक छोड़ दो-दो वहाँ से लाये, ऊपर से बातें बनाते हो, मुँह दिखाने काबिल नहीं रखा अपने को। हुस्नआरा ने उड़ती खबर पायी थी कि आज़ाद ने किसी औरत को ब्याह लिया तो पछाड़ें खाने लगीं। एक तुम हो कि जोड़ी साथ लाये और ऊपर से

फड़ते हो, जलाओ। तुम्हें शर्म भी नहीं आती?

आज़ाद—क्या टेढ़ी खीर है, न खाते बने, न छोड़ते बने।

बेगम—तो फिर साफ़-साफ़ क्यों नहीं बता देते?

आज़ाद—ब्याहता बीबी हैं दोनों, और क्या कहूँ।

बेगम—अच्छा साहब, ब्याहता बीबी नहीं, दोनों आपकी बहनें सही, अब खुश हुए? बरसों बाद आये तो एक काँटा साथ लेके। भला सोचो, मैं चुपकी हो रहूँ तो हुस्नआरा क्या कहेगी कि वाह बहन, तुमने हमको लिखा भी नहीं। लेकिन दो में क्या फ़ायदा होगा तुम्हें?

आज़ाद—आप दिल्लगी करती हैं और मैं चुप हूँ। फिर मेरी भी जबान खुलेगी।

बेगम—तुम हमको सिर्फ़ इतना बतला दो कि यह दोनों यहाँ किस लिए आयी हैं, तो मैं चुप ही रहूँ।

आज़ाद—तो इन दोनों को यहाँ बुला लाऊँ?

बेगम—उनको आने दो, उनसे सलाह लेके जवाब दूँगी।

आजाद—तो क्या आप हममें और उनमें कोई फ़र्क़ समझती हैं। मैं तो तुमको और हुस्नआरा को एक नज़र से देखता हूँ।

बेगम—बस, अब मैं कह बैठूँगी। बड़े बेशर्म हो, छटे हुए बेहया।

इतने में जैनब ने आ कर कहा—मिरजा साहब आ गये। बेगम साहब झपट कर कोठे पर हो रहीं और आज़ाद बारादरी में आ कर लेट रहे।

मिरजा—आपने अभी तक हम्माम किया या नहीं? बड़ी देर हो गयी है। जिस तरफ़ जाता हूँ, लोग गाड़ी रोक कर आपका हाल पूछने लगते हैं। कल शाम को सब लोग आपसे टाउनहाल में मिलना चाहते हैं। हाँ, यह तो फ़रमाइए, यह दोनों परियाँ कौन हैं? एक तो उनमें से किसी और मुल्क की मालूम होती है।

आज़ाद—एक तो रूस की है और दूसरी कोहक़ाफ़ की।

मिरज़ा—यार, बुरा किया। हुस्नआरा सुनेंगी तो क्या कहेंगी?

इधर तो यह बातें हो रही थीं, उधर शिताबजान ने खोजी से कहा—जरा अकेले में चलिए, आपसे कुछ कहना है। खोजी ने कहा—खुदा की क़ुदरत है कि माशूक तक हमसे अकेले में चलने को कहते हैं। जो हुक्म हो, बजा लाऊँ। अगर तोप के मोहरे पर भेज दो तो अभी चला जाऊँ। यह तो कहो, तुम्हारे सबब से चुप हूँ, नहीं अब तक दस-पाँच को कत्ल कर चुका होता।

यह कह कर ख्वाजा साहब झपट कर बाहर निकले। इत्तिफ़ाक से एक गाड़ीवान आहिस्ता-आहिस्ता गाड़ी हाँकता चला जाता था। खोजी उसे गालियाँ देने लगे—भला बे गीदी, भला, खबरदार जो आज से यह बेअदबी की। तू जानता नहीं, हम कौन हैं? हमारे मकान की तरफ़ से गाता हुआ निकलता है। हमें भी रिआया समझ लिया है। भला बी शिताबजान गाड़ी की घड़घड़ाहट सुनेंगी तो उनके कानों को कितना नागवार लगेगा। गाड़ीवाला पहले तो घबराया कि यह माजरा क्या है।

गाड़ी रोक कर खोजी की तरफ़ घूरने लगा। मगर जब ख्वाजा साहब झपट कर गाड़ी के पास पहुँचे, और चाहा कि लकड़ी जमायें कि उसने इनके दोनों हाथ पकड़ लिये। अब आप सिटपिटा रहे हैं और वह छोड़ता ही नहीं।

खोजी—कह दिया, खैर इसी में है कि हमारा हाथ छोड़ दो, वरना बहुत पछताओगे। मैं जो बिगड़ूँगा तो एक पलटन के मनाये भी न मानूँगा।

गाड़ीवान—हाथ तो अब तुम्हारे छुड़ाये नहीं छूट सकता।

खोजी—लाना तो मेरी करौली।

गाड़ीवान—लाना तो मेरा ढाई तलेवाला चमरौधा।

खोजी—शरीफों में ऐसी बातें नहीं होतीं।

गाड़ीवान—शरीफ कभी तुम्हारे बाप भी थे कि तुम्हीं शरीफ़ हुए?

खोजी—अच्छा, हाथ छोड दो। वरना इतनी करौलियाँ भोंकूँगा कि उम्र भर याद करोगे।

गाडीवान ने इस पर झल्ला कर खोजी का हाथ मरोड़ना शुरू किया। खोजी की जान पर बन आयी, मगर क्या करें। सबसे ज्यादा ख्याल इस बात का था कि कहीं शिताबजान न देख लें, नहीं तो बिलकुल नज़रों से गिर जाऊँ।

खोजी—कहता हूँ, हाथ छोड़ दे, मैं कोई ऐसा-वैसा आदमी नहीं हूँ।

गाडीवान—मैं तो अपना गाता हुआ चला जाता था। आपने गालियाँ क्यों दीं?

खोजी—हमारे घर की तरफ़ से क्यों गाते जाते थे?

गाडीवान—आप मना करनेवाले कौन? क्या किसी की जबान बंद कर दीजिएगा?

बारे कई आदमियों ने गाड़ीवान को समझा कर खोजी का हाथ छुड़ाया। खोजी झाड़-पोंछ कर अंदर गये और शिताबजान से बोले—मैं बात पीछे करता हूँ, करौली पहले भोंकता हूँ। पाजी गाता हुआ जाता था। मैंने पकड़ कर इतनी चपतें लगायीं कि भुरता ही बना दिया। मेरे मुँह में आग बरसती है। अच्छा, अब यह फ़रमाइए कि किस नेकबख्त बदनसीब से तुम्हारी शादी पहले हुई थी वह अब कहाँ है और कैसा आदमी था?

शिताबजान—यह तो मैं पीछे बतलाऊँगी। पहले यह फ़रमाइए कि उसको नेकबख्त कहा तो बदनसीब क्यों कहा? जो नेकबख्त है वह बदनसीब कैसे हो सकता है?

खोजी—कसम खुदा की, मेरी बातें जवाहिरात में तौलने के काबिल हैं। नेकबख्त इसलिए कहा कि तुम जैसी बीबी पायी। बदनसीब इसलिए कहा कि या तो वह मर गया या तुमने उसे निकाल बाहर किया।

शिताबजान—अच्छा सुनिए, पहले मेरी शादी एक खूबसूरत जवान के साथ हुई थी। जिसकी नज़र उस पर पड़ी, रीझ गया।

खोजी—यहाँ भी तो वही हाल है। घर से निकलना मुश्किल है।

शितावजान—हाजिर-जवाब ऐसा था कि बात की बात में ग़ज़लें कह डालता था।

खोजी—यह बात मुझमें भी है। दस हजार शेर एक मिनट में कह दूँ, एक कम न एक ज़्यादा!

शितावजान—मैं यह कब कहती हूँ कि तुम उससे किसी बात में कम हो। अव्वल तो जवान गमरू, अभी मसें भीगती हैं। आदमी क्या, शेर मालूम होते हो। फिर सिपाही आदमी हो, उस पर शायर भी हो। बस ज़रा झल्ले हो, इतनी खराबी है।

खोजी—अगर मेरा हुक्म मानती हो तो मोम हो जाऊँगा। हाँ, लड़ोगी तो हमारा मिज़ाज बेशक झल्ला है।

शितावजान—मियाँ, मैं लौंड़ी बनके रहूँगी। मुझसे लड़ाई-झगड़े से वास्ता? मगर यह बताओ कि रहोगे कहाँ? मैं बम्बई में रहूँगी। तुम्हारे साथ मारी-मारी न फिरूँगी।

खोजी—तुम जहाँ रहोगी, वहीं मैं रहूँगा; मगर...

शितावजान—अगर-मगर मैं कुछ नहीं जानती। एक तो तुमको अफीम न खाने दूँगी! तुमने अफ़ीम खायी और मैंने किसी बहाने से जहर खिला दिया।

खोजी—अच्छा न खायेंगे। कुछ जरूरी है कि अफीम खाये ही। न खायी, पी ली, चलो छुट्टी हुई।

शितावजान—पीने भी न दूँगी। दूसरी शर्त यह है कि नौकरी ज़रूर करो, बग़ैर नौकरी के गुजारा नहीं। तीसरी शर्त यह है कि मेरे दोस्त और रिश्तेदार जो आते हैं, बदस्तूर आया करेंगे।

खोजी—वाह, कहीं आने न दूँ। इन बदमाशों को फटकने न दूँगा।

शितावजान—अच्छा तो कल मेरे घर चलो, वहीं हमारा निकाह होगा।

दूसरे दिन खोजी शितावजान के साथ उसके घर चले। बम्बई से कई स्टेशन के बाद शितावजान गाड़ी से उतर पड़ीं और खोजी से कहा—अब आपके पास जितने रुपये-पैसे हों, चुपके से निकाल कर रख दो। मेरे घरवाले बिना नजराना लिये शादी न करेंगे।

खोजी ने देखा कि यहाँ बुरे फँसे। अब अगर कहते हैं कि मेरे पास रुपये नहीं हैं तो हेठी होती है। उन्होंने समझा था कि शादी का दो घड़ी मजाक रहेगा, मगर अब जो देखा कि सचमुच शादी करनी पड़ेगी तो चौकन्ने हुए। बोले—मैं तो दिल्लगी करता था जी। शादी कैसी और ब्याह कैसा? कुछ ऊपर साठ बरस का तो मेरा सिन है, अब भला मैं शादी क्या करूगा। तुम अभी जवान हो, तुमको सैकड़ों जवान मिल जायेंगे।

शितावजान—तुमको इससे मतलब क्या! इसकी मुझे फिक्र होनी चाहिए। जब मेरा तुम पर दिल आया और तुम भी निकाह करने पर राजी हुए तो अब इनकार करना क्या माने। अच्छे हो तो मेरे, बुरे हो तो मेरे।

मियाँ खोजी घबराये, सिट्टी-पिट्टी भूल गयी। अपनी अक्ल पर बहुत पछताये

और उसी वक़्त आज़ाद के नाम यह खत लिखा—मेरे बड़े भाई साहब, सलाम ! मेरी आँख से अब ग़फ़लत का परदा उठ गया। मैं कुछ ऊपर साठ बरस का हूँगा। इस सिन में निकाह का ख्याल सरासर ग़ैरमुनासिब है। मगर शिताबजान मुझ पर बुरी तरह आशिक़ हो गयी हैं। उसका सबब यह है कि जिस तरह मेरा जिस्म चोर है उसी तरह मेरी सूरत भी चोर है। मुझे कोई देखे तो समझे कि हड्डियाँ तक गल गयी हैं, मगर आप खूब जानते हैं कि इन्हीं हड्डियों के बल पर मैंने मिस्र के नामी पहल-वान को लड़ा दिया और बुआ ज़ाफ़रान जैसी देवनी की लातें सहीं। दूसरा होता, तो कचूमर निकल जाता। उसी तरह मेरी सूरत में भी यह बात है कि जो देखता है, आशिक हो जाता है। मैं खुद सोचता हूँ कि यह क्या बात है, मगर कुछ समझ में नहीं आता। खैर, अब आपसे यह अर्ज़ है कि खत देखते मेरी मदद के लिए दौड़ो, वरना मौत का सामना है। सोचा था कि शादी न होगी तो लोग हँसेंगे कि आज़ाद तो दो-दो साथ लाये और ख्वाजा साहब मोची के मोची रहे। लेकिन यह क्या मालूम था कि यह शादी मेरे लिये ज़हर होगी। ज़रा शर्तें तो सुनिए—अफीम छोड़ दो और नौकरी कर लो। अब बताइए कि अफीम छोड़ दूँ तो ज़िंदा कैसे रहूँ ? अब रही नौकरी। यहाँ लड़कपन से फ़िक़रेबाजों की सोहबत में रहे। गप्पें उड़ाना, बातें बनाना, अफ़ीम की चुस्की लगाना हमारा काम है। भला हमसे नौकरी क्या होगी, और करना भी चाहें तो किसकी नौकरी करें। सरकारी नौकरी तो मिलने से रही, वहाँ तो आदमी पचपन साल का हुआ और निकाला गया, और यहाँ पच-पन और दस पैंसठ बरस के हैं। हम तो इसी काम के हैं कि किसी नवाबज़ादे की सोहबत में रहें और उसको ऐसा पक्का रईस बना दें कि वह भी याद करे। चंडू का क़वाम हमसे बनवा ले, अफीम ऐसी पिलायें कि उम्र भर याद करे, रहा यह कि हम जमाखर्च लिखें, यह हमसे न होगा, जिसको अपना काम ग़ारत कराना हो वह हमें नौकर रखे। इसलिए अगर मेरा गला यहाँ से छुड़ा दो तो बड़ा एहसान हो। खुदा जाने, तुम लोग मुझे क्यों खाक में मिलाते हो, तुम्हारे साथ रूम गया, तुम्हारी तरफ़ से लड़ा-भिड़ा, वक्त-बेवक़्त काम आया और अब तुम मुझे जबह किये देते हो।

यह खत लिख कर शिताबजान को दिया कि आज़ाद के पास जल्द पहुँचा दो। शादी के मामले में उनसे कुछ सलाह करनी है।

शिताबजान—सलाह की क्या जरूरत है भला ?

खोजी—शादी-ब्याह कोई खाला जी का घर नहीं है, जरा आदमी को इस बारे में ऊँच-नीच सोच लेना चाहिए, मैंने सिर्फ़ यह पूछा है कि तुम्हारी शर्तें मंजूर करूँ या नहीं।

शिताबजान—अच्छा जाओ, मैं कोई शर्त नहीं करती।

खोजी—अब मंजूर, दिल से मंजूर, मगर यह खत तो भेज दो।

अब सुनिए कि शिताबजान के साथ एक खाँ साहब भी थे। मालवे के रहनेवाले।

उन्होंने खोजी को दो दिन में इतनी अफ़ीम पिला दी जितनी वह चार दिन में भी न पीते। सफ़र में सेहत भी कुछ बिगड़ गयी थी। दो ही दिन में चुर्र-मुर्र हो गये। लेटे-लेटे खाँ साहब से बोले—जनाब, दूसरा इतनी अफीम पीता तो बोल जाता, क्या मजाल कि इस शहर में कोई मेरा मुकाबिला कर सके, और इस शहर पर क्या मौकूफ है, जहाँ कहिए, मुकाबिले के लिए तैयार हूँ, कोई तोले भर पिये तो मैं सेर भर पी जाऊँ।

खाँ साहब—मगर उस्ताद, आज कुछ अंजर-पंजर ढीले नज़र आते हैं, शायद अफ़ीम ज़्यादा हो गयी।

खोजी—वाह, ऐसा कहीं कहिएगा भी नहीं। जब जी चाहे, साथ बैठ कर पी लीजिए।

शाम तक खोजी की हालत और भी खराब हो गयी। शिताबजान ने इन्हें दिक करना शुरू किया। ऐ आग लगे तेरे सोने पर मरदुए, कब तक सोता रहेगा।

खोजी—सोने दो, सोने दो।

शिताब—भला खैर, हम तो समझे थे, खबर आ गयी।

खाँ—कहती किससे हो, वह पहुँचे खुदागंज।

शिताब—ऐ फिर पीनक आ गयी, अभी तो जिंदा हो गया था।

खाँ—(कान के पास जा कर) ख्वाजा साहब!

खोजी—जरा सोने दो भाई।

शिताब—मेरे यहाँ पीनकवालों का काम नहीं है।

खाँ—ख्वाजा साहब, अरे ख्वाजा साहब, ऐ बोलते ही नहीं! चल बसे!

ख्वाजा साहब की हालत जब बहुत खराब हो गयी, तो एक हकीम साहब बुलाये गये। उन्होंने कहा—जहर का असर है। नुस्खा लिखा। बारे कुछ रात जाते-जाते नशा टूटा। खोजी की आँखें खुलीं।

शिताब—मैं तो समझी थी, तुम चल बसे।

खोजी—ऐसा न कहो भाई, जवानी की मौत बुरी होती है।

शिताब—मर मुड़ीकाटे, अभी जवान बना है!

खोजी—बस ज़बान सँभालो, हम समझ गये कि तुम कोई भठियारी हो। मैं अगर अपने हालात बयान करूँ तो आँखें खुल जायें। हम अमीर-कबीर के लड़के हैं। लड़कपन में हमारे दरवाजे पर हाथी बँधता था, तुम जैसी भठियारियों को मैं क्या समझता हूँ।

यह कह कर आप मारे गुस्से के घर से निकल खड़े हुए, समझते थे कि शिताबजान मुझ पर आशिक है ही, उससे भला कैसे रहा जायगा, ज़रूर मुझे तलाश करने आयेगी, लेकिन जब बहुत देर गुज़र गयी और शिताबजान ने खबर न ली तो आप लौटे! देखा तो शिताबजान का कहीं पता नहीं, घर का कोना-कोना टटोला, मगर शिताबजान वहाँ कहाँ? उसी महल्ले में एक हलवाइन रहती थी। खोजी ने

जा कर उससे अपना सारा क़िस्सा कहा, तो वह हँस कर बोली—तुम भी कितने अहमक हो। शितावज़ान भला कौन है? तुमको मिरज़ा साहब और आजाद ने चकमा दिया है।

खोजी को आज़ाद की बेवफ़ाई का बहुत मलाल हुआ। जिसके साथ इतने दिनों तक जान-जोखिम करके रहे, उसने हिंदुस्तान में लाके उन्हें छोड़ दिया। खूब रोये, तब हबशिन से बातें करने लगे—

खोजी—क़िस्मत कहाँ से हमें कहाँ लायी?

हबशिन—आपका घोंसला किस झाड़ी में है?

खोजी—हम खोबिस्तान के रहनेवाले हैं।

हबशिन—यह किस जगह का नाम लिया? खोजिस्तान तो किसी जगह का नाम नहीं मालूम होता।

खोजी—तो क्या सारी दुनिया तुम्हारी देखी हुई है? खोजिस्तान एक सूबा है, शकरकंद और जिलेबिस्तान के करीब। बताशा नदी उसे सैराब करता है।

हबशिन—भला शकरकंद भी कोई देस है?

खोजी—है क्यों नहीं, समरक़ंद का छोटा भाई है।

हबशिन—वहाँ आप किस मुहल्ले में रहते थे?

खोजी—हलुवापुर में।

हबशिन—तब तो आप बड़े मीठे आदमी हैं।

खोजी—मीठे तो नहीं, हैं तो तीखे, नाक पर मक्खी नहीं बैठने देते, मगर मीठी नज़र के आशिक हैं—ख्वाहिश न कंद की है, न तालिब शकर के हैं;

चस्के पड़े हुए तेरी मीठी नज़र के हैं।

हबशिन—तो आप भी मेरे आशिकों में हैं?

खोजी—आशिक कोई और होंगे, हम माशूकों के माशूक हैं। सारी दुनिया छान डाली, पर जहाँ गया, माशूकों के मारे नाक में दम हो गया। बुआ ज़ाफ़रान नामी एक औरत हम पर इतनी रीझी कि पट्टे पकड़के दे जूता दे जूता मारके उड़ा दिया। मगर हमारी बहादुरी देखो कि उफ़् तक न की।

हबशिन—हमको यकीन क्योंकर आये? हम तो जब जानें कि सिर झुकाओ और हम दो-चार लगायें, फिर देखें, कैसे नहीं उफ् करते।

खोजी—हाँ, हम हाज़िर हैं, मगर आज अभी अफ़ीम यों ही सी पी है। जब नशा जमे तब अलबत्ता आजमा लो।

हबशिन—ऐ है, फिर निगोड़ी अफ़ीम का नाम लिया, मरते-मरते बचे और अब तक अफीम ही अफीम कहते जाते हो?

खोजी—तुम इसके मजे क्या जानो। अफीम खाना फकीरी है। ग़रूर को तो यह खाक में मिला देती है। मैं कितनी ही जगह पिटा, कभी जूतियाँ खायीं, कभी कोई काँजीहौस ले गया, मगर हमने कभी जवाब न दिया।

हबशिन चली गयी तो खोजी साहब ने एक डोली मँगवायी और उसमें बैठ कर चंडूखाने पहुँचे। लोगों ने इन्हें देखा तो चकराये कि यह नया पंछी कौन फँसा।

खोजी—सलाम आलेकुम भाइयो!

इमामी—आलेकुम भाई, आलेकुम। कहाँ से आना हुआ?

खोजी—ज़रा टिकने दो, फिर कहूँ। दो बरस लड़ाई पर रहा, जब देखो मोरचा-बंदी, मर मिटा, मगर नाम भी वह किया कि सारी दुनिया में मशहूर हो गया।

इमामी—लड़ाई कैसी? आजकल तो कहीं लड़ाई नहीं है।

खोजी—तुम घर में बैठे बैठे दुनिया का क्या हाल जानो।

क़ादिर—क्या रूम-रूस की लड़ाई से आते हो क्या?

खोजी—खैर, इतना तो सुना।

इमामी—अजी, यह न कहिए, इनको सारी दुनिया का हाल मालूम रहता है। कोई बात इनसे छिपी थोड़ी है।

क़ादिर—रूमवाले ने रूस के बादशाह से कहा कि जिस तरह तुम्हारा चचा हकीमी कौड़ी देता था उसी तरह तुम भी दिया करो, मगर उसने न माना। इसी बात पर तकरार हुई, तो रूमवाले ने कहा, अच्छा, अपने चचा की क़ब्र में चलो और पूछ देखो, क्या आवाज आती है। बस जनाब, सुनने की बात है कि रूमवाले ने न माना। रूम के बादशाह के पास हजरत सुलेमान की अँगूठी थी। उन्होंने जो उसे हवा में उछाला, तो सैकड़ों जिन हाजिर हो गये। बादशाह ने कहा कि रूस में चारों तरफ़ आग लगा दो। चारों तरफ़ आग लग गयी। तब रूस के बादशाह ने वजीरों को जमा करके कहा, आग बुझाओ, बस सवा करोड़ भिश्ती मशकें भर भरके दौड़े। एक एक मशक में दो दो लाख मन पानी आता था।

खोजी—क्यों साहब, यह आपसे किसने कहा है?

इमामी—अजी, यह न पूछो, इनसे फ़रिश्ते सब कह जाते हैं।

क़ादिर—बस साहब, सुनने की बातें हैं कि सवा दो करोड़ मशकें मुल्क के चारों कोनों पर पड़ती थीं, मगर आग बढ़ती ही जाती थी। तब बादशाह ने हुक्म दिया कि दो करोड़ लाख भिश्ती काम करें और मशकों में छब्बीस-छब्बीस करोड़ मन पानी हो।

खोजी—ओ गीदी, क्यों इतना झूठ बोलता है?

शुबराती—मियाँ, सुनने दो भाई, अजब आदमी हो।

खोजी—अजी, मैं तो सुनते-सुनते पागल हो गया।

कादिर—आप लखनऊ के महीन आदमी, उन मुल्कों का हाल क्या जानें। रूम, रूस, तूरान, अनूपशहर का हाल हमसे सुनिए।

इमामी—वहाँ के लोग भी देव होते हैं देव!

कादिर—रूस के बादशाह की खुराक का हाल सुनो तो चकरा जाओ। सबेरे मुँह अँधेरे ६ बकरों की यखनी, चार बकरों के कबाब, दस मुर्गों का पोलाव और दस

मुरैले तरकीब से खाते हैं, और ९ बजे के वक्त सौ मुर्गों का शोरबा और दस सेर ठंडा पानी, बारह बजे जवाहिरात का शरबत, कभी पचास मन, कभी साठ मन, चार बजे दो कच्चे बकरे, दो कच्चे हिरन, शाम को शराब का एक पीपा और पहर रात गये गोश्त का एक छकड़ा।

इमामी—तब तो ताकतें होती हैं कि सौ-सौ आदमियों को एक आदमी मार डालता है। हिंदोस्तान का आदमी क्या खा कर लड़ेगा।

शुबराती—हिंदोस्तान में अगर हाबमे की ताकत कुछ है तो चंडू के सबब से, नहीं तो सब के सब मर जाते।

इमामी—सुना, रूसवाले हाथी से अकेले लड़ जाते हैं।

कादिर—हमसे सुनो, दस हाथी हों और एक रूसी तो वह दसों को मार डालेगा।

खोजी—आप रूस कभी गये भी हैं?

कादिर—अजी हम घर बैठे सारी दुनिया की सैर कर रहे हैं।

खोजी—हम तो अभी लड़ाई के मैदान से आते हैं, वहाँ एक हाथी भी न देखा।

क़ादिर—रूमवालों ने जब आग लगा दी, तो वह ग्यारह बरस, ग्यारह महीने, ग्यारह दिन, ग्यारह घंटे जला की। अब जाके जरी-जरी आग बुझी है, नहीं तो अजब नक़्शा था कि सारा मुल्क जल रहा है और पानी का छिड़काव हो रहा है। रूमवाले जब रात को सोते हैं तो हर मकान में दो देवों का पहरा रहता है।

खोजी—अरे यारो, इस झूठ पर खुदा की मार, हम बरसों रहे, एक देव भी न देखा।

कादिर—आपकी तो सूरत ही कहे देती है कि आप रूम जरूर गये होंगे। खुदा झूठ न बुलवाये तो घर के बाहर क़दम नहीं रखा।

खोजी समझे थे कि चंडूखाने में चल कर अपने सफर का हाल बयान करेंगे और सबको बंद कर देंगे, चंडूखाने में इनकी तूती बोलने लगेगी, मगर यहाँ जो आये तो देखा कि उनके भी चचा मौजूद हैं। झल्ला कर पूछा, बतलाओ तो रूम के पायतख्त का क्या नाम है?

कादिर—वाह, इसमें क्या रखा है, भला-सा नाम तो है, हाँ मर्जबान।

खोजी—इस नाम का तो वहाँ कोई शहर ही नहीं।

कादिर—अजी, तुम क्या जानो। मर्जबान वह शहर है जहाँ पहाड़ों पर परियाँ रहती हैं। वहाँ पहाड़ों पर बादल पानी पी-पी कर जाते हैं और सबको पानी पिलाते हैं।

खोजी—तो वह कोई दूसरा रूम होगा। जिस रूम से मैं आता हूँ वह और है।

कादिर—अच्छा बताओ, रूम के बादशाह का क्या नाम है?

खोजी—सुलतान अब्दुलहमीद खाँ।

कादिर—बस बस, रहने दीजिए आप नहीं जानते, उस पर दावा यह है कि हम रूम से आते हैं। भला लड़ाई का क्या नतीजा हुआ, यही बताइए?

खोजी—पिलौना की लड़ाई में तुर्क हार गये और रूसियों ने फतह पायी।

क़ादिर—क्या बकता है बेहूदा। खबरदार जो ऐसा कहा होगा तो इतने जूते लगाऊँगा कि भुरकस ही निकल जायगा।

इमामी—हमारे बादशाह के हक में बुरी बात निकालता है, बेअदब कहीं का। बच्चा, यहाँ ऐसी बातें करोगे तो पिट जाओगे।

खोजी—सुनो जी, हम फ़ौजी आदमी हैं।

क़ादिर—अब ज़्यादा बोलोगे तो उठ कर कचूमर ही निकाल दूँगा।

शुबराती—यह हैं कहाँ के, जरा सूरत तो देखो, मालूम होता है, कब्र से निकल भागा है।

खोजी को सबने मिल कर ऐसा डपटा कि बेचारे करौली और तमंचा भूल गये। गये तो बड़े जोम में थे कि चंडूखाने में खूब डींग हाँकेंगे, मगर वहाँ लेने के देने पड़ गये। चुपके से चंडू के छींटे उड़ाये और लम्बे हुए। रास्ते में क्या देखते हैं कि बहुत से आदमी एक जगह खड़े है। आपने घुस कर देखा तो एक पहलवान बीच में बैठा है और लोग खड़े उसकी तारीफों के पुल बाँध रहे हैं। खोजी ने समझा कि हमने भी तो मिस्र के पहलवान को पटका था, हम क्या किसी से कम हैं? इस जोम में आपने पहलवान को ललकारा—भाई पहलवान, हम इस वक़्त इतने खुश हैं कि फूले नहीं समाते। मुद्दत के बाद आज अपना जोड़ीदार पाया।

पहलवान—तुम कहाँ के पहलवान हो भाई साहब?

खोजी—यार, क्या बतायें। अपने साथियों में कोई रहा ही नहीं। अब तो कोई पहलवान जँचता ही नहीं।

पहलवान—उस्ताद, कुछ हमको भी बताओ।

खोजी—अजी, तुम खुद उस्ताद हो।

पहलवान—आप किसके शागिर्द हैं?

खोजी—शागिर्द तो भाई, किसी के नहीं हुए। मगर हाँ, अच्छे-अच्छे उस्तादों ने लोहा मान लिया। हिंदोस्तान से रूम तक और रूम से रूस तक सर कर आया। तुम आजकल कहाँ रहते हो?

पहलवान—आजकल एक नवाब साहब के यहाँ हैं। तीन रुपया रोज देते हैं। एक बकरा, आठ सेर दूध और दो सेर घी बँधा है। नवाब अमजदअली नाम है।

खोजी—भला वहाँ चंडू की भी चर्चा रहती है?

पहलवान—कुछ मत पूछिए भाई साहब, दिन-रात।

खोजी—भला वहाँ मस्तियाबेग भी हैं?

पहलवान—जी हाँ हैं, आप कैसे जान गये?

खोजी—अजी, वह कौन सा नवाब है जिसकी हमने मुसाहबी न की हो। नवाब अमजदअली के यहाँ बरसों रहा हूँ। बटेरों का अब भी शौक है या नहीं?

पहलवान—अजी, अभी तक सफ़दिक्कन का मातम होता है।

खोजी—तुम्हारा कब तक जाने का इरादा है?

पहलवान—मैं तो आज ही जा रहा हूँ।

खोजी—तो भाई, हमको भी ज़रूर लेते चलो। हम अपना किराया दे देंगे।

पहलवान—तो चलिए, मेरा इसमें हरज ही क्या है। हमको नवाब साहब ने सिर्फ दो दिन की छुट्टी दी थी। कल यहाँ दाखिल हुए, आज दंगल में कुश्ती निकाली और शाम को रेल पर चल देंगे। हमारे साथ मरतियाबेग भी हैं।

शाम को पहलवान के साथ खोजी स्टेशन पर आये। पहलवान ने कहा—वह देखिए मिरज़ा साहब खड़े हैं, जा कर मिल लीजिए। ख्वाजा आहिस्ता-आहिस्ता गये और पीछे से मिरज़ा साहब की आँखें बंद कर लीं।

मिरज़ा—कौन है भाई, कोई मुसम्मात हैं क्या? हाथ तो ऐसे ही मालूम होते हैं।

पहलवान—भला बूझ जाइए तो जानें।

मिरज़ा—कुछ समझ में नहीं आता, मगर हैं कोई मुसम्मात।

खोजी—भला गीदी, भला, अभी से भूल गया, क्यों?

मिरज़ा—अख्खाह, ख्वाजा साहब हैं! कहो भाई खोजी, अच्छे तो रहे?

खोजी—खोजी कहीं और रहते होंगे। अब हमें ख्वाजा साहब कहा करो।

मिरज़ा—अरे कमबख्त, गले तो मिल ले।

खोजी—सरकार कैसे हैं, घर में तो खैर-आफ़ियत है?

मिरज़ा—हाँ, सब खुदा का फ़ज़ल है, बेगम साहब पर कुछ आसेब था, मगर अब अच्छी हैं। कहो, तुमने तो खूब नाम पैदा किया।

खोजी—नाम, अरे हम मेजर थे।

मिरज़ा—सरकार को इस लड़ाई के ज़माने में अखबार से बड़ा शौक था। आज़ाद को तो सब जानते हैं, मगर तुम्हारा हाल जब से पढ़ा तब से सरकार को अखबारों का एतबार जाता रहा। कहते थे कि समुद्र की सूरत देख कर इसका जिगर क्यों न फट गया। भला इसे लड़ाई से क्या वास्ता।

खोजी—अब इसका हाल तो उन लोगों से पूछो जो मोरचों पर हमारे शरीक थे। तुम मज़े से बैठे-बैठे मीठे टुकड़े उड़ाया किये, तुमको इन बातों से क्या सरोकार, मगर भाई, नशों में नशा शराब का। इधर डंके पर चोट पड़ी, उधर सिपाही कमर कस कर तैयार हो गये।

मिरज़ा—अब सरकार के सामने न कहना, नहीं खड़े-खड़े निकाल दिये जाओगे।

खोजी—अजी, अब तो सरकार के बाप के निकाले भी नहीं निकल सकते।

मिरज़ा—एक बार तो अखबार में लिखा था कि खोजी ने शादी कर ली है।

खोजी—अरे यार, इसका हाल न पूछो, अपनी शक्ल-सूरत का हाल तो हमको बाहर जा कर मालूम हुआ। जिस शहर में निकल गये, करोड़ों औरतें हम पर आशिक हो गयीं। खास कर एक कमसिन नाज़नीन ने तो मुझे कहीं का न रखा।

मिरज़ा—तो आपकी सूरत पर सब औरतें जान देती थीं? क्या कहना है, तुमने बहादुरी के काम भी तो खूब किये।

खोजी—भाईजान, मोरचे पर मेरी बहादुरी देखते तो दंग हो जाते। खैर, उस परी पर मेरे सिवा पचास तुर्की अफ़सर भी आशिक थे। यह राय तय पायी कि जिससे वह परी राज़ी हो उससे निकाह करे। एक रोज सब बन-ठन कर आये, मगर उस शोख की नजर आपके खादिम ही पर पड़ती थी।

मिरज़ा—ऐ क्यों नहीं, हजार जान से आशिक हो गयी होगी।

खोजी—आव देखा न ताव, अठलाती हुई आयी और मेरा हाथ अपने सीने पर रख लिया। अब सुनिए, उन सबों के दिल में हसद की आग भड़की, कहने लगे, यों हम न मानेंगे, जो उससे निकाह करे वह पहले पचासों आदमियों से लड़े। हमने कहा, खैर! तलवार खींच कर जो चला, तो वह-वह चोटें लगायीं कि सब के सब बिलबिलाने लगे। बस परी हमको मिल गयी। अब दरबार के रंग ढंग बयान करो।

मिरज़ा—सब तुम्हारी याद किया करते हैं। झम्मन ने वह चुगुलखोरी पर कमर बाँधी है कि सैकड़ों खिदमतगार और कितने ही मुसाहबों को मौकूफ़ करा दिया।

खोजी—एक ही पाजी आदमी है। हम रूम गये, फ्रांस गये, सारी दुनिया के रईस देख डाले, मगर नवाब सा भोला भाला रईस कहीं न देखा। ग़ज़ब खुदा का कि एक बदमाश ने जो कह दिया, उसका यकीन हो गया, अब कोई लाख समझाये, वह किसी की सुनते ही नहीं।

मिरज़ा—मेरा तो अब वहाँ रहने को जी नहीं चाहता।

खोजी—अजी, इस झगड़े को चूल्हे में डालो। अब हम-तुम चल कर रंग जमायेंगे। तुम मेरी हवा बाँधना और हम दोनों एक जान दो कालिब हो कर रहेंगे।

मिरज़ा—मैं कहूँगा, खुदावंद, अब यह सब मुसाहबों के सिरताज हुए, सारी दुनिया में हुजूर का नाम किया। मगर तुम जरा अपने को लिये रहना।

खोजी—अजी, मैं तो ऐसा बनूँ कि लोग दंग हो जायँ।

जब घंटी बजी और मुसाफिर चले तो खोजी भी पहलवान की तरह अकड़ कर चलने लगे। रेल के दो-चार मुलाज़िमों ने उन पर आवाजे कसना शुरू किया।

एक—आदमी क्या गैंडा है, माशा-अल्लाह, क्या हाथ-पाँव हैं!

दूसरा—क्यों साहब, आप कितने दंड पेल सकते हैं?

खोजी—अजी, बीमारी ने तोड़ दिया, नहीं एक पूरी रेल पर लदके जाता था।

तीसरा—इसमें क्या शक है, एक-एक रान दो-दो मन की है।

खोजी—कसम खाके अर्ज करता हूँ कि अब आधा नहीं रहा! यह पहलवान हमारे अखाड़े का खलीफ़ा है, और बाकी सब शागिर्द हैं। सब मिलाके हमारे चालीस बयालीस हजार शागिर्द होंगे।

एक मुसाफिर—दूर-दूर से लोग शागिर्दी करने आते होंगे!

खोजी—दूर-दूर से! अब आप मुलाहिजा फ़रमायें कि हिंदुस्तान से ले कर रूस तक मेरे लाखों शागिर्द हैं। मिस्र में ऐसा हुआ कि एक पहलवान की शामत आयी, एक मेले में हमको टोक बैठा। टोकना था कि बंदा भी चट लँगोट कसके सामने

आ खड़ा हुआ। लाखों ही आदमी जमा थे। उसका सामने आना ही था कि मैं उसी दम जुट गया, दाँव-पेंच होने लगे। उसके मिस्री दाँव थे। हमारे हिंदुस्तानी दाँव थे। बस दम की दम में मैंने उठाके दे पटका।

इतने में दूसरी घंटी हुई। खोजी ऐसे बौखलाये कि ज़नाने दर्जे में घँस पड़े। वहाँ लेना-लेना का गुल मचा। भागे तो पहले दर्जे में घुस गये, वहाँ एक अँगरेज ने डाँट बतायी। बारे निकल कर तीसरे दर्जे में आये। थके-माँदे बहुत थे, सोये तो सारी रात कट गयी। आँख खुली तो लखनऊ आ गया। शाम के वक़्त नवाब साहब के यहाँ दाखिल हुए।

खोजी—आदाब अर्ज़ है हुज़ूर।

नवाब—अख्खाह, खोजी हैं! आओ भाई, आओ।

खोजी—हाज़िर हूँ खुदावंद, खुदा का शुक्र है कि आपकी ज़ियारत हुई।

ग़फ़ूर—खोजी मियाँ, सलाम।

खोजी—सलाम भाई, सलाम, मगर हमको खोजी मियाँ न कहना, अब हम फौज के अफसर हैं।

झम्मन—आप बादशाह हों या वज़ीर, हमारे तो खोजी ही हो।

खोजी—हाँ भाई, यह तो है ही। हुज़ूर के नमक की कसम, मुल्कों-मुल्कों इस दरबार का नाम किया।

नवाब—शाबाश! हमने अखबारों में तुम्हारी बड़ी-बड़ी तारीफ़ें पढ़ीं।

खोजी—हुज़ूर, गुलाम किस लायक है।

झम्मन—भला यार, तुम समुद्र में जहाज़ पर कैसे सवार हुए?

खोजी—वाह, तुम जहाज की लिये फिरते हो। यहाँ मोरचों पर बड़े-बड़े मेजरों और जनरलों से भिड़-भिड़ पड़े हैं। हुज़ूर, पिलौना की लड़ाई में कोई दस लाख आदमी एक तरफ़ थे और सत्तर सवारों के साथ गुलाम दूसरी तरफ था, फिर यह मुलाहिज़ा कीजिए कि चौदह दिन तक बराबर मुकाबिला किया और सबके छक्के छुड़ा दिये।

झम्मन—इतना झूठ, उधर दस लाख, इधर सत्तर! भला कोई बात है।

खोजी—तुम क्या जानो, वहाँ होते तो होश उड़ जाते।

नवाब—भाई, इसमें तो शक नहीं कि तुमने बड़ा नाम किया। खबरदार, आज से इनको कोई खोजी न कहे। पाशा के लकब से पुकारे जायँ।

खोजी—आदाब हुज़ूर। झम्मन गीदी ने मुँह की खायी न आखिर। रईसों की सोहबत में ऐसे पाजियों का रहना मुनासिब नहीं।

नवाब—क्यों साहब, हिंदोस्तान के बाहर भी हमको कोई जानता है? सच सच बताना भाई!

खोजी—हुज़ूर, जहाँ-जहाँ गुलाम गया, हुज़ूर का नाम बादशाहों से ज्यादा मशहूर हो गया।

१०४

आजाद बम्बई से चले तो सबसे पहले जीनत और अख्तर से मुलाकात करने की याद आयी। उस कस्बे में पहुँचे तो एक जगह मियाँ खोजी की याद आ गयी। आप ही आप हँसने लगे। इत्तिफाक से एक गाड़ी पर कुछ सवारियाँ चली जाती थीं। उनमें से एक ने हँस कर कहा—वाह रे भलेमानस, क्या दिमाग पर गरमी चढ़ गयी है क्या? आजाद रंगीन मिजाज आदमी तो थे ही। आहिस्ता से बोले—जब ऐसी-ऐसी प्यारी सूरतें नजर आयें तो आदमी के होश-हवास क्योंकर ठिकाने रहें। इस पर वह नाजनीन तिनक कर बोली—अरे, यह तो देखने ही को दीवाना मालूम होते थे, अपने मतलब के बड़े पक्के निकले। क्यों मियाँ, यह क्या सूरत बनायी है, आधा तीतर और आधा बटेर? खुदा ने तुमको वह चेहरा-मोहरा दिया है कि लाख दो लाख में एक हो। अगर इस शक्ल-सूरत पर जो लम्बे-लम्बे बाल हों, बालों में सोलह रुपये वाला तेल पड़ा हो, बारीक शरबती का अँगरखा हो, जालीलोट के कुरते से गोरे-गोरे डंड नजर आयें, चुस्त घुटन्ना हो, पैरों में एक अशर्फी का टाटबाफी घूट हो, अँगरखे पर कामदानी की सदरी हो, सिर से पैर तक इत्र में बसे हो, मुसाहबों की टोली साथ हो, खिदमतगारों के हाथ में काबुकें और बटेरें हों और इस ठाट के साथ चौक में निकलो, तो अँगुलियाँ उठें कि वह रईस जा रहा है। तब लोग कहें कि इस सज-धज, नख-शिख, कल्ले-ठल्ले का गमरू जवान देखने में नहीं आया। यह सब छोड़ पट्टे कतरवाके लंडूरे हो गये, ऐ वाह री आपकी अक्ल!

आजाद—जरा मैं तो जानूँ कि किसकी जबान से यह बातें सुन रहा हूँ। इनसान हम भी हैं, फिर इनसान से क्या परदा?

नाजनीन—अच्छा, तो आप भी इनसान होने का दम भरते हैं। मेढकी भी चली मदारों को।

आजाद—खैर साहब, इनसान न सही।

नाजनीन—(परदा हटा कर) ऐ साहब लीजिए, बस अब तो चार आँखें हुई, अब कलेजे में ठंडक पहुँची?

आजाद ने देखा तो सोचने लगे कि यह सूरत तो कहीं देखी है और अब खयाल आता है कि आवाज भी कहीं सुनी है। मगर इस वक्त याद नहीं आता कि कहाँ देखा था।

नाजनीन—पहचाना? भला आप क्यों पहचानने लगे! रुतबा पा कर कौन किसे पहचानता है?

आजाद—इतना तो याद आता है कि कहीं देखा है, पर यह खयाल नहीं कि कहाँ देखा है।

नाज़नीन—अच्छा, एक पता देते हैं, अब भी न समझो तो ख़ुदा तुमसे समझे। याद है, किसने यह ग़ज़ल गायी थी?—

कोई मुझ सा दीवाना पैदा न होगा,
हुआ भी तो फिर ऐसा रुसवा न होगा।
न देखा हो जिसने कहे उसके आगे,
इन्हें लन्तरानी सुनाना न होगा।

आज़ाद—अब समझ गया! ज़हूरन, वहाँ की ख़ैर-आफ़ियत बयान करो। उन्हीं दोनों बहनों से मिलने के लिए बम्बई से चला आ रहा हूँ।

ज़हूरन—सब ख़ुदा का फ़ज़ल है। दोनों बहनें आराम से हैं, अख़्तर के मियाँ तो उनका ज़ेवर खा-पी कर भाग गये, अब उन्होंने दूसरी शादी कर ली है। ज़ीनत बेगम ख़ुश हैं।

आज़ाद—तो अब हम उनके मैके जायँ या ससुराल?

ज़हूरन—ससुराल न जाइए, मैके में चलिए और वहाँ से किसी महरी के ज़बानी पैग़ाम भेजिए। हमने तो हुज़ूर को देखते ही पहचान लिया।

आज़ाद—हमको इन दोनों बहनों का हाल बहुत दिनों से नहीं मालूम हुआ।

ज़हूरन—यह तो हुज़ूर, आप ही का क़ुसूर है; कभी आपने एक पुरज़ा तक न भेजा। जिस दिन ज़ीनत बेगम के मियाँ ने उनसे कहा कि लो, आज़ाद वापस आते हैं तो मारे ख़ुशी के खिल उठीं। तो अब आना हो तो आइए, शाम होती है।

थोड़ी देर में आज़ाद ज़ीनत बेगम के मकान पर जा पहुँचे। ज़हूरन ने जा कर उनकी चाची से आज़ाद के आने की इत्तला की। उसने आज़ाद को फ़ौरन बुला लिया।

आज़ाद—बंदगी अर्ज़ करता हूँ। आप तो इतने ही दिनों में बूढ़ी हो गयीं।

चाची—बेटा, अब हमारे जवानी के दिन थोड़े ही हैं। तुम तो ख़ैर-आफ़ियत के साथ आये? आँखें तुम्हें देखने को तरस गयीं।

आज़ाद—जी हाँ, मैं ख़ैरियत से आ गया। दोनों साहबज़ादियों को बुलवाइए। सुना, ज़ीनत की भी शादी हो गयी है।

चाची—हाँ, अब तो दोनों बहनें आराम से हैं। अख़्तरी का पहला मियाँ तो बिलकुल नालायक़ निकला। ज़ेवर, गहना-पाता, सब बेच कर खा गया और ख़ुदा जाने, किधर निकल गया। अब दूसरी शादी हुई है। डाक्टर हैं। साठ तनख़्वाह है और ऊपर से कोई चार रुपया रोज़ मिलता है। ज़ीनत के मियाँ स्कूल में पढ़ाते हैं। दो सौ की तलब है। तुम्हारे चाचाजान तो मुझे छोड़ कर चल दिये।

इधर महरी ने जा कर दोनों बहनों को आज़ाद के आने की ख़बर दी। ज़ीनत ने अपनी आया को साथ लिया और मैके की तरफ़ चली। घर के अंदर क़दम रखते ही आज़ाद से हाथ मिला कर बोली—वाह रे बेमुरव्वतों के बादशाह! क्यों साहब, जब से गये, एक पुरज़ा तक भेजने की क़सम खा ली?

आज़ाद—यह तो न कहोगी कि सबसे पहले तुम्हारे दरवाज़े पर आया। यह तो फ़रमाइए कि यह पोशाक कब से अख्तियार की?

ज़ीनत—जब से शादी हुई। उन्हें अँगरेजी पोशाक बहुत पसंद है।

आज़ाद—ज़ीनत, खुदा गवाह है कि इस वक़्त जामे में फूला नहीं समाता। एक तो तुमको देखा और दूसरे यह खुशखबरी सुनी कि तुम्हारे मियाँ पढ़े-लिखे आदमी हैं और तुम्हें प्यार करते हैं। मियाँ-बीबी में मुहब्बत न हो तो ज़िंदगी का लुत्फ़ ही क्या।

इतने में अख्तरी भी आ गयी और आते ही कहा—मुबारक!

आज़ाद—आपको बड़ी तकलीफ़ हुई, मुआफ़ करना।

अख्तर—मैंने तो सुना था कि तुमने वहाँ किसी साईंसिन से शादी कर ली।

आज़ाद—और तुम्हें इसका यकीन भी आ गया?

अख्तर—यक़ीन क्यों न आता। मर्दों के लिए यह कोई नयी बात थोड़ी ही है। जब लोग एक छोड़, चार-चार शादियाँ करते हैं तो यक़ीन क्यों न आता।

आज़ाद—वह पाजी हैं जो एक के सिवा दूसरी का खयाल भी दिल में लाये।

ज़ीनत—ऐसे मियाँ-बीबी का क्या कहना, मगर यहाँ तो वही पाजी नजर आते हैं जो बीवी के होते भी उसकी परवा नहीं करते।

आज़ाद—अगर बीबी समझदार हो तो मियाँ कभी उसके क़ाबू से बाहर न हो।

अख्तर—यह तो हम मान चुके। खुदा न करे कि किसी भलेमानस का पाला शोहदे मियाँ से पड़े।

ज़ीनत—जिसके मिज़ाज में पाजीपन हो उससे बीबी की कभी न पटेगी। मियाँ सुबह से जायँ तो रात के एक बजे घर में आयें और वह भी किसी रोज़ आवे, किसी रोज़ न आये। बीवी बेचारी बैठी उनकी राह देख रही है। बाज तो ऐसे बेरहम होते हैं कि बात हुई और बीबी को मार बैठे।

आज़ाद—यह तो धुनिया जुलाहों की बातें हैं।

ज़ीनत—नहीं जनाब, जो लोग शरीफ़ कहलाते हैं उनमें भी ऐसे मर्दों की कमी नहीं है।

अख्तर—ऐ चूल्हे में जायँ ऐसे मर्द, जभी तो बेचारियाँ कुएँ में कूद पड़ती हैं, ज़हर खाके सो रहती हैं।

ज़ीनत—मुझे खूब याद है कि एक औरत अपने मियाँ को जरा सी बात पर हाथ फैला-फैला कोस रही थी कि कोई दुश्मन को भी न कोसेगा।

आज़ाद—जहाँ ऐसे मर्द हैं वहाँ ऐसी औरतें भी हैं।

अख्तर—ऐसी बीबी का मुँह लेके झुलस दे।

ज़ीनत—मेरे तो बदन के रोयें खड़े हो गये।

आज़ाद—मेरी तो समझ ही में नहीं आता कि ऐसे मियाँ और बीबी में मेल-जोल कैसे हो जाता है।

इस तरह बातें करते-करते यूरोपियन लेडियों की बात चल पड़ी। ज़ीनत और अख्तर ने हिंदोस्तानी औरतों की तरफ़दारी की और आज़ाद ने यूरोपियन लेडियों की।

आज़ाद—जो आराम यूरोप की औरतों को हासिल है वह यहाँ की औरतों को कहाँ नसीब। धूप में अगर मियाँ-बीबी साथ चलते हों तो मियाँ छतरी लगायेगा।

अख्तर—यहाँ भी महाजनों को देखो। औरतें दस-दस हजार का ज़ेवर पहन कर निकलती हैं और मियाँ लँगोटा लगाये दूकान पर मक्खियाँ मारा करते हैं।

आजाद—यहाँ की औरतों को तालीम से चिढ़ है।

जीनत—इसका इलज़ाम भी मर्दों ही की गरदन पर है। वह खुद औरतों को पढ़ाते डरते हैं कि कहीं ये उनकी बराबरी न करने लगें।

आजाद—हमारे मकान के पास एक महाजन रहते थे। मैं लड़कपन में उनके घर खेलने जाया करता था। जैसे ही मियाँ बाहर से आता, बीबी चारपाई से उतर कर जमीन पर बैठ जाती। अगर तुमसे कोई कहे कि मियाँ के सामने घूँघट करके जाओ तो मंजूर करो या नहीं?

अख्तर—वाह, यहाँ तो घर में कैद न रहा जाय, घूँघट कैसा!

आजाद—यूरोपियन लेडियों को घर के इंतजाम का जो सलीका होता है, वह हमारी औरतों को कहाँ?

जीनत—हिंदोस्तानी औरतों में जितनी वफ़ा होती है वह यूरोपियन लेडियों में तलाश करने से भी न मिलेगी। यहाँ एक के पीछे सती हो जाती हैं, वहाँ मर्द के मरते ही दूसरी शादी कर लेती हैं।

वहाँ दो दिन और रह कर आज़ाद दोनों लेडियों के साथ लखनऊ पहुँचे और उन्हें होटल में छोड़ कर नवाब साहब के मकान पर आये। इधर वह गाड़ी से उतरे, उधर खिदमतगारों ने गुल मचाया कि खुदावंद, मुहम्मद आज़ाद पाशा आ गये। नवाब साहब मुसाहबों के साथ उठ खड़े हुए तो देखा कि आजाद टप-टप करते हुए तुर्की वर्दी डाटे चले आते हैं। नवाब साहब झपट कर उनके गले लिपट गये और बोले—भाईजान, आँखें तुम्हें ढूँढ़ती थीं।

आज़ाद—शुक्र है कि आपकी ज़ियारत नसीब हुई।

नवाब—अजी, अब यह बातें न करो, बड़े-बड़े अँगरेज हुक्काम तुमसे मिलना चाहते हैं।

मुसाहब—बड़ा नाम किया। वल्लाह, करोड़ों आदमी एक तरफ़ और हुजूर एक तरफ़।

खोजी—ग़ुलाम भी आदाब अर्ज करता है।

आजाद—तुम यहाँ कब आ गये ख्वाजा साहब?

नवाब—सुना, आपने तीन-तीन करोड़ आदमियों से अकेले मुकाबिला किया।

ग़फूर—अल्लाह की देन है हुजूर।

नवाब—अरे भाई, गंगा-जमुनी हुक्का भर लाओ आपके वास्ते, आज़ाद पाशा को ऐसा-वैसा न समझना। इनकी तारीफ़ कमिश्नर तक की ज़बान से सुनी। सुना, आपसे रूस के बादशाह से भी मुलाकात हुई। भाई, तुमने वह दरजा हासिल किया है कि हम अगर हुजूर कहें तो बजा है। कहाँ रूस के बादशाह और कहाँ हम।

खोजी—खुदावंद, मोरचे पर इनको देखते तो दंग रह जाते। जैसे शेर कछार में डँकारता है।

नवाब—क्यों भाई आजाद, इन्होंने वहाँ कोई कुश्ती निकाली थी?

आजाद—मेरे सामने तो सैकड़ों ही बार चपतियाये गये और एक बौने तक ने इनको उठाके दे मारा।

मुसाहब—भाई, इस वक्त तो भम्भाड़ा फूट गया।

आजाद—क्या यह गप उड़ाते थे कि मैंने कुश्तियाँ निकालीं?

मस्तियाबेग—ऐ हुजूर, जब से आये हैं, नाक में दम कर दिया। बात हुई और क़रौली निकाली।

ग़फूर—परसों तो कहते थे कि मिस्र में हमने आजाद के बराबर के पहलवान को दम भर में आसमान दिखा दिया।

आज़ाद—क्या खूब! एक बौने तक ने तो उठाके दे मारा, चले वहाँ से दून की लेने।

इतने में नवाब साहब के यहाँ एक मुंशी साहब आये और आज़ाद को देख कर

बोले—वल्लाह, आज़ाद पाशा साहब हैं, आपने तो बड़ा नाम पैदा किया, सुभान अल्लाह!

नवाब—अजी, कमिश्नर साहब इनकी तारीफ करते हैं। इससे ज़्यादा इज़्ज़त और क्या होगी।

खोजी—साहब, लड़ाई के मैदान में कोई इनके सामने ठहरता ही न था।

मुंशी—आपने भी बड़ा हाथ दिया ख्वाजा साहब, मगर आपकी बहादुरी का ज़िक्र कहीं सुनने में नहीं आया।

खोजी—आप ऐसे गीदियों को मैं क्या समझता हूँ, मैंने वह-वह काम किये हैं कि कोई क्या करेगा। क़रौली हाथ में ली और सफ़ों की सफ़ें साफ़ कर दीं।

मुंशी—आप तो नवाब साहब के यहाँ बने हैं न?

खोजी—बने होंगे आप, बनना कैसा! क्या मैं कोई चरकटा हूँ। क़सम है हुज़ूर के कदमों की, सारी दुनिया छान डाली, मगर आज तक ऐसा बदतमीज़ देखने में नहीं आया।

आज़ाद—जनाब ख्वाजा साहब ने जो बातें देखी हैं वह औरों को कहाँ नसीब हुई। आप जिस जगह जाते थे वहाँ की सारी औरतें आपका दम भरने लगती थीं। सबसे पहले बुआ ज़ाफ़रान आशिक हुई।

खोजी—तो फिर आपको बुरा क्यों लगता है? आप क्यों जलते हैं?

नवाब—भई आज़ाद, यह किस्सा ज़रूर बयान करो। अगर आपने इसे छिपा रखा तो वल्लाह, मुझे बड़ा रंज होगा। अब फ़रमाइए, आपको मेरा ज़्यादा ख्याल है या इस गीदी का?

खोजी—हुज़ूर, मुझसे सुनिए। जिस रोज़ आज़ाद पाशा और हम पिलौना के किले में थे, उस रोज़ की कार्रवाई देखने के लायक थी। किला पाँचों तरफ़ से घिरा हुआ था।

मुसाहब—यह पाँचवीं कौन तरफ़ है साहब? यह नयी तरफ़ कहाँ से लाये? जो बात कहोगे वही अनोखी।

खोजी—तुम हो गधे, किसी ने बात की और तुमने काट दी, यों नहीं वों, वों नहीं यों। एक तरफ़ दरिया था और खुश्की भी थी। अब हुई पाँच तरफ़ें या नहीं, मगर तुम ऐसे गौखों को हाल क्या मालूम। कभी लड़ाई पर गये हो? कभी तोप की सूरत देखी है? कभी धुआँ तक तो देखा न होगा और चले हैं वहाँ से बड़े सिपाही बन कर! तो बस जनाब, अब करें तो क्या करें। हाथ-पाँव फूले हुए कि अब जायें तो किधर जायें और भागें तो किधर भागें।

नवाब—सचमुच वक़्त बड़ा नाज़ुक था।

खोजी—और रूसियों की यह कैफियत कि गोले बरसा रहे थे। बस आज़ाद पाशा ने मुझसे कहा कि भाईजान, अब क्या सोचते हो, मरोगे या निकल जाओगे! मेरे बदन में आग लग गयी। बोला, निकलना किसे कहते हैं जी। इतने में क़िले की दीवारें चलनी हो गयीं। जब मैंने देखा कि अब फ़ौज के बचने की कोई उम्मीद

नहीं रही, तो तलवार हाथ में ली और अपने अरबी घोड़े पर बैठ कर निकल पड़ा और उसी वक़्त दो लाख रूसियों को काट कर रख दिया।

मुसाहब—इस झूठ पर खुदा की मार।

खोजी—अच्छा, आज़ाद से पूछिए, बैठे तो हैं सामने।

नवाब—हज़रत, सच-सच कहिएगा। बस फ़क़त इतना बता दीजिए, यह बात कहाँ तक सच है?

आज़ाद—जनाब, पिलौना का जो कुछ हाल बयान किया वह तो सब ठीक है, मगर दो लाख आदमियों का सिर काट लेना महज़ गप है। लुत्फ़ यह है कि पिलौना की तो इन्होंने सूरत भी न देखी। उन दिनों तो यह खास कुस्तुनतुनियाँ में थे।

इस पर बड़े ज़ोर का क़हक़हा पड़ा। बेगम साहब ने कहक़हे की आवाज़ सुनी तो महरी से कहा—जा देख, यह कैसी हँसी हो रही है।

महरी—हुज़ूर, वह आये हैं मियाँ आज़ाद, वह गोरे-गोरे से आदमी, बस वही हँसी हो रही है।

बेगम—अल्लाह, आज़ाद आ गये, जाके खैर-आफ़ियत तो पूछ। हमारी तरफ़ से न पूछना! वहाँ कहीं ऐसी बात न करना।

महरी—वाह हुज़ूर, कोई दीवानी हूँ क्या? सुनती हूँ उस मुल्क में बड़ा नाम किया। तुमने कभी तोप देखी है ग़फ़ूरन?

ग़फ़ूरन—ऐ खुदा न करे हुज़ूर!

महरी—हमने तो तोप देखी है, बल्कि रोज़ ही देखती हूँ।

बेगम—तोप देखी है! तुम्हारे मियाँ सवारों के साईस होंगे। तोप नहीं वह देखी है।

महरी—हुज़ूर, यह सामने तोप ही लगी है या कुछ और?

महल में रहीमन नाम की एक महरी और सबों से मोटी-ताज़ी थी। महरी ने जो उसकी तरफ़ इशारा किया तो बेगम साहब खिल-खिला कर हँस पड़ीं।

रहीमन—क्या पड़ा पाया है बहन ग़फ़ूरन?

ग़फ़ूरन—आज एक नयी बात देखने में आयी है बहन।

रहीमन—हमको भी दिखाओ। देखें कोई मिठाई है या खिलौना है?

ग़फ़ूरन—तोप की तोप और औरत की औरत।

रहीमन—(बात समझ कर) तुम्हीं लोगों ने तो मिल कर हमें नज़र लगा दी।

बेगम—ऐ आग लगे, अब और क्या मोटी होती, फूलके कुप्पा तो हो गयी है।

उधर खोजी ने देखा कि यार लोग रंग नहीं जमने देते तो मौका पा कर आज़ाद के क़दमों पर टोपी रख दी और कहा—भाई आज़ाद, बरसों तुम्हारा साथ दिया है, तुम्हारे लिए जान तक देने को तैयार रहा हूँ। मेरी दो-दो बातें सुन लो।

आज़ाद—मैं आपका मतलब समझ गया, मगर कहाँ तक जब्त करूँ?

खोजी—इस दरबार में मेरे ज़लील करने से अगर आपको कुछ मिले तो आपको अख़्तियार है।

आज़ाद—जनाब, आप मेरे बुज़ुर्ग हैं, भला मैं आपको ज़लील करूँगा ?

खोजी—हाय अफ़सोस, तुम्हारे लिए जान लड़ा दी और अब इस दरबार में, जहाँ रोटियों का सहारा है, आप हमको उल्लू बनाते हैं, जिसमें रोटियों से भी जायँ।

आज़ाद—भई, माफ़ करना, अब तुम्हारी ही सी कहेंगे।

खोजी—मुझे रंग तो बाँधने दो ज़रा।

आज़ाद—आप रंग जमायें, मैं आपकी ताईद करूँगा।

ख्वाजा साहब का चेहरा खिल गया कि अब शप के पुल बाँध दूँगा और जब आज़ाद मेरा कलमा पढ़ने लगेंगे तो फिर क्या पूछना।

नवाब—ख्वाजा साहब, यह क्या बातें हो रही हैं हमसे छिप-छिप कर ?

खोजी—खुदावंद, एक मामले पर बहस हो रही थी।

नवाब—कैसी बहस, किस मामले पर ?

खोजी—हुज़ूर, मेरी राय है कि इस मुल्क में भी नहरें जारी होनी चाहिएँ और आज़ाद पाशा की राय है कि नहरों से आबपाशी तो होगी, मगर मुल्क की आब-हवा खराब हो जायगी।

मस्तियाबेग—अल्लाह, तो यह कहिए कि आप शहर के अंदेशे में दुबले हैं।

खोजी—तुम गौखे हो, यह बातें क्या जानो। पहले यह तो बताओ कि एक बाट्री में कितनी तोपें होती हैं ? चले वहाँ से सुकरात की दुम बनके।

नवाब—खोजी है तो सीड़ी, मगर बातें कभी-कभी ठिकाने की करता है।

आज़ाद—इन बातों का तो इन्हें अच्छा तजरबा है।

ग़फ़ूर—हुज़ूर, इनको बड़ी-बड़ी बातें मालूम हुई हैं।

आज़ाद—साहब, सफ़र भी तो इतना दूर-दराज़ का किया था ! कहाँ हिंदोस्तान, कहाँ रूम ! खयाल तो कीजिए।

मीर साहब—क्यों ख्वाजा साहब, पहाड़ तो आपने बहुत देखे होंगे ?

खोजी—एक-दो नहीं, करोड़ों, आसमान से बातें करनेवाले।

नवाब—भला आसमान वहाँ से कितनी दूर रह जाता है ?

खोजी—हुज़ूर, बस एक दिन की राह। मगर जीना कहाँ ?

नवाब—और क्यों साहब, वहाँ से तो खूब मालूम होता होगा कि मेंह किस जगह से आता है ?

खोजी—जनाब, पहाड़ की चोटी पर मैं था और मेंह नीचे बरस रहा था।

नवाब—क्यों साहब, यह सच है ? अजीब बात है भाई !

आज़ाद—जी हाँ, यह तो होता ही है, पहाड़ पर से नीचे मेंह का बरसना साफ़ दिखाई देता है।

मस्तियाबेग—और जो यह मशहूर है कि बादल तालाबों में पानी पीते हैं ?

खोजी—यह तुम जैसे गधों में मशहूर होगा।

नवाब—भई, यह तजरबेकार लोग हैं, जो बयान करें वह सही है।

खोजी—हुजूर ने दरिया डैन्यूब का नाम तो सुना ही होगा। इतना बड़ा दरिया है कि उसके आगे समुद्र भी कोई चीज़ नहीं। इतना बड़ा दरिया और एक रईस के दीवानखाने के हाते से निकला है।

मीर साहब—ऐं, हमें तो यक़ीन नहीं आता।

खोजी—आप लोग कुएँ के मेढक हैं।

नवाब—मकान के हाते से! जैसे हमारे मकान का यह हाता?

खोजी—बल्कि इससे भी छोटा। हुजूर, खुदा की खुदाई है, इसमें बंदे को क्या दखल। और खुदावंद, हमने इस्तम्बोल में एक अजायबखाना देखा।

मीर साहब—तुमको तो किसी ने धोखे में बंद नहीं कर दिया।

खोजी—बस, इन जाँगलुओं को और कुछ नहीं आता।

नवाब—अजी, तुम अपना मतलब कहो, उस अजायबखाने में कोई नयी बात थी?

खोजी—हुजूर, एक तो हमने भैंसा देखा। भैंसा क्या, हाथी का पाठा था और नाक के ऊपर एक सींग। इत्तिफ़ाक़ से जिस मकान में वह बंद था उसकी तीन छतें टूट गयी थीं। उसे रास्ता मिला तो सिमट-सिमट कर निकला। बनाब, कुछ न पूछिए, दो हजार आदमी गड़-बड़ एक के ऊपर एक इस तरह गिरे कि बेहोश। कोई चार-पाँच सौ आदमी ज़ख्मी हुए। मैंने यह कैफ़ियत देखी तो सोचा, अगर तुम भी भागते हो तो हँसी होगी। लोग कहेंगे कि यह फ़ौज में क्या करते थे। ज़रा से भैंसे को देख कर डर गये। बस एक बार झपटके जो जाता हूँ तो गरदन हाथ आयी, बस बायें हाथ से गरदन दबायी और दबोचके बैठ गया, फिर लाख-लाख जोर उसने मारे, मगर मैंने हुमसने न दिया। ज़रा गरदन हिलायी और मैंने दबोचा। जितने आदमी खड़े थे सब दंग हो गये कि वाह रे पहलवान! आखिर जब मैंने देखा कि उसका दम टूट गया तो गरदन छोड़ दी। फिर उसने बहुत चाहा कि उठे, मगर हुमस न सका। मुझसे लोग मिन्नतें करने लगे कि उसे कठघरे में डाल दो, ऐसा न हो कि बफरे तो सितम ही कर डाले। इस पर मैंने उसे एक थप्पड़ जो लगाया तो चौंधिया कर तड़ से गिरा।

मसितयाबेग—इसके क्या मतलब? आपके खौफ के मारे लेटा तो था ही, फिर लेटे-लेटे क्यों गिर पड़ा?

खोजी—वाही हो। बस हुजूर, मैंने कान पकड़ा तो इस तरह साथ हो लिया जैसे बकरी। उसी कठघरे में फिर बंद कर दिया।

नवाब—क्यों साहब, यह क़िस्सा सच है?

आज़ाद—मैं उस वक़्त मौजूद न था, शायद सच हो।

मीर साहब—बस-बस, क़लई खुल गयी, ग़ज़ब खुदा का, झूठ भी तो कितना! इस वक़्त जी चाहता है, उठके ऐसा गुद्दा दूँ कि दस गज़ ज़मीन में धँस जाय।

खोजी—कसम है खुदा की, जो अब की कोई बात मुँह से निकली तो इतनी क़रौलियाँ भोंकूँगा कि उम्र भर याद करेगा। तू अपने दिल में समझा क्या है। यह सूखी हड्डियाँ लोहे की हैं।

नवाब—इतने बडे जानवर से इनसान क्या मुकाबला कर सकता है?

आज़ाद—हुजूर बात यह है कि बाज आदमियों को यह क़ुदरत होती है कि इधर जानवर को देखा, उधर उसकी गरदन पकड़ी। ख्वाजा साहब को भी यह तरकीब मालूम है।

नवाब—बस, हमको यकीन आ गया।

मस्तियाबेग—हाँ खुदावंद, शायद ऐसा ही हो।

मुसाहब—जब हुजूर की समझ में एक बात आ गयी तो आप किस खेत की मूली हैं।

मीर साहब—और जब एक बात की लिम भी दरियाफ़्त हो गयी तो फिर उसमें इनकार करने की क्या ज़रूरत?

नवाब—क्यों साहब, लड़ाई में तो आपने खूब नाम पैदा किया है, बताइए कि आपके हाथ से कितने आदमियों का खून हुआ होगा?

खोजी—गुलाम से पूछिये, इन्होंने कुल मिला कर दो करोड़ आदमियों को मारा होगा।

नवाब—दो करोड़!

खोजी—तभी तो रूम और शाम, तूरान और मुलतान, आस्ट्रिया और इँगलिस्तान, जर्मनी और फ्रांस में इनका नाम हुआ है।

नवाब—ओफ्फोह, खोजी को इतने मुल्कों के नाम याद हैं!

आज़ाद—हुजूर, अब इन्हें वह खोजी न समझिए।

खोजी—खुदावंद, मैंने एक दरिया पर अकेले एक हज़ार आदमियों का मुकाबिला किया।

नवाब—भाई, मुझे तो यकीन नहीं आता।

मस्तियाबेग—हुजूर, तीन हिस्से झूठ और एक हिस्सा सच।

मीर साहब—हम तो कहते हैं, सब डींग है।

आज़ाद—नवाब साहब, इस बात की तो, हम भी गवाही देते हैं। इस लड़ाई में मैं शरीक न था, मगर मैंने अखबार में इनकी तारीफ देखी थी और वह अखबार मेरे पास मौजूद है।

नवाब—तो अब हमको यकीन आ गया, जब जनरल आज़ाद ने गवाही दी तो फिर सही है।

खोजी—वह मौका ही ऐसा था।

आज़ाद—नहीं-नहीं भाई, तुमने वह काम किया कि बड़े-बड़े जनरलों ने दाँतों अँगुली दबायी। वहीं तो सफशिकन भी तुम्हें नजर आये थे!

खोजी—हुजूर, यह कहना तो मैं भूल ही गया। जिस वक़्त मैं दुश्मनों का सुथ-राव कर रहा था, उसी वक़्त सफ़शिकन को एक दरख्त पर बैठे देखा।

नवाब—लो साहबो, सुनो, मेरे सफशिकन रूम की फ़ौज में भी जा पहुँचे।

मुसाहब—सुभान-अल्लाह! वाह रे सफ़शिकन, बहादुर हो तो ऐसा हो।

खोजी—खुदावंद, इस डॉट-डपट का बटेर भी कम देखा होगा।

नवाब—देखा ही नहीं, कम कैसा! अरे मियाँ ग़फ़ूर, ज़रा घर में इत्तला करो कि सफ़शिकन खैरियत से हैं।

ग़फ़ूर ड्योढी पर आया। वहाँ खिदमतगार, दरबान, चपरासी सब नवाब की सादगी पर खिलखिला कर हँस रहे थे।

खिदमतगार—ऐसा उल्लू का पट्ठा भी कहीं न देखा होगा।

ग़फ़ूर—निरा पागल है, वल्लाह निरा पागल।

चपरासी—अभी देखिए, तो क्या-क्या किस्से गढ़े जाते हैं।

महरी ने यह खबर बेगम साहब को दी तो उन्होंने क़हक़हा लगाया और कहा—इन पाजियों ने नवाब को अँगुलियों पर नचाना शुरू किया। जाके कह दो कि जरी खड़े-खड़े बुलाती हैं।

नवाब साहब उठे, मगर उठते ही फिर बैठ गये और कहा—भाई, जाने को तो मैं जाता हूँ, मगर कहीं उन्होंने मुफ़स्सल हाल पूछा तो?

आजाद—ख्वाजा साहब से उनका हाल पूछिए, इन्हें खूब मालूम है।

खोजी—साथ तो सच पूछिए तो मेरा ही उनका बहुत रहा। इनके अँगरेजी लिबास से चकराते थे।

नवाब—भला किसी मोरचे पर गये थे या नहीं, या दूर ही से दुआ दिया किये?

खोजी—खुदावंद ग़ुलाम जो अर्ज करेगा, किसी को यक़ीन न आयेगा, इस पर मैं झल्ला ऊँगा और मुफ़्त ठाँय-ठाँय होगी।

नवाब—क्या मजाल, खुदा की कसम, अब तुम मेरे खास मुसाहब हो, तुमने जो तजरबा हासिल किया है वह औरों को कहाँ नसीब। तुम्हारा कौन मुकाबिला कर सकता है?

खोजी—यह हुजूर के इक़बाल का असर है, वरना मैं तो किसी शुमार में न था। बात यह हुई कि ग़ुलाम एक नदी के किनारे अफ़ीम घोल रहा था कि जिस दरख्त की तरफ़ नजर डालता हूँ, रोशनी छायी हुई है। घबराया कि या खुदा, यह क्या माजरा है, इसी फ़िक्र में पड़ा था कि हुजूर सफ़शिकन न जाने किधर से आ कर मेरे हाथ पर बैठ गये।

नवाब—खुदा का शुक्र है, तुम तो बड़े खुश हुए होगे?

खोजी—हुजूर, जैसे करोड़ों रुपये मिल गये। पहले हुजूर का हाल बयान किया। फिर शहर का जिक्र करने लगे। दुनिया की सभी बातें उन पर रोशन थीं। बस हुजूर, तो यह कैफ़ियत हुई कि दुश्मन किसी लड़ाई में जम ही न सके। इधर रूसियों

ने तोपों पर बत्ती लगायी, उधर मेरे शेर ने कील ठोंक दी।

नवाब—वाह-वाह, सुभान-अल्लाह, कुछ सुनते हो यारो ?

मस्तियाबेग—खुदावंद, जानवर क्या, जादू है !

खोजी—भला उनको कोई बटेर कह सकता है ! और जानवर तो आप खुद हैं। आप उनकी शान में इतना सख्त और बेहूदा लफ़्ज मुँह से निकालते हैं।

नवाब—मस्तियाबेग, अगर तुमको रहना है तो अच्छी तरह रहो, वरना अपने घर का रास्ता लो। आज तो सफ़शिकन को जानवर बनाया, कल को मुझे जानवर बनाओगे।

मुसाहब—खुदावंद, यह निरे फूहड़ हैं। बात करने की तमीज नहीं।

गफूर—अच्छा तो अब खामोश ही रहिए साहब, कुसूर हुआ।

खोजी—नहीं, सारा हाल तो सुन चुके, मगर तब भी अपनी ही सी कहे जायेंगे, दूसरा अगर इस वक़्त जानवर कहता तो गलफड़े चीर कर घर देता, न हुई क़रौली !

नवाब—जाने भी दो, बेशऊर है।

खोजी—खुदावंद, खुश्की में तो सभी लड़ सकते हैं, मगर तरी में लड़ना मुश्किल है। सो हुजूर, तरी की लड़ाई में सफशिकन सबसे बढ कर रहे। एक दफ़ा का जिक्र है कि एक छोटा-दरिया था। इस तरफ हम, उस तरफ दुश्मन। मोरचे बंदी हो गयी, गोलियाँ चलने लगीं, बस क्या देखता हूँ कि सफशिकन ने एक कंकरी ली और उस पर कुछ कर पढ़ इस जोर से फेंकी कि एक तोप के हजार टुकड़े हो गये।

नवाब—वाह-वाह, सुभान-अल्लाह।

मुसाहब—क्या पूछना है, एक जरा सी कंकरी की यह करामात !

खोजी—अब सुनिए, कि दूसरी कंकरी जो पढ़ कर फेंकी तो एक और तोप फटी और बहत्तर टुकड़े हो गये। कोई तीन-चार हजार आदमी काम आये।

नवाब—इस कंकरी को देखिएगा। वल्लाह-वल्लाह ! एक हजार टुकड़े तोप के और तीन-हज़ार आदमी गायब ! वाह रे मेरे सफ़शिकन !

खोजी—इस तरह कोई चौदह तोपें उड़ा दीं और जितने आदमी थे सब भुन गये। कुछ न पूछिए हुजूर, आज तक किसी की समझ में न आया कि यह क्या हुआ। अगर एक गोला भी पड़ा होता तो लोग समझते, उसमें कोई ऐसा मसाला रहा होगा, मगर कंकरी तो किसी को मालूम भी नहीं हुई।

नवाब—बला की कंकरी थी कि तोप के हजारों टुकड़े कर डाले और हज़ारों आदमियों की जान ली। भई, जरा कोई जा कर सफ़शिकन की काबुक तो लाओ।

इतने में महरी ने फिर आ कर कहा—हुजूर; बड़ा जरूरी काम है, ज़रा चल कर सुन लें। नवाब साहब खोजी को ले कर जनानखाने में चले। खोजी की आँखों में दोहरी पट्टी बाँधी गयी और वह ड्योढी में खड़े किये गये।

बेगम—क्या सफ़शिकन का कोई जिक्र था, कहाँ हैं आजकल ?

नवाब—यह कुछ न पूछो, रूम जा पहुँचे। वहाँ कई लड़ाइयों में शरीक हुए

और दुश्मनों का क़ाफ़िया तंग कर दिया। ख़ुदा जाने, यह सब किससे सीखा है?

बेगम—ख़ुदा की देन है, सीखने से भी कहीं ऐसी बातें आती हैं?

नवाब—वल्लाह, सच कहती हो बेगम साहब! इस वक़्त तुमसे जी ख़ुश होगया। कहाँ तोप, कहाँ सफ़शिकन, ज़रा ख़याल तो करो।

बेगम—अगर पहले से मालूम होता तो सफ़शिकन को हज़ार परदों में छिपाके रखती। हाँ, ख़ूब याद आया, वह तो अभी जीते-जागते हैं और तुमने उनकी क़ब्र बनवा दी।

नवाब—वल्लाह, ख़ूब याद दिलाया। सुभान-अल्लाह!

बेगम—यह तो कोसना हुआ किसी बेचारे को।

नवाब—अगर कहीं यहाँ आ जायँ, और पढ़े लिखे तो हैं ही, कहीं क़ब्र पर नज़र पड़ गयी, उस वक़्त यही कहेंगे कि यह लोग मेरी मौत मना रहे हैं, क्या झपाके से क़ब्र बनवा दी। इससे बेहतर यही है कि खुदवा डालूँ।

बेगम—जहन्नुम में जाय। इस अफ़ीमची को घर के अंदर लाने की क्या ज़रूरत थी?

नवाब—अजी, यह वही हैं जिनको हम लोग ख़ोजी-ख़ोजी कहते थे। लड़ाई के मैदान में सफ़शिकन इन्हीं से मिले थे। अगर कहो तो यहाँ बुला लूँ।

बेगम—ऐ जहन्नुम में जाय मुआ, और सुनो, उस अफ़ीमची को घर के अंदर लायेंगे।

नवाब—सुन तो लो। पहले बूढ़ा, पेट में आँत न मुँह में दाँत, दूसरे मातबर, तीसरे दोहरी पट्टी बँधी है।

बेगम—हाँ, इसका मुज़ायका नहीं, मगर मैं उन मुए लुंगाड़ों के नाम से जलती हूँ, उन्हीं की सोहबत में तुम्हारा यह हाल हुआ।

नवाब—ऐं, क्या ख़ूब!

खोजी—ख़ुदावंद, ग़ुलाम हाज़िर है।

महरी—मैं तो समझी कि कुएँ में से कोई बोला।

बेगम—क्या यह हरदम पीनक में रहता है?

नवाब—ख़्वाजा-साहब, क्या सो गये?

दरबान—ख़्वाजा साहब, देखो, सरकार क्या फ़रमाते हैं?

खोजी—क्या हुक्म है ख़ुदावंद!

बेगम—देखो, ख़ुदा जानता है, ऊँघ रहा था। मैं तो कहती ही थी।

नवाब—भाई, ज़रा सफ़शिकन का हाल तो कह चलो।

खोजी—ख़ुदावंद, तो अब आँखें तो खुलवा दीजिए।

बेगम—क्या कुतिया के पिल्ले की आँखें हैं जो अब भी नहीं खुलतीं।

नवाब—पहले हाल तो बयान करो। ज़रा तोपवाला ज़िक्र फिर करना, यहाँ किसी को यक़ीन ही नहीं आता।

खोजी—हुजूर, क्योंकर यक़ीन आये, जब तक अपनी आँखों से न देखेंगे, कभी न मानेंगे।

नवाब—तो भाई, हमने क्योंकर मान लिया, इतना तो सोचो।

खोजी—खुदा ने सरकार को देखनेवाली आँखें दी हैं। आप न समझें तो कौन समझे। हुजूर, यह कैफ़ियत हुई कि दरिया के दोनों तरफ़ आमने-सामने तोपें चढ़ी हुई थीं। बस सफ़शिकन ने एक कंकरी उठा कर, खुदा जाने क्या जादू फूँक दिया कि इधर कंकरी फेंकी और उधर तोप के दो सौ टुकड़े और हर टुकड़े ने सौ-सौ रूसियों की जान ली।

बेगम—इस झूठ को आग लगे, अफ़ीम पी-पीके निगोड़ों को क्या-क्या सूझती है। बैठे-बैठे एक कंकरी से तोप के सौ टुकड़े हो गये। खुदा का डर ही नहीं।

नवाब—तुम्हें यकीन ही न आये तो कोई क्या करे।

बेगम—चलो, बस खामोश रहो, ज़रा सा मुआ बटेर और कंकरी से उसने तोप के दो सौ टुकड़े कर डाले। खदा जानता है, तुम अपनी फ़स्द खुलवाओ।

नवाब—अब खुदा जाने, हमें जनून है या तुम्हें।

खोजी—खुदावंद, बहस से क्या फ़ायदा। औरतों की समझ मे यह बातें नहीं आ सकतीं।

बेगम—महरी, ज़रा दरबान से कह, इस निगोड़े अफ़ीमची को जूते मारके निकाल दे। खबरदार जो इसको कभी ड्योढ़ी में आने दिया।

खोजी—सरकार तो नाहक खफ़ा होती हैं।

बेगम—मालूम होता है, आज मेरे हाथों तुम पिटोगे, अरे महरी, खड़ी सुनती क्या है, जाके दरबान को बुला ला।

हुसैनी दरबान ने आ कर खोजी के कान पकड़े और चपतियाता हुआ ले चला।

खोजी—बस-बस, देखो, कान-वान की दिल्लगी अच्छी नहीं।

महबूबन—अब चलता है या मचलता है?

खोजी—(टोपी ज़मीन से उठा कर) अच्छा, अगर आज जीते बच जाओ तो कहना। अभी एक थप्पड़ दूँ तो दम निकल जाय।

इतना कहना था कि दूसरी महरी आ पहुँची और कान पकड़ कर चपतियाने लगी। खोजी बहुत बिगड़े, मगर सोचे कि अगर सब लोगों को मालूम हो जायगा कि महरियों की जूतियाँ खायीं तो बेढब होगी। झाड़-पोंछ कर बाहर आये और एक पलँग पर लेट रहे।

खोजी के जाने के बाद बेगम साहब ने नवाब को खूब ही आड़े हाथों लिया। ज़रा सोचो तो कि तुम्हें हो क्या गया है। कहाँ बटेर और कहाँ तोप, खुदा झूठ न बोलाये तो बिल्ली खा गयी हो, या इन्हीं मुसाहबों में से किसी ने निकाल कर बेच लिया होगा और तुम्हें पट्टी पढ़ा दी कि वह सफ़शिकन थे। आखिर तुम किसी अपने दोस्त से पूछो। देखो, लोगों की क्या राय है?

नवाब—खुदा के लिए मेरे मुसाहबों को न कोसो, चाहे मुझे बुरा-भला कह लो।

बेगम—इन मुफ़्तखोरों से खुदा समझे।

नवाब—ज़रा आहिस्ता-आहिस्ता बोलो, कहीं वह सब सुन लें, तो सब के सब चलते हों और मैं अकेला मक्खियाँ मारा करूँ।

बेगम—ऐ है, ऐसे बड़े खरे हैं। तुम जूतियाँ मार के निकालो तो भी ये चूँ न करें। जो सब निकल जायँ तो होगा क्या? वह कल जाते हों तो आज ही जायँ।

महरी—हुजूर तो चूक गयीं, जरी इस मुए खोजी की कहानी तो सुनी होती। हँसते-हँसते लोट जातीं।

बेगम—सच, अच्छा तो उसको बुलाओ जरी, मगर कह देना कि झूठ बोला और मैंने खबर ली।

नवाब—या खुदा, यह तुमसे किसने कह दिया कि वह झूठ ही बोलेगा। इतने दिनों से दरबार में रहता है, कभी झूठ नहीं बोला तो अब क्यों झूठ बोलने लगा? और आखिर इतना तो समझो कि झूठ बोलने से उसको मिल क्या जायगा?

बेगम—अच्छा, बुलाओ। मैं भी ज़रा सफ़शिकन का हाल सुनूँ।

महरी ने जा कर खोजी को बुलाया। ख्वाजा साहब झल्लाये हुए पलँग पर पड़े थे। बोले—जा कर कह दो, अब हम वह खोजी नहीं हैं जो पहले थे, आनेवाले और जानेवाले, बुलानेवाले और बुलवानेवाले, सबको कुछ कहता हूँ।

आखिर लोगों ने समझाया तो ख्वाजा साहब ड्योढ़ी में आये और बोले—आदाब अर्ज़ करता हूँ सरकार, अब क्या फिर कुछ मेहरबानी की नज़र ग़रीब के हाल पर होगी? अभी कुछ इनाम बाकी हो तो अब मिल जाय।

बेगम—सफ़शिकन का कुछ हाल मालूम हो तो ठीक-ठीक कह दो। अगर झूठ बोले तो तुम जानोगे।

खोजी—वाह री किस्मत, हिंदोस्तान से बम्बई गये, वहाँ सब के सब 'हुजूर-हुजूर' कहते थे। तुर्की और रूस में कोहकाफ़ की परियाँ हाथ बाँधे हाज़िर रहती थीं। मिस रोज एक-एक बात पर जान देती थीं, अब भी उसकी याद आ जाती है तो रात भर अच्छे-अच्छे ख्वाब देखा करता हूँ—

ख्वाब में एक नूर आता है नज़र;
याद में तेरी जो सो जाते हैं हम।

बेगम—अब बताओ, है पक्का अफ़ीमची या नहीं, मतलब की बात एक न कही वाही-तबाही बकने लगा।

खोजी—एक दफ़े का जिक्र है कि पहाड़ के ऊपर तो रूसी और नीचे हमारी फ़ौज। हमको मालूम नहीं कि रूसी मौजूद हैं। वहीं पड़ाव का हुक्म दे दिया। फ़ौज तो खाने पीने का इंतजाम करने लगी और मैं अफ़ीम घोलने लगा कि एका-एक पहाड़ पर से तालियों की आवाज आयी। मैं प्याली ओठों तक ले गया था कि

ऊपर से रूसियों ने बाढ़ मारी। हमारे सैकड़ों आदमी घायल हो गये। मगर वाह रे मैं, खुदा गवाह है, प्याली हाथ से न छूटी। एकाएक देखता हूँ कि सफ़शिकन उड़े चले आते हैं, आते ही मेरे हाथ पर बैठ कर चोंच अफ़ीम से तर की, और उसके दो कतरे पहाड़ पर गिरा दिये। बस धमाके की आवाज़ हुई और पहाड़ फट गया। रूस की सारी फ़ौज उसमें समा गयी। मगर हमारी तरफ़ का एक आदमी भी न मरा। मैंने सफशिकन का मुँह चूम लिया।

बेगम—भला सफशिकन बातें किस ज़बान में करते हैं ?

खोजी—हुज़ूर, एक ज़बान हो तो कहूँ। उर्दू, फारसी, अरबी, तुर्की, अँगरेजी।

बेगम—क्या और ज़बानों के नाम नहीं याद हैं ?

खोजी—अब हुज़ूर से कौन कहे।

नवाब—अब यकीन आया कि अब भी नहीं ? और जो कुछ पूछना हो, पूछ लो।

बेगम—चलो, बस चुपके बैठ रहो। मुझे रंज होता है कि इन हरामखोरों के पास बैठ बैठ तुम कहीं के न रहे।

नवाब—हाय अफ़सोस, तुम्हें यकीन ही नहीं आता, भला सोचो तो, यह सब के सब मुझसे क्यों झूठ बोलेंगे। खोजी को मैं कुछ इनाम दे देता हूँ या कोई जागीर लिख दी है इसके नाम ?

खोजी—खुदावंद, अगर इसमें ज़रा भी शक हो तो आसमान फट पड़े। झूठ बात तो ज़बान से निकलेगी ही नहीं, चाहे कोई मार डाले।

बेगम—अच्छा, ईमान से कहना कि कभी मोरचे पर भी गये या झूठ-मूठ के फ़िकरे ही बनाया करते हो ?

खोजी—हुज़ूर मालिक हैं, जो चाहें, कह दें, मगर ग़ुलाम ने जो बात अपनी आँखों देखी, वह बयान की। अगर फ़र्क़ हो तो फाँसी का हुक्म दे दीजिए।

एक बूढ़ी महरी ने खोजी की बातें सुनने के बाद बेगम से कहा—हुज़ूर, इसमें ताज्जुब की कौन बात है, हमारे महल्ले में एक बड़ा काला कुत्ता रहा करता था। महल्ले के लड़के उसे मारते, कान पकड़ कर खींचते, मगर वह चूँ भी नहीं करता था। एक दिन महल्ले के चौकीदार ने उस पर एक ढेला फेंका। ढेला उसके कान में लगा और कान से खून बहने लगा। चौकीदारी दूसरा ढेला मारना ही चाहता था कि एक जोगी ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, क्यों जान का दुश्मन हुआ है बाबा। यह कुत्ता नहीं है। उसी रात को चौकीदार ने ख्वाब देखा कि कुत्ता उसके पास आया। और अपना घाव दिखा कर कहा—या तो हमीं नहीं, या तुम्हीं नहीं। सबेरे जो चौकीदार उठा तो उसने पास-पड़ोसवालों से ख्वाब का जिक्र किया। मगर अब देखते हैं तो कुत्ते का कहीं पता ही नहीं। दोपहर को चौकीदार कुएँ पर पानी भरने गया तो पानी देखते ही भूँकने लगा।

बेगम—सच ?

महरी—हुजूर, अल्लाह बचाये इस बला से, कुत्ते के भेस में क्या जाने कौन था।

नवाब—अब इसको क्या कहोगी भई, अब भी सफ़शिकन के कमाल को न मानोगी?

बेगम—हाँ, ऐसी बातें तो हमने भी सुनी हैं, मगर..

खोजी—अगर-मगर की गुंजायश नहीं, गुलाम आँखों देखी कहता है। एक क़िस्सा और सुनिए, आपको शायद इसका भी यक़ीन न आये। सफ़शिकन मेरे सिर पर आ कर बैठ गये और कहा, रूसियों की फ़ौज में घँस पड़ो। मेरे होश उड़ गये। बोला, साहब आप हैं कहाँ? मेरी जान जायगी, आपके नज़दीक दिल्लगी है, मगर वह सुनते किसकी हैं। कहा, चलो तो तुम! आधी रात थी, घटा छायी हुई थी, मगर मजबूरन जाना पड़ा। बस, रूसी फ़ौज में जा पहुँचा। देखा, कोई गाता है, कोई सोता है। हम सबको देखते हैं, मगर हमें कोई नहीं देखता। सफ़शिकन अस्तबल की तरफ़ चले और फुदक के एक घोड़े की गरदन पर जा बैठे। घोड़ा धम से जा गिरा, अब जिस घोड़े की गरदन पर बैठते हैं, जमीन पर लोटने लगता है। इस तरह कोई सात हज़ार घोड़े उसी दम धम-धम करके लोट गये। फ़ौज से निकले तो आपने पूछा, कहो आज की दिल्लगी देखी, कितने सवार बेकार हुए!

मैं—हुजूर, पूरे सात हजार!

सफ़शिकन—आज इतना ही बहुत है, कल फिर देखी जायगी, चलो, अपने पड़ाव पर चलें। चलते-चलते जब थक जाओ तो हमसे कह दो।

मैं—क्यों, आपसे क्यों कह दूँ?

सफ़शिकन—इसलिए कि हम उतर जायँ।

मैं—वाह, मुट्ठी भर के आप, भला आपके बैठने से मैं क्या थक जाऊँगा? आप क्या और आपका बोझ क्या!

इतना सुनना था कि खुदा जाने ऐसा कौन सा जादू कर दिया कि मेरा क़दम उठाना मुहाल हो गया। मालूम होता था, सिर पर पहाड़ का बोझा लदा हुआ है। बोला, हुजूर, अब तो बहुत ही थक गया, पैर ही नहीं उठते। बस, फुर्र से उड़ गये। ऐसा मालूम हुआ कि सिर से दस-बीस करोड़ मन बोझा उतर गया।

नवाब—यह तो भाई, नयी-नयी बातें मालूम होती जाती हैं। वाह रे सफ़शिकन!

खोजी—हुजूर, खुदा जाने, किस औलिया ने यह भेस बदला है।

बेगम साहब ने इस वक़्त तो कुछ न कहा, मगर ठान ली कि आज रात को नवाब साहब को खूब आड़े हाथों लूँगी। नवाब साहब ने समझा कि बेगम साहब को सफ़शिकन के कमाल का यकीन आ गया। बाहर आ कर बोले—वल्लाह, तुमने तो ऐसा समा बाँध दिया कि अब बेगम साहब को उम्र भर शक न होगा।

खोजी—हुजूर, सब आँखों देखी बात बयान की है।

नवाब—यही तो मुश्किल है कि वह सच्ची बातों को भी बनावट समझती हैं।

खोजी—समझ में नहीं आता, मुझसे क्यों इतनी नाराज़ हैं।

नवाब—नाराज़ नहीं हैं जी, मतलब यह कि अब इस बात को सिवा पढ़े-लिखे आदमी के और कौन समझ सकता है। और भई, मैं सोचता हूँ कि आखिर कोई झूठ क्यों बोलने लगा, झूठ बोलने में किसी को फ़ायदा ही क्या है।

खोजी—ऐ सुभान-अल्लाह, क्या बात हुज़ूर ने पैदा की है! सच-मुच कोई झूठ क्यों बोलने लगा। एक तो झूठा कहलाये, दूसरे बेआबरू हो।

नवाब—भाई, हम इनसान को खूब पहचानते हैं। आदमी का पहचानना कोई हमसे सीखे। मगर दो को हमने भी नहीं पहचाना। एक तुमको, दूसरे सफ़शिकन को।

खोजी—खुदावंद, मैं यह न मानूँगा, हुज़ूर की नज़र बड़ी बारीक है।

नवाब साहब खोजी की बातों से इतने खुश हुए कि उनके हाथ में हाथ दिये बाहर आये। मुसाहबों ने जो इतनी बेतकल्लुफ़ी देखी तो जल मरे, आपस में इशारे होने लगे—

मस्तियाबेग—ऐं, मियाँ खोजी ने तो जादू कर दिया यारो!

ग़फ़ूर—ज़रूर किसी मुल्क से जादू सीख आये हैं।

मस्तियाबेग—तजरबाकार हो गया न, अब इसका रंग कुछ जम गया।

ग़फ़ूर—कैसा कुछ, अब तो सोलहों आने के मालिक हैं।

मिरज़ा—अरे मियाँ, दोनों हाथ मे हाथ दे कर निकले, वाह री किस्मत। मगर यह खुश किस बात पर हुए?

ग़फ़ूर—इनको अभी तक यही नहीं मालूम, बताइए साहब!

मस्तियाबेग—मियाँ, अजब कूढ़मग्ज़ हो, कहने लगे, खुश किस बात पर हुए! सफ़शिकन की तारीफ़ों के पुल बाँध दिये। सूझ ही तो है, अब लाख चाहें कि उसका रंग फीका कर दें, मुमकिन नहीं।

मिरज़ा—इस वक्त तो खोजी का दिमाग़ चौथे आसमान पर होगा।

मस्तियाबेग—अजी, बल्कि और उसके भी पार, सातवें आसमान पर।

ग़फ़ूर—मैं बाग में गया था, देखा, नवाब साहब मोढ़े पर बैठे हैं और खोजी तिपाई पर बैठा हुआ, खास सरकार की गुड़गुड़ी पी रहा है!

मिरज़ा—सच, तुम्हें खुदा की कसम!

ग़फ़ूर—चल कर देख लीजिए न, बस जादू कर दिया। यह वही खोजी हैं जो चिलमें भरा करते थे, मगर जादू का जोर, अब दोस्त बने हुए हैं।

मिरज़ा—खोजी को सब के सब मिल कर मुबारकबाद दो और उनसे बढ़िया दावत लो। अब इससे बढ़ कर कौन दरजा है!

इतने में नवाब साहब खोजी को लिये हुए दरबार मे आये, मुसाहब उठ खड़े हुए। ख्वाजा साहब को सरकार ने अपने करीब बिठाया और आज़ाद से बोले—हजरत, आपकी सोहबत में ख्वाजा साहब पारस ही गये।

आज़ाद—जनाब, यह सब आपकी खिदमत का असर है। मेरी सोहबत में तो थोड़े ही दिनों से हैं, आपकी शागिर्दी करते बरसों गुज़र गये।

नवाब—वाह, अब तो ख्वाजा साहब मेरे उस्ताद हैं जनाब!

मस्तियाबेग—खुदावंद, यह क्या फ़रमाते हैं। हुज़ूर के सामने खोजी की क्या हस्ती है?

नवाब—क्या बकता है? खोजी की तारीफ़ से तुम सब क्यों जल मरते हो?

मिरज़ा—खुदावंद, यह मस्तियाबेग तो दूसरों को देख कर हमेशा जलते रहते हैं।

ग़फ़ूर—यह परले सिरे के गुस्ताख हैं, बात तो समझे नहीं, जो कुछ मुँह में आया, बक दिये। आखिर ख्वाजा साहब बेचारे ने इनका क्या बिगाड़ा!

नवाब—मुझसे सुनो साहब, दिल में पुरानी कुदूरत है।

मुसाहब—सुभान-अल्लाह! हुज़ूर, बस यही बात है।

खोजी—हुज़ूर इसका ख्याल न करें। यह लोग जो चाहें, कहें। भाई ग़फ़ूर, ज़रा सा पानी पीयेंगे।

नवाब—ठंडा पानी लाओ ख्वाजा साहब के वास्ते।

खिदमतगार सुराही का झला ठंडा पानी लाया, चाँदी के कटोरे में पानी दिया। जब ख्वाजा साहब पानी पी चुके तो नवाब साहब ने पानदान से दो गिलौरियाँ निकाल कर खास अपने हाथ से उनको दीं।

मिरज़ा—मैंने मस्तियाबेग से हज़ार बार कहा कि भाई, तुम किसी को देख के जले क्यों मरते हो, कोई तुम्हारा हिस्सा नहीं छीन ले जाता, फिर ख्वाहमख्वाह के लिए अपने को क्यों हलकान करते हो।

नवाब—मुझे इस वक्त उसकी बातें बहुत नागवार मालूम हुईं।

मुसाहब—जानते हैं कि इस दरबार में खुशामदियों की दाल नहीं गलती, फिर भी अपनी हरकत से बाज़ नहीं आते।

मुसाहब लोग तो बाहर बैठे सलाह कर रहे थे, इधर दरबार में नवाब साहब, आजाद और खोजी में यूरोप के रईसों का जिक्र होने लगा। आजाद ने यूरोप के रईसों की खूब तारीफ की।

नवाब—क्यों साहब, हम लोग भी उन रईसों की तरह रह सकते हैं?

आजाद—बेशक, अगर उन्हीं की राह पर चलिए। आपकी सोहबत में चंडू-बाज़, मदकिये, चरसिये इस कसरत से हैं कि शायद ही कोई इनसे खाली हो। यूरोप के रईसों के यहाँ ऐसे आदमी फटकने भी न पायें!

नवाब—कहिए तो ख्वाजा साहब के सिवा और सबको निकाल दूँ।

खोजी—निकालिए चाहे रहने दीजिए, मगर इतना हुक्म जरूर दे दीजिए कि आपके सामने दरबार में न कोई चंडू के छींटे उड़ाये, न मदक के दम लगाये और न अफ़ीम घोले।

आजाद—दूसरी बात यह है कि खुशामदी लोग आपकी झूठी तारीफ़ें कर-

करके खुश करते हैं। इनको झिड़क दीजिए और इनकी खुशामद पर खुश न होइए।

नवाब—आप ठीक कहते हैं। वल्लाह, आपकी बात मेरे दिल में बैठ गयी। यह सब भरें दे-दे कर मुझे बिलटाये देते हैं।

आज़ाद—आपको खुदा ने इतनी दौलत दी है, यह इस वास्ते नहीं कि आप खुशामदियों पर लुटायें। इसको इस तरह काम में लायें कि सारी दुनिया में नहीं तो हिंदोस्तान भर में आपका नाम हो जाय। खैरातखाना क़ायम कीजिए, अस्पताल बनवाइए, आलिमों की कदर कीजिए। मैंने आपके दरबार में किसी आलिम फ़ाजिल को नहीं देखा।

नवाब—बस, आज ही से इन्हें निकाल बाहर करता हूँ।

आज़ाद—अपनी आदतें भी बदल डालिए, आप दिन को ग्यारह बजे सो कर उठतें और हाथ-मुँह धो कर चंडू के छींटे उड़ाते हैं। इसके बाद इन फिकरेबाज़ों से चुहल होती है। सुबह का खाना आपको तीन बजे नसीब होता है। आप फिर आराम करते हैं तो शाम से पहले नहीं उठते। फिर वही चंडू और मदक का बाज़ार गर्म होता है। कोई दो बजे रात को आप खाना खाते हैं। अब आप ही इनसाफ़ कीजिए कि दुनिया में आप कौन सा काम करते हैं।

नवाब—इन बदमाशों ने मुझे तबाह कर दिया।

आज़ाद—सबेरे उठिए, हवा खाने जाइए, अखबार पढ़िए, भले आदमियों की सोहबत में बैठिए, अच्छी-अच्छी किताबें पढ़िए, ज़रूरी कागजों को समझिए; फिर देखिए कि आपकी जिंदगी कितनी सुधर जाती है।

नवाब—खुदा की क़सम, आज से ऐसा ही करूँगा, एक-एक हर्फ़ की तामील न हो तो समझ लीजिएगा, बड़ा झूठा आदमी है।

खोजी—हुजूर, मुझे तो बरसों इस दरबार में हो गये, जब सरकार ने कोई बात ठान ली तो फ़िर चाहे ज़मीन और आसमान एक तरफ़ हो जाय, आप उसके खिलाफ कभी न करेंगे। बरसों से यही देखता आता हूँ।

आजाद—एक इश्तहार दे दीजिए कि लोग अच्छी अच्छी किताबें लिखें, उन्हें इनाम दिया जायगा। फिर देखिए, आपका कैसा नाम होता है!

नवाब—मुझे किसी बात में उज्र नहीं है।

उधर मुसाहबों में और ही बातें हो रही थीं—

मस्तियाबेग—वल्लाह, आज तो अपना खून पी कर रह गया यारो।

मिरज़ा—देखते हो, किस तरह झिड़क दिया!

मस्तियाबेग—झिड़क क्या दिया, बस कुछ न पूछो, मैं जान-बूझ कर चुप हो रहा, नहीं बेढब हो जाती। किसी ने अपनी इज़्ज़त नहीं बेची है। और अब आपस में सलाहें हो रही हैं। खोजी ने सबको बिलटाया।

मस्तियाबेग—कोई लाख कहे, हम न मानेंगे, यह सब जादू का खेल है।

ग़फ़ूर—मियाँ, इसमें क्या शक है, यह जादू नहीं तो है क्या?

मिरज़ा—अजी, उल्लू का गोश्त नवाब साहब को न खिला दिया हो तो नाक कटवा डालूँ। इन लोगों ने मिल कर उल्लू का गोश्त खिलवा दिया है, जभी तो उल्लू बन गये, अब उनसे कहे कौन?

मस्तियाबेग—कहके बहुत खुश हुए कि अब किसी दूसरे की हिम्मत होगी।

ग़फ़ूर—अब तो कुछ दिन खोजी की खुशामद करनी पड़ेगी।

मस्तियाबेग—हमारी जूती उस पाजी की खुशामद करती है।

मिरज़ा—फिर निकाले जाओगे, यहाँ रहना है तो खोजी को बाप बनाओ, दरिया में रहना और मगर से बैर?

मस्तियाबेग—दो-चार दिन रहके यहाँ का रंग ढंग देखते हैं। अगर यही हाल रहा तो हमारा इस्तीफ़ा है, ऐसी नौकरी से बाज आये! बराबरवालों की खुशामद हमसे न हो सकेगी।

मीर साहब—बराबरवाले कौन? तुम्हारे बराबरवाले होंगे। हम तो खोजी को ज़लील समझते हैं।

ग़फ़ूर—अरे साहब, अब तो वह सबके अफ़सर हैं और हम तो उन्हें गुड़गुड़ी पिला चुके। आप लोग उन्हें मानें या न मानें, हमारे तो मालिक हैं।

मिरज़ा—सौ बरस बाद घूरे के भी दिन फिरते हैं। भाईजान, किसी को इसका गुमान भी था कि खोजी को सरकार इस तपाक से अपने पास बिठायेंगे, मगर अब आँखों देख रहे हैं।

नवाब साहब बाहर आये तो इस ढंग से कि उनके हाथ में एक छोटी सी गुड़गुड़ी और ख्वाजा साहब पी रहे हैं। मुसाहबों के रहे-सहे होश भी उड़ गये। ओ-फ़्फ़ोह, सरकार के हाथ में गुड़गुड़ी और यह टुकरचा, रईस बना हुआ दम लगा रहा है। नवाब साहब मसनद पर बैठे तो खोजी को भी अपने बराबर बिठाया। मुसाहब सन्नाटे में आ गये। कोई चूँ तक नहीं करता, सबकी निगाह खोजी पर है। बारे मीर साहब ने हिम्मत करके बात-चीत शुरू की—

मीर साहब—खुदावंद, आज कितनी बहार का दिन है, चमन से कैसी भीनी-भीनी खुशबू आ रही है।

नवाब—हाँ, आज का दिन इसी लायक है कि कोई इल्मी बहस हो।

मीर साहब—खुदावंद, आज का दिन तो गाना सुनने के लिए बहुत अच्छा है।

नवाब—नहीं, कोई इल्मी बहस होनी चाहिए। ख्वाजा साहब, आप कोई बहस शुरू कीजिए।

मस्तियाबेग—(दिल में) इनके बाप ने भी कभी इल्मी बहस की थी?

मिरज़ा—हुजूर, ख्वाजा साहब की लियाकत में क्या शक है, मगर...।

नवाब—अगर-मगर के क्या मानी? क्या ख्वाजा साहब के आलिम होने में आप लोगों को कुछ शक है?

मिरज़ा—किस इल्म की बहस कीजिएगा ख्वाजा साहब ? इल्म का नाम तो मालूम हो।

खोजी—हम इल्म जालोजी में बहस करते हैं, बतलाइए, इस इल्म का क्या मतलब है ?

मिरज़ा—किस इल्म का नाम लिया आपने, जालोजी ! यह जालोजी क्या बला है ?

नवाब—जब आपको इस इल्म का नाम तक नहीं मालूम तो बहस क्या खाक कीजिएगा। क्यों ख्वाजा साहब, सुना है कि दरिया में जहाज़ों के डुबो देने के औज़ार भी अँगरेज़ों ने निकाले हैं। यह तो खुदाई करने लगे।

खोजी—उस औज़ार का नाम तारपेडो है। दो जहाज़ हमारे सामने डुबो दिये गये। पानी के अंदर ही अंदर तारपेडो छोड़ा जाता है, बस जैसे ही जहाज़ के नीचे पहुँचा वैसे ही फटा। फिर तो जनाब, जहाज़ के करोड़ों टुकड़े हो जाते हैं।

मस्तियाबेग—और क्यों साहब, यह बम का गोला कितनी दूर का तोड़ करता है ?

खोजी—बम के गोले कई किस्म के होते हैं, आप किस क़िस्म का हाल दरियाफ्त करते हैं ?

मस्तियाबेग—अजी, यही बम के गोले।

खोजी—आप तो यही-यही करते हैं, उसका नाम तो बतलाइए ?

नवाब—क्यों जनाब, लड़ाई के वक्त आदमी के दिल का क्या हाल होता होगा ? चारों तरफ़ मौत ही मौत नज़र आती होगी ?

मिरज़ा—मैं अर्ज करूँ हुज़ूर, लड़ाई के मैदान में आ कर जग...।

नवाब—चुप रहो साहब, तुमसे कौन पूछता है, कभी बंदूक की सूरत भी देखी है या लड़ाई का हाल ही बयान करने चले।

खोजी—जनाब, लड़ाई के मैदान में जान का ज़रा भी खौफ़ नहीं मालूम होता। आपको यकीन न आयेगा, मगर मैं सही कहता हूँ कि इधर फ़ौजी बाजा बजा और उधर दिलों में जोश उमड़ने लगा। कैसा ही बुज़दिल हो, मुमकिन नहीं कि तलवार खींच कर फौज के बीच में धँस न जाय। नंगी तलवार हाथ में ली और दिल बढ़ा। फिर अगर दो करोड़ गोले भी सिर पर आयें तो क्या मजाल कि आदमी हट जाय।

खोजी यही बातें कर रहे थे कि खिदमतगार ने आ कर कहा—हुज़ूर, बाहर एक साहब आये हैं, और कहते हैं, नवाब साहब को हमारा सलाम दो, हमें उनसे कुछ कहना है। नवाब साहब ने कहा—ख्वाजा साहब, आप ज़रा जा कर दरियाफ्त कीजिए कि कौन साहब हैं। खोजी बड़े ग़रूर के साथ उठे और बाहर जा कर साहब को सलाम किया। मालूम हुआ कि यह पुलीस का अफ़सर है, ज़िले के हाकिम ने उसे आज़ाद का हाल दरियाफ़्त करने के लिए भेजा है।

खोजी—आप साहब से जा कर कह दीजिए, आज़ाद पाशा नवाब साहब के मेहमान हैं और उनके साथ ख्वाजा साहब भी हैं।

अफ़सर—तो साहब उनसे मिलनेवाला है। अगर आज उनको फ़ुरसत हो तो अच्छा, नहीं तो जब उनका जी चाहे।

खोजी—मैं उनसे पूछ कर आपको लिख भेजूँगा।

इंस्पेक्टर साहब चले गये तो मस्तियाबेग ने कहा—क्यों साहब, यह बात हमारी समझ में नहीं आयी कि आपने आज़ाद पाशा से इसी वक़्त क्यों न पूछ लिया। एक ओहदेदार को दिक करने से क्या फ़ायदा? खोजी ने त्योरियाँ बदल कर कहा—तुमसे हजार बार मना किया कि इस बारे में न बोला करो, मगर तुम सुनते ही नहीं। तुम तो हो अकल के दुश्मन, हम चाहते हैं कि आजाद पाशा जब किसी हाकिम से मिलें तो बराबर की मुलाकात हो। इस वक़्त यह वर्दी नहीं पहने हैं। कल जब यह फ़ौजी वर्दी पहन कर और तमगे लगा कर हाकिम-ज़िला से मिलेंगे तो वह खड़ा हो कर ताजीम करेगा।

नवाब—अब समझे या अब भी गधे ही बने हो? ख्वाजा साहब को तौलने चले हैं! वल्लाह, ख्वाजा साहब, आपने खूब सोची। अगर इस वक्त कह देते कि आज़ाद वह क्या बैठे हैं तो कितनी किरकिरी होती।

इतने में खाने का वक़्त आ पहुँचा। खाना चुना गया, सब लोग खाने बैठे, उस वक़्त खोजी ने एक किस्सा छेड़ दिया—हुजूर, एक बार जब अँगरेजों की डच लोगों से मुठभेड़ हुई तो अँगरेजी अफ़सर ने कहा, अगर कोई आदमी दूसरी तरफ़ के जहाज़ों को ले आये तो हमारी फ़तह हो सकती है, नहीं तो हमारा बेड़ा तबाह हो जायगा। इतना सुनते ही बारह मल्लाह पानी में कूद पड़े। उनके साथ पंद्रह साल का एक लड़का भी पानी में कूदा।

नवाब—समुद्र में, ओफ़्फ़ोह!

खोजी—खुदावंद, उनसे बढ़ कर दिलेर और कौन हो सकता है? बस अफसर ने मल्लाहों से कहा, इस लड़के को रोक लो। लड़के ने कहा, वाह, मेरे मुल्क पर अगर मेरी जान क़ुरबान हो जाय तो क्या मुजायका? यह कह कर वह लड़का तैरता हुआ निकल गया।

नवाब—ख्वाजा साहब, कोई ऐसी फ़िक्र कीजिए कि हमारी-आपकी दोस्ती हमेशा इसी तरह क़ायम रहे।

खोजी—भाई सुनो, हमें खुशामद करनी मंजूर नहीं, अगर साहब-सलामत रखना है तो रखिए, वरना आप अपने घर खुश और मैं अपने घर खुश।

नवाब—यार, तुम तो बेवजह बिगड़ खड़े होते हो।

खोजी—साफ तो यह है कि जो तजरबा हमको हासिल हुआ है उस पर हम जितना ग़रूर करें, बजा है।

नवाब—इसमें क्या शक है जनाब।

खोजी—आप खूब जानते हैं कि आलिम लोग किसी की परवा नहीं करते। मुझे दुनिया में किसी से दबके चलना नागवार है, और हम क्यों किसी से दबें? लालच

हमें छू नहीं गया, हमारे नज़दीक बादशाह और फ़क़ीर दोनों बराबर। जहाँ कहीं गया, लोगों ने सिर और आँखों पर बिठाया। रूम, मिस्र, रूस वगैरह मुल्कों में मेरी जो कद्र हुई वह सारा ज़माना जानता है। आपके दरबार में आलिमों की कद्र नहीं। वह देखिए, नालायक मस्तियाबेग आपके सामने चंडू का दम लगा रहा है। ऐसे बदमाशों से मुझे नफ़रत है।

नवाब—कोई है, इस नालायक को निकाल दो यहाँ से।

मुसाहिब—हुजूर तो आज नाहक खफ़ा होते हैं, इस दरबार में तो रोज ही चंडू के दम लगा करते हैं। इसने किया तो क्या गुनाह किया?

नवाब—क्या बकते हो, हमारे यहाँ चंडू का दम कोई नहीं लगाता।

खोजी—हमें यहाँ आते इतने दिन हुए, हमने कभी नहीं देखा। चंडू पीना शरीफ़ों का काम ही नहीं।

मिरज़ा—तुम तो ग़ज़ब करते हो खोजी, ज़माने भर के चंडूबाज़, अफीमची, अब आये हो यहाँ से बढ़-बढ़के बातें बनाने। ज़रा सरकार ने मुँह लगाया तो ज़मीन पर पाँव ही नहीं रखते।

नवाब—ग़फ़ूर, इन सब बदमाशों को निकाल बाहर करो। खबरदार जो आज से कोई यहाँ आने पाया।

मीर साहब—खुदावंद! बस, कुछ न कहिएगा, हम लोगों ने अपनी इज्जत नहीं बेची है।

नवाब—निकालो इन सबों को, अभी-अभी निकाल दो।

ख्वाजा साहब शह पा कर उठे और एक कतारा ले कर मस्तियाबेग पर जमाया। वह तो झल्लाया था ही, खोजी को एक चाँटा दिया, तो गिर पड़े, इतने में कई सिपाही आ गये, उन्होंने मस्तियाबेग को पकड़ लिया और बाकी सब भाग खड़े हुए। खोजी झाड़-पोंछ कर उठे और उठते ही हुक्म दिया कि मस्तियाबेग को एक दरख्त में बाँध-कर दो सौ कोड़े लगाये जायँ, नमकहराम अपने मालिक के दोस्तों से लड़ता है। बदन में कीड़े न पड़ें तो सही।

उधर मियाँ आज़ाद साहब से मिल कर लौटे तो देखा कि दरबार में सन्नाटा छाया हुआ है। नवाब साहब उन्हें देखते ही बोले—हजरत, आज से हमने आपकी सलाहों पर चलना शुरू कर दिया।

आज़ाद—दरबार के लोग कहाँ ग़ायब हो गये?

खोजी—सब के सब निकाल दिये गये, अब कोई यहाँ फटकने भी न पायेगा।

नवाब—अब हम हुक्काम से मिला करेंगे और कोशिश करेंगे कि हरएक किस्म की कमेटी में शरीक हों। वाही तबाही आदमियों की सोहबत में आप देखें तो मेरे कान पकड़िएगा।

आज़ाद—अब आप हर किस्म की किताबें पढ़ा कीजिए।

नवाब—आप जो कुछ फ़रमाते हैं, बजा है, मेरा पचीसवाँ साल है, अभी मुझे पढने-लिखने का बहुत मौक़ा है; और मुझे करना ही क्या है।

आजाद—खुदा आपकी नीयत में बरकत दे।

खोजी—बस, आज से आपको आलिमों की सोहबत रखनी चाहिए। ऐसा न हो, इस वक़्त तो सब कुछ तकरार कर लीजिए और कल से फिर वही ढाक के तीन पात।

नवाब—खुदा ने चाहा तो यह सब बातें अब नाम को भी न देखिएगा।

दूसरे दिन आजाद सैर करने निकले तो क्या देखते हैं कि एक जगह कई आदमी एक छत पर बैठे हुए हैं। आजाद को देखते ही एक आदमी ने आ कर उनसे कहा—अगर आपको तकलीफ़ न हो, तो जरा मेरे साथ आइए। आजाद उसके साथ छत पर पहुँचे तो उन आदमियों में एक की सूरत अपनी से मिलती-जुलती पायी। उसने आज़ाद की ताजीम की और कहा—आइए, आपसे कुछ बातें करूँ। आपने अपनी सूरत तो आईने में देखी होगी?

आज़ाद—हाँ, और इस वक़्त बग़ैर आईने के देख रहा हूँ। आपका नाम?

आदमी—मुझे आज़ाद मिरज़ा कहते हैं।

आजाद—तब तो आप मेरे हमनाम भी हैं। आपने मुझे क्योंकर पहचाना?

मिरजा—मैंने आपकी तसवीरें देखी हैं और अखबारों में आपका हाल पढ़ता रहा हूँ।

आजाद—इस वक्त आपसे मिल कर बहुत खुशी हुई।

मिरज़ा—और अभी और भी खुशी होगी। सुरैया बेगम को तो आप जानते हैं?

आजाद—हाँ-हाँ, आपको उनका कुछ हाल मालूम है?

मिरज़ा—जी हाँ, आपके धोखे में मैं उनके यहाँ पहुँचा था, और अब तो वह बेगम हैं। एक नवाब साहब के साथ उनका निकाह हो गया है।

आजाद—क्या अब दूर से भी मुलाक़ात न होगी?

मिरजा—हरगिज नहीं।

आज़ाद—बे अख्तियार जी चाहता है कि मिल कर बातें करूँ।

मिरज़ा—कोशिश कीजिए, शायद मुलाक़ात हो जाय, मगर उम्मेद नहीं?

आज़ाद सुरैया बेगम की तलाश में निकले तो क्या देखते हैं कि एक बाग़ में कुछ लोग एक रईस की सोहबत में बैठे गप्पें उड़ा रहे हैं। आज़ाद ने समझा, शायद इन लोगों से सुरैया बेगम के नवाब साहब का कुछ पता चले। आहिस्ता-आहिस्ता उनके क़रीब गये। आज़ाद को देखते ही वह रईस चौंक कर खड़ा हो गया और उनकी तरफ़ देख कर बोला—वल्लाह, आपसे मिलने का बहुत शौक़ था। शुक्र है कि घर बैठे मुराद पूरी हुई। फ़र्माइए, आपकी क्या खिदमत करूँ?

मुसाहब—हुजूर, जंडैल साहब को कोई ऐसी चीज़ पिलाइए कि रूह तक ताज़ा हो जाय।

खाँ साहब—मुझे पारसाल वबलवायु का मरज हो गया था। दो महीने डाक्टर का इलाज हुआ। खाक फ़ायदा न हुआ। बीस दिन तक हकीम साहब ने नुस्खे पिलाये, मरज़ और भी बढ़ गया। पड़ोस में एक वैदराज रहते हैं उन्होंने कहा मैं दो दिन में अच्छा कर दूँगा। दस दिन तक उनका इलाज रहा, मगर कुछ फ़ायदा न हुआ। आखिर एक दोस्त ने कहा—भाई, तुम सबकी दवा छोड़ दो, जो हम कहें वह करो। बस हुजूर, दो बार बराडी पिलायी। दो छटाँक शाम को, दो छटाँक सुबह को, उसका यह असर हुआ कि चौथे दिन मैं बिलकुल चंगा हो गया।

रईस—बराडी के बड़े-बड़े फ़ायदे लिखे हैं।

दीवान—सरकार, पेशाब के मरज में तो बराडी अकसीर है। जितनी देते जाइए उतना ही फ़ायदा करती है।

खाँ साहब—हुजूर, आँखों देखी कहता हूँ। एक सवार को मिर्गी आती थी, सैकड़ों इलाज किये, कुछ असर न हुआ, आखिर एक आदमी ने कहा, हुजूर हुक्म दे तो एक दवा बताऊँ। दावा करके कहता हूँ कि कल ही मिर्गी न रहे। खुदावंद, दो छटाँक शराब लीजिए और उसमें उसका दूना पानी मिलाइए, अगर एक दिन में फ़ायदा न हो तो जो चोर की सज़ा वह मेरी सज़ा।

नवाब—यह सिफ़त है इसमें!

मुसाहब—हुजूर, गँवारों ने इसे झूठ-मूठ बदनाम कर दिया है। क्यों जंडैल साहब, आपको कभी इत्तफाक़ हुआ है?

आज़ाद—वाह, क्या मैं मुसलमान नहीं हूँ।

नवाब—क्या खूब जवाब दिया है, सुभान-अल्लाह!

इतने में एक मुसाहब जिनको औरों ने सिखा-पढ़ा कर भेजा था, जुब्बा पहने और अमामा बाँधे आ पहुँचे। लोगों ने बड़े तपाक से उनकी ताज़ीम की और बुला कर बैठाया।

नवाब—कैसे मिज़ाज हैं मौलाना साहब?

मौलाना—खुदा का शुक्र है।

मुसाहब—क्यों मौलाना साहब, आपके खयाल मे शराब हलाल है या हराम?

मौलाना—अगर तुम्हारा दिल साफ़ नहीं तो हजार बार हज्ज करो कोई फायदा नहीं। हरएक चीज नीयत के लिहाज से हलाल या हराम होती है।

आजाद—जनाब, हमने हर किस्म के आदमी देखे। किसी सोहबत से परहेज नहीं किया, आप लोग शौक से पियें, मेरा कुछ खयाल न करें।

नवाब—नीयत की सफ़ाई इसी को कहते हैं। हजरत आज़ाद, आपकी जितनी तारीफ सुनी थी, उससे कहीं बढ़ कर पाया।

एक साहब नीचे से शराब, सोडा की बोतलें और बर्फ़ लाये और दौर चलने लगे। जब सरूर जमा तो गपें उड़ने लगीं—

[illegible] साहब—खुदावंद, एक बार नैपाल की तराई में जाने का इत्तफ़ाक हुआ। [illegible] आदमी साथ थे, वहाँ जंगल में शहद कसरत से है और शहद की मक्खियों की अजब खासियत है कि बदन पर जहाँ कहीं बैठती हैं, दर्द होने लगता है। मैंने वहाँ के बाशिंदों से पूछा, क्यों भाई, इसकी कुछ दवा है? कहा, इसकी दवा शराब है हमारे साथियों में कई ब्राह्मण भी थे। [illegible] शराब [illegible] छू न सकते थे। हमने दवा के तौर पर पी, हमारा दर्द तो जाता रहा और वह सब अभी तक झींक रहे हैं।

नवाब—वल्लाह, इसके फायदे बड़े-बड़े हैं, मगर हराम है, अगर हलाल होती तो क्या कहना था।

मुसाहब—खुदावंद, अब तो सब हलाल है।

खाँ साहब—खुदावंद, हैजे की दवा, पेचिस की दवा, बवासीर की दवा, दम की दवा, यहाँ तक कि मौत की भी दवा।

दीवान—ओ-हो-हो, मौत की दवा!

नवाब—खबरदार, सब के सब खामोश, बस कह दिया

दीवान—खामोश! खामोश!

खाँ साहब—तप की दवा, सिर-दर्द की दवा, बुढापे की दवा।

नवाब—यह तुम लोग बहकते क्यों हो? हमने भी तो पी है। हजरत, मुझे एक औरत ने नसीहत की थी। तबसे क्या मजाल कि मेरी जबान से एक बेहूदा बात भी निकले। (चपरासी को बुला कर) रमज़ानी, तुम खाँ साहब और दीवान जी को यहाँ से ले जाओ।

दीवान—इल्म की कसम, अगर इतनी गुस्ताखी हमारी शान में करोगे तो हमसे जूता-पैजार हो जायगी।

नवाब—कोई है? जो लोग बहक रहे हों उन्हें दरबार से निकाल दो और फिर भूल के भी न आने देना।

लाला—अभी निकाल दो सबको!

यह कह कर लाला साहब ने रमजान खाँ पर टीप जमायी। वह पठान आदमी, टीप पड़ते ही आग हो गया। लाला साहब के पट्टे पकड़ कर दो चार थपें ज़ोर-ज़ोर से लगा बैठा। इस पर दो-चार आदमी और इधर-उधर से उठे। लप्पा-डुग्गी होने लगी। आजाद ने नवाब साहब से कहा—मैं तो रुखसत होता हूँ। नवाब साहब ने आजाद का हाथ पकड़ लिया और बाग़ में ला कर बोले—हजरत, मैं बहुत शरमिंदा हूँ कि इन पाजियों की वजह से आपको तकलीफ हुई। क्या कहूँ, उस औरत ने हमे वह नसीहत की थी कि अगर हम आदमी होते तो सारी उम्र आराम के साथ बसर करते। मगर इन मुसाहबों से खुदा समझे; हमें फिर घेर-घारके फंदे में फाँस लिया।

आज़ाद—तो जनाब, ऐसे अदना नौकरों को इतना मुँह चढ़ाना हरगिज मुनासिब नहीं।

नवाब—भाई साहब, यही बातें उस औरत ने भी समझायी थीं।

आजाद—आखिर वह औरत कौन थी और आपसे उससे क्या ताल्लुक था?

नवाब—हजरत, अर्ज किया न कि एक दिन दोस्तों के साथ एक बाग़ में बैठा था कि एक औरत सफेद दुलाई ओढ़े निकली। दो चार बिगड़े दिलों ने उसे चकमा दे कर बुलाया। वह बेतकल्लुफी के साथ आ कर बैठी तो मुझसे बातचीत होने लगी। उसका नाम अलारक्खी था।

अलारक्खी का नाम सुनते ही आजाद ने ऐसा मुँह बना लिया गोया कुछ जानते ही नहीं, मगर दिल में सोचे कि वाह री अलारक्खी, जहाँ जाओ, उसके जाननेवाले निकल ही आते हैं। कुछ देर बाद नवाब नशे में चूर हो ही गये और आजाद बाहर निकले तो एक पुराने जान-पहचान के आदमी से मुलाकात हो गयी। आजाद ने पूछा—कहिए हजरत, आजकल आप कहाँ हैं?

आदमी—आजकल तो नवाब वाजिद हुसैन की खिदमत में हूँ। हुजूर तो खैरियत से रहे? हुजूर का नाम तो सारी दुनिया में रोशन हो गया।

आजाद—भाई, जब जानें कि एक बार सुरैया बेगम से दो-दो बातें करा दो।

आदमी—कोशिश करूँगा हुजूर, किसी न किसी हीले से वहाँ तक आपका पैग़ाम पहुँचा दूँगा।

यह मामला ठीक-ठाक करके आजाद होटल में गये तो देखा कि खोजी बड़ी शान से बैठे गपें उड़ा रहे हैं और दोनों परियाँ उनकी बातें सुन-सुन कर खिलखिला रही हैं।

क्लारिसा—तुम अपनी बीबी से मिले, बड़ी खुश हुई होंगी।

खोजी—जी हाँ, महल्ले में पहुँचते ही मारे खुशी के लोगों ने तालियाँ बजायीं। लौंडों ने ढेले मार-मार कर गुल मचाया कि आये-आये। अब कोई गले मिलता है, कोई मारे मुहब्बत के उठाके दे मारता है। सारा महल्ला कह रहा है तुमने तो रूम में वह काम किया कि झंडे गाड़ दिये। घर में जो खबर हुई तो लौंडी ने आ कर सलाम किया। हुजूर आइए, बेगम साहब बड़ी देर से इंतजार कर रही हैं। मैंने

कहा, क्योंकर चलूँ ? जब यह इतने भूत छोड़ें भी। कोई इधर घसीट रहा है, कोई उधर और यहाँ जान अजाब में है।

मीडा—घर का हाल बयान करो। वहाँ क्या बातें हुईं ?

खोजी—दालान तक बीबी नंगे पाँव इस तरह दौड़ी आयीं कि हाँफ गयीं।

मीडा—नंगे पाँव क्यों ? क्या तुम लोगों में जूता नहीं पहनते ?

खोजी—पहनते क्यों नहीं; मगर जूता तो हाथ में था।

मीडा—हाथ से और जूते से क्या वास्ता ?

खोजी—आप इन बातों को क्या समझें।

मीडा—तो आखिर कुछ कहोगे भी ?

खोजी—इसका मतलब यह है कि मियाँ अंदर कदम रखें और हम खोपड़ी सुहला दें।

मीडा—क्या यह भी कोई रस्म है ?

खोजी—यह सब अदाएँ हमने सिखायी हैं। इधर हम घर में घुसे, उधर बेगम साहब ने जूतियाँ लगायीं। अब हम छिपें तो कहाँ छिपें, कोई छोटा-मोटा आदमी हो तो इधर-उधर छिप रहे, हम यह डील-डौल लेके कहाँ जायँ ?

क्लारिसा—सच तो है, क़द क्या है, ताड़ है !

मीडा—क्या तुम्हारी बीबी भी तुम्हारी ही तरह ऊँचे क़द की हैं ?

खोजी—जनाब, मुझसे पूरे दो हाथ ऊँची हैं। आ कर बोलीं, इतने दिनों के बाद आये तो क्या लाये हो ? मैंने तमगा दिखा दिया तो खिल गयीं। कहा, हमारे पास आजकल बाट न थे अब इससे तरकारी तौला करूँगी।

मीडा—क्या पत्थर का तमगा है ? क्या खूब कदर की है।

क्लारिसा—और तुम्हें तमगा कब मिला ?

खोजी—कहीं ऐसा कहना भी नहीं।

इतने में आज़ाद पाशा चुपके से आगे बढ़े और कहा—आदाब अर्ज है। आज तो आप खासे रईस बने हुए हैं ?

खोजी—भाईजान, वह रंग जमाया कि अब खोजी ही खोजी हैं।

आज़ाद—भई, इस वक़्त एक बड़ी फ़िक्र में हूँ। अलारक्खी का हाल तो जानते ही हो। आजकल वह नवाब वाजिद हुसैन के महल में है। उससे एक बार मिलने की धुन सवार है। बतलाओ, क्या तदबीर करूँ ?

खोजी—अजी, यह लटके हमसे पूछो। यहाँ सारी ज़िंदगी यही किया किये हैं। किसी चूड़ीवाली को कुछ दे-दिला कर राजी कर लो।

आज़ाद के दिल में भी यह बात जम गयी। जा कर एक चूड़ीवाली को बुला लाये।

आज़ाद—क्यों भलेमानस, तुम्हारी पैठ तो बड़े-बड़े घरों में होगी। अब यह बताओ कि हमारे भी काम आओगी ? अगर कोई काम निकले तो कहें, वरना बेकार है।

चूड़ीवाली—अरे, तो कुछ मुँह से कहिएगा भी ? आदमी का काम आदमी ही से तो निकलता है।

आज़ाद—नवाब वाजिद हुसैन को जानती हो ?

चूड़ीवाली—अपना मतलब कहिए।

आज़ाद—बस उन्हीं के महल में एक पैग़ाम भेजना है।

चूड़ीवाली—आपका तो वहाँ गुज़र नहीं हो सकता। हाँ, आपका पैग़ाम वहाँ तक पहुँचा दूँगी। मामला जोखिम का है, मगर आपके ख़ातिर कर दूँगी।

आज़ाद—तुम सुरैया बेगम से इतना कह दो कि आज़ाद ने आपको सलाम कहा है।

चूड़ीवाली—आज़ाद आपका नाम है या किसी और का ?

आज़ाद—किसी और के नाम या पैग़ाम से हमें क्या वास्ता। मेरी यह तसवीर ले लो, मौका मिले तो दिखा देना।

चूड़ीवाली ने तसवीर टोकरे में रखी और नवाब वाजिद हुसैन के घर चली। सुरैया बेगम कोठे पर बैठी दरिया की सैर कर रही थीं। चूड़ीवाली ने जा कर सलाम किया।

सुरैया—कोई अच्छी चीज़ लायी हो या ख़ाली-ख़ूली आयी हो ?

चूड़ीवाली—हुज़ूर, वह चीज़ लायी हूँ कि देख कर ख़ुश हो जाइएगा; मगर इनाम भरपूर लूँगी।

सुरैया—क्या है, ज़रा देखूँ तो ?

चूड़ीवाली ने बेगम साहब के हाथों में तसवीर रख दी। देखते ही चौंक के बोलीं सच बताना कहाँ पायी ?

चूड़ीवाली—पहले यह बतलाइए कि यह कौन साहब हैं और आपसे कभी की जान-पहचान है कि नहीं ?

सुरैया—बस यह न पूछो, यह बतलाओ कि तसवीर कहाँ पायी ?

चूड़ीवाली—जिनकी यह तसवीर है, उनको आपके सामने लाऊँ तो क्या इनाम पाऊँ ?

सुरैया—इस बारे में मैं कोई बातचीत करना नहीं चाहती। अगर वह ख़ैरियत से लौट आये हैं तो ख़ुश रहें और उनके दिल की मुरादें पूरी हों।

चूड़ीवाली—हुज़ूर, यह तसवीर उन्होंने मुझको दी। कहा, अगर मौका हो तो हम भी एक नजर देख लें।

सुरैया—कह देना कि आज़ाद, तुम्हारे लिए दिल से दुआ निकलती है, मगर पिछली बातों को जाने दो, हम पराये बस में हैं और मिलने में बदनामी है। हमारा दिल कितना ही साफ़ हो, मगर दुनिया को तो नहीं मालूम है, नवाब साहब को मालूम हो गया, तो उनका दिल कितना दुखेगा।

चूड़ीवाली—हुज़ूर, एक दफ़ा मुखड़ा तो दिखा दीजिए; इन आँखों की कसम, बहुत तरस रहे हैं।

सुरैया—चाहे जो हो, जो बात खुदा को मंजूर थी, वह हुई और उसी में अब हमारी बेहतरी है। यह तसवीर यहीं छोड़ जाओ, मैं इसे छिपा कर रखूँगी।

चूड़ीवाली—तो हुज़ूर, क्या कह दूँ। साफ़ टका सा जवाब?

सुरैया—नहीं, तुम समझा कर कह देना कि तुम्हारे आने से जितनी खुशी हुई, उसका हाल खुदा ही जानता है। मगर अब तुम यहाँ नहीं आ सकते और न मैं ही कहीं जा सकती हूँ; और फिर अगर चोरी-छिपे एक दूसरे को देख भी लिया तो क्या फ़ायदा। पिछली बातों को अब भूल जाना ही मुनासिब है। मेरे दिल में तुम्हारी बड़ी इज़्ज़त है। पहले मैं तुमसे ग़रज़ की मुहब्बत करती थी, अब तुम्हारी पाक मुहब्बत करती हूँ। खुदा ने चाहा तो शादी के दिन हुस्नआरा बेगम के यहाँ मुलाक़ात होगी।

यह वही अलारक्खी हैं जो सराय में चमकती हुई निकलती थीं। आज उन्हें परदे और हया का इतना खयाल है। चूड़ीवाली ने जा कर यहाँ की सारी दास्तान आज़ाद को सुनायी। आज़ाद बेगम की पाकदामनी की घंटों तारीफ़ करते रहे। यह सुन कर उन्हें बड़ी तस्कीन हुई कि शादी के दिन वह हुस्नआरा बेगम के यहाँ ज़रूर आयेंगी।

मियाँ आजाद सैलानी तो थे ही, हुस्नआरा से मुलाकात करने के बदले कई दिन तक शहर में मटरगश्त करते रहे, गोया हुस्नआरा की याद ही नहीं रही। एक दिन सैर करते-करते वह एक बाग में पहुँचे और एक कुर्सी पर जा बैठे। एकाएक उनके कान में आवाज आयी—

चले हम ऐ जुनूँ जब फस्ले गुल में सैर गुलशन को,
एवज फूलों के पत्थर से भरा गुलचीं ने दामन को।
समझ कर चाँद हमने यार तेरे रूए रौशन को;
कहा बाले को हाला और महे नौ ताके गरदन को।
जो वह तलवार खींचे तो मुकाबिल कर दूँ मैं दिल को;
लड़ाऊँ दोस्त से अपने मैं उस पहलू के दुश्मन को।
करूँ आहें तो मुँह को ढाँप कर वह शोख कहता है—
हवा से कुछ नहीं है डर चिरागे जेर दामन को।
तवाजा चाहते हो जाहिदो क्या बादःख्वारों से,
कहीं झुकते भी देखा है भला शीशे की गर्दन को।

आजाद के कान खड़े हुए कि यह कौन गा रहा है। इतने में एक खिड़की खुली और एक चाँद सी सूरत उनके सामने खड़ी नजर आयी। मगर इत्तिफाक से उसकी नजर इन पर नहीं पड़ी। उसने अपना रंगीन हाथ माथे पर रख कर किसी हमजोली को पुकारा, तो आजाद ने यह शेर पढ़ा—

हाथ रखता है वह बुत अपनी भौहों पर इस तरह;
जैसे मेहराब पर अल्लाह लिखा होता है।

उस नाजनीन ने आवाज सुनते ही उन पर नजर डाली और दरीचा बंद कर लिया। दुपट्टे को जो हवा ने उड़ा दिया तो आधा खिड़की के इधर और आधा उधर। इस पर उस शोख ने झुँझला कर कहा, यह निगोड़ा दुपट्टा भी मेरा दुश्मन हुआ है।

आजाद—अल्लाह रे गजब, दुपट्टे पर भी गुस्सा आता है!

सनम—ऐ यह कौन बोला? लोगो, देखो तो, इस बाग में मरघट का मुर्दा कहाँ से आ गया?

सहेली—ऐ कहाँ, बहन, हाँ-हाँ, वह बैठा है, मैं तो डर गयी।

सनम—अल्लाह, यह तो कोई सिड़ी सा मालूम होता है।

आज़ाद—या खुदा, यह आदमजाद हैं या कोहकाफ की परियाँ?

सनम—तुम यहाँ कहाँ से भटकके आ गये?

आज़ाद—भटकते कोई और होंगे हम तो अपनी मंजिल पर पहुँच गये।

सनम—मंज़िल पर पहुँचना दिल्लगी नहीं है, अभी दिल्ली दूर है।

आज़ाद—यह कहाँ का दस्तूर है कि कोई ज़मीन पर हो, कोई आसमान पर! आप सवार, मैं पैदल, भला क्योंकर बने।

सनम—और सुनो, आप तो पेट से पाँव निकालने लगे, अब यहाँ से बोरिया-बधना उठाओ और चलता धंधा करो।

आज़ाद—इतना हुक्म दो कि करीब से दो-दो बातें कर लें।

सनम—वह काम क्यों करें जिसमें फसाद का डर है।

सहेली—ऐ बुला लो, भले आदमी मालूम होते हैं। (आज़ाद से) चले आइए साहब, चले आइए।

आज़ाद खुश खुश उठे और कोठे पर जा पहुँचे।

सनम—वाह बहन, वाह, एक अजनबी को बुला लिया। तुम्हारी भी क्या बातें हैं।

आज़ाद—भई, हम भी आदमी हैं। आदमी को आदमी से इतना भागना न चाहिए।

सनम—हज़रत, आपके भले ही के लिए कहती हूँ, यह बड़े जोखिम की जगह है। हाँ, अगर सिपाही आदमी हो तो तुम खुद ताड़ लोगे।

आज़ाद ने जो यह बातें सुनीं तो चक्कर में आये कि हिंदोस्तान से रूस तक हो आये और किसी ने चूँ तक न की, और यहाँ इस तरह की धमकी दी जाती है। सोचे कि अगर यह सुन कर यहाँ से भाग जाते हैं तो यह दोनों दिल में हँसेंगी और अगर ठहर जायँ तो आसार बुरे नज़र आते हैं। बातों-बातों में उस नाज़नीन से पूछा—यह क्या भेद है?

सनम—यह न पूछो भई, हमारा हाल बयान करने के काबिल नहीं।

आज़ाद—आख़िर कुछ मालूम तो हो, तुम्हें यहाँ क्या तकलीफ है? मुझे तो कुछ दाल में काला ज़रूर मालूम होता है।

सनम—जनाब, यह जहन्नुम है और हमारी जैसी कितनी ही औरतें इस जहन्नुम मे रहती हैं। यों कहिए कि हमीं से यह जहन्नुम आबाद है। एक कुंदन नामी बुढ़िया बरसों से यही पेशा करती है। खुदा जाने, इसने कितने घर तबाह किये। अगर मुझसे पूछो कि तेरे माँ-बाप कहाँ हैं, तो मैं क्या जवाब दूँ, मुझे इतना ही मालूम है कि यह बुढ़िया मुझे किसी गाँव से पकड़ लायी थी। मेरे माँ-बाप ने बहुत तलाश की, मगर इसने मुझे घर से निकलने न दिया। उस वक़्त मेरा सिन चार-पाँच साल से ज़्यादा न था।

आज़ाद—तो क्या यहाँ सब ऐसी ही जमा हैं?

सनम—यह जो मेरी सहेली हैं, किसी बड़े आदमी की बेटी हैं। कुंदन उनके यहाँ आने जाने लगी और उन सबों से इस तरह की साँठ-गाँठ की कि औरतें इसे बुलाने लगीं। उनको क्या मालूम था कि कुंदन के यह हथकंडे हैं।

आजाद—भला कुंदन से मेरी मुलाकात हो तो उससे कैसी बातें करूँ।

सनम—वह इसका मौका ही न देगी कि तुम कुछ कहो। जो कुछ कहना होगा, वह खुद कह चलेगी। लेकिन जो तुमसे पूछे कि तुम यहाँ क्योंकर आये?

आज़ाद—मैं कह दूँगा कि तुम्हारा नाम सुन कर आया।

सनम—हाँ, इस तरकीब से बच जाओगे। जो हमें देखता है, समझता है कि यह बड़ी खुशनसीब हैं। पहनने के लिए अच्छे से अच्छे कपड़े, खाने के लिए अच्छे से अच्छे खाने, रहने के लिए बड़ी से बड़ी हवेलियाँ, दिल बहलाव के लिए हमजोलियाँ सब कुछ हैं; मगर दिल को खुशी और चैन नहीं। बड़ी खुशनसीब वे औरतें हैं जो एक मियाँ के साथ तमाम उम्र काट देती हैं। मगर हम बदनसीब औरतों के ऐसे नसीब कहाँ? उस बुढ़िया को खुदा ग़ारत करे जिसने हमें कहीं का न रखा।

आज़ाद—मुझे यह सुन कर बहुत अफसोस हुआ। मैंने तो यह समझा था कि यहाँ सब चैन ही चैन है, मगर अब मालूम हुआ कि मामला इसका उलटा है।

सनम—हजारों आदमियों से बातचीत होती है, मगर हमारे साथ शादी करने को कोई पतियाता ही नहीं। कुंदन से सब डरते हैं। शोहदे-लुच्चों की बात का एतबार क्या, दो-एक ने निकाह का वादा किया भी तो पूरा न किया।

यह कह कर वह नाजनीन रोने लगी।

आजाद ने समझाया कि दिल को ढारस दो और यहाँ से निकलने की हिकमत सोचो।

सनम—खुदा बड़ा कारसाज है, उसको काम करते देर नहीं लगती, मगर अपने गुनाहों को जब देखते हैं तो दिल गवाही नहीं देता कि हमें यहाँ से छुटकारा मिलेगा।

आज़ाद—मैं तो अपनी तरफ से ज़रूर कोशिश करूँगा।

सनम—तुम मर्दों की बात का एतबार करना फजूल है।

आजाद—वाह! क्या पाँचों उँगलियाँ बराबर होती हैं?

इतने में एक और हसीना आ कर खड़ी हो गयी। इसका नाम नूरजान था। आजाद ने उससे कहा—तुम भी अपना कुछ हाल कहो। यहाँ कैसे आ फँसी?

नूर—मियाँ, हमारा क्या हाल पूछते हो, हमें अपना हाल खुद ही नहीं मालूम। खुदा जाने, हिंदू के घर जन्म लिया या मुसलमान के घर पैदा हुई। इस मकान की मालिक एक बुढिया है, उसके काटे का मंत्र नहीं, उसका यही पेशा है कि जिस तरह हो कमसिन और खूबसूरत लड़कियों को फुसला कर ले आये। सारा जमाना उसके हथकंडों को जानता है, मगर किसी से आज तक बंदोबस्त नहीं हो सका। अच्छे-अच्छे महाजन और व्यापारी उसके मकान पर माथा रगड़ते हैं, बड़े-बड़े शरीफ़ज़ादे उसका दम भरते हैं। शाहजादों तक के पास इसकी पहुँच है, सुनते थे कि बुरे काम का नतीजा बुरा होता है, मगर खुदा-जाने, बुढ़िया को इन बुरे कामों की सजा क्यों नहीं मिलती? इस चुड़ैल ने खूब रुपये जमा किये हैं और इतना नाम कमाया है कि दूर-दूर तक मशहूर हो गयी है।

आज़ाद—तुम सब की सब मिलकर भाग क्यों नहीं जातीं ?

सनम—भाग जायँ तो फिर खायँ क्या, यह तो सोचो।

आज़ाद—इसने अपनी मक्कारी से इस क़दर तुम सबको बेवकूफ बना रखा है।

सनम—बेवकूफ नहीं। बनाया है, यह बात सही है, खाने भर का सहारा तो हो जाय।

आज़ाद—तुम्हारी आँख पर ग़फ़लत की पट्टी बाँध दी है। तुम इतना नहीं सोचतीं कि तुम्हारी बदौलत तो इसने इतना रुपया पैदा किया और तुम खाने को मुँहताज रहोगी ? जो पसंद हो उसके साथ शादी कर लो और आराम से ज़िंदगी बसर करो।

सनम—यह सच है, मगर उसका रोब मारे डालता है।

आज़ाद—उफ् रे रोब, यह बुढ़िया भी देखने के क़ाबिल है।

सनम—इस तरह की मीठी मीठी बातें करेगी कि तुम भी उसका कलमा पढ़ने लगोगे।

आज़ाद—अगर मुझे हुक्म दीजिए तो मैं कोशिश करूँ।

सनम—वाह, नेकी और पूछ-पूछ ? आपका हमारे ऊपर बड़ा एहसान होगा। हमारी ज़िंदगी बरबाद हो रही है। हमें हर रोज़ गालियाँ देती है और हमारे माँ-बाप को कोसा करती है। गो उन्हें आँखों से नहीं देखा, मगर खून का जोश कहाँ जाय ?

इस फ़िकरे से आज़ाद की आँखें भी डबडबा आयीं, उन्होंने ठान ली कि इस बुढ़िया को जरूर सज़ा करायेंगे।

इतने में सहेली ने आ कर कहा—बुढ़िया आ गयी है, धीरे-धीरे बातें करो।

आज़ाद ने सनम के कान में कुछ कह दिया और दो की दोनों चली गयीं।

कुंदन—बेटा, आज एक और शिकार किया, मगर अभी बतायेंगे नहीं। वह दरवाज़े पर कौन खड़ा था ?

सनम—कोई बहुत बडे रईस हैं, आपसे मिलना चाहते हैं।

कुंदन ने फ़ौरन आज़ाद को बुला भेजा और पूछा, किसके पास आये हो बेटा ! क्या काम है ?

आज़ाद—मैं खास आपके पास आया हूँ।

कुंदन—अच्छा बैठो। आजकल बे-फ़सल की बारिश से बड़ी तकलीफ़ होती है, अच्छी वह फ़सल कि हर चीज वक़्त पर हो, बरसात हो तो मेंह बरसे, सर्दी के मौसम में सर्दी खूब हो और गर्मी में लू चले, मगर जहाँ कोई बात बे-मौसम की हुई और बीमारी पैदा हो गयी।

आज़ाद—जी हाँ, क़ायदे की बात है।

कुंदन—और बेटा, हजार बात की एक बात है कि आदमी बुराई से बचे। आदमी को याद रखना चाहिए कि एक दिन उसको मुँह दिखाना है, जिसने उसे

पैदा किया। बुरा आदमी किस मुँह से मुँह दिखायेगा!

आज़ाद—क्या अच्छी बात आपने कही है, है तो यही बात!

कुंदन—मैंने तमाम उम्र इसी में गुजारी कि लावारिस बच्चों की परवरिश करूँ, उनको खिलाऊँ-पिलाऊँ और अच्छी-अच्छी बातें सिखाऊँ। खुदा मुझे इसका बदला दे तो वाह-वाह, वरना और कुछ फ़ायदा न सही, तो इतना फ़ायदा तो है कि इन बेकसों की मेरी ज़ात से परवरिश हुई।

आज़ाद—खुदा जरूर इसका सवाब देगा।

कुंदन—तुमने मेरा नाम किससे सुना?

आज़ाद—आपके नाम की खुशबू दूर-दूर तक फैली हुई है।

कुंदन—वाह, मैं तो कभी किसी से अपनी तारीफ़ ही नहीं करती। जो लड़कियाँ मैं पालती हूँ उनको बिलकुल अपने खास बेटों की तरह समझती हूँ। क्या मजाल कि जरा भी फ़र्क़ हो। जब देखा कि वह सयानी हुई तो उनको किसी अच्छे घर ब्याह दिया, मगर खूब देख भालके। शादी मर्द और औरत की रज़ामंदी से होनी चाहिए।

आज़ाद—यही शादी के माने हैं।

कुंदन—तुम्हारी उम्र दराज हो बेटा, आदमी जो काम करे, अक़्ल से, हर पहलू को देख-भालके।

आज़ाद—बग़ैर इसके मियाँ-बीबी में मुहब्बत नहीं हो सकती और यों जबरदस्ती की तो बात ही और है।

कुंदन—मेरा कायदा है कि जिस आदमी को पढ़ा-लिखा देखती हूँ उसके सिवा और किसी से नहीं ब्याहती और लड़की से पूछ लेती हूँ कि बेटा, अगर तुमको पसंद हो तो अच्छा, नहीं कुछ जबरदस्ती नहीं है।

यह कह कर उसने महरी को इशारा किया। आजाद ने इशारा करते तो देखा, मगर उनकी समझ में न आया कि इसके क्या माने हैं। महरी फौरन कोठे पर गयी और थोड़ी ही देर में कोठे से गाने की आवाजें आने लगीं।

कुंदन—मैंने इन सबको गाना भी सिखाया है, गो यहाँ इसका रिवाज नहीं।

आज़ाद—तमाम दुनिया में औरतों को गाना-बजाना सिखाया जाता है।

कुंदन—हाँ, बस एक इस मुल्क में नहीं।

आज़ाद—यह तो तीन की आवाजें मालूम होती हैं, मगर इनमें से एक का गला बहुत साफ़ है।

कुंदन—एक तो उनका दिल बहलता है, दूसरे जो सुनता है उसका भी दिल बहलता है।

आज़ाद—मगर आपने कुछ पढ़ाया भी है या नहीं?

कुंदन—देखो बुलवाती हूँ, मगर बेटा, नीयत साफ़ रखनी चाहिए।

उस ठगों की बुढ़िया ने सबसे पहले नूर को बुलाया। वह लजाती हुई आया

और बुढ़िया के पास इस तरह गरदन झुकाके बैठी जैसे कोई शरमीली दुलहिन।

आज़ाद—ऐ साहब, सिर ऊँचा करके बैठो, यह क्या बात है?

कुंदन—बेटा, अच्छी तरह बैठो सिर उठा कर। (आज़ाद से) हमारी सब लड़कियाँ शरमीली और हयादार हैं।

आज़ाद—यह आप ऊपर क्या गा रही थीं? हम भी कुछ सुनें।

कुंदन—बेटी नूर, वही ग़ज़ल गाओ।

नूर—अम्मीजान, हमें शर्म आती है।

कुंदन—कहती है, हमें शर्म आती है, शर्म की क्या बात है, हमारी खातिर से गाओ।

नूर—(कुंदन के कान में) अम्मीजान, हमसे न गाया जायगा।

आज़ाद—यह नयी बात है—

अकड़ता है क्या देख-देख आईना,
हसीं गरचे है तू पर इतना घमंड।

कुंदन—लो, इन्होंने गाके सुना दिया।

महरी—कहिए, हुजूर, दिल का परदा क्या कम है जो आप मारे शर्म के मुँह छिपाये लेती हैं। ऐ बीबी, गरदन ऊँची करो, जिस दिन दुलहिन बनोगी, उस दिन इस तरह बैठना तो कुछ मुज़ायका नहीं है।

कुंदन—हाँ, बात तो यही है, और क्या?

आज़ाद—शुक्र है, आपने ज़रा गरदन तो उठायी—

बात सब ठीक-ठाक है, पर अभी
कुछ सवालो-जवाब बाकी है।

कुंदन—(हँस कर) अब तुम जानो और यह जाने।

आज़ाद—ऐ साहब, इधर देखिए।

नूर—अम्मीजान, अब हम यहाँ से जाते हैं।

कुंदन ने चुटकी ले कर कहा—कुछ बोलो जिसमें इनका भी दिल खुश हो, कुछ जवाब दो, यह क्या बात है।

नूर—अम्मीजान, किसको जवाब दूँ? न जान, न पहचान।

कुंदन इन कामों में आठों गाँठ कुम्मैत, किसी बहाने से हट गयी। नूर ने भी बनावट के साथ चाहा कि चली जाय, इस पर कुंदन ने डाँट बतायी—हैं-हैं, यह क्या, भले मानस हैं या कोई नीच कौम? शरीफ़ों से इतना डर! आखिर नूर शर्मा कर बैठ गयी। उधर कुंदन नज़र से ग़ायब हुई, इधर महरी भी चम्पत।

आज़ाद—यह बुढ़िया तो एक ही काइयाँ है।

नूर—अभी देखते जाओ, यह अपने नज़दीक तुमको उम्र भर के लिए ग़ुलाम बनाये लेती है, जो हमने पहले से इसका हाल न बयान कर दिया होता तो तुम भी चंग पर चढ़ जाते।

आज़ाद—भला यह क्या बात है कि तुम उसके सामने इतना शरमाती रहीं ?

नूर—हमको जो सिखाया है वह करते हैं, क्या करें ?

आज़ाद—अच्छा, उन दोनों को क्यों न बुलाया ?

नूर—देखते जाओ, सबको बुलायेगी।

इतने में महरी पान, इलायची और इत्र लेकर आयी।

आज़ाद—महरी साहब, यह क्या अंधेर है ? आदमी आदमी से बोलता है या नहीं ?

महरी—ऐ बीबी, तुमने क्या बोलने की कसम खा ली है ? ले अब हमसे तो बहुत न उड़ो। खुदा झूठ न बोलाये तो बातचीत तक नौबत आ चुकी होगी और हमारे सामने घूँघट की लेती हैं।

आज़ाद—गरदन तक तो ऊँची नहीं करतीं, बोलना-चालना कैसा, या तो बनती हैं या अम्मीजान से डरती हैं।

महरी—वाह-वाह, हुजूर वाह, भला यह काहे से जान पड़ा कि बनती हैं ? क्या यह नहीं हो सकता कि आँखों की हया के सबब से लजाती हों ?

आज़ाद—वाह, आँखें कहे देती हैं कि नीयत कुछ और है।

नूर—खुदा की सँवार झूठे पर।

महरी—शाबाश, बस यह इसी बात की मुंतज़िर थीं। मैं तो समझे ही बैठी थी कि जब यह ज़बान खोलेंगी, फिर बंद ही कर छोड़ेंगी।

नूर—हमें भी कोई गँवार समझा है क्या ?

आज़ाद—वल्लाह, इस वक्त इनका त्योरी चढ़ाना अजब लुत्फ़ देता है। इनके जौहर तो अब खुले। इनकी अम्मीजान कहाँ चली गयीं ? ज़रा उनको बुलवाइए तो !

महरी—हुज़ूर, उनका क़ायदा है कि अगर दो दिल मिल जाते हैं तो फिर निकाह पढ़वा देती हैं, मगर मर्द भलामानस हो, चार पैसे पैदा करता हो। आप पर तो कुछ बहुत ही मिहरबान नजर आती हैं कि दो बातें होते ही उठ गयीं, वरना महीनों जाँच हुआ करती है, आपकी शक्ल-सूरत से रियासत बरसती है।

नूर—वाह, अच्छी फबती कही, बेशक रियासत बरसती है।

यह कह नूर ने आहिस्ता-आहिस्ता गाना शुरू किया।

आज़ाद—मैं तो इनकी आवाज़ पर आशिक हूँ।

नूर—खुदा की शान, आप क्या और आपकी क़दरदानी क्या।

आज़ाद—दिल में तो खुश हुई होंगी, क्यों महरी ?

महरी—अब यह आप जानें और वह जानें, हमसे क्या ?

एकाएक नूर उठ कर चली गयी। आज़ाद और महरी के सिवा वहाँ कोई न रहा, तब महरी ने आज़ाद से कहा—हुज़ूर ने मुझे पहचाना नहीं, और मैं हुज़ूर को देखते ही पहचान गयी, आप सुरैया बेगम के यहाँ आया-जाया करते थे।

आज़ाद—हाँ, अब याद आया, बेशक मैंने तुमको उनके यहाँ देखा था। कहो, मालूम है कि अब वह कहाँ हैं ?

महरी—हुज़ूर, अब वह वहाँ हैं जहाँ चिड़िया भी नहीं जा सकती; मगर कुछ इनाम दीजिए तो दिखा दूँ। दूर ही से बात-चीत होगी। एक रईस आज़ाद नाम के थे, उन्हीं के इश्क़ में जोगिन हो गयीं। जब मालूम हुआ कि आज़ाद ने हुस्नआरा से शादी कर ली तो मजबूर हो कर एक नवाब से निकाह पढ़वा लिया। आज़ाद ने यह बहुत बुरा किया। जो अपने ऊपर जान दे, उसके साथ ऐसी बेवफ़ाई न करनी चाहिए।

आजाद—हमने सुना है कि आज़ाद उन्हें भठियारी समझ कर निकल भागे।

महरी—अगर आप कुछ दिलवायें तो मैं बीड़ा उठाती हूँ कि एक नज़र अच्छी तरह दिखा दूँगी।

आजाद—मंजूर, मगर बेईमानी की सनद नहीं।

महरी—क्या मजाल, इनाम पीछे दीजिएगा, पहले एक कौड़ी भी न लूँगी।

महरी ने आज़ाद से यहाँ का सारा कच्चा चिट्ठा कह सुनाया—मियाँ, यह बुढ़िया जितनी ऊपर है, उतनी ही नीचे है, इसके काटे का मंत्र नहीं। पर आजाद को सुरैया बेगम की धुन थी। पूछा—भला उनका मकान हम देख सकते हैं?

महरी—जी हाँ, वह क्या सामने है।

आज़ाद—और यह जितनी यहाँ हैं, सब इसी फैशन की होंगी?

महरी—किसी को चुरा लायी है, किसी को मोल लिया है, बस कुछ पूछिए न?

इतने में किसी ने सीटी बजायी और महरी फ़ौरन उधर चली गयी। थोड़ी ही देर में कुंदन आयी और कहा—ऐं, यहाँ तुम बैठे हो, तोबा तोबा, मगर लड़कियों को (महरी को पुकार कर) क्या करूँ, इतनी शरमीली हैं कि जिसकी कोई हद ही नहीं। ऐ, उनको बुलाओ, कहो, यहाँ आकर बैठें। यह क्या बात है? जैसे कोई काटे खाता है!

यह सुनते ही सनम छम-छम करती हुई आयी। आजाद ने देखा तो होश उड़ गये, इस मरतबा ग़ज़ब का निखार था। आज़ाद अपने दिल में सोचे कि यह सूरत और यह पेशा! ठान ली कि किसी मौक़े पर जिले के हाकिम को जरूर लायेंगे और उनसे कहेंगे कि खुदा के लिए इन परियों को इस मक्कार औरत से बचाओ।

कुंदन ने सनम के हाथ में एक पंखा दे दिया और झलने को कहा। फिर आज़ाद से बोली—अगर किसी चीज़ की जरूरत हो तो बयान कर दो।

आज़ाद—इस वक़्त दिल वह मज़े लूट रहा है जो बयान से बाहर है।

कुंदन—मेरे यहाँ सफ़ाई का बहुत इंतज़ाम है।

आज़ाद—आपके कहने की जरूरत नहीं।

कुंदन—यह जितनी हैं सब एक से एक बढ़ी हुई हैं।

आज़ाद—इनके शौहर भी इन्हीं के से हों तो बात है।

कुंदन—इसमें किसी के सिखाने की जरूरत नहीं। मैं इनके लिए ऐसे लोगों को चुनूँगी जिनका कहीं सानी न हो। इनको खिलाया, पिलाया, गाना सिखाया, अब इन पर जुल्म कैसे बरदाश्त करूँगी?

आज़ाद—और तो और, मगर इनको तो आपने खूब ही सिखाया।

कुंदन—अपना-अपना दिल है, मेरी निगाह में तो सब बराबर, आप दो-चार दिन यहाँ रहें, अगर इनकी तबीयत ने मंजूर किया तो इनके साथ आपका निकाह कर दूँगी, बस अब तो खुश हुए।

महरी—वह शर्तें तो बता दीजिए!

कुंदन—खबरदार, बीच में न बोल उठा करो, समझीं?

महरी—हाँ हुजूर, खता हुई।

आजाद—फिर अब तो शर्तें बयान ही कर दीजिए न।

कुंदन—इतमीनान के साथ बयान करूँगी।

आजाद—(सनम से) तुमने तो हमें अपना गुलाम ही बना लिया।

सनम ने कोई जवाब न दिया।

आजाद—अब इनसे क्या कोई बात करे—

गवारा नहीं है जिन्हें बात करना,
सुनेंगे वह काहे को किस्सा हमारा।

कुंदन—ऐ हाँ, यह तुममें क्या ऐब है? बातें करो बेटा!

सनम—अम्माँजान, कोई बात हो तो क्या मुजायका और यों ख्वाहमख्वाह एक अजनबी से बातें करना कौन सी दानाई है।

कुंदन—खुदा को गवाह करके कहती हूँ कि यह सबकी सब बड़ी शरमीली हैं।

आजाद को इस वक्त याद आया कि एक दोस्त से मिलने जाना है, इसलिए कुंदन से रुखसत माँगी और कहा कि आज माफ कीजिए, कल हाजिर होऊँगा, मगर अकेले आऊँ, या दोस्तों को भी साथ लेता आऊँ? कुंदन ने खाना खाने के लिए बहुत जिद की मगर आज़ाद ने न माना।

आजाद ने अभी बाग के बाहर भी कदम नहीं रखा था कि महरी दौड़ी आयी और कहा—हुजूर को बीबी बुलाती हैं। आजाद अंदर गये तो क्या देखते हैं कि कुंदन के पास सनम और उसकी सहेली के सिवा एक और कामिनी बैठी हुई है जो शान-बान में उन दोनों से बढ कर है।

कुंदन—यह एक जगह गयी हुई थीं, अभी डोली से उतरी हैं। मैंने कहा, तुमको जरी दिखा दूँ कि मेरा घर सचमुच परिस्तान है, मगर बदी करीब नहीं आने पाती।

आज़ाद—बेशक, बदी का यहाँ जिक्र ही क्या है?

कुंदन—सबसे मिल जुल के चलना और किसी का दिल न दुखाना मेरा उसूल है, मुझे आज तक किसी ने किसी से लड़ते न देखा होगा।

आजाद—यह तो सबों से बढ़-चढ कर हैं।

कुंदन—बेटा, सभी घर गृहस्थ की बहू-बेटियाँ हैं, कहीं आयें न जायें, न किसी से हँसी, न दिल्लगी।

आजाद—बेशक, हमें आपके यहाँ का करीना बहुत पसंद आया।

कुंदन—बोलो बेटा, मुँह से कुछ बोलो, देखो, एक शरीफ़ आदमी बैठे हैं और तुम न बोलती हो न चालती हो।

परी—क्या करूँ, आप ही आप बकूँ?

कुंदन—हाँ यह भी ठीक है, वह तुम्हारी तरफ़ मुँह करके बात-चीत करें तब बोलो। लीजिए साहब, अब, तो आप ही का कुसूर ठहरा।

आज़ाद—भला सुनिए तो, मेहमानों की ख़ातिरदारी भी कोई चीज़ है या नहीं?

कुंदन—हाँ, यह भी ठीक है, अब बताओ बेटा?

परी—अम्मींजान, हम तो सबके मेहमान हैं, हमारी जगह सबके दिल में है, हम भला किसी की ख़ातिरदारी क्यों करें?

कुंदन—अब फ़र्माइए हजरत, जवाब पाया?

आज़ाद—वह जवाब पाया कि लाजवाब हो गया। खैर साहब, ख़ातिरदारी न सही, कुछ गुस्सा ही कीजिए।

परी—उसके लिए भी क़िस्मत चाहिए।

मियाँ आज़ाद बड़े बोलक्कड़ थे, मगर इस वक्त़ सिट्टी-पिट्टी भूल गये।

कुंदन—अब कुछ कहिए, चुप क्यों बैठे हैं?

परी—अम्मींजान, आपकी तालीम ऐसी-वैसी नहीं है कि हम बंद रहें।

कुंदन—मगर मियाँ साहब की क़लई खुल गयी। अरे कुछ तो फ़र्माइए हज़रत—

कुछ तो कहिए कि लोग कहते हैं—
आज 'ग़ालिब' ग़ज़लसरा न हुआ।

आज़ाद—आप शेर भी कहती हैं?

नूर—ऐ वाह, ऐसे घबड़ाये कि 'ग़ालिब' का तखल्लुस मौजूद है और आप पूछते हैं कि आप शेर भी कहती हैं?

परी—आदमी में हवास ही हवास तो है, और है क्या?

सनम—हम जो गरदन झुकाये बैठे थे तो आप बहुत शेर थे, मगर अब होश उड़े हुए हैं।

सहेली—तुम पर रीझे हुए हैं बहन, देखती हो, किन आँखों से घूर रहे हैं।

परी—ऐ हटो भी, एड़ी-चोटी पर क़ुरबान कर दूँ।

आज़ाद—या खुदा, अब हम ऐसे गये गुज़रे हो गये?

परी—और आप अपने को समझे क्या हैं?

कुंदन—यह हम न मानेंगे, हँसी-दिल्लगी और बात है, मगर यह भी लाख दो लाख में एक हैं।

परी—अब अम्मींजान कब तक तारीफ़ किया करेंगी।

आज़ाद—फिर जो तारीफ के क़ाबिल होता है उसकी तारीफ होती ही है।

नूर—उँह-उँह, घर की पुटकी बासी साग।

आज़ाद—जलन होगी कि इनकी तारीफ क्यों की।

नूर—यहाँ तारीफ की परवा नहीं।

कुंदन—यह तो खूब कही, अब इसका जवाब दीजिए।

आज़ाद—हसीनों को किसी की तारीफ कब पसंद आती है ?

नूर—भला खैर, आप इस काबिल तो हुए कि आपके हुस्न से लोगों के दिल में जलन होने लगी।

कुंदन—(सनम से) तुमने इनको कुछ सुनाया नहीं बेटा ?

सनम—हम क्या कुछ इनके नौकर हैं ?

आज़ाद—खुदा के लिए कोई फड़कती हुई ग़ज़ल गाओ; बल्कि अगर कुंदन साहब का हुक्म हो तो सब मिल कर गायें।

सनम—हुक्म, हुक्म तो हम बादशाह-वजीर का न मानेंगे।

परी—अब इसी बात पर जो कोई गाये।

कुंदन—अच्छा, हुक्म कहा तो क्या गुनाह किया, कितनी ढीठ लड़कियाँ हैं कि नाक पर मक्खी नहीं बैठने देतीं।

सनम—अच्छा बहन, आओ, मिल-मिल कर गायें—

ऐ इश्के कमर दिल का जलाना नहीं अच्छा।

परी—यह कहाँ से बूढ़ी ग़जल निकाली ? यह ग़जल गाओ—

गया यार आफत पड़ी इस शहर पर;
उदासी बरसने लगी बाम व दर पर।
सबा ने भरी दिन को एक आह ठंडी;
कयामत हुई या दिले नौहागर पर।
मेरे भावे गुलशन को आतश लगी है ;
नज़र क्या ९पड़े खाक गुलहाय तर पर।
कोई देव था या कि जिन था वह काफ़िर ;
मुझे गुस्सा आता है पिछले पहर पर।

एकाएक किसी ने बाहर से आवाज दी। कुंदन ने दरवाजे पर जा कर कहा—कौन साहब हैं ?

सिपाही—दारोग़ा जी आये हैं, दरवाज़ा खोल दो।

कुंदन—ऐ तो यहाँ किसके पास तशरीफ़ लाये हैं ?

सिपाही—कुंदन कुटनी के यहाँ आये हैं। यही मकान है या और ?

दूसरा सिपाही—हाँ-हाँ जी, यही है, हमसे पूछो।

इधर कुंदन पुलीसवालों से बातें करती थी, उधर आज़ाद तीनों औरतों के साथ बाग़ में चले गये और दरवाजा बंद कर दिया।

आज़ाद—यह माजरा क्या है भई ?

सनम—दौड़ आयी है मियाँ, दरवाजा बंद करने से क्या होगा, कोई तदबीर ऐसी बताओ कि इस घर से निकल भागें।

परी—हमें यहाँ एक दम का रहना पसंद नहीं।

आज़ाद—किसी के साथ शादी क्यों नहीं कर लेती?

नूर—ऐ है! यह क्या ग़ज़ब करते हो, आहिस्ता से बोलो।

आज़ाद—आखिर यह दौड़ क्यों आयी है, हम भी तो सुनें।

सनम—कल एक भलेमानस आये थे। उनके पास एक सोने की घड़ी, सोने की ज़ंजीर, एक बेग, पाँच आशर्फ़ियाँ और कुछ रुपये थे। यह भाँप गयी। उसको शराब पिला कर सारी चीज़ें उड़ा दीं। सुबह को जब उसने अपनी चीज़ों की तलाश की तो धमकाया कि दर्राओगे तो पुलीस को इत्तला कर दूँगी। वह बेचारा सीधा-सादा आदमी, चुपचाप चला गया और दारोग़ा से शिकायत की, अब वही दौड़ आयी है।

आजाद—अच्छा! यह हथकंडे हैं।

सनम—कुछ पूछो न, जान अज़ाब में है।

नूर—अब खुदा ही जाने, किस-किस का नाश वह करेगी, क्या आग लगायेगी।

सनम—अजी, वह किसी से दबनेवाली नहीं है।

परी—वह न दबेंगी साहब तक से, यह दारोग़ा लिये फिरती हैं।

सनम—जरी सुनो तो क्या हो रहा है।

आज़ाद ने दरवाजे के पास से कान लगा कर सुना तो मालूम हुआ कि बीबी कुंदन पुलीसवालों से बहस कर रही हैं कि तुम मेरे घर भर की तलाशी लो। मगर याद रखना, कल ही तो नालिश करूँगी। मुझे अकेली औरत समझके धमका लिया है। मैं अदालत चढ़ूँगी। लेना एक न देना दो, उस पर यह अंधेर! मैं साहब से कहूँगी कि इसकी नियत खराब है, यह रिआया को दिक करता है और परायी बहू-बेटी को ताकता है।

सनम—सुनती हो, कैसा डाँट रही है पुलीसवालों को।

परी—चुपचाप, ऐसा न हो, सब इधर आ जायँ।

उधर कुंदन ने मुसाफ़िर को कोसना शुरू किया—अल्लाह करे, इस अठवारे में इसका जनाज़ा निकले। मुए ने आके मेरी जान अज़ाब में कर दी। मैंने तो ग़रीब मुसाफ़िर समझ कर टिका लिया था। मुआ उलटा लिये पड़ता है।

मुसाफ़िर—दारोग़ा जी, इस औरत ने सैकड़ों का माल मारा है।

सिपाही—हुजूर, यह पहले ग़ुलाम हुसैन के पुल पर रहती थी। वहाँ एक अहीरिन की लड़की को फ़ुसला कर घर लायी और उसी दिन मकान बदल दिया। अहीर ने थाने पर रपट लिखवायी। हम जो जाते हैं तो मकान में ताला पड़ा हुआ, बहुत तलाश की, पता न मिला। खुदा जाने, लड़की किसी के हाथ बेच डाली या मर गयी।

कुंदन—हाँ-हाँ, बेच डाली, यही तो हमारा पेशा है।

दारोग़ा—(मुसाफिर से) क्यों हज़रत, जब आपको मालूम था कि यह कुटनी है तो आप इसके यहाँ टिके क्यों?

मुसाफिर—बेचा था, और क्या, दो-ढाई सौ पर पानी फिर गया, मगर शुक्र है कि मार नहीं डाला।

कुंदन—जी हाँ, साफ़ बच गये।

दारोग़ा—(कुंदन से) तू ज़रा भी नहीं शरमाती?

कुंदन—शरमाऊँ क्यों? क्या चोरी की है?

दारोग़ा—बस, खैरियत इसी में है कि इनका माल इनके हवाले कर दो।

कुंदन—देखिए, अब किसी दूसरे घर डाका डालूँ तो इनके रुपये मिलें।

सिपाही—हुज़ूर, इसे पकड़के थाने ले चलिए, इस तरह यह न मानेगी?

कुंदन—थाने में क्यों जाऊँ? क्या इज्ज़त बेचनी है! यह न समझना कि अकेली है। अभी अपने दामाद को बुला दूँ तो आँखें खुल जायँ।

यह सुनते ही आज़ाद के होश उड़ गये। बोले, इस मुरदार को सूझी क्या!

महरी—ज़रा दरवाज़ा खोलिए।

आज़ाद—ख़ुदा की मार तुझ पर।

कुंदन—ऐ बेटा, ज़री इधर आओ। मर्द की सूरत देख कर शायद यह लोग इतना ज़ुल्म न करें।

दारोग़ा—अल्लाह, क्या तोप साथ है? हम सरकारी आदमी और तुम्हारे दामाद से दब जायँ! अब तो बताओ, इनके रुपये मिलेंगे या नहीं?

कुंदन एक सिपाही को अलग ले गयी और कहा—मैं इसी वक़्त दारोग़ा जी को इस शर्त पर सत्तर रुपये देती हूँ कि वह इस मामले को दबा दें। अगर तुम यह काम पूरा कर दो तो दस रुपया तुम्हें भी दूँगी।

दारोग़ा ने देखा कि यह मक्कार औरत झाँसा देना चाहती है तो उसे साथ ले कर थाने चले गये।

आज़ाद—बड़ी बला इस वक्त टली। औरत क्या, सचमुच बला है।

सनम—आपको अभी इससे कहाँ साबिका पड़ा है।

आज़ाद—मैं तो इतने ही में ऊब उठा।

सनम—अभी यह न समझना कि बला टल गयी, हम सब बाँधे जायँगे।

आज़ाद—ज़रा इस शरारत को तो देखो कि मुझे थानेदार से लड़वाये देती थी।

सनम—खुश तो न होंगे कि दामाद बना दिया।

आज़ाद—हम ऐसी सास से बाज़ आये।

सनम—इस गली से कोई आदमी बिना लुटे नहीं जा सकता। एक औरत को तो इसने ज़हर दिलवा दिया था।

नूर—पड़ोसिन से कोई जा कर कह दे कि तुम अपनी लड़की का क्यों सत्यानाश करती हो। जो कुछ रूखा-सूखा अल्लाह दे वह खाओ और पड़ी रहो।

महरी—हाँ और क्या, ऐसे पोलाव से दाल-दलिया ही अच्छी।

सनम—जाके बुला लाओ तो यह समझा दें हीले से।

'महरी जा कर पड़ोसिन को बुला लायी। आज़ाद ने कहा—तुम्हारी पड़ोसिन को तो सिपाही ले गये। अब यह मकान हमें सौंप गयी हैं। पड़ोसिन ने हँस कर कहा—मियाँ, उनको सिपाही ले जा कर क्या करेंगे? आज गयी हैं, कल छूट आयेंगी।

इतने मे एक आदमी ने दरवाजे पर हाथ मारा। महरी ने दरवाज़ा खोला तो एक बूढ़े मियाँ दिखाई दिये। पूछा—बी कुंदन कहाँ हैं?

महरी ने कहा—उनको थाने के लोग ले गये।

सनम—एक सिरे से इतने मुकदमे, एक, दो, तीन।

नूर—हर रोज एक नया पंछी फाँसती है।

बूढ़े मियाँ—बस, अब प्याला भर गया।

सनम—रोज तो यही सुनती हूँ कि प्याला भर गया।

बूढ़े मियाँ—अब मौका पाके तुम सब कहीं चल क्यों नहीं देती हो? अब इस वक़्त तो वह नहीं है।

सनम—जायँ तो बे सोचे समझे कहाँ जायँ।

आज़ाद—बस इसी इत्तिफ़ाक को हम लोग किस्मत कहते हैं और इसी का नाम अक़बाल है।

बूढ़े मियाँ—जी हाँ, आप तो नये आये हैं, यह औरत खुदा जाने, कितने घर तबाह कर चुकी है। पुलिस में भी गिरफ़्तार हुई। मजिस्ट्रेटी भी गयी। सब कुछ हुआ, सजा पायी, मगर कोई नहीं पूछता। मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि इनमें से जिसका जी चाहे, मेरे साथ चली चले। किसी शरीफ़ के साथ निकाह पढ़वा दूँगा, मगर कोई राजी नहीं होती।

एकाएक किसी ने फिर दरवाजे पर आवाज दी, महरी ने दरवाजा खोला तो मम्मन और गुलबाज अंदर दाखिल हुए। दोनों ढाटे बाँधे हुए थे। महरी उन्हें इशारे से बुला कर बाग़ में ले गयी।

मम्मन—कुंदन कहाँ हैं?

महरी—वह तो आज बड़ी मुसीबत में फँस गयी। पुलीसवाले पकड़ ले गये।

मम्मन—हम तो आज और ही मनसूबे बाँध कर आये थे। वह जो महाजन गली में रहते हैं, उनकी बहू अजमेर से आयी है।

महरी—हाँ, मेरा जाना हुआ है। बहुत से रुपये लायी है।

गुलबाज—महाजन गंगा नहाने गया है। परसों तक आ जायगा। हमने कई आदमियों से कह दिया था। सब के सब आते होंगे।

मम्मन—कुंदन नहीं हैं, न सही। हम अपने काम से क्यों ग़ाफ़िल रहें। आओ एक-आध चक्कर लगाये।

इतने में बाग़ के दरवाजे की तरफ़ सीटी की आवाज़ आयी। गुलबाज़ ने दरवाजा खोल दिया और बोला—कौन है, दिलवर?

दिलवर—बस अब देर न करो। वक्त जाता है भाई।

गुलबाज़—अरे यार, आज तो मामला हुच गया।

दिलवर—ऐं! ऐसा न कहो। दो लाख नक़द रखा हुआ है। इसमें एक भी कम हो, तो जो जुर्माना कहो दूँ।

मम्मन—अच्छा, तो कहीं भागा जाता है?

दिलवर—यह क्या ज़रूरी है कि कुंदन जरूर ही हो।

मम्मन—भाईजान, एक कुंदन के न होने से कहीं यार लोग चूकते हैं? और भी कई सबब हैं।

दिलवर—ऐसे मामले में इतनी सुस्ती!

मम्मन—यह सारा कुसुर गुलबाज का है। चंडूखाने में पडे छींटे उडाया किये, और सारा खेल बिगाड़ दिया।

दिलवर—आज तक इस मामले में ऐसे लौंडे नहीं बने थे। वह दिन याद है कि जब जहूरन की गली में छुरी चली थी?

गुलबाज—मैं उस दिन कहाँ था?

दिलवर—हाँ, तुम तो मुर्शिदाबाद चले गये थे। और यहाँ जहूरन ने हमें इत्तला दी कि सुल्तान मिरजा चल बसे। सुल्तान मिरजा के महल्ले में सब मोटे रुपयेवाले, मगर उनके मारे किसी कि हिम्मत न पड़ती थी कि उनके महल्ले में आय।

मम्मन—वह तो इस फ़न का उस्ताद था।

दिलवर—बस जनाब, इधर सुल्तान मिरजा मरे, उधर जहूरन ने हमें बुलवाया। हम लोग जा पहुँचे। अब सुनिए कि जिस तरफ जाते हैं, कोई गा रहा है, कोई घर ऐसा नहीं, जहाँ रोशनी और जाग न हो।

मम्मन—किसी ने पहले से महल्लेवालों को होशियार कर दिया होगा।

दिलवर—जी हाँ, सुनते तो जाइए। पीछे खुला न। हुआ यह कि जिस वक्त हम लोगों ने जहूरन के दरवाजे पर आवाज दी, तो उनकी मामा ने पड़ोस के मकान में कंकरी फेंकी। उस पड़ोसी ने दूसरे मकान में। इस तरह महल्ले भर में खबर हो गयी।

यहाँ तो ये बातें हो रही थीं, उधर बूढ़े मियाँ और आजाद में कुंदन को सजा दिलाने के लिए सलाहें होती थीं—

आज़ाद—जिन-जिन लड़कियों को इसने चोरी से बेच लिया है, उन सबों का पता लगाइए।

बूढ़े मियाँ—अजी, एक-दो हों, तो पता लगाऊँ। यहाँ तो शुमार ही नहीं।

आजाद—मैं आज ही हाकिम जिला से इसका जिक्र करूँगा।

इन लोगों से रुखसत हो कर आजाद मजिस्ट्रेट के बँगले पर आये। पहले अपने कमरे में जा कर मुँह-हाथ धोया, और कपडे बदल कर उस कमरे में गये, जहाँ साहब मेहमानों के साथ डिनर खाने बैठे थे। अभी खाना चुना ही जा रहा था कि आज़ाद

कमरे में दाखिल हुए। आप शाम को आने का वादा करके गये थे। १ बजे पहुँचे तो सबने मिल कर कहकहा लगाया।

मेम—क्यों साहब, आपके यहाँ अब शाम हुई?

साहब—बड़ी देर से आपका इंतज़ार था।

मीडा—कहीं शादी तो नहीं तय कर आये?

साहब—हाँ, देर होने से तो हम सबको यही शक हुआ था।

मेम—जब तक आप देर की वजह न बतायेंगे, यह शक न दूर होगा। आप लोगों में तो चार शादियाँ हो सकती हैं।

क्लारिसा—आप चुप क्यों हैं, कोई बहाना सोच रहे हैं?

आज़ाद—अब मैं क्या बयान करूँ। यहाँ तो सब क़ाल-बुशनास ही बैठे हैं। कोई चेहरे से ताड़ जाता है, कोई आँखों से पहचान लेता है; मगर इस वक्त मैं जहाँ था, वहाँ खुदा किसी को न ले जाय।

साहब—जुवारियों का अड्डा तो नहीं था?

आज़ाद—नहीं वह और ही मामला था। इतमीनान से कहूँगा।

लोग खाना खाने लगे। साहब के बहुत जोर देने पर भी आजाद ने शराब न पी। खाना हो जाने पर लेडियों ने गाना शुरू किया और साहब भी शरीक हुए। उसके बाद उन्होंने आजाद से कुछ गाने को कहा।

आज़ाद—आपको इसमें क्या लुत्फ़ आयेगा?

मेम—नहीं, हम हिंदुस्तानी गाना पसंद करते हैं, मगर जो समझ में आये।

आजाद ने बहुत हीला किया, मगर साहब ने एक न माना। आखिर मजबूर हो कर यह ग़ज़ल गायी—

> जान से जाती हैं क्या क्या हसरतें;
> काश वह भी दिल में आना छोड़ दे।
> 'दाग़' से मेरे जहन्नुम को मिसाल;
> तू भी वायज़ दिल जलाना छोड़ दे।
> परदे की कुछ हद भी है परदानशीं;
> खुलके मिल बस मुँह छिपाना छोड दे।

मेम—हम कुछ-कुछ समझे। वह जहन्नुम का शेर अच्छा है।

साहब—हम तो कुछ नहीं समझे। मगर कानों को अच्छा मालूम हुआ।

दूसरे दिन आजाद तड़के कुंदन के मकान पर पहुँचे और महरी से बोले—क्यों भाई, तुम सुरैया बेगम को किसी तरह दिखा सकती हो?

महरी—भला मैं कैसे दिखा दूँ? अब तो मेरी वहाँ पहुँच ही नहीं।

आजाद—खुदा गवाह है, फ़क़त एक नजर भर देखना चाहता हूँ।

महरी—खैर, अब आप कहते ही हैं तो कोशिश करूँगी। और आज ही शाम को यहीं चले आइएगा।

आज़ाद—ख़ुदा तुमको सलामत रखे, बड़ा काम निकलेगा।

महरी—ऐ मियाँ, मैं लौंडी हूँ। तब भी तुम्हारा ही नमक खाती थी, और अब भी...।

आज़ाद—अच्छा, इतना बता दो कि किस तरकीब से मिलूँगा?

महरी—यहाँ एक शाह साहब रहते हैं। सुरैया बेगम उनकी मुरीद हैं। उनके मियाँ ने भी हुक्म दे दिया है कि जब उनका जी चाहे, शाह साहब के यहाँ जायँ। शाह जी का सिन कोई दो सौ बरस का होगा। और हुजूर, जो वह कह देते हैं, वही होता है। क्या मजाल जो फरक पड़े।

आजाद—हाँ साहब, फ़क़ीर हैं, नहीं तो दुनिया कायम कैसे है।

महरी—मैं शाह जी को एक और जगह भेज दूँगी। आप उनकी जगह जाके बैठ जाइएगा। शाह साहब की तरफ़ कोई आँख उठा कर नहीं देख सकता। इसलिए आपको यह खौफ भी नहीं है कि सुरैया बेगम पहचान जायेंगी।

आजाद—बड़ा एहसान होगा। उम्र भर न भूलूँगा। अच्छा, तो शाम को आऊँगा।

शाम को आजाद कुंदन के घर पहुँच गये। महरी ने कहा—लीजिए, मुबारक हो। सब मामला चौकस है।

आजाद—जहाँ तुम हो, वहाँ किस बात की कमी। तुमसे आज मुलाकात हुई थी? हमारा जिक्र तो नहीं आया? हमसे नाराज तो नहीं हैं?

महरी—ऐ हुजूर, अब तक रोती हैं। अकसर फ़रमाती हैं कि जब आजाद सुनेंगे कि उसने एक अमीर के साथ निकाह कर लिया, तो अपने दिल में क्या कहेंगे।

शाह साहब शहर के बाहर एक इमली के पेड़ के नीचे रहते थे। महरी आज़ाद को वहाँ ले गयी और दरख्त के नीचेवाली कोठरी में बैठा कर बोली—आप यहीं बैठिए, बेगम साहब अब आती ही होंगी। जब वह आँख बंद करके नजर दिखायें तो ले लीजिएगा। फिर आपमें और उनमें खुद ही बातें होंगी।

आजाद—ऐसा न हो कि मुझे देख कर डर जायँ।

महरी—जी नहीं, दिल की मजबूत हैं। बनों-जगलों में फिर आयी हैं।

इतने में किसी आदमी के गाने की आवाज आयी।

> बुते-जालिम नहीं सुनता किसी की;
> ग़रीबों का खुदा फ़रियाद-रस है।

आजाद—यह इस वक्त इस वीराने में कौन गा रहा है?

महरी—सिड़ी है। खबर पायी होगी कि आज यहाँ आनेवाली हैं।

आज़ाद—बाबा साहब को इसका हाल मालूम है या नहीं?

महरी—सभी जानते हैं। दिन रात यों ही बका करता है; और कोई काम ही नहीं।

आज़ाद—भला यह तो बताओ कि सुरैया बेगम के साथ कौन-कौन होगा?

महरी—दो-एक महरियाँ होंगी, मौलाई बेगम होंगी और दस-बारह सिपाही।

आजाद—महरियाँ अंदर साथ आयेंगी या बाहर ही रहेंगी?

महरी—इस कमरे में कोई नहीं आ सकता।

इतने में सुरैया बेगम की सवारी दरवाजे पर आ पहुँची। आज़ाद का दिल धक-धक करता था। कुछ तो इस बात की खुशी थी कि मुद्दत के बाद अलारक्खी को देखेंगे और कुछ इस बात का खयाल कि कहीं परदा न खुल जाय।

आज़ाद—ज़रा देखो, पालकी से उतरीं या नहीं।

महरी—बाग़ में टहल रही हैं। मौलाई बेगम भी हैं। चलके दीवार के पास खड़े हो कर आड़ से देखिए।

आजाद—डर मालूम होता है कि कहीं देख न लें।

आखिर आजाद से न रहा गया। महरी के साथ आड़ में खड़े हुए तो देखा कि बाग़ में कई औरतें चमन की सैर कर रही हैं।

महरी—जो जरा भी इनको मालूम हो जाय कि आज़ाद खड़े देख रहे हैं तो खुदा जाने, दिल का क्या हाल हो।

आजाद—पुकारूँ? बेअख्तियार जी चाहता है कि पुकारूँ।

इतने मे बेगम दीवार के पास आयीं और बैठ कर बातें करने लगीं।

सुरैया—इस वक्त तो गाना सुनने को जी चाहता है।

मौलाई—देखिए, यह सौदाई क्या गा रहा है।

सुरैया—अरे! इस मुए को अब तक मौत न आयी? इसे कौन मेरे आने की खबर दे दिया करता है। शाह जी से कहूँगी कि इसको मौत आये।

मौलाई—ऐ नहीं, काहे को मौत आये बेचारे को। मगर आवाज़ अच्छी है।

सुरैया—आग लगे इसकी आवाज को।

इतने मे जोर से पानी बरसने लगा। सब की सब इधर-उधर दौड़ने लगीं। आखिर एक माली ने कहा कि हुजूर, सामने का बँगला खाली कर दिया है, उसमें बैठिए। सब की सब उस बँगले में गयीं। जब कुछ देर तक बादल न खुला तो सुरैया बेगम ने कहा—भई, अब तो कुछ खाने को जी चाहता है।

ममोला नाम की एक महरी उनके साथ थी। बोली—शाह जी के यहाँ से कुछ लाऊँ? मगर फ़क़ीरों के पास दाल-रोटी के सिवा और क्या होगा।

सुरैया—जाओ, जो कुछ मिले, ले आओ। ऐसा न हो कि वहाँ कोई बेतुकी बात कहने लगो।

महरी ने दुपट्टे को लपेट कर ऊपर से डोली का परदा ओढ़ा। दूसरी महरी ने मशालची को हुक्म दिया कि मशाल जला। आगे-आगे मशालची, पीछे-पीछे दोनों महरियाँ दरवाजे पर आयीं और आवाज दी। आजाद और महरी ने समझा कि बेगम साहब आ गयीं, मगर दरवाजा खोला तो देखा कि महरियाँ हैं।

महरी—आओ, आओ। क्या बेगम साहब बाग़ ही में हैं ?

ममोला—जी हाँ। मगर एक काम कीजिए। शाह साहब के पास भेजा है। यह बताओ कि इस वक्त कुछ खाने को है ?

महरी ने शाह जी के बावरचीखाने से चार मोटी-मोटी रोटियाँ और एक प्याला मसूर की दाल का ला कर दिया। दोनों महरियाँ खाना ले कर बँगले में पहुँचीं तो सुरैया बेगम ने पूछा—कहो, बेटा कि बेटी ?

ममोला—हुजूर, फ़क़ीरों के दरबार से भला कोई खाली हाथ आता है ? लीजिए, यह मोटे-मोटे टिक्कड़ हैं।

मौलाई—इस वक्त यही ग़नीमत हैं।

ममोला—बेगम साहब आपसे एक अरज है।

सुरैया—क्या है, कहो तुम्हारी बातों से हमें उलझन होती है।

ममोला—हुजूर, जब हम खाना लेके आते थे तो देखा कि बाग़ के दरवाजे पर एक बेकस, बेगुनाह, बेचारा दबका दबकाया खड़ा मींग रहा है।

सुरैया—फिर तुमने वही पाजीपने की ली न ! चलो हटो सामने से।

मौलाई—बहन, खुदा के लिए इतना कह दो कि जहाँ सिपाही बैठे हैं, वहीं उसे भी बुला लें।

सुरैया—फिर मुझसे क्या कहती हो ?

सिपाहियों ने दीवाने को बुला कर बैठा लिया। उसने यहाँ आते ही तान लगायी—

> पसे फ़िना हमें गरचूँ सतायेगा फिर क्या,
> मिटे हुए को यह ज़ालिम मिटायेगा फिर क्या ?
> जईफ़ नालादिल उसका हिला नहीं सकता,
> यह जाके अर्श का पाया हिलायेगा फिर क्या ?
> शरीक जो न हुआ एक दम को फूलों में,
> वह फूल आके लेहद के उठायेगा फिर क्या ?
> खुदा को मानो न बिस्मिल को अपने जब्ह करो,
> तड़पके सैर वह तुमको दिखायेगा फिर क्या ?

सुरैया—देखा न। यह कम्बख्त वे गुल मचाये कभी न रहेगा।

मौलाई—बस यही तो इसमें ऐब है। मगर ग़ज़ल भी ढूँढ़के अपने ही मतलब की कही है।

सुरैया—कम्बख्त बदनाम करता फिरता है।

दोनों बेगमों ने हाथ धोया। उस वक्त वहाँ मसूर की दाल और रोटी पोलाव और कोरमे को मात करती थी। उस पर माली ने कैथे की चटनी तैयार कराके महरी के हाथ भेजवा दी। इस वक्त इस चटनी ने वह मजा दिया कि कोई सुरैया बेगम की ज़बान से सुने।

मौलाई—माली ने इनाम का काम किया है इस वक़्त।

सुरैया—इसमें क्या शक। पाँच रुपये इनाम दे दो।

जब खुदा खुदा करके मेंह थमा और चाँदनी निखरी तो सुरैया बेगम ने महरी भेजी कि शाह जी का हुक्म हो तो हम हाज़िर हों। वहाँ महरी ने कहा—हाँ, शौक से आयें; पूछने की क्या ज़रूरत है।

सुरैया बेगम ने आँखें बंद कीं और शाह जी के पास गयीं। आज़ाद ने उन्हें देखा तो दिल का अजब हाल हुआ। एक ठंडी साँस निकल आयी। सुरैया बेगम घबरायीं कि आज शाह साहब ठंडी साँसें क्यों ले रहे हैं। आँखें खोल दीं तो सामने आज़ाद को बैठे देखा। पहले तो समझीं कि आँखों ने धोखा दिया, मगर क़रीब से ग़ौर करके देखा तो शक दूर हो गया।

उधर आजाद की जबान भी बंद हो गयी। लाख चाहा कि दिल का हाल कह सुनायें, मगर ज़बान खोलना मुहाल हो गया। दोनों ने थोड़ी देर तक एक दूसरे को प्यार और हसरत की नज़र से देखा, मगर बातें करने की हिम्मत न पड़ी। हाँ, आँखों पर दोनों में से किसी को अख्तियार न था। दोनों की आँखों से टप-टप आँसू गिर रहे थे। एकाएक सुरैया बेगम वहाँ से उठ कर बाहर चली आयीं।

ममोला ने पूछा—बेगम साहब, आज इतनी जल्दी क्यों की?

सुरैया—यों ही।

मौलाई—आँखों में आँसू क्यों हैं? शाह साहब से क्या बातें हुईं?

सुरैया—कुछ, नहीं बहन, शाह साहब क्या कहते, जी ही तो है।

मौलाई—हाँ, मगर खुशी और रंज के लिए कोई सबब भी तो होता है।

सुरैया—बहन, हमसे इस वक़्त सबब न पूछो। बड़ी लम्बी कहानी है।

मौलाई—अच्छा, कुछ कतर-ब्योंत करके कह दो।

सुरैया—बहन, बात सारी यह है कि इस वक़्त शाह जी तक ने हमसे चाल की। जो कुछ हमने इस वक़्त देखा, उसके देखने की तमन्ना बरसों से थी, मगर अब आँखें फेर-फेरके देखने के सिवा और क्या है?

मौलाई—(सुरैया के गले में हाथ डाल कर) क्या, आज़ाद मिल गये क्या?

सुरैया—चुप-चुप! कोई सुन न ले।

मौलाई—आज़ाद इस वक़्त कहाँ से आ गये! हमें भी दिखला दो।

सुरैया—रोकता कौन है। जाके देख लो।

मौलाई बेगम चलीं तो सुरैया बेगम ने इनका हाथ पकड़ लिया और कहा—खबरदार, मेरी तरफ़ से कोई पैग़ाम न कहना।

मौलाई बेगम कुछ हिचकती, कुछ झिझकतीं आ कर आज़ाद से बोलीं—शाह जी कभी और भी इस तरफ़ आये थे?

आज़ाद—हम फ़क़ीरों को कहीं आने-जाने से क्या सरोकार। जिधर मौज़ हुई,

चल दिये। दिन को सफ़र, रात को खुदा की याद। हाँ, ग़म है तो यह कि खुदा को पायें।

मौलाई—सुनो शाह जी, आपकी फ़क़ीरी को हम खूब जानते हैं। यह सब काँटे आप ही के बोये हुए हैं। और अब आप फ़क़ीर बन कर यहाँ आये हैं। यह बतलाइए कि आपने उन्हें जो इतना परेशान किया तो किस लिए? इससे आपका क्या मतलब था?

आज़ाद—साफ़-साफ़ तो यह है कि हम उनसे फ़कत दो-दो बातें करना चाहते हैं।

मौलाई—वाह, जब आँखें चार हुईं तब तो कुछ बोले नहीं; और वह बातें हुईं भी तो नतीजा क्या? उनके मिज़ाज को तो आप जानते हैं। एक बार जिसकी हो गयीं, उसकी हो गयीं।

आज़ाद—अच्छा, एक नज़र तो दिखा दो।

मौलाई—अब यह मुमकिन नहीं। क्यों मुफ्त में अपनी जान को हलाकान करोगे।

आज़ाद—तो बिलकुल हाथ धो डालें? अच्छा चलिए, बाग़ में ज़रा दूर ही से दिल के फफोले फोड़ें।

मौलाई—वाह-वाह! जब बाग़ में हों भी।

आज़ाद—अच्छा साहब, लीजिए, सब्र करके बैठे जाते हैं।

मौलाई—मैं जा कर कहती हूँ, मगर उम्मेद नहीं कि मानें।

यह कह कर मौलाई बेगम उठीं और सुरैया बेगम के पास आ कर बोलीं—बहन, अल्लाह जानता है, कितना खूबसूरत जवान है।

सुरैया—हमारा ज़िक्र भी आया था? कुछ कहते थे?

मौलाई—तुम्हारे सिवा और ज़िक्र ही किसका था? बेचारे बहुत रोते थे। हमारी एक बात इस वक्त मानोगी? कहूँ?

सुरैया—कुछ मालूम तो हो, क्या कहोगी?

मौलाई—पहले क़ौल दो, फिर कहेंगे; यों नहीं।

सुरैया—वाह! बे-समझे-बूझे कौल कैसे दे दूँ?

मौलाई—हमारी इतनी खातिर भी न करोगी बहन!

सुरैया—अब क्या जाने, तुम क्या ऊल-जलूल बात कहो।

मौलाई—हम कोई ऐसी बात न कहेंगे जिससे नुकसान हो।

सुरैया—जो बात तुम्हारे दिल में है वह मेरे नाखून मे है।

मौलाई—क्या कहना है। आप ऐसी ही हैं।

सुरैया—अच्छा, और सब बातें मानेंगे सिवा एक बात के।

मौलाई—वह एक बात कौन सी है, हम सुन तो लें।

सुरैया—जिस तरह तुम छिपाती हो उसी तरह हम भी छिपाते हैं।

मौलाई—अल्लाह को गवाह करके कहती हूँ, रो रहा है। मुझसे हाथ जोड़ कर कहा है कि जिस तरह मुमकिन हो, मुझसे मिला दो। मैं इतना ही चाहता हूँ कि नज़र भर कर देख लूँ।

सुरैया—क्या मजाल, ख्वाब तक में सूरत न दिखाऊँ।

मौलाई—मुझे बड़ा तरस आता है।

सुरैया—दुनिया का भी तो खयाल है।

मौलाई—दुनिया से हमें क्या काम? यहाँ ऐसा कौन आता-जाता है। डर काहे का है, चलके ज़रा देख लो, उसका अरमान तो निकल जाय।

सुरैया—ना, मुमकिन नहीं! अब यहाँ से चलोगी भी या नहीं?

मौलाई—हम तो तब तक न चलेंगे, जब तक तुम हमारा कहना न मानोगी।

सुरैया—सुनो मौलाई बेगम, हर काम का कोई न कोई नतीजा होता है। इसका नतीजा तुम क्या सोची हो?

मौलाई—उनका दिल खुश होगा। इस वक़्त वह आपे में नहीं हैं; मगर जब इस मामले पर ग़ौर करेंगे तो उन्हें ज़रूर रंज होगा।

दोनों बेगम पालकियों पर बैठ कर रवाना हुईं। आज़ाद ने मकान की दीवार से सुरैया बेगम को देखा और ठंडी साँस ली।

दूसरे दिन आजाद यहाँ से रुखसत हो कर हुस्नआरा से मिलने चले। बात-बात पर बाँछें खिली जाती थीं। दिमाग़ सातवें आसमान पर था। आज खुदा ने वह दिन दिखाया कि रूस और रूम की मंजिल पूरी करके यार के कूचे में पहुँचे। कहाँ रूस, कहाँ हिंदोस्तान! कहाँ लड़ाई का मैदान, कहाँ हुस्नआरा का मकान! दोनों लेडियों ने उन्हें छेड़ना शुरू किया—

क्लारिसा—आज भला आजाद के दिमाग़ काहे को मिलेंगे।

मीडा—इस वक्त मारे खुशी के इन्हें बात करना भी मुश्किल है।

आजाद—बड़ी मुश्किल है। बोलूँ तो हँसवाऊँ, न बोलूँ तो आवाज़े कसे जायँ।

क्लारिसा—क्या इसमें कुछ झूठ भी है? जिसके लिए दुनिया भर की खाक छानी, उससे मिलने का नशा हुआ ही चाहे।

एकाएक कमरे के बाहर से आवाज आयी—भला रे गीदी, भला, और ज़रा देर में मियाँ खोजी कमरे में दाखिल हुए।

क्लारिसा—आप इतने दिन तक कहाँ थे ख्वाजा साहब?

खोजी—था कहाँ, जहाँ जाता हूँ वहाँ लोग पीछे पड़ जाते हैं। इतनी दावतें खायीं कि क्या किसी ने खायीं होंगी। एक-एक दिन में दो-दो सौ बुलावे आ जाते हैं। अगर न जाऊँ तो लोग कहें, ग़ुरूर करता है। जाऊँ तो इतना वक़्त कहाँ! इसी उधेड़-बुन में पड़ा रहा।

आजाद—अब कुछ हमारे भी काम आओ।

खोजी—और दौड़ा आया किस लिए हूँ। कहो, हुस्नआरा को खबर हुई या नहीं? न हुई हो तो पहुँचूँ। मुझसे ज्यादा इस काम के लायक और किसी को न पाओगे। मैं बड़े काम का आदमी हूँ।

आज़ाद—इसमें क्या शक है भाईजान! बेशक हो।

खोजी—तो फिर मैं चलूँ?

आजाद—नेकी और पूछ-पूछ!

खोजी जानेवाले ही थे कि एक आदमी .होटल की तरफ़ आता दिखाई दिया। उसकी शक्ल-सूरत बिलकुल खोजी से मिलती थी। वही नाटा कद, वही काला रंग, वही नन्हे-नन्हे हाथ-पाँव। खोजी का बड़ा भाई मालूम होता था।

आज़ाद—वल्लाह, बिलकुल खोजी ही हैं!

मीडा—बस, इनको छिपाओ, उनको दिखाओ। उनको छिपाओ, इनको दिखाओ। ज़रा फर्क नहीं।

खोजी—तू कौन है बे? कहाँ चला आता है? कुछ बेधा तो नहीं है? तुम जैसे मसखरों का यहाँ क्या काम?

मसखरा—कोई हमसे बदके देख ले। बड़ा मर्द हो तो आ जाय।

खोजी—क्या कहता है? बरस पड़ूँ?

मसखरा—जा, अपना काम कर। जो गरजता हैं, वह बरसता नहीं।

खोजी—बच्चा, तुम्हारी क़ज़ा मेरे ही हाथ से है।

मसखरा—माशे-भर का आदमी, बौनों के बराबर क़द और चला है मुझे ललकारने!

खोजी—कोई है? लाना तो चंडू की निगाली। ले, आइए!

मसखरा—हम तो जहाँ खड़े थे, वहीं खड़े हैं, शेर कहीं हटा करते हैं। जमे, सो जमे।

खोजी—क़ज़ा खेल रही है तेरी। मैं इसको क्या करूँ। अब जो कुछ कहना-सुनना हो, कह-सुन लो; थोड़ी देर में लाश फड़कती होगी।

मसखरा—ज़री ज़बान सँभाले हुए हज़रत! ऐसा न हो, मैं गरदन पर सवार हो जाऊँ।

होटल में जितने आदमी थे, उनको शिगूफ़ा हाथ आया। सभी इन बौनों की कुश्ती देखने के लिए बेकरार थे। दोनों को चढ़ाने लगे।

एक—भई, हम सब तो ख्वाजा साहब की तरफ़ हैं।

दूसरा—हम भी। यह उससे कहीं तगड़े हैं।

तीसरा—कौन? कहीं हों न। इनमें और उसमें बीस और सोलह का फ़र्क़ है। लो, क्या-क्या बदते हो!

खोजी—जिसका रुपया फ़ालतू हो, वह इसके हाथ पर बदे। जो कुछ बना कर घर ले जाना चाहे, वह हमारे हाथ पर बदे।

मसखरा—एक लपोटे में बोल जाइए तो सही। बात करते-करते पकड़ लाऊँ और चुटकी बजाते चित करूँ, (चुटकी बजा कर) यों-यों।

खोजी—मैं इतनी देर नहीं लगाने का।

मसखरा—अरे चुप भी रह! यह मुँह खाय चौलाई! एक उँगली से वह पेंच बाँधूँ कि तड़पने लगो—

लिया जिसने हमारा नाम, मारा बेगुनाह उसको,
निशाँ जिसने बनाया, बस, वह तीरों का निशाना था।

आज़ाद—बढ़ गये ख्वाजा साहब, यह आपसे बढ़ गये। अब कोई फड़कता हुआ शेर कहिए तो इज़्ज़त रहे।

खोजी—अजी, इससे अच्छा शेर लीजिए—

तड़पा न ज़रा खंजर के तले
　　सिर अपना दिया शिकवा न किया,
था पासे अदब जो क़ातिल का
　　यह भी न हुआ वह भी न हुआ।

मसखरा—ले, अब आ।

खोजी—देख, तेरी कज़ा आ गयी है।

मसखरा—ज़रा सामने आ। ज़मीन में सिर खोंस दूँगा।

खोजी—(ताल ठोक कर) अब भी कहा मान, न लड़।

मसखरा—या अली, मदद कर—

क़ब्र में जिनको न सोना था, सुलाया उनको,
पर मुझे चर्ख़ सितमगर ने सोने न दिया।

आज़ाद—भई खोजी, शायरी में तुम बिलकुल दब गये।

खोजी जवाब देने ही वाले थे कि इतने में मसखरे ने उनकी गरदन में हाथ डाल दिया। करीब था कि ज़मीन पर दे पटके कि मियाँ खोजी सँभले और झल्ला-के मसखरे की गरदन में दोनों हाथ डाल कर बोले—बस, अब तुम मरे।

मसखरा—आज तुझे जीता न छोड़ूँगा।

खोजी—देखो, हाथ टूटा तो नालिश कर दूँगा। कुश्ती में हाथा-पाई कैसी?

मसखरा—अपनी बुढ़िया को बुला लाओ। कोई लाश को रोनेवाली तो हो तुम्हारी!

खोजी—या तो क़त्ल ही करेंगे या तो क़त्ल होंगे।

मसखरा—और हम क़त्ल ही करके छोड़ेंगे।

ख्वाजा साहब ने एक अंटी बतायी तो मसखरा गिरा। साथ ही खोजी भी मुँह के बल ज़मीन पर आ रहे। अब न यह उठते हैं न वह। न वह इनकी गरदन छोड़ता है, न यह उसको छोड़ते हैं।

मसखरा—मार डाल, मगर गरदन न छोड़ूँगा।

खोजी—तू गरदन मरोड़ डाल, मगर मैं अधमरा करके छोड़ूँगा। हाय-हाय! गरदन गयी! पसलियाँ चर-चर बोल रही हैं!

मसखरा—जो कुछ हो सो हो, कुछ परवा नहीं है।

खोजी—यहाँ किसको परवा है, कोई रोनेवाला भी नहीं है।

अब की खोजी ने गरदन छुड़ा ली; उधर मसखरा भी निकल भागा। दोनों अपनी-अपनी गरदन सुहलाने लगे। यार लोगों ने फिर फ़िक़रे चुस्त किये। भई, हम तो ख्वाजा के दम के कायल हैं।

दूसरा बोला—वाह! अगर कच्ची आध घड़ी और कुश्ती रहती तो वह मार लेता।

तीसरे ने कहा—अच्छा, फिर अब की सही। किसी का दम थोड़े टूटा है।

यार लोग तो उनको तैयार करते थे, मगर उनमें दम न था। आधा घंटे तक दोनों हाँफा किये, मगर ज़बान चली जाती थी।

खोजी—ज़रा और देर होती तो फिर दिल्लगी देखते।

मसखरा—हाँ, बेशक।

खोजी—तकदीर थी, बच गये, वरना मुँह बिगाड़ देता।

मसखरा—अब तुम इस फ़िक्र में हो कि मैं फिर उठूँ।

आज़ाद—भई, अब ज्यादा बखेड़ा मत बढाओ। बहुत हो चुकी।

मसखरा—हुजूर, मैं बे नीचा दिखाये न मानूँगा।

खोजी—(मसखरे की गरदन पकड़ कर) आओ, दिखाओ नीचा।

मसखरा—अबे, तू गरदन तो छोड़। गरदन छोड़ दे हमारी।

खोजी—अब की हमारा दाँव है।

मसखरा—(थप्पड़ लगा कर) एक-दो।

खोजी—(चपत दे कर) तीन।

फ़िकरेबाज—सौ तक गिन जाओ यों ही। हाँ, पाँच हुई।

दूसरा—ऐसे-ऐसे जवान और पाँच ही तक गिनके रह गये?

खोजी—(चपत दे कर) छह-छह और नहीं तो। लोग बड़ी देर से छह का इंतज़ार कर रहे थे।

अब की वह घमासन लड़ाई हुई कि दोनों बेदम हो कर गिर पडे और रोने लगे।

खोजी—अब मौत करीब है। भई आज़ाद, हमारी कब्र किसी पोस्ते के खेत के करीब बनवाना।

मसखरा—और हमारी कब्र शाहफसीह के तकिये में बनवाई जाय जहाँ हमारे वालिद ख्वाजा वलीग दफ़न हैं।

खोजी—कौन-कौन? इनके वालिद का क्या नाम था?

आजाद—ख्वाजा वलीग कहते हैं।

खोजी—(रो कर) अरे भाई, हमें पहचाना? मगर हमारी तुम्हारी यों ही बदी थी।

मसखरे ने जो इनका नाम सुना तो सिर पीट लिया—भई क्या गजब हुआ! सगा भाई सगे भाई को मारे?

दोनों भाई गले मिल कर रोये। बडे भाई ने अपना नाम मियाँ रईस बतलाया। बोले—बेटा, तुम मुझसे कोई बीस बरस छोटे हो। तुमने वालिद को अच्छी तरह से नहीं देखा था। बड़ी खूबियों के आदमी थे। हमको रोज दूकान पर ले जाया करते थे!

आज़ाद—काहे की दूकान थी हजरत?

रईस—जी, टाल थी। लकड़ियाँ बेचते थे।

खोजी ने भाई की तरफ घूर कर देखा।

रईस—कुछ दिन कंपू में साहब लोगों के यहाँ खानसामा रहे थे।

खोजी ने भाई की तरफ देख कर दाँत पीसा।

आजाद—बस हजरत, कलई खुल गयी। अब्बाजान खानसामा थे और आप रईस बनते हैं।

आजाद चले गये तो दोनों भाइयों में खूब तक़रार हुई। मगर थोड़ी ही देर में मेल हो गया और दोनों भाई साथ-साथ शहर की सैर को गये। इधर-उधर मटर-गश्त करके मियाँ रईस तो अपने अड्डे पर गये और खोजी हुस्नआरा बेगम के मकान पर जा पहुँचे। बूढ़े मियाँ बैठे हुक्का पी रहे थे।

खोजी—आदाब अर्ज है। पहचाना या भूल गये?

बूढ़े मियाँ—बंदगी अर्ज। मैंने आपको नहीं पहचाना।

खोजी—तुम भला हमें क्यों पहचानोगे। तुम्हारी आँख में तो चर्बी छायी हुई है।

बूढ़े मियाँ—आप तो कुछ अजीब पागल मालूम होते हैं। जान न पहचान, त्योरियाँ बदलने लगे।

खोजी—अजी, हम तो सुनायें बादशाह को, तुम क्या माल हो।

बूढ़े मियाँ—अपने होश में हो या नहीं?

खोजी—कोई महलसरा में हुस्नआरा बेगम को इत्तला दो कि मुसाफ़िर आये हैं।

बूढ़े मियाँ—(खड़े हो कर) अख्खाह! ख्वाजा साहब तो नहीं हैं आप! माफ़ कीजिएगा। आइए गले मिल लें।

बूढ़े मियाँ ने आदमी को हुक्म दिया कि हुक्का भर दो, और अंदर जा कर बोले—लो साहब, खोजी दाखिल हो गये।

चारों बहनें बाग में गयीं और चिक की आड़ से खोजी को देखने लगीं।

नाजुक अदा—ओ-हो-हो! कैसा शकील जवान है!

जानी—अल्लाह जानता है, ऐसा जवान नहीं देखने में आया था। ऊँट की तो कोई कल शायद दुरुस्त भी हो, इसकी कोई कल दुरुस्त नहीं। हँसी आती है।

खोजी इधर-उधर देखने लगे कि यह आवाज़ कहाँ से आती है। इतने में बूढ़े मियाँ आ गये।

खोजी—हजरत, इस मकान की अजब खासियत है।

बूढ़े मियाँ—क्या-क्या? इस मकान में कोई नयी बात आपने देखी है?

खोजी—आवाजें आती हैं। मैं बैठा हुआ था, एक आवाज आयी, फिर दूसरी आवाज आयी।

बूढ़े मियाँ—आप क्या फ़रमाते हैं, हमने तो कोई बात ऐसी नहीं देखी।

जानी बेगम की रग-रग में शोखी भरी हुई थी। खोजी को बनाने की एक तरकीब सूझी। बोलीं—एक बात हमें सूझी है। अभी हम किसी से कहेंगे नहीं।

बहार बेगम—हमसे तो कह दो।

जानी ने बहार बेगम के कान में आहिस्ता से कुछ कहा।

बहार—क्या हरज है, बूढ़ा ही तो है।

सिपहआरा—आखिर कुछ कहो तो बाजीजान! हमसे कहने में कुछ हरज है?

बहार—जानी बेगम कह दें तो बता दूँ।

जानी—नहीं, किसी से न कहो।

जानी बेगम और बहार बेगम दोनों उठ कर दूसरे कमरे में चली गयीं। यहाँ इन सबको हैरत हो रही थीं कि या खुदा! इन सबों को कौन तरकीब सूझी है, जो इतना छिपा रही हैं। अपनी-अपनी अक़्ल दौड़ाने लगीं।

नाज़ुक—हम समझ गये। अफ़ीमी आदमी है। उसकी डिबिया चुराने की फ़िक्र होगी।

हुस्नआरा—यह बात नहीं, इसमें चोरी क्या थी?

इतने में बहार बेगम ने आ कर कहा—चलो, बाग़ में चल कर बैठें। ख्वाजा साहब पहले ही से बाग़ में बैठे हुए थे। एकाएक क्या देखते हैं कि एक गभरू जवान सामने से ऐंठता-अकड़ता चला आता है। अभी मसें भी नहीं भीगीं। जालीलोट का कुरता, उस पर शरबती कटावदार अँगरखा, सिर पर बाँकी पगिया और हाथ में कटार।

हुस्नआरा—यह कौन है अल्लाह? ज़रा पूछना तो।

सिपहआरा—ओफ़्फ़ोह! बाजीजान, पहचानो तो भला।

हुस्नआरा—अरे! बड़ा धोखा दिया।

नाज़ुक—सचमुच! बेशक बड़ा धोखा दिया! ओफ़्फ़ोह!

सिपहआरा—मैं तो पहले समझी ही न थी कुछ।

इतने में वह जवान खोजी के करीब आया तो यह चकराये कि इस बाग़ में इसका गुजर कैसे हुआ। उसकी तरफ़ ताक ही रहे थे कि बहार बेगम ने गुल मचा कर कहा—ऐ! यह कौन मरदुआ बाग़ में आ गया। ख्वाजा साहब, तुम बैठे देख रहे हो और यह लौंडा भीतर चला आता है! इसे निकाल क्यों नहीं देते?

खोजी—अजी हज़रत, आखिर आप कौन साहब हैं? पराये ज़नाने में घुसे जाते हो, यह माजरा क्या है?

जवान—कुछ तुम्हारी शामत तो नहीं आयी है? चुपचाप बैठे रहो।

खोजी—सुनिए साहब, हम और आप दोनों एक ही पेशे के आदमी हैं।

जवान—(बात काट कर) हमने कह दिया, चुप रहो, वरना अभी सिर उड़ा दूँगा। हम हुस्नआरा बेगम के आशिक हैं। सुना है कि आज़ाद यहाँ आये हैं, और हुस्नआरा के पास निकाह का पैग़ाम भेजनेवाले हैं। बस, अब यही धुन है कि उनसे दो-दो हाथ चल जाय।

खोजी—आज़ाद का मुकाबिला तुम क्या खा कर करोगे। उसने लड़ाइयाँ सर की हैं। तुम अभी लौंडे हो।

जवान—तू भी तो उन्हीं का साथी है। क्यों न पहले तेरा ही काम तमाम कर दूँ।

खोजी—(पैंतरे बदल कर) हम किसी से दबनेवाले नहीं हैं।

जवान—आज ही का दिन तेरी मौत का था।

खोजी—(पीछे हट कर) अभी किसी मर्द से पाला नहीं पड़ा है।

जवान—क्यों नाहक गुस्सा दिलाता है। अच्छा, ले सँभल।

जवान ने तलवार घुमायी तो खोजी घबरा कर पीछे हटे और गिर पड़े। बस करौली की याद करने लगे। औरतें तालियाँ बजा-बजा कर हँसने लगीं।

जवान—बस, इसी बिरते पर भूला था?

खोजी—अजी, मैं अपने जोम में आप आ रहा। अभी उठूँ तो कयामत बरपा कर दूँ।

जवान—जा कर आजाद से कहना कि होशियार रहें।

खोजी—बहुतों का अरमान निकल गया। उनकी सूरत देख लो, तो बुखार आ जाय।

जवान—अच्छा, कल देखूँगा।

यह कह कर उसने बहार बेगम का हाथ पकड़ा और बेधड़क कोठे पर चढ़ गया। चारों बहनें भी उसके पीछे-पीछे ऊपर चली गयीं।

खोजी यहाँ से चले तो दिल में सोचते जाते थे कि आजाद से चल कर कहता हूँ, हुस्नआरा के एक और चाहनेवाले पैदा हुए हैं। कदम-कदम पर झोंक लगाते थे, घड़ी दो में मुरलिया बाजेगी। इत्तफाक से रास्ते में उसी होटल का खानसामा मिल गया, जहाँ आज़ाद ठहरे थे। बोला—अरे भाई! इस वक्त कहाँ लपके हुए जाते हो? खैर तो है? आज तो आप ग़रीबों से बात ही नहीं करते।

खोजी—घड़ी दो में मुरलिया बाजेगी।

खानसामा—भई वाह! सारी दुनिया घूम आये, मगर कैंडा वही है। हम समझे थे कि आदमी बन कर आये होंगे।

खोजी—तुम जैसों से बातें करना हमारी शान के खिलाफ़ है।

खानसामा—हम देखते हैं, वहाँ से तुम और भी गाउदी हो कर आये हो।

थोड़ी देर में आप गिरते-पड़ते होटल में दाखिल हुए और आज़ाद को देखते ही मुँह बना कर सामने खड़े हो गये।

आजाद—क्या खबरें लाये?

खोजी—(क़रौली को दायें हाथ से बायें हाथ में ले कर) हूँ!!!

आज़ाद—अरे भाई, गये थे वहाँ?

खोजी—(क़रौली को बायें हाथ से दायें हाथ में ले कर) हूँ!!

आजाद—अरे, कुछ मुँह से बोलो भी तो मियाँ!

खोजी—घड़ी दो में मुरलिया बाजेगी।

आज़ाद—क्या? कुछ सनक तो नहीं गये! मैं पूछता हूँ, हुस्नआरा बेगम के यहाँ गये थे? किसी से मुलाकात हुई? क्या रंग-ढंग है।

खोजी—वहाँ नहीं गये थे तो क्या जहन्नुम में गये थे? मगर कुछ दाल में काला है।

आजाद—भाई साहब, हम नहीं समझे। साफ़-साफ़ कहो, क्या बात हुई? क्यों उलझन में डालते हो।

खोजी—अब वहाँ आपकी दाल नहीं गलने की।

आजाद—क्या? कैसी दाल? यह बकते क्या हो?

खोजी—बकता नहीं, सच कहता हूँ।

आजाद—खोजी, अगर साफ़-साफ़ न बयान करोगे तो इस वक्त बुरी ठहरेगी।

खोजी—उलटे मुझी को डाँटते हो। मैंने क्या बिगाड़ा?

आजाद—वहाँ का मुफ़स्सल हाल क्यों नहीं बयान करते?

खोजी—तो जनाब, साफ़-साफ़ यह है कि हुस्नआरा बेगम के एक और चाहने-वाले पैदा हुए हैं। हुस्नआरा बेगम और उनकी बहने बाग़ के बँगले में बैठी थीं कि एक जवान अंदर आ पहुँचा और मुझे देखते ही ग़ुस्से से लाल हो गया।

आजाद—कोई खूबसूरत आदमी है?

खोजी—निहायत हसीन, और कमसिन।

आजाद—इसमें कुछ भेद है ज़रूर। तुम्हें उल्लू बनाने के लिए शायद दिल्लगी की हो। मगर हमें इसका यकीन नहीं आता।

खोजी—यकीन तो हमें भी मरते दम तक नहीं आता, मगर वहाँ तो उसे देखते ही कहकहे पड़ने लगे।

अब उधर का हाल सुनिए। सिपहआरा ने कहा—अब दिल्लगी हो कि वह जा कर आजाद से सारा किस्सा कहे।

हुस्नआरा—आजाद ऐसे कच्चे नहीं हैं।

सिपहआरा—खुदा जाने, वह सिड़ी वहाँ जा कर क्या बके। आज़ाद को चाहे पहले यकीन न आये, लेकिन जब वह कसमें खा कर कहने लगेगा तो उनको ज़रूर शक हो जायगा।

हुस्नआरा—हाँ, शक हो सकता है, मगर किया क्या जाय। क्यों न किसी को भेज कर खोजी को होटल से बुलवाओ। जो आदमी बुलाने जाय वह हँसी-हँसी में आजाद से यह बात कह दे।

हुस्नआरा की सलाह से बूढ़े मियाँ आज़ाद के पास पहुँचे, और बड़े तपाक से मिलने के बाद बोले—वह आपके मियाँ खोजी कहाँ हैं? ज़रा उनको बुलवाइए।

आजाद—आपके यहाँ से जो आये तो ग़ुस्से में भरे हुए। अब मुझसे बात ही नहीं करते।

बूढ़े मियाँ—वह तो आज खूब ही बनाये गये।

बूढ़े मियाँ ने सारा किस्सा बयान कर दिया। आज़ाद सुन कर खूब हँसे और खोजी को बुला कर उनके सामने ही बूढ़े मियाँ से बोले—क्यों साहब, आपके यहाँ क्या दस्तूर है कि कटारबाजों को बुला-बुला कर शरीफ़ों से भिड़वाते हैं।

बूढ़े मियाँ—ख्वाजा साहब को आज खुदा ही ने बचाया।

आजाद—मगर यह तो हमसे कहते थे कि वह जवान बहुत दुबला-पतला आदमी है। इनसे-उससे अगर चलती तो यह उसको जरूर नीचा दिखाते।

खोजी—अजी, कैसा नीचा दिखाना! वह तलवार चलाना क्या जाने!

आजाद—आज उसको बुलवाइए, तो इनसे मुकाबिला हो जाय।

खोजी—हमारे नजदीक उसको बुलवाना फ़जूल है। मुफ़्त की ठाँय-ठाँय से क्या फ़ायदा। हाँ, अगर आप लोग उस बेचारे की जान के दुश्मन हुए हैं तो बुलवा लीजिए।

यह बातें हो ही रही थीं कि बैरा ने आ कर कहा—हुजूर, एक गाड़ी पर औरतें आयी हैं। एक खिदमतगार ने, जो गाडी के साथ है, हुजूर का नाम लिया और कहा कि जरा यहाँ तक चले आयें।

आज़ाद को हैरत हुई कि औरतें कहाँ से आ गयीं! खोजी को भेजा कि जा कर देखो। खोजी अकड़ते हुए सामने पहुँचे, मगर गाड़ी से दस कदम अलग।

खिदमतगार—हज़रत, जरी सामने यहाँ तक आइए।

खोजी—ओ गीदी, खबरदार जो बोला!

खिदमतगार—ऐं! कुछ सनक गये हो क्या?

बैरा—गाड़ी के पास क्यों नहीं जाते भई! दूर क्यों खड़े हो?

खोजी—(करौली तौल कर) बस खबरदार!

बैरा—ऐं! तुमको हुआ क्या है? जाते क्यों नहीं सामने?

खोजी—चुप रहो जी। जानो न बूझो, आये वहाँ से। क्या मेरी जान फ़ालतू है, जो गाड़ी के सामने जाऊँ?

इत्तफ़ाक से आज़ाद ने उनकी बेतुकी हाँक सुन ली। फ़ौरन बाहर आये कि कहीं किसी से लड़ न पड़ें। खोजी से पूछा—क्यों साहब, यह आप किस पर बिगड रहे हैं? जवाब नदारद। वहाँ से झपट कर आजाद के पास आये और करौली घुमाते हुए पैतरे बदलने लगे।

आज़ाद—कुछ मुँह से तो कहो। खुद भी जलील होते हो और मुझे भी ज़लील करते हो।

खोजी—(गाडी की तरफ़ इशारा करके) अब क्या होगा?

खिदमतगार—हुजूर, इन्होंने आते ही पैतरा बदला, और यह काठ का खिलौना नचाना शुरू किया। न मेरी सुनते हैं, न अपनी कहते हैं।

खोजी—(आज़ाद के कान में) मियाँ, इस गाड़ी में औरतें नहीं हैं। वही लौंडा तुमसे लडने आया होगा।

आजाद—यह कहिए, आपके दिल में यह बात जमी हुई थी। आप मेरे साथ बहुत हमदर्दी न कीजिए, अलग जाके बैठिए।

मगर खोजी के दिल में खुप गयी थी कि इस गाड़ी में वही जवान छिपके आया है। उन्होंने रोना शुरू किया। अब आजाद लाख-लाख समझाते हैं कि देखो, होटल

के और मुसाफ़िरों को बुरा मालूम होगा, मगर खोजी चुप ही नहीं होते। आखिर आपने कहा—जो लोग इस पर सवार हों, वह उतर आयें। पहले मैं देख दूँ, फिर आप जायँ। आज़ाद ने खिदमतगार से कहा—भाई, अगर वह लोग मंजूर करें तो यह बूढ़ा आदमी झाँक कर देख ले। इस सीढ़ी को शक हुआ है कि इसमें कोई और बैठा है। खिदमतगार ने जा कर पूछा, और बोला—सरकार कहती हैं, हाँ, मंजूर है। चलिए, मगर दूर ही से झाँकिएगा।

खोजी —(सबसे रुखसत हो कर) लो यारो, अब आखिरी सलाम है। आज़ाद खुदा तुमको दोनों जहान में सुर्खरू रखे।

> छुटता है मुकाम, कूच करता हूँ मैं,
> रुखसत ऐ ज़िंदगी कि मरता हूँ मैं।
> अल्लाह से लौ लगी हुई है मेरी;
> ऊपर के दम इस वास्ते भरता हूँ।

खिदमतगार—अब आखिर मरने तो जाते ही हो, ज़रा कदम बढ़ाते न चलो। जैसे अब मरे, वैसे आध घड़ी के बाद।

आज़ाद—क्यों मुरदे को छेड़ते हो जी।

बग्घी से हँसी की आवाजें आ रही थीं। खोजी आँखों में आँसू भरे चले आ रहे थे कि उनके भाई नजर पड़े। उनको देखते ही खोजी ने हाँक लगायी—आइए भाई साहब! आखिरी वक्त आपसे खूब मुलाकात हुई।

रईस—खैर तो है भाई! क्या अकेले ही चले जाओगे? मुझे किसके भरोसे छोड़े जाते हो?

खोजी भाई के गले मिल कर रोने लगे। जब दोनों गले मिल कर खूब रो चुके तो खोजी ने गाड़ी के पास जा कर खिदमतगार से कहा—खोल दे। ज्यों ही गरदन अंदर डाली तो देखा, दो औरतें बैठी हैं। इनका सिर ज्यों ही अंदर पहुँचा, उन्होंने इनकी पगड़ी उतार कर दो चपतें लगा दीं। खोजी की जान में जान आयी। हँस दिये। आ कर आजाद से बोले—अब आप जायँ, कुछ मुजायका नहीं है। आजाद ने होटल के आदमियों को वहाँ से हटा दिया और उन औरतों से बातें करने लगे।

आजाद—आप कौन साहब हैं?

बग्घी में से आवाज आयी—आदमी हैं साहब! सुना कि आप आये हैं, तो देखने चले आये। इस तरह मिलना बुरा तो ज़रूर है; मगर दिल ने न माना।

आज़ाद—जब इतनी इनायत की है तो अब नकाब दूर कीजिए और मेरे कमरे तक आइए।

आवाज़—अच्छा, पेट से पाँव निकले! हाथ देते ही पहुँचा पकड़ लिया।

आजाद—अगर आप न आयँगी तो मेरी दिलशिकनी होगी। इतना समझ लीजिए।

आवाज़—ऐ, हाँ! खूब याद आया। वह जो दो लेडियाँ आपके साथ आयी हैं, वह कहाँ हैं? परदा करा दो तो हम उनसे मिल लें।

आजाद—बहुत अच्छा, लेकिन मैं रहूँ या न रहूँ ?

आवाज़—आप से क्या परदा है।

आजाद ने परदा करा दिया। दोनों औरतें गाड़ी से उतर पड़ीं और कमरे में आयीं। मिसों ने उनसे हाथ मिलाया; मगर बातें क्या होतीं। मिसें उर्दू क्या जानें और बेगमों को फ्रांसीसी जबान से क्या मतलब। कुछ देर तक वहाँ बैठे रहने के बाद, उनमें से एक ने, जो बहुत ही हसीन और शोख थी, आज़ाद से कहा—भई, यहाँ बैठे-बैठे तो दम घुटता है। अगर परदा हो सके तो चलिए, बाग़ की सैर करें।

आजाद—यहाँ तो ऐसा कोई बाग़ नहीं। मुझे याद नहीं आता कि आपसे पहले कब मुलाक़ात हुई।

हसीना ने आँखों में आँसू भर कर कहा—हाँ साहब, आपको क्यों याद आयेगा। आप हम ग़रीबों को क्यों याद करने लगे। क्या यहाँ कोई ऐसी जगह भी नहीं, जहाँ कोई ग़ैर न हो। यहाँ तो कुछ कहते-सुनते नहीं बनता। चलिए, किसी दूसरे कमरे में चलें।

आज़ाद को एक अनजबी औरत के साथ दूसरे कमरे में जाते शर्म तो आती थी, मगर यह समझ कर कि इसे शायद कोई परदे की बात कहनी होगी, उसे दूसरे कमरे में ले गये और पूछा—मुझे आपका हाल सुनने की बड़ी तमन्ना है। जहाँ तक मुझे याद आता है, मैंने आपको कभी नहीं देखा है। आपने मुझे कहाँ देखा था ?

औरत—खुदा की कसम, बड़े बेवफ़ा हो। (आजाद के गले में हाथ डाल कर) अब भी याद नहीं आता ! वाह रे हम !

आज़ाद—तुम मुझे बेवफ़ा चाहे कह लो; पर मेरी याद इस वक्त धोखा दे रही है।

औरत—हाय अफ़सोस ! ऐसा जालिम नहीं देखा—

न क्योंकर दम निकल जाये कि याद आता है रह-रह कर;
वह तेरा मुसकिराना कुछ मुझे ओठों में कह-कह कर।

आजाद—मेरी समझ ही में नहीं आता कि यह क्या माजरा है।

औरत—दिल छीनके बातें बनाते हो ? इतना भी नहीं होता कि एक बोसा तो ले लो।

आजाद—यह मेरी आदत नहीं।

औरत—हाय ! दिल सा घर तूने गारत कर दिया, और अब कहता है, यह मेरी आदत नहीं।

आज़ाद—अब मुझे फ़ुरसत नहीं है, फिर किसी रोज़ आइएगा।

औरत—अच्छा, अब कब मिलोगे ?

आजाद—अब आप तकलीफ न कीजिएगा।

यह कहते हुए आज़ाद उस कमरे से निकल आये। उनके पीछे-पीछे वह औरत भी बाहर निकली। दोनों लेडियों ने उसे देखा तो कट गयीं। उसके बाल बिखरे हुए

थे, चोली मसकी हुई। उस औरत ने आते ही आते आजाद को कोसना शुरू किया—तुम लोग गवाह रहना। यह मुझे अलग कमरे में ले गये और एक घंटे के बाद मुझे छोड़ा। मेरी जो हालत है, आप लोग देख रही हैं।

आज़ाद—ख़ैरियत इसी में है कि अब आप जाइए।

औरत—अब मैं जाऊँ! अब किसकी होके रहूँ?

क्लारिसा—(फ्रांसीसी में) यह क्या माजरा है आजाद?

आजाद—कोई छटी हुई औरत है।

आजाद के तो होश उड़े हुए थे कि अच्छे घर बयाना दिया और वह चमक कर यही कहती थी—अच्छा, तुम्हीं क़सम खाओ कि तुम मेरे साथ अकेले कमरे में थे या नहीं?

आजाद—अब ज़लील हो कर यहाँ से जाओगी तुम। अजब मुसीबत में जान पड़ी है।

औरत—ऐ है, अब मुसीबत याद आयी! पहले क्या समझे थे?

आज़ाद—बस, अब ज़्यादा न बढ़ना।

औरत—गाड़ीवान से कहो, गाडी बरामदे में लाये।

आजाद—हाँ, ख़ुदा के लिए तुम यहाँ से जाओ।

औरत—जाती तो हूँ, मगर देखो तो क्या होता है!

जब गाड़ी रवाना हुई तो खोजी ने अंदर आ कर पूछा—इनसे तुम्हारी कब की जान-पहचान थी?

आजाद—अरे भाई, आज तो ग़ज़ब हो गया।

खोजी—मना तो करता था कि इनसे दूर रहो, मगर आप सुनते किसकी हैं।

आजाद—झूठ बकते हो। तुमने तो कहा था कि आप जायँ, कुछ मुज़ायका नहीं है। और अब निकले जाते हो।

खोजी—अच्छा साहब, मुझी से ग़लती हुई। मैंने गाड़ीवान को चकमा दे कर सारा हाल मालूम कर लिया। यह दोनों कुंदन की छोकरियाँ हैं। अब यह सारे शहर में मशहूर करेंगी कि आजाद का हमसे निकाह होनेवाला है।

आजाद—इस वक्त हमें बड़ी उलझन है भाई! कोई तदबीर सोचो।

खोजी—तदबीर तो यही है कि मैं कुंदन के पास जाऊँ और उसे समझा-बुझा कर ढर्रे पर ले आऊँ।

आजाद—तो फिर देर न कीजिए। उम्र भर आपका एहसान मानूँगा।

खोजी तो इधर रवाना हुए। अब आज़ाद ने दोनों लेडियों की तरफ़ देखा तो दोनों के चेहरे गुस्से से तमतमाये हुए थे। क्लारिसा एक नाविल पढ़ रही थी और मीडा सिर झुकाये हुए थी। उन दोनों को यकीन हो गया था कि औरत या तो आज़ाद की ब्याहता बीबी है या आशना। अगर जान-पहचान न होती तो उस कमरे में जा कर बैठने की दोनों में से एक को भी हिम्मत न होती। थोड़ी देर तक बिलकुल

उड़ाता रहा, आखिर आजाद ने खुद ही अपनी सफ़ाई देनी शुरू की। बोले—किसी ने सच कहा है, 'कर तो डर, न कर तो डर'; मैंने इस औरत की आज तक सूरत भी न देखी थी। समझा कि कोई शरीफ़जादी मुझसे मिलने आयी होगी। मगर ऐसी मक्कार और बेशर्म औरत मेरी नज़र से नहीं गुजरी।

दोनों लेडियों ने इसका कुछ जवाब न दिया। उन्होंने समझा कि आजाद हमें चकमा दे रहे हैं। अब तो आज़ाद के रहे-सहे हवास भी ग़ायब हो गये। कुछ देर तक तो जब्त किया मगर न रहा गया। बोले—मिस मीडा, तुमने इस मुल्क की मक्कार औरतें अभी नहीं देखीं।

मीडा—मुझे इन बातों से क्या सरोकार है।

आजाद—उसकी शरारत देखी ?

मीडा—मेरा ध्यान उस वक़्त उधर न था।

आज़ाद—मिस क्लारिसा, तुम कुछ समझीं या नहीं।

क्लारिसा—मैंने कुछ खयाल नहीं किया।

आज़ाद—मुझ सा अहमक भी कम होगा। सारी दुनिया से आ कर यहाँ चरका खा गया।

मीडा—अपने किये का क्या इलाज, जैसा किया, वैसा भुगतो।

आज़ाद—हाँ, यही तो मैं चाहता था कि कुछ कहो तो सही। मीडा, सच कहता हूँ, जो कभी पहले इसकी सूरत भी देखी हो। मगर इसने वह दाँव-पेंच किया कि बिलकुल अहमक़ बन गये।

मीडा—अगर ऐसा था तो उसे अलग कमरे में क्यों ले गये ?

आज़ाद—इसी ग़लती का तो रोना है। मैं क्या जानता था कि वह यह रंग लायेगी।

मीडा—यह तो जो कुछ हुआ सो हुआ। अब आगे के लिए क्या फ़िक्र की है ? उसकी बातचीत से मालूम होता था कि वह जरूर नालिश करेगी।

आज़ाद—इसी का तो मुझे भी खौफ़ है। खोजी को भेजा है कि जा कर उसे धमकायें। देखो, क्या करके आते हैं।

उधर खोजी गिरते-पड़ते कुंदन के घर पहुँचे, तो दो-तीन औरतों को कुछ बातें करते सुना। कान लगा कर सुनने लगे।

'बेटा, तुम तो समझती ही नहीं हो; बदनामी कितनी बड़ी है।'

'तो अम्मीं जान, बदनामी का ऐसा ही डर हो तो सभी न दब जाया करें !'

'दबते ही हैं। उस फ़ौजी अफसर से नहीं खड़े-खड़े गिनवा लिये !'

'अच्छा अम्मीजान, तुम्हें अख्तियार है; मगर नतीजा अच्छा न होगा।'

खोजी से अब न रहा गया। झल्ला कर बोले—ओ गीदी, निकल तो आ। देख तो कितनी कगैलियाँ भोंकता हूँ। बढ़-बढ़के बातें बनाती है ! नालिश करेगी, और बदनाम करेगी।

कुंदन ने यह आवाज़ सुनी तो खिड़की से झाँका। देखा, तो एक ठिंगना सा आदमी पैतरे बदल रहा है। महरी से कहा कि दरवाज़ा खोल कर बुला लो। महरी ने आ कर कहा—कौन साहब हैं? आइए।

खोजी अकड़ते हुए अंदर गये और एक मोढ़े पर बैठे। बैठना ही था कि सिर नीचे और टाँगें ऊपर! औरतें हँसने लगीं। खैर, आप सँभल कर दूसरे मोढ़े पर बैठे और कुछ बोलना ही चाहते थे कि कुंदन सामने आयी और आते ही खोजी को एक धक्का दे कर बोली—चूल्हे में जाय ऐसा मियाँ। बरसों के बाद आज सूरत दिखायी तो भेस बदल कर आया। निगोड़े, तेरा जनाज़ा निकले। तू अब तक था कहाँ?

खोजी—यह दिल्लगी हमको पसंद नहीं।

कुंदन—(धप लगा कर) तो शादी क्या समझ कर की थी?

शादी का नाम सुन कर खोजी की बाँछें खिल गयीं। समझे कि मुफ्त में औरत हाथ आयी। बोले—तो शादी इसलिए की थी कि जूतियाँ खायें?

कुंदन—आखिर, तू इतने दिन था कहाँ? ला, क्या कमा कर लाया है।

यह कह कर कुंदन ने उनकी जेब टटोली तो तीन रुपये और कुछ पैसे निकले। वह निकाल लिये। वह बेचारे हाँ-हाँ करते ही रहे कि सबों ने उन्हें घर से निकाल कर दरवाज़ा बंद कर दिया। खोजी वहाँ से भागे और रोनी सूरत बनाये हुए होटल में दाखिल हुए।

आजाद ने पूछा—कहो भाई, क्या कर आये? ऐं! तुम तो पिटे हुए से जान पड़ते हो।

खोजी—जरा दम लेने दो। मामला बहुत नाजुक है। तुम तो फँसे ही थे, मैं भी फँस गया। इस सूरत का बुरा हो, जहाँ जाता हूँ वहीं चाहनेवाले निकल आते हैं। एक पंडित ने कहा था कि तुम्हारे पास मोहिनी है। उस वक्त तो उसकी बात मुझे कुछ न जँची, मगर अब देखता हूँ तो उसने बिलकुल सच कहा था।

आजाद—तुम तो हो सिड़ी। ऐसे ही तो बड़े हसीन हो। मेरी बाबत भी कुंदन से कुछ बातचीत हुई या आँखें ही सेंकते रहे?

खोजी—बड़े घर की तैयारी कर रखो। बंदा वहाँ भी तुम्हारे साथ होगा।

आजाद—बाज आया आपके साथ से। तुम्हें खिलाना-पिलाना सब अकारथ गया। बेहतर है, तुम कहीं और चले जाओ।

इस पर खोजी बहुत बिगड़े। बोले—हाँ साहब, काम निकल गया न? अब तो मुझसे बुरा कोई न होगा।

खानसामा—क्या है ख्वाजा जी, क्यों बिगड़ गये?

खोजी—तू चुप रह कुली, ख्वाजा जी! और सुनिएगा?

खानसामा—मैंने तो आपकी इज्ज़त की थी।

खोजी—नहीं, आप माफ कीजिए। क्या खूब! टके का आदमी और हमसे इस तरह पर पेश आये। मगर तुम क्या करोगे भाई, हमारा नसीबा ही फिरा हुआ है।

खैर, जो चाहो, सुनाओ। अब हम यहाँ से कूच करते हैं। जहाँ हमारे क़द्रदाँ हैं, वहाँ जायँगे।

खानसामा—यहाँ से बढ़के आपका कौन कद्रदाँ होगा? खाना आपको दें, कपड़ा आपको दें, उस पर दोस्त बना कर रखें; फिर अब और क्या चाहिए?

खोजी—सच है भाई, सच है। हम आज़ाद के गुलाम तो हैं ही। उन्हीं से क़सम लो कि उनके बाप-दादा हमारे बुज़ुर्गों के टुकड़े खा कर पले थे या नहीं।

आज़ाद—आपकी बातें सुन रहा हूँ। ज़रा इधर देखिएगा।

खोजी—सौ सोनार की, तो एक लोहार की।

आज़ाद—हमारे बाप-दादा आपके टुकड़खोरे थे?

खोजी—जी हाँ, क्या इसमें कुछ शक भी है?

इतने में खानसामा ने दूर से कहा—ख्वाजा साहब, हमने तो सुना है कि आपके वालिद अंडे बेचा करते थे।

इतना सुनना था कि खोजी आग हो गये और एक तवा उठा कर खानसामा की तरफ़ दौड़े। तवा बहुत गर्म था। अच्छी तरह उठा भी नहीं पाये थे कि हाथ जल गया। झिझक कर तवे को जो फेंका तो खुद भी मुँह के बल गिर पड़े।

खानसामा—या अली, बचाइयो।

बैरा—तवा तो जल रहा था, हाथ जल गया होगा।

मीठा—डाक्टर को फ़ौरन बुलाओ।

खानसामा—उठ बैठो भाई, कैसे पहलवान हो!

आज़ाद—खुदा ने बचा लिया, वरना जान ही गयी थी।

ख्वाजा साहब चुपचाप पड़े हुए थे। खानसामा ने बरामदे में एक पलँग बिछाया और दो आदमियों ने मिल कर खोजी को उठाया कि बरामदे में ले जायँ। उसी वक़्त एक आदमी ने कहा—अब बचना मुश्किल है। खोजी अक्ल के दुश्मन तो थे ही। उनको यक़ीन हो गया कि अब आखिरी वक़्त है। रहे-सहे हवास भी ग़ायब हो गये। खानसामा और होटल के और नौकर-चाकर उनको बनाने लगे।

खानसामा—भाई, दुनिया इसी का नाम है। जिंदगी का एतबार क्या।

बैरा—इसी बहाने मौत लिखी थी।

मुहर्रिर—और अभी नौजवान आदमी हैं। इनकी उम्र ही क्या है!

आज़ाद—क्या, हाल क्या है? नब्ज़ का कुछ पता है?

खानसामा—हुज़ूर, अब आखिरी वक्त है। अब कफन-दफन की फ़िक्र कीजिए।

यह सुन कर खोजी जल-भुन गये। मगर आखिरी वक़्त था, कुछ बोल न सके।

आज़ाद—किसी मौलवी को बुलाओ।

मुहर्रिर—हुज़ूर, यह न होगा। हमने कभी इनको नमाज पढ़ते नहीं देखा।

आज़ाद—भई, इस वक्त यह ज़िक्र न करो।

मुहर्रिर—हुज़ूर मालिक हैं, मगर यह मुसलमान नहीं हैं।

खोजी का बस चलता तो मुहर्रिर की बोटियाँ नोच लेते; मगर इस वक़्त वह मर रहे थे।

खानसामा—क़ब्र खुदवाइए, अब इनमें क्या है ?

बैरा—इसी सामनेवाले मैदान में इनको तोप दो।

खोजी का चेहरा सुर्ख हो गया। कम्बख्त कहता है, तोप दो! यह नहीं कहता कि आपको दफ़न कर दो।

आजाद—बड़ा अच्छा आदमी था बेचारा।

खानसामा—लाख सिड़ी थे, मगर थे नेक।

बैरा—नेक क्या थे। हाँ, यह कहो कि किसी तरह निभ गयी।

खोजी अपना खून पीके रह गये, मगर मजबूर थे।

मुहर्रिर—अब इनको मिलके तोप ही दीजिए।

आजाद—घड़ी दो में मुरलिया बाजेगी।

बैरा—ख्वाजा साहब, कहिए, अब कितनी देर में मुरलिया बाजेगी ?

आजाद—अब इस वक़्त क्या बतायें बेचारे, अफसोस है!

खानसामा—अफसोस क्यों हुजूर, अब मरने के तो दिन ही थे। जवान-जवान मरते जाते हैं। यह तो अपनी उम्र तमाम कर चुके। अब क्या आक़बत के बोरिये बटोरेंगे ?

आजाद—हाँ, है तो ऐसा ही, मगर जान बड़ी प्यारी होती है। आदमी चाहे दो सौ बरस का होके मरे, मगर मरते वक़्त यही जी चाहता है कि दस बरस और जिंदा रहता।

खानसामा—तो हुजूर, यह तमन्ना तो उसको हो, जिसका कोई रोनेवाला हो। इनके कौन बैठा है।

इतने में होटल का एक आदमी एक चपरासी को हकीम बना कर लाया।

आजाद—कुर्सी पर बैठिए हकीम साहब।

हकीम—यह गुस्ताखी मुझसे न होगी। हुजूर बैठें।

आजाद—इस वक्त सब माफ़ है।

हकीम—यह बेअदबी मुझसे न होगी।

आजाद—हकीम साहब, मरीज की जान जाती है और आप तकल्लुफ करते हैं।

हकीम—चाहे मरीज मर जाय; मगर मैं अदब को हाथ से न जाने दूँगा।

खोजी को हकीम की सूरत से नफ़रत हो गयी।

आजाद—आप तकल्लुफ में मरीज की जान ले लेंगे।

हकीम—अगर मौत है तो मरेगा ही, मैं अपनी आदत क्यों छोड़ूँ ?

आजाद ने खोजी के कान में जोर से कहा—हकीम साहब आये हैं।

खोजी ने हकीम साहब को सलाम किया और हाथ बढ़ाया।

हकीम—(नब्ज पर हाथ रख कर) अब क्या बाकी है, मगर अभी तीन-चार

दिन की नब्ज है; इस वक्त इनको ठंडे पानी से नहलाया जाय तो बेहतर है, बल्कि अगर पानी में बर्फ डाल दीजिए तो और भी बेहतर है।

आज़ाद—बहुत अच्छा। अभी लीजिए।

हकीम—बस, एक दो मन बर्फ़ काफ़ी होगी।

इतने में मिस मीडा ने आज़ाद से कहा—तुम भी अजीब आदमी हो। दो-चार होटलवालों को ले कर एक ग़रीब का खून अपनी गरदन पर लेते हो। खोजी की चारपाई हमारे कमरे के सामने बिछवा दो और इन आदमियों से कह दो कि कोई खोजी के करीब न आये।

इस तरह खोजी की जान बची। आराम से सोये। दूसरे दिन घूमते-घामते एक चंडूखाने में जा पहुँचे और छींटे उड़ाने लगे। एकाएक हुस्नआरा का जिक्र सुन कर उनके कान खड़े हुए। कोई कह रहा था कि हुस्नआरा पर एक शाहज़ादे आशिक हुए हैं, जिनका नाम कमरुद्दौला है। खोजी बिगड़ कर बोले—खबरदार, जो अब किसी ने हुस्नआरा का नाम फिर लिया। शरीफज़ादियों का नाम बद करता है वे!

एक चंडूबाज—हम तो सुनी-सुनाई कहते हैं साहब। शहर भर में यह खबर मशहूर है, आप किस-किसकी ज़बान रोकिएगा।

खोजी—झूठ है, बिलकुल झूठ।

चंडूबाज—अच्छा, हम झूठ कहते हैं तो इंदू से पूछ लीजिए।

इंदू—हमने तो यह सुना था कि बेगम साहब ने अखबार में कुछ लिखा था तो वह शाहज़ादे ने पढ़ा और आशिक हो गये, फ़ौरन बेगम साहब के नाम से खत लिखा और शायद किसी बाँके को मुकर्रर किया है कि आज़ाद को मार डाले। खुदा जाने, सच है या झूठ।

खोजी—तुमने किससे सुनी है यह बात? इस धोखे में न रहना। थाने पर चल-कर गवाही देनी होगी।

इंदू—हुज़ूर क्या आज़ाद के दोस्त हैं?

खोजी—दोस्त नहीं हूँ, उस्ताद हूँ। मेरा शागिर्द है।

इंदू—आपके कितने शागिर्द होंगे?

खोजी—यहाँ से ले कर रूम और शाम तक।

खोजी शाहज़ादे का पता पूछते हुए लाल कुएँ पर पहुँचे। देखा तो सैकड़ों आदमी पानी भर रहे हैं।

खोजी—क्यों भाई, यह कुआँ तो आज तक देखने में नहीं आया था।

भिश्ती—क्या कहीं बाहर गये थे आप?

खोजी—हाँ भई, बड़ा लम्बा सफर करके लौटा हूँ।

भिश्ती—इसे बने तो चार महीने हो गये।

खोजी—अहा-हा! यह कहो, भला किसने बनवाया है?

भिश्ती—शाहज़ादा कमरुद्दौला ने।

खोजी—शाहज़ादा साहब रहते कहाँ हैं ?

भिश्ती—तुम तो मालूम होता है, इस शहर में आज ही आये हो। सामने उन्हीं की बारादरी तो है।

खोजी यहाँ से महल के चोबदार के पास पहुँचे और अलेक-सलेक करके बोले—भाई, कोई नौकरी दिलवाते हो।

दरबान—दारोगा साहब से कहिए, शायद मतलब निकले।

खोजी—उनसे कब मुलाकात होगी ?

दरबान—उनके मकान पर जाइए, और कुछ चटाइए।

खोजी—भला शाहज़ादे तक रसाई हो सकती है या नहीं ?

दरबान—अगर कोई अच्छी सूरत दिखाओ तो पौ बारह हैं।

इतने में अंदर से एक आदमी निकला। दरबान ने पूछा—किधर चले शेख जी ?

शेख—हुक्म हुआ है कि किसी रम्माल को बहुत जल्द हाजिर करो।

खोजी—तो हमको ले चलिए। इस फ़न में हम अपना सानी नहीं रखते।

शेख—ऐसा न हो, आप वहाँ चल कर बेवकूफ़ बनें।

खोजी—अजी, ले तो चलिए। ख़ुदा ने चाहा तो सुर्खरू ही रहूँगा।

शेख साहब उनको ले कर बारादरी में पहुँचे। शाहज़ादा साहब मसनद लगाये पेचवान पी रहे थे और मुसाहब लोग उन्हें घेरे बैठे हुए थे। खोजी ने अदब से सलाम किया और फ़र्श पर जा बैठे।

आग़ा—हुजूर, अगर हुक्म हो तो तारे आसमान से उतार लूँ।

मुन्ने—हक है। ऐसा ही रोब है हमारे सरकार का।

मिरज़ा—ख़ुदावंद, अब हुजूर की तबीयत का क्या हाल है ?

आग़ा—ख़ुदा का फ़ज़्ल है। ख़ुदा ने चाहा तो सुबह-शाम चिप्पा लड़ा ही चाहता है। हुजूर का नाम सुन कर कोई निकाह से इनकार करेगा भला !

मुन्ने—अजी, परिस्तान की हूर हो तो लौंडी बन जाय।

खोजी—ख़ुदा गवाह है कि शहर में दूसरा रईस टक्कर का नहीं है। यह मालूम होता है कि ख़ुदा ने अपने हाथ से बनाया है।

मिरज़ा—सुभान-अल्लाह ! वाह ! खाँ साहब, वाह ! सच है।

शेख—खाँ साहब नहीं, ख्वाजा साहब कहिए।

मिरज़ा—अजी, वह कोई हों, हम तो इनसाफ़ के लोग हैं। ख़ुदा को मुँह दिखाना है। क्या बात कही है ! ख्वाजा साहब, आप तो पहली मरतबा इस सोहबत में शरीक हुए हैं। रफ़्ता रफ़्ता देखिएगा कि हुजूर ने कैसा मिज़ाज पाया है।

शेख—बूढ़ों में बूढ़े, जवानों में जवान।

खोजी—मुझसे कहते हो। शहर मे कौन रईस है, जिससे मैं वाकिफ नहीं ?

आग़ा—भई मिरज़ा, अब फतह है। उधर का रंग फीका हो रहा है। अब तो इधर ही झुकी हुई हैं।

मिरजा—वल्लाह! हाथ लाइएगा। मरदों का वार खाली जाय?

आग़ा—यह सब हुजूर का इकबाल है।

कमरुद्दौला—मैं तो तड़प रहा था, जिंदगी से बेजार था! आप लोगों की बदौलत इतना तो हो गया।

खोजी हैरान थे कि यह क्या माजरा है। हुस्नआरा को यह क्या हो गया कि कमरुद्दौला पर रीझीं! कभी यकीन आता था, कभी शक होता था।

आग़ा—हुजूर का दूर-दूर तक नाम है।

मिरजा—क्यों नहीं, लंदन तक।

खोजी—कह दिया न माईजान, कि दूसरा नजर नहीं आता।

शाहजादा—(आग़ा से) यह कहाँ रहते हैं और कौन हैं?

खोजी—जी, ग़रीब का मकान मुर्ग़ी-बाजार में है।

आग़ा—जभी आप कुडक रहे थे।

मिरजा—हाँ, अंडे बेचते तो हमने भी देखा था।

खोजी—जभी आप सदर-बाजार में टापा करते हैं।

शाहजादा—ख्वाजा साहब जिले में ताक हैं।

खोजी—आपकी क़द्रदानी है।

बातों-बातों मे यहाँ की टोह ले कर खोजी घर चले। होटल में पहुँचे तो आज़ाद को बूढ़े मियाँ से बातें करते देखा। ललकार कर बोले—लो, मैं भी आ पहुँचा।

आजाद—गुल न मचाओ, हम लोग न जाने कैसी सलाह कर रहे हैं, तुमको क्या; बे-फ़िक्रे हो। कुछ बसत की भी खबर है? यहाँ एक नया गुल खिला है।

खोजी—अजी, हमें सब मालूम हैं। हमें क्या सिखाते हो।

आजाद—तुमसे किसने कहा?

खोजी—अजी, हमसे बढ कर टोहिया कोई हो तो ले। अभी उन्हीं कमरुद्दौला के यहाँ जा पहुँचा। पूरे एक घंटे तक हमसे-उनसे बातचीत रही। आदमी तो खब्ती सा है और बिलकुल जाहिल। मगर उसने हुस्नआरा को कहाँ से देख लिया? छोकरी है चुलबुली। कोठे पर गयी होगी, बस उसकी नजर पड़ गयी होगी।

बूढ़े मियाँ—ज़रा ज़बान सँभाल कर!

खोजी—आप जब देखो, तिरछे ही हो कर बातें करते हैं? क्या कोई आपका दिया खाता है या आपका दबैल है? बड़े अक्लमंद आप ही तो हैं एक!

इतने में फिटन पर एक अँगरेज आजाद को पूछता हुआ आ पहुँचा। आजाद ने बढ़ कर उससे हाथ मिलाया और पूछा तो मालूम हुआ कि वह फौजी अफ़सर है। आजाद को एक जलसे का चेयरमैन बनने के लिए कहने आया है।

आजाद—इसके लिए आपने क्यों इतनी तकलीफ की? एक खत काफी था।

साहब—मैं चाहता हूँ कि आप इसी वक़्त मेरे साथ चलें। लेक्चर का वक़्त बहुत क़रीब है।

आज़ाद साहब के साथ चल दिये। टाउन-हाल में बहुत से आदमी जमा थे। आजाद के पहुँचते ही लोग उन्हें देखने के लिए टूट पड़े। और जब वह बोलने के लिए मेज़ के सामने खड़े हुए तो चारों तरफ समा बँध गया। जब वह बैठना चाहते तो लोग गुल मचाते थे, अभी कुछ और फरमाइए। यहाँ तक कि आजाद ही के बोलते-बोलते वक़्त पूरा हो गया और साहब बहादुर के बोलने की नौबत न आयी। शाहजादा कमरुद्दौला भी मुसाहबों के साथ जलसे में मौजूद थे। ज्यों ही आज़ाद बैठे, उन्होंने आग़ा से कहा—सच कहना, ऐसा खूबसूरत आदमी देखा है?

आग़ा—बिलकुल शेर मालूम होता है।

शाहजादा—ऐसा जवान दुनिया में न होगा।

आग़ा—और तकरीर कितनी प्यारी है?

शाहजादा—क्यों साहब, जब हम मरदों का यह हाल है, तो औरतों का क्या हाल होता होगा?

आग़ा—औरत क्या, परी आशिक हो जाय।

शाहजादा साहब जब यहाँ से चले तो दिल में सोचा—भला आज़ाद के सामने मेरी दाल क्या गलेगी? मेरा और आजाद का मुकाबिला क्या? अपनी हिमाकत पर बहुत शर्मिंदा हुए। ज्योंही मकान पर पहुँचे, मुसाहबों ने बेपर की उड़ानी शुरू की।

मिरजा—खुदावंद, आज तो मुँह मीठा कराइए। वह खुशखबरी सुनाऊँ कि फड़क जाइए। हुजूर उनके यहाँ एक महरी नौकर है। वह मुझसे कहती थी कि आज आपके सरकार की तसवीर का आजाद की तसवीर से मुकाबिला किया और बोलीं—मेरी शाहजादे पर जान जाती है।

और मुसाहबों ने भी खुशामद करनी शुरू की; मगर नवाब साहब ने किसी से कुछ न कहा। थोड़ी देर तक बैठे रहे। फिर अंदर चले गये। उनके जाने के बाद मुसाहबों ने आग़ा से पूछा—अरे मियाँ! बताओ तो, क्या माजरा है? क्या सबब है कि सरकार आज इतने उदास हैं?

आग़ा—भई, कुछ न पूछिए। बस, यही समझ लो कि सरकार की आँखें खुल गयीं।

१०९

आजाद के आने के बाद ही बड़ी बेगम ने शादी की तैयारियाँ शुरू कर दी थीं। बड़ी बेगम चाहती थीं कि बरात खूब धूम-धाम से आये। आजाद धूम-धाम के खिलाफ़ थे। इस पर हुस्नआरा की बहनों में बातें होने लगीं—

बहार बेगम—यह सब दिखाने की बातें है। किसी से दो हाथी माँगे, किसी से दो-चार घोड़े; कहीं से सिपाही आये, कहीं से बरछी-बरदार! लो साहब, बरात आयी है। माँगे-ताँगे की बरात से फायदा?

बड़ी बेगम—हमको तो यह तमन्ना नहीं है कि बरात धूम ही से दरवाज़े पर आये। मगर कम से कम इतना तो जरूर होना चाहिए कि जग-हँसाई न हो।

जानी बेगम—एक काम कीजिए, एक खत लिख भेजिए।

गेती—हमारे खानदान में कभी ऐसा हुआ ही नहीं। हमने तो आज तक नहीं सुना। धुनिये जुलाहों के यहाँ तक तो अँगरेजी बाजा बरात के साथ होता है।

बहार—हाँ साहब, बरात तो वही है, जिसमें ५० हाथी, बल्कि फ़ीलखाने का फीलखाना हो, साँड़िनियों की कतार दो महल्ले तक जाय। शहर भर के घोड़े और हवादार और तामदान हों और कई रिसाले, बल्कि तोपखाना भी ज़रूर हो। क़दम-क़दम पर आतशबाजी छूटती हो और गोले दगते हों। मालूम हो कि बरात क्या, किला फतह किया जाता है।

नाज़ुक—यह सब बुरी बातें हैं, क्यों?

बहार—जी नहीं, इन्हें बुरी कौन कहेगा भला।

नाज़ुक—अच्छा, वह जानें, उनका काम जाने।

हुस्नआरा ने जब देखा कि आजाद की जिद से बड़ी बेगम नाराज हुई जाती हैं तो आजाद के नाम एक खत लिखा—

प्यारे आज़ाद,

माना कि तुम्हारे खयालात बहुत ऊँचे हैं, मगर राह-रस्म में दखल देने से क्या नतीजा निकलेगा। अम्मीजान ज़िद करती हैं, और तुम इन्कार, खुदा ही खैर करे। हमारी खातिर से मान लो, और जो वह कहें सो करो।

आज़ाद ने इसका जवाब लिखा—जैसी तुम्हारी मर्जी। मुझे कोई उज्र नहीं है।

हुस्नआरा ने यह खत पढ़ा तो तस्कीन हुई। नाज़ुकअदा से बोलीं—लो बहन, जवाब आ गया।

नाज़ुक—मान गये या नहीं?

हुस्नआरा—न कैसे मानते।

नाज़ुक—चलो, अब अम्मीजान को भी तस्कीन हो गयी।

बहार—मिठाइयाँ बाँटो। अब इससे बढ़ कर खुशी की और क्या बात होगी?

नाज़ुक—आखिर फिर रुपया अल्लाह ने किस काम के लिए दिया है ?

बहार—वाह री अक़्ल ! बस, रुपया इसी लिए है कि आतशबाजी में फूँके या सजावट में लुटाये। और कोई काम ही नहीं ?

नाज़ुक—और आखिर क्या काम है ? क्या परचून की दूकान करे ? चने बेचे ? कुछ मालूम तो हो कि रुपया किस काम में खर्च किया जाय ? दिल का हौसला और कैसे निकाले ?

बहार—अपनी-अपनी समझ है।

नाज़ुक—खुदा न करे कि किसी की ऐसी उलटी समझ हो। लो साहब, अब बरात भी गुनाह है। हाथी, घोड़े, बाजा सब ऐब में दाखिल। जो बरात निकालते हैं, सब गधे हैं। एक तुम और दूसरे मियाँ आजाद दो आदमियों पर अक़्ल खतम हो गयी। ज़रा आने तो दो मियाँ को, सारी शेखी निकल जायगी।

दूसरे दिन बड़ी धूम-धाम से माँझे की तैयारी हुई। आज़ाद की तरफ खोजी मुहतमिम थे। आपने पुराने ढंग की जामदानी की अचकन पहनी जिसमें क़ीमती बेल टँकी हुई थी। सिर पर एक बहुत बड़ा शमला। कंधे पर कश्मीर का हरा दुशाला। इस ठाट से आप बाहर आये तो लोगों ने तालियाँ बजायीं। इस पर आप बहुत ही खफ़ा हो कर बोले—यह तालियाँ हम पर नहीं बजाते हो। यह अपने बाप-दादों पर तालियाँ बजाते हो। यह खास उनका लिबास है। कई लौंडों ने उनके मुँह पर हँसना शुरू किया, मगर इंतजाम के धुन में खोजी को और कुछ न सूझता था। कड़क कर बोले—हाथियों को उसी तरफ रहने दो। बस, उसी लाइन में ला-ला कर हाथी लगाओ।

एक फ़ीलवान—यहाँ कहीं जगह भी है ? सबका भुरता बनायेंगे आप ?

खोजी—चुप रह, बदमाश !

मिरज़ा साहब भी खड़े तमाशा देख रहे थे। बोले—भई, इस फन में तो तुम उस्ताद हो।

खोजी—(मुसकिरा कर) आपकी क़द्रदानी है।

मिरज़ा—आपका रोब सब मानते हैं।

खोजी—हम किस लायक हैं भाईजान ! दोस्तों का इक़बाल है।

गरज इस धूम-धाम से माँझा दुलहिन के मकान पर पहुँचा कि सारे शहर में शोर मच गया। सवारियाँ उतरीं। मीरासिनों ने समधिनों को गालियाँ दीं। मियाँ आजाद बाहर से बुलवाये गये और उनसे कहा गया कि मढे के नीचे बैठिए। आजाद बहुत इनकार करते रहे; मगर औरतों ने एक न सुनी। नाजुक बेगम ने कहा—आप तो अभी से बिचकने लगे। अभी तो माँझे का जोड़ा पहनना पड़ेगा।

आज़ाद—यह मुझसे नहीं होने का।

जानी बेगम—अब चुपचाप पहन लो, बस !

आज़ाद—क्या फ़ज़ूल रस्म है !

जानी—लो, अब पहनते हो कि तकरार करते हो ? हमसे जनरैली न चलेगी।

बेगम—भला, यह भी कोई बात है कि माँझे का जोड़ा न पहनेंगे ?

आजाद—अगर आपकी खातिर इसी में है तो लाइए, टोपी दे लूँ।

नाजुक बेगम—जब तक माँझे का पूरा जोड़ा न पहनोगे, यहाँ से उठने न पाओगे।

आज़ाद ने बहुत हाथ जोड़े, गिड़गिड़ा कर कहा कि खुदा के लिए मुझे इस पीले जोड़े से बचाओ। मगर कुछ बस न चला। सालियों ने अँगरखा पहनाया, कंगन बाँधा। सारी बातें रस्म के मुताबिक पूरी हुईं।

जब आजाद बाहर गये तो सब बेगमें मिल कर बाग़ की सैर करने चलीं। गेतीआरा ने एक फूल तोड़ कर जानी बेगम की तरफ़ फेंका। उसने वह फूल रोक कर उन पर ताक के मारा तो आँचल से लगता हुआ चमन में गिरा। फिर क्या था, बाग़ में चारों तरफ फूलों की मार होने लगी। इसके बाद नाज़ुकअदा ने यह ग़ज़ल गायी।

वाकिफ़ नहीं है कासिद मेरे ग़मे-निहाँ से,
वह काश हाल मेरा सुनते मेरी जबाँ से।
क्यों त्योरियों पर बल है, माथे पर क्यों शिकन है?
क्यों इस कदर हो बरहम, कुछ तो कहो जबाँ से।
कोई तो आशियाना सैयाद ने जलाया,
काली घटाएँ रो कर पलटी हैं बोस्ताँ से।
जाने को जाओ लेकिन, यह तो बताते जाओ,
किस तरह बारे फ़ुरकत उठेगा नातवाँ से।

बहार—जी चाहता है, तुम्हारी आवाज को चूम लूँ।

नाज़ुक—और मेरा जी चाहता है कि तुम्हारी तारीफ चूम लूँ।

बहार—हम तुम्हारी आवाज़ के आशिक हैं।

नाज़ुक—आपकी मेहरबानी। मगर कोई खूबसूरत मर्द आशिक़ हो तो बात है। तुम हम पर रीझीं तो क्या ? कुछ बात नहीं।

बहार—बस, इन्हीं बातों से लोग उँगलियाँ उठाते हैं। और तुम नहीं छोड़तीं।

जानी—सच्ची आवाज़ भी कितनी प्यारी होती है!

नाज़ुक—क्या कहना है! अब दो ही चीजों में तो असर है, एक गाना, दूसरे हुस्न। अगर हमको अल्लाह ने ऐसा हुस्न न दिया होता, तो हमारे मियाँ हम पर क्यों रीझते ?

बहार—तुम्हारा हुस्न तुम्हारे मियाँ को मुबारक हो! हम तो तुम्हारी आवाज पर मिटे हुए हैं।

नाजुक—और मैं तुम्हारे हुस्न पर जान देती हूँ। अब मैं भी बनाव-चुनाव करना तुमसे सीखूँगी।

नाज़ुक—बहन, अब तुम झेंपती हो। जब कभी तुम मिलीं, तुम्हें बनते-ठनते देखा। मुझसे दो-तीन साल बड़ी हो, मगर बारह बरस की बनी रहती हो। हैं तुम्हारे मियाँ किस्मत के धनी।

बहार—सुनो बहन, हमारी राय यह है कि अगर औरत समझदार हो, तो मर्द की ताकत नहीं कि उसे बाहर का चस्का पड़े।

साचिक के दिन जब चाँदी का पिटारा बाहर आया, तो खोजी बार-बार पिटारे का ढकना उठा कर देखने लगे कि कहीं शीशियाँ न गिरने लगें। मोतिये का इत्र खुदा जाने, किन दिक्कतों से लाया हूँ। यह वह इत्र है, जो आसफुद्दौला के यहाँ से बादशाह की बेगम के लिए गया था।

एक आदमी ने हँस कर कहा—इतना पुराना इत्र हुजूर को कहाँ से मिल गया!

खोजी—हुँः! कहाँ से मिल गया! मिल कहाँ से जाता? महीनों दौड़ा हूँ, तब जाके यह चीज हाथ लगी है।

आदमी—क्यों साहब, यह बरसों का इत्र चिटक न गया होगा?

खोजी—वाह! अक्ल बड़ी कि भैंस? बादशाही कोठों के इत्र कहीं चिटका करते हैं? यह भी उन गँधियों का तेल हुआ, जो फेरी लगाते फिरते हैं!

आदमी—और क्यों साहब, केवड़ा कहाँ का है?

खोजी—केवड़िस्तान एक मुकाम है, कजलीवन के पास। वहाँ के केवड़ों से खींचा गया है।

आदमी—केवड़िस्तान! यह नाम तो आज ही सुना।

खोजी—अभी तुमने सुना ही क्या है? केवड़िस्तान का नाम ही सुन कर घबड़ा गये?

आदमी—क्यों हुजूर, यह कजलीवन कौन सा है? वही न, जहाँ घोड़े बहुत होते हैं?

खोजी—(हँस कर) अब बनाते हैं आप। कजलीवन में घोड़े नहीं, खास हाथियों का जंगल है।

आदमी—क्यों जनाब, केवड़िस्तान से तो केवड़ा आया, और गुलाब कहाँ का है? शायद गुलाबिस्तान का होगा?

खोजी—शाबाश! यह हमारी सोहबत का असर है कि अपने परों आप उड़ने लगे। गुलाबिस्तान कामरू-कमच्छा के पास है, जहाँ का जादू मशहूर है।

रात को जब साचिक का जलूस निकला तो खोजी ने एक पनशाखेवाली का हाथ पकड़ा और कहा—जल्दी-जल्दी कदम बढ़ा।

वह बिगड़ कर बोली—दुर मुए! दाढ़ी झुलस दूँगी, हाँ। आया वहाँ से बरात का दारोग़ा बनके, सिवा मुरहेपन के दूसरी बात नहीं।

खोजी—निकाल दो इस हरामजादी को यहाँ से

औरत—निकाल दो इस मूड़ीकाटे को।

खोजी—अब मैं छूरी भोंक दूँगा, बस!

औरत—अपने पनशाखे से मुँह झुलस दूँगी। मुआ दीवाना, औरतों को रास्ते में छेड़ता चलता है।

खोजी—अरे मियाँ कांस्टेबिल, निकाल दो इस औरत को।

औरत—तू खुद निकाल दे, पहले।

जलूस के साथ कई बिगड़े दिल भी थे। उन्होंने खोजी को चकमा दिया—जनाब, अगर इसने सजा न पायी तो आपकी बडी किरकिरी होगी। बदरोबी हो जायगी। आखिर, यह फ़ैसला हुआ, आप कमर कस कर बड़े जोश के साथ पनशाखेवाली की तरफ़ झपटे। झपटते ही उसने पनशाखा सीधा किया और कहा—अल्लाह की कसम! न झुलस दूँ तो अपने बाप की नहीं।

लोगों ने खोजी पर फबतियाँ कसनी शुरू कीं।

एक—क्यों मेजर साहब, अब तो हारी मानी?

दूसरा—ऐं! करौली और छूरी क्या हुई!

तीसरा—एक पनशाखेवाली से नहीं जीत पाते, बडे सिपाही की दुम बने हैं!

औरत—क्या दिल्लगी है! जरा जगह से बढ़ा, और मैंने दाढ़ी और मूँछ दोनों झुलस दिया!

खोजी—देखो, सब के सब देख रहे हैं कि औरत समझ कर इसको छोड़ दिया। वरना कोई देव भी होता तो हम बे कत्ल किये न छोडते इस वक़्त।

जब साचिक दुलहिन के घर पहुँचा, तो दुलहिन की बहनों ने चंदन से समधिन की माँग भरी। हुस्नआरा का निखार आज देखने के काबिल था। जिसने देखा, फड़क गयी। दुलहिन को फूलों का गहना पहनाया गया। इसके बाद छड़ियों की मार होने लगी। नाजुकअदा और जानी बेगम के हाथ में फूलों की छड़ियाँ थीं। समधिनों पर इतनी छड़ियाँ पड़ीं की बेचारी घबड़ा गयीं।

जब माँझे और साचिक की रस्म अदा हो चुकी तो मेहँदी का जलूस निकला। दुलहिन के यहाँ महफिल सजी हुई थी। डोमिनियाँ गा रही थीं। कमरे की दीवारें इस तरह रँगी हुई थीं कि नजर नहीं ठहरती थी। छतगीर की जगह सुर्ख जरबफ़्त लगाया गया था। उस पर सुनहरी कलाबत्तू की झालर थी। फ़र्श भी सुर्ख मखमल का था। झाड़ और कँवल, मृदंग और हाँड़ियाँ सब सुर्ख। कमरा शीशमहल हो गया था। बेगमें भारी-भारी जोड़े पहने चहकती फिरती थीं। इतने में एक सुखपाल ले कर महरियाँ सहन में आयीं। उस पर से एक बेगम साहब उतरीं, जिनका नाम परीबानू था।

सिपहआरा बोलीं—हाँ, अब नाजुकअदा बहन की जवाब देनेवाली आ गयीं। बराबर की जोड है! यह कम न वह कम।

रूहअफजा—नाम बड़ा प्यारा है।

नाजुक—प्यारा क्यों न हो। इनके मियाँ ने यह नाम रखा है।

परीबानू—और तुम्हारे मियाँ ने तुम्हारा नाम क्या रखा है। चरवाँक महल!

इस पर बड़ी हँसी उड़ी। बारह बजे रात को मेहँदी रवाना हुई। जब जलूस सज गया तो ख्वाजा साहब आ पहुँचे और आते ही गुल मचाना शुरू किया—सब चीजें क़रीने के साथ लगाओ और मेरे हुक्म के बग़ैर कोई कदम भी आगे न रखे। वरना बुरा होगा।

सजावट के तख्त बड़े-बड़े कारीगरों से बनवाये गये थे। जिसने देखा, दंग हो गया।

एक—यों तो सभी चीजें अच्छी हैं, मगर तख्त सबसे बढ़-चढ़ कर हैं।

दूसरा—बड़ा रुपया इन्होंने सर्फ़ किया है साहब।

तीसरा—ऐसा मालूम होता है कि सचमुच के फूल खिले हैं।

चौथा—जरा चंडूबाजों के तख्त को देखिए। ओहो-हो! सब के सब औंधे पड़े हुए हैं! आँखों से नशा टपका पड़ता है। कमाल इसे कहते हैं। मालूम होता है, सचमुच चंडूखाना ही है। वह देखिए, एक बैठा हुआ किस मजे से पौंडा छील रहा है।

इसके बाद तुर्क सवारों का तख्त आया। जवान लाल बानात की कुर्तियाँ पहने, सिर पर बाँकी टोपियाँ दिये, बूट चढ़ाये, हाथ में नंगी तलवारें लिये, बस यही मालूम होता था कि रिसाले ने अब धावा किया!

जब जलूस दूल्हा के यहाँ पहुँचा तो बेगमें पालकियों से उतरीं। दूल्हा की बहनें और भावजें दरवाजे तक उन्हें लाने आयीं। सब समधिनें बैठीं तो डोमिनियों ने मुबारकबाद गायी। फिर गालियों की बौछार होने लगी। आज़ाद को जब यह खबर हुई तो बहुत ही बिगड़े; मगर किसी ने एक न सुनी। अब आज़ाद के हाथों में मेहँदी लगाने की बारी आयी। उनका इरादा था कि एक ही उँगली में मेहँदी लगायें, मगर जब एक तरफ सिपहआरा और दूसरी तरफ़ रूहअफज़ा बेगम ने दोनों हाथों में मेहँदी लगानी शुरू की तो उनकी हिम्मत न पड़ी कि हाथ खींच लें।

हँसी-हँसी में उन्होंने कहा—हिंदुओं के देखा-देखी हम लोगों ने यह रस्म सीखी है। नहीं तो अरब में कौन मेहँदी लगाता है।

सिपहआरा—जिन हाथों से तलवार चलायी, उन हाथों को कोई हँस नहीं सकता। सिपाही को कौन हँसेगा भला!

रूहअफ़जा—क्या बात कही है! जवाब दो तो जानें।

दो बजे रात को रूहअफज़ा बेगम को शरारत जो सूझी तो गेरू घोल कर सोते में महरियों को रँग दिया और लगे हाथ कई बेगमों के मुँह भी रँग दिये। सुबह को जानी बेगम उठीं तो उनको देख कर सब की सब हँसने लगीं। चकरायीं कि आज माजरा क्या है। पूछा—हमें देख कर हँस रही हो क्या।

रूहअफ़जा—घबराओ नहीं, अभी मालूम हो जायगा।

नाजुक—कुछ अपने चेहरे की भी खबर है!

जानी—तुम अपने चेहरे की तो खबर लो।

दोनों आईने के पास जाके देखती हैं, तो मुँह रँगा हुआ। बहुत शर्मिंदा हुईं।

रूहअफ़ज़ा—क्यों बहन, क्या यह भी कोई सिंगार है?

जानी—अच्छा, क्या मुजायका है; मगर अच्छे घर बयाना दिया। आज रात होने दो। ऐसा बदला लूँ कि याद ही करो।

रूहअफज़ा—हम दरवाज़े बंद करके सो रहेंगे। फिर कोई क्या करेगा!

जानी—चाहे दरवाजा बंद कर लो, चाहे दस मन का ताला डाल दो, हम उस स्याही से मुँह रँगेंगी, जिससे जूते साफ़ किये जाते हैं।

रूहअफ़ज़ा—बहन, अब तो माफ करो। और यों हम हाजिर हैं। जूतों का हार गले में डाल दो।

इस तरह चहल-पहल के साथ मेहँदी की रस्म अदा हुई।

खोजी ने जब देखा कि आज़ाद की चारों तरफ़ तारीफ़ हो रही है, और हमें कोई नहीं पूछता, तो बहुत झल्लाये और कुल शहर के अफ़ीमचियों को जमा करके उन्होंने भी जलसा किया और यों स्पीच दी—भाइयो! लोगों का खयाल है कि अफीम खा कर आदमी किसी काम का नहीं रहता। मैं कहता हूँ, बिलकुल ग़लत। मैंने रूम की लड़ाई में जैसे-जैसे काम किये, उन पर बड़े से बड़ा सिपाही भी नाज कर सकता है। मैंने अकेले दो-दो लाख आदमियों का मुक़ाबिला किया है। तोपों के सामने बेधड़क चला गया हूँ। बड़े-बड़े पहलवानों को नीचा दिखा दिया है। और मैं वह आदमी हूँ, जिसके यहाँ सत्तर पुश्तों से लोग अफ़ीम खाते आये हैं।

लोग—सुभान अल्लाह! सुभान-अल्लाह!!

खोजी—रही अक्ल की बात, तो मैं दुनिया के बड़े से बड़े शायर, बड़े से बड़े फ़िलासफ़र को चुनौती देता हूँ कि वह आ कर मेरे सामने खड़ा हो जाय। अगर एक डपट में भगा न दूँ तो अपना नाम बदल डालूँ।

लोग—क्यों न हो।

खोजी—मगर आप लोग कहेंगे कि तुम अफीम की तारीफ़ करके इसे और गिराँ कर दोगे, क्योंकि जिस चीज की माँग ज़्यादा होती है, वह महँगी बिकती है। मैं कहता हूँ कि इस शक को दिल में न आने दीजिए; क्योंकि सबसे ज़्यादा ज़रूरत दुनिया में ग़ल्ले की है। अगर माँग के ज्यादा होने से चीजें महँगी हो जातीं तो ग़ल्ला अब तक देखने को भी न मिलता। मगर इतना सस्ता है कि कोरी चमार, धुनिये-जुलाहे सब खरीदते और खाते हैं। वजह यह कि जब लोगों ने देखा कि ग़ल्ले की ज़रूरत ज़्यादा है, तो ग़ल्ला ज्यादा बोने लगे। इसी तरह जब अफ़ीम की माँग होगी, तो ग़ल्ले की तरह बोयी जायगी और सस्ती बिकेगी। इसलिए हरएक सच्चे अफ़ीमची का फ़र्ज़ है कि वह इसके फायदों को दुनिया पर रोशन कर दे।

एक—क्या कहना है! क्या बात पैदा की।

दूसरा—कमाल है, कमाल!

तीसरा—आप इस फ़न के खुदा हैं।

चौथा—मेरी तसल्ली नहीं हुई। आखिर, अफीम दिन-दिन क्यों महँगी होती जाती है?

पाँचवाँ—चुप रह! नामाकूल! ख्वाजा साहब की बात पर एतराज़ करता है! जा कर ख्वाजा साहब के पैरों पर गिरो और कहो कि क़ुसूर माफ कीजिए।

खोजी—भाइयो! किसी भाई को जलील करना मेरी आदत नहीं। गोकि खुदा ने मुझे बड़ा रुतबा दिया है और मेरा नाम सारी दुनिया में रोशन है; मगर आदमी नहीं, आदमी का जौहर है। मैं अपनी ज़बान से किसी को कुछ न कहूँगा। मुझे यही

कहना चाहिए कि मैं दुनिया में सबसे ज़्यादा नालायक, सबसे ज़्यादा बदनसीब और सबसे ज़्यादा ज़लील हूँ। मैंने मिस्र के पहलवान को पटकनी नहीं दी थी, उसी ने उठाके मुझे दे मारा था। जहाँ गया, पिटके आया। गो दुनिया जानती है कि ख़्वाजा साहब का जोड़ नहीं; मगर अपनी ज़बान से मैं क्यों कहूँ। मैं तो यही कहूँगा कि बुआ ज़ाफ़रान ने मुझे पीट लिया और मैंने उफ़् तक न की।

एक—ख़ुदा बख़्शे आपको। क्या कहना है उस्ताद।

दूसरा—पिट गये और उफ़् तक न की!

खोजी—भाइयो! गोकि मैं अपनी शान में इज़्ज़त के बड़े-बड़े खिताब पेश कर सकता हूँ; मगर जब मुझे कुछ कहना होगा तो यही कहूँगा कि मैं झक मारता हूँ। अगर अपना ज़िक्र करूँगा तो यही कहूँगा कि मैं पाजी हूँ। मैं चाहता हूँ कि लोग मुझे ज़लील समझें ताकि मुझे ग़ुरूर न हो।

लोग—वाह-वाह! कितनी आजिज़ी है! जभी तो ख़ुदा ने आपको यह रुतबा दिया।

खोजी—आजकल ज़माना नाज़ुक है। किसी ने ज़रा टेढ़ी बात की और धर लिये गये। किसी को एक धौल लगायी और चालान हो गया। हाकिम ने १० रुपया जुर्माना कर दिया या दो महीने की क़ैद। अब बैठे हुए चक्की पीस रहे हैं। इस ज़माने में अगर निबाह है, तो आजिज़ी में। और अफीम से बढ़ कर आजिज़ी का सबक देनेवाली दूसरी चीज़ नहीं।

लोग—क्या दलीलें हैं! सुभान-अल्लाह!

खोजी—भाइयो, मेरी इतनी तारीफ़ न कीजिए, वरना मुझे ग़ुरूर हो जायगा। मैं वह शेर हूँ, जिसने जंग के मैदान में करोड़ों को नीचा दिखाया। मगर अब तो आपका ग़ुलाम हूँ।

एक—आप इस काबिल हैं कि डिबिया में बंद कर दें।

दूसरा—आपके क़दमों की ख़ाक ले कर तावीज़ बनानी चाहिए।

तीसरा—इस आदमी की ज़बान चूमने के काबिल है।

चौथा—भाई, यह सब अफीम के दम का ज़हूरा है।

खोजी—बहुत ठीक। जिसने यह बात कही, हम उसे अपना उस्ताद मानते हैं। यह मेरी ख़ानदानी सिफ़त है। एक नकल सुनिए—एक दिन बाज़ार में किसी ने चिड़ीमार से एक उल्लू के दाम पूछे। उसने कहा, आठ आने। उसी के बग़ल में एक और छोटा उल्लू भी था। पूछा, इसकी क्या कीमत है? कहा, एक रुपया। तब तो गाहक ने कान खड़े किये और कहा—इतने बड़े उल्लू के दाम आठ आने और ज़रा से जानवर का मोल एक रुपया? चिड़ीमार ने कहा—आप तो हैं उल्लू। इतना नहीं समझते कि इस बड़े उल्लू में सिर्फ़ यह सिफ़त है कि यह उल्लू है और इस छोटे में दो सिफ़तें हैं, एक यह कि ख़ुद उल्लू है, दूसरे उल्लू का पट्ठा है। तो भाइयो! आपका यह ग़ुलाम सिर्फ़ उल्लू नहीं, बल्कि उल्लू का पट्ठा है।

एक—हम आज से अपने को उल्लू की दुम फ़ाख्ता लिखा करेंगे।

दूसरा—हम तो जाहिल आदमी हैं, मगर अब अपना नाम लिखेंगे तो गधे का नाम बढ़ा देंगे। आज से हम आज़िज़ी सीख गये।

खोजी—सुनिए, इस उल्लू के पट्ठे ने जो-जो काम किया, कोई करे तो जानें; उसकी टाँग की राह निकल जायँ। पहाड़ों को हमने काटा और बड़े-बड़े पत्थर उठा कर दुश्मन पर फेंके। एक दिन ४४ मन का एक पत्थर एक हाथ से उठा कर रूसियों पर मारा तो दो लाख पचीस हज़ार सात सौ उनसठ आदमी कुचल के मर गये।

एक—ओफ़्फ़ोह! इन दुबले-पतले हाथ-पाँवों पर यह ताक़त!

खोजी—क्या कहा? दुबले-पतले हाथ-पाँव! यह हाथ-पाँव दुबले-पतले नहीं। मगर बदन-चोर है। देखने में तो मालूम होता है कि मरा हुआ आदमी है; मगर कपड़े उतारे और देव मालूम होने लगा। इसी तरह मेरे क़द का भी हाल है। गँवार आदमी देखे तो कहे कि बौना है। मगर जाननेवाले जानते हैं कि मेरा क़द कितना ऊँचा है। रूम में जब दो-एक गँवारों ने मुझे बौना कहा, तो बेअख्तियार हँसी आ गयी। यह खुदा की देन है कि हूँ तो मैं इतना ऊँचा; मगर कोई कलियुग की खूँटी कहता है, कोई बौना बनाता है। हूँ तो शरीफ़ज़ादा; मगर देखनेवाले कहते हैं कि यह कोई पाजी है। अक़्ल इस कदर कूट-कूट कर भरी है कि अगर फलातून ज़िंदा होता, तो शागिर्दी करता। मगर जो देखता है, कहता है कि यह गधा है। यह दरजा अफ़ीम की बदौलत ही हासिल हुआ है। अब तो यह हाल है कि अगर कोई आदमी मेरे सिर को जूतों से पीटे, तो उफ़् न करूँ। अगर किसी ने कहा कि ख्वाजा गधा है, तो हँस कर जवाब दिया कि मैं ही नहीं, मेरे बाप और दादा भी ऐसे ही थे।

एक—दुनिया में ऐसे-ऐसे औलिया पड़े हुए हैं!

खोजी—मगर इस आज़िजी के साथ दिलेर भी ऐसा हूँ कि किसी ने बात कही और मैंने चाँटा जड़ा। मिस्र के नामी पहलवान को मारा। यह बात किसी अफीमची में नहीं देखी। मेरे वालिद भी तोलों अफीम पीते थे और दिन भर दूकानों पर चिलमें भरा करते थे। मगर यह बात उनमें भी न थी।

लोग—आपने अपने बाप का नाम रोशन कर दिया।

खोजी—अब मैं आप लोगों से चंडू की सिफ़त बयान करना चाहता हूँ। बग़ैर चंडू पिये आदमी में इनसानियत आ नहीं सकती। आप लोग शायद इसकी दलील चाहते होंगे। सुनिए—बग़ैर लेटे हुए कोई चंडू पी नहीं सकता और लेटना अपने को खाक में मिलाना है। बाबा सादी ने कहा है—

खाक शो पेश अज़ाँ कि खाक शवीं।
(मरने से पहले खाक हो जा।)

चंडू की दूसरी सिफ़त यह है कि हरदम लौ लगी रहती है। इससे आदमी का दिल रोशन हो जाता है। तीसरी सिफत यह है कि इसकी पीनक में फ़िक्र करीब नहीं आने पाती। चुस्की लगायी और सोते में आये। चौथी सिफत यह है कि अफ़ीमची

को रात भर नींद नहीं आती। और यह बात पहुँचे हुए फ़क़ीर ही को हासिल होती है। पाँचवीं सिफ़त यह है कि अफीमची तड़के ही उठ बैठता है। सवेरा हुआ और आग लेने दौड़े। और जमाना जानता है कि सवेरे उठने से बीमारी नहीं आती।

इस पर एक पुराने खुर्राट अफीमची ने कहा—हज़रत, यहाँ मुझे एक शक है। जो लोग चीन गये हैं। वह कहते हैं कि वहाँ तीस बरस से ज़्यादा उम्र का आदमी ही नहीं। इससे तो यही साबित होता है कि अफ़ीमियों की उम्र कम होती है।

खोजी—यह आपसे किसने कहा? चीनवाले किसी को अपने मुल्क में नहीं जाने देते। असल बात यह है कि चीन में तीस बरस के बाद लड़का पैदा होता है।

लोग—क्या, तीस बरस के बाद लड़का पैदा होता है! इसका तो यक़ीन नहीं आता।

एक—हाँ-हाँ होगा। इसमें यकीन न आने की कौन बात है। मतलब यह कि जब औरत तीस बरस की हो जाती है, तब कहीं लड़का पैदा होता है।

खोजी—नहीं-नहीं; यह मतलब नहीं है। मतलब यह है कि लड़का तीस बरस तक हमल में रहता है।

लोग—बिलकुल झूठ! खुदा की मार इस झूठ पर।

खोजी—क्या कहा? यह आवाज किधर से आयी? अरे, यह कौन बोला था? यह किसने कहा कि झूठ है?

एक—हुजूर, उस कोने से आवाज़ आयी थी।

दूसरा—हुजूर, यह ग़लत कहते हैं। इन्हीं की तरफ़ से आवाज आयी थी।

खोजी—उन बादमाशों को कत्ल कर डालो। आग लगा दो। हम, और झूठ! मगर नहीं, हमीं चूके। मुझे इतना गुस्सा न चाहिए। अच्छा साहब, हम झूठे, हम गप्पी, बल्कि हमारे बाप बेईमान, जालसाज और जमाने भर के दग़ाबाज। आप लोग बतलायें, मेरी क्या उम्र होगी?

एक—आप कोई पचास के पेटे में होंगे।

दूसरा—नहीं-नहीं, आप कोई सत्तर के होंगे।

खोजी—एक हुई, याद रखिएगा हजरत। हमारा सिन न पचास का, न साठ का। हम दो ऊपर सौ बरस के हैं। जिसको यकीन न आये वह काफ़िर।

लोग—उफ़्फ़ोह, दो ऊपर सौ बरस का सिन है।

खोजी—जी हाँ, दो ऊपर सौ बरस का सिन है।

एक—अगर यह सही है तो यह एतराज उठ गया कि अफीमियों की उम्र कम होती है। अब भी अगर कोई अफीम न पिये, तो बदनसीब है।

खोजी—दो ऊपर सौ बरस का सिन हुआ और अब तक वही खमदम है कहो, हजार से लड़ें, कहो, लाख से। अच्छा अब आप लोग भी अपने-अपने तजरबे बयान करें। मेरी तो बहुत सुन चुके; अब कुछ अपनी भी कहिए।

इस पर गट्टू नाम का एक अफीमची उठ कर बोला—भाई पंचों, मैं कलवार हूँ।

मुल सराब हमारे यहाँ नहीं बिकती। हम जब लड़के से थे, तब से हम अफीम पीते हैं। एक बार होली के दिन हम घर से निकले। ऐं बस, एक जगह कोई पचास हों, पैतालिस हों, इतने आदमी खड़े थे। किसी के हाथ में लोटा, किसी के हाथ में पिचकारी। हम उधर से जो चले, तो एक आदमी ने पीछे से दो जूता दिया, तो खोपड़ी भन्ना गयी। अगर चाहता तो उन सबको डपट लेता, मगर चुप हो रहा।

खोजी—शाबाश! हम तुमसे बहुत खुश हुए गुट्टू!

गुट्टू—हुज़ूर की दुआ से यह सब है।

इसके बाद नूरखाँ नाम का एक अफीमची उठा। कहा—पंचो! हम हाथ जोड़ कर कहते हैं कि हमने कई साल से अफ़ीम, चंडू पीना शुरू किया है। एक दिन हम एक चने के खेत में बैठे बूट खा रहे थे। किसान था दिल्लगीबाज़। आया और मेरा हाथ पकड़ कर कानीहौज ले चला। मैं कान दबाये हुए उसके साथ चला आया।

इसके बाद कई अफ़ीमचियों ने अपने-अपने हाल बयान किये। आखिर में एक बुड्ढे जोगादारी अफ़ीमी ने खड़े हो कर कहा—भाइयो! आज तक अफीमियों में किसी ने ऐसा काम नहीं किया था। इसलिए हमारा फ़र्ज है कि हम अपने सरदार को कोई खिताब दें। इस पर सब लोगों ने मिलकर खुशी से तालियाँ बजायीं और खोजी को गीदी का खिताब दिया। खोजी ने उन सबका शुक्रिया अदा किया और मजलिस बरखास्त हुई।

आज बड़ी बेगम का मकान परिस्तान बना हुआ है। जिधर देखिए, सजावट की बहार है। बेगमें धमा-चौकड़ी मचा रही हैं।

जानी—दूल्हा के यहाँ तो आज मीरासिनों की धूम है। कहाँ तो मियाँ आज़ाद को नाच-गाने से इतनी चिढ़ थी कि मजाल क्या, कोई डोमिनी घर के अंदर कदम रखने पाये। और आज सुनती हूँ कि तबले पर थाप पड़ रही है और ग़ज़लें, ठुमरियाँ, टप्पे गाये जाते हैं।

नाज़ुक—सुना है, आज सुरैया बेगम भी आनेवाली हैं।

बहार—उस मालज़ादी का हमारे सामने ज़िक्र न किया करो।

नाज़ुक—(दाँतों तले उँगली दबा कर) ऐसा न कहो, बहन!

जानी—ऐसी पाक-दामन औरत है कि उसका सा होना मुश्किल है।

नाज़ुक—यह लोग खुदा जाने, क्या समझती हैं सुरैया बेगम को।

बहार—ऐ है! सच कहना, सत्तर चूहे खाके बिल्ली हज को चली।

इतने में एक पालकी से एक बेगम साहब उतरीं। जानी बेगम और नाज़ुकअदा में इशारे होने लगे। यह सुरैया बेगम थीं।

सुरैया—हमने कहा, चलके ज़री दुलहिन को देख आयें।

रूहअफज़ा—अच्छी तरह आराम से बैठिए।

सुरैया—मैं बहुत अच्छी बैठी हूँ। तकल्लुफ़ क्या है।

नाज़ुक—यहाँ तो आपको हमारे और जानी बेगम के सिवा किसी ने न देखा होगा।

सुरैया—मैं तो एक बार हुस्नआरा से मिल चुकी हूँ।

सिपहआरा—और हमसे भी?

सुरैया—हाँ, तुमसे भी मिले थे, मगर बतायेंगे नहीं।

सिपहआरा—कब मिले थे अल्लाह! किस मकान में थे?

सुरैया—अजी, मैं मज़ाक करती थी। हुस्नआरा बेगम को देख कर दिल शाद हो गया।

नाज़ुक—क्या हमसे ज़्यादा खूबसूरत हैं?

सुरैया—तुम्हारा तो दुनिया के परदे पर जवाब नहीं है।

नाज़ुक—भला दूल्हा से आपसे बातचीत हुई थी?

सुरैया—बातचीत आपसे हुई होगी। मैंने तो एक दफ़ा राह में देखा था।

नाज़ुक—भला दूसरा निकाह भी मंजूर करते हैं वह।

सुरैया—यह तो उनसे कोई जाके पूछे।

नाज़ुक—तुम्हीं पूछ लो बहन, खुदा के वास्ते।

सुरैया—अगर मंजूर हो दूसरा निकाह, तो फिर क्या?

नाजुक—फिर क्या, तुमको इससे क्या मतलब ?

रूहअफ़ज़ा—आखिर दूसरे निकाह के लिए किसे तजवीजा है ।

नाजुक—हम खुद अपना पैग़ाम करेंगे ।

रूहअफ़ज़ा—बस, हद हो गयी नाजुकअदा बहन ! ओफ़्फ़ोह !

नाजुक—(आहिस्ता से) सुरैया बेगम, तुमने ग़लती की । धीरज न रख सकीं ।

सुरैया—हम जान फ़िदा करते, गर वादा वफ़ा होता,
मरना ही मुकद्दर था, वह आते तो क्या होता !

नाजुक—हाँ, है तो यही बात । खैर, जो हुआ, अच्छा ही हुआ, मसलहत भी यही थी ।

हुस्नआरा बेगम ने यह शेर सुना और नाजुक बेगम की बातों को तौला, तो समझ गयीं कि हो न हो, सुरैया बेगम यही हैं । कनखियों से देखा और गरदन फेर कर इशारे से सिपहआरा को बुला कर कहा—इनको पहचाना ? सोचो तो, यह कौन हैं ?

सिपहआरा—ऐ बाजी, तुम तो पहेलियाँ बुझवाती हो ।

हुस्नआरा—तुम ऐसी तबीयतदार, और अब तक न समझ सकीं ?

सिपहआरा—तो कोई उड़ती चिड़िया तो नहीं पकड़ सकता ।

हुस्नआरा—उस शेर पर ग़ौर करो ।

सिपहआरा—अल्लाह, (सुरैया बेगम की तरफ़ देख कर) अब समझ गयी ।

हुस्नआरा—है औरत हसीन ।

सिपहआरा—हाँ हैं; मगर तुमसे क्या मुक़ाबिला ।

हुस्नआरा—सच कहना, कितनी जल्द समझ गयी हूँ ।

सिपहआरा—इसमें क्या शक है, मगर यह तुमसे कब मिली थीं ? मुझे तो याद नहीं आता ।

हुस्नआरा—खुदा जाने । अलारक्खी बनके आने न पातीं, जोगिन के भेष में कोई फटकने न देता । शिब्बोजान का यहाँ क्या काम ?

सिपहआरा—शायद महरी-वहरी बनके गुज़र हुआ हो ।

हुस्नआरा—सच तो यह है कि हमको इनका आना बहुत खटकता है । इन्हें तो यह चाहिए था कि जहाँ आजाद का नाम सुनतीं, वहाँ से हट जातीं, न कि ऐसी जगह आना !

सिपहआरा—इनसे यहाँ तक आया क्योंकर गया ?

हुस्नआरा—ऐसा न हो कि यहाँ कोई गुल खिले ।

सिपहआरा ने जा कर बहार बेगम से कहा—जो बेगम अभी आयी हैं, उनको तुमने पहचाना ? सुरैया बेगम यही हैं । तब तो बहार बेगम के कान खड़े हुए । ग़ौर से देख कर बोलीं—माशा-अल्लाह ! कितनी हसीन औरत है ! ऐसी नमकीनी भी कम देखने में आयी ।

सिपहआरा—बाजी को खौफ़ है कि कोई गुल न खिलायें ।

बहार—गुल क्या खिलायेंगी। अब तो इनका निकाह हो गया।

सिपहआरा—ऐ है, बाजी! निकाह पर न जाना। यह वह खिलाड़ है कि घूँघट के आड़ में शिकार खेलें।

बहार—ऐ नहीं, क्यों बिचारी को बदनाम करती हो।

सिपहआरा—वाह! बदनामी की एक ही कही। कोई पेशा, कोई कर्म इनसे छूटा? लगावटबाज़ी में इनकी धूम है।

बहार—हम अब इस हद पर आने भी दें।

उधर नाज़ुकअदा बेगम ने बातों-बातों में सुरैया बेगम से पूछा—बहन, यह बात अब तक न खुली कि तुम पादरी के यहाँ से क्यों निकल आयीं। सुरैया बेगम ने कहा—बहन, इस जिक्र से रंज होता है। जो हुआ, वह हुआ; अब उसका घड़ी-घड़ी जिक्र करना फजूल है। लेकिन जब नाज़ुकअदा बेगम ने बहुत ज़िद की तो उन्होंने कहा—बात यह हुई कि बेचारे पादरी ने मुझ पर तरस खा कर अपने घर में रखा और जिस तरह कोई खास अपनी बेटियों से पेश आता है, उसी तरह मुझसे पेश आते। मुझे पढ़ाया-लिखाया, मुझसे रोज कहते कि तुम ईसाई हो जाओ; लेकिन मैं हँसके टाल दिया करती थी। एक दिन पादरी साहब तो चले गये थे किसी काम को, उनका भतीजा, जो फ़ौज में नौकर है, उनसे मिलने आया। पूछा—कहाँ गये हैं? मैंने कहा—कहीं बाहर गये हैं। इतना सुनना था कि वह गाडी से उतर आया और अपनी जेब से बोतल निकाल कर शराब पी। जब नशा हुआ तो मुझसे कहने लगा, तुम भी पियो। उसने समझा, मैं राजी हूँ। मेरा हाथ पकड़ लिया। मैं उससे अपना हाथ छुड़ाने लगी। मगर वह मर्द, मैं औरत! फिर फ़ौजी जवान, कुछ करते-धरते नहीं बनती थी। आखिर बोली—साहब, तुम फ़ौज के जवान हो। मैं भला तुमसे क्या जीत पाऊँगी? मेरा हाथ छोड़ दो। इस पर हँस कर बोला—हम बिना पिलाये न मानेंगे। मेरा तो खून सूख गया। अब करूँ तो क्या करूँ। अगर किसी को पुकारती हूँ, तो यह इस वक्त मार ही डालेगा। और बेइज्जत करने पर तो तुला ही हुआ है। चाहा कि झपटके निकल जाऊँ, पर उसने मुझे गोद में उठा लिया और बोला—हमसे शादी क्यों नहीं कर लेतीं? मेरा बदन थर-थर काँप रहा था कि या खुदा, आज कैसे इज्जत बचेगी, और क्या होगा! मगर आबरू का बचानेवाला अल्लाह है। उसी वक्त पादरी साहब आ पहुँचे। बस, अपना सा मुँह ले कर रह गया। चुपके से खिसक गया। पादरी साहब उसको तो क्या कहते। जब बराबर का लड़का या भतीजा कमाता-धमाता हो, तो बड़ा-बूढ़ा उसका लिहाज करता ही है। जब वह भाग गया, तो मेरे पास आ कर बोले—मिस पालेन, अब तुम यहाँ नहीं रह सकतीं।

मैं—पादरी साहब, इसमें मेरा जरा कुसूर नहीं।

पादरी—मैंने खुद देखा कि तुम और वह हाथपाई करते थे।

मैं—वह मुझे जबर्दस्ती शराब पिलाना चाहते थे।

पादरी—अजी, मैं खब जानता हूँ। मैं तुमको बहुत नेक समझता था।

मैं—पूरी बात तो सुन लीजिए।

पादरी—अब तुम मेरी आँखों से गिर गयीं। बस अब तुम्हारा निबाह यहाँ नहीं हो सकता। कल तक तुम अपना बंदोबस्त कर लो। मैं नहीं जानता था कि तुम्हारे यह ढँग हैं।

उसी दिन रात को मैं वहाँ से भागी।

उधर बड़ी बेगम साहब' इंतजाम करने में लगी हुई थीं। बात-बात पर कहती जाती थीं कि अल्लाह! आज तो बहुत थकी। अब मेरा सिन थोड़ा है कि इतने चक्कर लगाऊँ। उस्तानी जी हाँ-में-हाँ मिलाती जाती थीं।

बड़ी बेगम—उस्तानी जी, अल्लाह गवाह है, आज बहुत शल हो गयी।

उस्तानी—अरे तो हुजूर दौड़ती भी कितनी हैं! इधर से उधर, उधर से इधर।

महरी—दूसरा हो तो बैठ जाय।

उस्तानी—इस सिन में इतनी दौड़-धूप मुश्किल है।

महरी—ऐसा न हो, दुश्मनों की तबीयत खराब हो जाय। आखिर हम लोग किस लिए हैं!

बड़ी बेगम—अभी दो-तीन दिन तो न बोलो, फिर देखा जायगा। इसके बाद करना ही क्या है।

उस्तानी—यह क्यों! खुदा सलामत रखे; पोते-पोतियाँ न होंगे!

बड़ी बेगम—बहन, जिंदगानी का कौन ठिकाना है।

अब बरात का हाल सुनिए। कोई पहर रात गये बड़ी धूम-धाम से बरात रवाना हुई। सबके आगे निशान का हाथी झूमता हुआ जाता था। हाथी के सामने क़दम-क़दम पर अनार छूटते जाते थे। महताब की रोशनी से चाँद का रंग फ़क़ था। चर्खों की आनबान से आसमान का कलेजा धक था! तमाशाइयों की भीड़ से दोनों तरफ़ के कमरे फटे पड़ते थे। जिस वक़्त गोरों का बाजा चौक में पहुँचा और उन्होंने बैंड बजाया तो लोग समझे कि आसमान के फ़रिश्ते बाजा बजाते-बजाते उतर आये हैं।

इतने में मियाँ खोजी इधर-उधर फुदकते हुए आये।

खोजी—ओ शहनाईवालो! मुँह न फैलाओ बहुत।

लोग—आइए, आइए! बस आप ही की कसर थी।

खोजी—अरे, हम क्या कहते हैं! मुँह न फैलाओ बहुत।

लोग—कोई आपकी सुनता ही नहीं।

खोजी—ये तो नौसिखिये हैं। मेरी बातें क्या समझेंगे।

लोग—इनसे कुछ फर्माइश कीजिए।

खोजी—अच्छा, वल्लाह! वह समाँ बाँधूँ कि दंग हो जाइए! यह चीज़ छेड़ना भाई—

करेजवा में दरद उठी;
कासे कहूँ ननदी मोरे राम।

सोती थी मैं अपने मँदिल में;
अचानक चौंक पड़ी मोरे राम।
(करेजवा में दरद उठी···।)

लोग—सुभान-अल्लाह ! आप इस फ़न के उस्ताद हैं। मगर शहनाईवाले अब तक आपका हुक्म नहीं मानते।

खोजी—नहीं भई, हुक्म तो माने दौड़ते हुए और न मानें तो मैं निकाल दूँ। मगर इसको क्या किया जाय कि अनाड़ी हैं। बस, ज़रा मुझे आने में देर हुई और ज़रा काम बिगड़ गया।

इतने में एक दूसरे आदमी ने खोजी के नज़दीक जा कर ज़रा कंधे का इशारा किया तो खोजी लड़खड़ाये और उनके चेले अफ़ीमी भाइयों ने बिगड़ना शुरू किया।

एक—अरे मियाँ ! क्या आँखों के अंधे हो ?

दूसरा—ईंट की ऐनक लगाओ मियाँ।

तीसरा—और ख्वाजा साहब भी धक्का देते तो कैसी होती ?

चौथा—मुँह के बल गिरे होते और क्या।

पाँचवाँ—अजी, यों कहो कि नाक सिलपट हो जाती।

खोजी—अरे भाई, अब इससे क्या वास्ता है। हम किसी से लड़ते-झगड़ते थोड़े ही हैं। मगर हाँ, अगर कोई गीदी हमसे बोले तो इतनी क़रौलियाँ भोंकी हों कि याद करे।

जब बरात दुलहिन के घर पहुँची तो दूल्हे को दरवाजे के सामने लाये और दुलहिन का नहाया हुआ पानी घोड़े के सुमों के नीचे डाला। इसके बाद घी और शक्कर मिला कर घोड़े के पाँव में लगाया। दूल्हा महल में आया। दूल्हा की बहनें उस पर दुपट्टे का आँचल डाले हुए थीं। दुलहिन की तरफ़ से औरतें बीड़ा हर क़दम पर डालती जाती थीं। इस तरह दूल्हा मड़वे के नीचे पहुँचा। उसी वक़्त एक औरत उठी और रूमाल से आँखें पोंछती हुई बाहर चली गयी। यह सुरैया बेगम थीं।

आज़ाद मँडवे के नीचे उस चौकी पर खड़े किये गये जिस पर दुलहिन नहायी थी। मीरासिनों ने दुलहिन के उबटन का, जो माँझे के दिन से रखा हुआ था, एक भेड़ और एक शेर बनाया और दूल्हा से कहा—कहिए, दूल्हा भेड़, दुलहिन शेर।

आज़ाद—अच्छा साहब, हम शेर, वह भेड़; बस ?

डोमिनी—ऐ वाह ! यह तो अच्छे दूल्हा आये। आप भेड़, वह शेर।

आज़ाद—अच्छा साहब यों सही। आप भेड़, वह शेर।

डोमिनी—ऐ हुज़ूर, कहिए, वह शेर, मैं भेड़।

आज़ाद—अच्छा साहब, मैं भेड़, वह शेर।

इस पर खूब क़हक़हा पड़ा। इसी तरह और भी कई रस्में अदा हुईं, और तब दूल्हा महफ़िल में गया। यहाँ नाच-गाना हो रहा था। एक नाज़नीन बीच में बैठी

थी, मज़ाक हो रहा था। एक नवाब साहब ने यह फ़िक़रा कसा—बी साहब, आपने ग़ज़ब का गला पाया है। उसकी तारीफ़ ही करना क़बूल है।

नाज़नीन—कोई समझदार तारीफ़ करे तो खैर, अताई-अनाड़ी ने तारीफ़ की तो क्या?

नवाब—ऐ साहब, हम तो खुद तारीफ़ करते हैं।

नाज़नीन—तो आप अपना शुमार भी समझदारों में करते हैं? बतलाइए, यह विहाग का वक़्त है या घनाक्षरी का।

नवाब—यह किसी ढाढ़ी-बच्चे से पूछो जाके।

नाज़नीन—ऐ लो! जो इस फ़न के नुक़्ते समझे, वह ढाढ़ी-बच्चा कहलाये। वाह री अक़्ल, वह अमीर नहीं, गँवार है, जो दो बातें न जानता हो—गाना और पकाना। आपके से दो-एक घामड़ रईस शहर में और हों तो सारा शहर बस जाय।

नाज़नीन ने यह ग़ज़ल गायी—

लगा न रहने दे झगड़े को यार तू बाकी;
रुके न हाथ अभी है रँगे-गुलू बाकी।
जो एक रात भी सोया वह गुल गले मिल कर;
तो मीनी-मीनी महीनों रही है बू बाकी।
हमारे फूल उठा के वह बोला गुँच-देहन;
अभी तलक है मुहब्बत की इसमें बू बाकी।
फ़िना है सबके लिए मुझप' कुछ नहीं मौकूफ़;
यह रंज है कि अकेला रहेगा तू बाकी।
जो इस जमाने में रह जाय आबरू बाकी।

नवाब—हाँ, यह सबसे ज़्यादा मुक़द्दम चीज है।

नाज़नीन—मगर हयादारों के लिए। बगड़ेबाज़ों को क्या?

इस पर इस ज़ोर से कहकहा पड़ा कि नवाब साहब झेंप गये।

नाज़नीन—अब कुछ और फ़रमाइए हुजूर! चेहरे का रंग क्यों फ़क़ हो गया?

मिरज़ा—आपसे नवाब साहब बहुत डरते हैं।

नवाब—जी हाँ, हरामजादे से सभी डरा करते हैं।

नाज़नीन—ऐ है, अभी आप अपने अब्बाजान से इतना डरते हैं।

इस पर फिर कहकहा पड़ा और नवाब साहब की जबान बंद हो गयी।

उधर दुलहिन को सात सुहागिनों ने मिल कर इस तरह सँवारा कि हुस्न की आब और भी भड़क उठी। निकाह की रस्म शुरू हुई। काजी साहब अंदर आये और दो गवाहों को साथ लाये। इसके बाद दुलहिन से पूछा गया कि आज़ाद पाशा के साथ निकाह मंजूर है? दुलहिन ने शर्म से सिर झुका लिया।

बड़ी बेगम—ऐ बेटा, कह दो।

रूहअफ़ज़ा—हुस्नआरा, बोलो बहन! देर क्यों करती हो?

नाज़ुक—बस, तुम हाँ कह दो।

जानी—(आहिस्ता से) बजरे पर सैर कर चुकीं, हवा खा चुकीं और अब इस वक़्त नखरे बघारती हैं।

आखिर बड़ी कोशिश के बाद हुस्नआरा ने धीरे से 'हूँ' कहा।

बड़ी बेगम—लीजिए, दुलहिन ने हुँकारी भरी।

काज़ी—हमने तो आवाज नहीं सुनी।

बड़ी बेगम—हमने सुन लिया, बहुत से गवाह हैं।

काज़ी साहब ने बाहर आ कर दूल्हा से भी यही सवाल किया।

आज़ाद—जी हाँ कुबूल किया।

काजी साहब चले गये और महफ़िल में तायफ़ों ने मिल कर मुबारकबाद गायी। इसके बाद एक परी ने यह ग़जल गायी—

तड़प रहे हैं शबे-इंतजार सोने दे;
न छेड़ हमको दिले-बेकरार सोने दे।
कफस में आँख लगी है अभी असीरों की,
ग़रज न चारा में अबरे-बहार सोने दे।
अभी तो सोये हैं यादे-चमन में अहले-क़फ़स;
जगा न उनको नसीमे बहार सोने दे।
तड़प रहे हैं दिले-बेकरार सोने दे।

शरबत-पिलाई के बाद दूल्हा और दुलहिन एक ही पलँग पर बिठाये गये। गेती-आरा ने कहा—बहन, जूती तो छुलाओ।

जानी—वाह! यह तो सिमटी-सिमटायी बैठी हैं।

बहार—आखिर हया भी तो कोई चीज़ है।

नाज़ुक—अरे, जूती कंधे पर छुला दो बहन, वाह!

उस्तानी—अगले वक़्तों में तो सिर पर पड़ती थीं।

नाज़ुक—इस जूती का मजा कोई मर्दों के दिल से पूछे।

जब दुलहिन ने ज़रा भी जुम्बिश न की तो बहार बेगम ने दुलहिन के दाहने पैर की जूती दूल्हा के कंधे पर छुला दी।

नाज़ुक—कहिए, आपकी डोली के साथ चलूँगा।

रूहअफ़ज़ा—और जूतियाँ झाड़के चलूँगा।

जानी—और सुराही हाथ में ले चलूँगा।

आज़ाद—ऐ! क्यों नहीं, जरूर कहूँगा।

नाज़ुक—ऐ वाह! अच्छा रंग लाये।

जानी—रंडियों से नखरे बहुत सीखे हैं।

इस फ़िकरे पर ऐसा कहकहा पड़ा कि मियाँ आज़ाद शर्मा गये। जानी बेगम इक्कीस पान का बीड़ा लायीं और उसे कई बार आज़ाद के मुँह तक ला-ला कर हटाने के बाद खिला दिया।

सिपहआरा—सुहाग लायीं और दूल्हा के कान में कहा—कहो, सोने में सुहागा मोतियों में धागा और बने का जी बनी से लागा।

इसके बाद आरसी की रस्म अदा हुई।

जानी—बन्नू, जल्दी आँख न खोलना।

नाज़ुक—जब तक अपने मुँह से ग़ुलाम न बने।

हैदरी—कहिए, बीबी, मैं आपका ग़ुलाम हूँ।

आज़ाद—बीबी मैं आपका बिन दामों ग़ुलाम हूँ।

बड़ी बेगम—बेटा, अब तो कहवा लिया, अब आँखें खोल दो।

जानी—एक ही बार तो कहा।

हैदरी—ऐ हुज़ूर, ख़ुशामद तो कीजिये।

आज़ाद—यह ख़ुशामद से न मानेंगी।

हैदरी—जो कहा है, उसका ख़याल रहे। बीबी के ग़ुलाम बने रहिएगा।

आख़िर बड़ी मुश्किलों से दुलहिन ने आँखें खोलीं, मगर आँखों में आँसू भरे हुए थे। बे-अख़्तियार रोने लगीं। लोग समझाते-समझाते आरी हो गये, मगर आँसू न थमे। तब आज़ाद ने सिर झुका कर कान में कहा—यह क्या करती हो, दिल को मज़बूत रखो।

रूहअफ़ज़ा—बहन, ख़ुदा के लिए चुप हो जाओ। इसका कौन सा मौक़ा है!

बहार—अम्मीजान, आप ही समझायें। नाहक़ अपने को हलाकान करती हैं हुस्नआरा।

उस्तानी—तर कपड़े से मुँह पोंछो।

जब हुस्नआरा का जी बहाल हुआ तो आज़ाद ने सुहाग पुड़े से मसाला निकाल कर दुलहिन की माँग भरी। तब दुलहिन को गोद में उठा कर सुखपाल पर बिठा दिया। वहाँ जितनी औरतें थीं, सबकी आँखों से आँसू जारी हो गये और बड़ी बेगम तो पछाड़ें खाने लगीं। जब बरात रुख़सत हो गयी तो बातें होने लगीं—

रूहअफ़ज़ा—अल्लाह करे, आज़ाद ने जितनी तकलीफ़ें उठायी हैं, उतना ही आराम भी पायें।

अब्बासी—अल्लाह ऐसा ही करेगा।

जानी—मगर आज़ाद का सा दूल्हा भी किसी ने कम देखा होगा।

नाज़ुक—लाखों कुओं का पानी पी चुके हैं।

बहार—बड़े ख़ुशमज़ाक आदमी मालूम होते हैं।

जानी—इस वक़्त हुस्नआरा के दिल का क्या हाल होगा!

नाज़ुक—चौथी के दिन हम ताक-ताक निशाने लगायेंगे।

रूहअफ़ज़ा—आज़ाद से कोई न जीत पायेगा।

जानी—कौन! देख लेना बहन, अगर हारी न बोलें जभी कहना। वह अगर तेज़ हैं, तो हम भी कम नहीं।

अंत

प्रिय पाठक, शास्त्रानुसार नायक और नायिका के संयोग के साथ ही कथा का अंत हो जाता है। इसलिए हम भी अब लेखनी को विश्राम देते हैं। पर कदाचित् कुछ पाठकों को यह जानने की इच्छा होगी कि ख्वाजा साहब का क्या हाल हुआ और मिस मीडा और मिस क्लारिसा पर क्या बीती। इन तीन पात्रों के सिवा हमारे विचार में तो और कोई ऐसा पात्र नहीं है जिसके विषय में कुछ कहना बाकी रह गया हो। अच्छा सुनिए। मियाँ खोजी मरते दम तक आजाद के वफादार दोस्त बने रहे। अफीम की डिबिया और करौली की धुन ने कभी उनका साथ न छोड़ा। मिस मीडा और मिस क्लारिसा ने उर्दू और हिंदी पढ़ी और दोनों थियासोफिस्ट हो गयीं। दोनों ही ने स्त्रियों की सेवा करना ही अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया। क्लारिसा तो कलकत्ता की तरफ चली गयीं, मीडा बम्बई से लौट कर आज़ाद से मिलने आयीं तो आजाद ने हँस कर कहा—अब तो थियासोफिस्ट हैं आप?

मीडा—जी हाँ, ख़ुदा का शुक्र है कि मुझे उसने हिदायत की।

आजाद—तो यह कहिए कि अब आप पर ख़ुदा का नूर नाजिल हुआ। इस मज़हब में कौन-कौन आलिम शरीक हैं?

मीडा—अफसोस है आजाद, कि तुम थियासोफी से बिलकुल वाकिफ नहीं हो। इसमें बड़े-बड़े नामी आलिम और फिलासफर शरीक हैं, जिनके नाम के इस वक़्त दुनिया में झंडे गड़े हुए हैं। यूरोप के अकसर आलिमों का झुकाव इसी तरफ़ है।

आजाद—हमने सुना है कि थियासोफीवाले रूह से बातें करते हैं। मुझे तो यह शोबदेबाज़ी मालूम होती है।

मीडा—तुम इसे शोबदेबाजी समझते हो?

आजाद—शोबदा नहीं तो और क्या है, मदारियों का खेल?

मीडा—अगर इसका नाम शोबदा है तो न्यूटन और हरशेल भी बड़े शोबदेबाज थे?

आज़ाद—वाह, कहाँ न्यूटन और कहाँ थियासोफी। हमने सुना है कि थियासोफिस्ट लोग गैब का हाल बता देते हैं। बम्बई में बैठे हुए अमेरिकावालों से बिना किसी वसीले के बातें करते हैं। यहाँ तक सुना है कि एक साहब जो थियासोफिस्टों में बहुत ऊँचा दरजा रखते हैं वह डाक से खत न भेज कर जादू से भेजते हैं। वह खत लिख कर मेज पर रख देते हैं और जिन लोग उठा कर पहुँचा देते हैं।

मीडा—तो इसमें ताज्जुब की कौन बात है? जो लोग लिखना-पढ़ना नहीं जानते वह दो आदमियों को हरफों से बातें करते देख कर जरूर दिल में सोचेंगे कि जादूगर हैं। जिस तरह आपको ताज्जुब होता है कि मेज पर रखा हुआ खत पते पर कैसे पहुँच

गया उसी तरह उन जंगली आदमियों को हैरत होती है कि दो आदमी चुप-चा खड़े हैं, न बोलते हैं, न चालते हैं, और लकीरों से बातें कर लेते हैं। अफ्रीका के हबशियों से कहा जाय कि एक मिनट में हम लाखों मील पर बैठे हुए आदमियों के पास खबरें भेज सकते हैं तो वे कभी न मानेंगे। उनकी समझ में न आयेगा कि तार के खटखटाने से कैसे इतनी दूर खबरें पहुँच जाती हैं। इसी तरह तुम लोग थियासोफी की करामात को शोबदा समझते हो।

आज़ाद—तुम मेस्मेरिज़्म को मानती हो?

मीडा—मैं समझती हूँ, जिसे ज़रा भी समझ होगी वह इससे इनकार नहीं कर सकता।

आज़ाद—खुदा तुमको सीधे रास्ते पर लाये, बस और क्या कहूँ।

मीडा—मुझे तो सीधे रास्ते पर लाया। अब मेरी दुआ है कि खुदा तुमको भी सीधे दर्रे पर लगाये।

आज़ाद—आखिर इस मज़हब में नयी कौन सी बात है।

मीडा—समझाते-समझाते थक गयी मगर तुमने मज़हब कहना न छोड़ा।

आज़ाद—खता हुई, मुआफ़ करना, लेकिन मुझे तो यक़ीन नहीं आता कि बिला किसी वसीले के एक दूसरे के दिल का हाल क्योंकर मालूम हो सकता है। मैंने सुन कि मैडम ब्लेवेट्स्की खतों को बगैर खोले पढ लेती हैं।

मीडा—हाँ-हाँ, पढ़ लेती हैं, एक नहीं हज़ारों बार मैंने अपनी आँखों देखा और खुदा ने चाहा तो कुछ दिनों में मैं भी वही करके दिखा दूँगी।

आजाद—खुदा करे, वह दिन जल्द आये। मैं बराबर दुआ करूँगा।

यही बातें हो रही थीं कि बैरा ने अंदर आ कर एक कार्ड दिया। आज़ाद ने का देख कर बैरा से कहा—नवाब साहब को दीवानखाने में बैठाओ, हम अभी आते हैं

मीडा ने पूछा—कौन नवाब साहब हैं?

आज़ाद—मिरज़ा हुमायूँ फ़र के छोटे भाई हैं, जिनके साथ सिपहआरा क शादी हुई है।

मीडा—तो यों कहिए कि आपके साढ हैं। तो फिर जाइए। मैं भी उनसे मिलूँगी।

आजाद—मैं उन्हें यहीं लाऊँगा।

यह कहते हुए आजाद दीवानखाने की तरफ़ चले गये।